कुर्आन का पैग़ाम

तफ़्सीर फ़ारूक़ी

कुर्आन मजीद की आसान हिन्दी तफ़्सीर या व्याख्या

भाग-7

सन्देश

मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद

अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी (अ़ली मियाँ रह०)

अनुवाद एवं व्याख्या

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

(अध्यक्ष, जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

जमअ़ीयत पयामे अम्न,

नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ–20 (यू०पी०) इण्डिया

नाम-	तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-7)
अनुवाद और व्याख्या-	मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी (आचार्य)
कम्पोज़ीटर-	इरफ़ान अहमद
संस्करण-	तीसरा संस्करण
पुस्तक संख्या-	3000
वर्ष-	2019
हदिया (मूल्य)-	500
प्रकाशक-	जमअ़ीयत पयामे अम्न

Book Name	**Tafseer Farooqui (Part-7)**
Writer	**Mufti Mohd-Sarwar Farooqui Nadwi** (Acharya)
S. No.	**3000**
Publisher:	**Jamiat Payam-e-Amn** **Nadwa Road, Daliganj, Lucknow (U.P.) India-20**
Website.	**www.islamicjpamn.com**
Mobile–	**0091– 9919042879, 9984490150**
E–Mail–	**maktaba.pyameamnlko@gmail.com**

मिलने के पते

1. मजलिसे तह़क़ीक़ात व नशरियात, नदवतुल उ़लमा, पोस्ट बाक्स नं० 119 (लखनऊ) (0522–2741529)
2. न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, 14, मुह़म्मद अ़ली रोड, भिन्डी बाज़ार, मुम्बई (0522–2741539)
3. अल् फ़ुरक़ान बुक डिपो, नज़ीराबाद-31 (लखनऊ) (9936635816)
4. सुब्हानिया बुक डिपो, नया मुह़ल्ला, जबलपुर, मध्य प्रदेश (9424708020)
5. सत्य फ़ाउन्डेशन 182 ग्रीन लैण्ड कैम्पस, पोखरपुर, कानपुर (9935044343)
6. मकतबः शबाब जदीद, नदवा रोड, लखनऊ (9198621671)

إنا نحن نزلنا الذكر وإنا له لحافظون

इस (तफ़्सीर फ़ारुक़ी भाग-7) में पारा नं० (27) सूरः अल् ह़दीद आयत नं० (20) से पारा नं० (30) सूरः अन् नास तक की पूरी तफ़्सीर है।



पवित्र क़ुर्आन को पाक साफ़ (वुज़ू करके) शुद्ध होकर आदर के साथ अ़मल की नियत से ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही उच्चारण का भी ख़्याल रखें।

क़ुर्आन के व्याख्या की शुरुआ़त पेज नं० 26 से 544 तक है। उस से पहले विषय सूची और उ़लमा के संक्षिप्त लेख और प्राक्कथन है।

इस तफ़्सीर के भाग-एक में विश्व प्रसिद्ध उ़लमा के संक्षिप्त सन्देश जैसे-ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली ह़सनी नदवी (रह०) व मौलाना सय्यद मुह़म्मद राबेअ़ हसनी नदवी, मौलाना अबुल् क़ासिम नोअ़मानी क़ासमी, मौलाना मुह़म्मद सालिम क़ासमी देवबन्दी, मौलाना सय्यद अरशद मदनी, मौलाना मुह़म्मद सई़दी मज़ाहिरी, मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी नदवी, मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रह़मानी, मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी, मौलाना फ़ुज़ैलुर्रह़मान हिलाल उ़स्मानी, मौलाना ज़करिया नदवी, मौलाना शम्सुल हक़ नदवी, मुफ़्ती अ़तीक़ अह़मद क़ासमी, मौलाना ख़ालिद साह़ब ग़ाज़ीपुरी, मौलाना अब्दुल क़ादिर मज़ाहिरी, मौलाना अ़ब्दुल्लाह ह़सनी नदवी (रह़०) मौलाना नियाज़ अहमद नदवी, मौलाना मुहीबउल्लाह क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली आदि की तस्दीक़ मौजूद है और प्राक्कथन में क़ुर्आन का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है। इन सब का मुकम्मल लेख भाग-एक के अन्त में दिया गया।

दो शब्द

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

यह अनुवाद एवं व्याख्या इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान एवं दाअ़ी-ए-इस्लाम मुफ़स्सिरे क़ुर्आन 'ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' जो हिन्दी और अ़रबी दोनों भाषाओं का ज्ञान रखते हैं। इनकी दीनी शिक्षा क़ारी, आ़लिम, फ़ाज़िल व मुफ़्ती की है और संस्कृत से आचार्य हैं। जिनके क़लम से लगभग **200** से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिसमें उर्दू भाषा में लफ़्ज़ी (शाब्दिक) तर्जुमः और हिन्दी में तीस्वें पारः की तफ़्सीर और यह सात भागों में 'तफ़्सीर फ़ारूक़ी' क़ाबिले ज़िक्र है, जिसे हर तब्क़े के लोगों ने इस की आसान भाषा की वजह से पसन्द किया, जो घरों और मस्जिदों में पढ़ी जाती है। जिसके कई एडीशन प्रकाशित करने का शर्फ़ ह़ासिल हो चुका है। इस के तर्जुमः व तफ़्सीर की मुख्य विशेषता इस तरह़ हैः-

तर्जुमः की विशेषता-

इस के तजुर्मे में 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' का वह मक़्बूल तर्जुमः है जिसके **2016** तक बीस एडीशन से ज़्यादा छप चुके हैं, इसकी भाषा बहुत सरल है जिसको मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम, कम पढ़ा हो या ज़्यादा हर वर्ग आसानी से समझ लेता है।

तफ़्सीर की विशेषता-

(1) यह तफ़्सीर मुस्लिम हो या व ग़ैर दोनों को सामने रखते हुए आ़म बोलचाल की भाषा में लिखी गई है, ताकि कम पढ़े लिखे लोग भी इस से फ़ायदा उठा सकें।

(2) तफ़्सीर में ह़दीस और मोअ़तबर (अथैन्टिक) उ़लूमा की तफ़्सीरों से ही फ़ायदा उठाया गया है।

(3) इस में रोज़ (प्रतिदिन) पढ़ने के ह़िसाब से लगभग दस-दस आयतों का तर्जुमः फिर अलग-अलग आयतों की तफ़्सीर बयान की गई है।

(4) इस में पहले पूरी सूरः का खुलासा (संक्षेप) और उसके विषय, फिर लगभग दस-दस आयतों का तर्जुमः उसके बाद हर आयत की अलग-अलग तफ़्सीर, जिसमें सबसे पहले उस आयत का शाने नुज़ूल (नाज़िल होने के वक़्त की ह़ालत) फिर उस आयत से सम्बन्धित ह़दीस, और मोअ़तबर उ़लमा की तफ़्सीर की रौशनी में तफ़्सीर, फिर मसायल, एह़काम, और साइंसी तह़क़ीक़ के साथ ग़ैर मुस्लिमों की तरफ़ से होने वाले सवालों का बेहतर तरीक़े से जवाब और उस से मुतअ़ल्लिक़ फ़ज़ायल जो सह़ी ह़दीसों से साबित है ज़िक्र किया गया है।

नोट- इस तरह यह एक मुफीद तोहफ़ा तमाम इन्सानों की रहनुमाई के लिए पेश किया जाता है जिस पर चन्द मशहूर उ़ल्मा जैसे- ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली ह़सनी नदवी (रह०) व मौलाना सय्यद मुह़म्मद राबेअ़ हसनी नदवी, मौलाना अबुल् क़ासिम नोअ़मानी क़ासमी, मौलाना मुह़म्मद सालिम क़ासमी देवबन्दी, मौलाना सय्यद अरशद मदनी, मौलाना मुह़म्मद सई़दी मज़ाहिरी, मौलाना सईदुर्रहमान आज़्मी नदवी, मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रह़मानी, मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी, मौलाना फ़ुज़ैलुर्रह़मान हिलाल उ़स्मानी, मौलाना ज़करिया नदवी, मौलाना शम्सुल हक़ नदवी, मुफ़्ती अ़तीक़ अह़मद क़ासमी, मौलाना ख़ालिद साह़ब ग़ाज़ीपुरी, मौलाना अब्दुल क़ादिर मज़ाहिरी, मौलाना अ़ब्दुल्लाह ह़सनी नदवी (रह़०) मौलाना नियाज़ अहमद नदवी, मौलाना मुहीबउल्लाह क़ासमी मद्‌दज़िल्लहुल् आ़ली आदि की तस्दीक़ के प्रमाणित सन्देश संक्षेप में मौजूद हैं।

25 अगस्त **2019** — प्रकाशक

विषय सूची

विषय पृष्ठ सं०

भाग-60
सूर-ए-मुम्तह़िना

विषय पृष्ठ सं०

भाग-61
सूर-ए-सफ़्फ़

भाग-62
सूर-ए-जुमअ़ः

सन्देश
विश्व इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान तथा
प्रसिद्ध श्रेष्ठ विचारक (मुफ़क्किरे इस्लाम)
हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी (रह०) के शुभ क़लम से-

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन, वस्सलातु वस्सलामु अ़ला सय्यिदिल्मुर्सलीन, मुहम्मदिन व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मअ़ीन

मुसलमानों के ज़िन्दग़ी की तमाम अ़िबादतों में नमाज़ ही वह अहम और बुनियादी रूक्न है जिसे दिन में पाँच बार फ़र्ज़ (अनिवार्य) किया गया है। अल्लाह का बन्दा जब अपने पालनहार के सामने बन्दगी के लिए खड़ा होता है तो सबसे पहले उस ज़ात की तअ़रीफ़ और बेशुमार नेअ़मतों का शुक्रिया अदा करता है जो उसके पालनहार ने उस पर किये हैं, यह वह परवरदिगार है जो केवल मुसलमानों का पालने वाला ही नहीं बल्कि तमाम मख़्लूक़ को ज़िन्दगी और रिज़्क़ देने वाला और सबसे ज़्यादा उन पर रह़म करने वाला है। उसी ने तमाम मख़्लूक़ को अपनी कुद्रत से पैदा किया और उसी का हुक्म सब पर जारी होता है।

इस दुनिया की हर चीज़ उसी की मुहताज है,वह एक है उसका कोई साझीदार नहीं,वही सीधी राह दिखाता है। कोई मुसलमान जब भी नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो वह सूरः फ़ातिहा को बार-बार पढ़ता और सुनता है कि इसमें पूरे क़ुर्आन मजीद के पैग़ाम की रुह और खुलासा है। इस सूरः के अन्दर तमाम इन्सानी तब्क़ात की ज़रूरतों और ख़्वाहिशों के इख़्तिलाफ़ के बावजूद हर गिरोह और शख़्स की तस्कीन (तसल्ली) का सामान मौजूद है। इस मुख़्तसर सूरः में ज़िन्दगी का पैग़ाम है, उम्मीद और खुशख़बरी है उस इन्सान के लिए जिसको हर तरफ़ से धुत्कारा जाता है, हर तरफ़ से तक्लीफ़ों और आ़ज़्माइशों के तूफ़ान में जो घिरा हुआ है। माल, कुव्वत, मन्सब और सेहत इसका साथ छोड़ देते हैं। महबूबतरीन औलाद भी काम नहीं आती। ऐसा कमज़ोर व मुहताज इन्सान सूरः फ़ातिहा पढ़ कर अपने दिली एहसासात व जज़्बात की तर्जुमानी करता है, वह उस रब से मदद माँगता है जो तमाम मख़्लूक़ का पालनहार है। जो रोज़े जज़ा का मालिक है। वही अ़िबादत का हक़्दार है, वही सीधी राह दिखाता है।

जहाँ तक मुसलमानों का तअ़ल्लुक़ है उनके बच्चों और नई नस्ल के लिए और दीनी मर्क़ज़ों के लिए और मदारिस और फ़ायदे उठाने वालों के लिए, क़दीम अर्सा से उर्दू में इस्लाम के मबादी व तअ़लीमात से वाक़िफ़ कराने के लिए बहुत सी किताबें और रिसाले लिखे गये, जिनसे बहुत फ़ायदा पहुँचा। जब तक फ़ारसी का रिवाज था 'माला बुद्दमिन्हु' जैसी किताबें लिखी गईं फिर 'तअ़लीमुल् इस्लाम' के नाम से

कई मुस्तनद उ़ल्मा ने बहुत सी कुतुब व रसायल लिखे जो इब्तिदाई मदारिस में और कम पढ़े लिखे ह़ल्क़ों में रायज और मक़्बूल हैं, और उनसे हज़ारों बल्कि लाखों बच्चों और कम इस्तेअ़दाद के लोगों ने फ़ायदा उठाया, और दीन का इल्म मालूम करने और उन पर चलने का तरीक़ा सिखाया, और मुस्लिम दाऄ़ीयाने इस्लाम की कोशिश और खुद फ़ित्रते सलीम के तक़ाज़ा और हिदायते रब्बानी से हिन्दुस्तान की ग़ैर मुस्लिम आबादी और हमारे हमवतन पड़ोसियों में से हर इलाक़े में बहुत सी जगह सैकड़ों की तअ़दाद में और बहुत सी जगह हज़ारों की तअ़दाद, और बाज़ जगह गाँव के गाँव और इलाक़े में अपने इरादा व अख़्तियार और अपने क़द्रो इन्साफ़ से दीने इस्लाम को क़ुबूल किया।

वक़्त की एक अहम ज़रूरत थी जिसको अज़ीज़ुल क़द्र 'मोलवी मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी' ने अन्जाम दिया और वक़्त की एक ज़रूरत और दीन की तफ़्हीम व तब्लीग़ व तर्बियत का एक मुतालबा और तक़ाज़ा पूरा किया। इससे पहले बहुत से किताबचे इनके क़लम से हिन्दी में आ चुके हैं जिनसे हमारे ग़ैर मुस्लिम भाईयों को ख़ासतौर से इस्लाम के बारे में मुफ़ीद मालूमात ह़ासिल हुई।

इस बात की बड़ी ज़रूरत है कि आसान हिन्दी ज़बान में ऐसी किताबें बकस्रत तैयार की जाएँ, ताकि इस मुल्क में सदियों से रहने वाले शहरी एक दूसरे के मज़हब,अक़ायद,तहज़ीब व तारीख़ से वाक़िफ़ हों, जिससे ग़लतफ़हमियाँ दूर हों और प्रेम व मुहब्बत और भाईचारगी में इज़ाफ़ा हो।

इस में मुसन्निफ़ ने पहले क़ुर्आन मजीद का तआ़र्रुफ़ इख़्तिसार से कराया है और बताया है कि क़ुर्आन ही एक ऐसी मह़फ़ूज़तरीन किताब है जो हर प्रकार की तहरीफ़ व तब्दीली से पाक है। जिसे अल्लाह तआ़ला ने इस क़ुर्आन की हिफ़ाज़त का खुद वादा अपने ज़िम्मे लिया है। मुसन्निफ़ ने इन्सानी ज़िन्दग़ी से उसका तअ़ल्लुक़, फिर सूरः के तआ़रुफ़ के साथ उसके मफ़्हूम और उसकी तशरीह़ की है, उम्मीद है कि यह मुफ़ीद होगा। अल्लाह पाक अ़ज़ीज़ेग्रामी की इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए।



अबुल ह़सन अ़ली नदवी

18 जमादिल् अव्वल **1419** हि०

नोटः– अल्ह़म्दुलिल्लाह क़ुर्आन मजीद के काम को मैंने ह़ज़रत मौलाना के मश्वरह से **1996** ई० में ही शुरु कर दिया था और आप की ज़िन्दग़ी में सूरः फ़ातिह़ा और तीस्वें पारे की तफ़्सीर छप चुकी थी। ऊपर की तह़रीर ह़ज़रत मौलाना ने उसी के मुक़द्दमे में यह दुआ़इया कलिमात तह़रीर फ़रमाये थे, जिसे शुरु में पेश कर दिया गया है और बाक़ी उ़लमा की तहरीरें आख़ीर में शामिल की गई हैं।

प्रख़्यात विश्व विद्धानों का इस तफ़्सीर पर संक्षिप्त लेख

तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं और दुरुद व सलाम की बारिश हो मोह़सिने आ़ज़म सय्यदना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर, जिन्होंने क़ुर्आन मजीद की तअ़लीम दी और अल्लाह की रह़मतें नाज़िल हों तमाम सह़ाब-ए-किराम व आज तक के रावियों और उम्मत के उ़ल्मा-ए-किराम पर जिन्होंने क़ुर्आन करीम की तअ़लीम को अगली नस्ल तक मुन्तक़िल किया।

अल्लाह तआ़ला की मुझ पर बेशुमार नेअ़मतें हैं जिन में सब से बड़ी नेअ़मत यह है कि उस ने क़ुर्आन मजीद के समझने, सीखने, पढ़ने और लिखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई।

अल्ह़म्दु लिल्लाह "ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी" (रह़०) के मशवरे से मैंने 1996 ई० में ही क़ुर्आन मजीद का काम शुरु कर दिया था और लगभग 18 साल से इस काम में मुसलसल मश्ग़ूल हूँ।

इस में सबसे पहले सूरः फ़ातिह़ा की तफ़्सीर प्रकाशित की गई, फिर तीस्वें पारे के अलग-अलग सूरतों की तफ़्सीर, फिर तीस्वें पारे की मुकम्मल तफ़्सीर, फिर पूरे क़ुर्आन मजीद का हिन्दी अनुवाद "क़ुर्आन का पैग़ाम" नाम से प्रकाशित हुआ, उसके बाद जैसे-जैसे तफ़्सीर का काम होता रहा, एक-एक भाग "तफ़्सीर फ़ारुक़ी" के नाम से प्रकाशित किया जाता रहा, जिस पर विश्व प्रसिद्ध क़ुर्आनी उलूम के माहिरीन से मुफ़ीद मश्वरे लिये जाते रहे और नाचीज़ की दरख़्वास्त पर वह अपने सन्देश से हिम्मत अफ़्ज़ाई भी फ़रमाते रहे।

अब जबकि अल्हम्दु लिल्लाह किसी ह़द तक तफ़्सीर का काम पाँच भागों में आने वाला है, इसलिए हम अपने असातिज़ा व मुह़सिनों के पैग़ामात को भाग पाँच में मुकम्मल तौर से, जो अलग-अलग भागों पर अलग-अलग तारीख़ों में लिखे गये थे, उसे भी शामिल कर रहे हैं, जिस से मुतालअ़ करने वालों को रहनुमाई भी होगी और हमारे सभी मुह़सिनों को उसका अ़ज्र भी मिलेगा।

चूंकि पैग़ामात की सूची लम्बी है इसलिए शुरु में केवल "ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अली ह़सनी नदवी" (रह़०) के सन्देश को पूरा शामिल करने के बाद हर एक के सन्देश से कुछ पंक्ति दर्ज की गई है। उस के बाद सभी बुज़ुर्गों के सन्देश आख़ीर में मुकम्मल तौर से दिये गये हैं जिस से मुतालअ़ करने वाले मुस्तफ़ीद हो सकते हैं।

यहाँ केवल नाम और उनके सन्देश की एक पंक्ति दर्ज की जाती है, जिससे इस की अहमियत का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। जैसे-

(1) इस्लामी जगत के प्रख़्यात विद्वान एवं श्रेष्ठ विचारक ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी मद्दज़िल्लहुलआ़ली के क़लम से-

'नाज़िम,' दारुल् उलूम, नदवतुल उल्मा, लखनऊ, व 'अध्यक्ष,' मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड (इण्डिया)

"हमारे अज़ीज़ 'मौलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' जो एक फ़ाज़िल शख़्स और अ़रबी व हिन्दी दोनों से अच्छी वाक़िफ़यत रखने वाले हैं, मेरे सामने इस वक़्त इन्हीं का हिन्दी तर्जुमः व तफ़्सीर क़ुर्आन है जिसको इन्होंने बड़ी मेह़नत व क़ाबिलियत से तैयार किया है।

उम्मीद है कि सारे मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम भाई जो हिन्दी ज़बान ही के ज़रिये ज़्यादा बेहतर समझ सकते हैं, इस तर्जुमे व तफ़्सीर से सह़ी फ़ायदा उठाएँगे।" मुसलमान ह़ज़रात तो अ़मल करने के लिए और

उसकी रहनुमाई में अपनी ज़िन्दगी संवारने के लिए और ग़ैर मुस्लिम भाई इस्लाम और क़ुर्आन की सही हक़ीक़त और तालीमात से वाक़्फ़ियत हासिल करने के लिए। मेरी दुआ है कि यह तफ़्सीर मुफ़ीद और कामियाब साबित हो।

(2) इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान हज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल् क़ासिम नोअ़मानी क़ासमी मद्दज़िल्लहुलुआ़ली के क़लम से–

मुहतमिम, दारुल उलूम देवबन्द

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी के हिन्दी तर्जुमे पर मुल्क के मुतअ़द्दिद अकाबिर अहले इ़ल्म ने गहरी नज़र से तर्जुमः को देखकर अपनी पसन्दीदग़ी का इज़्हार भी किया है, इसलिए उम्मीद है कि यह तर्जुमः न सिर्फ़ हिन्दीदाँ मुसलमानों के लिए; बल्कि उन बिरादराने वतन के लिए भी “क़ुर्आन के पैग़ाम” को समझने में मदद देगा, जो संजीदा और इन्साफ़ पसन्द हैं और क़ुर्आन पाक के पैग़ाम को समझना चाहते हैं। अल्लाह तआ़ला इन की ख़िद्मत को क़ुबूल फ़रमाए और मज़ीद दीनी ख़िद्मत की तौफ़ीक़ बख़्शे।

(3) इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान हज़रत मौलाना मुहम्मद सालिम क़ासमी मद्दज़िल्लहुलु आ़ली के क़लम से–

मोहतमिम, “दारुलु उलूम वक़्फ़”, देवबन्द व उपाध्यक्ष मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड इण्डिया

“पेशे नज़र तफ़्सीर “क़ुर्आन का पैग़ाम, “तफ़्सीर फ़ारूक़ी” बज़बान हिन्दी और इस तफ़्सीर के ज़रिये दअ़वत “मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी” ने इ़ल्मी ज़ौक़-ए-सलीम, वक़ीअ़ दीनी सलाहियत, वसीअ़ मुतअ़ला और उ़लूमे क़ुर्आनी से इस्तिफ़ादह की राह अ़वाम व ख़वास के लिए खोल दी है।

उम्मीद है कि यह तफ़्सीर मुवल्लिफ़ीन, मुसन्निफ़ीन, मुहक़्क़िक़ीन, मुक़र्रिरीन और मुदर्रिसीन के लिए एक क़ीमती इ़ल्मी तोहफ़ा साबित होगी”।

(4) प्रख्यात विद्वान हज़रत मौलाना सय्यद अरशद मद्नी मद्दज़िल्लहुलु आ़ली के क़लम से–

उस्ताज़ हदीस, दारुल उ़लूम, देवबन्द व अध्यक्ष- जमअ़ीयतुलु उ़लम-ए-हिन्द (भारत)

“अब जबकि हिन्दी भाषा हमारे मुल्क की सरकारी भाषा है और उम्मत का एक बहुत बड़ा तब्क़ा उर्दू से दूर है। इस बात की सख़्त ज़रुरत है कि इस्लामी उ़लूम को हिन्दी भाषा में भी किया जाए।

यह बात क़ाबिले क़द्र है कि “मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी साहब” ने इस ज़रुरत को महसूस किया और हज़रत थानवी (रह०) के तर्जुमे को सामने रखते हुए हिन्दी भाषा में क़ुर्आन शरीफ़ का तर्जुमः व तफ़्सीर किया है, अगरचे यह फ़क़ीर अपनी मस्रूफ़ियत की वजह से इसको एक-एक शब्द नहीं देख सका, लेकिन हज़रत थानवी (रह०) के तर्जुमे को सामने रखना इस तर्जुमे व तफ़्सीर की सिक़ाहत (प्रमाण) के लिए काफ़ी है”।

(5) प्रख़्यात विद्वान हज़रत मौलाना मुहम्मद सईदी मज़ाहिरी मद्दज़िल्लहुलू आली के क़लम से-

नाज़िम व मुतवल्ली मदरसा मज़ाहिरुलू उ़लूम (वक़्फ़) सहारनपुर (यू०पी०) इण्डिया

"मुझे यह मालूम होकर ख़ुशी हुई कि दारुलू उलूम नद्वतुलू उ़लमा, लखनऊ के एक आ़लिमे दीन "जनाब मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी" ग़ैर मुस्लिमों में दअ़वत व तब्लीग़ के लिए कोशाँ और फ़िक्रमन्द हैं, इस सिलसिले में उन्होंने मुख़्तलिफ़ किताबें और किताबचे भी मुरत्तब व शाया किये हैं।

इसी तरह़ उन्होंने क़ुर्आन करीम के दअ़वती उस्लूब को मद्देनज़र रखते हुए हिन्दी ज़बान में "तफ़्सीर फ़ारुक़ी" के नाम से बाबरकत सिलसिला शुरु किया है, जिस का भाग एक मेरे पास बग़र्ज़ तक़रीज़ पहुँची है। अल्लाह तआ़ला मौलाना मोह़रत की इस कोशिश व काविश को शर्फ़ क़ुबूल और मक़ामे क़ुबूलियत अ़ता फ़रमाए"।

(6) प्रख़्यात विद्वान तथा श्रेष्ठ साहित्यकार ह़ज़रत मौलाना सअ़ीदुर्रह़मान आज़्मी नदवी मद्दज़िल्लहुलूआली के क़लम से-

मुहतमिम- दारुलू उलूम नद्वतुल उ़ल्मा, लखनऊ व चान्सलर- इन्टीग्रल यूनिर्वसिटी, लखनऊ

"हमारे इस मुल्क में हिन्दी ज़बान में क़ुर्आन करीम के तर्जुमे मुख़्तलिफ़ इदारों और शख़्सियात की तरफ़ से शाए (प्रकाशित) हो कर मक़्बूल हो चुके हैं।

"लेकिन अभी तक किसी ऐसे आ़लिमे दीन की तरफ़ से जिसको हिन्दी ज़बान पर पूरी तरह़ उबूर ह़ासिल हो और वह अ़रबी ज़बान की रुह़ को समझ कर हिन्दी ज़बान में मुन्तक़िल करने की भरपूर सलाह़ियत (योग्यता) रखता हो, कोई काम न हो सका था"।

हमें इस बात का एतिराफ़ करने में निहायत ख़ुशी हो रही है कि हमारे ह़लक़-ए-नद्वतुलू उ़लमा की तरफ़ से यहाँ के आ़लिमे दीन 'मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी' जो अ़रबी, उर्दू, हिन्दी के माहिर मायानाज़ अदीब (साहित्यकार) आ़लिम और सह़ाफ़ी (पत्रकार) क़ुर्आन करीम का हिन्दी ज़बान में एक निहायत ही क़ाबिले उसूक़ और अ़रबी ज़बान की रुह़ से क़रीब तर हिन्दी तर्जुमः व तफ़्सीर पेश कर रहे हैं।

(7) प्रख़्यात इस्लामी विश्व विद्वान ह़ज़रत मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रह़मानी मद्दज़िल्लहुल आ़ली के क़लम से-

नाज़िम अलू मअ़हदुलू आ़ली इस्लामी हैदराबाद व जनरल सेक्रेट्री इस्लामिक फ़िक़ः अकेडमी, इण्डिया व सेकेट्री आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड

क़ुर्आन को एक पैग़ाम की शक्ल में, दअ़वती उस्लूब और आसान अन्दाज़ में पेश करने की ज़रुरत थी, चुनाँचे मुह़िब्बी फ़िल्लाह जनाब 'मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी' (सदर जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ) ने इसी अन्दाज़ में क़ुर्आन पाक के तर्जुमे व तशरीह़ की कामियाब कोशिश की है।

इस तफ़्सीर में सब से पहले "सूरः का तआ़र्रुफ़" के उ़न्वान (शीर्षक) से हर रुकूअ़ का ख़ुलासा पेश किया है, फिर आयतों के तर्जुमे और हर आयत के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीर, अस्बाबे नुज़ूल, फ़ज़ीलत, ज़रुरी मसायल और आयत के पैग़ाम को बयान किया गया है। तफ़्सीर के दौरान ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीअ़ साहब (रह़०) की "मआ़रिफ़ुलू क़ुर्आन" के अ़लावा अस्लाफ़ की मुतअ़द्दिद क़ुतुब तफ़्सीर से इस्तिफ़ादा

हैं। एक ख़ास बात इस तफ़्सीर की यह है कि हर आयतों के अलग-अलग नम्बर डाल कर आयतों की तशरीह़ की गई है, ताकि लोग थोड़ा-थोड़ा वक़्त निकाल कर आसानी के साथ फ़ायदा उठा सकें और तल्बा व तालिबात भी अलग-अलग सबक़ के तौर पर इसे पढ़ सकें।

(8) ह़ज़रत मौलाना सय्यद वाज़ेह़ रशीद ह़सनी नदवी मद्दज़िल्लहुलआ़ली के क़लम से-

(शिक्षा महासचिव (मुअतमद तअ़लीम) दारुल उलूम, नदवतुल उलमा, लखनऊ)

'मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब' जो आ़लिमे दीन होने के साथ-साथ हिन्दी के भी सनद याफ़्ता आ़लिम हैं। मौलाना सरवर साह़ब बहुत सी हिन्दी किताबों के मुसन्निफ़ हैं, और इससे पहले बहुत सी किताबों के तर्जुमे भी कर चुके हैं और अब तफ़्सीर का काम भी पूरा कर चुके हैं। अल्लाह तआ़ला इस कोशिश को क़बूल फ़रमाए और इसको क़ुर्आन फ़हमी का ज़रिया बनाए और हिदायत के मिलने का उनवान बनाए।

(9) ह़ज़रत मौलाना अब्दुल क़ादिर साह़ब नदवी मज़ाहिरी गुजराती के क़लम से-

नायब मुहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उ़लमा, लखनऊ

हमारे अ़ज़ीज़े गिरामी 'मुफ़्ती मौलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' ने जो नदवा से सनद याफ़्ता होने के साथ हिन्दी से भी वाक़िफ़ हैं, वाक़िफ़ ही नहीं बल्कि मुसलसल इस तरह के कामों में लगे रहने की वज़ह से अ़वाम में समझी जाने वाली हिन्दी जो हिन्दुस्तानी ज़बान है उससे भी वाक़िफ़ हैं इन्होंने इस काम को अपने ज़िम्मे लिया है और एक हद तक उसको पाये तक्मील तक पहुँचा कर इस के चार ह़िस्से शाए भी किया और अब पूरे क़ुर्आन की तफ़्सीर शाया करने जा रहे हैं जिस पर वह मुबारकबाद के मुस्तह़िक़ हैं।

(10) मुफ़स्सिरे क़ुर्आन ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती फ़ुज़ैलुर्रह़मान हिलाल उ़स्मानी मद्दज़िल्लहुल आ़ली के क़लम से-

रुक्न तासीसी (फ़ाउन्ड मेम्बर) आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड व सदर-दारुस्सलाम इस्लामी मर्कज़, मलियर कोटला पंजाब, अल हिन्द

यह नाचीज़ "मोह़तरम मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी साह़ब" को इस अ़ज़ीम ख़िद्मत पर दिली मुबारकबाद पेश करते हुए उम्मीद रखता हूँ कि इन्शाअल्लाह इन की इस ख़िद्मत से हिन्दी जानने वाले तब्क़े को ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा पहुँचेगा।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि मौलाना की यह ख़िद्मते शर्फ़ कुबूलियत ह़ासिल करे।

(11) ह़ज़रत मौलाना सय्यद अब्दुल्लाह ह़सनी नदवी (रह़०) के क़लम से-

भूतपूर्व सहसम्पादक 'अर्राइद' व उस्तादे ह़दीस, दारूल उलूम नदवतुल उलमा (लखनऊ)

"हिन्दी में तर्जुमें की बहुत कमी थी, अगर तर्जुमें कुछ हुए भी तो उन में क़ुर्आनी तर्जुमें के आदाब का पूरा लिहाज अक्सर तर्जुमे करने वालों ने नहीं रखा, ज़रूरत थी कि कोई अच्छा हिन्दीदाँ जो अ़रबी से भी वाक़िफ़ हो इस काम को अन्जाम देता।

बड़ी ख़ुशी की बात है कि 'दारुल उलूम नदवतुल उलमा' के फ़ाज़िल "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी

साहब नदवी” ने मौलाना फ़तेह़ मुह़म्मद ख़ाँ साह़ब जालन्धरी के तर्जुमे को सामने रखते हुए हिन्दी में तर्जुमानी की कोशिश की है। अल्लाह तआ़ला इस तर्जुमानी व तफ़्सीर को क़बूल फ़रमाये और तमाम गुमराह लोगों के लिए इसको हिदायत का ज़रिया बनाए”।

(12) ह़ज़रत मौलाना शम्सुल ह़क़ साह़ब नदवी मद्दज़िल्लहुलूआ़ली

(प्रधान सम्पादक, तअ़मीर-ए-ह़यात व उस्ताज़ दारुल उ़लूम, नद्वतुल उ़लूमा, लखनऊ)

हमें निहायत ख़ुशी व मसर्रत है कि नद्वतुल उ़ल्मा जिसकी बुनियाद ही इस पर पड़ी थी कि ह़ालात के रुख़ और माह़ौल को सामने रखकर काम किया जाए और उसके फ़ाज़िलों को वक़्त की ज़बान में बात करने का सलीक़ा सिखाया जाए ताकि वह दीन की ख़िद्मत का ह़क़ अदा कर सकें। इसके एक फ़ाज़िल मौलाना मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी ने अच्छी आसान हिन्दी ज़बान में क़ुर्आन करीम का तर्जुमः कर दिया है जो हमारी नई नस्ल के लिए ज़रुरी है और बिरादराने वतन तक, जिसकी रौशनी पहुँचाने का भी ज़रिया है। हमारी दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला इससे ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाए।

(13) ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद ज़करिया नदवी मद्दज़िल्लहुलू आ़ली के क़लम से-

(उस्ताज़ ह़दीस व अ़मीद कुल्लियतुश्शरीआ़, दारुल उलूम नदवतुल उलूमा, लखनऊ)

अल्लाह ने मोह़तरम “मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी” को हिन्दी से वाक़िफ़यत को इनके लिए इतना मुफ़ीद बना दिया है जिस का अन्दाज़ा करना इनकी किताबों और हिन्दी तर्जुमः क़ुर्आन पाक और हिन्दी “तफ़्सीर फ़ारूक़ी” को पढ़े बग़ैर मुश्किल है। क़ुर्आन मजीद की तफ़्सीर व तर्जुमः का काम ख़ासतौर से हिन्दी में बहुत मुश्किल है। हिन्दी पढ़ने वालों के मज़हब ज़ौक़ व मिज़ाज को सामने रखते हुए यह काम करना जितना ज़रूरी है उतना ही मुश्किल है लेकिन बस तौफ़ीक़ की ज़रूरत है जिस ने मौलाना से इतना बड़ा काम ले लिया है। इसके बहुत अच्छे नतीजे सुनने में आए हैं। अल्लाह तआ़ला मुफ़्ती साह़ब की उ़म्र और काम में बरकत अ़ता फ़रमाये और इनकी मेह़नत और कोशिशों को मज़ीद बार आवर करे।

(14) ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अ़तीक़ अह़मद क़ासमी मद्दज़िल्लहुलू आ़ली के क़लम से-

(उस्ताज़ फ़िक़ः-दारुल उलूम नदवतुल उ़लूमा, लखनऊ व नाज़िम मअ़हदुश्शरीआ़, लखनऊ)

हिन्दी ज़बान में इस्लामियात पर काम करने वालों में एक मोअ़तबर नाम जनाब “मौलाना मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी” का है, जो दारुल उलूम नद्वतुलू उ़लूमा के होनहार फ़ाज़िल और हिन्दी ज़बान में बहुत सी किताबों के मुसन्निफ़ हैं, मुतवाज़ेअ़, मिलनसार और धुन के पक्के हैं, इन्होंने क़ुर्आन करीम का हिन्दी तर्जुमः किया है जिस के मुतअ़द्दिद एडीशन शाया कर चुके हैं।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि मौलाना मौसूफ़ की यह दीनी ख़िद्मात अल्लाह की बारगाह में मक़्बूलियत ह़ासिल करें और बन्दगाने ख़ुदा को इन से ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ा पहुँचे।

(15) ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद ख़ालिद साह़ब ग़ाज़ीपुरी नदवी मद्दज़िल्लहुलू आ़ली के क़लम से-

उस्ताज़, ह़दीस, दारुल उलूम नदवतुल उ़लूमा, लखनऊ व सदर जमअ़ीयतुल मआ़रिफ़, लखनऊ

अल्लाह का लाख-लाख एह़सान व करम है कि इस अहम ज़रुरत को पूरा करने के लिए हमारे फ़ाज़िल ‘मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी’ ने एक मुकम्मल तफ़्सीर बज़बान हिन्दी में बड़ी मेह़नत व लगन से तैयार

की है और हिन्दुस्तानी माहौल को सामने रखते हुए सलफ़-ए-सालिहीन के तरीक़े को पेशे नज़र रखते हुए हिन्दुस्तानी लोगों की ख़िद्मत में एक नादिर व नायाब क़ुर्आनी तोह़फ़ा पेश किया है।

(16) ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती नियाज़ अहमद साह़ब नदवी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली-

(उस्ताज़ ह़दीस व फ़िक़ः व वकील कुल्लियतुश्शरीआ़ अर्थात सदर मुफ़्ती दारुल उलूम नद्वतुल उ़लमा, लखनऊ)

'मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी साह़ब' जो उलूम-ए-शरीआ में माहिर, नदवे के होनहार फ़ाज़िल जिन की क़ुर्आनी उलूम पर अच्छी निगाह है। यह हिन्दू मज़हबी किताबों से भी वाक़िफ़्यत रखते हैं और हिन्दू भाईयों के दर्मियान ख़ासतौर से हिन्दी ज़बान को ज़रिया बना कर दअ़वत का काम कर रहे हैं। इससे पहले इनका हिन्दी तर्जुमः क़ुर्आन का पैग़ाम नाम से कई एडीशन छप चुके हैं जो इनके मक़्बूलियत की दलील है।

चूँकि मैं इन्हें लगभग पन्द्रह बीस साल से दअ़वत के कामों में मशग़ूल देख रहा हूँ जो एक अच्छी फ़िक्र के हामिल हैं और अल्लाह तआ़ला इनके इसी जज़्बे की वजह से इन से बहुत से काम ले रहा है, जिसमें मदारिस, मकातिब और नौजवानों की तर्बियत भी शामिल है।

उम्मीद है कि हिन्दी जानने वालों के लिए यह तफ़ासीर मराज़ेअ़ की हैसियत रखेगी। अल्लाह तआ़ला इस्तिफ़ादे की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

(17) ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहीबुल्लाह क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

(मुबल्लिग़ मदरसः रह़मानिया, दरभंगा, बिहार)

हमें इस बात का एतिराफ़ करने में ख़ुशी हो रही है कि "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब" एक आ़लिमी इदारे दारुल् उलूम नद्वतुल् उ़लमा से फ़ारिग़ होने के साथ संस्कृत और हिन्दी ज़बान से वाक़िफ़ हैं। जो बराबर तमाम इन्सानों को जहन्नम से निकाल कर जन्नत में ले जाने का काम करते हैं, जिसके लिए उन्होंने बड़ी तअ़दाद में इस्लामी लिट्रेचर तैयार किया है, जो एक सह़ाफ़ी और जमअ़ीयत पयामे अम्न के सदर हैं।

जनाब मौलाना 'मुफ़्ती सरवर फ़ारुक़ी नदवी' ने ख़ासतौर से इस मुल्क के हिन्दी तब्क़े वालों की तरफ़ से शुक्रिया के मुस्तह़िक़ हैं, जिन्होंने इन्सानी हिदायत का एक बड़ा तोह़फ़ा तैयार किया है।

(17) मोहतरम जनाब अन्सार अह़मद सिद्दीक़ी साह़ब के क़लम से-

अध्यक्ष हिन्दी विभाग इस्लामिया डिग्री कालेज, इन्दौर, एम०पी०

हमारे लिए बड़े गर्व एवं प्रसन्नता की बात है कि हमारे प्रिय मित्र जनाब 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी' साह़ब ने हिन्दी भाषा में क़ुर्आन का अनुवाद और व्याख्या करने का बहुत महान प्रयास किया है। अल्लाह तआ़ला इन के इस प्रयास को सफ़ल बनाये यह हमारी दिली दुआ़ है और मुझे आशा ही नहीं बल्कि विश्वास है कि हिन्दी जगत में सभी लोग इससे लाभ उठाएँगे।

नोट- अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि वह हमारे और हमारी नस्ल और पूरी उम्मत के लिए क़ुर्आन मजीद की तिलावत, ख़िद्मत और इशाअ़त को ज़िन्दगी का मक़्सद बना दे, ज़िन्दगी गुज़ारे तो बस क़ुर्आन और शारेअ़ क़ुर्आन के साये में और मौत आए तो इसी ख़िद्मत को अन्जाम देते हुए।

10 मुहर्रम 1436 हिज्री

मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी
दारुल् उ़लूम नद्वतुल् उ़ल्मा, लखनऊ
04-11-2014

प्राक्कथन

अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों की रहनुमाई के लिए, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर अपना क़लाम नाज़िल किया जिसे कुर्आन के रुप मे जाना जाता है। इसके विभिन्न अनुवाद व व्याख्याएँ हुयीं जिसमें इस कुर्आन के पैग़ाम की विशेषता संक्षेप में इस तरह़ हैः-

"कुर्आन का पैग़ाम" (अनुवाद) की ख़ुसूसियत

1- कुर्आन के अनुवाद में आसान से आसान शब्दों का प्रयोग किया गया है ताकि मुस्लिम और गैर मुस्लिम दोनों, एक साथ समझ सकें, अगर कहीं वह शब्द, जो मुसलमानों के यहाँ बहुत प्रयोग होते हैं लेकिन हिन्दू भाई जानते भी नहीं। जैसे रह़मत, मग्फ़िरत आदि तो ऐसे शब्दों की हिन्दी, कोष्ठक में कर दी गई है।

2- इसमें यह भी ध्यान रखा गया है कि जो कुर्आन के शब्द है और उनके स्थान पर दूसरे शब्द भी हैं जैसे- ज़ालिम= अत्याचारी, करीब=समीप, अ़ज़ाब=यातना आदि, तो इस अनुवाद में वही शब्द प्रयोग किये गये हैं जो कुर्आनी होने के साथ समाज में भी बोले जाते हों।

3- अनुवाद में यह भी कोशिश की गई है कि अनुवाद मूल अ़रबी से ज़्यादा से ज़्यादा क़रीब हो, कहीं-कहीं ज़रुरत के अनुसार कोष्ठक में व्याख्या कर दी गई है और उन शब्दों से भी बचने की कोशिश की गई है जो हमारे ज़माने से पहले उचित थे, मगर आज वही शब्द दूसरे अर्थों में प्रयोग होने लगे हैं।

4- अनुवाद में विशेष रूप से मूल अ़रबी कुर्आन, फिर अब तक जितने भी अनुवाद हिन्दी, उर्दू, अ़रबी, इंग्लिश में हुए हैं, सबसे फ़ायदा उठाया गया है।

तफ़्सीर फ़ारुक़ी की ख़ुसूसियात

यह तफ़्सीर ख़ासतौर पर आ़म मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम लोगों के लिए तैयार की गई है। इसलिए ऐसे शब्द जो अ़वाम की समझ से बाहर हों नहीं लिखे गये और कोशिश इस तरह़ की गई है कि दर्स के तौर पर रोज़ाना एक-एक सबक़ पढ़ा जा सके। तफ़्सीर व तशरीह़ में मोअ़तबर उ़लम-ए-मोह़क़्क़िीन और सलफ़ व सालिह़ीन की तफ़्सीरों से ही फ़ायदा उठाया गया है ।

1- यह आसान हिन्दी भाषा में सात भागों पर आधारित तफ़्सीर है।

2- यह तफ़्सीर मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम दोनों को सामने रखते हुए आम भाषा में लिखी गई है ताकि कम पढ़े लिखे लोग भी फ़ायदा उठा सकें।

3- तफ़्सीर में ह़दीस और मोअ़तबर (Authentic) उलमा की तफ़्सीरों से फ़ायदा उठाया गया है।

4- इस में रोज़ (प्रतिदिन) पढ़ने के ह़िसाब से लगभग दस-दस आयतों का तर्जुमः फिर हर आयत की अलग-अलग तफ़्सीर बयान की गई है।

5- इस में सबसे पहले पूरी सूरः का खुलासा (संक्षेप) और उसके विषय, फिर लगभग दस-दस आयतों

का तर्जुमः उसके बाद हर आयत की अलग-अलग तफ़्सीर जिसमें सबसे पहले उसी आयत का शाने नुज़ूल (नाज़िल होने के वक़्त की हालत) फिर उसी आयत से सम्बन्धित हदीस और मोअ़तबर उ़लमा की तफ़्सीर की रौशनी में तफ़्सीर, फिर मसायल, एहकाम और उसी आयत से सम्बन्धित नई साइंसी तहक़ीक़ और ग़ैर मुस्लिमों की तरफ़ से होने वाले सवालों का बेहतर तरीक़े से जवाब के साथ उस से मुतअ़ल्लिक़ फ़ज़ायल जो सही हदीसों से साबित है ज़िक्र किया गया है।

6- इसमें अक्सर आयतों का शाने नुज़ूल ज़िक्र किया गया है ताकि ग़ैर मुस्लिम भाईयों के लिए क़ुर्आन के समझने में आसानी हो, लेकिन शाने नुज़ूल ज़िक्र करने का यह मतलब नहीं कि वह आयत केवल उसी समय या उन्हीं लोगों के लिए है बल्कि जब भी कहीं उस तरह के हालात हों तो वह आयत रहनुमाई करेगी। इसलिए कि क़ुर्आन क़ियामत तक हर ज़माने के तमाम इन्सानों के लिए है। किसी भी आयत के शाने नुज़ूल (क़ुर्आन के अवतरित होने का कारण) से यह न समझा जाए कि यह तो केवल उसी ज़माने के लिए है और अब हम से यह बात नहीं कही जा रही है।

इसी तरह अल्लाह पाक अपनी शान के मुताबिक़ जनाब मुहम्मद आरिफ़ अलाना साहब और उन सभी हज़रात को जिन्होंने किसी भी तरह का तआउन किया हो, अज्र अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाए और क़ुर्आन के ख़ादिमों में हिस्सा अ़ता फ़रमा कर क़ुर्आन की शिक्षानुसार अ़मल करने और सारी इन्सानी बिरादरी तक क़ुर्आन का पैग़ाम पहुँचाने की मुझे और मेरी नस्ल व पूरी उम्मत को तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। आमीन

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
दारुल् उलूम नद्वतुल उ़लमा, लखनऊ
4 रबीउस्सानी, 15-01-2016

إنا نحن نزلنا الذكر وإنا له لحافظون

कुर्आन की व्याख्या अगले पेज से शुरू हो रही है

पवित्र कुर्आन को पाक साफ़ (वुज़ू करके) शुद्ध होकर आदर के साथ अ़मल की नियत से ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही उच्चारण का भी ख़्याल रखें।

(भाग-57)

सूर-ए-ह़दीद (सूरः नं. 57)

आयत नं० 20 से पूरी सूरः

आयत नं० 20 से 29 तक

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ وَّ زِيْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ
الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطٰمًا ؕ وَ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّ مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٌ ؕ
وَ مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝ سَابِقُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ
وَ الْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝
مَاۤ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ وَ لَا فِيْۤ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝
لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَ لَا تَفْرَحُوْا بِمَاۤ اٰتٰىكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۝ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ
وَ يَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَ مَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَ اَنْزَلْنَا
مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَ اَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ
مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَ رُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَ جَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَ الْكِتٰبَ
فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَ قَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَ اٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ
وَ جَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّ رَحْمَةً ؕ وَ رَهْبَانِيَّةَ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا
حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ
يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَ يَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ
عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

अनुवाद-

(20) जान लो! कि दुनिया की ज़िन्दगी बस खेल और तमाशा है, और ज़ीनत और तुम्हारा आपस में
एक-दूसरे पर बड़ाई जताना, और माल और औलाद में एक- दूसरे से बढ़ जाने की चाह है; इसकी मिसाल
बारिश की है जिससे खेती (वनस्पति) ने किसान का दिल मोह लिया, फिर वह लहलहाने लगती है, और तुम
देखते हो कि वह पीली हो गयी है, फिर वह चूर-चूर हो जाती है, (अर्थात मड़ाई में); और आख़िरत में सख़्त
अ़ज़ाब भी है और अल्लाह से माफ़ी भी, और रज़ामन्दी भी; और दुनिया की ज़िन्दगी तो बस धोखे का सामान
है। (21) एक-दूसरे से आगे बढ़ो, अपने रब की माफ़ी और उस जन्नत की ओर जिसका फैलाव आसमान
और ज़मीन के फैलाव जैसा है, वह उन लोगों के लिए तैयार की गयी है, जो अल्लाह और उसके रसूलों पर
ईमान रखते हैं, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, जिसे चाहता है अ़ता करता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।
(22) कोई मुसीबत भी ज़मीन (मुल्क) पर नाज़िल नहीं होती और न तुम्हारे अपने ऊपर, मगर यह कि वह
एक किताब में (लिखी हुई) है, इससे पहले कि 'हम' उसको पैदा करें, यह अल्लाह के लिए आसान है; (23)
ताकि तुम उस चीज़ का अफ़सोस न करो जो तुमसे जाती रही, और उस चीज़ पर न इतराओ जो तुम ने
उसको दिया हो, और अल्लाह इतराने वालों और बड़ाई जताने वालों को पसंद नहीं करता। (24) जो खुद
भी कंजूसी करते हैं और लोगों को कंजूसी करने पर उभारते हैं, और जो व्यक्ति मुँह फेरेगा तो अल्लाह
बेनियाज़ (निस्पृह) और खूबियों वाला है। (25) 'हमने' अपने रसूलों को स्पष्ट निशानियों के साथ भेजा, और

उनके साथ किताब और मीज़ान (तराज़ू) उतारा, ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम हों; और लोहा भी उतारा, जिसमें बड़ी दहशत है, और लोगों के लिए बड़े फ़ायदे भी हैं, यह सब इसलिए किया गया है, ताकि अल्लाह जान ले कि कौन 'उसको' बिना देखे 'उसकी' और उसके रसूलों की मदद करता है, बेशक अल्लाह बड़ा ही शक्तिशाली, ज़बर्दस्त है। (26) और 'हमने' नूह़ और इब्राहीम को भेजा, और उन दोनों की नस्ल में नुबूवत और किताब को जारी रखा, तो उनमें से कुछ लोगों ने सीधी राह अपना ली, और बहुत से नाफ़रमान हो गये। (27) फिर 'हमने' उनके नक़्शेक़दम (पदचिन्हों) पर और भी रसूल भेजे, और फिर मरयम के बेटे ईसा को भेजा और उनको इंजील दी, और जिन लोगों ने उनकी पैरवी की, उनके दिलों में 'हमने' ममता और दया डाल दी, और (लज़्जतों से) संन्यास (ले लिया), तो उन्होंने खुद एक नई बात निकाल ली 'हमने' उसे उनके लिए फर्ज़ (अनिवार्य) नहीं किया था, मगर अल्लाह को राज़ी करने की चाह में,(अपने आप ही ऐसा कर लिया था) फिर वे उसकी रिआ़यत न कर सके, जैसा कि रिआ़यत करने का ह़क़ था, तो उनमें से जो लोग ईमान लाए थे, उनका बदला 'हमने' उन्हें अ़ता किया, और उनमें से बहुत से नाफ़रमान ही हैं। (28) ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो, अल्लाह से डरो और 'उसके' रसूल पर ईमान लाओ, 'वह' तुम्हें अपनी रह़मत का दोहरा ह़िस्सा अ़ता करेगा और तुम्हारे लिए एक नूर देगा, जिसमें चलोगे और तुम्हें माफ़ कर देगा, और अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है। (29) ताकि अह्‌ले किताब यह न समझें कि अल्लाह के फ़ज़्ल में से वे किसी चीज़ पर अधिकार न हासिल कर सकेंगे, और यह कि फ़ज़्ल तो अल्लाह ही के हाथ में है, जिसे चाहता है अ़ता करता है, और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है।

आयत नं० 20 से 29 तक की व्याख्या

20 اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ وَّ زِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ ؕ
كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ؕ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ
شَدِيْدٌ ۙ وَّ مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने दुनिया की कमज़ोरी बयान फ़रमाई और मोमिनों को सम्बोधित करते हुए कहा है कि यह दुनिया खेल तमाशा की तरह़ है, जिस में लोगों के दिल और जिस्म सभी मश्गूल (Busy) हो जाते हैं, पूरी ज़िन्दगी गुज़ार देते हैं और उन के दिल अल्लाह की याद और क़ियामत के दिन से ग़ाफ़िल होते हैं और ज़ीनत, लिबास, खाने-पीने, आ़लीशान मकानात, उ़म्दह सवारियों और दुनियावी जाह व ह़शमत (सस्ता) से बुलन्द होकर आख़िरत के बारे में उन्हें सोचने की तौफ़ीक़ ही नहीं होती और एक दूसरे के मुक़ाबिले में अपना ह़सब-नसब बयान कर के और कसरते माल व औलाद का ज़िक्र कर के घमण्ड करते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि दुनिया की इन वक़्ती चीज़ों की मिसाल बारिश की तरह़ है जिस की वजह से ज़मीन के पौधे लहलहा उठते हैं और उन पौधों को देखकर काश्तकार ख़ूब खुश होते हैं, वैसे ही जैसे काफिर दुनिया के ज़ीनत से खुश होते हैं। फिर वह पौधे सूख कर ज़र्द हो जाते हैं, फिर टुकड़े-टुकड़े

होकर भूसा बन जाते हैं और ज़मीन ऐसी वीरान हो जाती है कि जैसे वहाँ कभी हरा पौधा था ही नहीं। यही ह़ाल दुनिया का है, यहाँ की हर चीज़ वक़्ती है और हर नेअ़मत फ़ानी है और जो चीज़ रहने वाली है वह नेक आ़माल हैं, जो बन्दे के साथ आख़िरत तक जाएँगे और आग के अ़ज़ाब से उस की निजात का ज़रिया बनेंगे।

आयत के दूसरे ह़िस्से में जिस की शुरुआ़त وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ से होती है।

अल्लाह तआ़ला ने आख़िरत को फ़रामोश कर के दुनिया के खेल तमाशे में मशग़ूल होने वाले का अन्जाम यह बताया है कि क़ियामत के दिन ऐसे नाफ़रमानों को वह अ़ज़ाब में मुब्तिला करेगा और जो लोग आख़िरत की फ़िक्र करेंगे और अल्लाह के हुक़ूक़ अदा करेंगे, उन के सब गुनाह माफ़ कर दिये जाएँगे और उन का रब उन से राज़ी हो जाएगा।

आयत का आख़िरी ह़िस्सा وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ की ताईद (पुष्टि) करता है। ह़ज़रत सअ़ीद बिन जुबैर (रज़ि०) कहते हैं कि दुनिया धोके की चीज़ उन के लिए है जो आख़िरत की फ़िक्र से ग़ाफ़िल होते हैं और जो लोग आख़िरत की फ़िक्र में मश्ग़ूल (busy) रहते हैं, उन के लिए यह दुनिया बेहतरीन नेअ़मत यानी जन्नत तक पहुँचाने में मदद करती है।

21 سَابِقُوٓا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ
ءَامَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِۦ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

दुनिया और उस की नेअ़मतों की ह़िक़ारत और कमज़ोरी बयान करने के बाद इस आयते करीमा में आख़िरत में हमेशा की नेअ़मतें हैं। इसमें बन्दों को अल्लाह की मग़्फ़िरत, उस की रज़ा और जन्नत के हुसूल के लिए एक दूसरे से आगे बढ़ने की नसीह़त है और यह चीज़ें सच्चे दिल से तौबः, मग़्फ़िरत, गुनाहों से दूरी, नेक आमाल और अल्लाह की मख़्लूक़ के साथ भलाई करने से ह़ासिल होती हैं।

22-23 مَآ أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِيٓ أَنفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَٰبٍ مِّن قَبْلِ أَن نَّبْرَأَهَآ
إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَآ ءَاتَىٰكُمْ وَاللَّهُ
لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝

इन दो आयतों में अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि उस ने मख़्लूक़ात को पैदा करने से पहले उन से सम्बन्धित तमाम बातों को मुक़द्दर कर दिया था और अगर ज़मीन पर या इन्सानों को कोई मुसीबत आती है, तो वह 'लौह़े मह़फ़ूज़' में पहले से दर्ज होती है और जो बात उस के इ़ल्म में पहले से मुक़द्दर हो चुकी है उस का वाक़ेअ़ होना लाज़मी होता है। इन्सानी अ़क़्ल इन बातों का अह़ाता करने से क़ासिर (बेबस) है, लेकिन अल्लाह के लिए यह बातें बहुत ही आसान हैं, इसलिए कि उस का इ़ल्म और उस की क़ुद्रत हर चीज़ पर है।

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को यह बात इसलिए बताई है ताकि यह बात उन के दिमाग़ में दर्ज हो जाए और भलाई व बुराई जो भी उन्हें पहुँचे उस के बारे में उन्हें यक़ीन रहे कि यह अल्लाह की तक़्दीर थी जिसे बहरह़ाल होना ही था, ताकि जो चीज़ उन्हें नहीं मिली है उस का ग़म न करें और जो नेअ़मत

उन्हें मिली है उस पर इतराने न लगें, बल्कि अपने उस मौला का शुक्र अदा करें जिस ने उन्हें इस नेअ़मत से नवाज़ा है।

इसलिए आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह घमण्ड करने वाले को पसन्द नहीं करता। जो अल्लाह की नेअ़मतों को अपनी अ़क्ल व सलाहियत की तरफ़ जोड़ता है और सरकशी में आकर कहता है कि اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ۭ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ (सूरः ज़ुमर-49) यह तो "केवल मेरे इ़ल्म की वजह से दिया गया है, ह़ालाँकि वह नेअ़मतें उसे बतौर आज़माइश दी गई हैं"।

24 الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है इस सूरः का अस्ल विषय अल्लाह की राह में ख़र्च करने पर उभारना है, इसीलिए पिछली कई आयतों में अल्लाह की राह में ख़र्च करने पर उभारने के बाद अब इस आयते करीमा में कंजूसी की निन्दा की गई है कि जो लोग माल की मुह़ब्बत की वजह से कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी इस काम का हुक्म देते हैं, अल्लाह तआ़ला उन से बेनियाज़ है और उन के लिए क़ियामत के दिन सख़्त डाँट है।

आयत के आख़िरी ह़िस्से وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ में उन के इसी अन्जाम की तरफ़ इशारा किया गया है कि जो अल्लाह की याद और उस के हुक्मों से एराज़ करेगा, तो अपना ही नुक़्सान करेगा। अल्लाह तो बेनियाज़ है और तमाम तअ़रीफ़ों का अकेला ह़क़्दार है। उसे बन्दों के माल व दौलत की ज़रूरत नहीं है, वह तो यह चाहता है कि बन्दे उस का हुक्म बजा लाएँ ताकि दुनिया और आख़िरत में ख़ुद उन का भला हो।

25 لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया-ए-किराम की बेअ़सत का मक़्सद और उन तीन चीज़ों को बयान किया है जो उन अम्बिया की ताईद व तस्दीक़ के लिए उन्हें दी गई थीं। पहली चीज़ जो उन की ताईद (support) के लिए दी गई, दलायल व मोअ़जिज़ात थे और दूसरी चीज़ किताब-ए-इलाही थी, जिस में मख़्लूक़ के दीन व दुनिया की भलाई की हर बात बयान कर दी गई थी और तीसरी चीज़ को अल्लाह तआ़ला ने مِيْزَان फरमाया है, जिस की तफ़्सीर 'मुजाहिद' और 'क़तादा' वग़ैरह ने "عدل" के ज़रिये की है और 'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' ने कहा है कि इस से मुराद वह ह़क़ है जिस के ह़क़ होने की गवाही वह सभी लोग देते हैं जो अ़क़्ल सलीम रखते हैं।

इन तमाम चीज़ों के साथ अम्बिया की बेअ़सत का मक़्सद यह था कि जिस दअ़वते ह़क़ को फैलाने के लिए अल्लाह ने उन्हें मब्अ़ूस (भेजा हुआ) किया है, लोग उसे क़ुबूल करें सिर्फ़ अल्लाह की बन्दग़ी करें और अपनी ज़िन्दग़ी में अल्लाह के नाज़िल किये हुए क़ानूने अ़द्ल व इन्साफ़ को लागू करें, जिस की तफ़्सील अल्लाह की किताब और उस के रसूल (सल्ल०) की सुन्नत में मौजूद है।

क़ानूने जिनायात, क़िसास (बदला), हुदूद, मीरास के अह़काम और दूसरे हुक़ूक़े इन्सानी, सब इस में आते हैं। अल्लाह तआ़ला का बन्दों से तक़ाज़ा है कि इन तमाम क़वानीन व अह़काम को अपनी ज़िन्दगी में लागू करें।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

"हम ने लोहे को उतारा जिस में सख़्त हैबत व कुव्वत है और लोगों के लिए और भी बहुत से फ़ायदे हैं।" अर्थात जिन को अल्लाह तआ़ला ने अ़क़्ल से नवाज़ा है, वह किताबे इलाही की आयात सुनते ही उन पर अ़मल करने लगते हैं और अपनी ज़िन्दगी में अ़द्ल व इन्साफ़ को क़ायम करने लगते हैं और जो आ़म लोग उन के मुख़्लिस पैरोंकार होते हैं, उन पर जब शरीअ़त का क़ानून लागू होता है तो उन्हें क़ुबूल कर लेते हैं और निज़ाम-ए-अ़द्ल जारी हो जाता है और जो सरकशी की राह अख़्तियार करते हैं और निज़ामे अ़द्ल को दरहम बरहम करना चाहते हैं उन्हें हुकूमत की ताक़त निज़ामे अ़द्ल की पाबन्दी पर मजबूर कर देती है।

लोहे में अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों के लिए बहुत से फ़ायदे रखे हैं, तमाम जंगी सामान इसी से बनते हैं। विभिन्न प्रकार के उद्योग, बर्तनों की क़िस्में और खेती की चीज़े इसी से तैयार होती हैं, बल्कि यूँ कहना सही होगा कि इन्सानी ज़िन्दगी में इस्तेमाल होने वाली शायद ही कोई ऐसी चीज़ हो जिस में लोहे का किसी न किसी तरह़ इस्तेमाल न होता हो।

आयत के आख़िरी ह़िस्से में अल्लाह तआ़ला ने बयान फ़रमाया कि लोहे की पैदाइश का मक़्सद यह भी है कि इस से जिहाद में इस्तेमाल होने वाले हथियार तैयार हों, जिन्हें मुजाहिद 'फ़ी सबीलिल्लाह' इस्तेमाल करें और अल्लाह के सामने यह बात खुल कर आ जाए कि कौन उस की रज़ा के लिए केवल ग़ैबी बातों पर ईमान रखते हुए उस की राह में लोहे से बने अस्लहे का इस्तेमाल करता है और अल्लाह के दीन को ग़ालिब करने के लिए अपने जान की बाज़ी लगा देता है।

और अल्लाह तो बड़ी कुव्वत वाला और हर चीज़ पर ग़ालिब है, वह किसी की मदद का मुह़ताज नहीं है, उस ने तो बन्दों को जिहाद का इसलिए हुक्म दिया है ताकि उस की फरमाँबरदारी कर के उस की रज़ा और उस की जन्नत के ह़क़्दार बनें।

26 وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَٰهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا ٱلنُّبُوَّةَ وَٱلْكِتَٰبَ ۖ فَمِنْهُم مُّهْتَدٍ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَٰسِقُونَ ﴿٢٦﴾

इस आयत में उन दो ख़ास नबियों का ज़िक्र है, जिन के बाद आने वाले तमाम अम्बिया उन्हीं की नस्ल से हुए। ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) के बाद जितने अम्बिया हुए सब उन्हीं की नस्ल से हुए और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के बाद जितनी भी आसमानी किताबें नाज़िल हुईं और जितने अम्बिया व रसूल हुए सब उन्हीं की नस्ल से हुए और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के बाद जितनी भी आसमानी किताबें नाज़िल हुईं और जितने अम्बिया व रसूल हुए सब उन्हीं की औलाद की नस्ल से थे और जिन लोगों की हिदायत के लिए वह अम्बिया आए वह दो जमाअ़तों में तक़्सीम (devide) हो गये, कुछ लोगों ने तो उन की दअ़वत क़ुबूल की, अल्लाह की वह्दानियत का इक़्रार किया और नेक अ़मल वाली ज़िन्दगी गुज़ारी और अक्सर ने सरकशी की राह अपनाई, अल्लाह की किताब को पीठ पीछे डाल दिया।

27 ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ ۖ وَجَعَلْنَا فِي
قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً ۚ وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ
اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۖ فَآتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٢٧﴾

अल्लाह तआ़ला ने नबियों और रसूलों का यह सिल्सिला क़ायम रखा। ह़ज़रत मूसा, इलियास, दाऊद, सुलेमान और दूसरे नबी आते रहे यहाँ तक कि 'ह़ज़रत ईसा बिन मरयम' को अल्लाह तआ़ला ने अपना रसूल बनाकर भेजा जो ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की वंश में से थे, इसलिए कि उन की माँ मरयम (अ़लै०) आले इब्राहीम में से थीं।

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) को इन्जील अ़ता की, ताकि वह इस के मुताबिक़ लोगों की रहनुमाई (guidance) करें और उस ने उन के ह़वारियों यानी अव्वलीन पैरुकारों के दिलों में अपनी तमाम मख़्लूक़ के लिए नर्मी और मुह़ब्बत डाल दी थी, इसलिए कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) जब तक ज़िन्दा रहे, उन्हें नसीह़त करते रहे कि वह यहूदियों की तरह़ न बनें, जिन के दिल अल्लाह तआ़ला ने सख़्त बना दिये थे, बल्कि अल्लाह की मख़्लूक़ के साथ मुह़ब्बत और बुर्दबारी का बर्ताव करें। इन तअ़लीमात का असर यह हुआ कि उन के दिल नर्मी और मुह़ब्बत वाले बन गए और दिल की कठोरता से नफ़रत करने लगे।

अल्लाह तआ़ला ने सूरतुल् माइदा आयत नं० (82) में उन की इसी नर्मी के बारे में फ़रमाया हैः-

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۖ وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُم مَّوَدَّةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصَارَىٰ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيسِينَ وَرُهْبَانًا وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٨٢﴾

"यक़ीनन आप ईमान वालों का सब से ज़्यादा दुश्मन यहूदियों और मुश्रिकों को पाएँगे और ईमान वालों से सब से ज़्यादा दोस्ती के क़रीब आप यक़ीनन उन्हें पाएँगे जो अपने आप को नसारा कहते हैं। यह इसलिए कि उन में उ़लमा और अ़िबादत के लिए सन्यासी लोग पाए जाते हैं और इस वजह से कि वह घमण्ड नहीं करते हैं"।

وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की पैरवी करने वाले इन ख़ूबियों के साथ एक ख़राबी में मुब्तिला (Involve) हो गए उन्होंने अल्लाह तआ़ला की अ़िबादत की ग़र्ज़ से ईस्वी में एक बिद्अ़त निकाल ली, जिसे क़ुर्आन करीम ने 'रहबानियत' (सन्यास) का नाम दिया है और जिस का मतलब यह है कि आदमी अल्लाह की रज़ा के लिए दुनिया और जो कुछ उसमें है अलग होकर एक कोने में बैठकर अल्लाह की याद में मशग़ूल हो जाए लेकिन अ़मली तौर पर वह लोग इस की पाबन्दी न कर सके, बल्कि अपने ईसा (अ़लै०) के दीन से दूर होते गए और दुनियादार बादशाहों की मर्ज़ी के मुताबिक़, अल्लाह की किताब (इन्जील) को बदल डाला और उस रहबानियत (सन्यास) को छोड़ दिया जिसे उन्होंने ख़ुद से ईजाद किया था, केवल कुछ ही लोग सह़ी दीन पर बाक़ी रहे, जिन का ज़िक्र क़ुर्आन करीम ने आयत के आख़िरी ह़िस्से में किया है और कहा है कि فَآتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ "जो लोग शिर्क व बिद्अ़त से बचे रहे और ईसा (अ़लै०) के सह़ी दीन पर क़ायम रहे और नबी करीम (सल्ल०) की बेअ़सत के बाद उन पर ईमान लाए अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अज्र अ़ज़ीम से नवाज़ा"।

28 يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ٱتَّقُوا ٱللَّهَ وَءَامِنُوا بِرَسُولِهِۦ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِن رَّحْمَتِهِۦ وَيَجْعَل لَّكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِۦ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

‘ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा’ के क़ौल के मुताबिक़ इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) के ज़माने के यहूद व नसारा से कहा कि जो पिछले अम्बिया-ए-किराम पर ईमान लाने का दावा करते थे और उन्हें उन के दावे के मुताबिक़ अहले ईमान को सम्बोधित कर के अल्लाह से डरने और नबी करीम (सल्ल०) पर ईमान लाने की दअ़वत दी गई है और कहा गया है कि अगर उन्होंने इस दअ़वत को क़ुबूल कर लिया और इस के मुताबिक़ अ़मल किया तो उन्हें दो गुना अज्र मिलेगा, एक अज्र पिछले नबी पर ईमान लाने का और दूसरा अज्र नबी करीम (सल्ल०) पर ईमान लाने का।

‘बुख़ारी’ व ‘मुस्लिम’ ने ह़ज़रत अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि०) से रिवायत की है, नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तीन क़िस्म के लोगों को दोहरा अज्र मिलेगा, उन में पहला अहले किताब का वह आदमी है जो अपने नबी पर ईमान लाया और मुझ पर ईमान लाया। ह़ज़रत सई़द बिन जुबैर (रज़ि०) कहते हैं जब अहले किताब ने फ़ख़्र किया कि उन्हें दोहरा अज्र मिलेगा तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उम्मते मुह़म्मदिया के बारे में नाज़िल फ़रमाई।

अल्लाह तआ़ला ने आगे फ़रमाया وَيَجْعَل لَّكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ

“क़ियामत के दिन तुम्हें एक नूर मिलेगा जिस की मदद से ‘पुल सिरात’ पार कर जाओगे”।

जैसा कि सूरः अल् तह़रीम आयत नं० (8) में आया है نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ

“उन का नूर उन के आगे दौड़ता होगा”। बाज़ मुफ़स्सिर ने نُورًا تَمْشُونَ بِهِ की तफ़्सीर “दीन का वाज़ेह़ रास्ता” किया है।

सूरः अनफ़ाल आयत नं० (29) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है:-

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا إِن تَتَّقُوا ٱللَّهَ يَجْعَل لَّكُمْ فُرْقَانًا “ऐ ईमान वालों! अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम को फ़ुर्क़ान देगा” यानी तुम्हारे लिए ह़क़ को वाज़ेह (clear) कर देगा।

29 لِّئَلَّا يَعْلَمَ أَهْلُ ٱلْكِتَٰبِ أَلَّا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَىْءٍ مِّن فَضْلِ ٱللَّهِ وَأَنَّ ٱلْفَضْلَ بِيَدِ ٱللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ ۚ وَٱللَّهُ ذُو ٱلْفَضْلِ ٱلْعَظِيمِ

इस आयते करीमा का तअ़ल्लुक़ ऊपर वाली आयत से है और मतलब यह है कि ऐ अहले ईमान! अगर तुम अल्लाह से डरोगे और अपने रसूल पर ईमान लाओगे तो वह तुम्हें ऐसा फ़ुर्क़ान देगा जिस का ज़िक्र ऊपर किया गया, ताकि वह अहले किताब जो मुसलमान नहीं हुए हैं जान लें कि अल्लाह का वह फ़ज़्ल जो उस ने बतौर ख़ास मुसलमानों को दिया है, उन के अख़्तियार की चीज़ नहीं है कि उस में से जो चाहे अपने लिए ख़ास कर ले और कहे कि अल्लाह ने उन्हें तमाम मख़्लूक़ात पर फ़ज़ीलत दी है, बल्कि तमाम फ़ज़्ल सिर्फ़ अल्लाह के अख़्तियार में है और उस ने इस में से उम्मते मुह़म्मदिया को वह फ़ज़्ल दिया है जो उन्हें नहीं दिया गया यानी नुबूव्वत, जिस से अल्लाह ने मुह़म्मद (सल्ल०) को सरफ़राज़ किया और मोमिनीन उन पर ईमान लाए और अज्र अ़ज़ीम के ह़क़दार हुए।

(भाग–58)

सूर–ए–मुजाद्ला

(सूरः नं. 58)

सूरः मुजादूला का संक्षिप्त परिचय

नाम– इस का नाम "**المجادلة**" पहली आयत के लफ़्ज़ "**تجادلك**" से लिया गया है।

ज़माना नुज़ूल– 'कुर्तुबी' लिखते हैं कि यह सूरः सभी के नज़्दीक मदनी है।

आयत नं० 1 से 10 तक

*

قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝ الَّذِينَ يُظَاهِرُونَ
مِنكُم مِّن نِّسَائِهِم مَّا هُنَّ أُمَّهَاتِهِمْ ۖ إِنْ أُمَّهَاتُهُمْ إِلَّا اللَّائِي وَلَدْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُورًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ۝
وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِن نِّسَائِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مِّن قَبْلِ أَن يَتَمَاسَّا ۚ ذَٰلِكُمْ تُوعَظُونَ بِهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
خَبِيرٌ ۝ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِن قَبْلِ أَن يَتَمَاسَّا ۖ فَمَن لَّمْ يَسْتَطِعْ فَإِطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ۚ ذَٰلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۗ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُبِتُوا كَمَا كُبِتَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ وَقَدْ أَنزَلْنَا آيَاتٍ
بَيِّنَاتٍ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۚ أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيدٌ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ مَا يَكُونُ مِن نَّجْوَىٰ ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَىٰ
مِن ذَٰلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ۖ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا عَنِ
النَّجْوَىٰ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَاجَوْنَ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ
فِي أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ ۚ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا ۖ فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ إِنَّمَا النَّجْوَىٰ مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ
الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

अनुवाद–

(1) अल्लाह ने सुन ली, उस औ़रत की बात, जो तुमसे अपने पति के बारे में झगड़ती थी, और अल्लाह से शिकायत कर रही थी और अल्लाह तुम दोनों की बात सुन रहा था, निश्चय ही अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (2) तुममें से जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार कर बैठते हैं (अर्थात माँ के समान कह देते हैं), उनकी माएं वे नहीं हैं, उनकी माएँ तो वही हैं जिन्होंने उनको जन्म दिया, और बेशक वे एक बेहूदी और झूठी बात कहते हैं, और अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। (3) और जो लोग अपने पत्नियों से ज़िहार (अर्थात माँ कह) कर बैठें, फिर जो बात उन्होंने कही थी उससे रुजूअ़ करें, तो इससे पहले कि दोनों एक-दूसरे को हाथ लगाएं, एक गर्दन (अर्थात गुलाम) आज़ाद करनी होगी, (यह वह बात है) जिसकी तुम को नसीहत की जाती है, और तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उसकी ख़बर रखता है; (4) तो जिसको गुलाम हासिल न हो, तो वह लगातार दो माह के रोज़े रखे, इससे पहले कि वे दोनों एक-दूसरे को हाथ लगाएं, फिर जिससे यह भी न हो सके तो साठ मोहताजों को खाना खिलाए, यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल

पर ईमान ले आओ, और यह अल्लाह की सीमाएँ हैं, और इन्कार करने वालों के लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है। (5) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करते हैं, वे ऐसे ज़लील होंगे, जैसे उनसे पहले लोग ज़लील हुए, और हमने स्पष्ट आयतें उतारीं, और इन्कार करने वालों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब होगा; (6) जिस दिन उन सब को अल्लाह दोबारा ज़िन्दा करेगा, फिर उनका सब किया हुआ उनको बतला देगा, अल्लाह ने उसको सुरक्षित कर रखा है, और यह लोग उसको भूल गये हैं, और अल्लाह तो हर चीज़ पर गवाह है। (7) क्या आप ने नहीं देखा! कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, कभी ऐसा नहीं होता, कि तीन आदमियों की छिपी बात हो, और उनके बीच चौथा 'वह' (अल्लाह) न हो, और न पांच (आदमियों) की होती है जिसमें छटा 'वह' न होता हो, और न उससे कम की कोई होती है और न उससे ज़्यादा की, मगर 'वह' उनके साथ होता है जहां कहीं भी हों, फिर जो कुछ भी उन्होंने किया होगा क़ियामत के दिन 'वह' उन्हें बता देगा, बेशक अल्लाह को हर चीज़ का इल्म है। (8) क्या तुमने उन्हें नहीं देखा!! जिन्हें काना फूसी से रोका गया था, फिर वे वही करते रहे जिससे उन्हें रोका गया था, और यह तों गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की कानाफूसी करते हैं, और जब तुम्हारे पास आते हैं तो ऐसे दुआ़ देते हैं जैसे अल्लाह ने आप को दुआ़ नहीं दी, और अपने जी में कहते हैं जो कुछ हम कहते हैं उस पर अल्लाह हमें अ़ज़ाब क्यों नहीं देता? उनके लिए जहन्नम ही काफ़ी है, उसी में ये दाख़िल होंगे, वह तो बुरा ठिकाना है। (9) ऐ ईमान वालो! जब तुम आपस में कानाफूसी करो तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की बातें न करो, बल्कि भलाई और परहेज़गारी की बातें करो, और अल्लाह से डरो 'जिसके' सामने तुम सब इकट्ठा किये जाओगे, (10) यह कानाफूसियाँ शैतान की ओर से हैं ताकि ईमान वाले (उनसे) दुःखी हों, हालांकि अल्लाह की इजाज़त के बिना वे उन्हें नुक़सान नहीं पहुंचा सकते, और मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

आयत नं० 1 से 10 तक की व्याख्या

1 قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِیْ تُجَادِلُكَ فِیْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِیْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ یَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌۢ بَصِیْرٌ ۝ *

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि यह आयते करीमा 'ह़ज़रत ख़ौला बिन्ते सअ़ल्बा अन्सारिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा' और उन के पति औस बिन सामित रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के बारे में नाज़िल हुई थी। 'औस बिन सामित' ने गुस्से में आकर उन से कह दिया कि तुम मुझ पर मेरी माँ की पीठ की तरह़ हो और उन दिनों 'ज़िहार' को तलाक़ माना जाता था और इन दोनों के छोटे-छोटे बच्चे भी थे और दोनों की उ़म्र भी ज़्यादा हो चुकी थी। इसलिए ह़ज़रत ख़ौला रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आईं और पूरा किस्सा सुनाया, अपना और अपने शौहर के साथ अपने बच्चों की परेशानह़ाली बयान की।

एक सह़ी रिवायत में है उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! 'औस' मेरी जवानी खा गए और मैंने अपना पेट उन के लिए फैलाया और जब मेरी उ़म्र ज़्यादा हो गई और बच्चा होना बन्द हो गया, तो उन्होंने मुझ से 'ज़िहार' कर लिया, तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि इस बारे में तो मुझ पर कोई वह़्य नाज़िल नहीं हुई है। 'ख़ौला' ने कहा या रसूलल्लाह! हर चीज़ के बारे में आप पर वह़्य नाज़िल हुई है

और सिर्फ़ यही मामला रह गया है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हाँ, बात ऐसी ही है जो मैंने कही है तो 'ख़ौला' ने कहा कि मैं अल्लाह से शिकायत करती हूँ उस के रसूल से नहीं तो यह आयत नाज़िल हुई।

'इमाम अह़मद' और 'इमाम बुख़ारी' ने 'ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' से रिवायत नक़्ल की है, उन्होंने कहा कि सारी तअ़रीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो तमाम आवाज़ों को सुनता है, झगड़ने वाली औ़रत (ख़ौला) नबी करीम (सल्ल०) के पास आईं और बात करने लगीं और मैं घर के एक कोने में थी, लेकिन उन की बात नहीं सुन पा रही थी, तो अल्लाह तआ़ला ने قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ नाज़िल फ़रमाया।

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ का मतलब यह है कि अल्लाह ने उन का शिकवा क़ुबूल किया और उस का जवाब दिया।

وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ का मतलब यह है कि 'ज़िहार' की वजह से 'ख़ौला' को अपने, अपने शौहर और बच्चों के बारे में जो फ़िक्र और परेशानी हो गई थी, उस का इज़्हार अपने रब के सामने कर रही थीं और दुआ़ कर रही थीं कि वह उन की इस परेशानी को दूर कर दे।

تَحَاوُرَكُمَا का मतलब यह है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) 'ख़ौला' की बात सुनकर कहते कि तुम अपने शौहर पर ह़राम हो गई तो वह कहतीं, अल्लाह की क़सम! औस ने तलाक़ का शब्द इस्तेमाल नहीं किया है, मैं अपनी मोह़ताजी, फ़ाक़ा कशी और बेबसी का शिकवा अल्लाह से करती हूँ। मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं, अगर इन को 'औस' के पास छोड़ देती हूँ तो वह सब बर्बाद हो जाएँगे और अगर अपने पास रखती हूँ तो वह भूके रहेंगे और अपना सर आसमान की तरफ़ उठा कर कहने लगी कि ऐ अल्लाह! मैं तुझ ही से शिकवा करती हूँ।

2-4 اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآئِهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ؕ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓئِيْ وَلَدْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا
مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝ وَ الَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ
رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ؕ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ
مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ؕ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ
اللّٰهِ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

इन आयात में एक सह़ाबिया ख़ातून रज़ियल्लाहु अ़न्हा के एक वाक़िये का और शौहर बीवी से मुतअ़ल्लिक़ एक मस्ले का ज़िक्र है। जिस औ़रत का यह वाक़िआ़ है उस के बारे में चूंकि الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا फ़रमाया है इसलिए इस सूरः का नाम सूरः अल् मुजाद्ला मशहूर हो गया। यह समझना चाहिए कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पहले अहले अ़रब में शब्द तलाक़ के अ़लावा औ़रत को अपने ऊपर ह़राम करने के दो तरीक़े और भी थे, एक 'ईला' और एक 'ज़िहार'।

ईला-

'ईला' इस बात को कहते हैं कि शौहर-बीवी से कहकर क़सम खा लेता है कि मैं तुम्हारे पास नहीं आऊँगा, इस का बयान सूरः बक़रः में لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ की तफ़्सीर में गुज़र चुका है।

और दूसरा तरीक़ा यह था कि यूँ कह देते थे "اَنْتِ عَلَيَّ كَظَهْرِ اُمِّيْ" (तू मुझ पर ऐसी है जैसे मेरी

माँ की कमर यानी हराम है) इस को 'ज़िहार' कहा जाता था, चूंकि इस में शब्द 'ज़ुहर' आता है जो पीठ के अर्थ में है इसलिए इस का नाम 'ज़िहार' मशहूर हो गया। हदीस और फ़िक़ः की किताबों में भी इस को 'ज़िहार' ही के नाम से ज़िक्र किया जाता है।

आयात 'इज़्हार' का शाने नुज़ूल-

'हज़रत ख़ौला बिन्त सअलबा रज़ियल्लाहु अन्हा' 'औस बिन सामित' (रज़ि०) की बीवी थीं, एक दिन उन के पति ने अपना ख़ास काम करने का इरादा किया। 'हज़रत ख़ौला' ने इस वजह से इन्कार कर दिया कि उन के शौहर (पति) को तक्लीफ़ थी और इसमें उन की ख़ैर ख़्वाही थी। जैसे ही बीवी ने इन्कार किया शौहर ने यूँ कह दिया किः-

"اَنتِ عَلَیَّ کَظَھرِ اُمِّی" (तू मुझ पर ऐसी है जैसे मेरी माँ की कमर यानी हराम) कह तो दिया लेकिन बाद में पछताने लगे और अपनी बीवी से कहा कि मैं तो यही समझ रहा हूँ कि अब तू मुझ पर हराम हो गई है।

यह सुनकर 'हज़रत ख़ौला' ने कहा कि अल्लाह की क़सम यह 'तलाक़' नहीं है। इस के बाद वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मेरे शौहर ने जब मुझ से निकाह किया था उस वक़्त मैं जवान थी, मालदार थी, मेरे शौहर ने मेरा माल भी खा लिया और मेरी जवानी भी फ़ना कर दी अब जबकि मेरे ख़ानदान वाले बिखर चुके और मेरी उम्र बड़ी हो गई तो उस ने मुझ से 'ज़िहार' कर लिया अब उसे इस पर नदामत है, तो क्या कोई सूरत है कि मैं और वह मिल कर रह सकें।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तू उस पर हराम हो गई। 'हज़रत ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा' ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! क़सम उस ज़ात की जिस ने आप पर किताब नाज़िल फ़रमाई है, मेरे शौहर ने तलाक़ का शब्द नहीं बोला उस से मेरी औलाद भी है और वह मुझे सब से ज़्यादा महबूब भी है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फिर वही फ़रमाया कि तू उस पर हराम हो गई। हज़रत ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा कि मैं अल्लाह की बारगाह में अपनी ज़रूरत पेश करती हूँ मैं अपने शौहर के साथ लम्बे वक्त तक रही हूँ। आप (सल्ल०) ने फिर वही फ़रमाया कि मैं तो यही समझता हूँ कि तू उस पर हराम हो गई और तेरे बारे में मुझ पर कोई हुक्म नाज़िल नहीं हुआ।

वह इसी तरह अपनी बात करती रहीं और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) इसी तरह जवाब देते रहे, आख़िर में उस ने कहा कि मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं अगर शौहर के पास छोड़ दूँ तो बर्बाद हो जाएँगे और अगर अपने पास रख लूँ तो भूके मर जाएँगे, इतना कहकर आसमान की ओर सर उठाया और कहने लगें कि ऐ अल्लाह! मैं आप की बारगाह में अपनी तक्लीफ़ को पेश करती हूँ आप अपने नबी (सल्ल०) पर ऐसा हुक्म नाज़िल फ़रमाइए जिस से मेरी परेशानी दूर हो जाए। यह 'ज़िहार' का पहला वाक़िआ था।

'हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा' ने हज़रत ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा कि तू अपनी बात

बन्द कर, देखती नहीं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के चेहरे मुबारक पर क्या आसार ज़ाहिर हो रहे हैं, (उस वक़्त रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर वह्य नाज़िल होनी शुरु हो गई थी) आप पर जब वह्य नाज़िल होती तो ऐसा मालूम होता कि जैसे हल्की सी नींद में हों, जब वह्य ख़त्म हो गई तो आप (सल्ल०) ने हज़रत ख़ौला रज़ियल्लाहु अ़न्हा से फ़रमाया कि तू अपने शौहर को बुलाकर ला, जब वह आ गए तो आप (सल्ल०) ने قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ से आयात पढ़कर सुनाईं जिस में 'ज़िहार' और कफ़्फ़ारे का हुक्म है।

'हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' ने वाक़िआ़ बयान कर के फ़रमाया कि बाबरकत है वह जो तमाम आवाज़ों को सुनता है। जो औ़रत रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बातचीत कर रही थी मैं उस की बातें उसी घर में होते हुए न सुन पाई जहाँ बात हो रही थी और अल्लाह तआ़ला ने उस की बात सुन ली और आयते करीमा नाज़िल फ़रमा दी।

अब पहली आयत का अनुवाद "बेशक अल्लाह तआ़ला ने उस औ़रत की बात सुन ली जो आप (सल्ल०) से अपने शौहर के मामले में झगड़ रही है और अल्लाह तआ़ला से शिकायत कर रही है और अल्लाह तआ़ला तुम दोनों की बातचीत सुन रहा था और अल्लाह तआ़ला सब कुछ सुनने वाला सब कुछ देखने वाला है"।

चूंकि हज़रत ख़ौला रज़ियल्लाहु अ़न्हा के शौहर (पति) ने 'ज़िहार' कर लिया था और उन के शौहर यूँ समझ रहे थे कि तलाक़ हो गई और वह समझ रही थी कि तलाक़ नहीं हुई और इसी बात को लेकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुई थीं, इसलिए पहले तो 'ज़िहार' की शरई हैसियत बताई, फिर उस का कफ़्फ़ारा बयान फ़रमाया। इर्शाद फ़रमायाः-

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآئِهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ

कि तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार कर लेते हैं (यानी यूँ कह देते हैं कि तू मेरे हक़ में ऐसी है जैसी मेरी माँ की पुश्त मुझ पर हराम है) ऐसा कह देने से वह उन की माएँ नहीं बन जाती हैं, न वह पहले उन की माएँ थीं और न अब उन पर माँओं का हुक्म लागू होगा (जिस की वजह से आइन्दा के लिए हुरमत आ जाए।)

اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓئِيْ وَلَدْنَهُمْ उनकी माएँ तो बस वही हैं जिन्होंने उन को जना है" माएँ होने के एतिबार से हुरमत का तअ़ल्लुक़ उन्हीं से है।

'ज़िहार' की मज़म्मत-

وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا रही यह बात कि शौहर अगर बीवी से कह दे कि तुम मेरे लिए माँ की तरह से हो तो उन का यह कहना बुरी बात है और झूठी बात है, इस बात के कहने से हमेशा की हुरमत दाईमी का हुक्म नहीं दिया जाएगा, लेकिन गुनाह ज़रूर है क्योंकि इस से अल्लाह तआ़ला के क़ानून को बदलना लाज़िम आता है। जब अल्लाह तआ़ला ने बीवी को शौहर के लिए हलाल कर दिया तो अब वह कैसे कहता है कि यह मुझ पर ऐसी है जैसे मेरे माँ की पीठ है।

وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ (और बेशक अल्लाह तआ़ला माफ़ फ़रमाने वाला, बख़्शने वाला है)

गुनाह की तलाफ़ी कर ली जाए और ज़िहार का जो कफ़्फ़ारा अल्लाह तआ़ला ने मुक़र्रर (fix) फ़रमाया है उस की अदाएगी कर दी जाए अल्लाह तआ़ला गुनाह को माफ़ कर देगा।

ज़िहार का कफ़्फ़ारा–

وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ (الى قوله تعالىٰ) فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا इस में तर्तीब से तीन चीज़ें ज़िक्र फ़रमाईं। इर्शाद फ़रमाया कि "जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार कर लेते हैं फिर चाहते हैं कि जो बात कही है उस की तलाफ़ी करें, सो जिस किसी ने भी ऐसा किया उसे चाहिए कि वह एक ग़ुलाम आज़ाद करे और ग़ुलाम आज़ाद करने से पहले मियाँ-बीवी आपस में एक दूसरे को न छुएँ यह مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا का अनुवाद है।) यह शब्द फ़रमाकर बता दिया कि ग़ुलाम आज़ाद करने से पहले न जिमाअ़ (सम्भोग) करें और न जिमाअ़ की कोई हरकत ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ (यह वह चीज़ है जिस की तुम्हें नसीहत की जाती है) यानी यह कफ़्फ़ारा गुनाह माफ़ कराने का ज़रिया भी है और आइन्दा के लिए ऐसे शब्द बोलने से रोकने वाला भी है।

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ (और अल्लाह तुम्हारे कामों से बाख़बर है) अगर किसी ने हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी की, कफ़्फ़ारा अदा करने से पहले जिमाअ़ (सम्भोग) कर लिया तो उस की सज़ा मिल सकती है।)

फिर फ़रमाया فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا

(सो जो शख़्स ग़ुलाम पाए तो उस के ज़िम्मे लगातार दो महीने के रोज़े रखना है इस से पहले कि आपस में एक दूसरे को छुएँ) मतलब यह है कि अगर किसी को ग़ुलाम आज़ाद करने की क़ुद्रत न हो तो वह दो माह के लगातार रोज़े रखे और जब तक बिला नागा पूरे दो माह के रोज़े न रख ले दोनों मियाँ-बीवी अलग रहें।

फिर फ़रमाया فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا

(सो जिसे इन रोज़े रखने की ताक़त न हो तो उसके ज़िम्मे साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना है।)

ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ (यह इसलिए है कि तुम अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ) यानी उस के सब हुक्मों की तस्दीक़ करो और ईमान पर जमे रहो) (और यह अल्लाह की हुदूद हैं इन के मुताबिक़ अ़मल करो, ह़द से आगे मत बढ़ो और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।)

ज़िहार के मसायल

मस्ला– अगर किसी ने अपनी बीवी को अपनी माँ के पेट या रान या शर्मगाह से तश्बीह (संज्ञा) दे दी तब भी 'ज़िहार' हो जाएगा।

मस्ला– अगर अपनी बहन या फूफी या रज़ाई माँ के अअ़ज़ा (अंग) पीठ, पेट, रान, शर्मगाह (गुप्त अंग) से तश्बीह (संज्ञा) दे दी तब भी 'ज़िहार' हो जाएगा।

मस्ला– अगर किसी ने अपनी बीवी से कहा कि तुम मेरी माँ की तरह़ से हो (किसी अंग से तश्बीह

नहीं दी) तो उस के बारे में उस से दर्याफ़्त किया जाएगा कि तुम्हारी नियत क्या थी? अगर यूँ कहे कि मैंने 'तलाक़' की नियत से कहा था तो 'तलाक़ बायन' मानी जाएगी और अगर यूँ कहे कि मेरी नियत ज़िहार की थी तो ज़िहार का हुक्म लागू होगा और यूँ कहा कि मेरी कुछ भी नियत न थी और यूँ ही कहा मेरा यह मतलब था कि जैसे मेरी माँ मोहतरम हैं उसी तरह़ तुम भी क़ाबिले एह़तिराम हो तो इस से कुछ न होगा।

मस्ला– ग़ुलाम आज़ाद करने में ग़ुलाम का मर्द और बालिग़ होना ज़रूरी नहीं है। मर्द हो या औरत, मुसलमान हो या काफ़िर मर्द बालिग़ हो या नाबालिग़ हर एक के आज़ाद करने से कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा मगर अन्धा या दोनों हाथ या दोनों पैर कटे हुए न हों।

मस्ला– जब दो महीने के रोज़े रखे तो उस में रमज़ान के रोज़े हिसाब में नहीं लगा सकते, क्योंकि वह पहले से फ़र्ज़ हैं और यह भी ज़रूरी है कि उन में से कोई रोज़ा उन दिनों में न हो जिन में शरअ़न रोज़ः रखना मना है।

मस्ला– अगर किसी ने ज़िहार का कफ़्फ़ारा अर्थात रोज़े रखने के दर्मियान अगर रात जो जिमाअ़ (सम्भोग) कर लिया तो नये सिरे से रोज़े रखना लाज़िम होगा (और दिन को जिमाअ़ करने से तो रोज़ा ही टूट जाएगा जिस से लगातार वाली शर्त ख़त्म हो जाएगी है और चूंकि مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَّا में रात के जिमाअ़ करने को भी शामिल है इसलिए रात को जिमाअ़ (सम्भोग) करने से भी लगातार वाली शर्त की मुख़ालिफ़त हो जाएगी।

मस्ला– खाना खिलाने की सूरत में अगर एक मिस्कीन को साठ दिन सुबह़ शाम पेट भर के खाना खिलाया या साठ मिस्कीनों को एक दिन में सुबह़ शाम पेट भर कर खाना खिला दिया तो कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा। अगर साठ दिन तक किसी मिस्कीन को आधा साअ़ गेहूँ या एक साअ़ खजूर या जौ या उन की क़ीमत देता रहा तो इन सूरतों में भी कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा।

मस्ला– अगर 'ज़िहार' करने के बाद औरत को तलाक़ दे दी या मर गई तो ख़त्म हो जाएगा, लेकिन तौबः करना लाज़िम होगा।

5-6 إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُبِتُوا كَمَا كُبِتَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ
مُهِينٌ ۝ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۚ أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

अल्लाह उसके रसूल (सल्ल०) की मुख़ालिफ़त

इन आयात में काफ़िरों का दुनिया में ज़लील होना और आख़िरत में ज़िल्लत के अ़ज़ाब में मुब्तिला होना बयान फ़रमाया गया है। इर्शाद फ़रमाया कि जो लोग अल्लाह और उस के रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध) करते हैं (जैसे कुफ़्फ़ार-ए-मक्का) वह दुनिया में ज़लील होंगे, जैसे उन से पहले लोग ज़लील हो चुके हैं, चुनाँचे ग़ज़्वात में कुफ़्फ़ार-ए-मक्का और उन के साथी ज़लील हुए उन के ज़लील होने की वजह

भी बता दी وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ

(और हम ने साफ़-साफ़ आयात उतारीं) उन्होंने उन्हें तस्लीम (स्वीकार) न किया इसलिए अ़ज़ाब के ह़क़्दार हुए, दुनिया में तो उन्होंने ज़िल्लत का मुँह देख ही लिया और आख़िरत में भी उन को ज़िल्लत का अ़ज़ाब होगा।

क़ियामत के दिन उठाए जाएँगे-

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا इस आयत में तम्बीह फ़रमा दी कि दुनिया में जो कुछ अ़मल करते हैं क़ियामत के दिन वह सब सामने आ जाएँगे, अल्लाह तआ़ला उन्हें उन के आ़माल की ख़बर दे देगा यानी यह बता देगा कि तुम ने यह आ़माल किये थे।

यह लोग दुनिया में अ़मल कर के भूल गये और अल्लाह तआ़ला ने उन के आ़माल को मह़फ़ूज़ रखा, इतनी बड़ी ज़िन्दगी के आ़माल व बातें बन्दों को याद नहीं रहती, लेकिन अल्लाह तआ़ला के पास वह सब कुछ मह़फ़ूज़ हैं, कोई शख़्स यह न समझे कि जो कुछ किया गुज़र गया हमें तो याद नहीं क्या किया। बात यह है कि मिलने के लिए अ़मल करने वाले को याद रहना ज़रूरी नहीं है। अल्लाह तआ़ला ही बदला देगा उस के इ़ल्म में सब कुछ है वह भूलने वाला नहीं।

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ (और अल्लाह हर चीज़ पर बाखबर है) इसलिए वह क़ियामत के दिन बन्दों के आ़माल को ज़ाहिर फ़रमाकर बदले का फ़ैसला भी फ़रमाएगा।

7 اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۖ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ
اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ
اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

अल्लाह तआ़ला सब के साथ है

इर्शाद फ़रमाया, क्या आप ने देखा नहीं कि अल्लाह तआ़ला जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को और आप के वास्ते से तमाम इन्सानों को ख़िताब है। मज़ीद स्पष्ट करते हुए फ़रमाया कि जहाँ कहीं भी तीन आदमी मौजूद हों जो कोई ख़ुफ़िया मश्वरा कर रहे हों, अल्लाह तआ़ला उन का चौथा होता है यानी उसे उन की बातों का इ़ल्म होता है और जहाँ कहीं पाँच आदमी मौजूद हों तो वह उन का छठा होता है। इस से कम लोग या ज़्यादा हों बहरह़ाल वह अपने इ़ल्म के एतिबार से उन के साथ है। जो शख़्स अकेला या छोटी बड़ी जमाअ़त के साथ जहाँ कहीं भी हो वह यूँ न समझ ले कि अल्लाह तआ़ला को मेरा ह़ाल मालूम नहीं है।

अल्लाह तआ़ला अपने इ़ल्म से सब के साथ है सब को जानता है, दुनिया वाले जो भी अ़मल करते हैं उस का उसे सब इ़ल्म है, क़ियामत के दिन हर एक को सब के अ़मल से बाख़बर फ़रमा देगा वह हर चीज़ का जानने वाला है।

8-10

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا عَنِ النَّجْوَىٰ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَاجَوْنَ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ
الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ فِي أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ حَسْبُهُمْ
جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ إِنَّمَا النَّجْوَىٰ مِنَ
الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

मुनाफ़िक़ीन की शरारत

मक्का के यहूदी तरह़-तरह़ की शरारतें भी करते थे और ख़ुफ़िया मश्वरे भी करते रहते थे। शब्द 'नजवा' ख़ुफ़िया (गुप्त) बातचीत के लिए बोला जाता है। शब्द मुनाजात भी इसी से लिया गया है, मोमिन बन्दे आहिस्ता-आहिस्ता (जिसे अल्लाह तआ़ला ही सुने कोई दूसरा न सुने) अपने ख़ालिक़ व मालिक से दुआ़ करते हैं क्योंकि वह हर ज़ाहिर और छुपी बात को सुनता है, इसीलिए ख़ुफ़िया (secret) दुआ़ को मुनाजात कहा जाता है।

यहूदी और मुनाफ़िक़ीन इस्लाम के और मुसलमानों के दुश्मन तो थे ही मुसलमानों को तक्लीफ़ पहुँचाने के लिए बुरी ह़रकतें करते थे, उन की इन ह़रकतों में यह बात भी थी कि रास्तों में किसी जगह बैठ जाते थे और जब कोई मुसलमान वहाँ से गुज़रता तो गहरी नज़रों से देखते थे और आँखों से इशाराबाज़ी करते थे और चुपके-चुपके आपस में बातें करते थे।

मुनाफ़िक़ीन भी उन के साथ रहते थे, मुसलमानों को उन की ह़रकतों से तक्लीफ़ होती थी, उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में इस बात को पेश कर दिया और उन लोगों की शिकायत की, आप ने उन लोगों को मना कर दिया कि सरगोशी और ख़ुफ़िया (गुप्त) बातचीत न करें इस से मुसलमानों को तक्लीफ़ होती है, उन लोगों ने हिदायत पर अ़मल न किया, मनाही के बावजूद अपनी ह़रकतें करते रहे।

इस पर आयते करीमा أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا عَنِ النَّجْوَىٰ नाज़िल हुई, जिस में उन की बुरी हरकतों का भी ज़िक्र फ़रमाया और यह भी फ़रमाया कि यह लोग गुनाह के और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की नाफ़रमानी के मश्वरे करते हैं।

यहूदियों की शरारत

यहूदियों का यह भी तरीक़ा था कि जब आप (सल्ल०) के पास आते तो **'अस्सलामु अ़लैकुम'** के बजाए **'अस्सामआलेकुम'** कहते थे, ज़बान दबा कर लाम को खा जाते थे। 'साम' अ़रबी में मौत को कहते हैं, मौत की बद्दुआ़ करते थे और ज़ाहिर यह करते थे कि हम ने सलाम किया, उन की इस ह़रकत को बयान करने के लिए इर्शाद फ़रमाया وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ

(और जब आप के पास आते हैं तो इन शब्दों में तह़िय्या करते हैं अर्थात सलाम की ज़ाहिरी सूरत अख़्तियार करते हैं, जिन शब्दों के ज़रिये, अल्लाह तआ़ला ने आप को सलाम नहीं भेजा।

एक मर्तबः कुछ यहूद रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुए और ज़बान दबाकर वही **'अस्सामआलेकुम'** कह दिया। हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने मह़सूस कर लिया और आड़े हाथों लिया और जवाब में फ़रमाया **"अलैकुम अ़स्साम वल् लअ़नः"** फ़रमाया (तुम पर मौत हो और लअ़नत हो।)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि ऐ आ़इशा! ठहरो (नर्मी अख़्तियार करो) क्योंकि अल्लाह तआ़ला हर मामले में नर्मी को पसन्द फ़रमाता है। अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! आप ने सुना नहीं इन्होंने क्या कहा? आप ने फ़रमाया तूने नहीं सुना मैंने क्या कहा? मैंने उन के जवाब में **'अ़लैकुम'** कह दिया यानी (उन की बात उन पर लौटा दी) उन्हें मौत की बद्दुआ़ दे दी। **(सहीह़ बुख़ारी पेज नं० 925 भाग 2)**

दूसरी रिवायत में है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मैंने जो जवाब दिया वह तूने नहीं सुना मैंने जो उन को बद्दुआ़ दी है वह मक़्बूल होगी और उन्होंने जो मुझे बद्दुआ़ दी है वह क़ुबूल न होगी। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 398)**

وَيَقُولُونَ فِي أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ ۚ

यहूदी बुरे शब्द ज़बान पर लाते हैं फिर अपने दिलों में यूँ भी कहते हैं कि अल्लाह हमारी बातों पर अ़ज़ाब क्यों नहीं देता, मक़्सद उन का यह था कि अगर यह अल्लाह के नबी हैं और हम उन की शान में बेअदबी करते हैं तो अब तक अल्लाह का अ़ज़ाब आ जाना चाहिए था। जब अल्लाह तआ़ला हमें अ़ज़ाब नहीं देता तो मालूम हुआ कि यह अल्लाह के नबी नहीं हैं। **(अल् अ़याज़ु बिल्लाह)**

अल्लाह तआ़ला ने ऐसा कोई एलान नहीं फ़रमाया कि नबी के झुठलाने की या गुनाहों की सज़ा इसी दुनिया में दी जाएगी और जल्द दी जाएगी। बहुत से काफ़िरों को दुनिया व आख़िरत दोनों में सज़ा मिलती है और कुछ को सिर्फ़ आख़िरत में दे दी जाती है, यह दलील बना लेना कि चूंकि हमें अ़ज़ाब नहीं दिया जाता इसलिए हमारा अ़मल दुरुस्त है, जिहालत और बेवकूफी की बात है।

حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا ۖ فَبِئْسَ الْمَصِيرُ

इस में उन लोगों की जाहिलाना बात का जवाब दे दिया और बता दिया कि उन को दोज़ख़ में ही जाना है वह बुरा ठिकाना है। अगर दुनिया में अ़ज़ाब न दिया गया तो यूँ न समझें कि अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ (Safe) हो गए।

अहले ईमान को नसीह़त

यहूद और मुनाफ़िक़ीन की बद्ह़ाली बताकर मोमिनीन मुख़्लिसीन को नसीह़त फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ

(ऐ ईमान वालों! जब तुम्हें ख़ुफ़िया मश्वरा करना हो तो गुनाहगारी, ज़्यादती और रसूल (सल्ल०) की नाफ़रमानी का मश्वरा न करो।)

وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ (और नेकी और तक़्वा का मश्वरा करो।)

وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْٓ اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ۝

(और अल्लाह से डरो जिस की तरफ़ तुम जमा किये जाओगे) यानी आख़िरत के दिन में हाज़िर होगे।

फिर फ़रमाया اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

(खुफ़िया सरगोशी शैतान ही की तरफ़ से है, ताकि वह अहले ईमान को रंजीदा करे) यानी जिन लोगों ने मुसलमानों को तक्लीफ़ देने के लिए खुफ़िया (secret) मश्वरा करने का तरीक़ा अख़्तियार किया है उस तरीक़े पर उन्हें शैतान ने डाला है, शैतान का मक़्सद यह है कि वह अहले ईमान को रंजीदा करे।

وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ

(और उन लोगों का यह मश्वरा अहले ईमान को कोई नुक़्सान नहीं दे सकता, मगर अल्लाह के हुक्म से और अहले ईमान अल्लाह पर भरोसा करें।) यह तवक्कुल अ़लल्लाह उन्हें मख़्लूक़ की तक्लीफ़ों से महफ़ूज़ रखेगा। इन्शाअल्लाह तआ़ला

इस्लाम कामिल दीन है, इस में जैसे अ़िबादत बताई गई है वैसे ही अख़्लाक़ व आदाब सिखाये गए हैं, उन आदाब में से एक अदब यह भी है कि किसी भी साथ में बैठने वाले को जिस्मानी व रुहानी तक्लीफ़ न दी जाए।

आइन्दा आयत में जिस्मानी तक्लीफ़ का ज़िक्र है और रुहानी तक्लीफ़ यह है कि बाज़ लोग आपस में मिलकर चुपके-चुपके ऐसी बातें न करें जिन से दूसरे बैठने वालों को तक्लीफ़ पहुँचे।

“हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, जब तुम मजलिस में तीन आदमी हो तो दो आदमी तीसरे आदमी को छोड़कर आपस में चुपके-चुपके बातें न करें जब तक कि दूसरे आदमी न आ जाएँ, यह इसलिए कि अगर दो आदमी बात करेंगे तो तीसरे आदमी को रंज होगा और समझेगा कि शायद मेरे बारे में बातें कर रहे हैं”।

(सहीह़ बुख़ारी पेज नं० 632 भाग 2)

हाँ, अगर तीन से ज़्यादा आदमी हों तो दो आदमी आपस में आहिस्ता बात कर सकते हैं क्योंकि इस से दूसरे हाज़िरीन के दिलों में कोई वस्वसा न आएगा, वह भी आपस में अपनी कोई बात कर लेंगे।

आयत नं० 11 से 22 तक

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ
صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ
تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا
قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ اِتَّخَذُوْۤا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ
اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ
وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ؕ اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝ اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اُولٰٓئِكَ فِي الْاَذَلِّيْنَ ۝ كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ لَا تَجِدُ قَوْمًا
يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ
قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ
اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

अनुवाद-

(11) ऐ ईमान वालो! जब तुम से कहा जाए, ''मजलिसों में जगह कुशादा कर दो, तो कुशादा कर दिया करो, अल्लाह तुम्हारे लिए कुशादगी पैदा कर देगा,'' और जब कहा जाए, ''उठ जाओ तो उठ जाया करो,'' तुममें से जो लोग ईमान लाए, और जिनको इल्म दिया गया, अल्लाह उनके दर्जे को बढ़ा देगा, जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है। (12) ऐ ईमान वालो! जब तुम को रसूल से अकेले में बात करना हो, तो अपनी बात से पहले सदक़ा दे दिया करो, यह तुम्हारे लिए अच्छा और ज़्यादा पाकीज़ा है, फिर अगर खैरात में तुम अपने को असमर्थ पाओ, तो अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है। (13) क्या तुम इससे डर गये कि अपनी सरगोशियों (गुप्त बातों) से पहले सदक़े दो? तो जब तुमने ऐसा न किया और अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया, तो नमाज़ क़ायम करो ज़कात देते रहो, और अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी (अनुपालन) करो, और तुम जो कुछ भी करते हो, अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है। (14) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जिन्होंने ऐसे लोगों को दोस्त बनाया जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वे न तुममें से हैं, और न उनमें से हैं और वे जानते-बूझते झूठी बात पर क़सम खाते हैं। (15) अल्लाह ने उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है, यह बुरे काम किया करते थे। (16) उन्होंने अपनी क़समों को ढ़ाल बना रखा है, (और) अल्लाह की राह से रोकते हैं, तो उनके लिए रुवा कर देने वाला अ़ज़ाब है। (17) अल्लाह से बचाने के लिए न उनके माल उनके काम आएँगे, और न उनकी औलाद ही, ये लोग आग वाले हैं, उसी में वे हमेशा रहेंगे। (18) जिस दिन अल्लाह उन सब को जिला उठाएगा, तो वे उसके सामने उसी तरह क़समें खाएँगे जिस तरह तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं, और समझते हैं कि वे किसी बुनियाद पर

हैं, बेशक यही झूठे हैं। (19) शैतान उन पर मुसल्लत हो गया, तो उसने अल्लाह की याद को भुला दिया, यही लोग शैतान की पार्टी के हैं, सुन लो! शैतान की पार्टी ज़रूर घाटे में पड़ने वाली है। (20) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं वही ज़लील लोगों में से हैं। (21) अल्लाह ने लिख दिया है, 'मै' और 'मेरे' रसूल ही विजयी रहेंगे, अल्लाह ताक़त वाला, ग़लबा वाला (प्रभुत्वशाली) है। (22) तुम उन लागों को ऐसा कभी नहीं पाओगे, जो अल्लाह और अन्तिम दिन (क़ियामत) पर ईमान रखते हैं, कि वे उन लोगों से मुहब्बत करते हों जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया हो, चाहे वे उनके बाप या बेटे, या भाई, या उनके खानदान के लोग हों; ये वही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान को बिठा दिया है, और 'अपनी' ओर से रुह़ (आत्मा) के ज़रिये उनकी मदद की है; 'वह' उनको ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ, और वे अल्लाह से राज़ी हुए, यह लोग अल्लाह की पार्टी के हैं सुन लो! कि अल्लाह की पार्टी वाले ही कामियाब होने वाले हैं।

आयत नं० 11 से 22 तक की व्याख्या

11 يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا۟ فِى ٱلْمَجَٰلِسِ فَٱفْسَحُوا۟ يَفْسَحِ ٱللَّهُ لَكُمْ ۖ وَإِذَا قِيلَ ٱنشُزُوا۟ فَٱنشُزُوا۟
يَرْفَعِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنكُمْ وَٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ دَرَجَٰتٍ ۚ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (11)

मजलिस के आदाब

इस में अहले ईमान की दो बातों का हुक्म दिया गया है। पहली यह कि मजलिसों में बैठे हों तो बाद में आने वालों को भी जगह दिया करें और सिमटकर बैठ जाया करें, ताकि मजलिस में गुन्जाईश हो जाए और आने वालों को जगह मिल सके। जब ऐसा अ़मल करेंगे तो अल्लाह तआ़ला उस के बदले में उन पर करम फ़रमाएगा, उन के लिए अपनी रह़मत और मग़्फ़िरत वसीअ़ (विस्तृत) फ़रमाएगा।

आने वालों को चाहिए कि वह किसी पहले से बैठे हुए शख़्स को न उठाए और मजलिस में घुसने की कोशिश न करें और बैठने वालों को चाहिए कि आने वालों के लिए जगह निकालें और मिल कर बैठें।

"ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, कोई शख़्स किसी दूसरे शख़्स को उस के बैठने की जगह से उठा कर ख़ुद उस की जगह न बैठ जाए हाँ, खिसक जाया करो और मजलिस में जगह निकाल लिया करो"। **(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 928 भाग 2)**

ह़ज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया (خَيْرُ الْمَجَالِسِ اَوْسَعُهَا) (सब मजलिसों में बेहतर मजलिस वह है जो सब से ज़्यादा वसीअ़ (फैली हुई) हो।)

ह़ज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि०) से रिवायत है कि हम जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में आते, तो जहाँ जगह मिल जाती वहीं बैठ जाते थे। **(अबू दाऊद, मिश्कात पेज नं० 405)**

"ह़ज़रत वास्ला बिन ख़त्ताब (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स आप (सल्ल०) के पास आया तो आप (सल्ल०) उस के लिए अपनी जगह से

हट गये, उस ने कहा या रसूलल्लाह! जगह में गुन्जाइश है (आप को तक्लीफ़ फ़रमाने की ज़रूरत नहीं) आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि बिलाशुब्हा मुसलमान का यह ह़क़ है कि अपने भाई को आते हुए देखे तो उस के लिए हट जाए"। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 404)**

दूसरी नसीह़त-

وَإِذَا قِيلَ انشُزُوا فَانشُزُوا (जब तुम से कहा जाए कि उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो।)

इस में यह अदब बताया कि किसी मजलिस में इतना ज़्यादा न बैठो कि जिस के पास बैठे हो जिस के घर गये हो वह तंग हो जाए। पहले तो ख़ुद समझना चाहिए कि कितनी देर बैठने का मौक़ा है और मजलिस की सूरतेह़ाल क्या है और वक़्त का तक़ाज़ा क्या है अगर ख़ुद न उठे और यह कह दिया जाए कि उठ खड़े हो तो ज़रूर उठ जाना चाहिए एलान हो जाने पर बैठे रहना यह मज़ीद तक्लीफ़ देने वाली बात है।

आयत की यह एक तफ़्सीर है, 'अ़ल्लामा क़ुर्तुबी' (रह़०) ने इब्ने ज़ैद से नक़्ल किया है कि हर शख़्स यह चाहता था कि आख़िर तक रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मजूलिस में बैठा रहूँ। अल्लाह तआ़ला ने ऊपर की आयत में यह हुक्म नाज़िल फ़रमाया कि मजलिस से उठ जाने का हुक्म हुआ करे तो उठ जाया करो, क्योंकि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दूसरी ज़रुरतें भी होती हैं।

और एक तफ़्सीर इस तरह़ है कि नमाज़ और जिहाद (और भलाई के कामों) के लिए उठने को कहा जाए तो उठ खड़े हुआ करो يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ

(तुम में से जो लोग ईमान लाए और जिन्हें इ़ल्म दिया गया अल्लाह उन को दर्जात के एतिबार से बुलन्द फ़रमा देगा) यानी जो हुक्म ऊपर बयान किये गये उन पर अ़मल करने की वजह से अल्लाह तआ़ला अहले ईमान के और अहले इ़ल्म के दर्जात बुलन्द फ़रमाएगा।

आयते करीमा में यह बता दिया गया कि अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक ईमान के ज़रिये दर्जात बुलन्द होते हैं, फिर इ़ल्म की वजह से भी दर्जात ऊँचे होते हैं, लेकिन इस से क़ुर्आन व ह़दीस और उस के उ़लूम मुराद हैं।

"उ़लमा की फ़ज़ीलत न सिर्फ़ आ़म मुसलमानों पर बल्कि उन अ़िबादत गुज़ारों पर भी है जो नवाफ़िल में लगे रहते हैं। रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद है कि जो आ़लिम फ़र्ज़ पढ़कर बैठ जाता है, फिर लोगों को ख़ैर सिखाता है, उस की फ़ज़ीलत उस आ़बिद (अ़िबादतगुज़ार) पर जो दिन भर रोज़े रखता है और पूरी रात क़ियाम करता है ऐसी है जैसे मेरी फ़ज़ीलत तुम में से एक मामूली शख़्स पर"।

एक ह़दीस में यूँ है कि जिसे इस ह़ाल में मौत आ गई कि वह इसलिए इ़ल्म ह़ासिल कर रहा था कि उस के ज़रिये इस्लाम को बुलन्द करे तो उस के और ज़मीनों के दर्मियान में एक दर्जे का फ़र्क़ होगा। **(रवाहु अल् दारमी कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 36)**

"ह़ज़रत उ़स्मान बिन अ़फ्फ़ान (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया

कि क़ियामत के दिन अम्बिया (अ़लै०) फिर उ़लमा, फिर शोहदा शफ़ाअ़त करेंगे।

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ (और अल्लाह तुम्हारे कामों से बाख़बर है, जो भी ख़ैर का काम कर लोगे उस का फल पा लोगे।)

12-13 يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ۭ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ۭ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

सद्के का हुक्म

यह दो आयतों का अनुवाद है। पहली आयत में हुक्म दिया गया है कि मोमिनीन जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में कोई बात करने के लिए आएँ और सरगोशी के तौर पर ख़ुफ़िया (गुप्त) बात करना चाहें तो उस से पहले सद्क़ः दे दिया करें और दूसरी आयत में इस हुक्म के मन्सूख़ (निरस्त) होने का ज़िक्र है।

'मुफ़स्सिर क़ुर्तुबी' ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से नक़्ल किया गया है कि मुसलमान रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सवालात किया करते थे, जब सवालात का सिल्सिला ज़्यादा हो गया तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) को महसूस होने लगा, अल्लाह तआ़ला ने उन के सवालात में कमी कराने के लिए यह हुक्म दिया कि सद्क़ः करके आप की ख़िद्मत में आया करें। जब ऐसा हुआ तो बहुत से लोग सवाल करने से रुक गये, बाद में अल्लाह तआ़ला ने उस में वुस्अ़त (छूट) दे दी यानी बिना सद्क़ः किये हाज़िर होने की इजाज़त दे दी।

"हज़रत हसन (रज़ि०) से नक़्ल किया गया है कि यह आयत इस वजह से नाज़िल हुई कि मुसलमानों में से कुछ लोग ऐसे थे जो नबी अक्रम (सल्ल०) से अकेले में बातचीत करने की दरख़्वास्त करते, जब आप (सल्ल०) से अकेले बातचीत करते तो दूसरे मुसलमानों को ख़याल होता था कि शायद हमारे बारे में कोई बातचीत हो रही है। जब आ़म मुसलमानों को तन्हाई में वक़्त लेने वालों का तरीक़ा नागवार गुज़रा तो अल्लाह तआ़ला ने हुक्म फ़रमाया कि जिन्हें अकेले में बात करना हो वह सद्क़ः देकर आप की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ करें, ताकि तन्हाई में वक़्त माँगने का सिल्सिला ख़त्म हो जाए।

(तफ़्सीर क़ुर्तुबी पेज 301: भाग 17)

"हज़रत अ़ली (रज़ि०) ने फ़रमाया कि अल्लाह की किताब में एक आयत है जिस पर मुझ से पहले किसी ने अ़मल नहीं किया और न मेरे बाद उस पर कोई अ़मल करेगा। मेरे पास एक दीनार था मैंने उस को दस दिरहम में बदलवा लिया था। जब मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर होकर चुपके से मश्वरा करने का इरादा करता था तो एक दिरहम सद्क़ः कर के जाता था, फिर अल्लाह तआ़ला ने उस हुक्म को मन्सूख़ (निरस्त) फ़रमा दिया। **(इब्ने कसीर पेज नं० 326, भाग 4)**

जिन लोगों के पास सद्क़ः देने को कुछ न था فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ फ़रमा कर पहले ही से

उन को अलग कर दिया था।

'सुनन तिर्मिज़ी' में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) का बयान नक़्ल किया गया है कि जब अल्लाह तआ़ला ने आयते करीमा يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً नाज़िल फ़रमाई तो नबी करीम (सल्ल०) ने मुझ से फ़रमाया, तुम्हारा क्या ख़याल है (मुसलमान) एक दीनार (सद्क़ः कर के आएँगे) मैंने अ़र्ज़ किया उन्हें इस की ताक़त नहीं, फ़रमाया आधा दीनार? मैंने अ़र्ज़ किया उन्हें इस की ताक़त नहीं, फ़रमाया फिर कितना? मैंने अ़र्ज़ किया जौ (के बराबर) हो फ़रमाया तुम तो बहुत थोड़े पर आ गए इस पर आयते करीमा ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ नाज़िल हुई।

ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ने फ़रमाया मेरी वजह से अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत पर कमी फ़रमा दी।

सद्क़ः के हुक्म का निरस्त होना बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया ءَاَشْفَقْتُمْ क्या तुम इस बात से डर गए कि अपनी सरगोशी से पहले सद्क़ात करो, सो अगर इस पर तुम ने अ़मल किया और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे ह़ाल पर रहम फरमाया (कि बिल्कुल इस को मन्सूख़ फ़रमा दिया) तो तुम दूसरे अह़कामे दीनिया पर पाबन्दी से अ़मल करते रहो, नमाज़ के पाबन्द रहो, ज़कात अदा करो और अल्लाह की फ़रमाँबरदारी करो।

'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' लिखते हैं कि وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ में बता दिया कि सद्क़ः देने का जो हुक्म हुआ था उस से डरना यह गुनाह था, अल्लाह तआ़ला ने उस को माफ़ फ़रमा दिया और فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا के बारे में लिखते हैं कि 'इज़' 'ज़रफ़िया' भी हो सकता है और 'शर्तिया' भी। फिर लिखा हैः-

यानी जब तुम ने हुक्म पर अ़मल न किया तो अब उस की इस तरह़ भरपाई करो कि नमाज़ की ख़ूब पाबन्दी करो और ज़कातें अदा किया करो।

आख़िर में फ़रमाया وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ (और अल्लाह तुम्हारे कामों से पूरी तरह़ बाख़बर है।)

14-20 اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝ اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اُولٰٓئِكَ فِي الْاَذَلِّيْنَ ۝

'मुआ़लिमुत्तन्ज़ील' में लिखा है कि यह आयत मुनाफ़िक़ीन के बारे में नाज़िल हुई, जिन्होंने ज़ाहिरी इस्लाम का दावा किया, लेकिन अन्दर से यहूदियों से दोस्ती जारी रखी, मोमिनीन के साथ उठने-बैठने की वजह से जो उन के राज़ मालूम हो जाया करते थे वह यहूदियों तक पहुँचा दिया करते थे, उस के बाद एक क़िस्सा यूँ नक़्ल किया है कि 'अ़ब्दुल्लाह बिन नबतल' नामी एक यहूदी था, वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आकर बैठा करता था, फिर आप की बातें (जो आ़म करने की न थीं) यहूदियों को पहुँचा

देता था। एक दिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने हुजरे में तशरीफ़ फ़रमा थे, आप (सल्ल०) ने ख़ुद ही फ़रमाया अभी एक शख़्स आएगा जिस का दिल सख़्त है और वह शैतान की आँखों से देखता है, उस शख़्स की आँखें नीली थीं। जब यह पहुँचा तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तू और तेरे साथी मुझे बुरे शब्दों में क्यों याद करते हैं, वह क़सम खा गया कि नहीं ऐसी बात नहीं है और अपने साथी को भी लेकर आ गया, वह भी इसी तरह़ झूठी क़समें खा गया। इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाईं।

इर्शाद फ़रमाया اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا क्या आप ने उन लोगों को नहीं देखा जो उन लोगों से दोस्ती रखते हैं जिन पर अल्लाह का गुस्सा है (उन से यहूदी मुराद हैं) साथ ही यह भी बता दिया कि यह लोग यहूदियों से उन के दोस्त बनकर मिलते हैं और तुम्हारे पास आकर यह बताते हैं कि हम तुम में से हैं और यक़ीनी बात यह है कि यह लोग न उन में से हैं न तुम में से (जो शख़्स मतलब का यार होता है वह ज़ाहिर में हर उस शख़्स और उस जमाअ़त का साथी बन जाता है जिस से फायदा जुड़ा हो, लेकिन इख़्लास के साथ वह किसी का भी दोस्त नहीं होता।)

मुनाफ़िक़ हर फ़रीक़ के पास जाकर यह कहता है कि मैं तुम्हारा हूँ लेकिन ह़क़ीक़त में वह किसी का भी नहीं होता। इसी को सूरः निसा (**आयत नं० 143**) में फ़रमाया हैः-

مُذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ

न वह उन की तरफ़ हैं न इन की तरफ़, जो आ़माल करते हैं वह भी दिखावे के लिए ताकि उन को देखकर लोग यह समझें कि यह हमारे साथ हैं ह़ालांकि वह किसी के साथ नहीं होते।

उन मुनाफ़िक़ों के बारे में यह भी फ़रमाया कि यह लोग झूठी क़सम खाते हैं और यह क़सम भी ग़लतफ़हमी की वजह से नहीं होती, बल्कि यह जानते हुए झूठी क़सम खाते हैं कि हम झूठ बोल रहे हैं झूठी क़सम खा रहे हैं।

फिर फ़रमाया اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا अल्लाह तआ़ला ने उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब तैयार फ़रमाया है, यह बुरे अ़मल करते थे झूठी क़समों को अपने लिए ढ़ाल बना लेते थे और इस तरह़ अल्लाह की राह से रोकते थे उन के लिए अ़ज़ाब भी है और 'अ़ज़ाबे मुहीन' भी अर्थात "ज़लील करने वाला अ़ज़ाब"।

यह लोग समझ रहे हैं कि हम ने जो मुनाफ़िक़ाना तरीका अख़्तियार किया है उस में हमारे मालों की हिफ़ाज़त भी है और हमारी औलाद की भी, उन का यह समझना ग़लत है। जब क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला का हुक्म होगा कि उन्हें दोज़ख़ में ले जाओ तो वहाँ अ़ज़ाब से छुड़ाने के लिए न कोई माल नफ़ा देगा न औलाद काम आएगी जिन की हिफ़ाज़त के लिए यह चाल अख़्तियार करते हैं और अपनी आख़िरत ख़राब करते हैं, वह लोग अल्लाह के अ़ज़ाब से छुड़ाने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते उन को दोज़ख़ में जाना ही होगा और उस में हमेशा रहना होगा।

इस के बाद उन लोगों की झूठी क़सम को बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि ऐ मुसलमानों! इतनी ही बात नहीं है कि दुनिया में तुम्हारे सामने यह झूठी क़समें खा जाते हैं, उन की बद्ह़ाली तो यह है कि

क़ियामत के दिन जब अल्लाह तआला उन्हें क़ब्रों से उठाएगा और मैदाने ह़श्र में ह़ाज़िर फ़रमाएगा और वहाँ उन से उन के कुफ़्र और उन की शरारतों के बारे में सवाल किया जाएगा तो वहाँ अल्लाह तआला के पास भी झूठी क़समें खा जाएँगे।

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ खूब समझ लिया जाए कि यह लोग झूठे ही हैं, झूठ भी बोलते हैं और उसे कमाल भी समझते हैं और यूँ समझते हैं कि देखो! हम कैसे अच्छे रहे झूठ बोला तो क्या है अपना काम तो निकाल ही लिया, दुनिया की मतलब परस्ती की तरफ़ उन को ध्यान है आख़िरत के अ़ज़ाब की तरफ़ कुछ ध्यान नहीं।

मुख़ालिफ़ीन पर शैतान की पकड़-

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ (शैतान ने उन पर ग़ल्बा पा लिया सो उन्हें अल्लाह की याद को भुला दिया) अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हैं तो आख़िरत की पकड़ और हिसाब से भी ग़ाफ़िल हैं बस उन के सामने दुनिया ही दुनिया है।

चूंकि शैतान का उन पर ग़ल्बा है वह उन पर बुरे आ़माल को अच्छा कर के पेश करता है और कुफ़्र व शिर्क और गुनाह में उन का फ़ायदा बताता है, इसलिए यह लोग शैतान ही के होकर रह गए हैं اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ (उन का गिरोह शैतान का गिरोह है)

यह लोग समझ रहे हैं कि हम कामियाब हैं उन की यह ग़लतफ़हमी क़ियामत के दिन दूर हो जाएगी जब خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ (**सूरः जुमर आयत नं० 15**) का मिस्दाक़ बनेंगे न कुछ माल इनके पास होगा न औलाद फ़ायदा देगी और न अपनी जानों को अ़ज़ाब से छुड़ाने की कोई राह न पाएँगे बर्बादी के सिवा कुछ ह़ासिल न होगा। इसी को फ़रमाया اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ

(ख़बरदार इस में कोई शक नहीं कि शैतान का गिरोह बर्बाद ही बर्बाद है।)

इस के बाद उन सब लोगों की बद्ह़ाली बयान फ़रमाई जो किसी तरह़ भी अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध) करते हैं। ऐसे लोगों के बारे में फ़रमाया यह लोग उन लोगों में से होंगे जो बहुत ज़्यादा ज़िल्लत वाले होंगे दोज़ख़ में जो शख़्स दाख़िल होगा ज़लील होगा।

सूरः आले इमरान में मोमिनीन की दुआ़ नक़्ल फ़रमाई हैः-

رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ (**सूरः आले इमरान आयत नं० 192**) (ऐ हमारे रब! तू जिसे दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमाएगा, उसे रुस्वा फ़रमा देगा।)

अहले दोज़ख़ के बहुत से गिरोह होंगे जिस-जिस दर्जे का जो शख़्स लायक़ होगा उसी के लायक़ अ़ज़ाब, ज़िल्लत और रुस्वाई में मुब्तिला किया जाएगा।

मुनाफ़िक़ीन के बारे में सूरः निसा (**आयत नं० 145**) में फ़रमाया اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ (बिला शुब्हा मुनाफ़िक़ीन आग के सब से नीचे वाले दर्जे में होंगे) बहुत से लोग मुनाफ़िक़ नहीं होते, खुले हुए काफ़िर होते हैं, अपनी दुश्मनी में और अल्लाह और उस के रसूल की मुख़ालिफ़त पर तुले रहते

हैं, ऐसे लोगों के बारे में पेशगी ख़बर दे दी और मुस्तक़िल क़ानून बता दिया कि यह लोग ज़लील लोगों में से होंगे। اعاذنا الله من عذابه وسخطه

21-22 كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ
مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ
الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا
عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला के दुश्मन से दोस्ती

इन आयात में अहले ईमान की कुछ सिफ़ात और उन की कामियाबी का ज़िक्र फ़रमाया।

इर्शाद फ़रमाया, जो लोग अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं ऐसा नहीं कर सकते कि जो शख़्स अल्लाह और उस के रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध) करे उस से दोस्ती करें। जब अल्लाह पर ईमान ले आए जो पैदा फ़रमाने वाला, सब से बड़ा है तो उस के मुख़ालिफ़ों से दोस्ती करने का कोई मौक़ा नहीं रहा।

सच्चे मोमिन का यह काम नहीं कि वह अल्लाह पर भी ईमान लाए और उस के दुश्मनों से भी दोस्ती का तअ़ल्लुक़ रखे, जो अल्लाह का हो गया वह और किसी का नहीं रहा उस की दोस्ती दुश्मनी अल्लाह ही के लिए है वह जियेगा तो अल्लाह के लिए मरेगा तो अल्लाह के लिए तअ़ल्लुक़ रखेगा तो अल्लाह के लिए तअ़ल्लुक़ तोड़ेगा तो अल्लाह के लिए।

ह़ज़रत अबू उमामा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमायाः-

مَنْ اَحَبَّ لِلّٰهِ وَاَبْغَضَ لِلّٰهِ وَاَعْطٰى لِلّٰهِ وَمَنَعَ لِلّٰهِ فَقَدِ اسْتَكْمَلَ الْاِيْمَانَ (रवाहु अबूदाऊद)

(जिस ने मुहब्बत की अल्लाह के लिए और दिया अल्लाह के लिए और रोक लिया अल्लाह के लिए उस ने अपना ईमान कामिल कर लिया।)

ऊपर की आयत में यही फ़रमाया कि जो लोग अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान ले आए अब वह उस शख़्स से मुह़ब्बत नहीं रख सकते जो अल्लाह तआ़ला का और उस के रसूल का मुख़ालिफ़ (विरोध) हो, अल्लाह के तअ़ल्लुक़ और मुह़ब्बत की वजह से अगर उन्हें अपने ख़ास अ़ज़ीज़ों, अपने बापों, अपने बेटों और अपने क़बीलों से तअ़ल्लुक़ तोड़ना पड़े तो उन से तअ़ल्लुक़ तोड़ देंगे और न सिर्फ़ यह कि तअ़ल्लुक़ तोड़ देंगे बल्कि क़त्ल व क़िताल की नौबत आएगी तो क़त्ल भी कर देंगे। जो अल्लाह का दुश्मन, अहले ईमान का भी दुश्मन हो, दीनी दुश्मनी के सामने रिश्तेदारी की कोई ह़क़ीक़त नहीं।

ग़ज़्च-ए-बद्र में अपने काफ़िर रिश्तेदारों का क़त्ल

सह़ाबा (रज़ि०) को ऐसे बहुत से वाक़िआ़त पेश आए कि उन्होंने अल्लाह की राह में जिहाद करते

हुए दुश्मने इस्लाम को यह जानते हुए क़त्ल कर दिया कि यह मेरा बाप है या भाई या कुन्बे का।

ग़ज़्व-ए-बद्र में 'हज़रत अबू उ़बैदह बिन अल् जराह़' ने अपने बाप 'जर्राह' को क़त्ल कर दिया था और 'हज़रत मुस्अ़ब बिन उ़मैर' ने अपने भाई 'उ़बैद बिन उ़मैर' को और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने अपने एक क़रीबी रिश्तेदार को क़त्ल कर दिया था।

'मुफ़स्सिर इब्ने कसीर' ने इन आयात की तफ़्सीर में यह मिसालें लिखी हैं।

ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के बेटे 'अ़ब्दुर्रहमान' ने इस्लाम क़ुबूल करने के बाद अपने वालिद से कहा कि अब्बा जान! जंगे बद्र के मौक़े पर कई बार ऐसा मौक़ा पेश आया कि जैसे अब आप मुझ को क़त्ल कर देंगे, लेकिन मैं बच कर निकल जाता। ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने फ़रमाया, अगर मेरा मौक़ा लग जाता तो मैं क़त्ल कर देता तुझे छोड़ कर आगे न बढ़ता। **(सीरत इब्ने हिशाम)**

ग़ज़्व-ए-बद्र के मौक़े पर यह वाक़िआ़ भी पेश आया कि जब मुश्रिकीन और मुसलमानों का आमना-सामना हुआ तो मुश्रिकीने मक्का ने बाक़ायदा जंग शुरु होने से पहले मुक़ाबिले के लिए दअ़्वत दी, इस पर ह़ज़रात अन्सार में से तीन आदमी आगे बढ़े।

मुश्रिकीने मक्का ने कहा तुम लोग कौन हो? उन्होंने कहा हम अन्सार में से चन्द आदमी हैं। वह कहने लगे हमें तुम्हारी कोई ज़रुरत नहीं हमारे बनी अ़म अर्थात चचाज़ाद भाईयों को हमारे सामने लाओ और ज़ोर से पुकार कर रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कहा कि हमारी क़ौम में से हमारे बराबर के लोग मुक़ाबिले के लिए भेजें।

आप (सल्ल०) ने 'ह़ज़रत उ़बैदह बिन अल् ह़ारिस', 'ह़ज़रत ह़म्ज़ह' और 'ह़ज़रत अ़ली' को मुक़ाबिले में आने का हुक्म दिया, बस आपस में मुक़ाबिला हुआ तो 'ह़ज़रत उ़बैदह बिन ह़ारिस '(रज़ि०) ने उ़त्बा पर और उ़त्बा ने ह़ज़रत उ़बैदह पर ह़मला किया, हर एक की वार (मार) से एक दूसरा शख़्स मर गया और 'ह़ज़रत ह़म्ज़ह (रज़ि०) ने शैबा' को और 'ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ने वलीद' को क़त्ल कर दिया, फिर इन दोनों ह़ज़रात ने 'उ़त्बा' को भी क़त्ल कर दिया और 'ह़ज़रत उ़बैदह' ज़ख़्मी हो गए थे उन्हें उठा कर ले आए थोड़ी देर में इन की रुह़ परवाज़ कर गई। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया "اشهد انک شهید" "मैं गवाही देता हूँ कि तुम शहीद हो"। **(अल् बिदाया वल् निहाया पेज नं० 273 भाग 3)**

यह वाक़िआ़ हम ने यह बताने के लिए लिखा है कि काफ़िर अपने कुफ़्र पर जम कर कुफ़्र की ह़िमायत में बढ़-चढ़ कर इतने आगे बढ़े हुए हैं कि उन्हें यह मन्ज़ूर नहीं कि हम अपने रिश्तेदारों के अ़लावह दूसरे किसी क़बीले के लोगों से जंग करें, उन्होंने इस बात को कहा कि हम अपने चचाज़ाद भाईयों को क़त्ल करेंगे। जब अहले कुफ़्र का यह जज़्बा है तो अहले ईमान अल्लाह व रसूल के दुश्मनों और अपने दुश्मनों को और ईमान के दुश्मनों को क़त्ल करते वक़्त यह क्यों देखें कि हम जिसे क़त्ल कर रहे हैं यह हमारा कोई क़रीबी रिश्तेदार तो नहीं है। जब अल्लाह ही के लिए मरना है और अल्लाह ही के लिए मारना है तो अल्लाह के दुश्मन को छोड़ने की कोई वजह नहीं और इस मौक़े पर अपने और पराये में फ़र्क़ करने का कोई मौक़ा नहीं।

अहले ईमान के लिए जन्नत का वादा

أُولَٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ (अल्लाह ने उन के दिलों में ईमान को लिख दिया) यानी साबित फ़रमा दिया और जमा दिया। وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ (उन्हें अपनी रुह़ के ज़रिये कुव्वत दे दी।)

'साह़िबे रुहुलू मआ़नी' लिखते हैं कि रुह़ से दिल का नूर मुराद है, अल्लाह अपने बन्दों में से जिस के दिल में चाहता है नूर डाल देता है उस के ज़रिये इत्मिनान ह़ासिल होता है और बुलन्दी नसीब होती है।

وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا

(और उन्हें दाख़िल फ़रमाएगा ऐसी जन्नतों में जिन के नीचे नहरें जारी होंगी वह उस में हमेशा रहेंगे।)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ

(अल्लाह उन से राज़ी हो और वह अल्लाह से राज़ी हो।)

أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ (यह लोग अल्लाह की जमाअ़त हैं) أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (ख़बरदार अल्लाह की जमाअ़त ही कामियाब है।)

(भाग–59)

सूर–ए–ह़श्र

(सूरः नं. 59)

सूरः हश्र का संक्षिप्त परिचय

नाम– सूरः की दूसरी आयत هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ में हश्र का शब्द आया है। इसलिए यही इस का नाम रख दिया गया है।

नाज़िल होने का ज़माना–

‘कुर्तुबी’ के अनुसार है कि यह सूरः मदनी है। बुख़ारी व मुस्लिम और दूसरे मुहद्दिसीन ने हज़रत सईद बिन जुबैर से रिवायत की है कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से सूरतुल् हश्र के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा कि यह “सूरः बनी नज़ीर” है यानी यह सूरः उन्हीं के बारे में नाज़िल हुई थी।

इस सूरः की तफ़्सीर को सही तौर से समझने के लिए ‘इमाम इब्ने अल् क़य्यिम’ की ‘ज़ादुल् मआ़द’ तब्क़ात इब्ने सअ़द और ‘सीरत इब्ने हिशाम’ वग़ैरह की मदद से मदीना के क़बायल ‘औस व ख़ज़रज’ और उन के आस-पास में रहने वाले यहूदियों का परिचय इस तरह हैः-

मदीना के आस-पास तीन मशहूर क़बीले रहते थे। बनू क़ैनक़ाअ़, बनू नज़ीर और बनू क़ुरैज़ा। यह लोग 132 हि० में रोमियों के ज़ुल्म से तंग आकर फ़िलिस्तीन से भाग कर हिजाज़ आ गए थे और ईला, मक़ना, तीमा, वादियुल क़ुर्रा, फ़िदक और ख़ैबर आदि इलाक़ों में आबाद हो गए थे।

उन के लगभग तीन सदी के बाद औस व ख़ज़रज, यमन में बाढ़ की वजह से वहाँ से भाग कर यस्रब (मदीना) में आबाद हो गए। बनू क़ैनुक़ाअ़ क़बील-ए-ख़ज़्रज से और बनू क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर क़बील-ए-औस से क़रीब हो गए थे।

यहूद अपनी सूदख़ोरी और चालाकी व अ़य्यारी की वजह से ‘यस्रब’ और आसपास के इलाक़ों के आर्थिक व्यवस्था पर क़ाबिज़ होते गए और अपनी साख व धाक बाक़ी रखने के लिए औस व ख़ज़्रज को हमेशा लड़ाते रहे, ताकि कहीं यह लोग मुत्तहिद (एक) होकर इन्हें दबा न दें।

नबी करीम (सल्ल०) जब मदीना तशरीफ़ लाए, तो औस व ख़ज़्रज और मुहाजिरीने मक्का को मिलाकर मुसलमानों और यहूद से अम्न और मुआ़हिदा कर लिया, लेकिन यहूद ने इस मुआ़हिदा की पाबन्दी नहीं की और इस्लाम और मुसलमानों की रोज़ बरोज़ बढ़ती हुई ताक़त ने उन के दिलों में हसद की आग बढ़ा दी, उन्होंने नबी करीम (सल्ल०) और मुसलमानों को नुक़्सान पहुँचाने के लिए हर नापाक चाल चलनी शुरु कर दी।

औस व ख़ज़्रज की पुरानी दुश्मनी को उन के दर्मियान उभारने लगे और जंगे बद्र की कामियाबियों के बाद तो उन के बुग्ज़ व हसद की आग और भड़क उठी। बनू नज़ीर के सरदार ‘कअ़ब बिन अशरफ़’ ने मक्का जाकर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को दोबारह जंग करने पर उक्साया और वहाँ से वापस आकर उस ने

मुसलमान औ़रतों के नाम ले-लेकर इश्किया शायरी शुरु कर दी। यहाँ तक कि नबी करीम (सल्ल०) ने उस से तंग आकर मुह़म्मद बिन मुस्लिमा अन्सारी के ज़रिये उस को क़त्ल करवाया।

बनू क़ैनुक़ाअ़ की शरारत-

बनू क़ैनुक़ाअ़ शहर 'यस्रब' में क़बीला ख़ज़्रज के आस-पास रहते थे। उन को अपनी ताक़त और अपने सात सौ जवानों पर बड़ा नाज़ था। एक दिन उन्होंने दिन दिहाड़े एक मुसलमान औ़रत को बाज़ार में नंगा कर दिया, जिस के नतीजे में एक मुसलमान और एक यहूदी का क़त्ल हो गया। इस घटना के बाद नबी करीम (सल्ल०) उन के पास गए उन्हें मुआ़हिदा याद दिलाया और शराफ़त के दायरे में रहने की नसीह़त की, लेकिन उन्होंने उल्टा जवाब दिया और कहा कि हम क़ुरैश के लोग नहीं हैं, जिन्हें तुम ने मैदाने बद्र में शिकस्त दे दी, हम से साबिक़ा पड़ेगा तो तुम्हें मालूम हो जाएगा कि मर्द किसे कहते हैं?

उन के इस जवाब से रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जान लिया कि उन्होंने मुसलमानों के ख़िलाफ़ एलाने जंग कर दिया है। इसलिए आप (सल्ल०) ने सह़ाबा-ए-किराम की जमाअ़त के साथ जाकर उन के मुह़ल्ले का मुह़ासिरा (घेर) कर लिया। अभी केवल पन्द्रह दिन ही गुज़रे थे कि उन्होंने आप से जान की अमान मांग ली। आप ने इस शर्त पर उन की जान बख़्शी डरते दी कि वह अपना तमाम माल व अस्लह़ा और सामान छोड़कर मदीना से निकल जाएँगे।

उन्होंने ऐसा ही किया, अल्लाह तआ़ला ने उन के दिलों में ऐसा रोअ़ब दाख़िल कर दिया कि सदियों से बसे बसाये घरों को पूरे सामान के साथ छोड़कर वहाँ से 'ख़ैबर' की तरफ़ चले गए।

इस घटना के बाद बाक़ी यहूदे मदीना कुछ दिन तक तो डरते रहे, लेकिन जंगे उ़हद के समय में मुनाफ़िक़ीन के उक्साने पर और खुद अपनी ख़बासत की वजह से, मदीना से दिफ़ाअ़ी मुआ़हिदा के पाबन्द नहीं रहे और जंगे उ़हद के बाद जब नबी करीम (सल्ल०) बनू नज़ीर की बस्ती में तशरीफ़ ले गए ताकि वह बनू आ़मिर के साथ मुआ़हिदा के मुताबिक़ एक मक़्तूल की दियत (बदला) अदा करने में मुसलमानों के साथ मदद करें, तो उन्होंने मौक़ा को ग़नीमत जानकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को क़त्ल कर देने की साज़िश कर ली और तय किया कि आप के सर पर दीवार के ऊपर से एक बड़ा पत्थर गिरा दें, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उसी समय वह़्य के ज़रिये आप (सल्ल०) को इस की ख़बर दे दी, चुनाँचे वहाँ से तुरन्त सहाबा-ए-किराम के साथ मदीना वापस आ गए और उन्हें ख़बर भेज दी कि वह दस दिन के अन्दर अपनी बस्ती छोड़ दें, लेकिन उन्होंने 'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सिलोल' के इशारे से पर ऐसा करने से इन्कार कर दिया तो आप (सल्ल०) ने रबीउलव्वल 4 हि० में इस का मुह़ासिरा कर लिया और चन्द ही दिनों के घेराव के बाद इस शर्त पर अपनी बस्ती छोड़कर चले जाने पर तैय्यार हो गए कि वह अस्लह़ा के अ़लावा जो कुछ भी अपने ऊँटों पर ले जा सकें ले जाएँ। उन में से सिर्फ़ दो आदमी 'यामीन बिन उ़मैर बिन कअ़ब' और 'अबू सअ़द बिन वहब' मुसलमान हो गए और बाक़ी ख़ैबर और उन में से बाज़ शाम चले गए।

बनू नज़ीर की इस इस जिलावतनी को कुर्आने करीम ने **"अव्वल हश्र"** से तअ़बीर (संज्ञा) किया है। वह लोग दूसरी बार ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) के ज़माने में 'ख़ैबर' के जिलावतन होकर शाम चले गए जो उन का दूसरा **'हश्र'** था और तीसरा हश्र क़ियामत के दिन होगा, जिस के बारे में बाज़ ह़दीसों में आया है कि वह सरज़मीने शाम में ही होगा। नबी करीम (सल्ल०) ने उन के छोड़े हुए माल आदि को मुहाजिरीन में बाँट दिया। बनू नज़ीर की जिलावतनी (देश निकाला) इस सूरः का विशेष विषय है।

आयत नं० 1 से 10 तक

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ
الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۗ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ
يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ۝ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۗ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ
عَذَابُ النَّارِ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا
قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ
يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي
الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةً ۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۗ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ
فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ
اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۗ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّءُو الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ
هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۗ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ
فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝

अनुवाद-

(1) अल्लाह की तस्बीह़ (गुणगान) की है, हर उस चीज़ ने, जो आसमानों और ज़मीन में है, और 'वह' ज़बर्दस्त, हिकमत वाला है। (2) 'वही' है जिसने उन लोगों को जो अह्ले किताब में से काफ़िर हुए, उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया, तुम्हारा गुमान भी न था कि वे निकलेंगे और उन्होंने यह गुमान कर रखा था कि उनके क़िले उनको अल्लाह से बचा लेंगे, तो अल्लाह उन पर ऐसी जगह से पहुंचा जिसका उनको गुमान भी न था, और उनके दिलों में रोअ़ब डाल दिया, कि अपने घरों को खुद अपने हाथों और ईमान वालों के हाथों से भी उजाड़ने लगे, तो इबरत (नसीहत) हासिल करो, ऐ आँखें रखने वालो! (3) और अगर अल्लाह ने उनके लिए जिला-वतन (देश से निकालना) न लिख दिया होता, तो दुनिया में ही 'वह' उन्हें ज़रूर अ़ज़ाब दे देता, और आख़िरत में तो उनके लिए है ही आग का अ़ज़ाब। (4) यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का मुक़ाबला करने की कोशिश की, और जो व्यक्ति अल्लाह का मुक़ाबला करता है, तो अल्लाह का अज़ाब बहुत सख़्त है। (5) तुम ने खजूर के जो वृक्ष काटे, या उनको उनकी जड़ों पर छोड़ दिया, तो यह अल्लाह ही की इजाज़त से हुआ, और ताकि 'वह' फ़ासिक़ों (नाफ़रमानों) को रुसवा करे। (6) और जो (माल) अल्लाह ने उन लोगों से (बिना लड़ाई के) निकाल कर अपने रसूल को दिलवाया, तो उस पर तुमने न अपने घोड़े दौड़ाए, और न ऊँट, बल्कि अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है ग़लबा (प्रभुत्व) देता है, और अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) हासिल है। (7) जो माल अल्लाह ने अपने रसूल की ओर बस्तियों वालों से दिलवाया है, वह अल्लाह और रसूल, और रिश्तेदारों, और यतीमों,

और मिस्कीनों, और मुसाफ़िरों के लिए है, ताकि यह माल तुम्हारे मालदारों ही के बीच न घूमता रहे, और रसूल जो तुम्हें दें, वह ले लो और जिससे रोक दें, उससे रुक जाओ और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है। (8) (यह) माल उन मोहताज मुहाजिरों के लिए है, जो अपने घरों और अपने मालों से इस ह़ालत में निकाल बाहर किये गये है, कि वह अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रज़ामन्दी चाहते हैं, और अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही लोग सच्चे हैं। (9) और जो लोग उनसे पहले (मदीना को) ठिकाना बनाए हुए थे, और ईमान पर (जमे) थे, वे उन लोगों से मुह़ब्बत करते हैं, जो हिजरत कर के उनके पास आए और जो कुछ भी उन्हें दिया गया, उससे वे अपने सीनों में कोई खटक नहीं करते, और उनको अपने मुक़ाबले में तर्जीह़ (प्राथ्मिकता) देते हैं, चाहे वह खुद ही ज़रूरतमन्द हों, और जो लोग अपने दिल की तंगी से बचा लिए गये, तो ऐसे ही लोग कामियाब होने वाले हैं। (10) और जो उनके बाद आए, वे दुआ़ करते हैं, ‘‘ऐ हमारे रब! हमें भी माफ़ कर दे, और उन भाइयों को भी, जो हमसे पहले ईमान ले आए, और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना न रख, ऐ रब! तू बड़ा मेहरबान, रह़म करने वाला है।’’

आयत नं० 1 से 10 तक की व्याख्या

1-4 سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝ هُوَ الَّذِیْۤ اَخْرَجَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِیَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؔ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ یَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَیْثُ لَمْ یَحْتَسِبُوْا ۗ وَقَذَفَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ یُخْرِبُوْنَ بُیُوْتَهُمْ بِاَیْدِیْهِمْ وَاَیْدِی الْمُؤْمِنِیْنَ ۗ فَاعْتَبِرُوْا یٰۤاُولِی الْاَبْصَارِ ۝ وَلَوْلَاۤ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَیْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِی الدُّنْیَا ۚ وَلَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ یُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ۝

यहूदियों की ज़िल्लत

यहाँ से सूरः ह़श्र शुरु हो रही है। ‘ह़श्र’ अ़रबी में जमा करने को कहते हैं और अपनी जगह छोड़कर जब किसी जगह कोई क़ौम जमा हो जाए तो उस को ह़श्र कहा जाता है। क़ियामत के दिन को भी ह़श्र इसलिए कहा जाता है कि दुनिया के हर जगह और हर तरह के लोग जमा होंगे। यहाँ पहले तो ‘अल् ह़श्र’ से यहूदियों के क़बीले ‘बनू नज़ीर’ का मदीना मुनव्वरह से निकाला जाना और ‘ख़ैबर’ में जमा होना मुराद है।

जो मदीना मुनव्वरह से सौ मील के फ़ासले पर ‘शाम’ के रास्ते में पड़ता है, उन लोगों का यह वतन छोड़ना रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ज़माने में हुआ था, फिर दोबारह उन को ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने ख़ैबर से भी निकाल दिया और शाम के इलाक़े में जाकर बस गए थे।

बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि पहले ‘अल् ह़श्र’ से उन का पहली बार मदीना मुनव्वरह से निकल जाना मुराद है, दूसरे ह़श्र से वह इख़राज (बाहर करना) मुराद है जो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) के ज़माने में हुआ। इसी शब्द की वजह से इस सूरः को सूरः ह़श्र कहा जाता है और चूंकि इस में बनू नज़ीर के निकाले जाने का ज़िक्र है इसलिए ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) इस को सूरः बनू नज़ीर के नाम से जानते हैं।

शुरु सूरः में यह बयान फ़रमाया कि आसमानों और ज़मीन पर जो कुछ है सब अल्लाह की तस्बीह़ यानी पाकी बयान करते हैं, फिर यह बयान फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अ़ज़ीज़, ज़बरदस्त, ग़ल्बा वाला है उसे कोई बेबस नहीं कर सकता और ह़कीम भी है, वह ह़िक्मत के मुताबिक़ अपनी मख़्लूक़ में जो चाहता है करता है।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) मदीना मुनव्वरह तशरीफ़ लाए तो यहाँ यहूदियों के बड़े-बड़े तीन क़बीले मौजूद थेः-

1- क़बीला बनू नज़ीर 2- क़बीला बनू क़ुरैज़ा 3- क़बीला बनू क़ैनुक़ाअ़

यह क़बीले ताकत वाले थे और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) जब मदीना तशरीफ़ लाए तो यहूद ने आप (सल्ल०) से मुआ़हिदा (Contract) कर लिया था कि हम आप से जंग नहीं करेंगे और अगर कोई गिरोह ह़मलाआवर (आक्रमणकारी) होगा तो आप के साथ मिलकर उस का मुक़ाबला करेंगे, फिर उन लोगों ने मुआ़हिदा (Contract) तोड़ दिया (क़बीला बनू क़ुरैज़ा का अन्जाम सूरः अह़ज़ाब के रुकूअ़ नम्बर 3 में गुज़र चुका है और क़बीला क़ैनक़ाअ़ का अन्जाम सूरः आले इमरान की आयत नं० 12) قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ में गुज़र चुका है और इसी सूरः के दूसरे रुकूअ़ में भी इन्शाअल्लाह इन का ज़िक्र आएगा, यहाँ इन आयात में क़बीला बनू नज़ीर का ज़िक्र है।

क़बीला बनू नज़ीर की जिलावतनी का कारण-

2 हिज्री में ग़ज़्व-ए-बद्र का और 3 हिज्री में ग़ज़्व-ए-उ़हद का वाक़िआ़ पेश आया और क़बीला 'बनू नज़ीर' की जिलावतनी (वतन से बाहर) का वाक़िआ़ किसी ने ग़ज़्व-ए-उ़हद से पहले और किसी ने ग़ज़्व-ए-उ़हद के बाद लिखा है।

वाक़िआ़ यूँ हुआ कि क़बीला 'बनू आ़मिर' के दो शख़्सों की दियत के बारे में यहूदी 'बनू नज़ीर' के पास तशरीफ़ ले गए उन दो शख़्सों को 'अ़म्र बिन उ़मय्या' ने क़त्ल कर दिया था। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को उन की दियत अदा करनी थी, आप ने 'बनू नज़ीर' से फ़रमाया कि दियत के सिलसिले में मदद करो।

उन लोगों ने कहा आप तशरीफ़ रखिए हम मदद करेंगे। एक तरफ़ तो आप से यह बात कही और आप को अपने घरों की एक दीवार के साये में बिठाकर मश्वरह करने लगे कि इस से अच्छा मौक़ा नहीं मिल सकता, कोई शख़्स इस दीवार पर चढ़ जाए और बड़ा पत्थर फेंक दे जिससे इन की मौत हो जाए तो हमारा इन से छुट्कारा हो जाए।

उन में से एक शख़्स 'अ़म्र बिन जहश' था उस ने कहा यह काम मैं कर दूँगा वह पत्थर फेंकने के लिए ऊपर चढ़ा और उधर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को उन की इस चाल के बारे में आसमान से ख़बर आ गई कि इन लोगों का ऐसा-ऐसा इरादा है, आप के साथ ह़ज़रत अबू बक्र, उ़मर, अ़ली (रज़ि०) भी थे, आप जल्दी से उठे अपने साथियों को लेकर शहर मदीना तशरीफ़ ले आए शहर में तशरीफ़ लाकर आप

ने अपने सहाबी मुहम्मद बिन मुस्लिमा (रज़ि०) को यहूदियों के पास भेजा कि उन से कह दो कि हमारे शहर से निकल जाएँ।

आप की तरफ़ से यह हुक्म पहुँचा और मुनाफ़िक़ीन ने उन की कमर ठोंकी और उन से कहा कि तुम यहाँ से मत जाना, अगर तुम निकाले गए तो हम भी तुम्हारे साथ निकलेंगे और अगर तुम्हारे साथ जंग हुई तो हम भी तुम्हारे साथ लड़ेंगे (इस का ज़िक्र सूरः के दूसरे रुकूअ़ में है) इस बात से बनू नज़ीर (यहूदियों) के दिलों को वक़्ती तौर पर ढ़ारस हो गई और उन्होंने कहला भेजा कि हम नहीं निकलेंगे। जब उन का यह जवाब पहुँचा तो आप (सल्ल०) ने अपने सहाबा (रज़ि०) को जंग की तैयारी का और उन की तरफ़ रवाना होने का हुक्म दिया।

आप (सल्ल०) ने 'इब्ने मक्तूम' (रज़ि०) को मदीना का अमीर बनाकर सहाबा (रज़ि०) के साथ तशरीफ़ ले गए और वहाँ जाकर उन का मुहासिरा (घेराबन्दी) कर लिया। उन लोगों ने अपने क़िलों में शरण ले ली, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन के खजूर के दरख़्तों को काटने और जलाने का हुक्म दे दिया।

जब बनू नज़ीर के पास खाने का सामान ख़त्म हो गया और उन के दरख़्त काट कर जला दिये गए और इधर इन्तिज़ार के बाद मुनाफ़िक़ीन की मदद से नाउम्मीद हो गए तो ख़ुद रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सवाल किया कि हमें शहर से बाहर कर दें और हमारी जानों को क़त्ल न करें और हथियारों के अ़लावह जो माल हम ऊँटों पर ले जा सकें वह ले जाने दें। आप (सल्ल०) ने उन की यह बात क़ुबूल कर ली।

पहले तो उन्होंने धमकी दी थी कि हम नहीं निकलेंगे, फिर जब फंसे तो ख़ुद ही जिलावतन होना मन्ज़ूर कर लिया। अल्लाह तआ़ला ने उन के दिलों में रोअ़ब डाल दिया और बहादुरी के दावे कुछ काम नहीं आए। आप ने छः दिन उन का मुहासिरा (घेराबन्दी) फ़रमाया और मुवर्रिख़ 'वाक़्दी' का बयान है कि पन्द्रह दिन उन का मुहासिरा रहा।

"हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन को इजाज़त दे दी कि हर तीन आदमी पर एक ऊँट ले जाए जिस पर नम्बरवार उतरते चढ़ते रहें।

(इतिहासकार) इब्ने इस्हाक़ ने बयान किया है कि वह लोग अपने घरों से इतना सामान ले गए जिसे ऊँट बर्दाश्त कर सकते थे, सामान साथ ले जाने के लिए अपने घरों को और घर के दरवाज़ों को तोड़ रहे थे और मुसलमान भी उन के साथ उस काम में लगे हुए थे। इसी को आयते करीमा يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِى الْمُؤْمِنِيْنَ से फ़रमाया है।

यह लोग ऊँटों पर सामान लेकर रवाना हो गए उन में से बाज़ लोग 'ख़ैबर' में मुक़ीम हो गए और बाज़ 'शाम' के इलाक़ों में दाख़िल हो गए। जब यह लोग ख़ैबर में दाख़िल हुए तो वहाँ के लोग बहुत ख़ुश हुए और गानों और बाजों से उन का इस्तिक़बाल किया।

यह सब 'हाफ़िज़ इब्ने कसीर' ने 'अल् बिदाया वल् निहाया' में लिखा है। उन लोगों का ख़याल था कि हम क़िलों में छुप कर अपनी जानें बचा लेंगे। मुसलमानों के दिलों में भी यह ख़याल न था कि यह

लोग निकलने पर राज़ी हो जाएँगे। अल्लाह तआ़ला ने उन के दिलों में ख़ौफ़ डाल दिया और खुद ही जिलावतन (निकलने) के लिए तैयार हो गए जिस का आप (सल्ल०) ने उन्हें हुक्म दिया था।

उन लोगों का ईमान कुबूल करने से इन्कारी होना और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के मुक़ाबिले के लिए तैयार हो जाना ऐसा अ़मल था कि उन को दुनिया में अ़ज़ाब दे दिया जाता, जैसा कि कुरैश-ए-मक्का बद्र में क़त्ल किये गए लेकिन चूंकि अल्लाह तआ़ला ने पहले से लिख दिया था कि उन को दुनिया में जिलावतनी का अ़ज़ाब दिया जाएगा (जिस में ज़िल्लत भी है और अपने घरों को अपने हाथों से तोड़ना भी है और अपने मालों को छोड़कर जाना भी है, इसीलिए दुनिया में उस वक़्त जिलावतनी की सज़ा दी गई और आख़िरत में बहरह़ाल उन के लिए दोज़ख़ का अ़ज़ाब है) इस विषय को وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ में बयान किया गया है।

फिर फ़रमायाः-

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ यानी यह सज़ा उन को इसलिए दी गई कि उन्होंने अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध) की और जो शख़्स अल्लाह की मुख़ालिफ़त (विरोध) करेगा सो अल्लाह तआला सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। बनू क़ैनुक़ाअ़ को पहले जिलावतन कर दिया गया था और 'बनू नज़ीर' अपने इस मुआ़हिदे के तोड़ने पर जिलावतन किये गए कि उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को शहीद करने का आपसी मश्वरह कर के ख़ुफ़िया चाल चली थी, जिस का ज़िक्र 'बनू कुरैज़ा' का ह़ाल 'सूरः अह़ज़ाब' के तीसरे रुकूअ़ की तफ़्सीर में बयान किया जा चुका है

उन लोगों ने 'ग़ज़्व-ए-अहज़ाब' के मौक़े पर कुरैशे मक्का और उन के साथ आने वाली जमाअ़तों की मदद की थी। इन तीनों क़बीलों के अ़लावह यहूद के छोटे बड़े और भी चन्द क़बीले मदीना मुनव्वरह में आबाद थे। जिन के नाम 'इब्ने हिशाम' ने अपनी किताब सीरतुन्नबी (सल्ल०) में लिखें है।

सभी यहूदियों को मदीना मुनव्वरह से निकाल दिया गया था, उन में क़बीला 'बनू क़ैनक़ाअ़' और 'क़बीला बनू ह़ारिसा' भी था जिस में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि०) बनू क़ैनक़ाअ़ में से थे।

(सहीह़ बुख़ारी पेज नं० 574, भाग 2, मुस्लिम 94ः भाग 2)

5 مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ۝

यहूदियों के दरख़्तों को काटना

सह़ाबा ने जब यहूदियों के क़बीला 'बनू नज़ीर' का मुह़ासिरा (घेराबन्दी) किया और वह लोग क़िलों में अपने ख़याल में मह़फ़ूज़ हो गए तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन के खजूरों के दरख़्तों को काटने और जलाने का हुक्म दे दिया। इस पर यहूदियों ने कहा कि ऐ अबू अल् क़ासिम! आप तो ज़मीन में फ़साद से मना करते हैं, क्या यह दरख़्तों का काटना फ़साद नहीं है और बाज़ रिवायात में यूँ भी है कि बाज़ मुहाजिरीन ने मुसलमानों को मना किया कि खजूरों के दरख़्तों को न काटें, क्योंकि यह मुसलमानों को बतौर

ग़नीमत मिल जाएँगे।

बाज़ रिवायात में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने पहले खजूरों के दरख़्तों को काटने की इजाज़त दे दी थी, फिर मना फ़रमा दिया था। इस पर सह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि क्या इन दरख़्तों को काटने में कोई गुनाह है या इन के छोड़ देने पर कोई पकड़ की बात है? इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। **(तफ़्सीर इब्ने कसीर पेज नं० 323 भाग 4)**

यानी तुम ने जो भी खजूरों के दरख़्त काट दिये या नहीं काटे या कुछ को उन की जड़ों पर खड़ा रहने दिया, सो यह सब अल्लाह तआ़ला की इजाज़त से है। जो काम अल्लाह तआ़ला की इजाज़त से और दीनी ज़रूरत से हो उस में गुनाहगार होने का कोई सवाल ही नहीं।

उन खजूरों के काटने में जो अपनी ज़रूरत थी, उस को وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ में बयान फ़रमाया।

मतलब यह है कि इन दरख़्तों को जलाने में बद्दीन यहूदियों को ज़लील करना भी मक़्सूद है, अपने बाग़ों को जलता हुआ देखकर उन के दिल भी जलेंगे और ज़िल्लत भी होगी और इस की वजह से क़िला छोड़कर हार मानने से सुलह़ (Compromise) करने पर राज़ी होंगे।

चुनाँचे यहूदी यह मन्ज़र देखकर राज़ी हो गए कि हमें मदीना से जाना मन्ज़ूर है, फिर वह मदीना से जिलावतन होकर ख़ैबर चले गए जिस का क़िस्सा ऊपर गुज़रा है, दुनियावी सामान की ह़िफ़ाज़त हो या उजाड़ना हो अगर अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हो तो इस में सवाब ही सवाब है, गुनाह का सवाल ही नहीं।

6-7 وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۝ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِی الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَیْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ؕ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۗ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

‘फ़य’ के माल का ह़क़्दार

शब्द ‘फ़य’ اَفَاءَ فَاءَ يَفِیءُ बाब अफ़आ़ल से माज़ी का सीग़ा है। فَاءَ लौटा, افاء लौटाया, चूंकि काफ़िरों का माल मुसलमानों को मिल जाता है, उन की मिल्कियत ख़त्म हो जाती हैं और मुसलमानों की मिल्क में आ जाती हैं इसलिए “जो माल जंग किये बग़ैर बतौर सुलह़ मिल जाए उस को ‘फ़य’ कहते हैं” और “जो माल जंग कर के मिले उस माल को ‘ग़नीमत’ कहते हैं”।

‘माले ग़नीमत’ के मसारिफ़ दस्वें पारे के शुरु में बयान कर दिये गये हैं और ‘माले फ़य’ के ह़क़्दार यहाँ बयान फ़रमाए हैं।

‘बनू नज़ीर’ के माल बतौर सुलह़ (compromise) मिल गए और इस में कोई जंग लड़नी नहीं पड़ी थी, लिहाज़ा इन मालों में किसी को किसी ह़िस्से का ह़क़ नहीं था। बाज़ सह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के

दिलों में यह बात आई कि हमें इन मालों में से ह़िस्सा दिया जाए। यहाँ इस वस्वसे को ख़त्म फ़रमा दिया और फ़रमायाः-

فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ (कि तुम ने इस में अपने घोड़े और ऊँट नहीं दौड़ाये) यानी तुम्हें इस में कोई तक्लीफ़ नहीं उठानी पड़ी और कोई जंग नहीं लड़नी पड़ी।

وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۭ

(और लेकिन अल्लाह तआ़ला अपने रसूलों को जिस पर चाहे मुसल्लत फ़रमा दे।)

यानी पहले भी अल्लाह तआ़ला ने रसूलों को जिस पर चाहा मुसल्लत फ़रमा दिया और अब मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) को 'बनू नज़ीर' पर मुसल्लत फ़रमा दिया, लिहाज़ा उन मालों का अख़्तियार रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ही है।

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

(और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है) चूंकि 'बनू नज़ीर' के माल क़िताल के बग़ैर ह़ासिल हुए थे, इसलिए उन्हें जंग में हासिल माल के तौर पर तक़्सीम (devide) नहीं फ़रमाया। इस के बाद अमवाले 'फ़य' के मसारिफ़ बयान फ़रमाए और इर्शाद फ़रमायाः-

مَآ اَفَاۗءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى

अल्लाह ने जो कुछ अपने रसूल को बस्तियों के रहने वालों से बतौर 'फ़य' दिलवाया सो वह अल्लाह के लिए है और रसूल के लिए और रिश्तेदारों के लिए और यतीमों के लिए और मिस्कीनों के लिए और मुसाफ़िरों के लिए है।

(अमवाल 'बनू नज़ीर' के अ़लावा बाज़ दूसरी बस्तियाँ भी बतौर माल 'फ़य' रसूलुल्लाह (सल्ल०) के क़ब्ज़े में आ गई थीं, जिन में से 'फ़िदक' ज़्यादह मशहूर है। 'ख़ैबर' के आधा ह़िस्सा का और 'बनू उरैना' के अमवाल का ज़िक्र भी मुफ़स्सिरीन ने लिखा है।

इन आयात में 'अमवाले फ़य' अर्थात पहले فَلِلّٰهِ फ़रमाया।

बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र बरकत के लिए है जैसा कि 'खुमुस' (पाँचवें ह़िस्सा) के बारे में فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ फ़रमाया है।

बाज़ ह़ज़रात ने इस की यूँ तफ़्सीर की है कि अल्लाह तआ़ला को ह़क़ है कि जैसे चाहे उन को ख़र्च करने का हुक्म दे इस में किसी को अपनी तरफ़ से कुछ मश्वरा देने या किसी का ह़िस्सा बताने और तय करने का कोई ह़क़ नहीं। फिर फ़रमाया وَلِلرَّسُوْلِ

'माल फ़य' अल्लाह के रसूल के लिए है यानी इन अमवाल का अख़्तियार अल्लाह पाक की तरफ़ से आप को दे दिया गया है और आप को उन के मसारिफ़ (खर्च करने के तरीके) बता दिये हैं। (माले ग़नीमत की तरह़ यह माल ख़र्च नहीं किये जाएँगे और न उन में खुमुस निकाला जाएगा।)

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि 'माले फ़य' पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मालिकाना अख़्तियार ह़ासिल था, फिर उन के जो ख़र्च करने की जगह बयान फ़रमाई यह उसी तरह़ की बात है जैसे मालिकों के माल

के बारे में अहकाम दिये गये हैं कि फ़लाँ-फ़लाँ जगह पर ख़र्च करो। तीसरा ख़र्च बताते हुए وَلِذِي الْقُرْبٰى फ़रमाया।

मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि इस से रसूलुल्लाह (सल्ल०) के रिश्तेदार मुराद हैं। इस के बाद चौथा, पाँचवां और छठा खर्च बताते हुए وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ फ़रमाया।

यानी 'अमवाले फ़य' यतीमों मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर भी ख़र्च किये जाएँ।

'फ़य' के माल को आप (सल्ल०) अपने रिश्तेदार पर, यतीमों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर अपनी मर्जी से ख़र्च कर देते थे, इसी सिलसिले में यह भी था कि आप माले फ़य में से अपने घर वालों के लिए एक साल का ख़र्चा निकाल लेते थे और जो माल बच जाता था उसे मुसलमानों की आ़म ज़रुरियात में जैसे जिहाद के लिए हथियार जमा करने के लिए ख़र्च फ़रमा देते थे।

आप (सल्ल०) को उन मालों पर मालिकाना अख़्तियार हासिल था, लेकिन चूंकि आप ने वफ़ात से पहले यह फ़रमा दिया था कि لَا نُوْرَثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ (कि हमारी मीरास माली जारी न होगी हम जो कुछ छोड़ेंगे वह सदक़ा होगा। **(सहीह़ बुख़ारी पेज नं० 436 भाग 1)**

इसलिए इन मालों में मीरास जारी नहीं की गई।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की वफ़ात के बाद ह़ज़राते ख़ुलफ़-ए-राशिदीन (रज़ि०) ने भी इन मालों को उन्हीं चीजों में ख़र्च किया जिन में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ख़र्च फ़रमाते थे।

इमामुल मुस्लिमीन को जब 'अमवाले फ़य' हासिल हो जाएँ तो उन्हें मालिकाना अख़्तियार हासिल नहीं होंगे, बल्कि हाकिमाना अख़्तियार हासिल होंगे और वह इन मसारिफ़ में और मुसलमानों की आ़म ज़रुरियात में जैसे जिहाद के लिए हथियार बनाने के लिए, पुल तैयार करने, सड़कें बनवाने, मुजाहिदीन और उन के घर वालों की ज़रुरतें पूरी करने और उ़लमा-ए-किराम पर ख़र्च करने, काज़ी और ज़कात की वसूलयाबी करने वालों की ज़रुरतें पूरी करने में ख़र्च करेगा।

'साहिबे रुहल मआ़नी' लिखते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के करीबी रिश्तेदार से 'बनू हाशिम' और 'बनू अ़ब्दुल मुत्तलिब' मुराद लिए हैं।

फिर लिखा है कि 'ह़ज़रत इमाम शाफ़ई' और 'ह़ज़रत इमाम अह़मद' का मस्लक यह है कि इन ह़ज़रात को अमवाले 'फ़य' में से ह़िस्सा दिया जाएगा।

अमीर हों या फ़क़ीर और لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ के मुताबिक़ तक़्सीम किया जाएगा।

ह़ज़रत इमाम मालिक का मस्लक नक़्ल किया है कि इमामुल मुस्लिमीन जिस तरह़ चाहे इन ह़ज़रात पर ख़र्च करे उसे यह भी अख़्तियार है कि बाज़ को दे, बाज़ को न दे, फिर ह़न्फ़िया का मस्लक लिखा है कि क़रीबी रिश्तेदारों का ह़िस्सा 'अमवाले फ़य' में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बाद बाक़ी नहीं रहा क्योंकि ह़ज़राते ख़ुल्फ़ा-ए-राशिदीन ने उन के लिए अलग ह़िस्सा नहीं निकाला।

हाँ, उन ह़ज़रात में जो यतीम और मिस्कीन व इब्ने सबील होंगे उन को इन तीन गुणों के एतिबार से अमवाले 'फ़य' में से दिया जाएगा और दूसरे ह़क़्दारों पर उन को प्राथ्मिकता (Priority) दी जाएगी।

फिर यतीम के बारे में लिखा है कि अमवाले फ़य में से उन यतीमों पर ख़र्च किया जाएगा, जो मुसलमान हैं और फ़क़ीर या मिस्कीन हैं।

كَيْ لَا يَكُونَ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ ‘अमवाले फ़य’ के खर्चे बयान करने के बाद इर्शाद फ़रमायाः-

كَيْ لَا يَكُونَ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ यानी ‘अमवाले फ़य’ के मसारिफ़ स्पष्ट तौर पर बयान फ़रमा दिये गए ताकि यह अमवाल तुम्हारे मालदारों के दर्मियान दौलत बनकर न रह जाएँ। (शब्द दौलत दाल के ज़बर के साथ और ‘दूला’ दाल के पेश के साथ दोनों तरह् अ़रबी ज़बान का शब्द है।) माल को दौलत कहा जाता है क्योंकि इस में ‘तवादुल् ईदी’ होता रहता है यानी “एक से होकर दूसरे के पास जाता रहता है”।

हिन्दी में जिस के पास ज़्यादह माल हो उसे दौलतमन्द कहते हैं। इन शब्दों में तम्बीह फ़रमा दी कि अमवाले ‘फ़य’ की तक़्सीम जो अल्लाह तआ़ला ने बयान फ़रमा दी उस में यह हिक्मत है कि यह अमवाल मालदारों के ही हाथों में आकर न रह जाएँ जैसा कि जाहिलियत के ज़माने में होता था और अब भी वैसा ही है कि आम लोगों की मदद के लिए हाद्सों व मुसीबतों के मौक़े में बाज़ मालदारों और हुकूमतों की तरफ़ से जो माल मिलता है उस में थोड़ा सा जरुरतमन्द पर ख़र्च करने के बाद ज़िम्मेदार ही मिल मिलाकर खा जाते हैं जो पहले से मालदार होते हैं, चूंकि दुनियादारी ग़ालिब होती है और माल की मुह़ब्बत दिलों में बैठी हुई है, इसलिए ऐसे जुल्म होते रहते हैं।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की इताअ़त फ़र्ज़ है

وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا (और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जो तुम्हें दें वह ले लो और जिस से रोकें उस से रुक जाओ।)

इस में यह बता दिया कि हर हुक्म का क़ुर्आन मजीद में होना ज़रूरी नहीं है। क़ुर्आन मजीद में भी अल्लाह तआ़ला ने अपने अह़काम बयान फ़रमाए हैं और बहुत से अह़काम रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ज़रिये बताए हैं, उन में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के आ़माल भी हैं और क़ौल भी और तक़्रीर भी।

यानी किसी ने आप के सामने कोई अ़मल किया और आप (सल्ल०) ने मना नहीं फ़रमाया तो यह भी हुज्जत शरअ़िया है। सूरः अअ़राफ़ (**आयत नं० 157**) में आप (सल्ल०) की सिफ़ात बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया है يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ

(यानी आप उन्हे अच्छे कामों का हुक्म देते हैं, उन्हें बुराईयों से रोकते हैं और उनके लिए पाकीज़ह चीज़ों को ह़लाल क़रार देते हैं और उन के लिए ख़बीस चीज़ों को ह़राम क़रार देते हैं।

मुन्किरीने ह़दीस-

कुछ ऐसे लोग होते हैं जो यूँ कहते हैं कि ह़दीस शरीफ़ ‘हुज्जत शरअ़िया’ नहीं है और इसीलिए बहुत सी इस्लामी चीज़ों का इन्कार करते हैं। यह बहुत बड़ी गुमराही और कुफ़्र है, यह लोग झूठा दावा करते हैं कि हम क़ुर्आन के मानने वाले हैं। अगर क़ुर्आन के मानने वाले होते तो ऐसा क्यों कहते कि ह़दीस हुज्जते शरअ़िया नहीं है।

कुर्आन में तो وَمَا اٰتٰكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوْهُ और مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَد اَطَاعَ الله और اَطِيْعُو اللهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ फ़रमाया है।

सह़ीह़ बुख़ारी में है कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने फ़रमायाः-

لَعَنَ اللهُ الواشِمَاتِ والمَسْتَوشِمَاتَ والمتنمّصات لَهُ وَالمتفلجات للحُسْنِ الُميغرات خَلْقَ الله

यानी अल्लाह तआ़ला की लअ़नत हो गोदने वालियों पर और गुदवाने वालियों पर और उन औ़रतों पर जो (भवों के बाल) चुनने वाली हैं (ताकि भवें बारीक हो जाएँ) और अल्लाह की लअ़नत हो उन औ़रतों पर जो हुस्न के लिए दाँतों के दर्मियान सजाती हैं जो अल्लाह की पैदाइश को बदलने वाली हैं।

'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद' (रज़ि०) की यह बात सुनकर एक औ़रत आई और उस ने कहा कि मैंने सुना है कि आप इस तरह़ की औ़रतों पर लअ़नत भेजते हैं? फ़रमाया कि क्या मैं उन लोगों पर लअ़नत न भेजूँ जिन पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने लअ़नत भेजी और जिन पर अल्लाह की किताब में लअ़नत आई है, वह औ़रत कहने लगी कि मैंने सारा क़ुर्आन पढ़ लिया मुझे तो यह बात कहीं नहीं मिली।

'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने फ़रमाया कि अगर तूने क़ुर्आन पढ़ा होता तो तुझे ज़रूर यह बात मिल जाती, क्या तूने यह नहीं पढ़ा।

وَمَآ اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا

(और रसूल तुम को जो (हिदायत) दें उसे क़ुबूल कर लो और जिस चीज़ से रोकें उस से रुक जाओ।)

यह सुनकर वह औ़रत कहने लगी कि हाँ यह क़ुर्आन में है। 'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद' (रज़ि०) ने फ़रमाया कि मैंने जिन कामों के करने वाली औ़रतों पर लअ़नत की है अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उन कामों से मना फ़रमाया है, लिहाज़ा क़ुर्आन से भी उन कामों की मुमानिअ़त साबित हुई क्योंकि क़ुर्आन ने फ़रमाया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जिन बातों का हुक्म दें उन पर अ़मल करो और जिन चीज़ों से रोकें उन से रुक जाओ। **(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 725 भाग 2)**

'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद' (रज़ि०) ने बिला झिझक रसूलुल्लाह (सल्ल०) के क़ौल को अल्लाह की तरफ़ जोड़ दिया और बता दिया कि जिस पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने लअ़नत की, उस पर अल्लाह की लअ़नत है।

यह विषय 'अमवाले फ़य' की तक़्सीम (Devide) बयान करने के बाद इर्शाद फ़रमाया इस में यह बता दिया कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का फ़रमान अल्लाह तआ़ला के फ़रमान से अलग नहीं है। तक़्सीम 'फ़य' का जो काम आप के सुपुर्द किया गया है उस में आप जिस तरह़ खर्च फ़रमाएँ वह दुरुस्त है और अल्लाह तआ़ला के हुक्म और उस की रज़ा के मुताबिक है।

आख़िर में फ़रमाया وَاتَّقُوا اللهَ ۭ اِنَّ اللهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

(और अल्लाह से डरो बिलाशुब्हा अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है।)

8 لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَ اَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ
وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۚ

मुहाजिरीन की फ़ज़ीलत

इस आयत में इर्शाद फ़रमाया कि 'अमवाले फ़य' में उन लोगों का भी ह़िस्सा है जो हिज्रत कर के मदीना मुनव्वरह आ गए। मुश्रिकीने मक्का की तक्लीफों की वजह से अपने घरबार और अमवाल छोड़ कर चले आए। जब मदीना मुनव्वरह पहुँचे तो ज़रुरतमन्द और तंगदस्त थे, उन पर भी 'अमवाले फ़य' ख़र्च किये जाएँ।

अमवाल और घरबार छोड़ कर उनका मदीना मुनव्वरह आने का मक़्सद इस के सिवा कुछ नहीं कि उन्हें अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रज़ामन्दी मतलूब है, उन की हिज्रत किसी दुनियावी ग़र्ज़ के लिए नहीं है, जो तक्लीफ़ें उन को पहुँची थीं वह अपनी जगह हैं। इन के अ़लावह मदीना मुनव्वरह आकर भी जिहाद में शरीक होने का सिल्सिला जारी रहा और काफ़िरों से लड़ते रहे और अल्लाह और उस के रसूल की मदद करते रहे, यह लोग अपने ईमान के तक़ाज़ों में सच्चे हैं।

पहली आयत में जो यतीमों, मिस्कीनों और इब्ने सबील का ज़िक्र फ़रमाया, उस के उ़मूम में फकीर मुहाजिरीन दाख़िल हैं, लेकिन खुसूसियत के साथ भी उन का हक़ ज़ाहिर फ़रमा दिया क्योंकि उन्होंने अल्लाह की राह में बहुत ज़्यादह तक्लीफ़ें उठाई थीं।

9 وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ
اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۚ

अन्सार के गुण

'साहि़बे रुहुल् मआ़नी' ने लिखा है कि अक्सर उ़लमा फ़रमाते हैं कि وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ मतलब यह है कि 'फ़य' के जो माल हैं अन्सार भी उस के ह़क़दार हैं कि उन पर ख़र्च किया जाए।

अन्सार की तअ़रीफ़ करते हुए पहले यूँ फ़रमाया कि यह वह लोग हैं जिन्होंने मदीना मुनव्वरह को पहले ही से अपना ठिकाना बना लिया था, यह ह़ज़रात रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बेअ़सत से बहुत पहले मदीना मुनव्वरह में यमन से आकर आबाद हो गए थे, जो बाद में 'दारुल् ईमान' बन गया, फिर जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बेअ़सत हुई और ह़ज के मौक़े पर मिना में आप से मुलाक़ात हो गई तो ईमान भी क़ुबूल कर लिया। वहाँ तो चन्द आदमियों ने क़ुबूल किया था, फिर अक्सर मदीना वालों ने ईमान क़ुबूल कर लिया।

दूसरी सिफ़त यह बयान फ़रमाई कि जो ह़ज़रात उन के पास हिज्रत कर के आते हैं उन से मुह़ब्बत करते हैं, उन के दिलों में यह बात नहीं आती कि दूसरे इलाक़े के लोग हमारे यहाँ आ कर बस गए हैं,

इन की वजह से हमारी अर्थव्यवस्था पर असर पड़ेगा, यही नहीं कि उन के आने से खुश होते हों बल्कि सच्चे दिल से उन से मुहब्बत भी करते हैं।

तीसरी तअ़रीफ़ यूँ फ़रमाई कि हिजूरत कर के आने वालों को जो कुछ दिया जाता है उस की वजह से अपने सीनों में कोई ह़ाजत यानी ह़सद (ईर्ष्या) और जलन की कैफ़ियत मह़सूस नहीं करते यानी वह उस का कुछ असर नहीं लेते कि मुहाजिरीन को दिया गया और हमें नहीं दिया गया।

चौथी तअ़रीफ़ यूँ फ़रमाई कि अन्सार अपनी जानों पर दूसरों को तर्जीह़ (वरीयता) देते हैं अगरचे उन्हें ख़ुद ज़रूरत हो।

मुहाजिरीन व अन्सार (रज़ि०) की आपसी मुह़ब्बत-

ह़दीस शरीफ़ की किताबों में अन्सार (रज़ि०) और मुहाजिरीन के ईसार व कुर्बानी के बहुत से वाक़िआ़त लिखे हैं।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) ने बयान किया है कि अन्सार ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अ़र्ज़ किया कि हमारे और इन मुहाजिरीन के दर्मियान खजूरों के बाग़ों को तक़्सीम फ़रमा दीजिए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया नहीं (मैं ऐसा नहीं करता।)

इस पर अन्सार ने मुहाजिरीन से कहा अच्छा आप लोग पैदावार की मेह़नत में मदद करें और हम आप लोगों को फलों में शरीक कर लेंगे। इस पर मुहाजिरीन (मक्का से मदीना आने वाले) ने कहा यह हमें मन्ज़ूर है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) ने बयान किया है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं तक्लीफ़ में हूँ (भूक से दो चार हूँ) आप ने (उस के खाने के लिए) अपनी बीवियों से कुछ तलब फ़रमाया, आप के घरों से जवाब आया कि हमारे पास कुछ नहीं है।

इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़ाज़िरीन से फ़रमाया कि ऐसा कौन शख़्स है जो इस शख़्स की मेहमानी करे? यह सुनकर एक अन्सारी सह़ाबी (रज़ि०) ने कहा कि मैं इन को साथ ले जाता हूँ चुनांचे उन्हें साथ ले गए और अपनी बीवी से कहा कि देखो! यह रसूलुल्लाह (सल्ल०) के मेहमान है इन का इक्राम (Respect) करना है। बीवी ने कहा कि हमारे पास तो सिवाए बच्चों की ख़ुराक के कुछ भी नहीं है। शौहर ने कहा खाना तैयार करो और बच्चों को सुला दो, चुनाँचे उन्होंने ने खाना पकाया और बच्चों को सुला दिया, फिर जब खाने बैठे तो औ़रत इस अन्दाज़ से उठी कि गोया चिराग़ की बत्ती दुरुस्त कर रही हो, लेकिन दुरुस्त करने के बजाए उन्होंने चिराग़ बुझा दिया मेहमान खाता रहा और यह समझता रहा कि यह दोनों भी मेरे साथ खा रहे हैं, ह़ालांकि उन्होंने उन के साथ खाना नहीं खाया और रात भर भूके रहे, सुबह़ को जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास ह़ाज़िरी हुई तो यह मेज़बान सह़ाबी ह़ाज़िर हुए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला को तुम्हारा अ़मल पसन्द आया कि तुम भूके रहे और मेहमान को खिला दिया।

इस पर अल्लाह तआ़ला ने आयते करीमा وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ नाज़िल फ़रमाई।
(सह़ीह़ बुख़ारी भाग 1, पेज नं० 536)

यहाँ जो सवाल पैदा होता है कि बच्चे मेहमान की बनिस्बत ज़्यादह ह़क़्दार थे फिर मेहमान को उन का खाना क्यों खिलाया? इस का जवाब यह है कि बच्चे उस वक़्त रात का खाना खा चुके थे, अब खाने की जरुरत सुबह़ नाश्ते के लिए थी अगर वह भूके होते तो सुलाने से भी न सोते।

दूसरा सवाल यह है कि चिराग़ जलाकर तीन जो साथ बैठे उस में बेपर्दगी हुई। इस का जवाब यह है कि यह वाक़िआ़ पर्दे के हुक्म नाज़िल होने से पहले का है।

नोट– यह सह़ाबी कौन थे जो मेहमान को साथ ले गये थे? इस के बारे में बाज़ उ़लमा ने ह़ज़रत 'अबू तल्ह़ा अन्सारी' (रज़ि०) का और बाज़ ह़ज़रात ने 'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा' अन्सारी (रज़ि०) का नाम बताया है और तीसरा क़ौल यह है कि यह दअ़वत करने वाले सह़ाबी 'क़ैस बिन साबित' थे।
(रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अजमईन)

जो कन्जूसी से बच गया वह कामियाब है–

आयत के आख़िर में फ़रमाया وَمَن يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِۦ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ

"और जो शख़्स अपने नफ़्स की कन्जूसी से बचा दिया गया सो यह वह लोग हैं जो कामियाब होने वाले हैं"।

इस में कंजूसी की मज़म्मत (निन्दा) की गई है और नफ़्स की कंजूसी से बचने को कामियाब होने वालों की एक शान बताई गई है। कंजूसी की बात जो नफ़्स की तरफ़ की है उस में एक बात यह है कि बाज़ मर्तबः दिल तो ख़र्च करने पर तय्यार हो जाता है, लेकिन नफ़्स को माल ख़र्च करने पर तय्यार करना मुश्किल होता है। وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ

मुफ़स्सिर 'कु़र्तुबी' लिखते हैं कि बाज़ अहले लुग़त का क़ौल है कि 'शुह़' बुख़्ल से ज़्यादह बढ़ कर है। फिर सह़ाह़ (लुग़त की किताब) से नक़्ल किया है कि 'शुह़' उस बुख़्ल को कहा जाता है जिस के साथ ह़िर्स भी हो।

ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि ज़ुल्म से बचो क्योंकि क़ियामत के दिन ज़ुल्म अंधेरियाँ बनकर सामने आएगा और शुह़ (कंजूसी) से बचो क्योंकि कंजूसी ने तुम से पहले लोगों को हलाक कर दिया उस ने उन्हें आपस में ख़ूँरेज़ी करने पर और ह़राम चीज़ों को ह़लाल करने पर उभारा था। **(रवाहु मुस्लिम)**

इन्सान के मिज़ाज में कंजूसी है जिसे सूरः निसा में से फ़रमाया है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बद्तरीन चीज़ जो इन्सान के अन्दर है वह कंजूसी है जो घबराहट में डाल दे और बुज़्दिली है जो जान को निकाल दे।

"और एक ह़दीस में है कि कंजूसी और ईमान कभी किसी बन्दे के दिल में जमा नहीं हो सकते"।

एक और ह़दीस में इर्शाद है कि दो चीज़ें बन्दे में जमा नहीं हो सकतीं एक बुख़्ल और दूसरे बद्ख़ुल्क़ी। **(तिर्मिज़ी)**

इन्सान का मिज़ाज है कि माल लेने को तो तैयार हो जाता है देने को तैयार नहीं होता, इसीलिए ज़िन्दगी में अल्लाह की रज़ा के लिए माल ख़र्च करने का ज़्यादह सवाब है। नफ़्स ख़र्च करने को नहीं चाहता, लेकिन फिर भी नफ़्स के तक़ाज़ों को दबाकर मोमिन अल्लाह तआला की रज़ा के लिए ख़र्च करता चला जाता है।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से एक शख़्स ने दर्याफ़्त किया कि सवाब के एतिबार से कौन सा सद्क़ा बड़ा है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया वह सद्क़ः सब से बड़ा है कि तू इस हाल में सद्क़ः करे कि तू तन्दुरुस्त हो, नफ़्स में कंजूसी हो, तंगदस्ती का ख़ौफ़ हो, मालदार बनने की उम्मीद लगा रखी हो, फिर फ़रमाया कि तू ख़र्च करने में देर न लगा यहाँ तक कि जब रूह हलक़ तक पहुँच जाए, तो कहने लगे फ़लाँ को इतना देना फ़लाँ को इतना देना (अब कहने से क्या होता है) अब तो फ़लाँ का हो ही चुका (दम निकलते ही दूसरों का है।) **(रवाहुलू बुख़ारी, भाग 1, पेज नं० 191)**

हज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि कोई शख़्स अपनी ज़िन्दगी में एक दिरहम सद्क़ः करे तो यह इस से बेहतर है कि मौत के वक़्त सौ दिरहम का सद्क़ः करे। **(रवाहु अबूदाऊद)**

बहुत से लोग दुनियावी ज़रुरतों गुनाहों और रियाकारियों (दिखावे) में तो दिल खोल कर ख़र्च करते हैं, बेतहाशा फ़ुज़ूलख़र्ची में माल उड़ा देते हैं लेकिन माल से मुतअ़ल्लिक़ फ़रायज़ व वाजिबात अदा नहीं करते। ज़कात की अदाएगी को रोके रखे हैं हज फ़र्ज़ हो जाता है तो उस के लिए हिम्मत नहीं करते और अगर हिम्मत कर भी ले तो उसे दुनियादारी यानी रियाकारी (दिखावे) का ज़रिया बना लेते हैं।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि ज़माना जल्दी-जल्दी गुज़रने लगेगा, अमल कम हो जाएगा और (दिलों में) कंजूसी डाल दी जाएगी। फ़ित्ने ज़ाहिर होंगे और क़त्ल ज़्यादह होंगे। **(रवाहुलू बुख़ारी पेज नं० 1042)**

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से यह भी रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया तीन चीज़ें निजात देने वाली हैं।

1- तन्हाई में और लोगों के सामने तक़्वा के तक़ाज़ों पर चलना। 2- रज़ामन्दी में और नाराज़गी में हक़ बात कहना। 3- मालदारी और तंगदस्ती में दर्मियानी रास्ता अख़्तियार करना।

हलाक करने वाली तीन चीज़ें-

1- ख़्वाहिशों की पैरवी करना। 2- कंजूसी (के जज़्बात) की फ़रमाँबरदारी करना। 3- इन्सान को अपने नफ़्स पर घमण्ड करना। **(मिश्कातुलू मसाबीह पेज नं० 434)**

कंजूसी बुरी बला है नफ़्स पर क़ाबू पाये, अल्लाह तआ़ला की रज़ा में माल ख़र्च करे और गुनाहों में ख़र्च करने से बचे और फ़ुज़ूलख़र्ची से भी बचे यह कामियाबी का रास्ता है। जिसे وَمَن يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ में बयान फ़रमाया है।

10 وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝

‘फ़य’ में हक़

अक्सर उ़लमा के नज़्दीक यह भी अल् मुहाजिरीन पर ‘मअ़तूफ़’ है और इस में बाद में आने वाले हज़रात का अमवाले ‘फ़य’ में हिस्सा बताया है और मक़्सद यह है कि मुहाजिरीन के बाद दूसरे मुसलमान जो क़ियामत तक आएँगे उन सब पर माले ‘फ़य’ में से ख़र्च किया जाए।

मुफ़स्सिर ‘इब्ने कसीर’ ने तफ़्सीर ‘इब्ने जरीर’ से नक़्ल किया है कि हज़रत उ़मर (रज़ि०) ने आयते शरीफ़ा اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ **(सूरः तौबः-60)** की आख़िर तक तिलावत की, फिर फ़रमाया कि यह सद्क़ात उन लोगों के लिए हैं (जिन का आयत में ज़िक्र हुआ) इस के बाद आप ने आयते करीमा وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ **(सूरः अन्फ़ाल-41)** आख़िर तक तिलावत की।

फिर फ़रमाया कि अमवाले ग़नीमत उन लोगों के लिए हैं जो इस आयत में जिक्र हैं। फिर आप ने مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ से وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ तक तिलावत की और यूँ फ़रमाया कि यह आयात तमाम मुस्लिमीन को शामिल हैं, जो नया मुसलमान होगा अमवाले ‘फ़य’ में उस का हक़ होगा, फिर फ़रमाया अगर मैं ज़िन्दा रह गया तो एक बकरियाँ चराने वाला जो ‘सर्द हिमयर’ (एक क़बीले का नाम है जो मदीना मुनव्वरह से दूर रहता था) में चरा रहा होगा अपने हिस्से को वहीं पा लेगा, उस के ह़ासिल करने में उस की पेशानी में पसीना तक न आया होगा। **(इब्ने कसीर भाग 4, पेज नं० 340)**

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर (रह़०) ने आयते बाला की तफ़्सीर करते हुए यह भी लिखा है कि-

هؤلاء هم الثالث ممن يستحق فقراء هم من مال الفئ وهم المهاجرون ثم الانصار.

यानी अमवाले ‘फ़य’ के ह़क़्दारों की यह आख़िरी क़िस्म है तीनों क़िस्मों में से उन में जो फक़ीर होंगे ‘माले फ़य’ के ह़क़्दार होंगे। पहले मुहाजिरीन दूसरे अन्सार तीसरे वह लोग जो उन के बाद आने वाले हैं जो सिफ़ते एह़सान के साथ उन की पैरवी करें (मालूम हुआ कि ‘अमवाले फ़य’ में ‘रवाफ़िज़’ का बिल्कुल हिस्सा नहीं जो हज़राते मुहाजिरीन व अन्सार का इत्तिबअ़ तो किया करते थे मगर उन से बुग्ज़ रखते हैं और उन्हें काफ़िर कहते हैं। وسيجيئ من قول الامام مالک ان شاء الله تعالیٰ.

यह तो अमवाले ‘फ़य’ के ह़क़्दारों का बयान हुआ। आयते करीमा में बाद में आने वाले मोमिनीन की दुआ़ओं का भी ज़िक्र फ़रमा दिया है। पहली दुआ़ यह है कि वह बारगाहे इलाही में यूँ अ़र्ज़ करते हैं कि “ऐ हमारे रब हमारी भी मग्फ़िरत फ़रमा और जो हमारे भाई हम से पहले ईमान के साथ गुज़र गए उन की भी मग्फ़िरत फ़रमा”।

मालूम हुआ कि अपने लिए मग्फ़िरत की दुआ़ करने के साथ उन मुसलमान भाईयों के लिए भी दुआ़-ए-मग्फ़िरत करना चाहिए जो इस दुनिया से गुज़र गए। दुआ़-ए-मग्फ़िरत से मग्फ़िरत का भी फ़ायदा

होता है और दर्जात की बुलन्दी का भी।

दूसरी दुआ़ यह है कि "ऐ अल्लाह हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कोई खोट पैदा न फ़रमा"। शब्द 'ग़िल्ल' जिस का अनुवाद 'खोट' किया गया है बहुत आ़म है। कीना, बुग्ज़, ह़सद, जलन यह शब्द उन सब बातों को शामिल हैं, इस में اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا फ़रमाया है यानी जो भी अहले ईमान गुज़र गए दुनिया से जा चुके और जो मौजूद हैं और जो आइन्दा आएँगे अल्लाह तआ़ला उन सब की तरफ़ से हमारे दिलों को साफ़ और पाक रख, किसी से कीना न हो और न किसी की तरफ़ से दिल में बुराई आए।

ह़सद, बुग्ज़, कीना और दुश्मनी

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि आपस के बिगाड़ से बचो, क्योंकि यह मूंड देने वाली चीज़ है। **(रवाहुल् तिर्मिज़ी)**

ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि पुरानी उम्मतों का मर्ज़ चुपके-चुपके तुम्हारी तरफ़ चल कर आ गया है, वह मर्ज़ ह़सद और बुग्ज़ है, यह मूंड देने वाली चीज़ है, मैं यह नहीं कहता कि यह बातों को मूंड देती हैं बल्कि यह दीन को मूंड देती हैं। **(तिर्मिज़ी)**

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि पीर और जुमेरात के दिन जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, फिर हर उस शख़्स के बारे में जिस के दिल में मुसलमान भाई से दुश्मनी हो (अल्लाह की तरफ़ से) फ़रमान होता है कि उन दोनों को छोड़ दो यहाँ तक कि आपस में सुलह़ (Compromise) कर लें। **(तिर्मिज़ी) (यह सब रिवायत मिश्कातुल मसाबीह़ पेज नं० 428 पर हैं)**

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने यह जो फ़रमाया कि पुरानी उम्मतों का मर्ज़ तुम्हारे अन्दर चल कर आ गया है यह उस ज़माने में थोड़ा ही था, लेकिन अब तो इस्लाम का दावा करने वालों में लड़ाईयाँ भी हैं, ह़सद भी, बुग्ज़ भी और एक दूसरे की मुख़ालिफ़त भी, मारकाट भी और क़त्ल व क़िताल भी। इन ह़ालात में सच्चे दिल से क्या दुआ़ निकल सकती है कि अल्लाह तआ़ला हमारे दिलों में अहले ईमान की तरफ़ से कोई खोट न हो, दिलों में खोट भरा हुआ है और उसे निकालना भी नहीं चाहते। जब इकट्ठा होते हैं ग़ीबतें करते हैं, तोहमतें लगाते हैं, मुसलमानों के ऐ़ब उछालते हैं इन ह़ालात में सीना कैसे साफ़ रह सकता है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि कोई शख़्स मेरे सह़ाबा (रज़ि०) से मुतअ़ल्लिक़ कोई बात मुझे न पहुँचाए (जिस से दिल बुरा हो) क्योंकि मैं चाहता हूँ कि (अपने घर से) उन की तरफ़ इस ह़ाल में निकल कर आऊँ कि मेरा सीना सलामत हो। **(रवाहुल् तिर्मिज़ी)**

आयत नं० 11 से 24 तक

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا
أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكٰذِبُونَ ۝ لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ
وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبٰرَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ۝ لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللّٰهِ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝
لَا يُقٰتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى مُحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتّٰى ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ۝ كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسٰنِ
اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكَ إِنِّي أَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِينَ ۝ فَكَانَ عٰقِبَتَهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خٰلِدَيْنِ فِيهَا وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا
الظّٰلِمِينَ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللّٰهَ إِنَّ اللّٰهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا
كَالَّذِينَ نَسُوا اللّٰهَ فَأَنْسٰهُمْ أَنْفُسَهُمْ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ۝ لَا يَسْتَوِي أَصْحٰبُ النَّارِ وَأَصْحٰبُ الْجَنَّةِ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ
الْفَآئِزُونَ ۝ لَوْ أَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْآنَ عَلٰى جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ خٰشِعًا مُتَصَدِّعًا مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ وَتِلْكَ الْأَمْثٰلُ نَضْرِبُهَا
لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهٰدَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِي
لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخٰلِقُ
الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

अनुवाद–

(11) क्या तुमने उन मुनाफ़िक़ों को नहीं देखा! जो अपने उन भाइयों को जो अह्ले किताब में से काफ़िर हुए, कहते हैं, ''अगर तुम्हें देश से निकाला गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकलेंगे और तुम्हारे मामले में हरगिज़ किसी की बात न मानेंगे, और अगर तुम लोगों से जंग की गयी तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, मगर अल्लाह गवाही देता है कि यह झूठे हैं; (12) अगर वे निकाले गये तो यह उनके साथ नहीं निकलेंगे, और अगर उनसे जंग की गयी तो यह उनकी मदद नहीं करेंगे, और अगर मदद करेंगे भी तो पीठ फेर कर भाग जाएँगे, फिर उनकी मदद नहीं की जाएगी।'' (13) उनके दिलों में तुम्हारा डर अल्लाह से ज़्यादा है, यह इसलिए कि यह समझ नहीं रखते। (14) यह इकट्ठा हो कर (आमने-सामने) नहीं, बल्कि क़िला बन्द बस्तियों में या दीवारों के पीछे से लड़ेंगे, उनकी आपस में लड़ाई बड़ी सख़्त है, तुम समझते हो! कि उनमें बड़ा एका है; हालाँकि उनके दिल फटे हुए हैं, यह इसलिए कि ये बेअक़्ल लोग हैं। (15) उनका हाल उन लोगों का सा है जो उनसे कुछ ही पहले अपने किये का मज़ा चख चुके हैं, और उनके लिए दुःख देने वाला अज़ाब है; (16) इनकी मिसाल शैतान जैसी है, कि जब उसने इन्सान से कहा, ''कुफ़्र (इन्कार) करो!'' फिर जब वह इन्कार कर बैठा; तो कहने लगा, ''मैं तुम्हारी ज़िम्मेदारी से बरी हूं, मैं तो सारे संसार के रब, अल्लाह, से डरता हूँ।'' (17) तो उन दोनों का अंजाम यह होना है कि दोनों आग में जाएँगे, उसी में वे हमेशा रहेंगे, और ज़ालिमों का यही बदला है। (18) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और हर व्यक्ति को यह देखना चाहिए कि उसने कल के लिए क्या भेजा है, और अल्लाह से डरते रहो, जो कुछ भी तुम करते हो, बेशक

अल्लाह तुम्हारे आमाल की पूरी ख़बर रखता है। (19) और उन लोगों की तरह न हो जाना! जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया, तो उन्हें ऐसा कर दिया कि, वे अपने आप को भूल बैठे, यही लोग फ़ासिक़ (नाफ़रमान) हैं। (20) दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं हो सकते, जन्नत (में जाने) वाले ही कामियाब होने वाले हैं। (21) अगर 'हम' इस क़ुर्आन को किसी पहाड़ पर उतारते, तो तुम उसको देखते कि अल्लाह के डर से दबा हुआ, और फटा जा रहा है, और ये मिसालें 'हम' लोगों के लिए इसलिए बयान करते हैं, ताकि वे सोच-विचार करें। (22) 'वही' अल्लाह है जिसके सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं ग़ायब और हाज़िर का जानने वाला, 'वह' बड़ा मेहरबान निहायत रह़म करने वाला है। (23) 'वही' अल्लाह है जिसके सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, वह बादशाह है बड़ा पवित्र, पूरी तरह सलामती, और अम्न देने वाला, रक्षा करने वाला, ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), ज़बर्दस्त बड़ाई वाला, अल्लाह महान (पाक) है उस शिर्क से जो वे करते हैं। (24) 'वही' अल्लाह पैदा करने वाला (अविष्कारक), सूरतें बनाने वाला, उसके सब अच्छे नाम हैं, जो चीज़ें भी आसमानों और ज़मीन में हैं, 'उसी' की तस्बीह़ कर रही हैं, और 'वह' बड़ा ज़ोर वाला, ह़िक्मत वाला है।

आयत नं० 11 से 24 तक की व्याख्या

11-14

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ
لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ
لَكَاذِبُونَ ۝ لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ
لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ۝ لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝ لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى مُحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ
بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ۝

यहूदियों से मुनाफ़िक़ीन के झूठे वादे

जैसा कि शुरु में सबबे नुज़ूल बयान करते हुए अ़र्ज़ किया गया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जब यहूद के क़बीला 'बनू नज़ीर' को मदीना मुनव्वरह छोड़ने का हुक्म दिया तो उन लोगों ने इन्कार कर दिया और 'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलोल' और उस के मुनाफ़िक़ साथियों ने यहूदियों को यह पैग़ाम भेजा कि तुम हरग़िज़ न निकलना, हम तुम्हारे साथ हैं, इन आयात में इसी का ज़िक्र है।

मुनाफ़िक़ीन के सरदार ने यहूद की पीठ ठोकी और काफ़िराना दोस्ती को ज़ाहिर करते हुए यहूदियों के पास ख़बर भेजी कि देखो! तुम अपने घरों से हरग़िज़ न निकलना, हम को तुम अपने से अलग मत समझो, अगर तुम्हें निकलना ही पड़ा तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएँगे। अगर कोई शख़्स हम से यूँ कहेगा कि उन का साथ मत दो तो हम उस की बात नहीं मानेंगे और न सिर्फ़ यह कि हम मदीना छोड़कर तुम्हारे साथ निकल खड़े होंगे, बल्कि तुम्हारे साथ जंग की गई तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ मिलकर

लड़ेंगे। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ

(अल्लाह तआ़ला गवाही देता है कि बिलाशुब्हा वह झूठे हैं) मज़ीद फ़रमाया لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ (अगर यहूदी निकाले गए तो यह उनके साथ नहीं निकलेंगे।) وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ (और अगर जंग की गई तो उन की मदद नहीं करेंगे।)

चुनाँचे ऐसा ही हुआ, जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) के फ़रमान पर यहूदियों ने यह कहला भेजा कि हम नहीं निकलेंगे और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन का मुह़ासिरा (घेराबन्दी) कर लिया जिस में जंग का अन्देशा था, तो यहूदी मुनाफ़िक़ीन की मदद का इन्तिज़ार करते रहे, लेकिन उन्होंने कुछ भी मदद न की। जब वह उन की मदद से नाउम्मीद हो गए और कत्ल हो जाने की सूरत सामने आ गई तो मजबूर हो कर जिलावतनी (शहर छोड़ने) पर राज़ी हो गये।

जब वह अपने घरों को अपने हाथों से बर्बाद कर के थोड़ा बहुत सामान लेकर मदीना मुनव्वरह से रवाना हो गए तो इस मौक़े पर भी मुनाफ़िक़ीन ने उन का साथ न दिया, उन्होंने यहूदियों को यूँ तसल्ली दिलाई कि हम तुम्हारे साथ निकल खड़े होंगे, लेकिन जान बचा कर अपने घरों ही में जम कर बैठे रहे और इस का मौक़ा ही न आया कि यहूदियों से जंग होती तो यह उन की मदद करते बिल्फ़र्ज़ अगर जंग होती और यह मदद करते तो पीठ फेर कर भाग जाते।

وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝

इस के बाद मुसलमानों से ख़िताब (सम्बोधित) करते हुए फ़रमायाः-

لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ

कि ऐ मुसलमानों! मुनाफ़िक़ीन ने जो यहूदियों से मदद करने का वादा किया है, यह केवल एक ज़बानी वादा है वह तुम्हारे मुक़ाबिले नहीं आ सकते।

जो शख़्स ईमानदार हो वह तो सब से ज़्यादा अल्लाह से डरता है, लेकिन मुनाफ़िक़ीन का यह ह़ाल है कि अल्लाह तआ़ला से ख़ौफ़ की बनिस्बत तुम्हारा ख़ौफ़ उन के दिलों में ज़्यादह बैठा हुआ है वह झूठमूठ ज़बान से यह कह देते हैं कि हम मुसलमान हैं और चूंकि उन्हें इस का यक़ीन था कि अगर हम ने यहूदियों का साथ दिया और मुसलमानों से मुक़ाबिला हुआ तो यहूदी भी पिट जाएँगे और हमारे ईमान का दावा भी धरा रह जाएगा, इसलिए वह यहूदियों का साथ देने वाले न थे।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝

(और मुनाफ़िक़ों का डरना, अल्लाह से न डरना इस वजह से है कि वह समझते नहीं हैं यानी अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत व कुव्वत नहीं समझते। इस के बाद मुसलमानों को तसल्ली दी गई है कि यह सब लोग यानी 'बनू नज़ीर' और मुनाफ़िक़ीन इकट्ठे होकर भी लड़ने की हिम्मत नहीं करेंगे (अलग-अलग तो क्या मुक़ाबिला कर सकते) हाँ, ऐसी बस्तियाँ जो क़िलों के तौर पर बनी हुई हैं उन बस्तियों में या दीवारों की आड़ में लड़ सकते हैं।

चुनाँचे यहूद 'बनू क़ुरैज़ा' और अहले ख़ैबर इसी तरह़ मुक़ाबिल हुए और सब ने अपने मुँह की

खाई और शिकस्त (हार) की मुसीबत उठाई।

फिर फ़रमाया بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ

(उन की लड़ाई आपस में शदीद है) वह आपस में अपने अ़क़ायद (आस्था) के एतिबार से भिन्न हैं।

تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ

(आप ख़याल करते हैं कि वह इकट्ठे हों और ह़ाल यह है कि उन के दिल अलग-अलग हैं) ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ (उन के दिलों का बिखरना इस वजह से है कि यह लोग ऐसे हैं जो अ़क़्ल नहीं रखते (अपनी-अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चलते रहते हैं।)

15 كَمَثَلِ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٥﴾

बनू क़ैनूक़ाअ़ की जिलावतनी (देश निकाला)

मदीना मुनव्वरह में यहूद के तीन बड़े क़बीले आबाद थे। एक 'क़बीला बनू नज़ीर' जिन की जिलावतनी का ज़िक्र इसी सूरः के शुरु में हुआ है। दूसरा क़बीला 'बनू क़ुरैज़ा', जिन के मर्दों के क़त्ल किये जाने, औ़रतों और बच्चों के ग़ुलाम बनाये जाने का ज़िक्र सूरः अह़ज़ाब के तीसरे रुकूअ़ में गुज़र चुका है।

तीसरा क़बीला 'बनू क़ैनक़ाअ़' का था जिन की जिलावतनी का क़िस्सा इस आयत में बयान फ़रमाया है। तीनों क़बीलों से रसूलुल्लाह (सल्ल०) का मुआ़हिदा (सन्धि) था कि न आप से हम जंग करेंगे और न आप के किसी (बनू क़ैनक़ाअ़) दुश्मन की मदद करेंगे, इन तीनों क़बीलों ने धोका दिया तो उस का अन्जाम भुगत लिया।

क़बीला 'बनू क़ैनक़ाअ़' पहला क़बीला है जिसे सब से पहले मदीना मुनव्वरह से जिलावतन किया गया। वाक़िआ़ यूँ हुआ कि ग़ज़्व-ए-बद्र के बाद कुफ़्फ़ारे मक्का को शिकस्त देकर जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) मदीना मुनव्वरह तशरीफ़ लाए तो 'बनू क़ैनक़ाअ़' के बाजार 'सूक़' में उन्हें जमा किया और फ़रमाया कि ऐ यहूदियों! तुम अल्लाह से डरो और मुसलमान हो जाओ।

तुम इस बात को जानते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम इस बात को अपनी किताब में पाते हो और अल्लाह का तुम से वादा है। उस नबी पर ईमान लाना, जो तुम्हारी किताब में है उन्होंने इस का जवाब दिया कि ऐ मुह़म्मद! आप इस धोके में न रहें कि क़ुरैशे मक्का को शिकस्त देने के बाद हमारा आप कुछ बिगाड़ सकेंगे, वह लोग तो अनाड़ी थे जंग करना नहीं जानते थे। आप ने मौक़ा पाकर उन्हें शिकस्त (पराजय) दे दी। अल्लाह की क़सम! अगर हम से आप ने जंग की तो पता चल जाएगा कि हम क्या हैं।

इसी दौरान एक वाक़िआ़ पेश आ गया कि एक औ़रत एक यहूदी सुनार के पास दूध बेचने आई, यहूदियों ने उस के साथ बद्तमीज़ी की जिससे यहूदी 'बनू क़ैनक़ाअ़' और मुसलमानों के दर्मियान लड़ाई

ठन जाने का ज़रिया बन गई।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) को इस का पता चला तो पन्द्रह दिन उन का मुह़ासिरा (घेराबन्दी) फ़रमाया, बिल्आख़िर उन्होंने कहा कि जो आप फ़ैसला फ़रमाएँ वह हमें मन्ज़ूर है। क़रीब था कि उन के क़त्ल का हुक्म दे दिया जाता कि मुनाफ़िक़ों का सरदार 'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल' ज़िद करने लगा और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के गिरेबान में हाथ डाल दिया और कहने लगा यह (बनू क़ैनुक़ाअ़) सात सौ आदमी हैं मेरी मदद करते हैं, क्या आप इन को एक ही सुबह़ या एक ही शाम में क़त्ल करना चाहते हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि चलो इन को तुम्हारी राय पर छोड़ देते हैं, इस के बाद मदीना मुनव्वरह से उन के जिलावतन करने का फ़ैसला कर दिया और 'इज़रिआत' (नामक स्थान जो शाम में है) की तरफ़ उन्हें भेज दिया गया। **(अलु बिदाया वलु निहाया भाग व फ़त्हुलु बारी पेज नं० 330 भाग 7)**

इस वाक़िये को मालूम करने के बाद अब ऊपर की आयत का मतलब यह है कि क़बीला बनू नज़ीर का वही ह़ाल हुआ जो थोड़े दिनों पहले इन लोगों का ह़ाल हो चुका था, जो उन से पहले थे यानी क़बीला 'बनू क़ैनक़ाअ़' इन लोगों ने भी अ़हद तोड़ा और उल्टे-पुल्टे जवाब दिये वह भी जिलावतन हुए और 'बनू नज़ीर' भी निकाल दिये गये, यह तो दुनिया की जिल्लत थी आख़िरत में भी दर्दनाक अ़ज़ाब है।

16-17 كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ إِنِّيْٓ أَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خٰلِدَيْنِ فِيْهَا ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ۝

शैतान का धोका

इन दोनों आयतों में यह बताया गया है कि 'क़बीला बनू नज़ीर' को जो जिलावतनी की सज़ा भुगतनी पड़ी और मुनाफ़िक़ीन का उन की पीठ ठोकना काम नहीं आया (क्योंकि मुनाफ़िक़ीन ने बे-यार व मददगार छोड़ दिया।)

यह कोई नई बात नहीं है शैतान का यह तरीक़ा है कि इन्सान को कुफ़्र पर उभारता रहता है। जब वह कुफ़्र अख़्तियार कर लेता है तो पूरी ढ़िटाई के साथ यह कह कर अलग हो जाता है कि मैं तुझ से बरी हूँ मेरा तुझ से कोई वास्ता नहीं है और साथ ही यूँ कह देता है कि मैं अल्लाह से डरता हूँ। ग़ज़्व-ए-बद्र के मौक़े पर शैतान ने जो बेरुख़ी दिखाई थी और बेज़ारी का एलान किया था सूरः अन्फ़ाल में गुज़र चुका है, ह़ालांकि वह काफ़िरों का दोस्त बनकर आया था।

शैतान की ढ़िटाई देखो कि काफ़िर भी है और लोगों को कुफ़्र पर डालता है, फिर भी यूँ कहता है कि मैं अल्लाह से डरता हूँ। क़बीला 'बनू नज़ीर' मुनाफ़िक़ीन की बातों में आ गए जो शैतान के नुमाइन्दे (दूत) हैं, उन्होंने 'बनू नज़ीर' से वादा किया फिर पीछे हट गए और क़बीला 'बनू नज़ीर' को जिलावतन होना पड़ा।

जिस ने झूठ फ़रेब और अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी पर कमर बाँध ली, उस से बड़े-बड़े झूठ अ़मल में आना कोई तअ़ज्जुब की बात नहीं है।

जो लोग दुनियादार पीर बने हुए हैं, दुनिया समेटने के लिए दुनियादारी की ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए गद्दियाँ संभाले हुए हैं, वह अपने मुरीदों के सामने बुज़ुर्ग बनकर और अल्लाह वाले बनकर अपने आप को दिखाते हैं और अपने को मुत्तक़ी ज़ाहिर करते हैं, ह़ालांकि उन का सारा धंधा झूठ फ़रेब और मक्र होता है। अपने पीर यानी इब्लीस (शैतान) की तरह़ कह देते हैं कि हम अल्लाह से डरते हैं, ह़ालांकि सर से पांव तक झूठे होते हैं इसलिए चाहिए कि ऐसे लोगों से इन्सान बहुत दूर रहें।

शैतान और उस के मानने वाले इन्सान के बारे में फ़रमाया कि इन दोनों का अन्जाम यह होगा कि दोनों दोज़ख़ में रहेंगे, उसी में हमेशा रहेंगे और यह दोज़ख़ का हमेशा अ़ज़ाब ज़ालिमों की सज़ा है, इस में मुनाफ़िक़ीन को तम्बीह (Warning) है कि शैतान को दोस्त न बनाओ और उस के कहने में आकर कुफ़्र पर न जमे रहो। उस की बात मानोगे तो उसी के साथ दोज़ख़ में हमेशा के अ़ज़ाब में रहोगे।

18-21

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۹﴾ لَا يَسْتَوِيْۤ
اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۲۰﴾ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ
لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱﴾

आख़िरत की फ़िक्र-

इन आयात में अहले ईमान को मौत के बाद के ह़ालात दुरुस्त करने और वहाँ के लिए फ़िक्रमन्द रहने का हुक्म दिया गया है। इर्शाद फ़रमाया, ऐ ईमान वालों! अल्लाह से डरो और हर जान यह ग़ौर कर ले कि उस ने अपने आगे क्या भेजा है। फिर दोबारा وَاتَّقُوا اللّٰهَ फ़रमाया और अल्लाह से डरने का हुक्म दिया।

बाज़ उ़लमा ने फ़रमाया है कि पहला اتَّقُوا اللّٰهَ पिछले गुनाहों से तौबः करने के लिए फ़रमाया और दूसरा اتَّقُوا اللّٰهَ जो फ़रमाया है उस में आइन्दा गुनाह करने से परहेज़ करने का हुक्म दिया है और एक क़ौल यह है कि पहला हुक्म फ़रायज़ और वाजिबात की अहमियत दिलाने के लिए है और दूसरा हुक्म गुनाहों से बचने के लिए है।

आयत के ख़त्म होने पर फ़रमाया कि बिलाशुब्हा अल्लाह उन कामों से बाख़बर है जो तुम करते हो, उस का उ़मूम हर तरह़ के आ़माल को शामिल है। अल्लाह तआ़ला को हर शख़्स के अच्छे आ़माल की भी ख़बर है, वह उन को अच्छा बदला देगा और उसे बन्दों के बुरे आ़माल का भी पता है।

मुश्रिकीन व कुफ़्फ़ार और गुनाहगार व बद्कार यह न समझें कि हमारे आ़माल से अल्लाह तआ़ला बेख़बर है उसे सब कुछ इ़ल्म है, अपने इ़ल्म और ह़िक्मत के मुताबिक़ सज़ा देगा। यह जो फ़रमाया कि हर जान ग़ौर कर ले कि उस ने कल के लिए क्या भेजा है इस आयत में अहम नसीह़त है, लोग दुनिया में आ गए यहाँ हमेशा रहना नहीं है सब को मरना और यहाँ से जाना है। क़ियामत के दिन ह़ाज़िरी होगी,

हिसाब किताब होगा, अच्छे बुरे आमाल पेश होंगे और दोज़ख़ व जन्नत में जाने के फ़ैसले होंगे।

ज़िन्दगी की क़द्र-

ईमान वालों को ख़िताब (सम्बोधित) कर के फ़रमाया, ग़ौर कर लो कि दुनिया में रहते हुए आख़िरत के लिए क्या भेजा? जो शख़्स अमल करेगा वह उस का बदला पा लेगा। अगर नेकियाँ भेजी हैं और कम भेजी हैं तो उन का सवाब मिल जाएगा और अगर नेक कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया है तो उस का सवाब भी ख़ूब ज़्यादा मिलेगा, जो गुनाह भेजे हैं उसका वबाल होगा, अज़ाब भुगतने का ज़रिया बनेंगे, इन्सान इस दुनिया में आया, खाया-पिया और यहीं छोड़ गया, यह कोई कामियाब ज़िन्दगी न हुई। आमाले सालिहा जितने भी हो जाएँ और माल के ज़रिये अच्छे काम जितने भी अल्लाह के लिए ख़र्च हो जाएँ उस से लापरवाही न करनी चाहिए। फ़रायज़ और वाजिबात की अदाएगी के बाद ज़िक्र तिलावत, अिबादात, सख़ावत जितनी भी हो सके करता रहे अपनी ज़िन्दगी को गुनाहों में लायअनी (फालतू) कामों में बर्बाद न करे।

अल्लाह का ज़िक्र-

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर मैं यूँ कहूँ سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ तो मुझे यह उन सब चीज़ों से ज़्यादह महबूब है जिन पर सूरज तुलूअ़ (उदय) होता है। **(रवाहु मुस्लिम कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 200)**

मालूम हुआ कि हर शख़्स को चाहिए कि अपनी ज़िन्दगी के हर-हर सेकेण्ड को यादे ख़ुदा में लगाए रखे और ज़िन्दगी के उन सांसों की क़द्र करे और उन को अपनी आख़िरत की ज़िन्दगी सुधारने के लिए खर्च करे। जो लोग अपनी मजलिसों को बेकार बातों में ख़र्च कर देते हैं और अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल रहते हैं यह मजलिसें उन के लिए सरासर घाटे की चीज़े हैं।

उम्र इन्सान के पास एक पूंजी है जिस को लेकर दुनिया के बाज़ार में तिजारत करने के लिए आता है, जहाँ दोज़ख़ या जन्नत के टिकट ख़रीदे जाते हैं। हर दिन, रात, घंटे और मिनट उसी उम्र की पूंजी के अज्ज़ा और टुकड़े हैं जो हर घड़ी इन्सान के पास से जुदा होते जा रहे हैं, कोई उसके बदले जन्नत का परवाना (अमल सालेह) ख़रीदता है और कोई दोज़ख़ का परवाना (बुरा अमल) ख़रीद लेता है।

अफ़्सोस है उस शख़्स पर जिस की पूंजी उस की हलाकत का सबब बने, वहाँ जब नेकियों का अज्र व सवाब मिलना शुरु होगा तो आँखें फटी रह जाएँगी और अफ़्सोस होगा कि हाय-हाय हम ने यह अमल न किया और वह अमल न किया, हसूरत और अफ़्सोस से कोई फ़ायदा न होगा लिहाज़ा जो कुछ कर सकते हैं कर लें।

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ कहे उस के लिए जन्नत में एक दरख़्त (पेड़) लग जाता है।

(अल् तर्ग़ीब वल् तरहीब)

'हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद' (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया

कि जिस रात मुझ को सैर कराई गई (यानी मेअ़राज की रात) मैं ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) से मिला तो उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! अपनी उम्मत को बतला दीजिए कि जन्नत की अच्छी मिट्टी है और मीठा पानी है और वह चट्यल मैदान है और उस के पौधे यह हैं:-

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ (मिश्कात)

मतलब यह है कि जन्नत में अगरचे दरख़्त भी हैं, फल और मेवे भी, मगर उन के लिए चट्यल मैदान है जो नेक अ़मल से ख़ाली हैं। जन्नत की ऐसी मिट्टी है जैसे कोई ज़मीन खेती के लायक़ हो उस की मिट्टी अच्छी हो, उस के पास मीठा पानी हो और जब उस को बो दिया जाए तो उस के मिट्टी की अपनी सलाह़ियत (योग्यता) और पानी के सींचाओ और क़ुद्रते ख़ुदावन्दी की वजह से उस में अच्छे दरख़्त और बेहतरीन ग़ल्ला पैदा हो जाए, बिल्कुल इसी तरह़ जन्नत को समझ ले कि जो कुछ यहाँ बो देंगे वहाँ काट लेंगे, वरना वह ख़ाली है।

एक वाक़िआ़-

'ह़ज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह' (रज़ि०) ने बयान किया कि हम एक रोज़ दिन के शुरु ह़िस्से में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर थे, आप (सल्ल०) के पास ऐसे लोग आए जिन के पास कपड़े नहीं थे, वह लोग ऊन की चादरें या अ़बाएँ पहने हुए थे, गर्दनों में तलूवारें लट्काए हुए थे उन में अक्सर लोग बल्कि सब ही क़बीला 'बनू मुज़िर' में से थे। उन की ह़ाजतमन्दी का ह़ाल देखकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) का चेहरा मुबारक बदल गया। आप अन्दर घर तशरीफ़ ले गये, फिर बाहर तशरीफ़ लाए। (इतने में ज़वाल हो चुका था) आप (सल्ल०) ने ह़ज़रत बिलाल (रज़ि०) को अज़ान देने का हुक्म दिया, उन्होंने अज़ान दी, इक़ामत कही, आप ने नमाज़ पढ़ाई, फिर ख़ुत्बः दिया और सूरः निसा की आयत नं० (1) يَاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ आयत के ख़त्म यानी اِنَّ اللهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا तक तिलावत फ़रमाई।

दूसरी आयत सूरः ह़श्र की यानी يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ तिलावत फ़रमाई और ह़ाज़िरीन को सद्क़ः करने का हुक्म फ़रमाया (लोगों ने सद्क़ः देना शुरु किया) कोई शख़्स दीनार लाया किसी ने दिरहम का सद्क़ः किया, किसी ने कपड़ा दिया और कोई शख़्स गेहूँ का एक साअ़ ले आया और किसी ने छुहारों का एक साअ़ पेश कर दिया (ह़ाज़िरीन चीज़ें लाते रहे) यहाँ तक कि रावी ने आधी खजूर का ज़िक्र भी किया यानी बाज़ लोग आधी खजूर ले आए। थोड़ी देर अन्सार में से एक शख़्स (दिरहम या दीनार) की थैली लेकर आया जो इतनी भारी थी कि उस का हाथ उठाने से आ़जिज़ हो चुका था, फिर दूसरे लोग भी लगातार मुख़्तलिफ़ चीज़ें लाते रहे यहाँ तक कि मैंने खानें की चीज़ों और कपड़ों के दो ढ़ेर देख लिए यह सब कुछ देखकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) का चेहरा खिल उठा। गोया उन पर सोने का पानी फेर दिया गया हो।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस ने इस्लाम में कोई अच्छा तरीक़ा जारी कर दिया उस का सवाब मिलेगा और जिस ने इस के बाद उस पर अ़मल किया उस का भी सवाब मिलेगा और

दूसरों के सवाब में से कोई कमी नहीं की जाएगी।

जिस ने इस्लाम में बुरा तरीक़ा जारी कर दिया उस को उस के जारी करने का भी गुनाह मिलेगा, उस के बाद जो लोग उस पर अ़मल करेंगे उन के अ़मल का भी उसे गुनाह होगा और अ़मल करने वालों के गुनाहों में से कमी नहीं की जाएगी। **(सहीह़ मुस्लिम भाग 1, पेज नं० 327)**

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ

(उन लोगों की तरह़ न हो जाओ जो अल्लाह तआ़ला को भूल गए) जिन्होंने अल्लाह के हुक्मों पर अ़मल करना छोड़ दिया और गुमराही की ज़िन्दग़ी अख़्तियार की और ग़फ़्लत में ऐसे पड़े कि अल्लाह को भूल गए उन्हें अल्लाह ने इस भूलने पर यह सज़ा दी कि उन्हें उन की जानों को भुला दिया यानी उन्हें यह ध्यान न रहा कि मौत के बाद हमारा क्या होगा, दुनिया की लज़्ज़तों में पड़कर उन्होंने आख़िरत की नेअ़मतों से मह़रूम होना मन्ज़ूर कर लिया और वहाँ की लज़्ज़तों से मह़रूम रह गए।

(قال صاحب معالم التنزيل فانساهم انفسهم ای حظوظ انفسهم حتی لم یقدموا لها خیراً)

फिर फ़रमाया أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ

यह लोग फ़ासिक़ हैं 'साहि़बे रुहुलू मआ़नी' ने इस की तफ़्सीर में लिखा हैः-

الكاملون فى الفسوق यानी यह वह लोग हैं जो निचले दर्जे के फ़ासिक़ हैं।

जन्नत वाले और जहन्नम वाले

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ (दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं हैं।)

मैदाने आख़िरत में ह़ाज़िर होंगे तो अहले जन्नत अपने बाग़ों में जाएँगे और दोज़ख़ वाले अपने ठिकानों में पहुँच जाएँगें उन को हमेशा की सज़ा मिलेगी।

आख़िर में फ़रमाया أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ (जन्नत वाले ही कामियाब होंगे।)

फ़ासिक़ून फ़ाइज़ून के मर्तबः को कहाँ पहुँच सकते हैं। इस के बाद फ़रमायाः-

لَوْ أَنزَلْنَا هَٰذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُ अगर हम इस क़ुर्आन को किसी पहाड़ पर नाज़िल कर देते तो ऐ मुख़ातब! (सम्बोधित व्यक्ति) तू इस ह़ाल में देखता कि यह अल्लाह के ख़ौफ़ से दब जाता और फट जाता।)

'साहि़बे रुहुलू मआ़नी' (भाग 28 पेज नं० 61) इस की तफ़्सीर करते हुए लिखते हैं कि उस ने इन्सान की कठोरता और तिलावते क़ुर्आन के वक़्त ख़ुशूअ़ व तदब्बुर (ग़ौर करना) की कमी पर ख़बरदार किया है, क़ुर्आन में जो झिझोंड़ने वाली आयात हैं इन्सान उन की तरफ़ ध्यान नहीं देता, ह़ालांकि अगर यही क़ुर्आन किसी पहाड़ पर उतारा जाता और उसे अ़क़्ल दे दी जाती तो वह ख़ुशूअ़ अख़्तियार करता और फट जाता।

'साहि़बे मुआ़लिमुलू तन्ज़ील' (भाग 4 पेज नं० 236) ने भी यही बात लिखी है और यह बात बढ़ा दी है कि पहाड़ अपनी सख़्ती के बावजूद इस डर से टुकड़े-टुकड़े हो जाता कि क़ुर्आन करीम का जो ह़क़ अल्लाह तआ़ला ने लाज़िम फ़रमाया है वह मुझ से अदा न हो सकेगा। यह इन्सान ही है जो क़ुर्आन

को पढ़ता, सुनता है और इस की ज़िम्मेदारी को महसूस नहीं करता, ह़ालांकि यह बातें अल्लाह तआ़ला इसलिए बयान फ़रमाता है ताकि लोग फ़िक्र करें।

22-24 هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰی ؕ یُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝

अस्मा-ए-हुस्ना

इन आयात में अल्लाह तआ़ला की शाने उलूहियत बयान की गई है और यह बताया गया है कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं है। जो लोग उस की ज़ात व सिफ़ात में और उस की शाने उलूहियत में जिस किसी को भी शरीक बनाते हैं वह उन शिर्क करने वालों के शिर्क से पाक है।

अल्लाह तआ़ला की सिफ़ात बयान करते हुए पहले आ़लिमुल् ग़ैब, वल् शहादह फ़रमाया यानी वह ग़ैब की चीज़ों को भी जानता है और जो चीज़ें ज़ाहिर और उस की मख़्लूक़ के सामने हैं उन्हें भी जानता है। ग़ैब के मतलब में सब कुछ आ जाता है जो चीज़ें पैदा होती थीं पैदा हो गईं और जो आइन्दा वजूद में आएँगी उसे हर चीज़ का इ़ल्म है, जो चीज़ें वजूद में कभी-कभी आएँगी उसे उन का भी इ़ल्म है। अल् शहादह का मफ़्हूम भी आ़म है, मख़्लूक़ को जिन चीज़ों का इ़ल्म है और जिन चीज़ों का मख़्लूक़ को इ़ल्म नहीं वह उन्हें भी जानता है और उन के न जानने को भी जानता है।

यह कि हर मौजूद और हर ग़ैर मौजूद का उसे इ़ल्म है। जो इ़ल्म अल्लाह ने किसी को दे दिया और जितना दे दिया उसे उसी क़द्र मिल गया। ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) को जो कुछ इ़ल्म ग़ैब दिया गया वह उन्हें अल्लाह तआ़ला के देने से उतना ही मिला जितना अल्लाह तआ़ला ने दिया। وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ (सूरः आले इमरान, 179) वक़ाल तआ़ला

1. عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلٰی غَیْبِهٖۤ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰی مِنْ رَّسُوْلٍ (सूरः जिन्न, 26)

2. هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ कि वह रह़मान भी है और रह़ीम भी। मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि यह दोनों 'मुबालिग़ा' के सीग़े हैं जो रह़मत बना हैं, चूंकि दोनों के अर्थ में मुबालिग़ा है इसीलिए अनुवाद में भी मुबालिग़ा का ख़याल रखा जाता है। अक्सर उ़लमा फ़रमाते हैं शब्द रह़मान में शब्द रह़ीम से ज़्यादह मुबालिग़ा है, दुनिया में भी उस की रह़मत का बहुत ज़्यादह मुज़ाहिरा होता रहता है और आख़िरत में भी उस का बहुत बड़ा मुज़ाहिरा होगा।

3. اَلْمَلِكُ 'मलिक' बादशाह को कहते हैं। अल्लाह तआ़ला ह़क़ीक़ी बादशाह है, दुनिया में जो बादशाह हैं वह सब उस के बन्दे हैं और सब उस की मख़्लूक़ हैं। वह मलिक यानी सब बादशाहों का बादशाह है और हर चीज़ का वह मालिक है, सारा मुल्क उसी का है।

सूरः यासीन (**आयत नं० 83**) में फ़रमाया فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ

4. اَلْقُدُّوْسُ अर्थात वह हर नुक़्सान और हर ऐ़ब से बहुत ज़्यादह पाक है, यह भी मुबालिग़े का सीग़ा है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) वित्रों का सलाम फेरकर तीन मर्तबः थोड़ी ऊँची आवाज़ से سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسُ पढ़ा करते थे और अल् क़ुद्दूस की दाल के पेश को खींच कर पढ़ते थे यानी वाव साकिन जो हुरुफ़ मद है, उस मद को ज़्यादह अदा करते थे।

5. اَلسَّلٰمُ 'अस्सलाम' के अर्थ में पहला यह कि सलामत है, हर तरह़ सालिम (सुरक्षित) है, उस की ज़ात व सिफ़ात में कभी भी कोई कमी आने वाली नहीं है।

बाज़ ह़ज़रात ने इस का अनुवाद यूँ किया है कि वह सलामती देने वाला है।

6. اَلْمُؤْمِنُ का एक अर्थ तो यह है कि अम्न व अमान देने वाला, दुनिया में वह अपने बन्दों को अम्न व अमान से रखता है, अहले ईमान के दिलों को इत्मिनान अ़ता फ़रमाता है, नेक बन्दों को क़ियामत के दिन इत्मिनान अ़ता फ़रमाएगा, जिस के बारे में لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ (**सूरः अम्बिया,103**) फ़रमाया और यह भी फ़रमाया कि يٰعِبَادِ لَاخَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ (**सूरः ज़ुख़्रुफ़, 68**) और बाज़ ह़ज़रात ने اَلْمُؤْمِنُ का यह मअ़ना बताया है कि उस ने अपनी मख़्लूक़ से वादा फ़रमा लिया है कि वह किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा।

وقال بعضهم معناه هو ذو لامن من الزوال لاستحالة عليه سبحانه وتعالىٰ وفى معناه اقوال اخرى ذكرها صاحب الروح.

7. اَلْمُهَيْمِنُ निगराँ, अल्लाह तआ़ला अपनी सारी मख़्लूक़ का निगराँ और निगेहबान है।

قال صاحب الروح اى الرقيب الحافظ لكل شئى مُفيعلٌ من الا من بقلب همزته هاء واليه ذهب غير واحدٍ ثم استعمل بمعنى الرقيب والحفيظ على الشئى.

8. اَلْعَزِيْزُ 'ग़ालिब' है 'ज़बरदस्त' है उस के इरादे से उसे कोई चीज़ रोकने वाली नहीं वह जो चाहे करे उसे हर चीज़ का अख़्तियार है और वह हर तरह़ साह़िबे इक़्तिदार (सत्ता) है।

9. اَلْجَبَّارُ यानी वह जब्बार व क़ह्हार है, वह अपनी मख़्लूक़ में जो भी करना चाहे कर सकता है उसे कोई भी किसी तरह से रोक नहीं सकता।

बाज़ ह़ज़रात ने इस को इस्लाह के अर्थ में लिया है यानी अल्लाह तआ़ला ख़राबियों को दुरुस्त करने वाला, टूटी हुई चीज़ों को जोड़ने वाला और ह़ालात की इस्लाह़ (सुधार) करने वाला है।

10. اَلْمُتَكَبِّرُ यह बाब तफ़ईल से 'इस्म फ़ायल' का सीग़ा है। इस का अर्थ है 'अल् कामिल फ़ी अल् किब्रिया' इसीलिए ऊपर इस का अनुवाद किया है कि वह बड़ी अ़ज़्मत वाला है मख़्लूक़ के लिए यह शब्द बोलते हैं तो यह बाब तफ़ईल, तकल्लुफ़ के अर्थ में होता है। इसी का अर्थ होता है कि फ़लाँ शख़्स बड़ा बनता है, बड़ाई अल्लाह तआ़ला ही को शोभा देती है, मख़्लूक़ को बड़ाई बघारना जायज़ नहीं।

अगर किसी मख़्लूक़ में कोई बड़ाई है तो अल्लाह तआला ने दी है, जिस ने दी है उस का शुक्र अदा करे। यह न करे कि उस की मख़्लूक़ को ह़क़ीर जाने और अपने आप को बड़ा समझे।

सूरः जासिया के ख़त्म पर फ़रमायाः-

وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

(उसी के लिए बड़ाई है आसमानों में और ज़मीन में और वह ज़बरदस्त है ह़िक्मत वाला है।)

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता हैः-

الكبرياء ردائی والعظمة ازاری فمن نازعنی واحدا منها ادخلته النار (रवाहु मुस्लिम)

यानी किब्रिया (बड़ाई) और अ़ज़्मत मेरी ख़ास सिफ़त (Quality) हैं, सो जो शख़्स उन में से किसी एक के बारे में भी झगड़ा करेगा मैं उसे दोज़ख़ में डाल दूँगा।

11. الْخَالِقُ पैदा करने वाला।

12. الْبَارِئُ पैदा करने वाला।

इन दोनों कलिमात का अनुवाद लगभग क़रीब एक ही है। बाज़ ह़ज़रात ने 'अल् ख़ालिक़' का अर्थ बिल्कुल सही ठीक अन्दाज़े के मुताबिक़ बनाने वाला किया है और 'अल्बारी' का अर्थ किया है कि वह अ़दम से वजूद बख़्शने वाला है।

अ़ल्लामा कुर्तुबी ने الخالق هاهنا المقدر والباری المنشیء والمخترع लिखा है।

मुल्ला अ़ली क़ारी (रह़०) 'मिरक़ात' शरह़ मिश्कात में लिखते हैंः-

الخالق من الخلق واصله التقدير المستقيم ويستعمل بمعنى الابداع وايجاد شی من غير اصل كقوله تعالىٰ: خلق السماوات والارض وبمعنى التكوين كقوله عزوجل: خلق الانسان من نطفة وقوله بمعنى انه مقدره اوموجده من اصل او من غير اصل.

इस के बाद अल्बारी के बारे में लिखते हैंः-

الهمزة فی آخره ای الذی خلق الخلق بری من التفاوت.

इस से मालूम हो गया कि ख़ालिक़ का अर्थ यह भी है कि उस ने बिल्कुल शुरु में बग़ैर किसी अस्ल के पैदा फ़रमाया और यह भी है कि उस ने पहले से कोई चीज़ पैदा फ़रमाई हो, फिर उस से कोई चीज़ पैदा फ़रमा दी हो और ठीक अन्दाज़ा के मुताबिक़ पैदा फ़रमाने का अर्थ भी है और "अल्बारी" का अर्थ यह है कि जो कुछ पैदा फ़रमाया वह अन्तर करने से आजाद है।

13. الْمُصَوِّرُ यानी तस्वीरें बनाने वाला, इसे जिस की जितनी भी तस्वीरें हैं वह सब अल्लाह की बनाई हुई होती हैं यह सब उस की कुद्रत हैं।

सूरः इन्फ़ितार (**आयत नं० 7, 8**) में फ़रमायाः-

خَلَقَكَ فَسَوّٰكَ فَعَدَلَكَ ۝ فِيْٓ اَيِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ۝

(जिस ने तुझ को पैदा फ़रमाया, फिर तेरे अंगों को दुरुस्त किया, फिर तुझ को एतिदाल (संतुलन) पर बनाया जिस सूरत में चाहा तुझ को तर्तीब दे दिया।

फिर फ़रमाया لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى (यानी अल्लाह तआ़ला के अच्छे-अच्छे नाम हैं।)

सूरः अअ़राफ़ (**आयत नं० 180**) में फ़रमायाः-

وَلِلّٰهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى فَادْعُوهُ بِهَا

(और अल्लाह के लिए अच्छे नाम हैं सो उन के ज़रिये उस को पुकारो।)

सूरः बनी इस्राईल (**आयत नं० 110**) में फ़रमाया قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى (आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह कहकर पुकारो, रह़मान कहकर पुकारो जिस नाम से भी पुकारो उस के लिए अच्छे-अच्छे नाम हैं।)

'सह़ीह़ बुख़ारी' में है कि अल्लाह के निन्यान्वें नाम हैं जो शख़्स उन्हें अच्छी तरह़ याद कर लेगा जन्नत में दाख़िल होगा।

मज़ीद तशरीह़ के लिए अ़ल्लामा जज़्री (रह़०) की किताब अल् ह़सन अल् ह़ुसैन और उस का अनुवाद देंख लें। 'सुनन तिर्मिज़ी' में 'निन्यानवें' नाम दर्ज हैं और 'सुनन इब्ने माजा' में भी हैं, उन में बाज़ नाम वह हैं जो 'सुनन तिर्मिज़ी' की रिवायात से ज़्यादह हैं यानी उन में से बहुत से नाम वह हैं जो 'सुनन तिर्मिज़ी' में मरवी नहीं हैं।

يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿﴾

(सब चीज़ें उस की तस्बीह़ बयान करती हैं जो आसमानों में है और जो ज़मीन में हैं और वह ज़बरदस्त ह़िक्मत वाला है।)

नोट- 'ह़ज़रत मअ़क़िल बिन यसार' (रज़ि०) का बयान है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स सुबह़ को तीन मर्तबः اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ पढ़कर सूरः ह़श्र की यह आख़िरी तीन आयात पढ़ ले तो उस के लिए अल्लाह तआ़ला सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देगा जो शाम तक उस पर रह़मत भेजते रहेंगे और अगर उस दिन मर जाए तो शहीद मरेगा और जो शख़्स शाम को यह अ़मल करे तो उस के लिए अल्लाह तआ़ला सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देगा जो उस पर सुबह़ तक रह़मत भेजते रहेंगे और अगर वह उस रात में मर जाए तो शहीद मरेगा। (**तिर्मिज़ी**)

ثم تفسیر انتهی سورة الحشر والحمد لله اولاً وآخراً وباطنا وظاهرا

(भाग-60)

सूर-ए-मुम्तहि़ना

(सूरः नं. 60)

सूरः मुम्तहि़ना का संक्षिप्त परिचय

नाम– आयत नं० (10) 'फ़म्तहिनू' से मुम्तहिना शब्द लिया गया है। **अल् मुम्तहि़ना** अर्थात इम्तिहा़न लेने वाली। इस तरह़ इस सूरः ने सुलह़ हुदैबिया के बाद हिज्रत कर के मदीना आने वाली नई मुसलमान औ़रतों के ईमान का इम्तिहा़न लिया और अल् मुम्तहि़ना (वह औ़रत जिस का इम्तेहा़न लिया गया) उस औ़रत के एतिबार से है जिस के बारे में यह आयत नाज़िल हुई थी और जिस के ईमान का इम्तेहा़न लेने का इस सूरः में हुक्म दिया गया था। उस का नाम 'उम्मे कुल्सूम बिन्त उ़क्बा बिन अबी मुअ़ीत' था, जैसा कि इस आयत की तफ़्सीर में आएगा।

नाज़िल होने का ज़माना–

'कु़र्तुबी' ने लिखा है कि यह सूरः सब के नज़्दीक मदनी है। पहली आयत के शाने नुज़ूल के सिल्सिले में 'हा़तिब बिन अबी बिल्तअ़ा' (रज़ि०) के वाक़िये का ज़िक्र आएगा, जो सुलह़ हुदैबिया के बाद और फ़तेह़ मक्का से पहले का है। इस से इस सूरः के नाज़िल होने का पता चलता है कि यह फ़तेह़ मक्का से पहले नाज़िल हुई थी।

आयत नं० 1 से 13 तक

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَ عَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَ قَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ
الرَّسُوْلَ وَ اِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۖ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ وَ اَنَا اَعْلَمُ بِمَاۤ
اَخْفَيْتُمْ وَ مَاۤ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَ مَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝ اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّ يَبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ
وَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ۝ لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَ لَاۤ اَوْلَادُكُمْ ۛۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۛۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ قَدْ
كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَ مِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۫
كَفَرْنَا بِكُمْ وَ بَدَا بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَ الْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗۤ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ
وَ مَاۤ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَ اِلَيْكَ اَنَبْنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَ اغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْيَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ وَ مَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ
اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ وَ اللّٰهُ قَدِيْرٌ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ لَا يَنْهٰىكُمُ
اللّٰهُ عَنِ الدِّيْنِ وَ لَمْ يُخْرِجُوْكُمْ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَ لَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَ تُقْسِطُوْۤا اِلَيْهِمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝ اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَ اَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَ ظٰهَرُوْا عَلٰۤى اِخْرَاجِكُمْ
اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَ مَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ اَللّٰهُ
اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ؕ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَ لَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَ اٰتُوْهُمْ مَّاۤ اَنْفَقُوْا ؕ
وَ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ؕ وَ لَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَ سْـَٔلُوْا مَاۤ اَنْفَقْتُمْ وَ لْيَسْـَٔلُوْا مَاۤ اَنْفَقُوْا ؕ
ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَ اِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ
اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَاۤ اَنْفَقُوْا ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰۤى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ
بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّ لَا يَسْرِقْنَ وَ لَا يَزْنِيْنَ وَ لَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَ لَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَ اَرْجُلِهِنَّ وَ لَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ
مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَ اسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوْا مِنَ الْاٰخِرَةِ
كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ۝

अनुवाद-

(1) ऐ ईमान वालो! मेरे दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उनसे दोस्ती का सम्बन्ध बढ़ाते हो, हालांकि वे उस हक़ का इन्कार कर चुके हैं जो तुम्हारे पास आया है; उन्होंने रसूल को, और उनको इस वजह से निकाल दिया, कि तुम अल्लाह और अपने 'रब' पर ईमान लाए हो, अगर तुम 'मेरी' राह में जिहाद और 'मेरी' रज़ामन्दी हासिल करने के लिए निकले हो (और), तुम छिपा कर उनकी ओर दोस्ती का सन्देश भेजते हो, और जो कुछ तुम छिपा कर करते हो, और जो कुछ ज़ाहिर कर के करते हो 'मैं' खूब जानता हूँ, और जो कोई तुम में से ऐसा करे, तो वह सीधी राह से भटक गया। (2) अगर ये तुम को पा लें, तो तुम्हारे दुश्मन हो जाएँ और तकलीफ़ पहुँचाने के लिए तुम पर अपने हाथ चला दें, और बुराई के साथ ज़बान भी, और चाहते हैं कि तुम भी काफ़िर (इन्कारी) हो जाओ। (3) तुम्हारी रिश्तेदारियाँ और तुम्हारी औलादें क़ियामत

के दिन कुछ भी काम न आएँगी 'वह' तुम्हारे बीच फ़ैसला फ़रमाएगा, और तुम जो कुछ करते हो उसे अल्लाह देख रहा है। (4) तुम लोगों के लिए 'इब्राहीम' और उनके साथियों में बेहतरीन नमूना है, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम के लोगों से कह दिया, ''हम तुम से और तुम्हारे उन मअ़बूदों (उपास्यों) से जिनको तुम अल्लाह को छोड़ कर पूजते हो, बिल्कुल बरी हैं, हमने तुमसे इन्कार किया और हमारे और तुम्हारे बीच हमेशा के लिए दुश्मनी और बेज़ारी ज़ाहिर हो गयी, जब तक कि तुम एक अल्लाह पर ईमान न लाओ;'' इब्राहीम ने अपने बाप से कहा कि मैं आप के लिए माफ़ी की दुआ़ करूंगा, और मैं आप के लिए अल्लाह की ओर से कोई अधिकार नहीं रखता, ऐ हमारे रब! हमने 'तेरे' ही ऊपर भरोसा किया और तेरी ही ओर रूजूअ़ हुए और तेरी ही ओर लौटना है; (5) ऐ हमारे रब! हमें काफ़िरों (इन्कार करने वालों) के लिए फ़ितूना न बना, और ऐ हमारे रब! हमें माफ़ कर, बेशक 'तू' ज़ोर वाला, हिकमत वाला है। (6) बेशक तुम्हारे लिए इन में अच्छा नमूना है, हर उस व्यक्ति के लिए, जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता हो, और जो कोई मुंह फेरे तो अल्लाह बे परवाह (निस्पृह) ह़म्द के लायक़ (प्रशंसित) है। (7) उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारे और उनके बीच, जिससे तुमने दुश्मनी मोल ली है, मुह़ब्बत पैदा कर दे, अल्लाह बड़ी क़ुदरत रखता है, और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, रह़म वाला है। (8) अल्लाह तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार और इन्साफ़ करने से नहीं रोकता, जिन्होंने दीन के मामले में तुम से जंग नहीं की, और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला, अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसंद करता है। (9) अल्लाह तो तुम्हें केवल उन्हीं लोगों से दोस्ती करने से रोकता है, जिन्होंने दीन के मामले में तुमसे जंग की, और तुम को तुम्हारे अपने घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में औरों की मदद की, और जो लोग उनसे दोस्ती करेंगे, वही ज़ालिम हैं। (10) ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मोमिन औ़रतें हिजरत कर के आएँ तो तुम उन्हें जांच लिया करो, अल्लाह उनके ईमान को बेहतर जानता है, फिर अगर तुम्हें मालूम हो जाए, कि मोमिन हैं, तो उन्हें काफ़िरों की ओर वापस न करो, न वे उन (काफ़िरों) के लिए ह़लाल हैं, और न वे उनके लिए ह़लाल हैं; और उन्होंने जो कुछ भी खर्च किया है, तो वह उन्हें अदा कर दो; और उन औ़रतों से निकाह़ करने में तुम पर कोई गुनाह नहीं, जबकि तुम उनके महर उनको अदा कर दो; और काफ़िर औ़रत को अपने निकाह में रोके न रखो, और जो कुछ तुमने उनके ऊपर खर्च किया हो, उसका तुम (काफ़िरों से) मुतालूबा (माँग) करो, और जो कुछ उन्होंने खर्च किया हो वह तुमसे मुतालूबा करें, यह अल्लाह का हुक्म है, जो तुम्हारे बीच फ़ैसला कर रहा है, और अल्लाह इल्म वाला, हिकमत वाला है। (11) और अगर तुम्हारी पत्नियों में से कोई पत्नी काफ़िरों की ओर रह जाए, और फिर तुम्हारी बारी आए तो जिनकी पत्नियाँ चली गयी हैं उनको उतना ही अदा कर दो, जितना उन्होंने खर्च किया था, और अल्लाह से डरते रहो, 'जिस' पर तुम ईमान लाए हो। (12) ऐ नबी! जब आप के पास ईमान वाली औरतें इस बात की बैअ़त (प्रतिज्ञा) करने आएँ, कि 'किसी चीज़ को अल्लाह का साझी नहीं ठहराएंगी, और न चोरी करेंगी, और न बदकारी (व्यभिचार) करेंगी, और न अपनी औलाद को मार डालेंगी, और न अपने हाथों पैरों से कोई आरोप (गढ़ कर) लाएँगी, और न किसी भले कामों में आप की नाफ़रमानी करेंगी', तो आप उनसे बैअ़त कर लिया करें, और उनके लिए माफ़ी की दुआ़ करें, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, रह़म वाला है। (13) ऐ ईमान वालो! उन लोगों को दोस्त न बनाओ, जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वे आख़िरत से मायूस हो चुके हैं, जिस तरह काफ़िर क़ब्र वालों से मायूस हो चुके हैं।

आयत नं० 1 से 13 तक की व्याख्या

1-3 يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ
مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ
مَرْضَاتِيْ ۖ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَاۤ اَخْفَيْتُمْ وَمَاۤ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ
السَّبِيْلِ ۝ اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ
تَكْفُرُوْنَ ۝ لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

अल्लाह के दुश्मनों से दोस्ती करने की मुमानिअ़त

इन आयात का सबबे नुज़ूल एक वाक़िआ़ है, जो 'ह़ज़रत ह़ातिब' (रज़ि०) से सम्बन्धित है।

ह़ज़रत ह़ातिब अहले मक्का को (जो उस वक़्त इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मन थे) एक ख़ुफ़िया (Secret) ख़त लिखा, जिस का वाक़िआ़ इमाम बुख़ारी (रह़०) ने 'किताबुल् जिहाद' पेज नं० (422) और 'किताब अल् मग़ाज़ी' पेज नं० (567) पेज नं० (286) और 'किताब अल् तफ़सीर' पेज नं० (726) में यूँ लिखा है कि:-

ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि मुझे और ज़ुबैर व मिक़्दाद को (और बाज़ रिवायात में ह़ज़रत अबू मुरसिद ग़न्वी को भी है) (यह चारों ह़ज़रात घुड़सवार थे।)

इन चारों लोगों को रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़ज़रत ह़ातिब के भेजे हुए ख़त की तलाश में भेजा और फ़रमाया कि तुम रवाना हो जाओ और चलते रहना, यहाँ तक कि "रौज़-ए-ख़ाक" तक पहुँच जाना, वहाँ तुम्हें मुश्रिकीन में से एक औ़रत मिलेगी जिस के पास 'ह़ातिब' की तरफ़ से लिखा हुआ मुश्रिकीन के नाम एक खत मिलेगा, (रौज़-ए-ख़ाक मदीना मुनव्वरह से बारह मील की मुसाफ़त पर था।)

ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि हम घोड़ों को दौड़ाते हुए चलते रहे यहाँ तक कि उस जगह तक पहुँच गए वहाँ देखा कि एक औ़रत ऊँट पर जा रही है, हम ने उस ऊँट को बिठा दिया और ख़त तलाश किया तो उस के पास नहीं मिला। हम ने कहा कि रसूलुल्लाह(सल्ल०) ने ग़लत नहीं फ़रमाया, इस के पास ख़त ज़रूर होगा, हम ने कहा कि तेरे पास जो खत है वह निकाल, कहने लगी मेरे पास कोई खत नहीं है, हम ने ज़रा ज़ोरदार तरीक़े पर कहा निकाल वरना हम तुझे बेनक़ाब कर देंगे। जब उस ने यह अन्दाज़ देखा तो अपनी कमर बाँधने की जगह से और बाज़ रिवायात में है कि अपने सर के बालों से पर्चा निकाला।

यह पर्चा 'ह़ातिब' (रज़ि०) की तरफ़ से मुश्रिकीने मक्का के नाम था, जिस में मुश्रिकीन को यह ख़बर दी थी कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) तुम लोगों पर ह़मलाआवर होने वाले हैं।

ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) और उन के साथी उस पर्चे को लेकर मदीना मुनव्वरह वापस आ गए और

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में पेश कर दिया। आप (सल्ल०) को जब उस का इल्म हुआ तो फ़रमाया, ऐ हातिब! क्या बात है?

'हातिब' (रज़ि०) ने कहा या रसूलल्लाह! आप मेरे बारे में जल्दी न फ़रमाएँ मैंने कुफ़्र अख़्तियार करने और मुरतद होने के लिए यह पर्चा नहीं लिखा। बात यह है कि मैं क़ुरैश में मिल्जुल कर रहता था, ख़ुद क़ुरैशी नहीं था। आप के साथ जो दूसरे मुहाजिरीन हैं मक्का मुकर्रमा में उन की रिश्तेदारियाँ हैं जिन के ज़रिये उन के अहल व अ़याल व अमवाल महफ़ूज़ हैं। मुझे यह बात पसन्द आई कि उन से मेरा कोई सिल्सिला-ए-नसब नहीं है तो उन पर एक एह्सान ही कर दूँ ताकि वहाँ जो मेरे लोग हैं उन की हिफ़ाज़त का एक बहाना बन जाए।

(तफ़्सीर क़ुर्तुबी में लिखा है कि हज़रत हातिब (रज़ि०) यमन के रहने वाले थे। **(भाग 18 पेज नं० 51)**

यह सुनकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि उन्होंने सच कहा। हज़रत उ़मर (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं उस मुनाफ़िक़ की गर्दन मार दूँ। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हातिब ने ग़ज़्व-ए-बद्र में शिरकत की है और अल्लाह तआ़ला ने बद्र में रहने वालो के बारे में फ़रमाया है कि तुम जो चाहे करो, मैंने तुम्हारी बख़्शिश कर दी। इस पर अल्लाह तआ़ला ने सूरः मुम्तहिना की शुरुआती आयात يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا से فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ तक नाज़िल फ़रमाईं।

'हज़रत हातिब' (रज़ि०) ने जो अ़मल किया वह तो सही नहीं था, लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इस वजह से उन को कोई सज़ा देना मुनासिब नहीं समझा कि वह बद्र के शरीक होने वालों में से थे।

हज़रत उ़मर (रज़ि०) को जोश-ए-ईमानी की वजह से यह ध्यान न रहा कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जो फ़रमा दिया कि उन्होंने सच कहा है, इस के बाद उन्हें मुनाफ़िक़ कहने और गर्दन मारने का मौक़ा नहीं है। फिर जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बद्र के शरीक होने वालों में उन के शरीक होने की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई तो हज़रत उ़मर ख़ामोश हो गए।

'अल् बिदाया वल् निहाया' (भाग 4 पेज नं० 284) में 'हज़रत हातिब (रज़ि०) के ख़त का लेख भी नक़्ल किया है और यह भी लिखा है कि जब उन का मुवाख़िज़ा फ़रमाया तो उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैंने निफ़ाक़ से या अल्लाह के रसूल की ख़यानत की वजह से यह ख़त नहीं लिखा था, यह तो मैं जानता था कि अल्लाह तआ़ला अपने रसूल को ग़ालिब फ़रमाएगा और अपने दीन को मुकम्मल फ़रमाएगा, लिहाज़ा मेरे लिखने न लिखने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

हाँ, इतनी बात है कि जब मैं मक्का में था तो उन के दर्मियान परदेसी था और मेरी माँ भी वहीं हैं, लिहाज़ा मैंने चाहा कि उन पर मेरा कोई एह्सान हो जाए। यह उन की एक सोच थी जिस की वजह से यह ख़त लिख दिया जो सूरः मुम्तहिना की आयात के नुज़ूल का सबब बन गया और आइन्दा आने वाले मुसलमानों के लिए तम्बीह (Warning) हो गई।

जब यह मालूम है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) फ़तेह मक्का के लिए जल्द ही तशरीफ़ ले जा रहे हैं और आप को ग़ल्बा (विजयी) होना ही है तो चन्द दिन के लिए अहले मक्का पर एह्सान धरने की ज़रूरत ही न थी।

अल्लाह तआ़ला ने अहले ईमान को ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि तुम मेरे दुश्मन और अपने दुश्मन को दोस्त मत बनाओ, दुश्मनों की तरफ़ दोस्ती बढ़ाना और उन को यह बताना कि हम तुम्हारे हमदर्द और दोस्त हैं (ज़ाहिरी तौर पर हो) यह शाने ईमान के ख़िलाफ़ है जो गुनाह के काम हैं वह ज़ाहिर करो या पोशीदा (छुपे हुए) मैं उन्हें ख़ूब अच्छी तरह़ जानता हूँ। ऐसी ह़रकत करना कोई मामूली बात नहीं है, जो शख़्स ऐसी ह़रकत करेगा سَوَآءَ السَّبِيْلِ यानी सीधे रास्ते से हट जाएगा जो अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी का रास्ता है।

إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ تُسِرُّوْنَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ

मतलब यह है कि अगर तुम अपने वतन को छोड़ने के लिए आए हो कि मेरी राह में जिहाद करो, मेरी मर्ज़ी के तालिब बनो तो मेरे और अपने दुश्मनों की तरफ़ दोस्ती का हाथ मत बढ़ाओ।

मुश्रिकीन का तो यह ह़ाल है कि उन्होंने ह़क़ का इन्कार कर दिया, कुफ़्र पर जमे रहे। रसूलुल्लाह (सल्ल०) और तुम लोगों को अपने शहर से निकाल दिया, जबकि तुम्हारा कुछ भी क़ुसूर न था बस इतनी बात थी कि तुम अल्लाह पर ईमान लाए जो तुम्हारा रब है।

यह ईमान लाना और मोमिन बन्दा बनना कोई ऐ़ब की बात नहीं जिस की वजह से किसी को निकाला जाए उन का तो यह ह़ाल है कि उन्होंने तुम्हें शहर से निकाल दिया और उन की यह दुश्मनी पूरी नहीं हो पायी और वह अभी तक तुम्हारे दुश्मन हैं, उनका यह ह़ाल है कि अगर वह तुम को कहीं पा लें तो उन की दुश्मनी ज़ाहिर हो जाएगी तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचाने की और क़त्ल करने की कोशिश करेंगे और तुम्हारे बारे में बुरे शब्द इस्तेमाल करेंगे और उन की यह तमन्ना और आरज़ू है कि तुम लोग ईमान को छोड़कर फिर कुफ़्र में दाख़िल हो जाओ। यह तो उन का ह़ाल है और तुम्हारा ह़ाल यह है कि चुपके से उन की तरफ़ दोस्ती बढ़ाते हो, जो सरासर ईमानी शान के ख़िलाफ़ है।

لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَآ أَوْلَادُكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

(क़ियामत के दिन तुम्हारी रिश्तेदारियाँ और तुम्हारी औलाद हरगि़ज़ तुम्हें नफ़ा न देंगी।)

यह एक आ़म विषय है हर मुसलमान से मुतअ़ल्लिक़ है। खुसूसी तौर पर यहाँ इस का ज़िक्र इसलिए फ़रमाया कि ह़ज़रत ह़ातिब (रज़ि०) ने जो ख़त भेजा था उस की मअ़ज़रत करते हुए यह बताया था कि मैंने अपने रिश्तेदारों के लिए भेजा है, ताकि क़ुरैश-ए-मक्का पर मेरा यह एह़सान हो जाए और वह मेरे रिश्तेदारों को तक्लीफ़ न पहुँचाए।

सूरः लुक़्मान (**आयत नं० 33**) में इर्शाद फ़रमायाः-

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۚ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْئًا

(ऐ ईमान वालों! अपने रब से डरो और उस से डरो जिस दिन न कोई बाप अपने बेटे की तरफ़ से कुछ मुतालबा (Requirement) अदा कर सकेगा और न कोई बेटा अपने बाप की तरफ से कुछ मुतालबा (Requirement) अदा कर सकेगा।

सूरः अ़बस (**आयत नं० 33 से 37**) में फ़रमायाः-

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ﴿٣٣﴾ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿٣٤﴾ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ﴿٣٥﴾ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴿٣٧﴾

(फिर जिस वक़्त कानों को बहरा कर देने वाला शोर बरपा होगा हर आदमी अपने भाई से, अपनी माँ से, अपने बाप से, अपनी बीवी से और अपनी औलाद से भागेगा, उन में से हर शख़्स व्यस्त होगा जो उस को किसी और तरफ़ मुतवज्जेह (ध्यानाकर्षित) न होने देगा।)

जब रिश्तेदारों का यह ह़ाल होगा तो दूसरे लोग क्या काम आ सकते हैं जिस दिन इन्सान सब से ज़्यादह ज़रुरतमन्द होगा सभी उस से दूर भागेंगे उन से दोस्ती करना और उन की वजह से अल्लाह तआ़ला के रसूल (सल्ल०) की जासूसी करना ईमान के ख़िलाफ़ है।

जासूसी का शरई ह़ुक्म-

नोट- ह़ज़रत इमाम अबूदाऊद (रह़०) ने किताबुल् जिहाद में **باب فی حکم الجاسوس اذا کان مسلماً** क़ायम किया है और उस में ह़ज़रत ह़ातिब (रज़ि०) का क़िस्सा लिखा है। इस के बाद باب فی الجاسوس الذمی लिखा है। फिर उस के बाद तीसरा बाब **فی الجاسوس المستامن** क़ायम किया है।

1. जासूस मुस्लिम 2. जासूस ज़िम्मी 3. 'जासूस मुस्तामिन' यह तीन क़िस्म के जासूस हुए और चौथा जासूस 'ह़र्बी' है जिस से कोई मुआ़हिदा न हो। इन चारों क़िस्म के जासूसों के बारे में ह़ज़रात फ़ुक़्हा-ए-किराम के मुख़्तलिफ़ (Diffrent) राय हैं। 'शरह़ मुस्लिम इमाम नव्वी' ने फ़रमाया कि जासूस ह़र्बी तो क़त्ल कर दिया जाएगा और जो जासूस ज़िम्मी है उस के बारे में ह़ज़रत इमाम मालिक और 'इमाम अवज़ाअ़ी' ने फ़रमाया है कि जासूसी की वजह से मुआ़हिदा टूट जाएगा। अब इमामुल् मुस्लिमीन उसे ग़ुलाम भी बना सकता है और क़त्ल की भी इजाज़त है।

जम्हूर (अक्सर) उ़ल्मा का फ़रमान है कि उस से इस का मुआ़हिदा खत्म नहीं होगा। हाँ, अगर मुआ़हिदे में यह शर्त लगाई गई थी कि जासूसी करेगा तो मुआ़हिदा ख़त्म हो जाएगा तो फिर वादा खिलाफी में शुमार होगा और जो शख़्स मुसलमानों में से जासूसी करे उस के बारे में 'इमाम शाफ़ई' 'इमाम अवज़ाअ़ी' 'इमाम अबू ह़नीफ़ा' और बाज़ 'मालकिया' ने फ़रमाया है कि इमामुल् मुस्लिमीन उस को जो चाहे तम्बीह के तौर पर सज़ा दे दें और उसे क़त्ल करना जायज़ नहीं है और इमाम मालिक ने फ़रमाया कि इमाम मुस्लिमीन इज्तिहाद (छान-बीन) करके अपनी राय के मुताबिक़ अ़मल करे।

4-6 قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَآءُ مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٤﴾ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٥﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٦﴾

काफ़िर के लिए इस्तिग़्फ़ार करना

ईमान और कुफ़्र की हमेशा से लड़ाई रही है। 'हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह' (अ़लै०) के जो अपनी क़ौम से और अपने बाप से बहसें हुईं जगह-जगह क़ुर्आन मजीद में ज़िक्र हैं। इन बातों में से एक बात यह भी है कि हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और उन के साथियों ने बग़ैर किसी चापलूसी के अपनी क़ौम के सामने एलान कर दिया कि हम तुम से, और तुम अल्लाह के सिवा जिस की भी अ़िबादत करते हो उस से बेज़ार हैं।

इस एलान के साथ यह भी एलान किया कि हम तुम्हारे इन्कारी हैं, हम तुम्हारे दीन को नहीं मानते और हमारे तुम्हारे दर्मियान बुग्ज़, नफ़रत और दुश्मनी है और यह दुश्मनी हमेशा रहेगी, जब तक तुम अल्लाह पर ईमान न लाओगे।

हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने जो अपने बाप से बातें की थीं उन में एक यह बात भी थी لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ कि मैं तुम्हारे लिए इस्तिग्फ़ार करुँगा और साथ यह भी कहा थाः-

وَمَآ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ (मैं तुम्हारे लिए अल्लाह की तरफ़ से किसी चीज़ का मालिक नहीं।)

यानी ईमान कुबूल न करुँगा और कुफ़्र ही अख़्तियार किये रहोगे तो मैं अल्लाह के अ़ज़ाब से तुम्हें नहीं बचा सकता, इस में मग़्फ़िरत की दुआ़ का जो वादा किया था उस के मुताबिक़ उन्होंने दुआ़ की थी जिस का सूरः शुअ़रा (आयत नं० 86) में ज़िक्र है وَاغْفِرْ لِاَبِیْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّیْنَ

बाज़ उ़ल्मा ने फ़रमाया कि इस का मतलब यह है कि ऐ अल्लाह! इन को ईमान की तौफ़ीक़ दे और मग़्फ़िरत फ़रमा।

सूरः तौबः (आयत नं० 114) में फ़रमाया हैः-

فَلَمَّا تَبَیَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ (जब उन पर वाज़ेह (Clear) हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है यानी यह यक़ीन हो गया कि कुफ़्र पर बाप की मौत होगी तो बेज़ारी ज़ाहिर कर दी।)

सूरः मुम्तहिना में जो اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِیْمَ لِاَبِیْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ फ़रमाया है इस का मतलब यह है कि हज़रत इब्राहीम और उन के साथी जो तौहीद और आ़माले सालिहा में उन के साथ थे, उन में तुम्हारे लिए उस्व-ए-हस्ना है सिवाय इस बात के जो हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अपने बाप से इस्तिग्फ़ार करने का वादा किया, इस बात में उन का नमूना नहीं है।

رَبَّنَا عَلَیْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَیْكَ اَنَبْنَا وَاِلَیْكَ الْمَصِیْرُ

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि यह भी हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और उन के अस्हाब की दुआ़ है और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया है कि यहाँ قُوْلُوْا मुक़द्दर है यानी अल्लाह तआ़ला ने उम्मते मुहम्मदिया को हुक्म दिया है कि यूँ दुआ़ करें कि ऐ हमारे रब! हम ने आप पर भरोसा किया और आप ही की तरफ़ रुजूअ़ किया और आप ही की तरफ़ जाना है।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِیْنَ كَفَرُوْا

(ऐ हमारे रब! हमें काफ़िरों के लिए फ़ित्ना न बना दीजिए) यानी उन्हें हमारे ऊपर मुसल्लत न कीजिए कि वह हमें तक्लीफ़ पहुँचा सके।)

وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا (और हमारी मग़्फिरत फ़रमा दीजिए ऐ हमारे रब।)

إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (बेशक आप ज़बरदस्त हैं हिक्मत वाले हैं।)

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ यानी हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और उन के अस्हाब के तरीक़े में उस शख़्स के लिए उ़म्दह नमूना है जो अल्लाह के सामने हाज़िर होने का और क़ियामत के दिन का यक़ीन (विश्वास) रखता हो وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ

और जो शख़्स इन्कार का रास्ता अपनाएगा सो अल्लाह तआ़ला बेनियाज़ है और ह़म्द (तअ़रीफ) का ह़क़्दार है (जो शख़्स काफ़िरों से दिली ताअ़ल्लुक) करेगा, उन की तरफ़ झुकेगा अल्लाह तआ़ला को कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकता। वह ग़नी, बेनियाज़ और ह़मीद भी है, हमेशा तअ़रीफ़ का ह़क़्दार है।

7-9 عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوَدَّةً ۚ وَاللَّهُ قَدِيرٌ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ لَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

हिज्रत के बाद

जैसा कि मालूम है कि जो ह़ज़रात हिज्रत कर के मदीना मुनव्वरह तशरीफ़ ले आए थे, मक्का में उन के रिश्तेदार थे जिन्होंने इस्लाम कुबूल न किया, तबअ़ी तौर पर मुहाजिरीन के दिलों में इसका एह़सास होना मुम्किन था कि उन लोगों से तअ़ल्लुक़ात टूट गए (लेकिन ईमान व कुफ़्र के मुक़ाबिले की वजह से तअ़ल्लुक़ात तोड़ना भी ज़रूरी था।)

ऊपर जिन आयात का अनुवाद लिखा गया है उन में से पहली आयत में अहले ईमान को तसल्ली दी गई है और उम्मीद दिलाई गई है कि ईमान की वजह से जिन रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात ख़त्म हो गए अल्लाह तआ़ला जल्द ही तुम्हारे और उन के दर्मियान मुह़ब्बत पैदा फ़रमा देगा (यह मुह़ब्बत इस तरह़ वजूद में आएगी कि जो लोग अब तक मुसलमान नहीं हुए अल्लाह तआ़ला उन्हें इस्लाम की तौफ़ीक़ देगा।) चुनांचे ऐसा ही हुआ कुछ लोग फ़तेह़ मक्का से पहले और कुछ उस दिन और कुछ फ़तेह़ मक्का के बाद मुसलमान हो गए जिस की वजह से रिश्तेदारियों के तअ़ल्लुक़ात हो गए।

'अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब' 'ह़ारिस बिन हिशाम' 'सुहेल बिन अ़म्र' 'ह़कीम बिन हिज़ाम' मुसलमान हो गए उन में अबू सुफ़्यान वह शख़्स है जो मुसलमानों के मुक़ाबिले में काफ़िरों के लश्कर की क़यादत (नेतृत्व) करते थे और सुहेल बिन अ़म्र वही शख़्स है जो सुलह़ हुदैबिया के मौक़े पर अहले मक्का के नुमाइन्दा बनकर आए थे और सुलह़ नामा में मुह़म्मद रसूलुल्लाह नहीं लिखने दिया था।

काफ़िरों को ईमान की तौफ़ीक़ देना टूटे हुए दिलों को जोड़ देना अल्लाह के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है इसलिए आयत के ख़त्म पर फ़रमायाः-

وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ (और अल्लाह क़ादिर है।)

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ भी फ़रमाया जिस में यह बताया कि कुफ़्फ़ार जब मुसलमान हो जाएँगे तो उन का पिछला सब माफ़ कर दिया जाएगा।

जब अल्लाह तआ़ला ही सब कुछ माफ़ फ़रमा देगा तो अहले ईमान को उन लोगों से तअ़ल्लुक़ात बनाने के बारे में यह सोचने की ज़रूरत नहीं कि यह आदमी तो कल तक दुश्मन था आज दोस्ती कैसे करें।

जिन लोगों ने इस्लाम क़ुबूल न किया था उन में दो क़िस्म के लोग थे। एक वह जिन्होंने न जंग में ह़िस्सा लिया और न अहले ईमान को निकालने में कोशिश की और न इस सिल्सिले में मदद की।

दूसरी क़िस्म उन लोगों की थी जिन्होंने मुसलमानों से क़िताल भी किया और मक्का से निकालने पर तुल गए और आपस में एक दूसरे की मदद की।

आयते करीमा لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ पहले गिरोह के बारे में और इस के बाद वाली आयत اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ दूसरे गिरोह के बारे में नाज़िल हुई।

'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' ने 'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर' (रज़ि०) से नक़्ल किया है उन्होंने फ़रमाया कि पहली आयत لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ उन औ़रतों और बच्चों के बारे में नाज़िल हुई जो ईमान वाले नहीं थे और ह़ज़रत मुजाहिद से नक़्ल किया है कि यह आयत उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जिन्होंने मक्का में रहते हुए ईमान क़ुबूल कर लिया था, मगर हिज्रत नहीं की, मुहाजिरीन व अन्सार के साथ अच्छे सुलूक करने से परहेज़ करते थे क्योंकि वह लोग हिज्रत न करने की वजह से फ़र्ज़ के छोड़ने वाले थे और बाज़ उ़ल्मा ने फ़रमाया है कि यह उन कमज़ोर मुसलमानों के बारे में नाज़िल हुई जो मक्का में रह गये थे, हिज्रत न कर सके थे।

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़०) ने एक ह़दीस नक़्ल की है जिस से आयत का सबबे नुज़ूल ज़ाहिर होता है और वह यह कि सुलह़ हुदैबिया के बाद जब मोमिन-काफ़िर दोनों फ़रीक़ अम्न व अमान से रहने लगे, 'अस्मा बिन्त अबी बक्र' की वालिदा मदीना मुनव्वरह आईं और कुछ अपनी ज़रूरत का इज़्हार किया। ह़ज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को मुश्रिक औ़रत पर माल ख़र्च करने में तकल्लुफ हुआ, लिहाज़ा उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में सवाल पेश कर दिया और अ़र्ज़ किया कि मेरी वालिदा आई हैं उन की तरफ़ से कुछ ह़ाजतमन्दी ज़ाहिर हो रही है, क्या मैं 'सिलह़ रह़मी' के तौर पर उन्हें कुछ दे दूँ। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया हाँ, 'सिलह़ रह़मी' (रिश्तों को जोड़ना) करो।

रावी ह़दीस ह़ज़रत 'सुफ़्यान बिन उऐ़ना' ने फ़रमाया है कि इस पर अल्लाह तआ़ला ने आयते करीमा لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ नाज़िल फ़रमाई।

(सह़ीह़ बुख़ारी भाग 2 पेज 884)

'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' ने बह़वाला मुस्नद इमाम अह़मद 'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर' (रज़ि०)

से यूँ हदीस नक़्ल की है कि 'क़ीला बिन्त अ़ब्दुल् उ़ज़्ज़ा' अपनी बेटी 'अस्मा बिन्त अबी बक्र' रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास कुछ हदिया (Gift) लेकर आईं 'क़ीला' मुश्रिक थीं, हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने उन का हदिया क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया और घर में दाख़िल न होने दिया और हज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास ख़बर भेजीं कि इस बारे में रसूलुल्लाह (सल्ल०) से दर्याफ़्त कर के बताएँ।

हज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से दर्याफ़्त किया तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और हदिया (Gift) क़ुबूल करने और घर में बुलाने की इजाज़त दे दी।

आयते करीमा में स्पष्ट (Clear) तौर पर बता दिया कि जिन लोगों ने तुम्हारे साथ दीन के बारे में क़िताल किया और तुम को घरों से निकाला और निकालने में एक दूसरे की मदद की, अल्लाह तआ़ला उन के साथ दोस्ती करने से मना फ़रमाता है।

وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ कि जो लोग इस क़िस्म के काफ़िरों से दोस्ती का तअ़ल्लुक़ रखेंगे, वह लोग ज़ुल्म करने वाले हैं यानी अल्लाह तआ़ला के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर के अपनी जानों को अज़ाब का हक़्दार बनाने वाले हैं।

10-11

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَاۗءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ
عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ۭ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۭ
وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۭ وَلَا تُمْسِكُوْا
بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ۭ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ۭ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ
عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَاِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ
اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝

मुहाजिरात के बारे में हुक्म

6 हिज्री में जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने सहाबा के साथ उ़मरह करने के लिए मदीना मुनव्वरह से रवाना हुए तो रास्ते में मालूम हुआ कि मुश्रिकीने मक्का उ़मरह करने में रुकावट डालने का इरादा किये हुए हैं। आप (सल्ल०) ने हालात मालूम करने के लिए हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) को मुश्रिकीने मक्का के पास भेजा और ख़ुद 'मक़ामे हुदैबिया' में तश्रीफ़ फ़रमा रहे, हज़रात सहाबा भी आप के साथ वहीं ठहर गए। अहले मक्का ने 'सुहेल बिन अ़म्र' को भेजा (वह उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे) बातें होती रहीं यहाँ तक कि आपस में सुलह करने पर राज़ी हो गये, दस शर्तों पर सुलह हो गई जिस की तफ़्सील सूरः अल् फ़त्ह की तफ़्सीर में गुज़र चुकी है, उन दस शर्तों में यह भी था कि जो भी शख़्स अहले मक्का में से मदीना मुनव्वरह पहुँच जाएगा चाहे मुसलमान होकर ही आए तो उसे वापस कर दिया जाएगा और जो शख़्स मुसलमानों में से मक्का पहुँच जाएगा वह लोग उसे वापस नहीं करेंगे।

अभी सुलह़ नामा लिखा ही जा रहा था कि ख़ुद 'सुहेल बिन अ़म्र' का बेटा जिस के पांव में बेड़ियाँ

पड़ी हुई थीं पहुँच गया जो मुसलमान हो गया था और इसी वजह से उसे बेड़ियों में जकड़ कर रखा था। उस ने मुसलमानों से कहा तुम मुझे ले चलो वापस न होने दो, मुसलमानों की ख़्वाहिश थी कि उन्हें वापस न करें। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने भी सुहेल से कहा कि इसे मुझे दे दो, लेकिन सुहेल ने नहीं माना (जिस का क़िस्सा लम्बा है)

जब सुलह़ नामा की किताबत (Composing) हो गई तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) और सह़ाबा-ए-किराम ने अपने हदी के जानवर ज़ब्ह़ कर दिये और ह़लक़ (सर मुंडाना) भी कर लिया, ह़लाल हो गए और एह़राम से निकल गए।

इस के बाद कुछ ओ़रतें आ गईं उन्होंने कहा कि हम मुसलमान हैं हमें साथ ले चलो, इस मौक़े पर आयत يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا جَآءَكُمُ ٱلْمُؤْمِنَٰتُ और इस के बाद वाली आयत وَإِن فَاتَكُمْ شَىْءٌ مِّنْ أَزْوَٰجِكُمْ नाज़िल हुई।

मोमिन ओ़रतों का ह़ाल-

पहली आयत में इर्शाद फ़रमाया कि ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मुसलमान ओ़रतें हिज्रत कर के आ जाएँ तो उन का इम्तिह़ान ले लो। अल्लाह तआ़ला को उन के ईमान का इ़ल्म है, क्योंकि वह दिलों का ह़ाल जानता है, लेकिन तुम अपने तौर पर इम्तिह़ान ले लो, सो अगर तुम जान लो कि वह मोमिन हैं तो उन्हें काफ़िरों की तरफ़ मत लौटाना। यह ओ़रतें न उन काफ़िरों के लिए ह़लाल हैं और न वह मर्द उन के लिए ह़लाल हैं (अगरचे ज़माने कुफ़्र में वह मियाँ-बीवी थे) जब कोई ओ़रत मुसलमान होकर दारुल् ह़र्ब से आ गई तो पिछले काफ़िर शौहर से उस का निकाह़ ख़त्म हो गया।

मुआ़हिदे (Contract) में जो यह शर्त थी कि जो शख़्स अहले मक्का में से जाएगा उसे वापस कर दिया जाएगा, इस में मोमिनात मुहाजिरात को अलग कर दिया गया, फिर दुश्मन भी उस पर राज़ी हो गए लिहाज़ा कोई सवाल नहीं होता ख़ासतौर से जबकि यह भी फ़रमा दिया कि काफ़िरों ने मोमिन ओ़रतों पर जो कुछ ख़र्च किया वह उन को दे दो, (जैसा कि आइन्दा ज़िक्र आ रहा है।)

ऐसा मालूम होता है कि उन्होंने यह समझ लिया कि जब ओ़रत मुसलमान हो गई तो वह हमारे पास ख़ुशदिली से नहीं रह सकती और मुसलमानों में चली जाए तो उस से जंग का ख़त़्रा भी नहीं, फिर ऊपर से हमारे ख़र्च किये हुए पैसे भी मिल रहे हैं इसलिए उन्होंने ओ़रतों को वापस करने के लिए ज़िद नहीं किया।

उन मोमिनात मुहाजिरात में से 'उम्मे कुल्सूम बिन्त उ़क़्बा इब्ने अबी मुओ़त' भी थीं, जब वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास पहुँचीं तो उन के ख़ानदान वाले ह़ाज़िर हुए और वापस करने के लिए कहा, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने वापस नहीं किया।

'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' पेज नं० (76) भाग (28) ने 'सबीआ़ बिन्त अल् ह़ारिस' 'उमय्या बिन्त बिश्र' का नाम भी लिखा है, यह बह़ालत ईमान रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास ह़ाज़िर हो गईं उन के ख़ानदान

वालों ने वापस लेना चाहा, लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने वापस नहीं किया।

وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا और काफ़िरों की जो औ़रतें मुसलमान होकर तुम्हारे पास आ गइं उन के काफ़िर शौहरों ने उन पर जो माल ख़र्च किया उतना माल उन को दे दें (यह हुक्म ख़ास उसी वक़्त के लिए था, क्योंकि सुलह़ हुदैबिया में यह बात दाख़िल थी कि जो शख़्स अहले मक्का में से आप के पास आएगा उसे वापस करना होगा, फिर उस में मुहाजिरात मोमिनात का ज़िक्र कर दिया गया तो हुक्म दिया गया कि उन के पिछले शौहरों को उतना माल दे दिया जाए जो उन्होंने ख़र्च किया था।)

उस वक़्त जो सुलह़ (Compromise) की थी, एक साल के अन्दर क़ुरैशे मक्का की तरफ़ से उस की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर दी गई जिस की बुनियाद पर मक्का मुअ़ज़्ज़माँ फ़तेह़ किया गया। जब सुलह़ ख़त्म हो गई तो सुलह़ का असर भी ख़त्म हो गया और कहा गया कि अगर अब कोई औ़रत काफ़िरों के मुल्क से मुसलमान होकर मुसलमानों के मुल्क में आ जाएगी तो उसे वापस न किया जाएगा और उस के शौहर को या हुकूमते काफ़िरा को कोई माल नहीं दिया जाएगा।

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ

(और तुम पर इस में कोई गुनाह नहीं कि उन हिज्रत कर के आने वाली औ़रतों से निकाह़ कर लो, जबकि तुम उन के महेर अदा कर दो।)

इस में उन औ़रतों से निकाह़ करने की इजाज़त दे दी जो मुसलमान होकर 'दारुल ह़र्ब' छोड़कर दारुस्सलाम में आ जाएँ चूंकि वह मुसलमान थीं इसलिए दारुस्सलाम के रहने वाले मुसलमान अह़कामे शरअ़िया के मुताबिक़ उन से निकाह़ कर सकते हैं। रही यह बात कि उस औ़रत पर इ़द्दत लाज़िम है या नहीं इस के बारे में ह़ज़रत इमाम अबूह़नीफ़ा (रह़०) ने फ़रमाया कि उस पर इ़द्दत लाज़िम नहीं है और इ़द्दत गुज़ारे बग़ैर किसी मुसलमान से निकाह़ कर सकती है और ह़ज़रात साह़िबैन ने फ़रमाया कि उस पर इ़द्दत लाज़िम है उस के बग़ैर निकाह़ नहीं कर सकती, लेकिन अगर हिज्रत कर के आने वाली औ़रत ह़मल (गर्भ) से हो तो जब तक वज़अ़ ह़मल न हो उसे निकाह़ करने की इजाज़त नहीं है।

(हिदाया बाबुन्निकाह़ अहले शिर्क)

اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ

इस में महेर की अहमियत का ज़िक्र है यानी महेर मुक़र्रर कर दिया जाए फिर उसी वक़्त अदा कर दिया जाए या उस की अदाएगी का वादा कर दिया जाए।

وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ

(और तुम काफ़िर औ़रतों के तअ़ल्लुक़ात को बाक़ी न रखो) यानी तुम्हारी जो काफ़िर बीवियाँ (दारुल ह़र्ब में रह गई हैं उन का निकाह़ ख़त्म हो चुका, अब पिछले निकाह़ के असर को बाक़ी न समझो यहाँ तक कि दारुल् ह़र्ब वाली काफ़िर बीवी की कोई बहन दारुल् इस्लाम में हो तो उस से निकाह़ कर सकते हैं।

وَسْئَلُوْا مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْئَلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا

(और तुम ने जो कुछ किया है वह तलब कर लो और उन्होंने जो ख़र्च किया है वह तलब कर लें।) यानी जो औ़रत दारुल् ह़र्ब में काफ़िर रह गई और मुसलमान होकर दारुस्सलाम न आई (जिस की वजह

से निकाह़ ख़त्म हो गया) उस औ़रत पर जो तुम ने ख़र्च किया था यानी महेर, वह दारुल् ह़र्ब के काफ़िरों से तलब कर लो।

और काफ़िरों ने जो उन औ़रतों पर ख़र्च किया है जो तुम्हारे पास मुसलमान होकर आ गईं वह तुम से माँग लें। यह अह़काम भी सुलह़ हु़दैबिया से मुतअ़ल्लिक़ हैं, बाद में मन्सूख़ (ख़त्म) कर दिये गए।

ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ (यह अल्लाह का हु़क्म है) يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ (वह तुम्हारे दर्मियान फ़ैसला फ़रमाता है) وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (और अल्लाह अ़लीम है ह़िक्मत वाला है।)

وَاِنْ فَاتَكُمْ और अगर तुम्हारी बीवियों में से कोई बीवी काफ़िरों में रह जाने की वजह से तुम्हारे हाथ से निकल गई, इसी तरह़ का कोई ह़क़ किसी काफ़िर का निकल आए तो उन मुसलमानों को जिन की बीवियाँ दारुल् ह़र्ब में रह गईं इस क़द्र जितना उन्होंने ख़र्च किया था यानी तुम्हारे ज़िम्मे जो काफ़िरों को उन की पिछली बीवियों को महेर देना वाजिब है (जो मुसलमान हो गईं और दारुल् इस्लाम में आ गईं) उन मुसलमानों को दे दो जिन की बीवियाँ उन के हाथों से निकल गईं, अगर बराबर सराबर है तो कुछ सोचने की ज़रूरत नहीं अगर कमी बेशी हो तो उस के मामलात के तौर पर सोच लें यानी जो काफ़िर का ह़क़ है वह अदा कर दें और जो अपना ह़क़ बाक़ी है उस का मुताल्बा जारी रखें।

यह हु़क्म भी सुलह़ हु़दैबिया के साथ ख़ास था, बाद में मन्सूख़ हो गया।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ (और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो) इस में तमाम अह़काम की पाबन्दी का हु़क्म फ़रमा दिया और ख़िलाफ़वर्ज़ी पर वई़द की तरफ़ इशारा फ़रमा दिया।

12 يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ
وَلَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ
فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

बैअ़त के शब्द और शर्तें

'सुलह़ हु़दैबिया' के अगले साल मक्का फ़तेह़ हो गया। अहले मक्का तो डर रहे थे कि देखो हमारी ज़्यादतियों के बदले में हमारे साथ क्या मामला होता है, लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ पढ़ कर सब कुछ माफ़ फ़रमा दिया। बाज़ लोगों के सिवा आ़मतौर से अहले मक्का सब ही मुसलमान हो गए।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मर्दों से अ़हद लिया और औ़रतों से भी, औ़रतों से जो अ़हद लिया था वह इस आयत में बयान फ़रमाया है। आ़मतौर पर जो औ़रतें हिज्रत कर के आई थीं, रसूलुल्लाह (सल्ल०) उन से उन चीज़ों पर अ़हद लेते थे और ज़बानी बैअ़त फ़रमा कर रुख़सत कर देते थे।

ऊपर की आयत में छः चीज़ें ज़िक्र हुई हैं जिन पर बैअ़त करने का हु़क्म उ़ल्मा ने बताया है। पिछली आयत में فَامْتَحِنُوْهُنَّ फ़रमाया है, उस में उन चीज़ों पर अ़हद लेना मुराद है।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) हिज्रत कर के आने वाली औ़रतों

से क़सम लेते थे कि वह न अपने शौहर से नफ़रत की वजह से आई हैं और न किसी मुसलमान के इश्क़ में मुब्तिला (Involve) है और न किसी जगह से परेशान होकर आई हैं और न कोई ऐसी ह़रकत की है जिस की वजह से पकड़ की ह़क़्दार हों और न दुनिया के लिए आई हैं, बल्कि इस्लाम से प्रभावित होकर अल्लाह और उस के रसूल की मुहब्बत की वजह से आई हैं। जब वह क़सम खाकर यह बयान दे देती थी, तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) उस को मुश्रिकीन की तरफ़ नहीं लौटाते थे और औ़रत की तरफ़ से मुश्रिकीन को महर या जो कुछ उस पर ख़र्च हो वह दे देते थे।

ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि जब मोमिन औ़रतें हिजरत कर के रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर होती थीं तो उन से आयते करीमा يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِذَا جَآءَكُمُ ٱلْمُؤْمِنَٰتُ के ज़रिये इम्तिह़ान लेते थे, जो चीज़ें आयते करीमा में ज़िक्र हैं। जब वह उन का इक़्रार कर लेते थीं तो उसी से उन का इम्तिह़ान हो जाता था। इस इक़्रार के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) फ़रमाते थे, जाओ मैंने तुम से बैअ़त कर लिया।

ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि अल्लाह की क़सम, रसूलुल्लाह (सल्ल०) के हाथ मुबारक ने कभी किसी औ़रत का हाथ नहीं छुआ, आप सिर्फ़ ज़बान से बैअ़त फ़रमा लेते थे।

(मुस्लिम भाग 2 पेज नं० 131)

इसमें जिन चीज़ों पर बैअ़त लेने का ज़िक्र है बज़ाहिर छः चीज़ें हैं। पहली पाँच चीज़ों में यह है कि ऐसा-ऐसा न करेंगी और छठी चीज़ के शब्द भी बज़ाहिर नहि (रोकने) के शब्द हैं, लेकिन उन का आ़म माने दीन के सब कामों को शामिल है और इस में पूरे दीन पर चलने का अ़हद लिया गया है।

औ़रतों से बैअ़त के शब्द

1. पहला अ़हद (प्रतिज्ञा) इस बात का है कि अल्लाह के साथ किसी भी चीज़ को शरीक न करेंगी।
2. दूसरा अ़हद (प्रतिज्ञा) यह है कि चोरी न करेंगी।
3. तीसरा अ़हद (प्रतिज्ञा) यह है कि ज़िना न करेंगी।
4. चौथा अ़हद (प्रतिज्ञा) यह है कि अपनी औलाद को क़त्ल न करेंगी।

(यह अ़हद (प्रतिज्ञा) उस ज़माने में लेना ज़रुरी था, क्योंकि अहले अ़रब इस वजह से अपनी औलाद को क़त्ल कर देते थे कि उन को कहाँ से खिलाएँगे और लड़की पैदा हो जाती तो शर्माते हुए मुँह छिपाते फिरते थे और उसे ज़िन्दा दफ़ना देते थे। इस का ज़िक्र सूरः अअ़राफ़, सूरः बनी इस्राईल और सूरः नह़ल में गुज़र चुका है।) औलाद को क़त्ल करने में ह़मल गिराना भी दाख़िल है।

5. पाँचवा अ़हद (प्रतिज्ञा) यह है कि बोहतान (आरोप) की औलाद न लाएँगी जिसे अपने हाथों और पांव के दर्मियान से तराश ले यानी झूठ न बनाएँ। उ़लूम-ए-किराम ने इस के दो मतलब लिखे हैं-

पहला यह कि ज़िना से जो ह़मल ठहरा हुआ है उसे शौहर की औलाद न बनाएँगी।

दूसरे यह कि कोई बच्चा कहीं पड़ा मिल जाए तो उस को उठा लें और शौहर से कहें कि यह मेरा बच्चा है जो तुझ से पैदा हुआ है, ऐसा न करें। जिन औ़रतों के शौहर परदेस में रहते हैं उन की औ़रतों को ऐसा करने के मौक़े मिल जाते हैं। जैसे- शौहर एक साल में आया और बच्चा ज़िना से पैदा हुआ

तो उसको बता दिया कि उस का ह़मल तुम्हीं से क़रार पाया था।

6. छठा अ़हद जो औ़रतों से लिया जाता था वह यह है कि किसी मशहूर काम में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की नाफ़रमानी न करेंगी। शब्द मअ़रूफ़ (मशहूर) में हर वह चीज़ आ जाती हैं जिसे मुसलमान आदमी को अपनी ज़िन्दग़ी में अपनाना चाहिए। रसूलुल्लाह (सल्ल०) जो भी हुक्म फ़रमाएँ, फ़र्ज़ या वाजिब में से हो, मोमिन मर्द और औ़रत को उस पर अ़मल करना ईमान का अहम तक़ाज़ा है। ह़ज़रत उम्मे अ़तिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने बयान फ़रमाया कि हम ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बैअ़त की, आप ने आयते करीमा اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـًٔا तिलावत फ़रमाई और हमें किसी के मर जाने पर नौह़ा (रोने) करने से मना फ़रमाया। **(सह़ीह़ बुख़ारी भाग 2 पेज नं० 8271)**

'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास' (रज़ि०) से रिवायत है, उन्होंने बयान फ़रमाया कि मैं ईदुल् फ़ित्र की नमाज़ में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ ह़ाज़िर हुआ। आप (सल्ल०) ने नमाज़ पढ़ाई, फिर खुत्बा पढ़ा, खुत्बे से फ़ारिग़ होकर आप मर्दों की सफ़ों (पंक्तियों) के दर्मियान से गुज़रते हुए औ़रतों के पास तशरीफ़ लाए। आप (सल्ल०) के साथ बिलाल भी थे, आप (सल्ल०) ने उन के सामने पूरी आयत يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ तिलावत फ़रमाई। फिर फ़रमाया कि तुम सब इस पर क़ायम हो? औ़रतों ख़ामोश रहीं, सिर्फ़ एक औ़रत ने कहा कि हाँ हम इस पर क़ायम हैं। इस के बाद आप ने सद्क़ः करने का हुक्म फ़रमाया। ह़ज़रत बिलाल ने कपड़ा फैला दिया, औ़रतें इस में अपनी अंगूठियाँ डालती रहीं। **(सह़ीह़ बुख़ारी भाग 1 पेज नं० 133)**

जिन चीज़ों का अ़हद रसूलुल्लाह (सल्ल०) औ़रतों को बैअ़त करते वक़्त लेते थे, उन चीज़ों का मर्दों से भी अ़हद लेना साबित है।

मर्दों से बैअ़त के शब्द

'ह़ज़रत उ़बादह बिन सामित' (रज़ि०) से रिवायत करते हैं कि चन्द सह़ाबा रसूलुल्लाह (सल्ल०) के आस पास मौजूद थे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया आओ मुझ से इन बातों पर बैअ़त करो कि-

1. अल्लाह के साथ किसी को शरीक न बनाओगे।
2. चोरी न करोगे।
3. ज़िना न करोगे।
4. अपनी औलाद को क़त्ल न करोगे।
5. कोई बोहतान (आरोप) की चीज़ न लाओगे। जिसे तुम अपने हाथों और पांव के दर्मियान से तराश लो।
6. आ़म बातों में नाफ़रमानी न करोगे।

सो जो शख़्स इन चीज़ों को पूरा कर देगा उस का सवाब अल्लाह के ज़िम्मे है और जिस शख़्स ने ख़िलाफ़वर्ज़ी कर ली और दुनिया में उस की सज़ा दी गई तो वह उस के लिए कफ़्फ़ारा है और जिस शख़्स ने कोई ख़िलाफ़वर्ज़ी की, फिर अल्लाह ने उस की पर्दापोशी फ़रमाई उस का मामला अल्लाह के सुपुर्द है वह चाहे तो माफ़ फ़रमा दे और चाहे तो अ़ज़ाब दे।

इस रिवायत को नक़्ल कर के ह़ज़रत उ़बादह (रज़ि०) ने फ़रमाया कि हम ने इन बातों पर

रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बैअ़त कर ली। **(सह़ीह़ बुख़ारी भाग 1 पेज नं० 7)**

इस ह़दीस से मालूम हुआ कि मर्दों से भी अ़हद लिया कि कोई बोहतान न लगाओगे जिसे अपने हाथों और पांव के दर्मियान से तराश लो। यह शब्द औ़रतों की बैअ़त में भी हैं, वहाँ इस के दो अर्थ बताए हैं, एक यह कि कोई पड़ा हुआ बच्चा उठाकर अपने शौहर के ज़िम्मे न लगा दें। दूसरा अर्थ यह कि ज़िना की औलाद को शौहर की औलाद न बता दें, चूंकि यह बात मर्दों से मुतअ़ल्लिक़ नहीं इसलिए इस ह़दीस की तशरीह़ में फ़रमाया है कि इस से यह मुराद है कि किसी पर आरोप न लगाएँ और बोहतान न बांधे और हाथ पांव का ज़िक्र इसलिए फ़रमाया कि अक्सर गुनाह उन्हीं से वजूद में आते हैं।

बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया है कि (हाथों और पांव के दर्मियान से) दिल मुराद है, क्योंकि ज़बान उसी की तर्जुमानी करती है, लिहाज़ा बोहतान व आरोप को दिल की तरफ़ मन्सूब किया गया है। **(फ़त्ह़ुल बारी)**

अगर औ़रतों के बारे में भी यही मतलब लिया जाए और लक़ीत (गिरे पड़े बच्चे) और ज़िना की औलाद को शौहर के ज़िम्मे लगाने को बतौर मिसाल समझ लिया जाए तो यह ज़्यादह मुनासिब है, ताकि एक ही विषय में होने वाले शब्दों के अर्थ बयान करने में परेशानी न होगी।

'ह़ज़रत उम्मे अ़तिया' (रज़ि०) की रिवायत जो ऊपर नक़्ल की गई उस में यह भी है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने औ़रतों से यह अ़हद भी लिया कि किसी की मौत पर नौह़ा न करेंगी यानी रोने पीटने वाला काम न करेंगी (जो मौत पर किया करती हैं) इस से मालूम हुआ कि बैअ़त लेने में सिर्फ़ उन्हीं चीज़ों पर इन्ह़िसार (Depend) नहीं है जो आयते शरीफ़ा يَاأَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ में ज़िक्र हैं, बल्कि बैअ़त करने वाले के आ़माल और ह़ालात के एतिबार से बैअ़त करने की चीज़ों में मौक़ा के ह़िसाब से बढ़ाया भी जा सकता है।

इसीलिए बैअ़त लेने में लोगों के यहाँ बाज़ बातों का उम्मत के ह़ालात देखकर बढ़ा दिया जाता है।

"ह़ज़रत उ़बादह बिन सामित (रज़ि०) ने बयान किया कि हम ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से उन शर्तों पर बैअ़त की कि आसानी में और सख़्ती में और खुशी में और नागवारी में आप की फ़रमाँबरदारी करेंगे और इस बात पर भी बैअ़त की कि हमारे ऊपर दूसरों को तर्जीह़ (वरीयता) दी जाएगी तो उस में भी फ़रमाँबरदारी करेंगे और इस बात पर भी बैअ़त की कि हम जहाँ कहीं भी होंगे अल्लाह तआ़ला के बारे में किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरेंगे और इस बात पर भी बैअ़त की कि अमीरों (अगुवा) से झगड़ा नहीं करेंगे। हाँ, अगर तुम खुला हुआ कुफ़्र देखो जिस के कुफ़्र होने में तुम्हारे पास अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से दलील हो तो अमीरों से झगड़ा करने की इजाज़त होगी।

(सह़ीह़ बुख़ारी भाग 2 पेज नं० 1045)

وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ (और आप उन औ़रतों के लिए अल्लाह से इस्तिग़्फ़ार कीजिए) إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ (बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।)

13 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ۝

अहले कुफ़्र को राज़दार न बनाने का दोबारह हुक्म

यहाँ इस आयत में ख़ासतौर पर यहूदियों से खुसूसी तअ़ल्लुक़ रखने की मनाही फ़रमाई है। यूँ तो

तमाम काफ़िरों पर अल्लाह का ग़ज़ब है, लेकिन बाज़ आयात में चूंकि यहूदियों के मग़ज़ूबि अ़लैहिम होने का ख़ुसूसी ज़िक्र आया है।

(कमा फ़ी सूरः बक़रः (आयत नं० 90) فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ और जैसा कि सूरः आले इमरान (وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ)

इसीलिए बाज़ मुफ़स्सिरीन ने यहाँ قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ से यहूदियों को मुराद लिया है। मुफ़स्सिर 'क़ुर्तुबी' ने लिखा है कि बाज़ ग़रीब मुस्लिमीन यहूदियों को मोमिनीन की ख़बरें पहुँचा देते थे और कुछ बदला मिल जाता था। इस आयत में उन को मना फ़रमा दिया गया है।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ से यहूद व नसारा दोनों क़ौमें मुराद हैं और एक क़ौल यह है कि मुनाफ़िक़ मुराद हैं।

हक़ीक़त में तमाम काफ़िर को मुराद लेने की गुन्जाईश है, शुरु सूरः में जो दुश्मनाने इस्लाम से दोस्ती करने की मुमानिअ़त फ़रमाई थी, आख़िर सूरः में फिर बतौर ताकीद इस हुक्म को दोहरा दिया है।

قَدْ يَئِسُوْا مِنَ الْاٰخِرَةِ यह قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ की सिफ़त है और मतलब यह है कि जो काफ़िर मर गए क़ब्रों में चले गए अब दुनिया में आने से और किसी तरह़ की ख़बर मिलने से नाउम्मीद हो गए उसी तरह़ यह लोग भी हैं जिन पर अल्लाह का गुस्सा हुआ, आख़िरत से नाउम्मीद हो गए यह ईमान क़ुबूल नहीं करते और आख़िरत को नहीं मानते, उन का ढ़ंग यह है कि जैसे उन के अ़क़ीदे में है कि क़ियामत क़ायम नहीं होगी और मैदाने ह़श्र में ह़ाज़िर नहीं होंगे, जब उन का यह ह़ाल है तो ऐसे लोगों से दोस्ती करने का क्या फ़ायदा है।

هذا اذا كانت "من" بيانية كما اختاره جماعة واختار ابو حيان كونها لابتداء الغاية والمعنىٰ ان هولاء القوم المغضوب عليهم قد يئسوا من الاخرة كما يئسو من موتاهم ان يبعثوويلقوهم فى دارالدنيا وهومروى عن ابن عباس والحسن وقتاده فالمراد بالكفار اولائک القوم ووضع الظاهرموضع ضيمرهم تسجيلا لكفرهم واشعاراً بعلة ياسهم.

(राजेअ़ रुहुल् मआ़नी भाग 29 पेज नं० 83)

जिस तरह़ आयत يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ में आप (सल्ल०) की नुबूव्वत को और इसी तरह़ मुख़ालिफ़ काफ़िर कामियाब न होने को ख़ूब जानते थे वह दुश्मनी व ह़सद की वजह से पैरवी न करते थे, इसलिए उन के दिल में यक़ीन था कि हम नाजी नहीं हैं तो शेख़ी के मारे ऊपर से उस के ख़िलाफ़ करते, बस ह़ासिल यह हुआ कि जिन की गुमराही ऐसी है कि वह ख़ुद भी उस को दिल से तस्लीम करते हैं ऐसे गुमराहों से तअ़ल्लुक़ रखना ठीक नहीं?

और यह न समझा जाए कि जो गुमराह सख़्त दर्जे का न हो उस से दोस्ती जायज़ है, दोस्ती तो कुफ़्र की वजह से मना है। यहाँ यहूद को ख़ास इसलिए कहा गया है कि मदीना में यहूद ज़्यादह थे और दूसरे शरीर भी थे।

(भाग–61)

सूर–ए–सफ़्फ़

(सूरः नं. 61)

सूरः सफ़्फ़ का संक्षिप्त परिचय

नाम– आयत नं० (4) ....اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الَّذِیْنَ یُقَاتِلُوْنَ में साफ़्फ़ा आया, जिस की वजह से इसका नाम सूरः सफ़्फ़ है।

नाज़िल होने का ज़माना– मारवर्दी ने लिखा है कि यह सूरः तमाम लोगों के नज़्दीक मदनी है। इसकी दलील यह भी है कि मुसलमानों को इसमें जिहाद पर उभारा गया है और जिहाद मदनी दौर में लागू हुआ था।

आयत नं० 1 से 14 तक

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ
اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الَّذِیْنَ یُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِیْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْیَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰی
لِقَوْمِهٖ یٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِیْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَیْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْۤا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْفٰسِقِیْنَ ۝
وَاِذْ قَالَ عِیْسَی ابْنُ مَرْیَمَ یٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَیْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ یَّاْتِیْ مِنْۢ
بَعْدِی اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَیِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِیْنٌ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ یُدْعٰۤی اِلَی الْاِسْلَامِ ؕ
وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ۝ یُرِیْدُوْنَ لِیُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِیْۤ اَرْسَلَ
رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰی وَدِیْنِ الْحَقِّ لِیُظْهِرَهٗ عَلَی الدِّیْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰی تِجَارَةٍ
تُنْجِیْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِیْمٍ ۝ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ یَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَیُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَیِّبَةً فِیْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ۝ وَاُخْرٰی تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِیْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِیْنَ ۝ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا
قَالَ عِیْسَی ابْنُ مَرْیَمَ لِلْحَوَارِیّٖنَ مَنْ اَنْصَارِیْۤ اِلَی اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِیُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآىِٕفَةٌ مِّنْۢ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ
وَكَفَرَتْ طَّآىِٕفَةٌ ۚ فَاَیَّدْنَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا عَلٰی عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِیْنَ ۝

अनुवाद–

(1) अल्लाह की तस्बीह़ की हर उस चीज़ ने, जो आसमानों में है, और ज़मीन में है, 'वही' ज़बर्दस्त, ह़िकमत वाला है। (2) ऐ ईमान वालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं, (3) अल्लाह को यह बात सख़्त नापसंद है, कि ऐसी बात कहो जो करो नहीं। (4) बेशक अल्लाह उन से मुह़ब्बत करता है जो लोग अल्लाह की राह में क़तार बांध कर लड़ते हैं, मानो वे शीशा पिलाई हुई दीवार हैं। (5) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! तुम मुझे क्यों सताते हो, हालांकि तुम जानते हो, कि मैं तुम्हारी ओर भेजा हुआ अल्लाह का रसूल हूँ।'' फिर जब उन्होंने टेढ़ अपनाई, तो अल्लाह ने भी उनके दिल टेढ़े कर दिये, और अल्लाह नाफ़रमानों को सीधी राह नहीं दिखाता। (6) और जब मरयम के बेटे ईसा ने कहा, ''ऐ बनी

इस्राईल! मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का रसूल हूँ, जो मुझसे पहले आ चुकी है (अर्थात) तौरात, उसकी तस्दीक़ करने वाला हूँ और खुशख़बरी देने वाला हूँ एक रसूल की, जो मेरे बाद आएँगे, उनका नाम 'अह़मद' होगा।'' जब वह उन लोगों के पास स्पष्ट निशानियां लेकर आए तो उन्होंने कहा, ''यह तो खुला हुआ जादू है।'' (7) और उससे बड़ा ज़ालिम कौन होगा? जो अल्लाह पर झूठा आरोप लगाए, हालांकि उसको इस्लाम (अल्लाह के आगे समर्पण करने) की ओर बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को सीधी राह नहीं दिखाता। (8) यह चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह की फूंक से बुझा दें, मगर अल्लाह अपने नूर को पूरा करके रहेगा, और चाहे काफ़िरों को (कितना ही) नागवार (अप्रिय) हो। (9) 'वही' तो है जिसने अपने रसूल को सीधी राह, और दीने ह़क़ देकर भेजा, ताकि उसे और सब दीने ह़क़ पर ग़ालिब करे, चाहे मुश्रिकों को (कितना ही) नागवार हो। (10) ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारत बताऊँ, जो तुम्हें दुःख देने वाले अ़ज़ाब से बचा ले; (11) ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर, जिहाद करो अल्लाह की राह में, अपने माल और अपनी जान से, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। (12) 'वह' तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा, और तुम को ऐसे बाग़ों में- जिनके नीचे नहरें बहती हैं- और उन अच्छे घरों में भी जो सदा बहार बागों में हैं, दाख़िल करेगा, यही बड़ी कामियाबी है; (13) और दूसरी चीज़ भी जो तुम बहुत चाहते हो, अल्लाह की ओर से मदद और जल्द ह़ासिल होने वाली विजय, और मोमिनों को खुशख़बरी दे दो। (14) ऐ ईमान वालो! अल्लाह के मददगार बनो, जैसा कि मरयम के बेटे ईसा ने ह़वारियों (साथियों) से कहा था, ''कौन हैं जो अल्लाह की राह में मेरे मदद्गार हों?'' ह़वारियों ने जवाब दिया, ''हम हैं, अल्लाह के मदद्गार,'' तो बनी इस्राईल का एक गिरोह तो ईमान ले आया और दूसरे गिरोह ने इन्कार किया, तो 'हमने' ईमान लाने वालों की, उनके दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद की, और वे ग़ालिब (प्रभावी) हो गये।

आयत नं० 1 से 14 तक की व्याख्या

1-4

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا
تَفْعَلُوْنَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ
سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝

जो काम नहीं करते उस का दावा क्यों करते हो?

'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम' (रज़ि०) से रिवायत है कि हम चन्द सह़ाबा बैठे हुए थे, आपस में हम ने (अच्छे) आ़माल का ज़िक्र किया और हम ने कहा कि अगर हमें पता चल जाता कि कौन सा अ़मल अल्लाह को सब से ज़्यादह मह़बूब है तो हम उस अ़मल को अख़्तियार कर लेते, इस पर अल्लाह तआ़ला ने سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ नाज़िल फ़रमाई।

(सुनन अलू तिर्मिज़ी अबवाब अलू तफ़्सीर सूरः सफ़्फ़)

'मुआ़लिमुलू तन्ज़ील' में लिखा है कि जब सह़ाबा ने कहा कि अगर हमें मालूम हो जाता कि अल्लाह

तआ़ला को सब से ज़्यादह मह़बूब अ़मल क्या है तो हम उस अ़मल को अख़्तियार कर लेते और हम अपनी जान व माल लगा देते। इस पर अल्लाह तआ़ला ने आयते करीमा إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ नाज़िल फ़रमाई।

फिर क़रीब ही ग़ज़्व-ए-उ़हद का वाक़िआ पेश आ गया, जब उस में इम्तिहान हुआ तो भाग खड़े हुए। इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई-

لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ

अनुवाद- 'कि तुम वह बात क्यों कहते हो जिसे नहीं करते'।

बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि जब शुहदा-ए-बद्र का सवाब सुना तो सह़ाबा ने कहा कि अगर आइन्दा हम किसी जिहाद के मौक़े पर ह़ाज़िर हुए तो पूरी क़ुव्वत के साथ जंग करेंगे, फिर अगले साल जब ग़ज़्व-ए-उ़हद का मौक़ा आया तो भाग खड़े हुए लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला ने यह फ़रमाया कि वह बात क्यों कहते हो जिसे करते नहीं हो।

'रुहुल मआनी' में इब्ने ज़ैद से नक़्ल किया गया है कि यह आयत मुनाफ़िक़ीन के बारे में नाज़िल हुई, ख़ुद वह मुसलमानों से झूठे वादे किया करते थे कि हम मदद करेंगे, फिर साथ नहीं देते थे।

'मुफ़स्सिर क़ुर्तुबी' ने एक और भी क़िस्सा लिखा है वह यह कि एक शख़्स मुसलमानों को बहुत तक्लीफ़ें देता था। ह़ज़रत सुहैब (रज़ि०) ने उसे क़त्ल कर दिया। क़त्ल तो किया सुहैब (रज़ि०) ने, लेकिन एक आदमी ने इस अ़मल को अपनी तरफ़ मन्सूब कर लिया और ख़िद्मते आ़ली में जाकर अ़र्ज़ किया कि फ़लाँ शख़्स को मैंने क़त्ल किया है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) को उस के क़त्ल की ख़बर से ख़ुशी हुई, उस के बाद 'ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब' और 'ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़' रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने 'ह़ज़रत सुहैब' (रज़ि०) को तवज्जोह दिलाई कि तुम ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह ख़बर क्यों न दी कि मैंने क़त्ल किया है, दूसरे शख़्स ने उसे अपनी तरफ़ मन्सूब कर लिया (और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ग़लत ख़बर दे दी।) इस पर ह़ज़रत सुहैब (रज़ि०) ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को सह़ी सूरते ह़ाल बता दी। इस पर आयते करीमा لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ नाज़िल हुई, जिस में ग़लत ख़बर देने वाले आदमी को तम्बीह फ़रमा दी।

आयते करीमा का सबबे नुज़ूल अगर वह सब उमूर हों जिन का ऊपर ज़िक्र किया गया है तो इस में कोई ह़र्ज नहीं है। आयत में मुसलमानों को जो आ़म सम्बोधन फ़रमाया है सब को उस में ग़ौर करना चाहिए। हर मुसलमान ईमान के तक़ाज़े पूरे करे, अल्लाह तआ़ला से जो वादे किये हैं उन को पूरा करे, जो नज़र करे उसे पूरी करे, जिस किसी से जो वादा करे उसे भी पूरा करे। (बशर्ते कि गुनाह का वादा न किया हो, गुनाह का वादा करना भी गुनाह है और उसे पूरा करना भी गुनाह है।)

जो काम ख़ुद न किया हो उसे अपनी तरफ़ न जोड़ा करे, लोगों के सामने दीनी बातें बयान करे और अम्र व नहि वाली आयात और अह़ादीस पढ़कर सुनाए और उस पर ख़ुद भी अ़मल करे।

لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ के साथ यह भी फ़रमाया कि كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ (अल्लाह के

नज़्दीक यह नाराज़गी की बात है कि तुम वह कहो जो न करो।) अल्लाह तआला की नाराज़गी से बचने की हर शख़्स कोशिश करे और अपने क़ौल और अ़मल में समानता रखे।

क़ौल व अ़मल में समानता नहीं

आयत का मतलब यह नहीं है कि अगर अ़मल नहीं करते तो दीनी बातें भी न कहे, बल्कि मतलब यह है कि ख़ैर की बातें भी करे और उन पर अ़मल भी करे। यह बात इसलिए स्पष्ट की गई है कि बहुत से वह लोग जो बेअ़मल हैं 'अम्र बिल् मअ़रूफ़' और 'नहि अनिल् मुन्कर' नहीं करते और यूँ कहते हैं कि जब हम अ़मल नहीं करते तो हम तब्लीग़ कर के गुनाहगार क्यों बनें यानी कि सूरः सफ़्फ़ की मुख़ालिफ़त क्यों करें। यह उन लोगों की जिहालत है और नफ़्स की शरारत है।

क़ुर्आन करीम ने यह तो नहीं फ़रमाया कि न हक़ कहो, न अ़मल करो। क़ुर्आन करीम का मतलब तो यह है कि दोनों अ़मल करो। यह भी समझना चाहिए कि अह़कामे शरअ़िया पर चलने का मुस्तक़िल हुक्म है और हक़ बात कहने और 'अम्र बिल् मअ़रूफ़ व नहि अनिलुमुन्कर' करने का मुस्तक़िल हुक्म है।

एक हुक्म छूटा हो तो दूसरे हुक्म को छोड़कर गुनाहगार क्यों हों, जिस-जिस मौक़े पर 'अम्र बिलुमअ़रूफ़ व नहि अनिल् मुन्कर' का फ़रमान अन्जाम देने का हुक्म है उसे पूरा करें, दोनों हुक्मों को छोड़कर दोहरे गुनाहगार क्यों हों।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद हैः-

كلكم راعٍ كلكم مسئول عن رعيته

कि तुम में से हर एक निगरा है और तुम में से हर एक के बारे में सवाल होगा जिन की निगरानी सुर्पद की गई है। **(बुख़ारी भाग 2 पेज नं० 783)**

और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमायाः-

من راى منكم منكراً فليغيره بيده فان لم يستطع فبلسانه فان لم يستطع فبقلبه وذلك اضعف الايمان.

(तुम में से जो शख़्स मुन्किर यानी ख़िलाफ़े शरअ़ काम देखे तो उसे चाहिए कि हाथ से बदल दे, सो अगर हाथ से बदलने की ताक़त न हो तो ज़बान से बदल दे, सो अगर ज़बान से बदलने की ताक़त न हो तो दिल से बदल दे यानी दिल से ख़िलाफ़े शरअ़ काम को बुरा समझे और यह ईमान का कमज़ोर तरीन दर्जा है। **(रवाहु मुस्लिम भाग 1 पेज नं० 51)**

इस ह़दीस में हर शख़्स को बुराई से रोकने का ज़िम्मेदार क़रार दिया है अर्थात यह है कि तब्लीग़ भी करो और अ़मल भी करो। आयत का यह मतलब नहीं है कि न अ़मल करो न तब्लीग़ करो।

मुजाहिदीन-ए-इस्लाम की तअ़रीफ़-

फिर जिहाद करने वालों की तअ़रीफ़ फ़रमाई إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُم بُنْيَانٌ مَّرْصُوصٌ (बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला लोगों से मुह़ब्बत फ़रमाता है जो उस की राह में सफ़ बनाकर क़त्ल करते

हैं अर्थात सब मिलकर एक इमारत हैं जिस में सीसा पिघलाया गया हो, इस से जिहाद करने और जमकर लड़ने की फ़ज़ीलत मालूम हुई। (बाज़ मर्तबः सफ़ से निकलने की भी ज़रूरत होती है, जबकि दुश्मन के लोग هَلْ مِنْ مُبَارِزٍ कहकर मुसलमानों को मुक़ाबिले की दअ़वत दें, यह भी कभी कभार और थोड़ी देर के लिए होता है। अस्ल जंग वही है जिस में सफ़ (पंक्ति) बनाकर डट कर लड़ा जाए।

5-6 وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُونَنِي وَقَد تَّعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُمْ ۖ فَلَمَّا زَاغُوٓا۟ أَزَاغَ ٱللَّهُ قُلُوبَهُمْ ۚ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَٰسِقِينَ ۝ وَإِذْ قَالَ عِيسَى ٱبْنُ مَرْيَمَ يَٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ إِنِّى رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُم مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَىَّ مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُولٍ يَأْتِى مِنۢ بَعْدِى ٱسْمُهُۥٓ أَحْمَدُ ۖ فَلَمَّا جَآءَهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ قَالُوا۟ هَٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝

हज़रत मूसा व ईसा (अ़लै०) का एलान

पहली आयत में हज़रत मूसा (अ़लै०) की इस बात का ज़िक्र है कि उन्होंने अपनी क़ौम से फ़रमाया, “तुम मुझे क्यों तक्लीफ़ देते हो हालांकि तुम जानते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ” अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का एहतिराम होना चाहिए और तक्लीफ़ देना इस के बिल्कुल ख़िलाफ़ है।

बनी इस्राईल ने हज़रत मूसा को तरह-तरह से तक्लीफ़ें दी, जिस का ज़िक्र सूरः बक़रः में गुज़र चुका है और सूरः अहज़ाब के आख़िर रुकूअ़ में भी इस का ज़िक्र है। उन को समझाया और बताया कि अल्लाह तआ़ला के भेजे हुए रसूल की इताअ़त (Follow) करो, तक्लीफ़ मत दो, लेकिन बात मानने और हक़ क़ुबूल करने को तैयार न हुए। इसी को फ़रमायाः-

فَلَمَّا زَاغُوٓا۟ أَزَاغَ ٱللَّهُ قُلُوبَهُمْ ۚ

(फिर जब वह हक़ से हट गए तो अल्लाह तआ़ला ने उन के दिलों को हक़ से हटा दिया।)

गुमराहों का यही तरीक़ा है कि वह हक़ को क़ुबूल नहीं करते, हक़ पहचानने और बार-बार समझाने के बावजूद हक़ पर नहीं आते। जब बातिल पर ही जमे रहते हैं तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उन की इस ज़िद, हठधर्मी और मुख़ालिफ़त की वजह से महरूम कर दिये जाते हैं, फिर उन्हें हक़ क़ुबूल करने की तौफ़ीक़ नहीं होती, लिहाज़ा बराबर नाफ़रमानी को ही अख़्तियार करते चले जाते हैं और फ़रमाँबरदारी को अख़्तियार नहीं करते और अपने दिलों में हिदायत को जगह देने के लिए कोई तैयार नहीं होते।

आयत के ख़त्म पर फ़रमाया وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَٰسِقِينَ कि अल्लाह तआ़ला ऐसे नाफ़रमानों को हिदायत नहीं देता।

राहे हक़ दिखाने के बाद उन्हें क़ुबूले हक़ की तौफ़ीक़ नहीं दी जाती। दूसरी आयत में हज़रत ईसा (अ़लै०) का ज़िक्र है, उन्होंने ‘बनी इस्राईल’ से फ़रमाया कि यक़ीन जानो मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ तुम्हारे पास जो पहले से किताब यानी तौरेत है उस की तस्दीक़ करता हूँ और मेरे बाद जो रसूल आएगा उन के आने की ख़ुशख़बरी देता हूँ उन का नाम ‘अहमद’ होगा।

हज़रत ईसा (अ़लै०) ने बनी इस्राईल से बहुत सी बातें कहीं, उन्हें तौहीद का सबक़ दिया, शरई अह्काम सिखाए लेकिन उन में से कुछ ही लोगों ने बात मानी जिन्हें 'हवारी' कहा जाता है। अक्सर 'बनी इस्राईल' उन के दुश्मन हो गए और उन के क़त्ल के दरपे हो गए, क़त्ल तो न कर सके क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ऊपर उठा लिया जैसा कि सूरः निसा के रुकूअ़ नम्बर (2) में बयान फ़रमाया है, लेकिन बाद में कुछ यहूदियों के वरग़लाने और बहकाने से हज़रत ईसा (अ़लै०) के बारे में अल्लाह तआ़ला का बेटा होने का अ़क़ीदा बना लिया जैसा कि 'सूरः अल् माइदा' और 'सूरः तौबः' में बयान हो चुका है, यह लोग आज तक इसी पर जमे हुए हैं।

नसारा हज़रत ईसा के मुख़ालिफ़ हैं-

ऊपर जो हज़रत ईसा (अ़लै०) का कलाम नक़्ल किया है उस में एक बात तो यह है कि मैं 'बनी इस्राईल' की तरफ़ भेजा गया हूँ उन की यह बात इन्जील में भी लिखी है, जैसे नस्रानी पढ़ते पढ़ाते और फैलाते हैं। तब्दीली के बावजूद अब तक इस में यह मौजूद है कि ग़ैर क़ौमों की तरफ़ न जाना और सामरियों के किसी शहर में न जाना, बल्कि इस्राईल की खोई हुई भेड़ियों की तरफ़ चले जाना।

(इन्जील मता बाब 10)

यह भी फ़रमाया कि मैं बनी इस्राईल की खोई हुई भेड़ियों के सिवा और किसी के पास नहीं भेजा गया। **(इन्जील मता बाब 15)**

'अह्मद' नामी रसूल की ख़ुशख़बरी

दूसरी बात जो हज़रत ईसा (अ़लै०) ने इर्शाद फ़रमाई वह यह है कि एक ऐसे रसूल की बशारत दे रहा हूँ जो मेरे बाद आएँगे उन का नाम 'अह्मद' होगा। इस में उन्होंने अपने बाद आख़िरी रसूल के तशरीफ़ आवरी की बशारत (ख़ुशख़बरी) दी। ख़ातिमुन्नबीय्यीन मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बहुत से नाम हैं। आप ने फ़रमाया कि मैं 'मुहम्मद' हूँ और 'अह्मद' हूँ और 'माही' हूँ मेरे ज़रिये अल्लाह तआ़ला कुफ़्र को मिटाएगा और 'हाशिर' हूँ । अल्लाह तआ़ला मुझे क़ब्र से निकलने के बाद और लोगों को क़ब्रों से निकालेगा और मैं आ़क़िब भी हूँ मेरे बाद कोई नबी नहीं। **(रवाहु मुस्लिम भाग 2 पेज नं० 361)**

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं 'ईसा बिन मरयम' से क़रीबतर हूँ दुनिया में भी आख़िरत में भी, तमाम अम्बिया-ए-किराम आपस में ऐसे हैं जैसे बाप शरीक भाई हों और माएँ मुख़्तलिफ़ हों उन सब का दीन एक ही है (यानी तौहीद और रिसालत और क़ियामत पर ईमान लाना) आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हमारे और 'ईसा बिन मरयम' के दर्मियान कोई नबी नहीं है। **(रवाहु मुस्लिम भाग 2 पेज नं० 265)**

हज़रत ईसा (अ़लै०) ने जो सय्यदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) के आने की बशारत (ख़ुशख़बरी) दी थी वह उन के मानने वाले राहिबों (सन्यासी) से मशहूर थी। हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि०) को मुतअ़द्दिद राहिबों (धर्म गुरुओं) में से आख़िरी राहिब ने नबी अक्रम (सल्ल०) के तशरीफ़ आवरी की

बशारत दी थी, जो उन के दर्मियान आपस में एक के बाद दूसरे होते चले आए। इसीलिए वह मदीना मुनव्वरह में आकर बस गए थे और उस राहिब ने सरवरे आलम (सल्ल०) की जो निशानियाँ बताई थीं, उन निशानियों को देखकर मुसलमान हो गए थे। जो सूरः अअ़राफ़ की तफ़्सीर मे गुज़र चुकी है।

तौरेत व इन्जील में बशारत

नुज़ूले क़ुर्आन के वक़्त भी यहूद व नसारा तौरेत व इन्जील में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के आने की ख़बर पाते थे, जिसे सूरः अअ़राफ़ (**आयत नं० 157**) की आयते करीमा में बयान फ़रमाया हैः-

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ

मौजूदा इन्जीलों में (जिन में नस्रानी बहुत कुछ अदल बदल कर चुके हैं) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के आने की पेशगोईंयाँ (भविष्यवाणी) मौजूद हैं। जिसे ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) ने अपने बाद एक रसूल के आने की बशारत दी थी उस की तस्दीक़ के लिए किसी ह़वाले की ज़रूरत नहीं है, क़ुर्आन का फ़रमान ही काफ़ी है। इस तरह़ नस्रानियों पर ख़ुद उन्हीं की किताब से हुज्जत क़ायम करने के लिए 'इन्जील यूह़न्ना' की यह इ़बारत पढ़ लेना ज़रूरी है कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) ने फ़रमायाः-

"अगर तुम मुझ से मुह़ब्बत रखते हो तो मेरे हुक्मों पर अ़मल करोगे और मैं बाप से दरख़्वास्त करुँगा कि वह तुम्हें दूसरा मदद्गार बख़्शेगा कि आख़िर तक तुम्हारे साथ रहे"। (**इन्जील, यूहन्ना 14: 15, 16**)

फ़ारक्लीत-

तीन जगहों में जो शब्द 'मदद्गार' आया है यह लफ़्ज़ "फ़ारक्लीत" का अनुवाद है, जो इन्जीलों के पुराने एडीशनों में पाया जाता है। इस शब्द का अनुवाद 'अह़मद' के अर्थ से क़रीबतर है।

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) इ़बरानी ज़बान बोलते थे, आप के फ़रमान को यूनानी में अनुवाद किया गया, शब्दों में बदलाव आ गया, लेकिन मफ़हूम बाक़ी रहा। जब नसारा ने देखा कि इन शब्दों से हम पर हुज्जत क़ायम होती है तो उन्होंने फ़ारक़्लीत का लफ़्ज़ छोड़कर उस की जगह 'मदद्गार' का अनुवाद कर दिया। अस्ल लफ़्ज़ 'पीरकिलोतोस' था, जिस का अर्थ 'मुह़म्मद' और 'अह़मद' के क़रीब है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के बारे में ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) ने एक पेशीनगोई दूसरे शब्दों में दी है, जो इन्जील यूह़न्ना के 'सोलहवें बाब' में है और वह यह हैः-

"लेकिन जब वह यानी रुह़ ह़क़ आएगा तो तुम को तमाम सच्चाई की राह दिखाएगा इसलिए कि वह अपनी तरफ़ से न कहेगा, लेकिन जो कुछ सुनेगा वही कहेगा और तुम्हें आइन्दा की ख़बरें देगा"।

यह पेशनगोई पूरी तरह़ सय्यदना मुह़म्मद (सल्ल०) पर सादिक़ आती है।

'यहूद व नसारा' अपनी किताबों की तह़रीफ़ में महारत रखते ही हैं, उन्होंने शब्द पीरकिलोतोस का अनुवाद कभी 'मदद्गार' और कभी शाफ़ेअ़ (सिफ़ारिशी) कर दिया, लेकिन उन के बदलाव से उन को कुफ़्र पर जमे रहने के बारे में कुछ फ़ायदा न पहुँचा, क्योंकि सय्यदना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) 'अह़मद'

भी थे और मुहम्मद भी थे और अपने सिफ़ात के एतिबार से मददगार भी थे और क़ियामत के दिन अहले ईमान के शाफ़ेअ़ होंगे, फिर नसारा से यह भी सवाल है कि अगर सय्यदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) हज़रत ईसा (अ़लै०) की बशारत के हक़्दार नहीं हैं, तो कौन शख़्स है जिस की उन्होंने बशारत दी थी।

अगर कट हुज्जती के तौर पर किसी शख़्सियत का नाम झूठ-मूठ पेश कर दें तो उन से यह सवाल है कि अगर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बेअ़सत से पहले उस बशारत का हक़्दार हो चुका था तो यहूद व नसारा नबी आख़िरुज़्ज़माँ की बेअ़सत के क्यों इन्तिज़ार में थे और जब आप की बेअ़सत हो गई तो नसूरानी बादशाहों और धर्मगुरुओं ने इसी बशारत के मुताबिक़ जो उनके यहाँ चली आ रही थी आप को क्यों अल्लाह का रसूल तस्लीम (Accept) किया।

शाह रोम हिरक़्ल और मुल्क हब्शा का क़िस्सा मशहूर ही है और सलूमान फ़ारसी (रज़ि०) को एक राहिब (धर्मगुरु) ने कहा था, अब नबी आख़िरुज़्ज़माँ का इन्तिज़ार करो। 'नजरान' उन के नसारा आए वह भी क़ायल होकर चले गए और यह भी सब पर स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तशरीफ़ आवरी के बाद 'यहूद व नसारा' को भी हज़रत ईसा (अ़लै०) की बशारत के मिस्दाक़ के लिए किसी शख़्स की न तलाश है और न इन्तिज़ार है।

झूठे नबी बनने का दावा

हज़रत ईसा (अ़लै०) ने अपने बाद जिस नबी के आने की ख़बर दी थी उस का नाम 'अहमद' बताया और उस रसूल की बेअ़सत हो गई, जिस के बारे में क़ुर्आन करीम ने बता दिया कि वह ख़ातिमुन्नबीय्यीन (अन्तिम महाईशदूत) है और ख़ुद साहिबे रिसालत (सल्ल०) ने भी फ़रमा दियाः-

"اَناخاتم النبيين لا نبی بعدی"

लेकिन कुछ झूठे नुबूव्वत का दावा करने वालों ने आयते शरीफ़ा का मिस्दाक़ अपने आप को बना दिया और आयत में फेरबदल कर दिया और सूरः अहज़ाब की आयत में जो मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) को 'ख़ातिमुन्नबीय्यीन' फ़रमाया, उस फेरबदल से भी काफ़िर हुआ और सूरः सफ़्फ़ में जो अहमद की बशारत दी, अपनी ज़ात को उस का हक़्दार क़रार देकर भी काफ़िर बन गया।

ख़ुद सूरः सफ़्फ़ की आयत में आगे मौजूद हैः-

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ जब वह रसूल आ गया जिस की हज़रत ईसा (अ़लै०) ने बशारत दी थी तो उन लोगों ने कहा कि यह खुला हुआ जादू है। इस में جَآءَ माज़ी (Past) का सीग़ा इस्तेमाल फ़रमाया है।

इस से मालूम हुआ कि जब आयते करीमा नाज़िल हुई थी उस वक़्त उस रसूल की बेअ़सत हो चुकी थी और लोगों ने कहा था कि यह खुला हुआ जादू है। दुनिया जानती है कि जिस किसी ने भी 'अहमद' ख़ातिमुन्नबीय्यीन रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बाद नुबूव्वत का दावा किया, ऐसे लोगों को झूठा ही कहा गया और उन के बारे में दूसरी बातें भी कही गईं लेकिन जादूगर नहीं कहा गया।

जो शख़्स मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बाद अपने आप को नबी बताता है और अपने को सूरः सफ़्फ़ का मिस्दाक़ बताता है उस का झूठा होना आयते करीमा के अल्फ़ाज़ فَلَمَّا جَاءَهُم بِالْبَيِّنَاتِ से ज़ाहिर है।

7-9 وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَىٰ إِلَى الْإِسْلَامِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝
يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ ۚ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ
رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝

अल्लाह का नूर पूरा होकर रहेगा

यह तीन आयात का अनुवाद है। पहली आयत में इर्शाद फ़रमाया कि जो कोई शख़्स अल्लाह पर झूठ बांधे हालांकि उसे इस्लाम की दअ़वत दी जा रही हो, उस से बढ़कर कोई ज़ालिम नहीं हो सकता और अल्लाह तआ़ला ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देता।

दूसरी आयत में यह फ़रमाया कि जिन्हें इस्लाम क़ुबूल करना नहीं है यह चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह के फूंकों से बुझा दें, उन के इरादों से कुछ न होगा इस्लाम बढ़-चढ़ कर रहेगा। अल्लाह तआ़ला अपने नूर को पूरा फ़रमा देगा काफ़िरों को बुरा लगे लगता रहे, उन्हें इस्लाम की तरक़्क़ी और उस का उ़रुज गवारा नहीं, उन की इस नागवारी का इस्लाम की रफ़अ़त और बुलन्दी पर कुछ असर नहीं पड़ेगा।

जब से दुनिया में इस्लाम आया है, दुश्मनाने इस्लाम ने उस की रौशनी को बुझाने और उस की तरक़्क़ी को रोकने के लिए कभी भी कोई कसर उठा कर नहीं रखी और आज भी काफ़िर इस्लाम और मुसलमान के मिटाने की कोशिशों में लगे हुए हैं, लेकिन 'अल्हम्दुलिल्लाह' इस्लाम बढ़ रहा है, ख़ुद दुश्मनों के मुल्कों में इस्लाम फैल रहा है और उन के लोग बराबर मुसलमान हो रहे हैं, अपनी आँखों से इस्लाम का फैलाव देख रहे हैं और इस्लाम को रोकने के लिए करोड़ो डालर ख़र्च कर रहे हैं, मगर इस्लाम बढ़ता चढ़ता चला जा रहा है।

मुफ़स्सिर 'क़ुर्तुबी' ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से इस आयत का 'सबब नुज़ूल' नक़्ल करते हुए लिखा है कि एक मर्तबः चालीस दिन तक वह़्य नहीं आई, इस पर 'कअ़ब बिन अशरफ़' यहूदी ने कहा कि ऐ यहूदियों! ख़ुश हो जाओ, अल्लाह ने मुह़म्मद का नूर बुझा दिया और अन्दाज़ा यह है कि उन का यह दीन पूरा न होगा। इस पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को रंज हुआ, अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई, उस के बाद वह़्य का सिलसिला जारी हो गया।

मुफ़स्सिर 'क़ुर्तुबी' ने इस बारे में पाँच क़ौल नक़्ल किये हैं कि 'नूर' का मतलब है।

1- क़ुर्आन
2- दीने इस्लाम
3- मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०)

4- अल्लाह तआ़ला के दलायल

5- जिस तरह़ कोई शख़्स अपने मुँह से सूरज के नूर को बुझाना चाहे तो नहीं बुझा सकता उसी तरह़ अल्लाह तआ़ला के भेजे हुए दीन को ख़त्म करने और उस के फैलाव को रोकने वाले और उस का इरादा करने वाले अपने मक़्सद में कामियाब नहीं हो सकते।

तीसरी आयत में इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को हिदायत और दीने ह़क़ के साथ भेजा, ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे। अल्लाह तआ़ला ने जो इरादा फ़रमाया है उस के मुताबिक़ होकर रहेगा। मुश्रिकीन जो उस के लिए रुकावट बने हुए हैं और चाहते हैं कि इस्लाम न फैले उन की नगवारी के बावजूद इस्लाम फैल कर रहेगा।

विस्तार के लिए सूरः तौबः रुकूअ़ नम्बर-3 की तफ़्सीर देखी जाए।

10-13 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُنجِيكُم مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ
ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ۚ ذَٰلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَأُخْرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۖ نَصْرٌ مِّنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

अ़ज़ाबे अलीम से निजात का ज़रिया

इन आयात में अहले ईमान को आख़िरत की तिजारत की तरफ़ तवज्जोह दिलाई है। दुनिया में खाने, पीने, पहनने और दूसरी ज़रुरियात के लिए माल कमाने की ज़रूरत होती है जिसे बहुत से लोग तिजारत के ज़रिये ह़ासिल करते हैं, उस में बहुत से लोग बहुत ज़्यादह लग जाते हैं, मौत और मौत के बाद के ह़ालात और आख़िरत के अज्र व सवाब में ध्यान ही नहीं देते, ज़्यादह माल की तलब में ऐसे लगते हैं कि आख़िरत में काम देने वाले आ़माल को भूल ही जाते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत न बताऊँ जो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से निजात दे दे। तिजारत में दोनों चीज़ें देखी जाती हैं अव्वल यह कि नफ़ा हो, दूसरे यह नुक़्सान न हो और दूसरी चीज़ का ज़्यादह ख़याल रखा जाता है, लिहाज़ा अ़ज़ाब से निजात देने को पहले बयान फ़रमाया बाद में जन्नत के दाख़िले की बशारत दी।

दोनों चीज़ों में कामियाब होने का यह रास्ता है कि अल्लाह तआ़ला पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों से जिहाद करो, यह अ़मल तुम्हारे लिए बेहतर है। जब यह अ़मल करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह भी बख़्श देगा (जो अ़ज़ाब का सबब हैं) और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल फ़रमाएगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी और उ़म्दह-उ़म्दह अच्छे रहने के घरों में रहना नसीब होगा जो जन्नतों में होंगे यानी वह जन्नतें ऐसी होंगी जहाँ रहना ही रहना होगा, वहाँ से कभी निकलना न होगा और वहाँ से निकलना भी न चाहेंगे।

इसी को सूरः कहफ़ (**आयत नं० 108**) में फ़रमाया لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا और सूरः फ़ातिर (**आयत नं० 34,35**) में अहले जन्नत का क़ौल नक़्ल फ़रमाया إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ۝ الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِن فَضْلِهِ (बेशक हमारा परवरदिग़ार गफ़ूर है शकूर है जिस ने अपने फ़ज़्ल से हमें रहने की जगह में नाज़िल फ़रमाया।)

इससे मालूम हो गया कि ईमान और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह अ़ज़ाबे अलीम से बचाने का भी ज़रिया हैं और जन्नत दिलाने का भी, दुनिया की तिजारत इस के सामने कोई भी हैसियत नहीं रखती, वह फ़ना होने वाली चीज़ है और गुनाहों के ज़रिये जो दुनिया हासिल की जाए वह तो आख़िरत में वबाल भी और अ़ज़ाब भी, लिहाज़ा मोमिन बन्दे आख़िरत की तिजारत में लगें वहाँ की कामियाबी से बढ़कर कोई कामियाबी नहीं है। इसी को फ़रमायाः-

ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ मुफ़स्सिर 'कुर्तुबी' ने लिखा है कि हज़रत 'उ़स्मान बिन मज़ऊन' ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अगर मुझे यह मालूम हो जाता कि अल्लाह तआ़ला को सब से ज़्यादह कौन सी तिजारत महबूब है तो मैं वह तिजारत अख़्तियार कर लेता।

इस पर ऊपर की आयत يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ नाज़िल हुई। सूरः तौबः (**आयत नं० 111**) में इसी तिजारत को فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُم بِهِ और सूरः फ़ातिर (**आयत नं० 29**) में يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّن تَبُورَ ۝ फ़रमाया है।

وَأُخْرَىٰ تُحِبُّونَهَا (और तुम्हारे लिए एक नफ़ा की चीज़ और भी है यानी अल्लाह की मदद और ज़माना क़रीब में हासिल होने वाली फ़तेह) इस में यह बता दिया कि जो मोमिन और मुजाहिद हों उन की तिजारत का नफ़ा सिर्फ़ आख़िरत ही नहीं, बल्कि दुनिया में भी उस के फ़ायदे मिलेंगे जिन्हें तुम पसन्द करते हो। इस में से एक तो यह है कि अल्लाह तआ़ला की मदद हासिल होगी और दूसरे यह कि जल्द ही फ़तेह नसीब होगी।

'हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास' रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया है कि इस से 'फ़ारस' और 'रोम' का फ़तेह होना मुराद है और बाज़ उ़लमा ने फ़रमाया है कि फ़तेह मक्का मुराद है।

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ (और मोमिनीन को ख़ुशख़बरी दे दो) इस में दुनिया व आख़िरत की कामियाबी हासिल होने पर ख़ुशख़बरी दी गई है।

14 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ ۖ فَآمَنَت طَّائِفَةٌ مِّن بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَت طَّائِفَةٌ ۖ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ۝

अल्लाह के अन्सार व मददग़ार

शुरु सूरः में जिहाद करने का ज़िक्र था, फिर दर्मियान सूरः में भी इस की फ़ज़ीलत सुनाई। अब यहाँ सूरः के ख़त्म पर भी दीने इस्लाम की बुलन्दी के लिए नुस्रत करने का हुक्म फ़रमाया। अहले ईमान

के लिए ऐसे अह़वाल सामने आते रहते हैं कि हिज्रत, मदद और जिहाद की ज़रूरत पड़ती है। इन तीन चीज़ों पर अ़मल करने से दीने इस्लाम की तरक़्क़ी होती है और उस की दअ़वत आगे बढ़ती रही है। अल्लाह तआ़ला तो बेनियाज़ है, उसे किसी के मदद की ज़रूरत नहीं लेकिन जो लोग उस के दीन को बुलन्द करने की मेहनत करें, उन्हें केवल अपने फ़ज़्ल से मुबारक लफ़्ज़ 'अन्सारुल्लाह' से याद फ़रमाया।

केवल ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की बेअ़सत के बाद मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बेअ़सत हुई, उन का ज़माना दूसरे अम्बिया किराम (अ़लै०) के क़रीब था और उन की दअ़वत व तब्लीग़ के बारे में नुज़ूले क़ुर्आन के वक़्त जो लोग मौजूद थे उन्हें कुछ न कुछ ह़ाल मालूम था और वह जानते थे कि वह बनी इस्राईल की तरफ़ मब्ऊ़स हुए थे। अक्सर बनी इस्राईल ने उन की नुबूव्वत का इन्कार किया थोड़े से आदमियों ने (जिन्हें ह़वारी कहा जाता था) ईमान क़ुबूल किया और आप का साथ दिया और आप का पैग़ाम लेकर मुख़्तलिफ़ दिशाओं में फैल गए।

अल्लाह तआ़ला ने उस वक़्त के ईमान वालों से ख़िताब (सम्बोधित) फ़रमाया कि ऐ ईमान वालों! तुम अल्लाह के मददगार हो जाओ यानी उस के दीन की ख़िद्मत करो जैसा कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) ने अपने ह़वारीन से फ़रमाया था कि कौन लोग हैं जो अल्लाह की तरफ़ यानी अल्लाह के दीन की दअ़वत में लगने की तरफ़ मेरा साथ देते हैं? ह़वारियों ने जवाब में कहा था कि हम 'अन्सारुल्लाह' हैं, दअ़वत व तब्लीग़ के काम में आप की मदद करेंगे।

मुफ़स्सिर 'इब्ने कसीर' लिखते हैं कि जब 'ह़वारीन' ने यह कहा तो ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) ने उन्हें शाम (सीरिया) में दाई़ बनाकर भेज दिया।

ह़वारी कौन थे और यह नाम कैसे पड़ा, इस के बारे में सूरः आले इमरान में लिखा जा चुका है।

'बनी इस्राईल' में से एक जमाअ़त ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) पर ईमान लाई (यह थोड़े से लोग थे) और एक जमाअ़त ने कुफ़्र अख़्तियार किया।

जिसे इस आयत فَآمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ में बयान फ़रमाया है।

तीन गिरोह-

मुआ़लिमुत् तन्ज़ील में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) का क़ौल नक़्ल किया है कि जब ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) को अल्लाह तआ़ला ने आसमान पर उठा लिया तो लोगों में इख़्तिलाफ़ हो गया, एक जमाअ़त (समूह) ने कहा कि ईसा 'ऐ़नुल्लाह' (अर्थात अल्लाह ही) थे, वह ख़ुद से ऊपर चले गए।

और एक गिरोह ने कहा कि वह अल्लाह के बेटे थे अल्लाह ने उन्हें उठा लिया।

और तीसरे गिरोह ने कहा कि वह अल्लाह के बन्दे और रसूल थे, अल्लाह ने उन को ऊपर उठा लिया।

यह तीन फ़िर्क़े (समूह) थे और हर समूह के मानने वाले लोग थे, जंग हुई तो दोनों काफ़िर समूह मोमिनीन पर हावी हो गए। फिर जब अल्लाह तआ़ला ने मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मब्ऊ़स (भेजा

हुआ) फ़रमाया तो ईमान वाली जमाअ़त कुफ़्र वाली जमाअ़त पर प्रभावी हो गई उस को فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ में बयान फ़रमाया है।

क़ुर्आन मजीद में ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के बारे में जो कुछ फ़रमाया है वही ह़क़ है। ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के मानने वाले जो अहले ईमान थे, अल्लाह तआ़ला ने उन की ताईद (समर्थन) फ़रमाई और वह लोग दलील से ग़ालिब आ गए और यह बात क़ुर्आन से सही साबित हो गई कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) 'कलिमतुल्लाह' और 'रुहुल्लाह' थे। **(मुआ़लिमुल तन्ज़ील भाग 4 पेज नं० 349)**

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के आसमान से उठाए जाने के बाद उन के मानने वालों का कुफ़्र अख़्तियार करने वाले फ़िर्क़ों पर ग़ालिब आने का चूंकि तारीख़ में कोई वाक़िआ़ लिखा नहीं है इसलिए 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' (रज़ि०) فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ का यह मतलब बताया है कि अहले ईमान अहले कुफ़्र पर दलील और हुज्जत से ग़ालिब हो गए जिन्हें रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पैरवी भी नसीब हुई और अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताब (क़ुर्आन) में ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के बारे में जो कुछ फ़रमाया है उस को लेकर काफ़िरों पर हुज्जत के ज़रिये ग़ल्बा भी पा लिया अर्थात प्रभावी भी हो गए।

(भाग-62)

सूर-ए-जुमअ़

(सूरः नं. 62)

सूरः जुमअ़ का संक्षिप्त परिचय

नाम– आयत नं० (9) में आया है, इसीलिए इस सूरः का नाम सूरः जुमअ़ है।

नाज़िल होने का ज़माना–

कुर्तुबी ने लिखा है कि यह सूरः तमाम लोगों के नज़्दीक मदनी है। बैहक़ी ने लिखा है इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत की है कि सूरः जुमअ़ः मदीना में नाज़िल हुई थी।

मुस्लिम, अबूदाऊद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा आदि ने ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जुमअ़ की नमाज़ में सूरः जुमअ़ः और 'सूरः मुनाफ़िक़ीन' तिलावत करते थे।

आयत नं० 1 से 11 तक

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ
اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۝ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ
الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ۗ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْٓا اِنْ
زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًا ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ
بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۗ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاِذَا
رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوًا ۨانْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ۗ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۗ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝

अनुवाद–

(1) अल्लाह की तस्बीह़ करती हैं, सारी चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं, 'वही' ह़क़ीक़ी बादशाह है बड़ा पाक (पवित्र) ज़ोर वाला, ह़िकमत वाला है। (2) 'वही' है जिसने उम्मियों (अनपढ़ों) में एक रसूल, उन्हीं में से भेजा, जो उनको 'उसकी' आयतें पढ़ कर सुनाते हैं, और उनको पाक करते और उन्हें किताब और ह़िकमत सिखाते हैं, और इससे पहले तो ये लोग खुली गुमराही में थे। (3) और उनमें से और लोगों की ओर भी जो अभी उनसे मिले नहीं हैं, और वह ज़बर्दस्त, ह़िकमत वाला है। (4) यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, जिसे चाहता है अ़ता करता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल (अनुग्रह) वाला है। (5) उन लोगों की मिसाल जिन पर तौरात का बोझ डाला गया- फिर उन्होंने उसे न उठाया- उस गधे की सी है, जो किताब लादे हुए हो, बहुत बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, और अल्लाह ज़ालिमों को सीधी राह नहीं दिखाया करता। (6) कह दीजिए, ऐ यहूदियो! अगर तुम यह समझते हो कि दूसरों

को छोड़ कर तुम ही अल्लाह के चहीते हो, (तो) अगर तुम सच्चे हो तो मौत की तमन्ना करो;'' (7) और ये कभी भी उसकी तमन्ना नहीं करेंगे, उन (करतूतों) की वजह से जो कर चुके हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानता है। (8) कह दीजिए, ''जिस मौत से तुम भागते हो, वह तो तुम्हें आ कर रहेगी, फिर तुम उसकी ओर लौटाए जाओगे, 'जो' छिपे और खुले का जानने वाला है, तो 'वह' तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे होगे।'' (9) 'ऐ' ईमान वालो! जब जुमुअ़ः के दिन नमाज़ के लिए पुकारा (अज़ान दी) जाए, तो अल्लाह की याद की ओर दौड़ पड़ो, और (ख़रीदना) बेचना छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानो; (10) फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए, तो ज़मीन में फैल जाओ, और अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो; और अल्लाह का ज़िक्र ज़्यादा से ज़्यादा करो, ताकि तुम कामियाब हो। (11) और यह लोग जब तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी ओर टूट पड़ते हैं और तुम्हें खड़ा छोड़ देते हैं, कह दीजिए, ''जो कुछ अल्लाह के पास है, वह तमाशे और तिजारत से कहीं बेहतर है, और अल्लाह सबसे बेहतर रिज़्क़ देने वाला है।''

आयत नं० 1 से 11 तक की व्याख्या

1-4 يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝ هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا
مِنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيٰتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلٰلٍ مُبِينٍ ۝ وَآخَرِينَ
مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

अल्लाह तआ़ला का रसूल

यहाँ से सूरः जुमअ़ शुरु हो रही है। पहले रुकूअ़ में इर्शाद फ़रमाया कि आसमानों में और ज़मीन में जो भी मख़्लूक़ है सब अल्लाह की तस्बीह़ बयान करते हैं और साथ ही इसमें अल्लाह तआ़ला की चार सिफ़ात (गुण) बयान फ़रमाए हैं यानी الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ जिस का मतलब सूरः ह़श्र के ख़त्म के क़रीब आयते करीमा هُوَ اللّٰهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ की तफ़्सीर में बयान किया जा चुका है।

और जो सिफ़ात बयान फ़रमाईं उन में एक الْعَزِيزُ और दूसरी الْحَكِيمُ है। इन दोनों सिफ़ात का ज़िक्र बार-बार क़ुर्आन मजीद में फ़रमाया है।

الْعَزِيزُ 'इ़ज़्ज़त वाला' 'ज़बरदस्त ग़ल्बे वाला' और الْحَكِيمُ 'ह़िक्मत वाला'। इन दोनों सिफ़ात के बार-बार बयान करने में मख़्लूक़ को इस बात पर तम्बीह (चेतावनी) है कि अल्लाह तआ़ला की ज़ात ग़ालिब है, उस की गिरफ़्त से निकल कर कोई कहीं नहीं जा सकता और यह कि वह ह़िक्मत वाला है, उस का कोई अ़मल और कोई हुक्म ह़िक्मत से खाली नहीं है।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला के एक बहुत बड़े एह़सान का ज़िक्र फ़रमाया और वह यह कि उस ने الْأُمِّيِّينَ (यानी बे-पढ़े लोगों) में एक रसूल भेजा जो उन्हीं में से है।

'उम्मीय्यीन' से अ़रब मुराद हैं जिन में पढ़ने लिखने का बहुत कम रिवाज था, अगरचे शायरी करते रहते थे (जिस के लिए इ़ल्म से (Prepare) होना ज़रूरी नहीं है।) रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमायाः-

نَحۡنُ اُمَّةٌ اُمِّيَّةٌ यानी हम (अ़रब) बे-पढ़े लोग हैं।

لَانَكۡتُبُ وَلَا نَحۡسُبُ न लिखना जानते थे, न ह़िसाब जानते हैं। अहले मक्का में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बेअ़सत हुई, वह उम्मी थे और ख़ुद आप (सल्ल०) भी उम्मी (अनपढ़) थे जैसा कि आयते बाला में رَسُوۡلًا مِّنۡهُمۡ और सूरः अअ़राफ़ में فَاٰمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهِ النَّبِيِّ الۡاُمِّيِّ फ़रमाया है।

सूरः अ़न्कबूत **(आयत नं० 48)** में अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को ख़िताब कर के फ़रमाया है-

وَمَا كُنۡتَ تَتۡلُوۡا مِنۡ قَبۡلِهٖ مِنۡ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيۡنِكَ اِذًا لَّارۡتَابَ الۡمُبۡطِلُوۡنَ

(और आप इस किताब से पहले न कोई किताब पढ़ते थे और न कोई किताब अपने हाथ से लिखते थे। अगर ऐसा होता तो बातिल वाले शुब्हा (शक) करते।)

अल्लाह तआ़ला ने उम्मीय्यीन में रसूल भेजा जो ख़ुद भी उम्मी था, उस उम्मी पर करोड़ों पढ़े लिखे कुर्बान जो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ऐसी किताब लाया कि उस के मुक़ाबिले में बड़े-बड़े साहित्यकार एक छोटी सी सूरः बनाकर लाने में सक्षम न रहे, अल्लाह तआ़ला ने उस रसूल को पूरी दुनिया के लिए हादी (हिदायत करने वाला या रहनुमा) और रह़मत बनाकर भेजा, बड़े-बड़े अहले इ़ल्म ने उस रसूल उम्मी (सल्ल०) के दामन में पनाह ली और आप के सामने इ़ल्मी हथियार डाल दिये, उस रसूल की बेअ़सत का ज़िक्र फ़रमा कर उस की सिफ़ात भी बयान फ़रमाईं।

1- फ़रमाया رَسُوۡلًا مِّنۡهُمۡ यानी उन्हीं उम्मीय्यीन में रसूल बनाकर भेजा।

2- फ़रमाया कि वह रसूल उन पर अल्लाह की आयात तिलावत करता है यानी पढ़ कर सुनाता है।

3- यह फ़रमाया कि वह उन को पाक करता है, इस से नफ़्स को पाक करना मुराद है। इन्सानों के नुफ़ूस में जो खराबियाँ और बुरी आ़दतें होती हैं उन से पाक करने को 'तज़्किया' कहा जाता है।

4- उन का गुण यह बयान फ़रमाया कि यह रसूल किताब और ह़िक्मत सिखाता है।

मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि किताब से कुर्आन मजीद और ह़िक्मत से फ़हम कुर्आन मुराद है। कुर्आन मजीद के शब्दों का सिखाना और उस के अर्थ का समझना यह सब ह़िक्मत में शामिल है। विस्तार के लिए सूरः बक़रः की **(आयत नं० 129)** رَبَّنَا وَابۡعَثۡ فِيۡهِمۡ رَسُوۡلًا देख सकते हैं।

फिर फ़रमाया وَاِنۡ كَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِيۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ यह उम्मी लोग जिन में रसूल उम्मी (सल्ल०) को भेजा इस से पहले खुली हुई गुमराही में थे, मुश्रिक थे, मूर्ति पूजक थे। क़त्ल व क़िताल और लूटमार में लगे रहते थे।

साह़िबे रिसालत मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तशरीफ़ आवरी (आगमन) से अहले अ़रब में हिदायत भी आ गई, बुरे आ़माल भी छूट गए और चूंकि आपकी बेअ़सत आ़म है, इसलिए आप की दअ़वत व तब्लीग़ पूरे आ़लम में फैल गई।

जब अ़रब से निकल कर आप का लाया हुआ पैग़ाम पूरी दुनिया में फ़ैल गया तो अ़ज़्मियों (ग़ैर अ़रब) ने कुर्आन को ह़िफ़्ज़ (याद करना) किया, क़िराअतें और रिवायतें मह़फ़ूज़ कीं, तर्ज़ अदाएगी सीख अर्थ (Meaning) समझा, कुर्आन की तफ़्सीरें (Explanation) लिखीं और कुर्आन के अह़कामात पर

किताबें लिखीं, कुर्आन को उम्मत में फैलाया यहाँ कि बड़ी संख्या में उ़ल्मा व सुल्हा़ वजूद में आ गए। अहले अ़रब के बाद ग़ैर अ़रब का ख़िद्‌माते इस्लाम में बहुत बड़ा हि़स्सा है।

وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ

(और उन उम्मीय्यीन के अ़लावह दूसरे लोगों की तरफ़ भी उन ही को रसूल बनाकर भेजा जो अभी तक उम्मीय्यीन से नहीं मिले (यानी उन तक इस्लाम नहीं पहुँचा उन्होंने अभी क़ुबूल नहीं किया।)

'सही़ह़ बुख़ारी' में है कि ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्‌मत में बैठे हुए थे उस वक़्त सूरः अल् जुमअ़ नाज़िल हुई जिस में وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ फ़रमाया है। मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! यह कौन लोग हैं जो अभी उन से नहीं मिले? तीन बार सवाल करने पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जवाब दिया उस वक़्त वहाँ सल्मान फ़ारसी (रज़ि०) मौजूद थे। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने उन पर हाथ रख दिया (और इस तरह़ बता दिया कि वह लोग इन में से होंगे) फिर फ़रमाया अगर सुरय्या (सितारों) के नज़्दीक भी ईमान हो तो उन में से ऐसे लोग होंगे जो वहाँ से ले लेंगे। **(सही़ह़ बुख़ारी भाग 2 पेज नं० 727)**

ह़ज़रत सल्मान (रज़ि०) फ़ारस के रहने वाले थे, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अहले फ़ारस के बारे में इर्शाद फ़रमाया कि अगर ईमान नक्षत्र के पास भी होगा तो यह लोग वहाँ से ले लेंगे। यह बतौर मिसाल है, इन के अ़लावह जो अहले अ़रब हैं उन्होंने भी इस्लाम की बहुत ख़िद्‌मत की। जब अहले फ़ारस ने ईमान शीआ़ मज़हब अपना लिया तो उस वक़्त से दूसरी क़ौमों ने अल्ह़म्दुलिल्लाह इस्लाम को ख़ूब बढ़ाया और तरह़-तरह़ से उस की ख़िद्‌मात की।

ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ

(यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे अ़ता फ़रमाए) وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٤﴾ (और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।)

अल्लाह तआ़ला जिस को भी ईमान की तौफ़ीक़ दे दे यह उस का फ़ज़्ल है। तमाम अहले ईमान और ख़ासतौर से वह लोग जो इस्लाम की ख़िद्‌मात में लगे हुए हैं अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करें कि उस ने हमें मोमिन बनाया और इस्लाम की ख़िद्‌मात में लगाया।

5-8

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَاةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا ۚ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥﴾ قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِن زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ
مِن دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٦﴾ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۚ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٧﴾ قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلَاقِيكُمْ ۖ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾

मौत तो आ कर रहेगी

इन आयात में यहूद की बेदीनी और उन की दुनिया व आख़िरत की बद्‌ह़ाली बयान फ़रमाई गई

है। यहूद ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) की औलाद में से थे, जिन का लक़ब ‘इस्राईल’ था, इसी वजह से यहूदियों को “बनी इस्राईल” कहा जाता है। अल्लाह तआ़ला ने उन में जो अम्बिया भेजे उन में ह़ज़रत ईसा और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ज़्यादह मश्हूर हैं। ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को अल्लाह तआ़ला ने तौरेत अ़ता फ़रमाई जिस में यहूदियों के लिए अह़काम थे, उन में अहले इ़ल्म भी थे और अहले अ़मल थी। जैसा कि सूरः माइदा (आयत नं० 44) में हैः-

يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ

(अम्बिया जो फ़रमाँबरदार थे, उस के मुताबिक़ हुक्म दिया करते थे और अल्लाह वाले और उ़लमा भी उन को किताबुल्लाह की निगरानी का हुक्म दिया गया था और वह उस के इक़रारी हो गए थे।

कुछ दिनों तक तो यहूदियों के उ़लमा तौरेत शरीफ़ के मुताबिक़ चलते रहे और क़ौम को चलाते रहे, फिर तौरेत शरीफ़ की तअ़लीमात को छोड़ दिया बल्कि अदल-बदल दिया और उस के अह़काम पर अ़मल पैरा न हुए। जो इ़ल्म था उस पर अ़मल न रहा तो किताब वाला होना उन के लिए फ़ायदेमन्द न रहा। उन लोगों की मिसाल देते हुए फ़रमाया कि जिन लोगों से तौरेत उठाई गई यानी उन्हें हुक्म दिया गया कि तौरेत के हुक्मों पर अ़मल करो, फिर उन्होंने उस पर अ़मल न किया (और यह दावे करते रहे कि हमारे पास अल्लाह की किताब है) उन की ऐसी मिसाल है जैसे गधे पर किताबें लादी गई हों वह किताबें लादे फिरता है और उस को कुछ पता नहीं कि यह मेरे ऊपर क्या है?

यहूद की बद्अ़मली

यहूद के पास तौरेत थी, लेकिन ह़ज़रात अम्बिया किराम (अ़लै०) को भी क़त्ल करते थे और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) को भी झुठलाया और उन के क़त्ल के दरपे हो गए, फिर जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बेअ़सत हुई और आप को पहचान भी लिया कि यह वही नबी हैं जिन का तौरेत व इन्जील में ज़िक्र है, फिर भी ईमान न लाए।

उन की इस बद्ह़ाली को बयान करते हुए फ़रमायाः-

بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

“बुरी ह़ालत है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह तआ़ला की आयात को झुठलाया”।

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ

“और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देता”।

यहूदियों का अपने बारे में यह अन्दाज़ा था कि हम अल्लाह के दोस्त हैं और हमारे सिवा अल्लाह का कोई दोस्त नहीं, बल्कि यूँ कहते थे किः-

نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ (हम अल्लाह के बेटे और उस के प्यारे हैं।)

और यूँ भी कहते थे कि दारुल आख़िरत सिर्फ़ हमारे लिए है, उन की इन बातों को रद्द करते हुए इर्शाद फ़रमायाः-

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْٓا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ۝

(आप फ़रमा दीजिए कि ऐ यहूदियों! अगर तुम ने ख़याल किया है कि तुम अल्लाह के दोस्त हो, दूसरे लोग इस दोस्ती में शरीक नहीं तो तुम मौत की तमन्ना करो, अगर तुम सच्चे हो।)

मतलब यह है कि जब तुम्हें पक्का यक़ीन है कि तुम अल्लाह तआ़ला के औलिया हो और उस में किसी दूसरे की शिर्कत नहीं है तो इस दुनिया वाली ज़िन्दग़ी में क्यों तक्लीफ़ें उठा रहे हो?

अगर अपने को ह़क़ पर समझते हो और यह ख़याल करते हो कि मरते ही जन्नत में दाख़िल हो जाओगे तो तुम्हें जल्द से जल्द मर जाना चाहिए ताकि दुनिया छूटे और जन्नत मिले, जबकि तुम जानते और मानते हो कि जन्नत की ज़िन्दग़ी इस दुनिया की ज़िन्दग़ी से बहुत ज़्यादह बेहतर है। तुम्हें जल्द से जल्द मरकर जन्नत के लिए फ़िक्रमन्द होना चाहिए। अगर यूँ कहो कि यह मौत का लाना अपने क़ब्ज़े में नहीं है तो मौत की तमन्ना ही कर के दिखा दो, अगर तुम अपने अ़क़ीदे में सच्चे हो

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ

"और यह लोग अपने आ़माल की वजह से कभी भी मौत की तमन्ना नहीं करेंगे"।

यानी यह उन के ज़बानी दावे हैं कि जन्नत हमारे ही लिए है और हम अल्लाह के वली हैं, लेकिन इन्कार और बुरे आ़माल की वजह से यह मौत से डरते हैं, यह मौत की तमन्ना करने वाले नहीं हैं।

सूरः बक़रः (**आयत नं० 96**) में फ़रमाया हैः-

وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ

"और आप उन को ऐसा पाएँगे कि लोगों में ज़िन्दग़ी के सब से ज़्यादह ह़रीस (लालची) हैं"।

यह यक़ीन करते हैं कि हम मरने के बाद अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होंगे, लिहाज़ा जितनी भी दुनियावी ज़िन्दग़ी मिल जाए बेहतर है अपने बारे में अल्लाह के औलिया और क़रीबी बनाना केवल ज़बानी दावा है।

किसी को यह सवाल हो कि अगर किसी मुसलमान से कहा जाए कि मौत की तमन्ना कर तो वह भी ऐसी तमन्ना नहीं करेगा, फिर यह ह़क़ और बातिल का मेअ़यार (Standard) कैसे हुआ?

इस का जवाब यह है कि यहूदियों से जो बात की जा रही थी वह उन के इस दावे से मुतअ़ल्लिक़ है कि हम अल्लाह तआ़ला के वली और दोस्त हैं और प्यारे हैं, जन्नत में सिर्फ़ हम को जाना है। उन के इस दावे का इल्ज़ामी जवाब दिया गया है उन्हें अपने दावे के मुताबिक़ अ़क़्ली तौर पर बिना किसी झिझक के फ़ौरी तौर पर मर जाना चाहिए ताकि अपने अ़क़ीदे (विश्वास) के मुताबिक़ मरते ही जन्नत में चले जाएँ। अगर मर नहीं सकते तो मरने की तमन्ना ही करें।

रहा मोमिनीन अहले इस्लाम का मामला तो उन में से किसी को अगर मौत से कराहत है तो वह फ़ित्‌री बात है, फिर अह़ादीस में मौत की तमन्ना करने से मना भी किया गया है।

मोमिन के ज़िन्दा रहने में ख़ैर है, अगर नेक आदमी है तो अच्छा है और ज़्यादह अच्छे अ़मल कर लेगा और अगर गुनाहों की ज़िन्दगी गुज़ार रहा है तो हो सकता है कि तौबः की तौफ़ीक़ हो जाए। अल्बत्ता जिस ने जानबूझकर कुफ़्र अख़्तियार किया है और कुफ़्र पर जमा हुआ है और कुफ़्र पर ही रहने का इरादा है और यह भी समझता है कि कुफ़्र के बावजूद मुझे जन्नत मिलेगी और मुझे और मेरे साथियों के सिवा किसी और को न मिलेगी इस से वही ख़िताब है जो यहूदियों से है।

बाज़ यहूदी अपने बारे में दोज़ख़ में जाने का भी यक़ीन रखते थे, लेकिन यूँ कहते थे कि हम चन्द दिन दोज़ख़ में रहेंगे, फिर जन्नत में दाख़िल कर दिये जाएँगे। मालूम हुआ कि आयते करीमा में उन यहूदियों से ख़िताब है जो अपने बारे में औलिया अल्लाह होने का एतिक़ाद रखते थे और यह समझते थे कि हम को मरते ही जन्नत में दाख़िल होना है।

इस तरह़ का विषय सूरः बक़रः में भी गुज़रा है, वहाँ हम ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से यह नक़्ल किया था कि इस में यहूदियों को मुबाहिला (एक दूसरे के लिए बद्दुआ़) की दअ़वत दी गई है कि अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो तो आ जाओ, हम मिलकर मौत की दुआ़ करें कि दोनों फ़रीक़ में जो भी झूठा है वह फ़ौरन मर जाए। जब यह बात सामने आई कि अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो तो आ जाओ हम मिलकर मौत की दुआ़ करें कि दोनों फ़रीक़ में जो भी झूठा है वह फ़ौरन मर जाए। जब यह बात सामने आई तो वह इस पर राज़ी नहीं हुए और फ़रार का रास्ता अख़्तियार कर लिया।
(सूरः बक़रः रुकूअ़ 11)

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلَاقِيكُمْ

"आप फ़रमा दीजिए कि बिलाशुब्हा जिस मौत से तुम भागते हो उस से तुम्हारी मुलाक़ात ज़रूर होगी"।

मौत से भागने की कोई सूरत नहीं हर एक का वक़्त मुक़र्रर (Fix) है। जो शख़्स जहाँ भी होगा अपने वक़्त पर उसे मौत वहीं आ जाएगी और ज़रूर आएगी।

सूरः निसा (**आयत नं० 78**) में फ़रमायाः-

أَيْنَ مَا تَكُونُوا يُدْرِكْكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ مُشَيَّدَةٍ

"तुम जहाँ कहीं भी हो मौत तुम्हें ज़रूर पकड़ लेगी अगरचे तुम मज़बूत बुर्जों (शीशे के गिलास) में हों"।

मौत से किसी को छुट्कारा नहीं और ज़्यादह उ़म्र हो जाने से अ़ज़ाब से बचाव नहीं। जो लोग ह़ालते कुफ़्र पर मर जाएँगे उन्हें जहन्नम में दाख़िल होना है और अ़ज़ाब ज़रूर होना है।

सूरः बक़रः (**आयत नं० 96**) में फ़रमायाः-

يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ

"उन का एक-एक शख़्स यह आरज़ू करता है कि काश उसे हज़ार साल की उ़म्र दे दी जाए"।

وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعَمَّرَ (**आयत नं० 96**) *(और ह़ाल यह है कि उसे यह चीज़ अ़ज़ाब से बचाने वाली नहीं है कि उस की उ़म्र हज़ार साल कर दी जाए।)*

देर सवेर हर एक को मौत आनी है और अहले कुफ़्र के लिए जो अ़ज़ाब तय है वह उन्हें मिलना ही है जो हमेशा का अ़ज़ाब होगा।

ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ

फिर तुम अल्लाह तआ़ला की ज़ात आ़लिमुल् ग़ैब वल् शहादह की तरफ़ लौटा दिये जाओगे, सो वह तुम्हें बता देगा जो अ़मल तुम दुनिया वाली ज़िन्दग़ी में किया करते थे।

जब यह जानते हो कि क़ियामत के दिन हाज़िर होना है और यह भी जानते हो कि कुफ़्र की सज़ा हमेशा अ़ज़ाब है तो समझदारी का तक़ाज़ा यह है कि तुम ईमान क़ुबूल कर लो।

कोई शख़्स यूँ न समझ ले कि मेरे आ़माल का किसे पता है जिस ने पैदा किया उसे सब इ़ल्म है, वह सब जानता है वह सब बता देगा कि किस ने क्या किया है, फिर वह अपने इ़ल्म के मुताबिक़ आ़माल का बदला देगा।

9-10 يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

जुमअ़ की अज़ान के बाद

इन आयात में जुमअ़ की फ़र्ज़ियत और फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है। पहले तो यह इर्शाद फ़रमाया कि जुमअ़ के दिन नमाज़े जुमअ़ के लिए पुकारा जाए यानी अज़ान दी जाए तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ पड़ो।

नमाज़े जुमअ़ से पहले जो ख़ुत्बा होता है, उसे ज़िक्रुल्लाह फ़रमाया गया है और उस को सुनने के लिए दौड़ जाने का हुक्म दिया गया है। दौड़ जाने से मुराद यह नहीं कि भाग कर जाओ, बल्कि मतलब यह है कि जुमअ़ की हाज़िरी में जल्दी करो और ख़ुत्बः सुनने के लिए हाज़िर हो जाओ।

وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ (और ख़रीद व फ़रोख़्त को छोड़ दो) ख़रीद फ़रोख़्त बतौरे मिसाल फ़रमाया है, क्योंकि जो लोग अपने व्यापार के धंधों की वजह से जुमअ़ की अज़ान सुनकर मस्जिद की हाज़िरी देने में कच्चे पड़ जाते हैं और दुनियावी नफ़ा सामने होने की वजह से ख़रीद व फ़रोख़्त में लगे रहते हैं और कारोबार बन्द करने के लिए तैयार नहीं होते, उन के लिए तम्बीह (warning) फ़रमाई।

दुनियावी नफ़ा हासिल करने की वजह से बहुत से लोग जुमअ़ में हाज़िर नहीं होते और बहुत से लोग सिर्फ़ आधा तिहाई ख़ुत्बः सुन लेते हैं, इसलिए साफ़-साफ़ एलान फ़रमा दिया।

ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (यह जुमअ़ की हाज़िरी तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो।)

नुज़ूले क़ुर्आन के वक़्त केवल एक ही अज़ान थी जो इमाम के मेम्बर पर चढ़ने के बाद दी जाती थी, उस वक़्त लोग शौक़ से नमाज़ के लिए पहले से हाज़िर रहते थे, कोई एक दो आदमी रह गया तो

अज़ान सुनकर हाज़िर हो जाता था।

'हज़रत अबू बक्र' और 'हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा' के दौर में ऐसा ही रहा। फिर जब नमाज़ियों की कसरत (वृद्धि) हो गई तो तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) ने एक और अज़ान ख़ुत्बः वाली अज़ान से पहले सहाबा से मश्विरा करके शुरु करवा दी, जो मस्जिद से ज़रा दूर बाज़ार में मक़ामे ज़ौरा पर होती थी। **(सहीह़ बुख़ारी पेज नं० 124)**

उस वक़्त से यह पहली अज़ान भी जारी है। उ़लमा ने फ़रमाया कि कारोबार छोड़कर जुमअ़ के लिए हाज़िर होना अब इसी अज़ान से सम्बन्धित है।

हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) चूंकि ख़ुल्फ़-ए-राशिदीन में से थे और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने **عليكم بسنتى وسنة الخلفاء الراشدين المهديين** फ़रमाया है, इसलिए उन की इत्तिबअ़ (पैरवी) भी लाज़िम है।

जुमअ़ के फ़ज़ायल-

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जब जुमअ़ का दिन होता है तो फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो जाते हैं जो पहले आया उस का नाम पहले और जो बाद में आया उस का नाम बाद में, लोगों के आने के एतिबार से नाम लिखते रहते हैं। फिर फ़रमाया कि जो शख़्स दोपहर का वक़्त शुरु होते ही जुमअ़ के लिए रवाना हो गया उस का इतना बड़ा सवाब है कि जैसे उस ने बुद्ना यानी ऊँट की क़ुर्बानी पेश की, फिर जो उस के बाद आया उस का ऐसा सवाब है जैसे उस ने गाय की क़ुर्बानी पेश की। उस के बाद आने वाले का सवाब है जैसे उस ने मेंढा की क़ुर्बानी पेश किया। उस के बाद आने वाले का ऐसा सवाब है जैसा कि उस ने मुर्ग़ी पेश की, उस के बाद आने वाले का ऐसा सवाब है जैसे उस ने अण्डा पेश किया। फिर जब इमाम (अपने हुजूरे से मेम्बर पर आने के लिए) निकलता है तो फ़रिश्ते अपने सहीफ़ों (रजिस्टर) को लपेट देते हैं और ज़िक्र सुनने में मश्ग़ूल हो जाते हैं। **(रवाहुलू बुख़ारी पेज नं० 121, 127 व मुस्लिम पेज नं० 282)**

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से यह भी रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस ने वुज़ू किया और अच्छी तरह़ वुज़ू किया, फिर जुमअ़ में हाज़िर हुआ और कान लगाकर (ख़ुत्बः) सुना और ख़ामोश रहा, उस के लिए इस जुमअ़ से लेकर आइन्दा जुमअ़ तक के गुनाहों की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी और मज़ीद तीन दिन की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी (क्योंकि हर नेकी का सवाब कम से कम दस गुना ज़्यादह दिया जाता है) फिर फ़रमाया कि जिस ने कंकरियों को छू लिया और उस ने बेहूदा काम किया (क्योंकि जो शख़्स ख़ुत्बः की तरफ़ से ग़ाफ़िल होगा वही कंकरियों से खेलेगा या ऐसा ही कोई बेहूदा काम करेगा। **(रवाहु मुस्लिम भाग 1 पेज नं० 283)**

इस ह़दीस में अच्छी तरह़ वुज़ू कर के आने का हुक्म है और बाज़ रिवायात में ग़ुस्ल करने, तेल या ख़ुशबू लगाने और पैदल चल कर जाने और मिस्वाक़ करने और अच्छे कपड़े पहनने और इमाम के क़रीब होकर ख़ुत्बः सुनने की भी बात कही गई है। **(मिश्कातुलू मसाबीह़ पेज नं० 132, 133)**

जो शख़्स खुत्बः के दर्मियान बात करने लगे उस को यूँ कहना कि ख़ामोश हो जाओ, यह भी मना है (क्योंकि इस में ध्यान से खुत्बः सुनने में फ़र्क़ आता है) रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर तूने बात करने वाले से यूँ कह दिया कि चुप हो जा तो लग़्वु (बेफ़ायदा) काम किया।

(रवाहुलू बुख़ारी पेज नं० 127 भाग 1)

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि सब दिनों से बेहतर जुमअ़ का दिन है। इसी दिन हज़रत आदम (अ़लै०) पैदा किये गए और इसी दिन जन्नत में दाख़िल किये गए और इसी दिन जन्नत से निकाले गए (उन का वहाँ से निकाला जाना दुनिया में उन की नस्ल बढ़ने का और उन में से अम्बिया, शोहदा, सिद्दीक़ीन, सालिहीन और आ़म मोमिनीन के वजूद में आने का सबब बना, जिन्हें जन्नत का दाख़िला नसीब हुआ) और फ़रमाया कि क़ियामत जुमअ़ ही के दिन आएगी। **(रवाहु मुस्लिम भाग 1 पेज नं० 282)**

जुमअ़ के छोड़ने पर वई़द-

मरीज़, मुसाफ़िर, औ़रत और ग़ुलाम पर जुमअ़ की हाज़िरी ज़रूरी नहीं है। बालिग़ मर्द जिसे कोई ऐसा मर्ज़ न हो जिस की वजह से न जा सकता हो उस पर ख़ूब हिम्मत कर के कारोबार छोड़कर और आदाब का ख़याल कर के हाज़िर होना लाज़िम है।

हज़रत इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (अ़लै०) ने अपने मेम्बर पर खड़े होकर फ़रमाया कि लोग जुमअ़ की नमाज़ छोड़ने से रुक जाएँ वरना अल्लाह उन के दिलों पर मुहर लगा देगा, फिर वह लोग ग़ाफ़िलों में से हो जाएँगे। **(रवाहु मुस्लिम भाग 2 पेज नं० 282)**

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो लोग जुमअ़ की नमाज़ से पीछे रह जाते हैं मैंने उन के बारे में पक्का इरादा कर लिया है कि किसी को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दूँ फिर पीछे से जाकर उन लोगों के घरों को जला दूँ जो जुमअ़ की नमाज़ की हाज़िरी से रह जाते हैं। **(मिश्कातुलू मसाबीह़ पेज नं० 121)**

दुआ़ की क़ुबूलियत-

जुमअ़ के दिन एक ऐसी घड़ी है जिस में दुआ़ ज़रूर क़ुबूल होती है। बाज़ रिवायात में है कि इमाम के मेम्बर पर बैठने के बाद से नमाज़ के ख़त्म होने तक के दर्मियान दुआ़ क़ुबूल होने का वक़्त है।

(रवाहु मुस्लिम पेज नं० 281)

और एक रिवायत में यूँ है कि जुमअ़ के दिन जिस घड़ी में दुआ़ क़ुबूल होती है उस घड़ी को अ़स्र के बाद सूरज ग़ुरूब होने तक तलाश करो। **(रवाहु तिर्मिज़ी भाग 1 पेज नं० 11)**

सूरः कहफ़ पढ़ने की फ़ज़ीलत-

जुमअ़ के दिन सूरः कहफ़ के शुरु की तीन आयात पढ़ने की भी फ़ज़ीलत आई है। ह़दीस में है

कि जो शख़्स यह तीन आयात पढ़ लिया करे वह दज्जाल के फ़ित्ने से महफ़ूज़ रहेगा।

(रवाहुल तिर्मिज़ी भाग 2 पेज नं० 116)

बाज़ रिवायात में जुमअ़ के दिन सूरः कहफ़ की आख़िरी तीन आयात पढ़ने का भी ज़िक्र आया है और एक ह़दीस में यूँ है कि जिस ने जुमअ़ के दिन सूरः कहफ़ पढ़ ली उस के लिए दोनों जुमों के दर्मियान नूर रौशन रहेगा यानी जुमअ़ के दिन इस सूरः को पढ़ने की वजह से उस की क़ब्र में या दिल में एक हफ़्ते तक रौशनी रहेगी। **(रवाहुल बैहक़ी फ़ी दअ़वतुलू कबीर)**

जुमअ़ के दिन सूरः हूद पढ़ने का भी हुक्म है। **(रवाहुलू दारमी पेज नं० 326)**

जुमअ़ के दिन दुरुद शरीफ़ की फ़ज़ीलत–

जुमअ़ के दिन दुरुद शरीफ़ कसूरत से पढ़ना चाहिए यूँ तो दुरुद शरीफ़ पढ़ने का हमेशा ही बहुत ज़्यादह सवाब है, लेकिन जुमअ़ के दिन ख़ासतौर पर आप (सल्ल०) ने दरुद पढ़ने का हुक्म दिया।

(मिश्कातुलू मसाबीह़ पेज नं० 120)

नमाज़े जुमअ़ के बाद अल्लाह का फ़ज़्ल–

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْأَرْضِ

(यानी जब नमाज़ ख़त्म हो जाए तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो।)

मतलब यह है कि जब नमाज़ ख़त्म हो गई मस्जिद की हाज़िरी वाला काम ख़त्म हो गया, अब अपने दुनियावी कामों (Activities) में लग सकते हो, मस्जिद से फ़ारिग़ होकर बाज़ार में जाओ, अल्लाह का रिज़्क़ हासिल करो। जुमअ़ की हाज़िरी के लिए जो कारोबार छोड़कर आए थे, चाहो तो उस में लग जाओ, चूंकि यह हुक्म जायज़ करना है इसलिए अगर कोई शख़्स नमाज़ पढ़कर अस्र तक या मग़्रिब तक मस्जिद में रह जाए एतिकाफ़, तिलावते ज़िक्र में वक़्त गुज़ारे तो यह भी अच्छी बात है।

ख़रीद व फ़रोख़्त की इजाज़त देने के बाद وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ भी फ़रमाया और यह बता दिया कि ख़रीद व फ़रोख़्त की मशग़ूलियत (व्यस्तता) या दूसरे काम अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न कर दें, मोमिन को हर हाल में अल्लाह के ज़िक्र में लगे रहना चाहिए जो ज़िन्दगी का मक़्सद है, नमाज़ भी अल्लाह के ज़िक्र के लिए है। जैसा कि सूरः ताहा **(आयत नं० 14)** में फ़रमाया हैः–

وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ (कि नमाज़ को मेरे ज़िक्र के लिए क़ायम करो) सूरः अ़नकबूत **(आयत नं० 45)** में फ़रमायाः–

وَلَذِكْرُ اللّٰهِ أَكْبَرُ (और यक़ीनन अल्लाह का ज़िक्र सब से बड़ा है।)

सूरः अहज़ाब **(आयत नं० 41,42)** में फ़रमाया हैः–

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۝ وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّأَصِيْلًا ۝

(ऐ ईमान वालों! अल्लाह का ज़िक्र करो ख़ूब ज़्यादह और सुबह़ व शाम उस की तस्बीह़ में मशग़ूल रहो।)

फिर फ़रमाया لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ (ताकि तुम कामियाब हो जाओ।)

अल्लाह का ज़िक्र बहुत बड़ी चीज़ है, उस में दुनिया व आख़िरत की कामियाबी है। इस से दिल को राहत और इत्मिनान हासिल होता है, चूंकि बाज़ार में भीड़भाड़ होती है ख़रीद व फ़रोख़्त की आवाज़ें लगती हैं, ग़फ़्लत के मौक़े ज़्यादह होते हैं इसलिए रिज़्क़ की तलब के साथ कस्रते ज़िक्र का भी हुक्म फ़रमाया। इस में लिखे हुए शब्द पढ़ने की ख़ास फ़ज़ीलत वारिद हुई है।

हज़रत उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो शख़्स बाज़ार में दाख़िल हुआ और उस ने यह कलिमात पढ़ें:-

لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللهُ وَحْـدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيْتُ
وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

(अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं वह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिए मुल्क है और उसी के लिए ह़म्द है, वही ज़िन्दा करता है और मारता है और वह ज़िन्दा है और उसे मौत न आएगी, उसी के हाथ में भलाई है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है) तो उस के लिए अल्लाह तआ़ला दस लाख नेकियाँ लिख देंगे और दस लाख गुनाह माफ़ फ़रमा देंगे और दस लाख दर्जे बुलन्द फ़रमा देंगे और उस के लिए जन्नत में एक घर बना देंगे। **(तिर्मिज़ी व इब्ने माजा)**

11 وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوًا ۨانْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآىِٕمًا ۭ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝

ख़ुत्बः छोड़कर तिजारती कामों पर तम्बीह

हज़रत जाबिर (रज़ि०) ने बयान किया कि एक मर्तबः हम रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ नमाज़े जुमअ़ पढ़ रहे थे। अचानक (मदीना मुनव्वरह में) एक ऊँटों का क़ाफ़िला आ गया, जिन पर खाने-पीने का सामान लदा हुआ था (जब हाज़िरीन के कानों में इस की भनक पड़ी तो) उस की तरफ़ मुतवज्जेह हो गए और बाज़ार की तरफ़ चल दिये, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ बारह आदमी रह गए। इस पर आयते करीमा وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوًا ۨانْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا नाज़िल हो गई।

(रवाहुल् बुख़ारी भाग 1, पेज नं० 128, भाग 2, पेज नं० 727)

यह 'सही़ह़ बुख़ारी' की रिवायत है और 'सही़ह़ मुस्लिम' पेज नं० (284) में इस रिवायत में यूँ है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जुमअ़ के दिन खड़े हुए ख़ुत्बः पढ़ने को नमाज़ पढ़ने से तअ़बीर कर दिया।

قال النووی فی شرح مسلم والمراد بالصلوٰة (فی روایة الخاری)
انتظارها فی الخطبة کما وقع فی روایات مسلم)

'सही़ह़ मुस्लिम' में यह भी है कि जो बारह लोग रह गए थे, उन में 'ह़ज़रत अबू बक्र' और ह़ज़रत

उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा भी थे। मुरासील अबूदाऊद पेज नं० (7) में 'मक़ातिल बिन ह़ब्बान' से नक़्ल किया है कि पहले यह तरीक़ा था कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) नमाज़े ईदैन की तरह़ जुमअ़ का ख़ुत्बः भी नमाज़ के बाद दिया करते थे।

एक मर्तबः ऐसा हुआ कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) नमाज़ से फ़ारिग़ होकर ख़ुत्बः में मश्गूल (Busy) थे कि एक शख़्स अन्दर मस्जिद में आया और उस ने कहा कि दहिया बिन ख़लीफ़ा अपनी तिजारत का सामान लेकर पहुँच गया है (उस वक़्त दहिया मुसलमान नहीं हुए थे।)

जब वह बाहर से तिजारत का सामान लेकर आते थे तो उन के घर वाले दुफ़ बजा कर स्वागत (Welcome) किया करते थे, जो लोग ख़ुत्बः सुन रहे थे वह यह समझ कर ख़ुत्बः छोड़कर जाने में कोई ह़र्ज नहीं समझे और मस्जिद से बाहर निकल गए। इस पर अल्लाह तआ़ला ने आयते करीमा وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا انْفَضُّوْا اِلَيْهَا नाज़िल फ़रमाई और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इस के बाद से ख़ुत्बः को नमाज़ से पहले कर दिया, फिर नमाज़ से पहले ख़ुत्बः पढ़ा जाने लगा।

'मुरासील अबूदाऊद' की रिवायत से मालूम हुआ कि जो सह़ाबा इस मौक़े पर मस्जिद से निकल गए थे उन्होंने यह ख़याल कर लिया था कि नमाज़ तो हो गई है, ख़ुत्बः नमाज़ का जुज़ (भाग) नहीं है और नसीह़त की बातें रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सुनते ही रहते हैं, इसलिए ख़ुत्बः छूट जाने में कोई ह़र्ज नहीं है। उन की यह इज्तिहादी (Research) सोच थी, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उन की गिरिफ़्त फ़रमाई और यह भी फ़रमाया कि जब यह तिजारत को देखते हैं या किसी लह़्व (बकवास काम) को देखते हैं तो उस की तरफ़ चल देते हैं और आप को खड़ा छोड़ देते हैं।

'मुआ़लिमुल तन्ज़ील' में लिखा है कि लह़्व (बकवास कामों) से तबला मुराद है (जिसे मुरासील अबूदाऊद में दुफ़ (उफुला) बताया है। मुआ़लिमुल् तन्ज़ील में यह भी है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि कितने लोग मस्जिद में रह गये? अ़र्ज़ किया बारह मर्द और एक औ़रत बाक़ी रह गए। आप ने फ़रमाया अगर यह भी बाक़ी न रहते तो उन पर आसमान से पत्थर बरसा दिये जाते।

एक रिवायत में यूँ है कि आप ने फ़रमाया कि अगर तुम सब मिलकर एक के बाद दूसरे चले जाते और कोई मस्जिद में न रहता तो यह वादी आग बनकर बह पड़ती। **(मुआ़लिमुल तन्ज़ील भाग 4 पेज 345, 346)**

बात यह है कि वह ज़माना ख़ुराक की कमी का भी था और भाव के महंगे होने का भी, दहिया बिन ख़लीफ़ा तिजारत का सामन लेकर आए जिस में खाने-पीने की चीज़ें भी थीं। इस डर से कि मुम्किन है और लोग ख़रीद लें और हम को कुछ भी न मिले, ह़ाज़िरीन मस्जिद से उस तरफ़ चले गए।

एक तो चीज़ों की कमी का वक़्त था, दूसरे उन्होंने यह समझा कि नमाज़ के बाद ख़ुत्बः छोड़ जाने में कोई ह़र्ज नहीं है और माल ख़रीदने में यहूदी और मुनाफ़िक़ भी हैं, इसलिए हमें भी माल जल्दी ख़रीद लेना चाहिए। इस ख़याल ने ख़ुत्बः छोड़कर चले जाने पर आमादह कर दिया।

अगर मामला की सारी सूरते सामने रखी जाएँ तो बात समझने में आसानी हो जाती है कि ह़ज़रात सह़ाबा (रज़ि०) ने ऐसा क्यों किया? लेकिन ग़ल्ती, ग़ल्ती है जिस पर अल्लाह तआ़ला ने तम्बीह फ़रमा दी।

قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۔

(आप फ़रमा दीजिए कि जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर है लह्व (बक्वास बातों) से और तिजारत से, इस में यह बता दिया कि नमाज़ में और ख़ुत्बः की मश्गूलियत में बड़ी बरकात है।

इन चीज़ों में मश्गूल होते हुए जो अल्लाह की तरफ़ से दुनिया व आख़िरत में ख़ैर मिलेगी वह उन चीज़ों से बेहतर है जिन्हें अल्लाह के ज़िक्र को छोड़ कर रवाना हो गए मोमिन बन्दों को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मुतवज्जेह रहना चाहिए। उन पर लाज़िम है कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मुतवज्जेह रहें और उस के अह़काम पूरा करें और उसी से मदद माँगें।

وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ (और अल्लाह तआ़ला तमाम देने वालों से बेहतर है।)

उसी ने अस्बाब पैदा फ़रमाए और मुक़द्दर भी फ़रमाए हैं उस से बढ़कर कोई देने वाला नहीं है जो कुछ मिलता है उस के चाहने से मिलता है, जो शख़्स किसी को कुछ देता है वह भी अल्लाह की तरफ़ से दिल में डाला जाता है।

जुमअ़ का ख़ुत्बः अदा-ए-सलात के लिए शर्त है, ख़ुत्बः पढ़े बग़ैर दो रकअ़तें पढ़ लें तो जुमअ़ अदा नहीं होगा।

नमाज़े जुमअ़ में पहली रकअ़त में सूरः जुमअ़ और सूरः اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ पढ़ना मस्नून है। **(सह़ीह़ मुस्लिम भाग 1 पेज नं० 287)**

बाज़ रिवायात में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ईदैन में और सलात जुमअ़ में سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى और هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ पढ़ते थे। अगर किसी दिन ऐसा हो गया कि ईद भी है और जुमअ़ भी तो दोनों नमाज़ों में هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ और سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى पढ़ते थे। **(सह़ीह़ मुस्लिम भाग 1 पेज नं० 288)**

(भाग–63)

सूर–ए–मुनाफ़िक़ून

(सूरः नं. 63)

सूरः मुनाफ़िक़ून का संक्षिप्त परिचय

नाम– इसके पहली आयत के शुरुआ़त में मौजूद शब्द....... إِذَا جَاءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ में शब्द मुनाफ़िक़ून आया है, जिस की वजह से इस का नाम सूरः मुनाफ़िक़ून है।

नाज़िल होने का ज़माना–

'क़ुर्तुबी' ने लिखा है कि यह सूरः अक्सर लोगों के नज़्दीक मदनी है। 'इब्ने मर्दुविया' और 'बैहक़ी' ने 'इब्ने अ़ब्बास' (रज़ि०) से रिवायत की है कि सूरः मुनाफ़िक़ून मदीना में नाज़िल हुई थी। मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि यह सूरः शअ़बान 5 हिज्री में ग़ज़्व-ए-बनू मुस्तलिक से वापसी पर रास्ते में या मदीना पहुँचने के बाद नाज़िल हुई थी।

आयत नं० 1 से 11 तक

إِذَا جَاءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۚ اِتَّخَذُوْۤا
اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا
يَفْقَهُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ؕ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ هُمُ
الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۫ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ
مُّسْتَكْبِرُوْنَ ۝ سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ هُمُ
الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝
يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَاۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝
وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَاۤ اَخَّرْتَنِىْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ
الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝

अनुवाद-

(1) जब मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) लोग आप के पास आते हैं तो कहते हैं, ''हम गवाही देते हैं कि बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह जानता है कि हक़ीक़त में आप 'उसके' रसूल हैं,'' मगर अल्लाह गवाही देता है कि यह मुनाफ़िक़ बिल्कुल झूठे हैं। (2) उन्होंने अपनी क़समों को ढ़ाल बना रखा है, तो इस तरह़ यह अल्लाह की राह से रोकते हैं, निश्चय ही यह बहुत बुरा है, जो ये कर रहे हैं। (3) यह इसलिए कि वे ईमान लाए, फिर इन्कार किया, तो उनके दिलों पर मुहर लगा दी गयी, वे अब कुछ नहीं समझते। (4) और जब तुम उनको देखते हो, तो उनके शरीर तुम्हें अच्छे लगते हैं, और अगर वे बात करें तो उनकी बातों को सुनते रह जाओ, यह ऐसा ही है- जैसे लकड़ी के कुन्दे हों, (जिन्हें खड़ा कर दिया गया हो,) वे हर चौका देने वाली आवाज़ को अपने ही ऊपर लेते हैं यही असली दुश्मन हैं, तो इनसे बचते रहो, अल्लाह की मार हो उन पर, यह कहाँ बहके जा रहे हैं। (5) और जब उनसे कहा जाता है, ''आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए माफ़ी की दुआ़ करे,'' तो अपने सर मटकाते हैं, और तुम देखते हो कि वे घमंड के साथ कत्ऱा कर निकल जाते हैं। (6) उनके लिए बराबर है चाहे आप उनके लिए माफ़ी की दुआ़ करें या उनके लिए माफ़ी की दुआ़ न करें, अल्लाह उन्हें हरगिज़ माफ़ न करेगा, बेशक अल्लाह नाफ़रमानी करने वालों को सीध ी राह नहीं दिखाया करता। (7) वही हैं जो कहते हैं, ''तुम उन लोगों पर खर्च न करो जो अल्लाह के रसूल के पास (रहने) वाले हैं, ताकि ये तितर-बितर हो जाएँ।'' हालांकि आसमानों और ज़मीन के खज़ाने अल्लाह ही के हैं, लेकिन मुनाफ़िक़ समझते नहीं। (8) कहते हैं, ''अगर हम मदीना वापस पहुंच गये तो जो इ़ज़्ज़त वाला है वह ज़िल्लत वाले को वहां से निकाल बाहर करेगा,'' हालांकि इ़ज़्ज़त अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वालों के लिए है लेकिन यह मुनाफ़िक़ जानते नहीं। (9) ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न कर दें, और जो ऐसा करेंगे वही घाटे में रहने वाले हैं। (10)

और खर्च करो उसमें से जो रिज़्क़ 'हमने' तुम्हें दिया है, इससे पहले कि तुम में से किसी की मौत आ जाए, और कहे, ''ऐ मेरे रब! 'तूने' मुझे थोड़ी मोहलत और क्यों न दी कि मैं सद्क़ा करता और अच्छे लोगों में शामिल हो जाता।'' (11) और अल्लाह हरगिज़ किसी नफ़्स (प्राणी) को मोहलत देने वाला नहीं, जब कि उसका निर्धारित समय आ जाए, और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है।

आयत नं० 1 से 11 तक की व्याख्या

1-8

إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ
الْمُنَافِقِينَ لَكَاذِبُونَ ۝ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۝ وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ
أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُسَنَّدَةٌ ۖ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۚ هُمُ
الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۚ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ ۖ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّوْا
رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۝ سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ
لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝ هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَىٰ مَنْ
عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُّوا ۗ وَلِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ۝
يَقُولُونَ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ
وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝

मुनाफ़िक़ों की शरारतों का बयान

यहाँ से सूरः अल् मुनाफ़िकून शुरु हो रही है। इस में मुनाफ़िकों की बेईमानी और बात कर के फिर जाने और झूठी क़सम खा जाने का ज़िक्र है। मुनाफ़िक़ जो ऊपर से ईमान का दावा करते थे और दिल से नहीं मानते थे, यह लोग नमाज़ों में भी पाबन्दी से शरीक नहीं होते थे और जिहाद के मौक़े पर भी धोका दे देते और अपनी ह़रकतो व शरारतों से बाज़ नहीं आते थे।

एक बार रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने सह़ाबा (रज़ि०) के साथ जिहाद के लिए तशरीफ़ ले गए। (यह ग़ज़्वा बनी अल् मुस्तलक़ का वाक़िआ है और 'सुनन नसई' में इस का ज़िक्र है) मुनाफ़िक़ीन भी साथ लग गए थे, वहाँ यह हुआ कि एक मुहाजिर ने एक अन्सारी को हाथ मार दिया। इस पर अन्सारी ने मदद के लिए अन्सार को और मुहाजिर ने मुहाजिरीन को पुकारा। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने आवाज़ सुनी तो फ़रमाया, क्या जाहिलियत की दुहाई है (कि मुसलमान होने के बाद भी गिरोहबन्दी की तरफ़दारी काम करने लगी।) अ़र्ज़ किया गया, या रसूलल्लाह! मुहाजिरीन में से एक शख़्स ने अन्सारी को एक हाथ मार दिया। आप ने फ़रमाया कि इस जाहिलियत की दुहाई को छोड़ दो, यह बद्बूदार चीज़ है।

'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई' मुनाफ़िक़ों का जो सरदार था उसने भी मुहाजिरीन और अन्सारी के झगड़ने

वाली बात सुन ली, उस ने कहा कि अच्छा यह बात है कि मुहाजिरीन अन्सार को मारने लगे, यह लोग जो बाहर से आए हैं हम ने उन्हें खिलाया पिलाया तो यह इतने चढ़ गए, यह तो वही बात हुई कि जिस का खाए उसी पर ग़ुर्राए।

अब इन लोगों पर ख़र्च न करो, ताकि ख़ुद ही बिखर जाएँ खाने को नहीं मिलेगा तो ख़ुद ही तितर-बितर हो जाएँगे और उस ने यह भी कहा कि मदीना पहुँच कर इ़ज़्ज़त वाले ज़िल्लत वालों को निकाल देंगे (इ़ज़्ज़त वाला उस ने अपने आप को कहा क्योंकि अन्सारी पहले से मदीना में रहते थे और ज़िल्लत वाला मुहाजिरीन को कहा, जो मक्का मुकर्रमा से आकर मदीना मुनव्वरह में मुक़ीम हो गए थे।)

यह वाक़िआ़ 'सहीह़ बुख़ारी' में 'ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म' और 'ह़ज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से मरवी है कि सहीह़ बुख़ारी में पेज (28, 29) पर है। ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से 'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई' मुनाफ़िक़ की बात नक़्ल कर दी।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मालूम हुआ तो अ़ब्दुल्लाह ज़ोरदार क़सम खा गया और उस ने साफ़ कह दिया कि मैंने यह बात नहीं कही, 'अ़ब्दुल्लाह' के जो दूसरे साथी थे उन्होंने भी झूठी क़सम खा ली और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन की तस्दीक़ फ़रमा दी और उस पर मुझे शर्मिन्दग़ी हुई और तबीअ़त पर बोझ हुआ और रंज की वजह से घर से बाहर निकलना छोड़ दिया।

इस पर अल्लाह तआ़ला ने إِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ से لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ तक आयात नाज़िल फ़रमाईं।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुझे बुलाया और फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी तस्दीक़ फ़रमा दी। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ऐसे मौक़े पर अपने जज़्बात पर क़ाबू पाने वाले कहाँ थे जो बात उन्होंने 'ह़ातिब बिन बल्तअ़' के बारे में कही थी वही बात यहाँ भी अ़र्ज़ कर दी और कहा या रसूलल्लाह! मुझे इजाज़त दें, उस मुनाफ़िक़ की गर्दन मार दूँ। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि छोड़ दो अगर ऐसा करोगे तो लोग कहेंगे कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने साथियों को क़त्ल करते हैं।

मुनाफ़िक़ों के सरदार के बेटे का अ़मल-

'सुनन अल् तिर्मिज़ी' में भी 'ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म' (रज़ि०) की रिवायत है कि यह 'ग़ज़्व-ए-तबूक' का वाक़िआ़ है। ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) की रिवायत भी 'इमाम तिर्मिज़ी' ने नक़्ल की है, इस में यह है कि यह 'ग़ज़्व-ए-बनी अल् मुस्तलिक़' का क़िस्सा है। उ़लूम-ए-किराम ने इस दूसरी रिवायत को तर्जीह़ (वरीयता) दी है।

जब 'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई' की यह बात उस के बेटे (ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह जो मुसलमान थे) ने सुनी कि इ़ज़्ज़तदार ज़िल्लत वाले को निकाल देगा तो उन्होंने अपने बाप से कहा कि तू मदीना मुनव्वरह में वापस नहीं हो सकता जब तक तू यह इक़रार न कर ले कि तू ज़लील है और रसूलुल्लाह (सल्ल०) इ़ज़्ज़तदार है, चुनाँचे जब उस ने यह इक़रार कर लिया तो मदीना मुनव्वरह आने की इजाज़त दे दी। याद

रहे कि 'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई' के बेटे का नाम भी 'अ़ब्दुल्लाह' था जो मुसलमान थे। (दुर्रे मन्सूर)

"जब मुनाफ़िक़ीन आप के पास आते हैं तो कहते हैं कि आप अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह को मालूम है कि बिलाशुब्हा आप अल्लाह के रसूल हैं और उस के साथ ही अल्लाह तआ़ला गवाही देता है कि यह लोग अपनी गवाही और अपनी क़सम में झूठे हैं। यह बात तो सच है कि आप अल्लाह के रसूल हैं, लेकिन इन का इस अन्दाज़ से गवाही देना और क़सम खाना कि वह आप को दिल से अल्लाह का रसूल मानते हैं इस में वह झूठे हैं।

आदमी इसलिए क़सम खाता है कि वह सुनने वालों को यह बताए कि मेरा ज़ाहिर (External) व बातिन (Internal) एक है और जो कह रहा हूँ वही दिल में है, चूंकि यह लोग ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की नुबूव्वत और रिसालत के क़ायल न थे, इसलिए उन के इस दावे को और अपने इस दावे को कि हम दिल की गहराई से आप के रसूल होने की गवाही दे रहे हैं झूठा क़रार दे दिया या दर्मियान में यह भी फ़रमा दियाः-

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ

और अल्लाह जानता है कि आप अल्लाह के रसूल हैं।

आप की रिसालत के लिए उन के गवाही की कोई ज़रूरत नहीं है। बात यह है कि झूठा ही क़समें ज़्यादह खाया करता है, सच्चे आदमी तो बहुत कम कभी क़सम खा लेते हैं, जिन के दिल में खोट होता है वही अपनी ज़बान और दिल की सन्तुष्टि के लिए क़सम खाते हैं।

اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً

"उन्होंने अपनी क़समों को ढ़ाल बना लिया है"।

अपने झूठे दावे ईमान को साबित करने के लिए क़समें खाते हैं ताकि मुसलमान समझे जाएँ और मुसलमानों के माह़ौल में उन की जान, माल और औलाद मह़फ़ूज़ (Safe) रह सकें, अगर खुल कर कुफ़्र का इक़्रार कर लें तो अन्देशा है कि जो दूसरे काफ़िरों के साथ जो मामला है वही उन के साथ किया जाए और उन के साथ जो अम्न व अमान का बर्ताव होता है वह ख़त्म कर दिया जाए।

فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ

"सो उन्होंने रोक दिया अल्लाह की राह से"।

अपनी जानों को अल्लाह की राह से दूर रखा और अपनी औलाद को और दूसरे मिलने-जुलने वालों को भी।

اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ

"बेशक यह लोग जो करते हैं बुरे अ़मल हैं"।

यानी समझ रहे हैं कि हम ने अपने लिए अच्छा तरीक़ा अख़्तियार कर लिया कि मुसलमानों से भी फ़ायदा उठाते हैं और ग़ैर मुस्लिमों से भी, यह लोग अपनी बद्अ़मली की सज़ाएँ पा लेंगे।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا

"उन की यह बद्अ़मली इस वजह से है कि यह लोग पहले ईमान लाए"।

यानी दिखावटी तौर पर अपने को मोमिन बताया, उन लोगों के लिए ख़ैर इसी में थी कि ज़ाहिर व बातिन से मोमिन होते और अपने अन्दुरुन को भी ज़ाहिर के मुताबिक़ कर लेते यानी सच्चे दिल से मोमिन हो जाते, लेकिन उन्होंने यह ह़रकत की कि ज़ाहिर में भी काफ़िर हो गए यानी उन से ऐसी बातें ज़ाहिर हो गईं जिन से यह मालूम हो गया कि यह लोग मोमिन नहीं, जो ज़ाहिरी ईमान था उस को भी बाक़ी न रह सके।

فَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ (जब यह हो गया तो अल्लाह तआला की तरफ़ से उन के दिलों पर मुहर लगा दी गई) فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ (अब यह ह़क़ को न समझेंगे) और ह़क़ीक़ी बात को न जानेंगे।

मुनाफ़िक़ों की ज़ाहिरी बातें

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ

मुनाफ़िक़ीन की सिफ़त यह है कि यह लोग नज़रों में भाते हैं, इन के क़द भी बड़े हैं रंग भी अच्छे हैं।
(सह़ीह़ अल् बुख़ारी)

وَإِن يَقُولُوا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ

और बातें करने का ढंग और फ़साह़त व बलाग़त ऐसी है कि अगर आप से बातें करने लगें तो आप उन की तरफ़ मुतवज्जेह (आकर्षित) होंगे और आप उन की बात को ध्यान से सुनेंगे।

كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ *(गोया कि वह लकड़ियाँ है टेक लगाई हुई)*

यानी उन के जिस्म भी बड़े हैं और बातें भी मीठी हैं, मगर आप के काम नहीं आ सकते। वह ऐसे हैं जैसे लकड़ियाँ दीवार के सहारे खड़ी हों। जैसे लकड़ियाँ बेजान हैं ऐसे ही उन के लम्बे चौड़े जिस्मों का ह़ाल है, ईमान से ख़ाली है और हिम्मत से भी, यह आप के काम नहीं आ सकते।

'साह़िबे मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' ने यूँ तफ़्सीर की है कि यह लोग फलदार पेड़ नहीं हैं, बल्कि ऐसे हैं जैसे लकड़ियाँ हों जिन्हें दीवार के सहारे टेक दिया गया हो। इस के बाद उन की बुज़्दिली और अन्दुरुनी ख़ौफ़ का ज़िक्र फ़रमाया है।

يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَدُوُّ

"यह लोग हर चीख़ को अपने ऊपर ख़याल करते हैं कि दुश्मन है"।

चूंकि दिल से मोमिन नहीं हैं इस बात से डरते रहते हैं कि मुसलमानों को हमारे निफ़ाक़ का पता न चल जाए और जो भी चीख़ सुनते हैं तो यह समझते हैं कि हम पर ही कोई मुसीबत पड़ने वाली है।

فَاحْذَرْهُمْ लिहाज़ा आप उन से होशियार रहें, ऐसा न हो कि आप को और अहले ईमान को किसी मुसीबत में मुब्तिला (Involve) करने में कामियाब हो जाएँ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ कहाँ उल्टे फिरे जा रहे हैं, ईमान की तरफ़ आते ही नहीं।

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا ‘मुआ़लिमुल् तन्ज़ील’ भाग 4 पेज नं० (350) में लिखा है कि जब ‘अ़ब्दुल्लाह बिन उबई’ मुनाफ़िक़ के बारे में आयते क़ुर्आनिया नाज़िल हो गई जिस से उस का झूठा होना और ‘ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म’ का सच्चा होना साबित हो गया तो उस से किसी ने कहा कि देख तेरे बारे में कैसी सख़्त बात नाज़िल हुई है, तू रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हो ताकि वह तेरे लिए अल्लाह से दुआ़ कर दें। इस पर उस ने इन्कार करते हुए अपने सर को ह़रकत दी और कहने लगा, तुम लोगों ने मुझ से ईमान लाने को कहा तो मैं ईमान ले आया, तुम लोगों ने ज़कात देने के लिए कहा तो मैंने ज़कात भी दी। अब इतनी सी बात रह गई है कि मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह को सज्दः कर लूँ। इस पर अल्लाह तआ़ला ने आयते करीमा وَإِذَا قِيْلَ لَهُمْ नाज़िल फ़रमाई।

(और जब कहा गया कि आ जाओ अल्लाह के रसूल तुम्हारे लिए इस्तिग़्फ़ार कर दें तो इन्कार करते हुए अपने सरों को फेर देते हैं और तक्बीर करते हुए बेरुख़ी अख़्तियार कर लेते हैं।

‘सह़ीह़ बुख़ारी’ में لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ की तफ़्सीर में लिखा हैः-

حرکوا رؤسهم استهزوا بالنبی ﷺ

कि यह लोग सर को ह़रकत देते हैं और यह ह़रकत देना इस अन्दाज़ में होता है जिस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) का मज़ाक़ उड़ाना मक़्सद होता है। उन की बेरुख़ी का ज़िक्र करने के बाद फ़रमायाः-

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ

उन के ह़क़ में बराबर है कि आप उन के लिए इस्तिग़्फ़ार करें या न करें। आप का इस्तिग़्फ़ार करना उन्हें कोई नफ़ा पहुँचाने वाला नहीं।

لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ

“अल्लाह तआ़ला हरग़िज़ कभी उन की बख़्शिश नहीं फ़रमाएगा”।

क्योंकि कुफ़्र की बख़्शिश नहीं हो सकती और यह पहले मालूम हो गया कि उन के दिलों पर मुहर लग चुकी है।

मज़ीद फ़रमाया إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ (बेशक अल्लाह तआ़ला फ़ासिक़ क़ौम को हिदायत नहीं देता।)

अहले ईमान पर ख़र्च न करो-

इस के बाद मुनाफ़िक़ीन का दूसरा क़ौल नक़्ल करते हुए फ़रमायाः-

هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا

(यह वह लोग हैं जो यूँ कहते हैं कि उन लोगों पर ख़र्च मत करो जो रसूलुल्लाह के पास हैं यहाँ तक कि वह ख़ुद बिखर जाएँगे) मुनाफ़िक़ीन ने दूसरी बेहूदा बातों की तरह़ यह भी बड़ी जाहिलाना बात कही, उन्होंने अपने को रज़्ज़ाक़ समझ लिया और यह सोचा कि मुहाजिरीन को खाना नहीं देंगे तो रोटी की फ़िक्र उन्हें रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास से हटा देगी (दुनियादार इस तरह़ की बातें कह दिया करते

हैं और मदारिस व मसाजिद में काम करने वालों पर इस तरह़ की बातें कस देते हैं।)

अल्लाह तआ़ला ने जवाब में फ़रमा दियाः-

وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

(और अल्लाह तआ़ला ही के लिए हैं ख़ज़ाने आसमानों के और ज़मीन के) जिस को चाहेगा देगा, कोई यह न समझे कि फ़लाँ खाना देता है। सब को खिलाने पिलाने वाला अल्लाह ही है।

وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ (लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं समझते।)

अल्लाह और रसूल और मोमिनीन ही के लिए इ़ज़्ज़त है-

(और अल्लाह ही के लिए इ़ज़्ज़त है और उस के रसूल के लिए और मोमिनीन के लिए) وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ (और लेकिन मुनाफ़िक़ीन नहीं जानते।)

थोड़ी सी दुनिया के बलबूते पर यह बातें कर रहे हैं उन्हें यह मालूम नहीं कि आगे क्या होगा। अल्लाह के रसूल और अहले ईमान ही इ़ज़्ज़त वाले होंगे और यह जाहिल मुनाफ़िक़ ही ज़लील होंगे। इस तरह़ एक वह दिन भी आया कि उन को मस्जिदे नबवी से ज़िल्लत के साथ निकाल दिया गया, फिर एक-एक कर के साफ़ हो गए और बाज़ ने इस्लाम कुबूल कर के इ़ज़्ज़त की ज़िन्दगी अपना ली।

मुनाफ़िक़ीन ने जो यह कहा था कि मदीना पहुँच कर इ़ज़्ज़तदार ज़िल्लत वाले को निकाल देगा उन की इस बात को नक़्ल करते हुए फ़रमायाः-

يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ

(वह लोग कहते हैं कि अगर हम मदीना वापस हो गए तो इ़ज़्ज़त वाला ज़िल्लत वाले को निकाल देगा) इस का मतलब यह था कि हम इ़ज़्ज़तदार हैं मदीना शहर हमारा शहर है। हम इन से पहले से रहते हैं मुहाजिर बाद में आए हैं, इसलिए वह हमारे सामने ज़लील हैं।

अल्लाह तआ़ला ने जवाब में फ़रमाया وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

9-11 يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَاۤ اَخَّرْتَنِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ۚ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝

अल्लाह ने जो कुछ अ़ता फ़रमाया है उस में से ख़र्च करो

दुनिया में माल और औलाद दो चीज़ें ऐसी हैं जिन में मश्ग़ूल होकर इन्सान अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हो जाता है। फ़रायज़ और वाजिबात को छोड़ना, नवाफ़िल व ज़िक्र से दूर रहना, दुनियावी धंधों में फंसे रहना यह सब काम ऐसे हैं जो अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल करने वाले हैं। आदमी माल कमाने में लगता है तो अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हो जाता है, औलाद को मालदार बनाने के लिए और मौत

के बाद बहुत सा माल छोड़ने के लिए कमाई करता है।

हलाल हराम का ख़याल नहीं करता, ज़कात अदा नहीं करता, वाजिबात शरअिया में ख़र्च नहीं करता। अगर कोई शख़्स हलाल माल ही कमाए तब भी कमाने की धुन अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल कर देती है, फिर औलाद के ग़ैर ज़रूरी ख़र्चे, लाड और प्यार और ऐसी ही बहुत सी चीज़ें हैं जो गुनाह पर लगाती हैं और अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल कर देती हैं।

अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें, बक़द्र ज़रूरत अपनी जान के लिए अपनी औलाद के लिए अपने माँ-बाप के लिए माल कमाना, जिस में अल्लाह की रज़ा भी मक़्सूद हो यह तो अल्लाह के ज़िक्र में ही शामिल है, लेकिन जिस में दुनिया और माल ही मक़्सूद हो, उस में अल्लाह के ज़िक्र से ग़फ़्लत हो जाती है।

फिर फ़रमायाः-

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ

"और जो शख़्स ऐसा करे यानी अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जाए तो यह लोग नुक़्सान में पड़ने वाले हैं"।

जो शख़्स काफ़िर है वह तो पूरा ही ख़सारे (नुक़्सान) में है यानी उस की हलाकत यक़ीनी है, आख़िरत में उस के लिए हमेशा अ़ज़ाब है और जो शख़्स मोमिन होते हुए दुनिया के झमेलों में लगे वह बक़द्र झमेलों के अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहता है और उसी के बक़द्र ख़सारा में है और यह ख़सारा कोई मामूली नहीं है, अल्लाह का नाम लेने से ज़रा सी ग़फ़्लत भी बहुत बड़े नुक़्सान का ज़रिया बन जाती है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख़्स ने एक बार سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ कहा उस के लिए जन्नत में खजूर का दरख़्त लगा दिया जाएगा।

और यह भी फ़रमाया कि अगर मैं एक बार سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ اَكْبَرُ कह दूँ तो यह मुझे उन सब चीज़ों से ज़्यादह महबूब है जिस पर सूरज निकलता है। अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल होने में कितना बड़ा नुक़्सान है?

इस के बाद माल ख़र्च करने का हुक्म फ़रमाया और इर्शाद फ़रमायाः-

وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ कि मौत आने से पहले उस माल से ख़र्च करो जो हम ने तुम को दिया है।

चूंकि ज़िक्रुल्लाह (अल्लाह के ज़िक्र) से ग़फ़्लत माल कमाने में ज़्यादह होती है इस लिए साथ ही माल ख़र्च करने का भी हुक्म दे दिया, माल आता है तो ख़र्च भी होता है, नेक मोमिनीन उसे अल्लाह की रज़ा में ख़र्च करते हैं।

और जिन लोगों को माल से मुहब्बत होती है दीन पर चलने का शौक़ नहीं होता वह माल लेकर बैठे रहते हैं, रुपये पैसे के ग़ुलाम बने रहते हैं, फ़र्ज़ ज़कात और थोड़ा सा सद्क़ः भी उन्हें भारी पड़ता है।

ऊपर की आयत में यह भी फ़रमाया, कि मौत के आने से पहले माल ख़र्च करो, अगर ज़िन्दगी में अल्लाह के लिए माल ख़र्च न किया तो मौत के वक़्त यह तमन्ना काम नहीं आएगी कि थोड़ी सी ज़िन्दगी

मिल जाती तो अल्लाह के लिए ख़र्च करता और नेक लोगों में से हो जाता।

“हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि जिस के पास इतना माल हो जिस के ज़रिये बैतुल्लाह का हज कर सकता है और ज़कात फ़र्ज़ हो गई हो, फिर उस ने उन की ज़कात अदा न की, तो वह मौत के वक़्त दुनिया में वापसी का सवाल करेगा, यानी यह कहेगा कि मुझे वापस ज़िन्दगी दे दी जाए ताकि सद्क़ः दे दूँ और नेक काम करुँ। इस के बाद हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ से लेकर आख़िरी सूरः तक तिलावत फ़रमाई।

आख़िर में फ़रमायाः-

وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝

(और अल्लाह हरगिज़ किसी नफ़्स (प्राणी) को मोहलत देने वाला नहीं, जब कि उस का निर्धारित समय आ जाए और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस की पूरी ख़बर रखता है।)

वक़्त आने पर तो मरना ही है जिसे जो कुछ अ़मल करना है मौत से पहले ही कर ले, मौत के वक़्त अफ़्सोस काम न देगा और ज़िन्दगी वापस न मिलेगी और कोई यह न समझे कि ज़िन्दगी भर मैंने जो कुछ किया है उस की किसी को ख़बर नहीं है, क्योंकि जिस ने पैदा किया और ज़िन्दगी दी उस को तुम्हारे हर काम की ख़बर है।

(भाग-64)

सूर-ए-तग़ाबुन

(सूरः नं. 64)

सूरः तग़ाबुन का संक्षिप्त परिचय

नाम– आयत नं० (9) يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ से यह नाम लिया गया है यानी यह सूरः जिस में **'अल् तग़ाबुन'** का शब्द आया है।

नाज़िल होने का ज़माना–

अक्सर टीकाकारों (मुफ़स्सिरीन) के नज़्दीक यह सूरः मदनी है। अल्बत्ता 'ज़िहाक' कहते हैं कि यह मक्की है और 'कल्बी' का क़ौल है कि इस की कुछ आयतें मक्की और कुछ मदनी हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि **'सूरः तग़ाबुन'** मक्का में नाज़िल हुई थी, सिर्फ़ आख़िर की चन्द आयतें औफ़ बिन मालिक अश्जई के बारे में मदीना में नाज़िल हुई थीं, उन्होंने नबी करीम (सल्ल०) से अपने साथ अपने अहल व अयाल की बद्सुलूकी का ज़िक्र किया था, तो यह يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ सूरः तक नाज़िल हुई।

आयत नं० 1 से 18 तक

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ
وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ
يَّهْدُوْنَنَا ۫ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ۚ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝ زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ۚ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ
ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ يَوْمَ
يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۚ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۚ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ۝ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا
وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا
اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۚ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ اِنْ تُقْرِضُوا
اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

अनुवाद-

(1) अल्लाह की तस्बीह़ करती हैं वे सारी चीज़ें, जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं, 'उसी' की बादशाही है, और 'उसी' के लिए ह़म्द (प्रशंसा) है, और 'वह' हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है। (2) 'वही' तो है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुममें से कुछ तो इन्कार करने वाले हैं और तुममें से कुछ ईमान वाले हैं, और तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। (3) 'उसी' ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया, और 'उसी' ने तुम्हारी सूरतें बनायीं, तो कितनी अच्छी सूरतें बनायीं, और 'उसी' की ओर लौट कर जाना है। (4) 'वह' जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और तुम जो कुछ छिपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो उसे 'वह' जानता है, और अल्लाह सीनों में छिपी बातों को जानता है। (5) क्या तुम्हें उन लोगों की बातें नहीं पहुँचीं! जिन्होंने इससे पहले इन्कार किया था, तो उन्होंने अपने करतूतों के वबाल का मज़ा चखा, और उनके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है? (6) यह इस वजह से कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट निशानियों के साथ आते रहे, मगर उन्होंने कहा, ''क्या इन्सान हमारी रहनुमाई करेंगे?'' इस तरह उन्होंने इन्कार किया, और मुँह मोड़ लिया; और अल्लाह भी उनसे बेपरवाह हो गया, अल्लाह तो है ही बेपरवाह तअ़रीफ़ के लायक़। (7) जिन लोगों ने इन्कार किया, (उनका दावा है) कि वे हरगिज़ (मरने के बाद) न उठाए जाएँगे, कह दीजिए, ''क्यों नहीं, मेरे रब की क़सम! तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर जो

कुछ तुमने किया है उसे तुम्हें बता दिया जाएगा, और यह काम अल्लाह के लिए आसान है।'' (8) तो ईमान लाओ अल्लाह पर और 'उसके' रसूल पर और उस नूर (क़ुर्आन) पर, जो 'हमने' नाज़िल किया है, जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उसकी ख़बर रखता है। (9) जिस दिन अल्लाह तुम्हें इकट्ठा करेगा- इकट्ठा होने के दिन- वह नफ़ा-नुक़सान का दिन होगा; और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाए और भले काम करे उसकी बुराइयां अल्लाह उससे दूर कर देगा, और ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे, यही बड़ी कामियाबी है। (10) और जिन्होंने इन्कार किया, और 'हमारी' आयतों को झुठलाया वही दोज़ख़ वाले हैं; जिसमें वे हमेशा रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है; (11) नहीं आती कोई भी मुसीबत मगर अल्लाह की इजाज़त से, और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान रखता है, तो 'वह' उसके दिल की रहनुमाई करता है, और अल्लाह हर चीज़ को जानता है। (12) और अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल की पैरवी करो, अगर तुम मुँह मोड़ते हो, तो 'हमारे' रसूल पर केवल साफ़-साफ़ पहुंचा देने की ज़िम्मेदारी है। (13) अल्लाह 'वह' है जिसके सिवा कोई इलाह (उपास्य) नहीं, और अल्लाह ही पर मोमिनों को भरोसा करना चाहिए। (14) ऐ ईमान वालो! तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारी औलादों में से कुछ तुम्हारे दुश्मन भी हैं, तो तुम उनसे होशियार रहो; और अगर तुम माफ़ कर दो, और टाल जाओ, और माफ़ी दे दो तो अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम वाला है। (15) तुम्हारे माल और तुम्हारी औलादें तुम्हारे लिए आज़माइश हैं, और अल्लाह के पास बड़ा बदला है। (16) तो जहाँ तक तुमसे हो सके अल्लाह से डरते रहो, और सुनो, और हुक्म मानो, और खर्च करो अपनी ही भलाई के लिए; और जो व्यक्ति अपने दिल की तंगी से बचा लिया गया, तो ऐसे ही लोग कामियाब होने वाले हैं। (17) अगर तुम अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दो तो वह तुम्हारे लिए उसे दो गुना कर देगा, और तुम्हारे गुनाह को माफ़ कर देगा, और अल्लाह बड़ा क़द्र करने वाला, ह़लीम (सहनशील) है; (18) ग़ायब और हाज़िर का जानने वाला, ग़ालिब, ह़िकमत वाला है।

आयत नं० 1 से 18 तक की व्याख्या

1 يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

सूरः ह़दीद, सूरः ह़श्र और सूरः जुमअ़ की पहली आयत की तफ़्सीर में बयान किया जा चुका है कि आसमानों और ज़मीन में जितने हैवानात, नबातात (पेड़-पौधे) और जमादात (बेजान चीज़ें) हैं, सब अल्लाह की पाकी और बड़ाई बयान करते हैं, कोई अपनी ज़बान से तस्बीह़ पढ़ता है। जैसे फ़रिश्ते और जिन्न व इन्स और किसी को देखने से पता चलता है कि उस का ख़ालिक़ तमाम ख़राबियों से पाक है। जैसे आसमान व ज़मीन, दरख़्त, पौधे और पहाड़ वग़ैरह।

वह शहन्शाह है, आसमानों और ज़मीन में उस के सिवा किसी का हुक्म नहीं चलता, तमाम तअ़रीफ़ों का वह तन्हा ह़क़्दार है और उस की ताक़त व क़ुद्रत असीमित है, वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

2 هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

मुफ़स्सिर अबू अल् सऊद ने इस की तफ़्सीर यूँ बयान की है कि अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों को

सब से अच्छी शक्ल में पैदा किया, उन में इल्मी और अ़मली कमालात को क़ुबूल करने की सलाहियत रखी, लेकिन उन में से बाज़ ने अपनी पैदाइश के तक़ाज़े के ख़िलाफ़ कलिमा-ए-हक़ का इन्कार कर के कुफ़्र को अख़्तियार कर लिया और बाज़ ने अपनी पैदाइश के तक़ाज़े के मुताबिक़ ईमान की राह अख़्तियार की और उस पर चल पड़े। उन की तख़्लीक़ का तक़ाज़ा यह था कि वह सिर्फ़ ईमान को ही अख़्तियार कर लेते और अपने मालिक की नेअ़मतों का शुक्र अदा करते, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया, बल्कि मुख़्तलिफ़ गिरोहों और टोलियों में बट गए।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं मोमिन से पहले काफ़िर का ज़िक्र इसलिए आया है कि मक्की ज़िन्दगी में कुफ़्फ़ार ही अक्सरियत (Majority) में थे।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि लोगों! अल्लाह तुम्हारे आ़माल से अच्छी तरह़ बाख़बर है, एक ज़र्रह भी उस से छुपा हुआ नहीं है और वह ज़रूर तुम्हें तुम्हारे उन आ़माल के मुताबिक़ बदला देगा।

3 خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝

अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को ख़ास उद्देश्य के लिए पैदा किया है, उन्हें बेमक़्सद नहीं पैदा किया और इन्सानों की पैदाइश तो उस ने सब से अच्छी शक्ल व सूरत में की है, उन्हें निहायत मोअ़तदिल मिज़ाज दिया, अ़क्ल, समझ और सुनने की ताक़त दी।

अल्लाह तआ़ला ने इसी को सूरः ग़ाफ़िर आयत नं० (64) में यूँ बयान फ़रमायाः-

وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ

"और उस ने तुम्हारी शक्ल व सूरत बनाई तो तुम्हें बहुत ही अच्छी सूरत अ़ता की और बतौर रोज़ी तुम्हें उ़म्दह चीज़ें दीं"।

सूरः तीन आयत नं० (4) में फ़रमाया لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ

"हम ने इन्सान को सब से अच्छी शक्ल व सूरत में पैदा किया है"।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सब को उसी के पास लौट कर जाना है, तब वह उन्हें उन के ईमान व कुफ़्र और अच्छे और बुरे आ़माल का बदला देगा।

4 يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

अल्लाह तआ़ला आसमानों और ज़मीन के तमाम छुपे, ज़ाहिर और तमाम ग़ायब व हाज़िर चीज़ों की ख़बर रखता है, बल्कि वह अ़ल्लामुल् ग़ुयूब तो इन्सानों के दिलों में छुपे हुए रहस्य, अच्छी और बुरी नियतों को भी जानता है यानी उस का इ़ल्म हर चीज़ को घेरने वाला है, कोई चीज़ भी उस से छुपी हुई नहीं है।

इसलिए बन्दों को चाहिए कि वह अपना अन्दुरुन बुरे अख़्लाक़ से पाक रखें और उन अच्छे अख़्लाक़ को अपनाए जिन से अल्लाह तआ़ला खुश होता है।

5-6 أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَبْلُ فَذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُ كَانَت تَّأْتِيهِمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالُوا أَبَشَرٌ يَهْدُونَنَا فَكَفَرُوا وَتَوَلَّوا ۚ وَّاسْتَغْنَى اللَّهُ ۚ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि पिछली जिन क़ौमों ने कुफ़्र की राह अख़्तियार की, क्या तुम्हें उन के अन्जाम की ख़बर नहीं मिली है? जैसे नूह़, आ़द, समूद और लूत की क़ौमें, किस तरह़ अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन से उन का वजूद ख़त्म कर दिया और जब क़ियामत आएगी तो वह उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा।

और यह सब उन के साथ इसलिए हुआ कि उन के पास अल्लाह के पैग़म्बर स्पष्ट निशानियाँ लेकर आते थे, तो घमण्ड में आकर उन्हें झुठला देते थे और उन का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहते थे कि उन्हें देखो, यह हमारे ही जैसे इन्सान हैं और दावा करते हैं कि यह हम को हिदायत करने वाले हैं। फिर उन्होंने अल्लाह के पैग़ामे ह़क़, दीन और रसूल का इन्कार कर दिया और सरकशी की राह अख़्तियार कर ली, तो अल्लाह तआ़ला ने भी उन के ईमान और उन की बन्दग़ी से इज़्हार बेनियाज़ी करते हुए उन्हें हलाक कर दिया।

इसलिए कि अल्लाह तआ़ला अपनी तमाम मख़्लूक़ात और अपने बन्दों के ईमान व अ़मल से बेनियाज़ है, वह किसी चीज़ का मोह़ताज नहीं है और हर चीज़ उस की मोह़ताज है और तमाम तअ़रीफ का वह अकेला ह़क़्दार है और हर मख़्लूक़ बहरह़ाल उसी की तअ़रीफ़ बयान करती रहती है।

7 زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن لَّن يُبْعَثُوا ۚ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝

अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों की हठधर्मी और उन की इस सोच को रद्द किया है कि वह दोबारह ज़िन्दा नहीं किये जाएँगे। अल्लाह ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि वह अपने रब की क़सम खाकर उन के ग़लत कामों को रद्द करें और उन के दिल व दिमाग़ में यह बात उतारने की कोशिश करें कि क़ियामत ज़रूर आएगी और दोबारह ज़रूर उठाए जाएँगे और उन्हें उन के करतूतों की ख़बर दी जाएगी और ऐसा करना अल्लाह के लिए बहुत आसान है।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं, क़ुर्आन में यह तीसरी आयत है जिस में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को मरने के बाद उठाए जाने की यक़ीन दहानी के लिए अपने रब की क़सम खाने का हुक्म दिया है।

पहली आयत सूरः यूनुस (53) وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ ۖ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ है, जिस का तुर्जमः है "और वह आप से दर्याफ़्त करते हैं कि क्या अ़ज़ाबे आख़िरत वाक़ई सच है। आप फ़रमा दीजिए कि हाँ, क़सम है मेरे रब की, वह वाक़ई सच है"

दूसरी आयत सूरः सबा (3) وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۖ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ में है, जिस का तर्जुमः हैः

"और कुफ़्फ़ार कहते हैं कि हम पर क़ियामत नहीं आएगी। आप कह दीजिए कि हाँ, मेरे रब की क़सम! वह तुम पर यक़ीनन आएगी"।

8 فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝

जब क़ियामत का आना, तमाम इन्सानों का दोबारा ज़िन्दा किया जाना और जज़ा व सज़ा यक़ीनी है तो लोगों! तुम्हारे लिए इसी में भलाई है कि अल्लाह, उस के रसूल और क़ुर्आन करीम पर ईमान ले आओ, जिस की रौशनी कुफ़्र व जिहालत के अंधेरों को ख़त्म कर देती है और जिस की बदौलत इन्सान सीधे रास्ते पर बेधड़क चलता जाता है, जो उसे 'जन्नतुल् फ़िरदौस' तक पहुँचा देती है।

और दुनिया में इस यक़ीन के साथ ज़िन्दा रहो कि अल्लाह तुम्हारे आ़माल से पूरी तरह़ बाख़बर है इसलिए क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से निजात की यही एक सूरत है कि ईमान और नेक अ़मल की राह अख़्तियार करो।

9 يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

इस आयते करीमा का तअ़ल्लुक़ ऊपर वाली दोनों आयतों से है। जिन में बयान किया गया है कि क़ियामत के दिन इन्सान को उस के आ़माल की ख़बर दी जाएगी। क़ियामत की तफ़्सील यहाँ बयान की गई है कि उस दिन अल्लाह तआ़ला तमाम इन्सानों को जमा करेगा जो शुरु से दुनिया के ख़त्म होने तक दुनिया में आए और उस दिन की एक सिफ़त यह होगी कि अहले जन्नत, जन्नत में अपने मक़ामात के अ़लावा उन मक़ामात को भी पा लेंगे जो अहले जहन्नम के लिए मख़्सूस (ख़ास) थे। अगर वह अहले जहन्नम में से होते और अहले जहन्नम को अपनी जगहों के अ़लावा उन जगहों को भी दिखाया जाएगा जो अहले जन्नत के लिए खास थे, अगर वह जन्नतियों में से होते।

नबी करीम (सल्ल०) की सह़ीह़ ह़दीस है कि जब कोई बन्दा जन्नत में दाख़िल किया जाएगा तो उसे उस की जहन्नम में मख़्सूस जगह दिखाई जाएगी, जिस में अगर वह बुरे आ़माल करता तो दाख़िल किया जाता, ताकि अल्लाह का शुक्रिया अदा करे और जब कोई बन्दा जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा तो उसे उस की जन्नत में मख़्सूस जगह दिखाई जाएगी जिस में अगर वह अच्छे आ़माल करता तो दाख़िल किया जाता, ताकि उस की ह़स्रत व अफ़्सोस में इज़ाफ़ा (वृद्धि) हो।

क़ियामत के दिन की यही वह सिफ़त है जिस की वजह से उसे यहाँ يَوْمُ التَّغَابُنِ कहा गया है यानी ऐसा दिन जिस में लोग एक दूसरे को नुक़्सान पहुचाएँगे जैसे दुनिया में अहले तिजारत एक दूसरे को ख़सारा में डालते हैं।

आयत के दूसरे ह़िस्से وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ में आख़िरत की कामियाबी और सआ़दत व कामरानी का सबब बयान किया गया है कि जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाएगा और नेक अ़मल करेगा, अल्लाह तआ़ला उस के गुनाहों को माफ़ कर देगा और उसे ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें जारी होंगी। उन जन्नतों में अहले जन्नत हमेशा रहेंगे और यही वह कामियाबी है जिस से बढ़कर कामियाबी नहीं हो सकती, इसलिए अहले जन्नत जहन्नम से निजात पा जाएँगे, जिस में दाख़िल होने से

बढ़कर इन्सान की कोई बद्‌बख़्ती नहीं हो सकती।

10 وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ

इस आयत में क़ियामत के दिन काफ़िरों की संगदिली व बद्‌बख़्ती की वजह बयान की गई है कि जो लोग दुनिया में कुफ़्र की राह अपनाएँगे और अल्लाह की आयतों को घमण्ड व दुश्मनी की वजह से झुठलाएँगे, आख़िरत में उन का ठिकाना जहन्नम होगा जहाँ वह हमेशा रहेंगे और वह बहुत ही बुरा ठिकाना होगा।

11 مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ

मुफ़स्सिरीन ने इस आयते करीमा का सबबे नुज़ूल कुफ़्फ़ारे मक्का का यह क़ौल नक़्ल किया है कि अगर मुसलमानों का दीन बरहक़ होता, तो अल्लाह तआ़ला उन्हें दुनियावी मुसीबतों में गिरफ़्तार न करता। अल्लाह तआ़ला ने उन के जवाब में फ़रमाया कि मुसीबत चाहे कैसी ही हो, किसी भी इन्सान को हो, अल्लाह के हुक्म और उस की मर्ज़ी के बिना नहीं होती।

इस में अच्छे और बुरे सभी बराबर हैं, लेकिन जो बन्दा मोमिन इस बात पर यक़ीन रखता है कि उसे जो मुसीबत पहुँचती है, तो वह अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी समझता है, जिससे अल्लाह तआ़ला उस के ईमान को बढ़ा देता है और उसे सुकूने क़ल्ब अ़ता फ़रमाता है और क़ियामत के दिन उसे अज्र अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाएगा। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः अल् ज़ुमर आयत नं० (10) में फ़रमाया हैः-

اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ "सब्र करने वालों को असीमित अज्र दिया जाएगा"।

लेकिन जो बन्दा सब्र का दामन छोड़ देगा, अल्लाह की तक़्दीर पर राज़ी नहीं रहेगा और शिकायत करेगा, उसे अल्लाह उस के नफ़्स के ह़वाले कर देगा और क़ियामत के दिन उसे कोई अच्छा बदला नहीं मिलेगा।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह हर चीज़ की पूरी ख़बर रखता है, कायनात में कोई चीज़ उस की इजाज़त और उस के इ़ल्म के बग़ैर वजूद में नहीं आती और यह बात इस बात का तक़ाज़ा करती है कि उस की तक़्दीर पर राज़ी रहा जाए और उस की मर्ज़ी के आगे हर वक़्त झुक जाया जाए।

12 وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰي رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ

अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों को हुक्म दिया कि वह अल्लाह की फ़रमाँबरदारी करें और उस के रसूल की फ़रमाँबरदारी करें, इसलिए कि दुनिया व आख़िरत की हर कामियाबी और नेकबख़्ती का दारोमदार उसी पर है और अगर कोई अल्लाह की फ़रमाँबरदारी और रसूल की फ़रमाँबरदारी से मुँह फेर लेता है, तो उस का नुक़्सान उसी को पहुँचेगा अल्लाह के रसूल पर उस की ज़िम्मेदारी नहीं, उस का काम तो पहुँचाना था जो उस ने अन्जाम दे दिया।

13 اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ

ऊपर की आयतों में जिस अल्लाह ने अपनी फ़रमाँबरदारी और अपने रसूल की फ़रमाँबरदारी का हुक्म दिया है, वह अल्लाह की ज़ात है जिस के सिवा कोई बन्दग़ी के लायक नहीं है, इसलिए मोमिनों को हर ह़ाल में सिर्फ़ उसी पर भरोसा रखना चाहिए।

14 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِنْ تَعْفُوا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

मक्का के बाज़ लोगों ने इस्लाम के बाद हिजरत की नियत की तो उन की बीवियों और बाल बच्चों ने उन्हें हिज्रत करने से रोक दिया। अल्लाह तआ़ला ने उन्हीं मुसलमानों को हुक्म दिया कि वह अपने बाल बच्चों से बच कर रहें और उन की मर्ज़ी के मुताबिक़ अल्लाह की मर्ज़ी के कामों से न रुकें।

इब्ने जरीर ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि इस आयत के इस ह़िस्सा के नाज़िल होने के बाद जब कोई मुसलमान अपने बाल बच्चों की ओर से हिजरत से रोका जाता तो उन्हें धमकी देता कि उन्होंने उसे रोका तो वह उन्हें सज़ा देगा इस पर आयत का दूसरा ह़िस्सा وَإِنْ تَعْفُوا وَتَصْفَحُوا नाज़िल हुआ।

जिस में उन्हें दरगुज़र का तरीक़ा अपनाते की नसीह़त की गई इसलिए कि अल्लाह बड़ा दरगुज़र करने वाला है और दरगुज़र करने वाले को पसन्द करता है और उस के बदले में अज्रे अ़ज़ीम अ़ता करता है।

15 إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللَّهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

इब्ने जरीर ने ज़िह़ाक से रिवायत की है कि कुछ लोग इस्लाम लाने के बाद अपने बीवी, बच्चों और बाप-माँ को छोड़कर नबी करीम (सल्ल०) के पास चले जाते, तो उन के ख़ानदान वाले अल्लाह का वास्ता देकर उन्हें सब कुछ छोड़कर चले जाने से मना करते, जिस से बाज़ लोग प्रभावित होकर हिज्रत करने से रुक जाते। ज़िह़ाक़ कहते हैं कि ऐसे ही लोगों के बारे में यह आयत नाज़िल हुई थी।

लेकिन तफ़्सीर के वसूल के मुताबिक़ आयत का हुक्म आ़म है और उस के ज़रिये तमाम मोमिनों को इस बात से डराया गया है कि उन्हें अपने बाल-बच्चों की मुह़ब्बत और उन के ख़्वाहिश की पैरवी में अल्लाह की बन्दग़ी और हिज्रत व जिहाद से नहीं रुकना चाहिए।

16 فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِأَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَنْ يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

जब मोमिनों को हुक्म दिया गया कि वह माल व औलाद के फ़ित्ना में न पड़ें और उन की मुह़ब्बत पर अल्लाह और उस के रसूल की इताअ़त (फरमाँबदारी) को तर्जीह़ (वरीयता) न दें तो यह बता देना भी उन के लिए बेहतर रहा कि अल्लाह तआ़ला उन की ताक़त से ज़्यादह डरने और नेक अ़मल का मुताल्बा करने का हुक्म नहीं करता और यह कि उन्हें दर्मियानी राह अख़्तियार करने का हुक्म देता है।

इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि लोगों! तुम जितनी ताक़त रखते हो उतना अल्लाह से डरते रहो और अल्लाह के हुक्मों को ख़ूब अच्छी तरह़ समझो और उन पर अ़मल करो और अल्लाह ने तुम्हें जो माल व दौलत दिया है उस में से उस की राह में ख़र्च करो, इसी में तुम्हारे लिए भलाई है और जान लो कि आख़िरत में कामियाबी पाने वाले सिर्फ़ वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला माल व दौलत की लालच, उस की बन्दग़ी और कंजूसी की बीमारी से बचा ले, जिस के नतीजे में वह अल्लाह का दिया हुआ माल उस की राह में खर्च़ करने से गुरेज़ करते हैं।

इस आयते करीमा से फ़ुक़्हा दलील लेते हैं कि हर वह अ़मल वाजिब जिस के करने से बन्दा बेबस हो जाए तो वह उस के लिए माफ़ हो जाता है और जिस अ़मल के बाज़ ह़िस्से की उसे क़ुद्रत हो और बाज़ ह़िस्से के करने से बेबस हो तो वह सिर्फ़ अपनी ताक़त व क़ुद्रत के मुताबिक़ अ़मल का ही ज़िम्मेदार होगा और बाक़ी उस से ख़त्म हो जाएगा।

जैसा कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया कि “मैं जब तुम्हें किसी काम का हुक्म दूँ तो अपनी ताक़त के मुताबिक़ उस पर अ़मल करो”।

17-18 إِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٧﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने का मज़ीद शौक दिलाते हुए लोगों से कहा गया कि तुम उस की राह में जो ह़लाल माल भी ख़र्च करोगे यानी उसे क़र्ज़ दोगे, जिसे कई गुना बढ़ा कर तुम्हें लौटा दिया जाएगा और मज़ीद तुम्हारे गुनाह भी माफ़ कर दिये जाएँगे। इसलिए कि वह **‘शकूर’** है, अपने बन्दे के थोड़े अ़मल के बदले देता है और वह **‘ह़लीम’** है, गुनाहों पर जल्द पकड़ नहीं करता, बल्कि तौबः की मोहलत देता है और वह ग़ायब व ह़ाज़िर तमाम आ़माल की ख़बर रखता है।

इसलिए कोई भलाई का अमल उस के नज़्दीक समाप्त (समाप्त) नहीं होता और वह बड़ा ही ज़बरदस्त और बड़ी हि़क्मतों वाला है, उस पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता और उस के तमाम हुक्म हि़क्मतों से भरे होते हैं जिन्हें वही जानता है।

(भाग–65)

सूर–ए–तलाक़

(सूरः नं. 65)

सूरः तलाक़ का संक्षिप्त परिचय

नाम– आयत नं० (1) में दो बार तलाक़ का लफ़्ज़ आया है और पूरी सूरः का मौज़ूअ़ तलाक़ के अह़काम हैं, इसीलिए इस का नाम "सूरः तलाक़" रख दिया गया। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने इसे "छोटी सूरः निसा" भी कहा है।

नाज़िल होने का ज़माना–

'कुर्तुबी' ने लिखा है कि यह सूरः तमाम मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों) के नज़्दीक मदनी है। इब्ने मरदूविया और बैहक़ी वग़ैरह ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि सूरः तलाक़ मदीना में नाज़िल हुई थी।

आयत नं० 1 से 7 तक

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ
وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۚ
لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ۝ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ
وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ۚ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ
وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ۚ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ
اَمْرِهٖ ۚ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝ وَالّٰٓـِٔيْ يَىِٕسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآىِٕكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ
اَشْهُرٍ ۙ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ۚ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝
ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا ۝ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ
سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ۚ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ
اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَاِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗٓ اُخْرٰى ۝ لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ۚ
وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّآ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَآ اٰتٰىهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۝

अनुवाद-

(1) ऐ नबी! जब आप ओ़रतों को तलाक़ दें तो उन्हें तलाक़ उनकी इद्दत के हिसाब से दें और इद्दत का शुमार (गणना) रखें और अल्लाह का डर रखें, जो आप का रब है, उन्हें उनके घरों से न निकालें और न वे खुद निकलें- सिवाय इसके कि वे कोई खुली बद्कारी के काम कर बैठें- और यह अल्लाह की तय की हुई सीमाएं हैं, और जो अल्लाह की सीमाओं से आगे बढ़ेगा, वह अपने आप पर ज़ुल्म करेगा; आप नहीं जानते! शायद अल्लाह इस (तलाक़) के बाद कोई (अच्छी) सूरत पैदा कर दे; (2) जब निर्धारित समय को पहुंच जाएँ, तो उन्हें भले तरीक़े पर रोक लें या भले तरीक़े पर अलग कर दें, और अपने में से दो इन्साफ़ करने वाले मर्दों को गवाह बना लें, और गवाह अल्लाह के लिए क़ायम रखें, यह नसीहत उनको की जाती है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हों, और जो अल्लाह से डरेगा, 'वह' उसके लिए राह निकाल देगा; (3) और उसको ऐसी जगह से रिज़्क़ देगा, जहाँ से उसको गुमान भी न होगा, और जो अल्लाह पर भरोसा करेगा, तो 'वह' उसके लिए काफ़ी होगा, अल्लाह अपना काम पूरा कर के रहता है, अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा (योजना) तय कर रखा है। (4) और तुम्हारी ओ़रतों में से जो मासिक धर्म (हैज़) से मायूस हो चुकी हों, उनके बारे में अगर तुम को शक हो, तो उनकी इद्दत तीन महीने है, और उनकी भी जिनको मासिक धर्म न आया हो, और गर्भवती (ह़ामला) ओ़रतों की इद्दत बच्चा हो जाने तक है; और जो अल्लाह से डरेगा, तो 'वह' उसके मामले में आसानी पैदा कर देगा। (5) यह अल्लाह का हुक्म है, जो 'उसने' तुम्हारी ओर उतारा है, और जो कोई अल्लाह का डर रखेगा उसकी बुराइयों को 'वह' दूर कर देगा और उसके अज्र (बदले) को बढ़ा देगा। (6) अपनी हैसियत के अनुसार जहां तुम खुद रहते हो उन्हें

भी उसी जगह रखो, और उन्हें तंग करने के लिए न सताओ, और अगर वे गर्भवती (हामला) हों तो उन पर खर्च करते रहो, यहाँ तक कि बच्चा पैदा हो जाए, फिर अगर वह तुम्हारे लिए बच्चे को दूध पिलाएँ तो तुम उनकी उजूरत (मजदूरी) दो, और भले तरीक़े पर आपसी बात-चीत के ज़रिये मामला तय कर लो, और अगर तुम कोई तंगी महसूस करो, तो फिर कोई दूसरी औ़रत उसे दूध पिलाए। (7) हैसियत वाला अपनी हैसियत के अनुसार खर्च करे, और जिसको कम रोज़ी दी गयी है वह उसी में से खर्च करे जो अल्लाह ने उसे दिया है, अल्लाह किसी पर उससे ज़्यादा बोझ नहीं डालता जिसको जितना दिया है, जल्द ही अल्लाह तंगी के बाद आसानी पैदा कर देगा।

आयत नं० 1 से 7 तक की व्याख्या

1-3

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا
تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۗ وَتِلْكَ حُدُوْدُ
اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۗ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ
اَمْرًا ۝ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ
عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ۗ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ ۬ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۗ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ۗ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝

तलाक़ और इ़द्दत से सम्बन्धित हुक्म

यहाँ से सूरः तलाक़ शुरु हो रही है। इस के पहले रुकूअ़ में तलाक़ और इ़द्दत के मसायल बताए हैं, दर्मियान में दूसरे फ़ायदे भी ज़िक्र हुए हैं, चूंकि इस में औ़रतों से सम्बन्धित हुक्म हैं इसलिए इस का दूसरा नाम 'सूरः निसा अल् क़ुस्रा' भी है। 'सह़ीह़ बुख़ारी' में है कि ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) ने इसे इसी नाम से मौसूम किया है।

अस्ल बात तो यही है कि जब मर्द औ़रत का आपस में शरई़ निकाह़ हो जाए तो आख़िर ज़िन्दगी तक मेल मुह़ब्बत के साथ ज़िन्दगी गुज़ार दें, लेकिन बाज़ मर्तबः ऐसा होता है कि तबीअ़तें नहीं मिलती हैं और कुछ ऐसे अस्बाब बन जाते हैं कि अ़लैह़िदगी (Sepration) अख़्तियार करनी पड़ जाती है, लिहाज़ा शरीअ़ते इस्लामिया में तलाक़ को भी रखा गया है। जब शौहर तलाक़ दे दे तो उस के बाद औ़रत पर इ़द्दत गुज़ारना भी लाज़िम है, जब तक इ़द्दत न गुज़र जाए औ़रत को किसी दूसरे मर्द से निकाह़ करने की इजाज़त नहीं है इ़द्दत के भी बहुत से अह़काम हैं।

हैज़ वाली औ़रत और ह़मल वाली औ़रत और बिना ह़मल (बिना गर्भ) वाली औ़रत और ज़्यादह उ़म्र वाली औ़रत (जिसे हैज़ न आता हो) उन के इ़द्दत के दिनों में फ़र्क़ है।

जिन औ़रतों को हैज़ आता हो अगर उन को तलाक़ दे दी जाए और ह़मल (गर्भ) से न हों तो उन की इ़द्दत ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) और ह़ज़रत इमाम अह़मद बिन ह़म्बल (रह़०) के नज़्दीक तीन हैज़ हैं और ह़ज़रात शाफ़ई़ (रह०) के नज़्दीक तीन तुहर (पाकी) हैं। यह इख़्तिलाफ़ शब्द 'क़ुरु' का मतलब तय करने की वजह से हो गया, जो सूरः अल् बक़रः में आया है।

यह शब्द क़ुरअ़ का बहुवचन है, जो हैज़ के अर्थ में भी आता है और पाक़ी के अर्थ भी। अपने-अपने इज्तिहाद (Research) के अनुसार किसी ने इस को हैज़ के अर्थ में लिया और किसी ने पाकी के अर्थ में लिया, हर एक के दलायल और तर्जीह़ की वजह अपने-अपने मस्लक की किताबों में लिखी है।

यहाँ सूरः अल् तलाक़ में फ़रमाया कि ऐ नबी! जब तुम औ़रतों को तलाक़ दो तो ऐसे वक़्त में तलाक़ दो कि तलाक़ के बाद उन की इ़द्दत शुरु हो जाए।

इस में सबसे पहले ख़िताब तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) को है और उस के बाद 'ज़मीर जमअ़ मुज़क्कर ह़ाज़िर' लाकर طَلَّقْتُمُ النِّسَاۤءَ फ़रमाया है, क्योंकि उम्मत के लिए अह़काम बयान करना मक़्सूद है।

हैज़ वाली औ़रत की इ़द्दत ह़न्फ़िया के नज़्दीक चूंकि तीन हैज़ हैं इसलिए उन के नज़्दीक فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ का मतलब यह है कि—

ऐसे वक़्त में तलाक़ दो कि उस के बाद इ़द्दत शुरु हो जाए। तलाक़ के बाद जो पहला हैज़ आएगा वह हैज़ और उस के बाद दो हैज़ आने पर इ़द्दत पूरी हो जाएगी। जब इ़द्दत गुज़ारने के लिए तीन हैज़ पूरे करने में तलाक़ ऐसे वक़्त में दी जाए जो हैज़ शुरु होने से पहले हो और यह वक़्त तुहर (पाकी) का हो कि तलाक़ उस तुहर में देनी चाहिए जिस में जिमाअ़ (सम्भोग) न किया हो या औ़रत को ह़मल (गर्भ) न हो।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने अपनी बीवी को तलाक़ दे दी थी जबकि वह हैज़ के दिन गुज़ार रही थीं। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से इस का ज़िक्र कर दिया, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को इस पर गुस्सा आ गया, फिर फ़रमाया कि उस से कहो कि रुजूअ़ (वापस) कर ले, फिर पाक होने तक उसे रोके रखे, फिर जब एक हैज़ आ जाए उस के बाद पाक हो और तलाक़ देने की राय हो तो तलाक़ दे दे। यह तलाक़ तुहर (पाकी) की ह़ालत में हो और ऐसे तुहर (पाकी) में हो जिस में जिमाअ़ न किया हो, फिर फ़रमाया कि यह है वह इ़द्दत जिस का अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया है। **(सह़ीह़ बुख़ारी भाग 2 पेज नं० 729)**

सह़ीह़ मुस्लिम भाग नं० 1 में है:

فقال له النبیﷺ لیراجعها وقال اذا طهرت فلیطلقها او یمسک قال ابن عمر رضی الله عنهما وقرء النبیﷺ یا ایها النبی اذا طلقتم النساء فطلقوهن فی قبل عدتها وهو نضم القاف والباء ای فی وقت تستقبل فیه العدة وهو تفسیر النبیﷺ للفظ لعدتهن.

इस ह़दीस से मालूम हुआ कि हैज़ में तलाक़ देना मना है। अगर हैज़ में तलाक़ दे दी तो रुजूअ़ (वापस) कर ले और यह भी मालूम हुआ कि तलाक़ ऐसे तुहर (पाकी) में दे, जिस में जिमाअ़ न किया हो।

فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ की इस तफ़्सीर से मालूम हो गया कि فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ का मतलब यह है कि तुहर में तलाक़ दी जाए ताकि इस के बाद पूरे तीन हैज़ आ जाने पर इ़द्दत ख़त्म हो जाए और शाफ़अ़ी ह़ज़रात के नज़्दीक चूंकि इ़द्दत तुहरों (पाकी) से मोअ़तबर है, इसलिए उन के नज़्दीक आयते करीमा का मतलब यह है कि तुहर (पाकी) के शुरु में तलाक़ दे दो, ताकि इ़द्दत वहीं से शुरु हो जाए।

इद्दत को अच्छी तरह़ शुमार करो-

وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ का मतलब यह है कि इ़द्दत को अच्छी तरह़ शुमार करो क्योंकि इस से बहुत से मसायल जुड़े हैं, इस में एक तो रजअ़त (वापसी) का ही मस्ला है। जब किसी औ़रत को रजई़ तलाक़ दे दे तो इ़द्दत के अन्दर-अन्दर रुजूअ़ करना जायज़ है और इ़द्दत का ख़र्चा भी तलाक़ देने वाले मर्द के ज़िम्मे है।

इ़द्दत गुज़रने तक उस का ख़र्चा दे, अगर इ़द्दत के अन्दर शौहर ने रुजूअ़ न किया तो औ़रत को इ़द्दत गुज़रने के बाद किसी दूसरे मर्द से निकाह़ करने की इजाज़त है।

अगर अच्छी तरह़ इ़द्दत को शुमार न किया जाए तो हो सकता है कि इन हुक्मों में फ़र्क़ आ जाए। जैसे-

औ़रत इ़द्दत के अन्दर दूसरा निकाह़ कर ले या इ़द्दत गुज़रने के बाद भी शौहर से ख़र्चा माँगती रहे या इ़द्दत के ख़त्म होने के बाद शौहर यह समझ कर कि अभी इ़द्दत पूरी नहीं हुई रुजूअ़ कर ले।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ (और अल्लाह से डरो।)

औरत झूठ न कह दे कि मेरी इ़द्दत गुज़र गई और मर्द इ़द्दत गुज़रने के बाद भी रुजूअ़ का दावेदार न हो जाए और इ़द्दत गुज़र जाने के बावजूद औ़रत ख़र्चा वसूल न करती रहे।

मुतल्लिक़ा (तलाकी) औ़रतों को घर से न निकालो-

لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ (जिन औ़रतों को तुम ने तलाक़ दे दी उन्हें इ़द्दत के दर्मियान घर से न निकालो और औ़रतें भी घर से न निकलें।)

इ़द्दत गुज़रने तक उस घर में रहें जिस में तलाक़ हुई है। जिस औ़रत को तलाक़ हो गई हो उस का नफ़्क़ा यानी ज़रूरी ख़र्चा और रहने का घर तलाक़ देने वाले शौहर के ज़िम्मे है, मर्द भी उस घर में रखे जहाँ उसे तलाक़ दी है और औ़रत भी उसी घर में रहे اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ

अलग करने यानी अगर तलाकी औ़रत इ़द्दत के ज़माने में खुली हुई बेहयाई कर बैठे तो उसे घर से निकाला जा सकता है जिस में उस को तलाक़ दी है। जैसे अगर किसी ने ज़िना कर लिया तो ह़द जारी करने के लिए उस घर से निकाला जाएगा, फिर वापस उसी घर में ले आएँगे।

यह ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) से मरवी है और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि फ़ाह़िशा मुबय्यिनः का मतलब यह है कि मुतल्लिक़ा औ़रत बद्ज़बान हो, अगर शौहर और शौहर के घर

वालों के साथ बद्ज़बानी करती हो तो उस की वजह से घर से निकाला जा सकता है।

وَ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ (और यह अल्लाह के अहकाम हैं) उन की पाबन्दी करो।

وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ(और जो शख़्स अल्लाह के हुदूद (सीमाओं) से आगे बढ़ जाए तो उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म कर लिया।)

अल्लाह तआला की नाफ़रमानी अपनी जान पर ज़ुल्म है, इस की वजह से दुनिया व आख़िरत में सज़ा मिल सकती है।

तलाक़, इद्दत और रजअ़त और घर से न निकालने की ताकीद उन में से किसी भी हुक्म शरई की मुख़ालिफ़त की तो यह ज़ुल्म शुमार होगा।

لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا

(हो सकता है कि अल्लाह तआला तलाक़ देने के बाद कोई नई बात पैदा फ़रमा दे) जैसे तलाक़ देने पर शर्मिन्दगी हो जाए और दिल में रुजूअ़ करने का जज़्बा पैदा हो जाए लिहाज़ा सोच समझ कर अहकामे शरअ़िया को सामने रखकर तलाक़ दें।

'साहिबे मुआ़लिमुत् तन्ज़ील' लिखते हैं कि इस से मालूम हुआ कि तीन तलाक़ एक वक़्त में न दी जाएँ क्योंकि इस के बाद रुजूअ़ का हक़ नहीं रहता। अगर तीन तलाक़ देनी ही हों तो हर तुहर (पाकी) में एक तलाक़ दे दे। दो तलाक़ तक इद्दत में रुजूअ़ करने का हक़ है अगर तीन तलाक़ें एक वक़्त में दें तो रुजूअ़ का वक़्त ख़त्म हो जाएगा और तलाक़ बायन देने से भी रुजूअ़ का हक़ ख़त्म हो जाता है, इसलिए सोच समझ कर दे।

तलाक़े रजई की इद्दत

فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ (जब मुतल्लिक़ा औ़रतों की इद्दत ख़त्म होने के क़रीब हो तो उन्हें ख़ूबी के साथ रोक लो) यानी रुजूअ़ कर लो।

اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ (या उन्हें ख़ूबी के साथ जुदा कर दो) ऐसा न करो कि उन्हें दुख तक्लीफ़ देने के लिए बार-बार तलाक़ देते रहो और रुजूअ़ करते रहो। यह विषय सूरः अल् बक़रः **(आयत नं० 231)** में भी फ़रमायाः-

وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا

(और उन्हें न रोको यानी ऐसा न करो कि उन्हें नुक़्सान पहुँचाने या दुःख देने की वजह से रोक कर रखे रहो) वहाँ यह भी फ़रमाया हैः-

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ (जो शख़्स ऐसा करेगा उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया।)

وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ (और अस्हाबे अ़द्ल में से अपने दो आदमियों को गवाह बना लो) यह हुक्म बेहतर है। मतलब यह है कि तलाक़ देना हो या तलाक़ देने के बाद रुजूअ़ (वापस) करना हो या तलाक़े बायन देकर रुजूअ़ न करना तय कर दिया हो तो उन चीज़ों पर ऐसे दो आदमियों को गवाह बना

लो जो नेक सालेह़ और सच्चे हों, ताकि अगर कभी फिर कोई इख़्तिलाफ़ की सूरत बन जाए तो गवाहों के ज़रिये साबित किया जा सके।

وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ (और गवाही को अल्लाह के लिए क़ायम करो।)

इस में यह बता दिया कि गवाही ठीक तरीक़े पर क़ायम की जाए यानी सह़ी गवाही दी जाए और यह भी बता दिया कि जो भी गवाही दी जाए वह अल्लाह की रज़ा के लिए हो, जिस के ज़रिये मज़लूम का ह़क़ उसे मिल जाए। अहले दुनिया में से किसी के दबाव में झूठी गवाही न दी जाए। अल्लाह की रज़ा के लिए गवाही देने में यह भी शामिल है कि उजूरत पर गवाही न दे। गवाही देने पर उजूरत लेना जायज़ नहीं है अल्बत्ता आने जाने का किराया ले सकता है।

शहादत का तफ़्सीली हुक्म सूरः बक़रः की **(आयत नं० 232)** में गुज़र चुका हैं।

ذَٰلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ऊपर जो बातें बयान हुईं उन के ज़रिये उस शख़्स को नसीह़त की जाती है जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाया हो।

ऊपर जो अह़काम (निर्देश) दिये गए सरापा हिदायत हैं उन के मानने में ख़ैर ही ख़ैर है। अहले ईमान पर लाज़िम है कि उन का ध्यान करें और उन के मुताबिक़ चलें, सामने आख़िरत का दिन भी है, जिसे आख़िरत का यक़ीन हो ह़िसाब किताब का डर हो उसे तो ज़रूर ही नसीह़त पर अ़मल करना लाज़िम है।

तक़्वा और तवक्कुल के फ़ायदे

وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ۝

(और जो शख़्स अल्लाह से डरे उस के लिए अल्लाह मुश्किलात से निकलने का रास्ता बना देता है।)

وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

(और उसे वहाँ से रिज़्क़ देता है जहाँ से रिज़्क़ मिलने का ख़याल भी न हो।)

इस में मोमिन बन्दों के लिए बहुत बड़ी नसीह़त है, जो शख़्स फ़रमाँबरदारी करेगा, नेक आ़माल में लगेगा, गुनाहों से बचेगा और अह़कामे शरअ़िया पर अ़मल करेगा (चाहे तलाक़ या रजअ़त से मुतअ़ल्लिक़ हो जिन का यहाँ ज़िक्र हुआ चाहे ज़िन्दगी के दूसरे शोअ़बों से) हर ह़ाल में उस के लिए ख़ैर ही है।

'तक़्वा' मोमिन बन्दों के लिए दुनिया व आख़िरत में कामियाबी का ज़रिया है। इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने तक़्वा वालों से दो वादे किये हैं। पहला यह कि जो शख़्स तक़्वा अख़्तियार करेगा अल्लाह उस के लिए कोई न कोई मख़्रज (रास्ता) यानी मुश्किलात से निकलने का रास्ता निकाल देगा। दुनिया में मुश्किलात तो पेश आती ही रहती हैं, लोग उन के लिए तद्बीरें करते रहते हैं, बाज़ लोग गुनाहों के ज़रिये उन को दूर करना चाहते हैं, लेकिन फिर भी मुश्किलात में फंसे रहते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने वादा फ़रमाया है कि जो शख़्स 'तक़्वा' अख़्तियार करेगा, अल्लाह तआ़ला उस के लिए मुश्किलात से निकलने का रास्ता पैदा फ़रमा देगा।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) के पास एक शख़्स आया और उस ने कहा कि मैंने अपनी बीवी

को तीन तलाक़ें दे दी हैं, (क्या रुजूअ़ करने की कोई सूरत है?) ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि तुम लोग बेवकूफ़ी का काम करते हो, फिर कहते हो ऐ इब्ने अ़ब्बास! ऐ इब्ने अ़ब्बास! अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا और ऐ सायल! तू अल्लाह से नहीं डरा। मैं तेरे लिए कोई मख़्रज यानी मुश्किल से निकलने का रास्ता नहीं पाता, तूने अल्लाह की नाफ़रमानी की, तेरी औ़रत तुझ से जुदा हो गई। **(अबूदाऊद पेज नं० 299)**

दूसरा वादा यह है कि तक़्वा अख़्तियार करने वाले को अल्लाह ऐसी जगह से रिज़्क़ देगा जहाँ से उस का ध्यान भी न होगा।

दोनों वादे दुनिया से मुतअ़ल्लिक़ हैं और आख़िरत से भी, तक़्वा अख़्तियार करने वाले के लिए दुनिया में भी ख़ैर है, मुश्किलात से छुट्कारा है और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ मिलता है जहाँ से ख़याल भी न हो।

ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि०) से रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक मैं एक ऐसी आयत जानता हूँ कि अगर लोग उस पर अ़मल कर लें तो उन के लिए काफ़ी हो जाए। वह आयत यह है وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ **(मिश्कातुलू मसाबीह़ पेज नं० 483)**

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ (और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करे सो अल्लाह उस के लिए काफ़ी है।)

इस से पहले मुत्तक़ी के लिए ग़ैबी मदद (छुपी हुई मदद) और ख़ैर व ख़ूबी और रिज़्क़ का वादा फ़रमाया और इस में तवक्कुल (भरोसा) करने वालों से ख़ैर का वादा फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करे उस के लिए काफ़ी है। यह भी बहुत बड़ी बशारत है और अल्लाह की तरफ़ से मदद का एलान है।

'तक़्वा' और 'तवक्कुल' दोनों बड़ी अहम चीज़ें हैं मोमिन की गाड़ी के पहिये हैं। कोई दोनों को अख़्तियार कर के तो देखे फिर दोनों चीज़ों की बरकात भी देख लेगा।

ह़ज़रत उ़मर बिन अलू आ़स (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि इन्सान का दिल हर वादी में कुछ न कुछ मशग़ूल रहता है। सो जिस शख़्स ने अपने दिल को इन सब मशग़ूलियतों में लगा दिया, उस के बारे में अल्लाह कोई परवाह नहीं करेगा कि उसे किस वादी में हलाक कर दिया और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करे अल्लाह उस के सब कामों की किफ़ालत फ़रमाएगा। **(मिश्कातुलू मसाबीह़ पेज नं० 453)**

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अगर तुम अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करते जैसा कि तवक्कुल का ह़क़ है तो वह तुम्हें इस तरह़ रिज़्क़ देता जैसे परिन्दों को रिज़्क़ देता है, वह सुबह़ को खाली पेट जाते हैं और शाम को भरे पेट वापस आ जाते हैं। **(रवाहुल तिर्मिज़ी कमा फ़िलू मिश्कात पेज नं० 452)**

तवक्कुल के दर्जात हैं अस्बाब को छोड़ना भी एक दर्जा है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इसी को अख़्तियार फ़रमाया। एक ह़दीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी तरफ़ यह वह़्य

नहीं की गई कि माल जमा करूँ और ताजिरों में से हो जाओ, बल्कि मेरी तरफ़ यह वह्य की गई है

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ۙ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ۝

(अपने रब की ह़म्द के साथ उस की तस्बीह़ बयान कीजिए और सज्दः करने वालों में से रहिए और मौत आने तक अपने रब की अ़िबादत कीजिए।) **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 444)**

अस्बाब अख़्तियार करते हुए भी बन्दा मुतवक्किल (भरोसा करने वाला) हो सकता है बशर्ते कि अस्बाब पर भरोसा न हो, भरोसा अल्लाह पर ही हो और ह़क़ीक़ी राज़िक़ उसी को समझता हो। जब यह बात ह़ासिल हो जाए तो बन्दा अस्बाब अख़्तियार करने में भी गुनाह से बचता है और रिज़्क़ ह़ासिल करने के लिए कोई ऐसा तरीक़ा अख़्तियार नहीं करता जिस में गुनाह को अख़्तियार किया जाए।

अल्लाह तआ़ला ने हर चीज़ का अन्दाज़ मुक़र्रर फ़रमाया-

اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ (बेशक अल्लाह अपना काम पूरा कर ही देता है।)

वह जो इरादा फ़रमाएगा उसके इरादे के मुताबिक़ होकर रहेगा और अह़कामे शरअ़ीया में जो हुक्म देने का इरादा करेगा वह हुक्म दे ही देगा, उस के इरादा को कोई रोकने वाला नहीं।

قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا (बेशक अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ मुक़र्रर कर रखा है।)

उसी की मर्ज़ी के मुताबिक़ अह़काम नाफ़िज़ होते रहते हैं।

4-7 وَالّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ
وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝ ذٰلِكَ اَمْرُ
اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا ۝ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ
حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ؕ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ
حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَاِنْ تَعَاسَرْتُمْ
فَسَتُرْضِعُ لَهٗٓ اُخْرٰى ۝ لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّآ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ؕ لَا يُكَلِّفُ
اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَآ اٰتٰىهَا ؕ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۝

ह़ामिला, ह़ायज़ा, आईसा की इ़द्दत के मसायल

इन आयात में बहुत से अह़काम बयान फ़रमाए हैं। पहले तो उन औ़रतों की इ़द्दत बयान फ़रमाई, दूसरे वह औ़रतें जिन को हैज़ आना शुरु नहीं हुआ, उन की इ़द्दत भी तीन माह बताई गई है।

फिर उन औ़रतों की इ़द्दत बयान फ़रमाई जिन को ह़मल हो, उन का ह़मल जब भी ख़त्म हो जाए (बच्चा पैदा हो जाने से या ऐसे ह़मल साक़ित हो जाने से जिस का कोई अंग बन गया था, इ़द्दत ख़त्म हो जाएगी। ह़मल वाली औ़रतों की इ़द्दत तलाक़ वज़अ़ ह़मल बताई है।)

ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) के नज़्दीक इस का हुक्म हर इ़द्दत गुज़ारने वाली औ़रतों को

शामिल है। जिस किसी औ़रत का शौहर मर गया हो और जिस को तलाक़ हुई हो, अगर उस को ह़मल है तो ह़मल ख़त्म हो जाने तक उस की इ़द्दत ख़त्म हो जाएगी, शौहर की वफ़ात पर जो चार महीने और दस दिन और तलाक़ वाली औ़रत को जो इ़द्दत गुज़ारने के लिए तीन ह़ैज़ गुज़ारने का हुक्म है यह उन औ़रतों से मुतअ़ल्लिक़ है जिन को ह़मल न हो।

नोट- जिस औ़रत का किसी मर्द से निकाह़ हुआ हो, फिर मियाँ-बीवी की तन्हाई होने से पहले ही तलाक़ हो जाए तो ऐसी औ़रत पर कोई इ़द्दत वाजिब नहीं।

(II) जिस औ़रत को ह़ैज़ आता था, फिर ह़ैज़ आना बन्द हो गया और अभी इस उ़म्र को नहीं पहुँची जिस में ह़ैज़ आना बन्द हो जाता है, ऐसी औ़रत को तलाक़ हो जाए तो उस की इ़द्दत तीन महीने गुज़रने से नहीं पूरी होगी, वह इन्तिज़ार करे या तो तीन ह़ैज़ आ जाएँ या फिर मायूसी की उ़म्र आ जाए जिस में बड़ी उ़म्र होने की वजह से ह़ैज़ आना ख़त्म हो जाता है।

इस के बाद फ़रमायाः-

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا

(कि जो शख़्स अल्लाह से डरता है उस के लिए आसानी फ़रमा देता है (दुनिया व आख़िरत में उस के लिए आसानियाँ हो जाती हैं।)

फिर फ़रमायाः-

ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ (यह अल्लाह तआ़ला का हुक्म है जिस को उस ने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल फ़रमाया है।)

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا

(और जो शख़्स अल्लाह से डरे अल्लाह उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना देगा और उस को बड़ा अज्र देगा।)

इस रुकूअ़ में तीन बार 'तक़्वा' की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है। पहले तो यह फ़रमाया कि जो शख़्स तक़्वा अख़्तियार करेगा अल्लाह तआ़ला उस के लिए हर मुश्किल से निकलने का रास्ता निकाल देगा और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ देगा जहाँ से उसे ख़याल भी न हो। फिर फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह से डरेगा अल्लाह उस के कामों में आसानी फ़रमा देगा। तीनों आयात मिलाने से तक़्वा की बड़ी अहमियत और ज़रूरत मालूम हुई और अल्लाह तआ़ला ने तक़्वा अख़्तियार करने पर जो वादा फ़रमाए हैं उन का इ़ल्म हुआ।

कोई शख़्स तक़्वा अख़्तियार कर के तो देखे अल्लाह तआ़ला के वादे किस तरह़ पूरे होते हैं, लोगों ने तक़्वा और तवक्कुल (भरोसा) को छोड़ दिया, आ़मतौर से लोगों में गुनाहगारी और दुनियादारी आ गई लिहाज़ा ग़ैबी मददें (आसमानी मदद) भी नहीं रहीं।

तीसरा हुक्म यह फ़रमाया اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ कि उन इ़द्दत गुज़ारने वाली औ़रतों को वहीं ठहराओ, जहाँ तुम ठहरे हुए हो अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़।

चौथा हुक्म यह फ़रमाया وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ

(और तुम उन को नुक़्सान न पहुँचाओ कि उन्हें तंगी में डाल दो और वह तुम्हारे घर से निकलने पर मजबूर हो जाएँ।

तलाक़ शुदा औ़रतों के खर्चों के मसायल-

इन अह़काम की तफ़्सीर यह है कि इ़द्दत वाली औ़रतों की पाँच क़िस्में हैंः-

1- रजई़ तलाक़ दी हो।

2- तलाक़े बायन या मुग़ल्लज़ दी हो और औ़रत ह़मल वाली न हो।

3- तलाक़ मिलने वाली औ़रत ह़ामिला हो।

4- वह औ़रत जिस ने शौहर से ख़ुलअ़ कर लिया हो।

5- इ़द्दत वफ़ात गुज़ार रही हो

इन औ़रतों को जिन खर्चों की ज़रूरत होती है वह तीन तरह़ के हैंः-

1- खाने का ख़र्चा।

2- रहने का घर।

3- कपड़ा पहनने का ख़र्चा।

तलाक़ रज़ई़ हो या बायन या मुग़ल्लजा ह़ालते ह़मल में हो या ग़ैर ह़मल में, हर सूरत में तलाक़ देने वाले के ज़िम्मे है कि इ़द्दत के ज़माने का नान नफ़्क़ा (ज़रुरत के खर्चे) बर्दाश्त करे और रहने सहने के लिए घर भी दे, अगर ख़ुद भी उसी घर में रहे तो तलाक़ बायन या मुग़ल्लज़ा होने की सूरत में पर्दा कर के रहे और अगर किसी औ़रत ने अपने शौहर से ख़ुलअ़ कर लिया तो यह भी तलाक़ बायन के हुक्म में है (وهو مقيد بما اذا لم تجعله داخلا فى بدل الخلع، راجع البحرالرائق) इस में भी इ़द्दत वाजिब होती है और इ़द्दत का नान नफ़्क़ा और रहने के लिए घर देना वाजिब होता है।

जिस औ़रत का शौहर वफ़ात (मौत) पा गया हो उस पर इ़द्दत तो ज़रूरी है, लेकिन शौहर के माल में नान नफ़्क़ा वाजिब नहीं, यह औ़रत अपने महर में से या मीरास (छोड़े हुए माल) के ह़िस्से में से अपने ऊपर ख़र्च करे। अगर ख़र्चा मौजूद न हो और मैके वाले भी ख़र्च न करें तो मेह़नत मज़दूरी कर के गुज़ारा कर ले। अगर उस के लिए घर से बाहर निकलना पड़े तो पर्दा के साथ दिन में बाहर जा सकती है, अगर वापसी में देर हो जाए और थोड़ी सी शुरु की रात अपने घर से बाहर गुज़र जाए तो इस की इजाज़त है। ज़रूरत पूरी होते ही वापस आ जाए और रात को उसी घर में रहे जिस में रहते हुए शौहर ने वफ़ात पाई है।

इ़द्दत वफ़ात वाली औ़रत के शौहर के मीरास से उस घर में अगर इतना ह़िस्सा न निकलता हो जो उस की रिहाइश के लिए काफ़ी हो या शौहर के वरसा उस को घर से निकाल दें या मकान किराये पर था उस का किराया अदा करने की ताक़त न हो या अपनी जान या माल के बारे में ख़ौफ़ व ख़त्रा हो तो उस घर को छोड़ सकती है जिस में शौहर की वफ़ात हुई।

तलाक़ शुदा औ़रतों को रहने की जगह-

أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنتُم مِّن وُجْدِكُمْ इस में مِّن وُجْدِكُمْ फ़रमा कर यह बता दिया कि अपनी उस्अ़त कुव्वत और ताक़त को देखते हुए उस के मुताबिक़ उसे रहने को जगह दो, शरीअ़त की पाबन्दी करो, हुक्म शरई होने की वजह से उसी घर में ठहराओ, जिस में तुम रहते हो।

وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ और उन को तक्लीफ़ न दो यानी ऐसी सूरत अख़्तियार न करो कि वह घर छोड़ने पर मजबूर हो जाए। क़ौल से या अमल से कोई ऐसी ह़रकत न करो जिस से इस का तुम्हारे साथ रहना दूभर हो जाए यह तो मुत़ल्लिक़ा औ़रतों को रिहाइश देने का हुक्म हुआ। इस के बाद फ़रमायाः-

وَإِن كُنَّ أُولَاتِ حَمْلٍ فَأَنفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ और अगर तलाक़ी औ़रतें ह़मल (गर्भ) वाली हों तो उन पर ख़र्च करो यहाँ तक कि वह बच्चा पैदा हो जाए। ह़मल वाली औ़रत की इ़द्दत ह़मल खत्म होने तक है, जब ह़मल वज़अ़ (खत्म) हो जाएगा तो उस की इ़द्दत भी ख़त्म हो जाएगी और इ़द्दत में नान, नफ़्क़ा रहने का घर भी पिछले शौहर के ज़िम्मे नहीं रहेगा।

बच्चों को दूध पिलाने के मसायल-

فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ जब औलाद पैदा होती है तो माँ बाप दोनों मिलकर परवरिश करते हैं। बच्चे शफ़्क़त में पलते बढ़ते और फलते फूलते हैं। माँ दूध पिलाती है और बाप बच्चे पर और बच्चे की माँ पर ख़र्च करता है, लेकिन अगर तलाक़ हो जाए तो बच्चे की परवरिश का और दूध पिलाने का मस्ला पैदा होता है। माँ का दिल तो चाहता है कि मैं ही इसे दूध पिलाऊँ अगर मुफ़्त में पिलाये तो उसे अख़्तियार है और अच्छी बात है और अगर बच्चा के बाप से दूध पिलाने की उजूरत मांगे तो यह भी जायज़ है और बाप के ज़िम्मे है कि उसे दूध पिलाने की उजरत दे।

फ़रमाया وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ कि माँ और बाप दोनों आपसी मशवरे कर लें और बच्चा की ख़ैर ख़्वाही हर एक के पेशनज़र रहे, औ़रत भी ज़्यादा उजूरत न माँगे और बाप भी उजूरत तय करने के बाद इन्कार न करे। वाजिब हक़ को न रोके, बाप यूँ न समझे कि चूंकि उस का बच्चा है उस को पिलाना पड़ेगा मैं उजरत दूँ या न दूँ, कम दूँ या ज़्यादह दूँ और माँ यह सोच कर ज़्यादह उजूरत न मांगे कि अपने बच्चे की वजह से यह मुँह माँगी उजरत देने पर राज़ी होगा।

शरीअ़त के अनुसार बाप को मजबूर नहीं किया जा सकता कि वह बच्चा की माँ की माँगी हुई उजरत दे। ज़्यादह उजूरत तलब करने की सूरत में दूसरी औ़रत से भी दूध पिलवा सकता है लेकिन माँ, माँ ही है वह ज़्यादह शफ़्क़त से रखेगी, बाप बच्चा को उसकी माँ के ज़िम्मे लगाए और उस से दूध पिलवाये तो उसे भी चाहिए कि मुनासिब उजूरत से ज़ायद न ले। इस के मसायल सूरः बक़रः में भी गुज़र चुके हैं।

नोट- जब किसी मर्द ने किसी औ़रत को तलाक़ दे दी और माँ ने बच्चे को परवरिश के लिए ले लिया तो जब तक शौहर की तरफ़ से इ़द्दत के वक़्त का खर्चा मिल रहा है उस वक़्त तक दूध पिलाने

की उजूरत तलब नहीं कर सकती यानी दोहरा ख़र्चा नहीं दिया जाएगा और जब इद्दत गुज़र जाए और अब दूध पिलाने का ज़माना बाक़ी न रहा तो अब बच्चा की माँ बच्चे के बाप से दूध पिलाने की उजूरत नहीं ले सकती है।

وَإِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُ أُخْرَىٰ और अगर तुम आपस में तंगी महसूस करो कि न माँ मुनासिब उजूरत पर दूध पिलाने पर तैयार हो और न बाप उस की मतलूबा उजूरत देने पर राज़ी हो तो दूसरी औरत दूध पिला दे। यानी बच्चे का बाप और किसी दूध पिलाने वाली को तैयार कर ले जो दूध पिला दे। इस में तर्बियत रब्बानिया की तरफ़ भी इशारा है कि जब अल्लाह तआला ने एक जान को पैदा फ़रमाया है और उसे ज़िन्दह भी रखता है और उस की परवरिश भी करवानी है तो वह किसी और को आमदह फ़रमा देगा, आख़िर बिना माँओं वाले बच्चे भी परवरिश पाते ही हैं।

अपनी उस्अत के मुताबिक़ ख़र्च-

لِيُنْفِقْ ذُو سَعَةٍ مِنْ سَعَتِهِ (उस्अत वाला अपनी वुस्अत के मुताबिक़ ख़र्च करे।)

وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ

(और जिस के रिज़्क़ में तंगी हो तो वह उसी में से ख़र्च करे जो अल्लाह ने उसे दे रखा है।)

यानी पैसा वाला आदमी बच्चा पर अपनी हैसियत के मुताबिक़ ख़र्च करे और तंगदस्त आदमी अपनी हैसियत के मुताबिक़ ख़र्च करे।

لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا (और अल्लाह किसी जान को उस से ज़्यादह ख़र्च करने का जिम्मेदार नहीं बनाता जितना उस को दिया है।)

अल्लाह तंगी के बाद आसानी फ़रमा देगा-

سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا (अल्लाह तआला जल्द ही तंगी के बाद आसानी फ़रमा देगा) लिहाज़ा कोई ख़र्च करने वाला राहे ख़ैर में ख़र्च करने से कोताही न करे और मालियात के सिलसिले में जो फ़रायज़ व वाजिबात हैं उन में ख़र्च करे और यह न सोचे कि इस को ख़र्च कर दूँगा तो और कहाँ से आएगा।

आम तौर से फ़ुक़हा के कलाम में मुतल्लिक़ा औरत के लिए ज़माना इद्दत का नान नफ़्क़ा और सुक्कना यानी रिहाईश का घर देने का ज़िक्र है, पहनने के कपड़े देने का ज़िक्र नहीं है। साहिबे अल् बहरुर्रायक ने लिखा है कि इस का तअल्लुक़ हाजत और ज़रुरत से है, अगर औरत के पास पहनने के कपड़े हैं और मुद्दत भी थोड़ी है, जैसे तीन हैज़ या तीन माह हैं तो कपड़े का इन्तिज़ाम करना वाजिब नहीं और अगर उसे कपड़ों की ज़रुरत पड़ गई, इद्दत की मुद्दत लम्बी हो गई जैसे हैज़ नहीं आता जिस की वजह से तुहर में मुद्दत बढ़ गई तो क़ाज़ी कपड़े भी दिलाएगा।

ولم يذكر الكسوة والمنقول فى الذخيرة والخانية والعناية والمجتبىٰ ان المعتدة تستحق الكسوة قالوا وانما لم يذكرها محمد فى الكتاب لان العدة لا تطول غاليا

فتسغنى عنها حتى لو احتاجب اليها يفرض لها ذلک اه فظهر بهذا ان کسوة المعتدة على التفصيل اذا استغنت عنها لقصر المدة كما اذا كانت عدتها بالحيض وحاضت او بالاشهر فانه لا كسوة لها وان احتاجب اليها لطول المدة كما اذا كانت ممتدة الطهر ولم تحض فان القاضى يفرض لها وهذا هو الذى حرر الطرسوسى فى انفع الرسائل وهو تحرير حسن مفهو، من كلامهم (अलु बहरूर्रायक़ भाग 4 पेज नं० 216)

आयत नं० 8 से 12 तक

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ۝ فَذَاقَتْ وَبَالَ
اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ۝ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ ۚۛ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚۛ
قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَآ اَبَدًا ۗ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۗ يَتَنَزَّلُ
الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

अनुवाद-

(8) और कितनी ही बस्तियां हैं जिन्होंने अपने 'रब' और 'उसके' रसूलों के हुक्म के मुक़ाबले में सरकशी कीं, तो 'हमने' उनकी सख़्त पकड़ की और उन्हें बुरा अ़ज़ाब दिया; (9) तो उन्होंने अपने किये का वबाल चख लिया, और उनका अंजाम घाटा ही रहा; (10) अल्लाह ने उनके लिए सख्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है, तो अल्लाह से डरो ''ऐ बुद्धि वालो! जो ईमान लाए हो, अल्लाह ने तुम्हारी ओर ज़िक्र (क़ुर्आन) उतारा।'' (11) एक ऐसा रसूल, जो अल्लाह की स्पष्ट आयतें तुम को पढ़ कर सुनाता है, ताकि वह उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये, उनको अन्धेरों से निकाल कर रोशनी की ओर ले आए, और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाए; और भले काम करे, उसे 'वह' ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, ऐसे लोग उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह ने उनके लिए बेहतरीन रिज़्क (रोज़ी) तैयार कर रखा है। (12) अल्लाह ही ने सात आसमान बनाए, और वैसी ही ज़मीनें, उनमें (अल्लाह के) हुक्म उतरते रहते हैं, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है, और यह कि अल्लाह का इल्म हर चीज़ को घेरे में लिए हुए है।

आयत नं० 8 से 12 तक की व्याख्या

8-11

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا
نُّكْرًا ۝ فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ۝ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ
فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ ۚۛ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚۛ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا
عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى
النُّوْرِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ۝

हलाक शुदा बस्तियों के हालात

इन आयात में सरकश क़ौमों की हलाकत और बर्बादी का और ईमान और नेक आ़माल वालों की कामियाबी का ज़िक्र फ़रमाया है। 'साहिबे मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' फ़रमाते हैं कि आयत में आगे पीछे का मतलब यह है कि हम ने उन बस्तियों के रहने वालों को दुनिया में भूक और क़ह़त (सूखा) और तलूवारों से मक़्तूल होने का और दूसरी मुसीबतों का अ़ज़ाब दिया और आख़िरत में उन से सख़्त ह़िसाब लेंगे।

उन लोगों ने सरकशी की, अल्लाह तआ़ला के हुक्मों पर अ़मल करने से मुँह मोड़ा और उस के रसूलों को झुठलाया, लिहाज़ा दुनिया में भी अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हुए और अ़ज़ाब भी बहुत सख़्त और बुरा था और रुस्वा करने वाला था, फिर आख़िरत में भी उन से सख़्त ह़िसाब लिया जाएगा वहाँ सख़्त ह़िसाब के जवाब की किसे ताक़त होगी, लिहाज़ा वहाँ पूरी तरह़ घाटा यानी हलाकत व बर्बादी का सामना होगा और अन्जाम के तौर पर दोज़ख़ की आग में डाल दिये जाएँगे, दुनिया में भी अपने किये का वबाल चखा और आख़िरत में भी बर्बाद होंगे। इसी को फ़रमायाः-

أَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۙ कि अल्लाह ने उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब तैयार फ़रमाया है।

क़ुर्आन करीम एक बड़ी नसीह़त है-

फ़रमाया ऐ अ़क़्ल वालों! जिन्होंने ईमान क़ुबूल किया अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ एक नसीह़त नामा नाज़िल फ़रमाया, यानी क़ुर्आन और तुम्हारी तरफ़ एक रसूल भेजा है। यह रसूल तुम्हारे ऊपर अल्लाह की आयात तिलावत करता है, यह आयात बय्यिनात हैं जो स्पष्ट तौर पर साफ़-साफ़ खोलकर ह़क़ और बातिल के दर्मियान फ़र्क़ बताती हैं ताकि वह लोग जो ईमान लाए और आ़माले सालिह़ा किये उन्हें अन्धेरियों से नूर यानी रौशनी की तरफ़ निकाल दे।

जो लोग अल्लाह की किताब क़ुर्आन ह़कीम और उस के रसूल (सल्ल०) को नहीं मानते वह बराबर कुफ़्र व शिर्क की अंधेरियों में पड़े रहते हैं, दुनिया में कुफ़्र व शिर्क की अंधेरियों में पड़े रहते हैं और आख़िरत में दोज़ख़ की अंधेरियों में रहेंगे।

अहले ईमान का इनूआ़म-

इस के बाद अहले ईमान का इनूआ़म बयान फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाए और नेक अ़मल करे, अल्लाह तआ़ला ऐसे-ऐसे बाग़ों में दाख़िल फ़रमाएगा जिन के नीचे नहरें जारी होंगी वह उन में हमेशा-हमेश रहेंगे। फिर इस विषय को قَدْ أَحْسَنَ اللّٰهُ لَهُ رِزْقًا पर ख़त्म फ़रमाया यानी जो बन्दा मोमिन हो और आ़माले सालिह़ा अन्जाम देता रहे उस के लिए अल्लाह तआ़ला ने अच्छा रिज़्क़ तैयार फ़रमाया है वह जन्नत में जाएगा तो अपना रिज़्क़ ले लेगा, यह रिज़्क़ बेमिसाल उ़म्दह और हमेशा का होगा।

12 اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۭ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ
لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ڏ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

सात आसमान

यह आयत सूरः तलाक़ की आख़िरी आयत है। इस में अल्लाह तआ़ला की शान और उसकी क़ुद्रत को बयान फ़रमाया। इर्शाद फ़रमाया अल्लाह वह है जिस ने सात आसमान पैदा फ़रमाए और ज़मीनें भी उन की जैसी यानी तअ़दाद में उन के बराबर पैदा फ़रमाईं।

अल्लाह तआ़ला के अह़काम उन के दर्मियान नाज़िल होते हैं। सब से ऊपर के आसमान से लेकर सब से नीचे वाली ज़मीन तक जो भी मख़्लूक़ है, सब पर उस के अह़काम लागू होते हैं और बहुत सी मख़्लूक़ शरीअ़त के हुक्मों की भी ज़िम्मेदार है। यह सात ज़मीनें कहाँ हैं, किस तरह़ हैं, जम्हूर उ़ल्मा का यही फ़रमाना है कि यह भी आसमानों की तरह़ ऊपर नीचे सात तबक़ात हैं।

अल्लाह तआ़ला का फ़रमा देना मोमिन बन्दों के लिए काफ़ी है यह बात कि वह सात ज़मीनें बनी आदम की नज़र में नहीं हैं, इस से उन के वजूद में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। अह़ादीस सह़ीह़ मरफ़ूआ़ से सात ज़मीनों का वजूद साबित होता है, यह अह़ादीस ह़ज़रत सईद बिन ज़ैद और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और ह़ज़रत अबू हुरैरा और ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम से मरवी हैं।

(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 1453 और सह़ीह़ मुस्लिम भाग 2, पेज नं० 32, 33)

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) की रिवायत का तर्जुमः यह है कि जिस ने एक बालिश्त भी किसी की ज़मीन नाह़क़ ले ली तो अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन तक सब ज़मीनों को सातवें ज़मीन के ख़त्म तक तौक़ बनाकर उस के गले में डाल देगा। **(सह़ीह़ मुस्लिम भाग 2 पेज नं० 32)**

ह़ज़रत सुहेब (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब किसी बस्ती में दाख़िल होने का इरादा फ़रमाते तो यह कलिमात पढ़ते थेः-

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَمَآ اَظْلَلْنَ وَرَبَّ الْاَرَضِيْنَ السَّبْعِ وَمَآ اَقْلَلْنَ وَرَبَّ
الشَّيٰطِيْنِ وَمَا اَضْلَلْنَ وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا ذَرَيْنَ فَاِنَّا نَسْئَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرَ
اَهْلِهَا وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ اَهْلِهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا

(रवाहु अल् ह़ाकिम कमा फ़िल् मुस्तदरक वक़ाल सह़ीह़ अला अस्नाद)

(ऐ अल्लाह! जो सातों आसमानों और उन सब चीज़ों का रब है जो आसमानों के नीचे हैं और जो सातों ज़मीनों और उन सब चीज़ों का रब है जो उन के ऊपर हैं और जो शैतानों का और उन सब का रब है जिन को शैतानों ने गुमराह किया है और जो हवाओं का और उन चीज़ों का रब है जिन्हें हवाओं ने उड़ाया है, सो हम तुझ से उस आबादी की और उस में रहने वालों की ख़ैर का सवाल करते हैं और उस के शर से और उस की आबादी के शर से और जो कुछ उस में है उस के शर से तेरी पनाह चाहते हैं।

لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۞

अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें आसमानों और ज़मीनों के बारे में जो कुछ बताया है वह इसलिए है कि तुम यह बात जान लो कि अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ादिर है और यह भी जान लो कि अल्लाह तआ़ला का इ़ल्म हर चीज़ को मुह़ीत (घेरे हुए) है (कोई चीज़ उस के इ़ल्म व क़ुद्रत से बाहर नहीं है।)

(भाग-66)

सूर-ए-तह़रीम

(सूरः नं. 66)

सूरः तह़रीम का संक्षिप्त परिचय

नाम- पहली आयत में नबी करीम (सल्ल०) को ख़िताब करके कहा गया हैः لِمَ تُحَرِّمُ مَآ أَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۔ यहीं से इस सूरत का नाम लिया गया है। 'कुर्तुबी' ने लिखा है कि इस का दूसरा नाम "सूरतुन्नबी" भी है।

नाज़िल होने का ज़माना-

'कुर्तुबी' कहते हैं कि सब के नज़्दीक यह सूरः मदनी है। इब्ने मरदूविया ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि सूरः तह़रीम मदीना में नाज़िल हुई थी।

आयत नं० 1 से 12 तक

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ۗ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ
تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝ وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ
بِهٖ وَ اَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَ اَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ۚ قَالَ نَبَّاَنِيَ
الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝ اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَ اِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَ صَالِحُ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝ عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ
مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّ اَبْكَارًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا
وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۚ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ
تَوْبَةً نَّصُوْحًا ۚ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ يُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ
لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِيَّ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ بِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا
وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ اغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ
وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ امْرَاَتَ لُوْطٍ ۚ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ
فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا وَّ قِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ
اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَ نَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَ عَمَلِهٖ وَ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَ مَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَ صَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَ كُتُبِهٖ
وَ كَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝

अनुवाद–

(1) ऐ नबी! जिस चीज़ को अल्लाह ने ह़लाल कर रखा है, उसे आप अपनी पत्नियों को राज़ी करने के लिए क्यों ह़राम करते हैं? और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है। (2) अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी अपनी क़समों की पाबन्दी से निकलने का उपाय निश्चित कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा मौला (संरक्षक) है, और 'वह' बड़ा इल्म वाला, ह़िकमत वाला है। (3) और जब नबी ने अपनी पत्नियों में से किसी एक से राज़ की एक बात कही, तो जब उसने उसकी ख़बर कर दी; और अल्लाह ने इसे उस (नबी) पर ज़ाहिर कर दिया; तो उन्होंने उसे किसी हद तक बता दिया, और किसी हद तक उसे दरगुज़र कर दिया; फिर जब उनको उसकी ख़बर की, तो वह बोलीं, ''आपको इसकी ख़बर किसने दी?'' उन्होंने कहा, ''उसी' ने मुझको ख़बर दी है जो जानने वाला, खब़र रखने वाला है।'' (4) अगर तुम दोनों अल्लाह के सामने तौबः करो तो तुम्हारे दिल तो उसकी ओर झुक ही चुके हैं, और अगर तुम दोनों मिल कर उसको नाराज़ करोगी तो अल्लाह उसका मौला (संरक्षक) है, और उसके बाद जिब्रईल, और नेक ईमान वाले, और फ़रिश्ते उसके मदद्गार हैं। (5) उम्मीद है कि अगर वह (रसूल) तुम्हें तलाक़ दे दें, तो उसका रब तुम्हारे बदले में तुमसे

अच्छी पत्नियाँ उनको देगा- मुस्लिम, ईमान वाली, फ़रमाँबरदार, तौबः करने वाली, इ़बादत करने वाली, रोज़ः रखने वाली (या अल्लाह की राह में सफ़र करने वाली) शादी शुदा और कुँवारी भी। (6) ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ और जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं, जिस पर कठोर स्वभाव के फ़रिश्ते नियुक्त हैं, जो अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करते, और जो हुक्म उन्हें दिया जाता है उस पर अ़मल करते हैं। (7) ऐ काफ़िरो (इन्कार करने वालो)! आज उज़्र न पेश करो, तुम्हें बदले में वही दिया जा रहा है, जो कुछ करते आ रहे हो। (8) ऐ ईमान वालो! अल्लाह के आगे तौबः करो, ख़ालिस (दिल) तौबः, उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारी बुराइयाँ तुमसे दूर कर दे, और तुम्हें जन्नत (बाग़ों) में दाख़िल कर दे जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उस दिन अल्लाह नबी को और उन लोगों को, जो उनके साथ ईमान लाए रूसवा नहीं करेगा, और उनका नूर उनके आगे, और उनके दाईं ओर दौड़ रहा होगा, और वे दुआ़ कर रहे होंगे, ''ऐ रब! हमारा नूर हमारे लिए पूरा कर दे और हमें बख़्श दे, बेशक 'तू' हर चीज़ पर क़ादिर है।'' (9) ऐ नबी! इन्कार करने वालों (काफ़िरों) और मुनाफ़िक़ों (कप्टाचारियों) से जिहाद कीजिए, और उनके साथ सख़्ती से पेश आइए, उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (10) अल्लाह इन्कार करने वालों के लिए नूह़ की बीवी और लूत की बीवी की मिसाल बयान करता है, वे 'हमारे' बन्दों में से, दो नेक बन्दों के अधीन (निकाह में) थीं, मगर दोनों ने उनके साथ बेवफाई की, तो वे अल्लाह के मुक़ाबले में उन औ़रतों के कुछ भी काम न आ सके और 'उनसे' कह दिया गया, ''तुम भी दोज़ख़ में दाख़िल होने वालों के साथ दाख़िल हो जाओ।'' (11) और ईमान वालों के लिए अल्लाह ने फ़िरऔ़न की बीवी की मिसाल पेश की है, जबकि उसने कहा, ''ऐ मेरे रब! 'तू' मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना और मुझे फ़िरऔ़न और उसके अ़मल से छुट्कारा दे, और छुट्कारा दे मुझे ज़ालिम लोगों से।'' (12) और इमरान की बेटी मरयम की, जिन्होंने अपनी शर्मगाह (सतीत्व) की रक्षा की थी, फिर 'हमने' उसमें अपनी रुह़ फूँक दी, और उसने अपने 'रब' के कलिमों (बोलों), और 'उसकी' किताबों की पुष्टि की और वह फ़रमाँबरदारों में से थी।

आयत नं० 1 से 12 तक की व्याख्या

1-2 يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝

ह़लाल को ह़राम क़रार देने की मुमानिअ़त

यहाँ से सूरः तह़रीम शुरु हो रही है। इस की शुरुआ़ती आयात के नुज़ूल का एक कारण एक वाक़िआ़ है और वह यह कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) नमाज़े अ़स्र के बाद थोड़ी देर के लिए अपनी बीवियों के पास तशरीफ़ ले जाया करते और थोड़ा-थोड़ा वक़्त हर एक के पास गुज़ारते थे। एक दिन जब 'ह़ज़रत ज़ैनब बिन्त जह़श' के पास तशरीफ़ ले गए तो उन के यहाँ शहद पीने में थोड़ी देर लग गई। 'ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' फ़रमाती हैं कि मैंने और 'ह़फ़्सा' ने आपस में मश्वरह किया कि हम में से जिस के

पास भी आज रसूलुल्लाह (सल्ल०) तशरीफ़ लाएँ तो हम कह देंगे कि शायद आप ने 'मग़ाफ़ीर' खाया है (यह एक क़िस्म का गोंद होता था जिसमें बू होती थी) चुनाँचे आप (सल्ल०) दोनों में से किसी के पास तशरीफ़ लाए तो यही बात अ़र्ज़ की गई। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मैंने मग़ाफ़ीर तो नहीं खाया, बल्कि मैंने ज़ैनब बिन्त जह़श के यहाँ शहद पिया है और मै समझ गया कि कोई बात है, इस पर क़सम खा ली कि आज के बाद हरग़िज़ नहीं पियूँगा। इस पर आयते करीमा يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ नाज़िल हुई। **(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 729 भाग 2)**

यह क़िस्सा ज़रा तफ़्सील से 'सह़ीह़ बुख़ारी' पेज नं० 793 में भी है, इस में कुछ इख़्तिलाफ़ रिवायत भी है। अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को उस्वा और नमूना बना कर भेजा था, इस लिए तरह़-तरह़ के वाक़िआ़त घटित हुए ताकि उम्मत को अपने ह़ालात और मामलात में उन से सबक़ मिले। आप की बाज़ बीवियों ने जो ऐसा मश्वरह किया था कि आप तशरीफ़ लाएँगे तो हम ऐसा-ऐसा कहेंगे, यह शौहर और बीवी की आप में दिल्लगी की बात है। इस में यह सवाल पैदा नहीं होता कि उन औ़रतों ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को क्यों तक्लीफ़ पहुँचाई।

जब यह अ़र्ज़ किया गया कि आप ने गोंद जैसी चीज खाई है तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया मैंने नहीं खाया। मैं 'ज़ैनब' के यहाँ शहद पीकर आया हूँ और साथ ही क़सम भी खा ली कि अब मैं आइन्दा नहीं खाऊँगा और सवाल करने वाली बीवी से यह भी इर्शाद फ़रमाया कि तुम किसी को न बताना।

अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को सम्बोधित कर के फ़रमाया कि ऐ नबी! जो चीज़ें अल्लाह ने आप के लिए हलाल क़रार दी हैं, आप उन को अपने ऊपर ह़राम क्यों करते हैं? आप अपनी बीवियों को खुश करने के लिए यह ह़राम क़रार देना उन की ख़ुशी के लिए है ह़लाल को ह़राम क़रार देना और फिर उस पर क़सम खाना आप के शायाने शान नहीं है।

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।)

'साह़िबे रुहुल मआ़नी' लिखते हैं कि यहाँ रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ज़ाते गिरामी की अ़ज़्मत बताई गई है कि बेहतर को छोड़ना भी आप के मक़ामे बुलन्दी के ख़िलाफ़ है। यह भी उम्मीद नहीं होनी चाहिए थी और जो कुछ हो गया अल्लाह तआ़ला ने उसे भी माफ़ फ़रमा दिया। (आप ने यक़ीन से ह़लाल को ह़राम क़रार नहीं दिया था, अलूबत्ता तर्क मुबाह़ (जाय़ज) पर क़सम खा ली थी।)

क़सम खाने के बाद-

قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ

(ऐ मुसलमानों! अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी क़समों को शरीअ़त में खोल देना फ़रमाया है।)

इस में शब्द لَكُمْ बढ़ा कर यह बता दिया कि सारी उम्मत के लिए यही हुक्म है कि जब किसी चीज़ की क़सम खा लें तो अल्लाह तआ़ला ने उस से पलटने का जो तरीक़ा फ़रमाया है, उस के मुताबिक़ अ़मल कर लें। यह क़सम का खोलना यानी क़सम खाकर जो बात अपने ज़िम्मे कर ली है उस से निकलना

दो तरीक़े से है। एक तो यह है कि क़सम को पूरा कर दे (बशर्त कि गुनाह न हो) और दूसरा यह कि अगर क़सम टूट जाए तो उस का कफ़्फ़ारा दे दिया जाए। इन दोनों सूरतों में क़सम ख़त्म हो जाती है यानी उस का हुक्म बाक़ी नहीं रहता। फिर मालूम होना चाहिए कि एक तो यह क़सम है कि अल्लाह की क़सम ऐसा करुँगा या ऐसा नहीं करुँगा।

(फिर उस में मुअ़ल्लक़ और ग़ैर मुअ़ल्लक़ की तफ़्सीलात हैं) और दूसरी सूरत यह है कि किसी ह़लाल को अपने ऊपर ह़राम कर ले।

ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) के नज़्दीक यह भी यमीन (क़सम) है, इस का भी कफ़्फ़ारा वाजिब है। जैसा कि क़सम की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने पर कफ़्फ़ारा लाज़िम आता है।

3 وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهُ
وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أَنْبَأَكَ هَٰذَا قَالَ نَبَّأَنِيَ الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ۝

शहद का वाक़िआ़

कुछ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत का तअ़ल्लुक़ भी शोहदा वाले क़िस्से से बताया है और यूँ तफ़्सीर की है कि आप (सल्ल०) ने जो फ़रमाया था कि मैं शहद नहीं पियूँगा, उस के साथ यह भी फ़रमा दिया था कि किसी से कहना नहीं, लेकिन जिस बीबी से यह फ़रमाया था उस ने आप की दूसरी बीबी को यह बात बता दी।

अल्लाह तआ़ला ने आप को बज़रिये वह़्य इस की ख़बर दे दी, तो आप (सल्ल०) ने बीबी को थोड़ी सी बात बता दी यानी यह जता दिया कि तूने इस बात को ज़ाहिर कर दिया और फ़लाँ औ़रत से कह दिया और आप (सल्ल०) ने एराज़ फ़रमाया, ताकि बताने वाली बीबी को यह बात जानकर शर्मिन्दग़ी न हो कि मैंने जो कुछ दूसरी ख़ातून से कहा है वह सब आप को मालूम हो गया। जब आप ने बात बताने वाली बीवी को यह जतलाया कि तूने मेरी बात कह दी तो उस ने सवाल किया कि आप को किस ने ख़बर दी, आप ने फ़रमाया कि मुझे अ़लीम व ख़बीर यानी अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी।

ह़ज़रत मारिया का वाक़िया-

तफ़्सीर की किताबों में यहाँ एक और वाक़िआ़ भी लिखा है, वह वाक़िआ़ मुआ़लिमुल् तन्ज़ील में यूँ लिखा है कि 'ह़ज़रत ह़फ़्सा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा' ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से आप के घर जाने की इजाज़त माँगी (आप ने इजाज़त दे दी आप की एक बांदी मारिया क़िब्तिया थीं जिन से साह़बज़ादा इब्राहीम पैदा हुए थे।) **(रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा)**

वह वहाँ पहुँच गईं, आप (सल्ल०) ने उन से अपनी ह़ाजत पूरी कर ली, 'हफ़्सा' जो वापस आईं तो उन्होंने दरवाज़ा बन्द देखा और सूरतेह़ाल को भांप लिया। जब आप तशरीफ़ लाए तो शिकायत कीं कि आप ने मेरे इकराम (सम्मान) के ख़िलाफ़ किया और मेरी बारी के दिन और मेरे बिस्तर पर बांदी से

फायदा उठाया। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया इस में एतिराज़ की कौन सी बात है, वह मेरी बाँदी है, अल्लाह तआ़ला ने मेरे लिए इस को ह़लाल क़रार दिया है।

चलो ख़ामोशी अख़्तियार करो, मै उसे अपने ऊपर ह़राम क़रार देता हूँ अब तो खुश हो जाओ और किसी को न बताना। जब आप बाहर तशरीफ़ ले गए तो 'ह़ज़रत ह़फ़्सा' ने 'ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' का दरवाज़ा खट्खटाया और उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाई कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपनी बांदी को अपने ऊपर ह़राम क़रार दे दिया है। इस के बाद साह़िबे मुआ़लिमुल् तन्ज़ील ने लिखा है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जो अपनी बाँदी को अपने ऊपर ह़राम फ़रमा लिया था।

وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ से यह बात मुराद है जिस में यह है कि आप ने 'ह़फ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' से फ़रमाया था कि किसी को न बताना, फिर ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से नक़्ल किया है कि आप ने उसी वक़्त यह भी बता दिया था कि मेरे बाद 'अबू बक्र' व 'उ़मर ख़लीफ़ा' होंगे।

'ह़ज़रत ह़फ़्सा' ने यह बातें अपनी सहेली 'ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' को बता दीं। आप ने फ़रमाया कि तूने आइशा को यह बात बताई है, उन्होंने अ़र्ज़ किया कि आप को किस ने बताया? आप ने फ़रमाया मुझे अ़लीम व ख़बीर ने बता दिया।

ह़ज़रत ह़फ़्सा ने ह़ज़रत आ़इशा को बांदी ह़राम करने वाली बात भी बता दी थी और ख़िलाफ़त वाली भी, लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन से एक बात का ज़िक्र फ़रमाया और एक बात को छोड़ दी यानी यूँ नहीं फ़रमाया कि तूने आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को ख़िलाफ़त वाली बात भी बताई है। आप चाहते थे कि ख़िलाफ़त वाली बात लोगों में न फैले।

'मुफ़स्सिर कुर्तुबी' ने भी 'ह़ज़रत मारिया' को ह़राम क़रार देने वाली बात लिखी है और यह भी लिखा है कि सनद के एतिबार से और मअ़नवी तअ़ल्लुक़ के एतिबार से यह ज़्यादह ठीक है, लेकिन सह़ीह़ अह़ादीस में मज़्कूर नहीं है। अगर इस रिवायत को सामने रखा जाए तो عَرَّفَ بَعْضَهُ का मतलब यह होगा कि 'ह़ज़रत ह़फ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' ने 'ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' को जो बातें बताई थीं उन में से आप ने कुछ बात बता दीं और कुछ बात से ख़ामोशी अख़्तियार फ़रमा ली।

ख़ुलासा-

ऊपर की आयत को शहद वाले क़िस्से से मुतअ़ल्लिक़ माना जाए तो इस में चूंकि 'ह़ज़रत ह़फ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' और 'ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' ने यह मश्वरह किया था कि आप तशरीफ़ लाएँगे तो हम यूँ कहेंगे कि आप ने शहद पिया है, लिहाज़ा दोनों की ज़ात पर ह़र्फ़ आता है कि उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तक्लीफ़ देने वाला मश्वरह क्यों किया, इरादा चाहे तक्लीफ़ देने का न हो सिर्फ़ दिल्लग़ी मक़्सूद हो लेकिन सूरतेह़ाल ऐसी बन गई कि आप (सल्ल०) को इस से तक्लीफ़ पहुँची, लिहाज़ा तौबः का हुक्म दिया गया।

दूसरे में बज़ाहिर ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा पर कोई बात नहीं आती क्योंकि उन्होंने सिर्फ़ बात सुनी थी और आगे बढ़ाने का ज़िक्र भी नहीं मिलता। वल्लाहु तआ़ला आ़लम।

4-5 اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝ عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बाज़ बीवियों से ख़िताब

यह दो आयतों का अनुवाद है। पहली आयत में ह़ज़रत ह़फ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा और ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को तौबः की तरफ़ मुतवज्जेह फ़रमाया है। इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुम अल्लाह की बारगाह में तौबः कर लो तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है, क्योंकि तुम्हारे दिल सह़ी राह से हट गये थे, तुम्हारी बातों से प्रभावित होकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने शहद पीने और अपनी बाँदी 'मारिया' से फायदा उठाने से परहेज़ करने का इरादा फ़रमा लिया था और इस के बारे में क़सम खा ली थी, ह़ालांकि आप को पसन्द थीं। इन बातों से जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तक्लीफ़ पहुँची उस की वजह से अल्लाह तआ़ला ने तौबः करने की तरफ़ मुतवज्जेह फ़रमाया।

दूसरी आयत में आप की बीवियों से ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि अगर नबी करीम (सल्ल०) तुम को तलाक़ दे दें तो उन का परवरदिग़ार अ़न्क़रीब तुम्हारे बदले तुम से अच्छी औ़रतें अ़ता फ़रमा देगा। यह औ़रतें इस्लाम वाली, ईमान वाली, फ़रमाँबरदारी करने वाली, तौबः करने वाली, अ़िबादत करने वाली, रोज़े रखने वाली होंगी, जिन में बेवा भी होंगी और कुवाँरी भी, फिर ऐसा वाक़िआ़ पेश नहीं आया, न रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन्हें तलाक़ दी और न उन के बदले दूसरी बीवियाँ अ़ता कीं।

मज़ीद फ़रमाया कि अगर तुम दोनों आपस में किसी ऐसी बात पर एक दूसरे की मदद करती जिस से रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तक्लीफ़ पहुँच सकती हो तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) को इस से नुक़्सान नहीं पहुँचेगा क्योंकि उनका अल्लाह उन का मौला है और जिब्रईल भी और मोमिनीन भी और फ़रिश्ते भी मदद्गार हैं, जिस के साथ अल्लाह तआ़ला की मदद हो और फ़रिश्तों की ख़ासकर जिब्रईल की और सालेह़ मोमिनीन की मदद हो, उसे तुम्हारे मश्वरे क्या नुक़्सान दे सकते हैं।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) से दर्याफ़्त किया वह दोनों कौन सी औ़रतें हैं जिन के बारे में وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ फ़रमाया है, अभी मेरी बात पूरी न हुई थी कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने जवाब दिया कि इस से आ़इशा (रज़ियल्लाहु अ़न्हा) और ह़फ़्सा (रज़ियल्लाहु अ़न्हा) मुराद हैं। **(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 731, भाग 2)**

रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ईला फ़रमाने का ज़िक्र–

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक मर्तबः नाराज़ होकर एक माह का ईला कर लिया था यानी यह क़सम खा ली थी कि बीवियों के पास नहीं जाऊँगा। आप (सल्ल०) ने दूसरी मन्ज़िल के कमरे में क़याम फ़रमा

लिया। सह़ाबा (रज़ि०) में मशहूर हो गया कि आप (सल्ल०) ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी।

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) इस बात का पता लगाने के लिए आप (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुए और उस से पहले समझाने के तौर पर ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा और अपनी बेटी ह़ज़रत ह़फ़्सा और ह़ज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के पास तशरीफ़ ले गये। 'ह़ज़रत अबू बक्र' (रज़ि०) पहले से ह़ाज़िरे ख़िद्मत हो चुके थे।

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! औ़रतों के बारे में आप को क्या परेशानी है, अगर आप ने उन को तलाक़ दे दी तो आप के साथ अल्लाह और जिब्रईल और मीकाईल और मैं और 'अबू बक्र' और दूसरे मोमिनीन हैं।

अल्लाह तआ़ला ने मेरी तस्दीक़ फ़रमाई और आयते करीमा عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا और आयते करीमा وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ नाज़िल फ़रमाई।

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सवाल किया या रसूलल्लाह! मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ तो देखा मोमिनीन बैठे हैं और यूँ कह रहे हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी है। आप (सल्ल० ने फ़रमाया नहीं। मैंने अ़र्ज़ किया आप की इजाज़त हो तो मैं उन्हें बता दूँ कि तलाक़ नहीं दी, आप (सल्ल० ने फ़रमाया अगर चाहो तो बता दो।

इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) दूसरी मन्ज़िल से नीचे उतर आए अभी आप को उन्तीस दिन हुए थे। ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अ़र्ज़ किया कि अभी 29 दिन हुए हैं, आप ने तो क़सम खाई थी कि एक माह बीवियों के पास नहीं जाएँगे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया यह उन्तीस का महीना है।

(सह़ीह़ मुस्लिम पेज नं० 478 इला 482)

6-9 يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ
غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا
تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۖ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ
تَوْبَةً نَّصُوْحًا ۖ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ
اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۞ يٰٓاَيُّهَا
النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۞

सच्ची तौबः करने का हुक्म

यह चार आयात का तर्जुमः है। पहली आयत में ईमान वालों से ख़िताब फ़रमाया कि तुम अपनी जानों को और अपने घरवालों को ऐसी आग से बचाओ जिस का ईधन इन्सान हैं और पत्थर हैं। दुनिया

में जो आग है, वह लकड़ी या तेल या गैस से जलती है और है भी कम गर्म और दोज़ख़ की आग का ईधन इन्सान हैं और पत्थर और वह आग बहुत ज़्यादह गर्म भी है।

ह़दीस शरीफ़ में है कि दोज़ख़ की आग दुनिया की आग से उन्हत्तर दर्जे ज़्यादह गर्म है।

(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 242)

ऐसी आग से बचना और अपने घरवालों को बचाना अ़क्ल के एतिबार से भी ज़रूरी है और यह बचना उसी तरह़ होगा कि अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी से ख़ुद भी बचे और अपने घरवालों को भी बचाये, उन्हें दीनी एह़काम सिखाये और उन पर अ़मल कराये। दुनिया में खिलाने पहनाने के लिए अपने परिवार के लिए इन्तिज़ाम तो करते हैं, लेकिन दोज़ख़ की आग से बचाने का एहतिमाम नहीं किया जाता, इस में आ़मतौर से ग़फ़्लत बरती जाती है।

अल्लाह तआ़ला ने ईमान वालों को हुक्म दिया है कि तुम अपनी जानों को भी उस आग से बचाओ और अपने अहल व अ़याल को भी, इस में फ़रायज़ व वाजिबात का ख़ुद एहतिमाम करने और परिवार वालों को अ़मल कराने का हुक्म आ गया और गुनाहों से बचने और बचाने का भी, बल्कि ह़लाल खाने और खिलाने का हुक्म भी आ गया। ह़राम खाना और औलाद को ह़राम खिलाना दोज़ख़ में जाने और ले जाने का ज़रिया है।

ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो गोश्त ह़राम से पला बढ़ा होगा जन्नत में दाख़िल न होगा और जो गोश्त ह़राम से पला बढ़ा होगा, दोज़ख़ उस की ज़्यादह हक़दार होगी। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 242)**

ह़लाल कमाए ह़लाल खाए और बीवी बच्चों को भी ह़लाल खिलाए ह़राम से बचे और ह़राम से बचाए, ह़राम से पेट भर देना उन के साथ हमदर्दी नहीं है बल्कि उन के साथ ज़ुल्म है। इस से यह भी मालूम हुआ कि अपने घर वालों को दीन सिखाना भी ज़रूरी है क्योंकि अ़मल बिना इ़ल्म के नहीं हो सकता, इ़ल्म के बिना जो अ़मल होगा वह ग़लत होगा वह भी अ़ज़ाबे दोज़ख़ का सबब बनेगा।

'तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर' में भाग 1 पेज नं० (36) बह़वाला तबूरानी, ह़ाकिम और बैहक़ी ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि०) नक़्ल किया गया है कि यह पत्थर जिन का ज़िक्र अल्लाह तआ़ला ने وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ में फ़रमाया है किबरियत (गंधक) के पत्थर हैं, अल्लाह तआ़ला ने जैसे चाहा पैदा फ़रमा दिया (उस आग की तेज़ी फिर गंधक के पत्थरों का ईधन होना इस सब का तसव्वुर (कल्पना) करे, ख़ुद भी सोचे और परिवार वालों को भी समझाए ताकि गुनाहों के छोड़ने पर नफ़्स आमादह हो जाए।

दोज़ख़ पर जो फ़रिश्ते मुक़र्रर (Appoint) हैं उन के बारे में फ़रमाया कि वह सख़्त मिज़ाज हैं और बहुत ज़्यादह मज़बूत हैं और फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जो हुक्म मिलता है उस की नाफ़रमानी नहीं करते जो कुछ उन्हें हुक्म होता है वही करते हैं। इस में यह बता दिया कि कोई भी दोज़ख़ी उन फ़रिश्तों से जान छुड़ा कर दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल कर दीवारों को फांद कर नहीं जा सकता, उन्हें जो भी हुक्म होता है मज़बूती के साथ उस पर अमल करते हैं।

काफ़िरों की सज़ा-

दूसरी आयत में उस का ज़िक्र फ़रमाया जो काफ़िरों के साथ क़ियामत के दिन होगा। काफ़िर अ़ज़ाब से छूटने के लिए उ़ज़्र पेश करेंगे, उन से कहा जाएगा ऐ काफ़िरों! आज तुम उ़ज़्र पेश न करो, दुनिया में पहले ही सब कुछ बता दिया था, तुम ने अल्लाह को नहीं माना उस की बातों को झुठलाया, क़ियामत के दिन का इन्कार कर दिया जो कुछ तुम ने दुनिया में किया आज यहाँ उसी का बदला दिया जाता है।

तौबः का हुक्म-

तीसरी आयत में अहले ईमान को तौबः करने का हुक्म दिया और उस का फ़ायदा बताया। इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह से तौबः करो, यह तौबः पक्की और मज़बूत हो। तौबः करने से तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा फ़रमा देगा और ऐसे बाग़ात में दाख़िल फ़रमा देगा जिस के नीचे नहरें जारी होंगी।

'मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' में **"तौबतन्नसूहा"** की तशरीह़ में 'ह़ज़रत मआ़ज़' (रज़ि०) से नक़्ल किया गया है कि ऐसी तौबः हो जिस के बाद गुनाह करने के लिए वापस न लौटे जैसे दूध थनों में वापस नहीं लौटता।

और ह़ज़रत ह़सन (रह़०) से नक़्ल किया है कि बन्दा पिछले आ़माल पर शर्मिन्दा हो और आइन्दा के लिए पुख़्ता अ़ज़्म व इरादा के साथ यह तय कर ले कि अब गुनाह नहीं करुँगा। यह "तौबतन्नसूहा" है। इस के बाद बहुत बड़ी बशारत दी कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला नबी करीम (सल्ल०) को और उन लोगों को जो उन के साथ अहले ईमान है, रुस्वा नहीं करेगा क्योंकि उस दिन की रुस्वाई काफ़िरों के लिए खास है जो कुफ़्र की वजह से होगी।

सूरः नह़ल (आयत नं० 27) में फ़रमाया إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ (कि बिलाशुब्हा आज पूरी रुस्वाई और अ़ज़ाब काफ़िरों पर है।)

चूंकि وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ से कामिलीन फ़िल् ईमान मुराद हैं जो अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहेंगे। इसलिए यह सवाल पैदा नहीं होता कि जो अहले ईमान अपनी बद्आ़मालियों की वजह से दोज़ख़ में जाएँगे, उन का यह दाख़िला भी ज़िल्लत है।

अहले ईमान की ख़ूबी और ख़ुशी का ह़ाल बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि उन का नूर उन के आगे-आगे और उन के दाहिनी तरफ़ दौड़ रहा होगा यानी पुल सिरात पर उन्हें अ़ता किया जाएगा, उस नूर की वजह से वह पुल सिरात से बिना किसी ख़राश और छिलन के पार हो जाएँगे।

क़ियामत के दिन अहले ईमान का नूर-

यह लोग अल्लाह के दरबार में दुआ़ करेंगे कि ऐ हमारे रब! हमारा नूर पूरा फ़रमा दीजिए। जो नूर कामिल हमें अ़ता फ़रमाया है उसे बाक़ी रखिए।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से 'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' ने नक़्ल किया है कि जब मुनाफ़िक़ीन का

नूर बुझ जाएगा यानी अहले ईमान की रौशनी में उन के पीछे-पीछे आकर जो उन की रौशनी से फ़ायदा उठा रहे होंगे और मोमिनीन के आगे बढ़ जाने की वजह से पीछे रह जाएँगे, उस वक़्त अहले ईमान अपना नूर बाक़ी रखने की दुआ़ करेंगे और नूर बाक़ी रहने की दुआ़ के साथ मग़्फ़िरत की दरख़्वास्त भी करेंगे और गुनाहों की बख़्शिश करने वाले के लिए यूँ अ़र्ज़ करेंगे وَاغْفِرْلَنَا (और हमें बख़्श दीजिए।) اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (बेशक आप हर चीज़ पर क़ादिर हैं।)

काफ़िरों से सख़्ती-

चौथी आयत में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ख़िताब फ़रमाया कि ऐ नबी! आप काफ़िरों (इन्कारियों) से और मुनाफ़िक़ों (कप्टाचारियों) से जिहाद करें और उन के साथ सख़्ती से पेश आएँ और यह भी फ़रमाया कि उन का ठिकाना दोज़ख़ है और वह बुरा ठिकाना है।

'अ़ल्लामा क़ुर्तुबी' (रह़०) लिखते हैं कि इस आयत में काफ़िरों (इन्कारियों) से जिहाद बिस्सैफ यानी ताकत के ज़रिये और मुनाफ़िक़ों पर हुज्जत क़ायम करने का हुक्म फ़रमाया है, उन्हें यह बताना कि आख़िरत में तुम्हारी बद्ह़ाली होगी और तुम्हारे साथ नूर न होगा और मोमिनीन के साथ पुल सिरात पर न गुज़र सकोगे यह सब उन के साथ जिहाद करने और सख़्ती का मामला करने को शामिल है।

फिर ह़ज़रत ह़सन से नक़्ल किया गया है कि सख़्ती का मामला करने का मतलब यह है कि उन पर हुदूद क़ायम कीजिए क्योंकि वह ऐसे काम करते रहते थे जिस की वजह से उन पर ह़द जारी की जाती थी।

'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' ने भी 'ह़ज़रत ह़सन' से यह बात नक़्ल की है, उन ह़ज़रात ने जो कुछ फ़रमाया वह भी ठीक है। وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ में यह भी है कि मुनाफ़िक़ों की ह़रकतें एक वक़्त तक बर्दाश्त करने के बाद उन्हें ज़िल्लत के साथ नाम ले ले कर मस्जिदे नबवी से निकाल दिया गया था।

10-12 ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝

ह़ज़रत नूह़ व लूत (अ़लै०) और फ़िरऔ़न की बीवी

इन आयात में दो ऐसी औ़रतों का ज़िक्र फ़रमाया है जो नबियों के निकाह़ में होते हुए काफ़िर थीं और कुफ़्र पर जमी रहीं और दो ईमान वाली औ़रतों का ज़िक्र फ़रमाया है।

जिन काफ़िर औ़रतों का ज़िक्र फ़रमाया उन में से एक ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की और दूसरी ह़ज़रत लूत (अ़लै०) की बीवी है। (पिछली शरीअ़तों में काफ़िर औ़रत से निकाह़ जायज़ था, हमारी शरीअ़त में सिर्फ़ मुस्लिमा और किताबी औ़रत से निकाह़ जायज़ है, काफ़िर ग़ैर किताबिया से निकाह़ करना जायज़ नहीं है।)

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की बीवी-

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) का जैसे एक बेटा काफ़िर था, समझाने बुझाने और तूफ़ान का अ़ज़ाब नज़रों से देखने के बावजूद ईमान न लाया, उसी तरह़ से आप की बीवी ने भी ईमान क़ुबूल न किया, जबकि एक नबी के साथ रहती रही, लेकिन मोमिन होना गवारा न किया।

मुआ़लिमुल् तन्ज़ील में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से नक़्ल किया गया है कि यह औ़रत यूँ कहा करती थी कि यह शख़्स दीवाना है।

ह़ज़रत लूत (अ़लै०) की बीवी-

दूसरी काफ़िर औ़रत जिस का ज़िक्र फ़रमाया, ह़ज़रत लूत (अ़लै०) की बीवी थी। क़ुर्आन मजीद में कई जगह यह बताया गया है कि ह़ज़रत लूत (अ़लै०) की क़ौम के लोग ग़ैर फ़ित्री अ़मल करते थे और मर्दों से शहवत (Homosex) पूरी करते थे। ह़ज़रत लूत (अ़लै०) ने बार-बार उन्हें समझाया लेकिन वह लोग न माने। मुआ़लिमुल् तन्ज़ील में लिखा है कि उन की बीवी क़ौम के लोगों की मदद करती थी और जब कोई मेहमान ह़ज़रत लूत (अ़लै०) के पास आता तो लोगों को घर में आग जला कर बता देती थी कि इस वक़्त तुम्हारा मक़्सद पूरा हो सकता है

(आग जलाने को उस ने मेहमानों की आमद का निशान बना रखा था, क़ौम के लोग धुवाँ या रौशनी देखकर समझ जाते थे कि मेहमान आए हैं और फिर उन से ख़्वाहिश पूरी करने की कोशिश करते थे।)

रुहुल् मआ़नी में भी فَخَانَتَاهُمَا की तफ़्सीर करते हुए इन बातों को लिखा है यानी यह कि ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की बीवी आप को दीवाना बताती थी और ह़ज़रत लूत (अ़लै०) की बीवी मेहमानों की ख़बर देती थी। **(ह़ाकिम)**

यह दोनों नबी की बीवी थी, लेकिन दोनों कुफ़्र पर ही क़ायम रहीं और उसी पर मौत आई, लिहाज़ा इस की सज़ा में उन को दूसरे दोज़ख़ियों के साथ दोज़ख़ में जाना पड़ेगा उन के शौहरों का नबी होना उन के कुछ काम न आएगा।

'साह़िबे मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' लिखते हैं कि आयत में अल्लाह तआ़ला ने हर ऐसे शख़्स की उम्मीद को ख़त्म कर दिया जो ख़ुद गुनाहगार हो (कुफ़्र का गुनाह हो या फ़िस्क़ का) और उम्मीद रखता हो कि जिन नेक बन्दों से मेरा तअ़ल्लुक़ है उन की नेकी और ख़ूबी मेरे तअ़ल्लुक़ की वजह से मुझे नफ़ा देगी, ख़ुद गुनाहगार होते हुए अपने मुतअ़ल्लिक़ीन का नेक होना काम नहीं आ सकता, अपने निजात की ख़ुद फ़िक्र करे।

जो लोग निस्बतों पर भरोसा कर के ईमान से और आ़माले सालिह़ा से दूर रहते हैं और यूँ समझते हैं कि किसी की बीवी या बेटा या पोता या नवासा होने से हमारी निजात हो जाएगी यह उन की ख़याली बाते है। قطع الله بهذه الآية طمع كل من يركب المعصة ان ينفعه صلاح غيره (भाग 4 पेज नं० 2368)

जिन दो मोमिन औ़रतों का ज़िक्र फ़रमाया उन में एक फ़िरऔ़न की बीवी थी, वह ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) पर ईमान ले आई थी। जो लोग ईमान ले आए थे फ़िरऔ़न उन्हें बड़ी तक्लीफ़ें पहुँचाता था, अहले ईमान को ज़मीन पर लिटा कर हाथों में कीलें गाड़ देता था और इस वजह से उसे सूरः स्वाद और सूरः अल् फ़ज्र में ज़ुलूअवताद (कीलों वाला) बताया है।

फ़िरऔ़न की बीवी-

तफ़्सीर रुहुल् मआ़नी में ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से नक़्ल किया है कि फ़िरऔ़न ने अपनी बीवी के हाथ और पांव में कीलें गाड़ दी थीं, जब कीलें गाड़ने वाले हट गए तो फ़रिश्तों ने उस पर साया कर दिया। उस वक़्त उस ने यह दुआ़ कीः-

رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ (ऐ मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में घर बना दीजिए।)

यानी मुक़र्रब बन्दों के मक़ामाते आ़लिया में जगह नसीब फ़रमा। दुआ़ की तो उन का जन्नत वाला घर उसी वक़्त मुन्कशिफ़ (प्रकट) या ज़ाहिर हो गया।

जन्नत में बुलन्द मर्तबों की दरख़्वास्त करने के बाद यूँ दुआ़ की किः-

وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ (कि या रब! मुझे फ़िरऔ़न से और उस के अ़मल से निजात दे दे) और साथ ही यूँ भी दुआ़ की وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ (कि मुझे ज़ालिम क़ौम से निजात दे दीजिए।)

उन ज़ालिमों से फ़िरऔ़न के कार्यकर्ता मुराद हैं, जो फ़िरऔ़न के हुक्म से अहले ईमान को तक्लीफ़ें पहुँचाया करते थे। (रुहुल् मआ़नी भाग 28 पेज नं० 163, 164)

'मुआ़लिमुल तन्ज़ील' में लिखा है कि जब फ़िरऔ़न ने अपने कार्यकर्ता को हुक्म दिया कि उस के सीने पर भारी पत्थर रख दिया जाए। जब पत्थर लेकर आए तो उन्होंने यह दुआ़ की, उन्होंने अपना घर जन्नत में देख लिया जो मोतियों का घर था और उसी वक़्त रुह़ परवाज़ कर गई। जब लोगों ने पत्थर रखा तो बिला रुह़ का जिस्म था, उन्हें उस पत्थर से कोई तक्लीफ़ नहीं पहुँची। (वल्लाहु आ़लम बिल् सवाब)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जिन औ़रतों की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है उन में ह़ज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा, ह़ज़रत मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा, ह़ज़रत सय्यदह फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा, ह़जरत आ़ईशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा और ह़ज़रत 'आसिया' रज़ियल्लाहु अन्हा की फ़ज़ीलत का ज़िक्र मिलता है। (रुहुल् मआ़नी)

'आसिया' फ़िरऔ़न की बीवी का नाम था।

सह़ीह़ बुख़ारी भाग (1) पेज नं० (532) में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मर्दों में बहुत कामिल हुए और औ़रतों में से कामिल नहीं है, मगर 'मरयम' (ह़ज़रत ईसा अ़लै० की वालिदा)

और 'आसिया' (फ़िरऔ़न की बीवी) और 'आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' की फ़ज़ीलत लोगों पर ऐसी है जैसी फ़ज़ीलत सरीद की बाक़ी खानों पर।

अहले ईमान को ह़ज़रत 'मरयम बिन्त इ़मरान' का ह़ाल भी बताया, उनका ज़िक्र सूरः आले इ़मरान रुकूअ़ नम्बर (4) और रुकूअ़ नम्बर (5) में और सूरः मरयम रुकूअ़ नम्बर (2) और सूरतुल् अम्बिया रुकूअ़ नम्बर (6) में पहले गुज़र चुका है। यह ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की वालिदा थीं, चूंकि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) बिना बाप के पैदा हुए थे, इसलिए बनी इस्राईल ने ह़ज़रत मरयम पर तोहमत धरी थी। अल्लाह तआ़ला ने उन की बराअत (निजात) और पाकबाज़ी बयान फ़रमाई। इर्शाद फ़रमायाः-

ह़ज़रत मरयम का ज़िक्र-

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِىٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا (और अल्लाह ने अहले ईमान के लिए मरयम बिन्त इ़मरान की मिसाल बयान फ़रमाई, जिस ने अपनी नामूस को मह़फ़ूज़ रखा।)

فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا (सो हम ने उस में अपनी रुह़ फूंक दी।)

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) को भेजा, जिन्होंने ह़ज़रत मरयम के गिरेबान में फूंक दिया उसी से ह़मल (गर्भ) क़रार पा गया और कुछ वक़्त गुज़रने के बाद ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) पैदा हो गए। जिस की तफ़्सील सूरः मरयम में गुज़र चुकी है।

ह़ज़रत मरयम की पाकदामिनी बयान फ़रमाने के बाद उन की दो सिफ़ात बयान फ़रमाईं। इर्शाद फ़रमायाः-

وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ (और उस ने अपने रब के कलिमात की और उस के किताबों की तस्दीक़ की) यह विषय तमाम ईमानियात को शामिल है।

फ़रमाया وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ (और वह फ़रमाँबरदारों में से थी) यानी अल्लाह तआ़ला की इताअ़त और फ़रमाँबरदारी में लगी रहती थी।

बाज़ उ़ल्मा ने फ़रमाया कि वह अ़िबादत करने में उन मर्दों के शुमार में आ गईं जो अ़िबादत व ताअ़त में ही लगे रहते थे, चूंकि आम तौर से अ़िबादात में मर्द ही पेश-पेश होते हैं इसलिए ह़ज़रत मरयम को अ़िबादत में मश्ग़ूल रहने वाले मर्दों में शुमार फ़रमाया।

ह़दीस शरीफ़ में है जो كَمُلَ مِنَ الرِّجَالِ كَثِيْرٌ وَلَم يَكْمُلُ مِنَ النِّسَاءِ اِلَّا مَرِيَمُ بِنْتِ عِمْرَانَ و آسِيَةُ امرَآةِ فِرْعَوْنَ फ़रमाया है, इस से इस तरफ़ इशारा मिलता है।

(भाग–67)

सूर–ए–मुल्क

(सूरः नं. 67)

सूरः मुल्क का संक्षिप्त परिचय

नाम– पहली आयत में शब्द الْمُلْكُ आया है, यही इस का नाम हो गया। तफ़्सीर की किताबों में इस का नाम 'तबारक' 'अल् वाक़िआ' 'अल्मुन्जिआ' और 'अल्मानिअ़ः' भी आया है।

नाज़िल होने का ज़माना–

'क़ुर्तुबी' ने लिखा है कि यह सूरः सब के नज़्दीक मक्की है। इब्ने मरदूविया और बैहक़ी वग़ैरह ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि सूरः तबारक (अल् मुल्क) मक्का में नाज़िल हुई थी।

फ़ज़ायल–

'हाफ़िज़ इब्ने कसीर' वग़ैरह ने इस सूरः की फ़ज़ीलत से मुतअ़ल्लिक़ कई रिवायत नक़्ल की है। एक ह़दीस इमाम अह़मद, अबूदाऊद, तिर्मिज़ी, नसई और इब्ने माजा वग़ैरह ने हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि अल्लाह की किताब में एक सूरः है जिस में तीस आयतें हैं, उस ने एक आदमी के लिए सिफ़ारिश की, यहाँ तक कि उसे बख़्श दिया गया।

एक दूसरी ह़दीस तिर्मिज़ी में ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) रात में जब तक "الم تنزيل" और "تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ" नहीं पढ़ लेते थे सोते नहीं थे।

आयत नं० 1 से 15 तक

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۨ﴿١﴾ الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْغَفُوْرُ ۙ﴿٢﴾ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۭ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ۭ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ﴿٣﴾ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ
كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ﴿٤﴾ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاۗءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ
عَذَابَ السَّعِيْرِ ﴿٥﴾ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٦﴾ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِىَ تَفُوْرُ ۙ﴿٧﴾ تَكَادُ
تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۭ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ﴿٨﴾ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَاۗءَنَا نَذِيْرٌ ڏ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ
اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ښ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ﴿٩﴾ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١٠﴾ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ
فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١٢﴾ وَاَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٣﴾ اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۭ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٤﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ
رِّزْقِهٖ ۭ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ﴿١٥﴾

अनुवाद-

(1) बड़ी बरकत वाला है, जिसके हाथ में सारी बादशाही है, और 'वह' हर चीज़ पर क़ादिर है; (2) 'जिसने' पैदा किया मौत और ज़िन्दगी को, ताकि तुम्हें आज़माए, कि तुम में से कौन अच्छा अ़मल करने वाला है? और 'वह' बड़ी ताक़त वाला, माफ़ करने वाला है। (3) 'जिसने' सात आसमान तह दर तह बनाए, फिर देखो! तुम को रह़मान की पैदाइश में कुछ कमी या कोई दराड़ दिखाई देती है? (4) फिर दोबारा नज़र डालो, तुम्हारी नज़र थकी हारी, तुम्हारे ही ओर उल्टी लौट आएगी। (5) और 'हमने' दुनिया के आसमान को दीपों (तारों) से सजाया और उनको शैतान पर मार भगाने का साधन बनाया, और उनके लिए भड़कती हुई आग का अ़ज़ाब भी तैयार कर रखा है। (6) और जिन लोगों ने अपने रब का इन्कार किया, उनके लिए जहन्नम का अ़ज़ाब है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है; (7) जब वे उसमें डाले जाएँगे तो उसके दहाड़ने की आवाज़ सुनेंगे, और वह भड़क रही होगी; (8) ऐसा लगेगा कि मारे जोश के फट पड़ेगी, जब भी कोई समूह उसमें डाला जाएगा तो उसके चौकीदार (कर्मचारी) उनसे पूछेंगे, ''क्या तुम्हारे पास कोई सचेत करने वाला नहीं आया था?'' (9) वे कहेंगे, ''क्यों नहीं!! ज़रूर हमारे पास सचेत करने वाला आया था, मगर हमने उसको झुठला दिया, और कहा, कि अल्लाह ने कुछ भी नहीं उतारा, तुम तो बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो।'' (10) और कहेंगे, ''अगर हम सुनते या समझते, तो हम दोज़ख़ वालों में शामिल न होते।'' (11) इस तरह वे अपने गुनाह को कुबूल करेंगे, सो दोज़ख़ियों के लिए (अल्लाह की रह़मत से) दूरी है। (12) जो लोग बिना देखे अपने रब से डरते हैं, उनके लिए माफ़ी और बड़ा अज्र है। (13) और तुम अपनी बात को छिपाओ या ज़ाहिर करो, 'वह' तो सीनों के भेद तक को जानता है। (14) क्या 'वह' नहीं जानेगा जिसने पैदा किया, और 'वह' बारीक से बारीक चीज़ को देखने वाला ख़बर रखने वाला है। (15) 'वही' तो है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को नर्म कर दिया, तुम उसकी राहों पर चलो फिरो और खाओ, अल्लाह के रिज़्क़ में से, 'उसी' की ओर दोबारा उठ कर जाना है।

आयत नं० 1 से 15 तक की व्याख्या

1-2 تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ٘ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرُ ۙ الَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَیٰوةَ لِیَبْلُوَكُمْ اَیُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْغَفُوْرُ ۙ

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने अपनी अ़ज़्मत व बड़ाई बयान फ़रमाई और अपनी ज़ात को मुल्क व सल्तनत, क़ुद्रत व इ़ल्म और हिक्मत जैसी सिफ़ात के साथ बताया है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह अ़ज़्मत व बुज़ुर्गी वाला है, उस की ख़ैर व बरकत आ़म और उस का एह़सान तमाम मख़्लूक़ात को शामिल है।

वह यह है कि वही सारी कायनात का शहन्शाह है, उसी ने सब को पैदा किया और वही तन्हा इस का अधिकारी है।

दूसरी दलील यह है कि वह हर चीज़ पर क़ादिर है, उस ने अपने कमाले क़ुद्रत के ज़रिये आसमानों और ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ात को पैदा किया है।

उस के अ़ज़ीम होने की तीसरी दलील यह है कि उसी ने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया, वही जिसे चाहता है ज़िन्दगी देता है और जिसे चाहता है मौत देता है, उस के सिवा कोई इस पर क़ादिर नहीं। उस ने इन्सानों को ज़िन्दगी देकर दुनिया में भेजा और उन्हें ख़बर दी कि उन को मौत होगी और वह मिटने वाली दुनिया से कूच कर के आख़िरत को सिधारेंगे, तो जो कोई इस दारेफ़ानी (मिटने वाली दुनिया) में अल्लाह के हुक्मों पर चलेगा, उसे अल्लाह तआ़ला दोनों जहाँ में अच्छा बदला अ़ता करेगा और जो कोई यहाँ अपनी मर्ज़ी का ग़ुलाम बनकर ज़िन्दा रहेगा, वह अल्लाह के हुक्मों को किनारे डाल देगा उसे बद्तरीन बदला मिलेगा।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह बड़ा ज़बरदस्त है, हर इ़ज़्ज़त व बड़ाई उसी के लिए है और तमाम मख़्लूक़ात की गर्दनें उसी के लिए झुकी हुई हैं और वह अपने तौबः करने वाले और अपनी तरफ़ झुकने वाले बन्दों के गुनाहों को माफ़ करने वाला और उन के ऐ़बों पर पर्दा डालने वाला है।

3-4 الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰى فِیْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ۝ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَیْنِ یَنْقَلِبْ اِلَیْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِیْرٌ ۝

अल्लाह तआ़ला ने अपनी मज़ीद तअ़रीफ़ बयान फ़रमाते हुए कहा कि उस ने सात आसमान पैदा किये, जो एक दूसरे के ऊपर हैं, लेकिन एक दूसरे से चिपके हुए नहीं हैं बल्कि हर दो आसमानों के दर्मियान हवा और कई सौ साल की मुसाफ़त (सफर) है और अल्लाह तआ़ला ने उन आसमानों को ह़सीन व ख़ूबसूरत और शानदार बनाया है, उन में कोई कमी नहीं और उसी हुस्न व जमाल और कमाले तर्बियत व इन्तिज़ाम को बयान करने और इन्सानों को दअ़वते फ़िक्र व ख़ैर व नज़र देने के लिए अल्लाह तआ़ला

ने फ़रमाया कि तुम उन्हें ग़ौर से देखो, उन में तुम्हें कोई नुक़्स नहीं मिलेगा और तुम जितनी बार ग़ौर करोगे तुम्हारी निगाहें थक हार कर वापस आ जाएँगी और उन में तुम्हें कोई सूराख (छेद) और कोई कमी नहीं नज़र आएगी।

5 وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝

जिन आसमानों के बारे में ऊपर बयान हुआ कि उन की पैदाइश में कोई नुक़्स व ख़राबी नहीं है, उन्हीं के बारे में यहाँ बयान किया जा रहा है कि अल्लाह तआ़ला ने आसमाने दुनिया को सितारों के ज़रिये सजाया है। उन सितारों से रौशनी फूटती है, इसीलिए उन्हें यहाँ بِمَصَابِيْحَ कहा गया है यानी जिस तरह़ चिराग़ से रौशनी मिलती है उसी तरह़ यह सितारे भी रौशनी देते हैं।

बाज़ सितारे आसमाने दुनिया के ऊपर वाले आसमानों में पाये जाते हैं, लेकिन वह ऐसे नज़र आते हैं जैसे आसमाने दुनिया पर ही हों।

बाज़ सितारों के ज़रिये उन शयातीन को मारा जाता है जो छुप कर फ़रिश्तों का कलाम सुनने की कोशिश में आसमाने दुनिया के क़रीब होना चाहते हैं। 'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि शयातीन उन सितारों के ज़रिये नहीं मारे जाते जो आसमानों में हैं, बल्कि उन से अंगार निकलते हैं जो शैतानों का पीछा करते हैं।

'क़तादह' कहते हैं कि अल्लाह ने सितारों की तख़्लीक़ के तीन फ़ायदे बताए हैं, वह आसमानों को ज़ीनत (खूबसूरती) बख़्शते हैं, उन के ज़रिये शयातीन को मारा जाता है और वह बह़र (जल व थल) में सफ़र करने वालों के लिए निशाने राह का काम देते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः साफ़्फ़ात आयात नं० (6) से (10) तक में फ़रमाया हैः-

اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ِۨ الْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝
دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝

"हम ने आसमाने दुनिया को सितारों की ज़ीनत से आरास्ता किया और सरकश शैतान से उस की ह़िफ़ाज़त की। ऊपर के फ़रिश्तों (की बातें) सुनने के लिए वह कान भी नहीं लगा सकते। हर तरफ़ से भगाने के लिए उन्हें अंगारों से मारा जाता है और उन के लिए हमेशा का अ़ज़ाब है, मगर जो कोई एक आध बात उचक ले, तो फ़ौरन ही उस के पीछे दहकता हुआ शोला लग जाता है"।

6-7 وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۝

अल्लाह तआ़ला ने शयातीन को मारने के लिए सितारों से फूटने वाले अंगारे बनाए हैं और अल्लाह से सरकशी और उस के बन्दों को गुमराह करने की वजह से आख़िरत में उन्हें आग का अ़ज़ाब दिया जाएगा और जो काफिर दुनिया में उन की पैरवी करेंगे, उन के लिए भी अल्लाह ने जहन्नम का अ़ज़ाब तैयार किया है और जहन्नम बहुत ही बुरा ठिकाना होगा, जिस में जहन्नमियों को बड़ी ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना करना पड़ेगा।

जहन्नमी जब जहन्नम में डाले जाएँगे तो उस की बहुत ही बुरी और ख़तरनाक आवाज़ सुनेंगे और उस की आग जहन्नमियों के जिस्मों के साथ इस तरह़ खौल रही होगी जैसे हांडी में जोश मारता हुआ पानी खौलता है।

8-9 تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۖ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ۝ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا
نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ۝

जहन्नम की ह़ालत काफ़िरों के ख़िलाफ़ शिद्दते ग़ज़ब से ऐसी होगी जैसे वह टूटफूट कर टुकड़े-टुकड़े हो रही हो, तो फिर उन काफ़िरों का क्या ह़ाल होगा जो इस ग़ज़बनाक जहन्नम की गिरफ़्त में होंगे।

जब भी कोई गिरोह जहन्नम में डाला जाएगा तो जहन्नम का दारोग़ा उनसे डांट-फटकार के तौर पर पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था कि आज तुम इस जहन्नम में डाले गए हो? तो वह जवाब देंगे कि हाँ, हमारे पास डराने वाले ज़रूर आए थे, लेकिन हम ने अल्लाह के रसूलों को झुठला दिया था और उन की दअ़वत को ठुकराते हुए कहा था कि अल्लाह ने अपनी तरफ़ से कोई चीज़ इन्सानों की हिदायत के लिए नाज़िल नहीं की है और तुम बहुत बड़ी गुमराही में हो।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि उन्होंने अपने ज़माने के नबी को झुठलाया और पिछले तमाम नबियों और किताबों को भी झुठलाया और उसी पर बस नहीं किया, बल्कि तमाम रसूलों को बड़ी गुमराही के साथ आरोप लगाया।

10-11 وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝ فَاعْتَرَفُوا بِذَنْبِهِمْ ۚ
فَسُحْقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝

जहन्नमी एतिराफ़ (स्वीकार) करेंगे कि हम ने हिदायत के सारे रास्ते खुद ही अपने आप पर बन्द कर लिए थे, न हम ने अल्लाह की नाज़िल की हुई आयतों को ग़ौर से सुना और न अपनी अ़क़्ल को काम में लाकर उन्हें समझने की कोशिश की और दुनिया में इसी तरह़ ऐ़श करते रहे और गुनाहों का काम करते रहे कि जैसे हमें मौत ही नहीं आएगी और हमें अल्लाह के सामने ह़ाज़िर ही नहीं होना होगा, लेकिन इस एतिराफ़ (स्वीकार करने) का उन्हें कोई फ़ायदा नहीं पहुँचेगा और ए़लान कर दिया जाएगा कि जहन्नमी अल्लाह की रह़मत से दूर कर दिये गए और अब उन के लिए कोई अच्छी चीज़ नहीं है।

12 إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝

काफ़िरों के बरख़िलाफ़ यक़ीन व ईमान वालों ने अल्लाह की नाज़िल की हुई आयतों को ग़ौर से सुना, अम्बिया-ए-किराम की दअ़वत को क़ुबूल किया और अपने रब से डरते रहे, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उन से मग़्फ़िरत और बड़े सवाब का वादा किया है जिस से मुराद जन्नत और उस की नेअ़मतें हैं और उन सब से अ़ज़ीम नेअ़मत रब्बुल् आ़लमीन की रज़ामन्दी और उस की रज़ा है, जो हर जन्नती को नसीब होगी।

13 وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٣﴾

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने ख़बर दी है कि वह दिलों में छुपी बातों तक को जानता है, कोई चीज़ उस से छुपी हुई नहीं है। उस के लिए ज़ाहिर (external) व बातिन (Internal) यकसाँ हैं, वह तो उन नियतों और इरादों तक को जानता है जो सीनों में छुपे होते हैं तो फिर वह उन कामों को कैसे नहीं जानेगा जो सुने और देखे जाते हैं।

14 أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۖ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٤﴾

अल्लाह ने फ़रमाया कि जिस ने तमाम मख़्लूक़ात को पैदा किया है उसे अपनी मख़्लूक़ात की ख़बर कैसे नहीं होगी, वह तो अपने बन्दों के दिलों में छुपी बातों तक को जानता है और उन के तमाम आ़माल की पूरी ख़बर रखता है।

15 هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ ۖ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ﴿١٥﴾

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों पर एहसान जताते हुए फ़रमाया कि उस ने ज़मीन को उन के लिए नर्म बनाया है और उस में आसान रास्ते बनाए ताकि इन्सान बसहूलत अपनी ज़रूरतें पूरी कर सके, चुनाँचे आदमी ज़मीन पर पौधे लगाता है, मकान बनाता है, खेती करता है, वह रास्ते पर चलकर दूर दराज़ इलाक़ों, शहरों और मुल्कों तक को पहुँच जाता है।

इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि लोगों! तुम रिज़्क़ की तलाश और अपनी दूसरी ज़रुरतें पूरी करने के लिए ज़मीन पर जहाँ मिलें उन रास्तों पर चलो और इस में जो रोज़ी उस ने तुम्हारे लिए पैदा की है, उसे ह़ासिल करो और उस से फ़ायदा उठाओ।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तुम दुनिया की पूरी ज़िन्दग़ी पूरी कर लेने के बाद यहाँ से उठा लिए जाओगे और जब क़ियामत आ जाएगी तो दोबारह ज़िन्दह किये जाओगे और अपने रब के सामने जमा किये जाओगे, ताकि वह तुम्हें तुम्हारे नेक व बुरे आ़माल का बदला दे।

आयत नं० 16 से 30 तक

ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ ۝ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ
كَيْفَ نَذِيْرِ ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا
الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍۭ بَصِيْرٌ ۝ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ ۝
اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِيْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ۝ اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖٓ اَهْدٰٓى اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا
عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِيْ
ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۪ وَاِنَّمَآ اَنَا
نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ
اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ
فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ۝

अनुवाद-

(16) क्या तुम उससे 'जो' आसमान में है निडर हो गये हो? कि 'वह' तुम्हें ज़मीन में धंसा दे, और
'वह' यकायक हिलने लगे। (17) क्या तुम उससे 'जो' आसमान में है निडर हो गये हो? कि तुम पर पथराव
करने वाली हवा भेज दे, फिर तुम्हें मालूम हो जाएगा कि मेरा डराना कैसा होता है? (18) और इनसे पहले
गुज़रे हुए लोग भी झुठला चुके हैं, तो देख लो! कैसा रहा मेरा अज़ाब? (19) क्या उन्होंने अपने ऊपर परिन्दों
को लाइन से पर फैलाते और समेटते हुए नहीं देखा? अल्लाह के सिवा कोई नहीं, जो उनको थाम लेता, बेशक
'वही' हर चीज़ को खूब देखता है। (20) या 'वह' कौन है जो तुम्हारी सेना बनकर अल्लाह के मुक़ाबले में
तुम्हारी मदद करे, इन्कार करने वाले तो धोखे में पड़े हुए हैं। (21) या वह कौन है? जो तुम्हें रोज़ी दे, अगर
'वह' अपना रिज़्क़ रोक ले, (नहीं,) बल्कि यह तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए हैं। (22) तो क्या
वह व्यक्ति जो अपने मुंह के बल औंधा चलता हो, वह ज़्यादा सीधी राह पर है, या वह जो सीधा हो कर
सीधी राह पर चल रहा है? (23) कह दीजिए, ''वही है 'जिसने' तुमको पैदा किया, और तुम्हारे कान, और
आंखें और दिल बनाए, तुम कम ही शुक्र अदा करते हो।'' (24) कह दीजिए, ''वही है 'जिसने' तुमको ज़मीन
में फैलाया और 'उसी' की ओर तुम इकट्ठे किये जाओगे।'' (25) और कहते हैं, ''अगर तुम सच्चे हो तो
यह वादा कब पूरा होगा?'' (26) कह दीजिए, ''इसका इल्म तो अल्लाह ही के पास है, और मैं तो बस खुला
हुआ सचेत करने वाला हूँ'' (27) तो जब वे उसको क़रीब से देख लेंगे तो उनके चेहरे बिगड़ जाएँगे, जिन्होंने
इन्कार किया, और कहा जाएगा, ''यही है वह चीज़ जिसकी तुम मांग कर रहे थे।'' (28) कह दीजिए, ''तुमने
यह भी सोचा! कि अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथियों को तबाह कर दे या हम पर रहम करे, तो काफ़िरों
को दुःख देने वाले अज़ाब से कौन पनाह देगा?'' (29) कह दीजिए, ''वह रहमान है, 'उसी' पर हम ईमान
लाए हैं और 'उसी' पर हमने भरोसा किया है, तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि खुली हुई गुमराही में

कौन है"। (30) कह दीजिए, ''क्या तुमने यह भी सोचा! कि अगर तुम्हारा पानी नीचे (धरती में) उतर जाए, तो फिर कौन है जो तुम्हारे लिए बहता हुआ पानी ले आए?''

आयत नं० 16 से 30 तक की व्याख्या

16-17 ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِىَ تَمُوْرُ ﴿١٦﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿١٧﴾

अल्लाह तआला इस पर कुद्रत रखता है है कि वह काफ़िरों को उन के कुफ़्र की वजह से हलाक व बर्बाद कर दे, लेकिन मख़्लूक़ के साथ अपने लुत्फ़ व करम और रह़मत व मेहरबानी की वजह से उन से अ़ज़ाब को टाल देता है और उन्हें तौबः करने का मौक़ा देता है।

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने अपनी क़ुद्रते कामिला का ज़िक्र कर के अपने नाफ़रमान बन्दों को धमकी दी है कि वह अल्लाह जो अपनी मख़्लूक़ात से बुलन्द व बाला और अ़र्श पर मुस्तवी है, उस की गिरफ़्त से तुम्हें बेख़ौफ़ नहीं हो जाना चाहिए। वह तो इस पर क़ादिर है कि तुम्हें ज़मीन में धंसा दे और ज़मीन इतनी तेज़ हिलने लगे कि वह तुम्हारे ऊपर आ जाए और तुम उस के अन्दर पलटा खाते रहो और वह इस पर भी क़ादिर है कि तुम्हें हलाक करने के लिए एक तेज़ हवा भेज दे, जो कंकरियों और पत्थरों की तुम पर बारिश कर दे और तुम हलाक हो जाओ, तब तुम्हें मालूम हो जाएगा कि वह अ़ज़ाब कैसे आता है जिस से तुम्हें हमारे अम्बिया डराया करते थे।

18 وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿١٨﴾

इस आयत में धमकी के तौर पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मौजूदा दौर के काफ़िरों से पहले भी जब किसी काफ़िर क़ौम ने अल्लाह और उस के रसूल को झुठलाया, तो अल्लाह ने उस के कुफ़्र व झुठलाने को कुबूल नहीं किया और उसे हलाक कर दिया। इसलिए ऐ वह लोगों! जो अपने रब की नाफ़रमानी कर रहे हो और कुफ़्र की राह पर चल रहे हो, तुम अपने कुफ़्र व सरकशी से बाज़ आ जाओ, कहीं तुम्हें भी अल्लाह का अ़ज़ाब अपनी गिरफ़्त में न ले ले।

19 اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ۘ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ۗ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىْءٍۢ بَصِيْرٌ ﴿١٩﴾

जो मुश्रिकीन अल्लाह की सिफ़त "**رحمن**" का इन्कार करते थे, उन्हीं को रद्द किया गया है कि यह चिड़िया जो उन के सरों पर हवा में अपने परों को फैलाये उड़ती रहती हैं और कभी उन्हें समेट भी लेती हैं, दोनों ही ह़ालतों में उन्हें हवा में कौन रोके रखता है? यक़ीनन वह **'रह़मान'** की ज़ात है, जिस की रह़मत हर चीज़ को ढ़ांपे हुए है यहाँ तक कि वह चिड़िया जो ऊपर तैरती रहती हैं उन्हें भी गिरने और टुकड़े-टुकड़े होने से उस की रह़मत ही बचाए रखती है।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हर चीज़ उस की नज़र में है और हर एक

को उस के तरीक़े पर उस की ज़रुरत और अपनी ह़िक्मत के तक़ाज़े के मुताबिक़ अपनी रह़मत का ह़िस्सा अ़ता करता है।

20-21 أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ جُندٌ لَّكُمْ يَنصُرُكُم مِّن دُونِ الرَّحْمَٰنِ ۚ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ۝ أَمَّنْ
هَٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ بَل لَّجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ۝

जो लोग ह़क़ से मुँह मोड़ते हैं और अल्लाह से सरकशी की राह अपनाते हैं, उन से बतौर डाँट-फटकार के तौर पर कहा जा रहा है कि अगर रह़मान तुम्हें किसी तक्लीफ़ में मुब्तिला करना चाहे, तो उस की ज़ात के सिवा कौन है जो तुम्हारी मदद करे और इस मुसीबत से तुम्हें निजात दिलाए।

ह़क़ीक़त यह है कि शैतान ने काफ़िरों को धोखे में डाल रखा है, उस ने उन की निगाहों में आ़माले शिर्क को ख़ूबसूरत बना दिया है और इस फ़रेब में मुब्तिला (Involve) कर दिया है कि मरने के बाद न कोई दूसरी ज़िन्दगी है और न ह़िसाब व किताब, अगर बिल्फ़र्ज़ कोई दूसरी ज़िन्दगी होगी तो उन के मअ़बूद (उपास्य) अल्लाह के सामने उन के सिफ़ारशी बनेंगे और उन्हें निजात दिला देंगे।

आयत नं० (21) में उन्हीं सरकशों से कहा जा रहा है कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम से बारिश को रोक दे और तुम पर अपनी रोज़ी के दरवाज़े बन्द कर दे तो तुम्हें पानी कौन पिलाएगा और रोज़ी कौन देगा। मख़्लूक़ का ह़ाल तो यह है कि वह अपने आप को रोज़ी हासिल करने की क़ुद्रत नहीं रखती तो दूसरों को कैसे पहुँचा सकेगी।

लेकिन सरकशों को इन आयतों से कोई फ़ायदा नहीं पहुँचता, बल्कि उन का घमण्ड और बढ़ जाता है और ह़क़ से बहुत दूर होते जाते हैं और इस अ़क़ीदा पर जमे रहते हैं कि उन के मअ़बूद (उपास्य) ही उन्हें मुसीबतों से बचाते हैं और उन्हें रोज़ी देते हैं।

22 أَفَمَن يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ أَمَّن يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने एक मिसाल के ज़रिये इस अन्तर को स्पष्ट किया है। फ़रमाया कि जो आदमी गुमराही में भटक रहा हो, कुफ़्र में डूबा हुआ हो और उस की अ़क़्ल ऐसी मारी गई हो कि उस के नज़्दीक ह़क़ बातिल और बातिल ह़क़ बन गया हो, वह राहे ह़क़ (सत्य मार्ग) पर है या वह व्यक्ति जो राहे ह़क़ (सत्य मार्ग) को जानता हो, उस पर चलता हो और अपने तमाम आ़माल में ह़क़ (सत्य) ही को मानता हो।

यक़ीनन जवाब मालूम है कि अल्लाह को एक मानने वाला बन्दा ही ह़क़ पर है और काफ़िर व मुश्रिक गुमराही की वादियों में भटक रहा है।

23-26 قُلْ هُوَ الَّذِي أَنشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۖ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝ قُلْ
هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ۝ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने यह बयान किया है कि वही अकेला उपास्य है, इसलिए बन्दों को उसी की अ़िबादत करना चाहिए और उसी का शुक्र बजा लाना चाहिए। अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि लोगों को बता दें कि तन्हा अल्लाह तआ़ला ने उन्हें पैदा किया है, उन की तख़्लीक़ में कोई उस का मददगार नहीं था और न उसे किसी की मदद की ज़रूरत थी। उसी ने उन के कान, आँखें और दिल बनाए जो उन के जिस्मों के अहम तरीन अंग हैं और उन्हें सब से अच्छी शक्ल व सूरत में पैदा किया। इन नेअ़मतों का तक़ाज़ा था कि लोग उस अल्लाह के शुक्रगुज़ार बनते, लेकिन उन में से बहुत ही कम लोग अपने रब के शुक्रगुज़ार हैं।

अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (सल्ल०) को यह भी बता देने का हुक्म दिया कि उसी ने तुम्हें पैदा कर के ज़मीन में फैला दिया और तुम्हें विभिन्न प्रकार की नेअ़मतों से नवाज़ा, जिन से तुम अपनी ज़िन्दगी में फ़ायदा उठाते हो और जब तुम्हारी दुनियावी ज़िन्दगी के दिन पूरे हो जाएँगे तो वह तुम्हें यहाँ से उठा लेगा और फिर क़ियामत के दिन ज़िन्दा कर के अपने सामने इकट्ठा करेगा।

लेकिन मरने के बाद उठाए जाने का इन्कार करने वाले नबियों को झुठलाते हुए कहते हैं कि अगर तुम्हारी बात सच्ची है तो हमें उस के आने का वक़्त तो बता दो यानी क़ियामत के आने का वक़्त बता देना काफ़िरों के नज़्दीक अम्बिया के सच्चाई की दलील थी। अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को उन्हें यह कहने का हुक्म दिया कि उस की आमद का वक़्त तो सिर्फ़ अल्लाह ही को मालूम है और इस बात का इ़ल्म अल्लाह के सिवा किसी को न होना इस बात की दलील नहीं है कि बात सच्ची नहीं है। बात यक़ीनन सच्ची है और क़ियामत के आने में कोई शक नहीं है और अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताब में इस की निशानियाँ और दलायल बयान कर दिये हैं, जिन में ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के दिलों में इस की सच्चाई के बारे में कोई शक व शुब्हा बाक़ी नहीं रहता।

27 فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ۝

काफिर व मुश्रिकीन दुनिया में क़ियामत और दोबारा उठाए जाने का इन्कार करते हैं, लेकिन जब क़ियामत आ जाएगी और वह दोबारह ज़िन्दा किये जाने के बाद मैदाने मह़शर में जमा कर दिये जाएँगे और जहन्नम को अपनी आँखों से देख लेंगे, उस वक़्त उन की आँखें पथरा जाएँगी, उन के चेहरे मारे ख़ौफ़ व दहशत के काले हो जाएँगे और फ़रिश्ते उन से बतौर डांट-फटकार के कहेंगे कि यही है वह जहन्नम जिस को झुठलाया करते थे और कहते थे कि क़ियामत की कोई ह़क़ीक़त नहीं है, अब तुम ने उसे अपनी आँखों से देख लिया और तुम्हारे लिए इस से निजात की कोई सूरत बाक़ी नहीं रही।

28 قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ۝

नबी करीम (सल्ल०) को झुठलाने वाले और आप की दअ़वत को ठुकराने वाले, आप से सख़्त बुग्ज़ नफ़रत व दुश्मनी की वजह से अपने दिलों में तमन्ना करते थे कि काश! यह शख़्स मर जाता और इस के साथी भी हलाक हो जाते तो ईमान व इस्लाम की बातों से हमें निजात मिल जाती और आये दिन का

झगड़ा ख़त्म हो जाता।

अल्लाह तआ़ला ने उन के दिल से इस ख़बासत को स्पष्ट कर दिया और नबी करीम (सल्ल०) से उन्हें यह बताने का हुक्म दिया कि ऐ कुफ़्फ़ारे कुरैश! अगर अल्लाह मुझे और मेरे ईमान वाले साथियों को इस दुनिया से उठा ले, तो इस से तुम्हें कोई फ़ायदा नहीं पहुँचेगा क्योंकि तुम्हारा इन्कार अल्लाह के नज़्दीक साबित हो चुका है और तुम उस के अ़ज़ाब के हक़दार बन चुके हो और जब उस का अ़ज़ाब तुम पर नाज़िल होगा और तुम जहन्नम रसीद होगे तो कोई नहीं होगा जो तुम्हें उस के दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा सकेगा।

29 قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

मुशिरकीने मक्का कहा करते थे कि वह लोग ह़क़ पर हैं और मुह़म्मद गुमराह हो गया है, इसीलिए बहकी-बहकी बातें करता है। इस बात को वह हमेशा दोहराते रहते थे। नबी करीम (सल्ल०) और सह़ाबा-ए-किराम से लड़ाई व झगड़ा करते थे और नौबत यहाँ तक पहुँची कि उन्होंने ह़क़ की आवाज़ को ख़ामोश करने की हर प्रकार कोशिश की और मुसलमानों से जंगे कीं। अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (सल्ल०) को हुक्म दिया कि आप उन्हें अपने ईमान और उन (मुश्रिकों) के कुफ़्र से बाख़बर कर दें, ताकि उन्हें मालूम हो जाए कि ह़क़ पर कौन है और गुमराही ने किन के दिलों पर पर्दे डाल दिये हैं।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, आप उन्हें बता दीजिए कि हम रह़मान की ज़ात पर ईमान ले आए हैं और अ़मली तौर पर उस ईमान के तक़ाज़ों को पूरा करते हैं और हम हर ह़ाल में उसी की ज़ात पर भरोसा करते हैं। जबकि तुम्हारा ह़ाल यह है कि न तुम **'रह़मान'** पर ईमान लाए हो और न उस की ज़ात पर तुम्हारा भरोसा है। इसलिए यह बात स्पष्ट हो गई कि हम राहे ह़क़ (सत्य) पर हैं और गुमराही तुम्हारी क़िस्मत है।

30 قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ۝

आख़िरी आयत में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी मुशिरकीन को यह बात बताई कि तमाम नेअ़मतें बन्दों को उसी की तरफ़ से मिली हैं, खासतौर से पानी जिस के ज़रिये अल्लाह ने तमाम ज़िन्दा चीज़ों को पैदा किया है। अगर अल्लाह तआ़ला इस पानी को ज़मीन की आख़िरी तह में पहुँचा दे तो उस के सिवा कोई है जो तुम्हें साफ़ व शफ़्फ़ाक़ पानी प्रदान करे?

जवाब मालूम है कि कोई नहीं है और जब बात ऐसी है तो फिर उस अल्लाह को छोड़कर दूसरों की क्यों उपासना करते हो, क्यों दूसरों को उस का साझीदार बनाते हो?

दारुल उलूम नदूवतुल उलमा, लखनऊ
16-06-2011

(भाग–68)

सूर–ए–क़लम

(सूरः नं. 68)

सूरः क़लम का संक्षिप्त परिचय

नाम– पहली आयत نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ में शब्द क़लम आया है। इसलिए इस सूरः का नाम 'नून' और कलम "سورة ن" "سورة القلم" दोनों ही कहा जाता है।

नाज़िल होने का ज़माना–

यह सूरः हसन, इक्रिमा और जाबिर (रजि०) के नज़्दीक मक्की है और 'हज़रत इब्ने अब्बास' और 'क़तादह' से मरवी है कि शुरु सूरः से आयत नं० (16) سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ तक मक्की है और वहाँ के बाद आयत नं० (50) مِنَ الصّٰلِحِيْنَ तक मदनी है और इस के बाद दो आयतें मक्की हैं और 'नुहूहास' इब्ने मरदूविया और 'बैहक़ी' ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से एक रिवायत की है कि सूरः "نٓ मक्की है और इब्ने मरदूविया ने हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से भी यही रिवायत नक़्ल की है।

आयत नं० 1 से 33 तक

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۙ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ۚ وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ۚ وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ۝ فَسَتُبْصِرُ
وَيُبْصِرُوْنَ ۙ بِاَيِّىكُمُ الْمَفْتُوْنُ ۝ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝ وَدُّوْا
لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ۝ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ۙ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ ۙ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۙ عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ
زَنِيْمٍ ۙ اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ۝ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ۝ اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ
اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ۙ وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ۝ فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ۝ فَاَصْبَحَتْ
كَالصَّرِيْمِ ۙ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ۙ اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ ۝ فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ۙ اَنْ لَّا
يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ۙ وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ۙ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ۝ قَالَ
اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ۝ قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ۝ قَالُوْا
يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ۝ عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ۝ كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ۗ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ
اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝

अनुवाद-

(1) नून, क़सम है क़लम की, और जो लिखते हैं; (2) कि आप अपने रब की नेअ़मतों के कोई दीवाने नहीं हैं, (3) और आपके लिए ऐसा अज्र (बदला) है जो कभी ख़त्म न होगा, (4) और आप बड़े अख़्लाक़ (अच्छे स्वभाव) के मर्तबे पर हैं, (5) तो बहुत जल्द तुम भी देख लोगे और यह भी देख लेंगे, (6) कि तुममें से कौन गुमराह है? (7) आप का 'रब' उसे भी अच्छी तरह जानता है, जो 'उसकी' राह से भटक गया हो, और उनको भी खूब जानता है जो सीधी राह पर हैं; (8) तो आप इन झुठलाने वालों की बात न मानिए। (9) और ये लोग चाहते हैं कि किसी तरह आप नर्म पड़ जाएँ, तो ये भी नर्म हो जाएँ। (10) और आप किसी ऐसे व्यक्ति की बात न मानिएगा जो बहुत क़समें खाने वाला और ज़लील हो, (11) कचोके लगाने वाला, चुगलियाँ खाने वाला; (12) ख़ैर (भलाई) से रोकने वाला (माल में बुख़्ल करने वाला) ज़्यादती करने वाला, भारी गुनहगार है; (13) क्रूर (सख़्त मिज़ाज) इसके अ़लावा बदनाम भी; (14) इस वजह से कि वह माल और सन्तान वाला है। (15) जब उसको 'हमारी' आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है, ''यह तो पहले लोगों के क़िस्से हैं।'' (16) जल्द ही 'हम' उसके सूँड (नाक) पर दाग़ लगाएँगे। (17) 'हमने' उन लोगों को उसी तरह आज़माइश में डाला है, जिस तरह बाग़ वालों को आज़माइश में डाला था, जब उन्होंने क़सम खाई कि सुबह् सवेरे ज़रूर हम इसका फल तोड़ेंगे; (18) और वे इसमें छूट की कोई गुन्जाइश नहीं रख रहे थे (अर्थात इन्शाअल्लाह न कहा), (19) अभी वे सो ही रहे थे कि आप के रब की ओर से गर्दिश का एक झोंका आया, (20) तो वह ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती, (21) तो सुबह होते ही उन्होंने एक-दूसरे को पुकारा, (22) ''अगर तुमको काटना, तोड़ना है तो सुबह् ही अपनी खेती पर पहुँच जाओ;'' (23) तो वे चुपके-चुपके बातें करते हुए चल पड़े, (24) कि आज कोई मिस्कीन (मुहताज) तुम्हारे पास दाख़िल न होने पाए, (25) और वे सुबह् सवेरे पक्के इरादे के साथ निकले, मानो (मुहताजों को)! रोक देने की उन्हें कुदरत

(सामर्थ्य) है; (26) तो जब उसको देखा! तो कहने लगे, ''हम रास्ते से भटक गये।'' (27) (नहीं) ''बल्कि हम महरूम (वंचित) होकर रह गये।'' (28) उनमें जो बेहतर था कहने लगा, ''क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि तुम तस्बीह़ क्यों नहीं करते?'' (29) वे पुकार उठे, ''पाक है हमारा रब! बेशक हम ही ज़ालिम थे।'' (30) तो वे आपस में एक-दूसरे की ओर रूख करके मलामत करने लगे; (31) उन्होंने कहा, ''अफ़सोस है हम पर! हम ही सरकश थे; (32) उम्मीद है कि हमारा 'रब' इसके बदले में हमें इससे बेहतर (बाग़) अता करेगा, हम अपने 'रब' की ओर रुजूअ़ होते हैं।'' (33) इसी तरह होता है अ़ज़ाब, और आख़िरत का अ़ज़ाब तो इससे कहीं बड़ा है, काश! ये लोग जानते।

आयत नं० 1 से 33 तक की व्याख्या

1-4 نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۝ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ۝ وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ۝ وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ۝

क़ुर्आन करीम में मौजूद और दूसरे हुरुफ़ मुक़तआ़त की तरह़ अक्षर ''نٓ 'नून' भी एक अक्षर है, जिस का ह़क़ीक़ी अर्थ व मतलब सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला को ही मालूम है और पिछली कई ऐसी सूरतों के शुरु में लिखा जा चुका है कि मुम्किन है कि इस से मक़्सूद अहले अ़रब को चैलेन्ज करना हो कि यह क़ुर्आन भी उन्हीं अक्षरों से बने है जिन से तुम्हारा कलाम बनता है, तो अगर यह क़ुर्आन किसी इन्सान का कलाम है तो तुम भी इस जैसा लाकर दिखाओ।

क़लम की अहमियत-

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने उस क़लम की क़सम खाई है जिसे अल्लाह ने पहले पैदा किया और उसे लिखने का हुक्म दिया, तो उस ने कहा कि क्या लिखूँ? अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, जो कुछ क़ियामत तक होने वाला है तमाम को लिख डालो।

अल्लाह तआ़ला ने उन तमाम चीजों की क़सम खाई है जिन्हें फ़रिश्ते लौहे महफ़ूज़ से नक़्ल कर के लिखते हैं और बन्दों के उन तमाम आ़माल की भी क़सम खाई है जिन्हें अल्लाह के मुकर्रम फ़रिश्ते यानी ''کراماً کاتبین'' लिखते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने क़सम खाकर नबी करीम (सल्ल०) से कहा कि वाक़ई आप को आप के रब ने नुबूव्वत की नेअ़मत से सरफ़राज़ फ़रमाया है और आप पर वह्य नाज़िल होती है, जिस के असर से लोग इस्लाम में दाख़िल हो रहे हैं।

कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन केवल जलन की वजह से आप को मजनून कहते हैं। आप मजनून नहीं बल्कि अ़ज़ीमुश्शान नबी हैं और इस्लाम की दअ़वत को लोगों तक पहुँचाने में आप जो तक्लीफ़ उठा रहे हैं और उस का जो अ़मली नमूना पेश कर रहे हैं, उसका अज्र व सवाब आप को हमेशा मिलता रहेगा।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इन दोनों आयतों में मुश्रिकीने मक्का के आरोपों को रद्द किया गया है,

जिसे अल्लाह तआ़ला ने सूरः हिज्र आयत नं० (6) وَقَالُوا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ में बयान किया है, जिस का अनुवाद हैः "और मुश्रिकों ने कहा कि ऐ वह शख़्स! (यानी मुह़म्मद) जिस पर क़ुर्आन नाज़िल किया गया है, तू यक़ीनन पागल है"।

और अल्लाह तआ़ला ने इस बात पर भी यह क़सम खाई है कि आप (सल्ल०) अ़ज़ीम अख़्लाक़ के मालिक हैं। हज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) का अख़्लाक़ (आचरण) क़ुर्आन था यानी आप के अख़्लाक़ वही थे जिस की क़ुर्आन ने शहादत दी है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) बड़े दर्जे के अख़्लाक़मंद (अच्छे स्वभाव) बुलन्द किरदार के मालिक थे, आप हर ऐ़ब से पाक और हर ख़ूबी के साथ लैस थे और जो शख़्स इन सिफ़ात के साथ लैस होगा, उसे मजनून और पागल कहने वाला खुद पागल होगा।

बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि आयते करीमा में 'अल्क़म' से क़लम ही मुराद है। जो 'क़लम' तक़्दीर को, फ़रिश्तों और इन्सानों के क़लमों को शामिल है। अल्लाह तआ़ला ने 'क़लम' और जो कुछ क़लम से लिखा जाता है उस की क़सम खाकर फ़रमाया हैः-

مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ (आप अपने रब की नेअ़मत की वजह से मजनून नहीं हैं।)

यानी अल्लाह तआ़ला ने आप को नेअ़मत दी है। अपने फ़ज़्ल से नवाज़ा है और यह नेअ़मत नुबूव्वत है इस नेअ़मत की वजह से आप उन्हें तौह़ीद की दअ़वत देते हैं और इस दअ़वत को सुनकर यह लोग आप को मजनून कहते हैं, ह़ालांकि जिस पर अल्लाह तआ़ला की नेअ़मत और रह़मत हो वह मजनून नहीं हो सकता।

क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआ़ला ने जिस चीज़ की क़सम खाई है वह एक क़िस्म की शहादत है। यहाँ जो وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ फ़रमाया है उस में यह बता दिया कि लोगों दुनिया की तारीख़ देख लो, क्या लिखा गया है और क्या-क्या ह़ालात और वाकिये सुनते आ रहे हो, क्या ऐसे आ़माल और अख़्लाक़ वाले भी दीवाने हुआ करते हैं खुद उन लोगों की अ़क़्लें कहाँ हैं जो ऐसे समझदार को मजनून बता रहे हैं। (और बिलाशुब्हा आप के लिए ऐसा अज्र है जो ख़त्म होने वाला नहीं) यानी यह लोग आप को दीवाना कह रहे हैं और आप उन्हें तौह़ीद (एक अल्लाह पर तौहीद) की दअ़वत दे रहे हैं अन्जामे कार दअ़वत की मश्गूलियत पर और उन की तरफ़ से पहुँचने वाली तक्लीफ़ों पर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आप को बड़ा अज्र व सवाब मिलेगा जो कभी भी ख़त्म न होगा।

फिर फ़रमाया وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ (और बेशक आप बड़े अख़्लाक़ वाले हैं।)

इस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तअ़रीफ़ भी है और आप (सल्ल०) के दुश्मनों की तर्दीद (रद्द) भी है। आप को अल्लाह तआ़ला ने अच्छे आचरण व स्वभाव से नवाज़ा है, आप के अख़्लाक़ उन लोगों की तर्दीद कर रहे हैं जो आप को मजनून कहते थे।

आप के अख़्लाक़ की एक झलक देखना चाहें तो अह़ादीस शरीफ़ा में जो आप के अख़्लाक़ और मामलात के वाक़िआ़त लिखे हैं उन का अध्ययन (study) कर लिया जाए। तौरेत में भी आप के अख़्लाक़

का ज़िक्र पहले ही से मौजूद था। **(सहीह़ बुख़ारी पेज नं० 185)**

आप अच्छे स्वभाव के थे अपनी उम्मत को भी अच्छे आचरण की तअ़लीम देते थे। 'मुवत्ता इमाम मालिक' में है कि आप ने फ़रमाया कि بُعِثْتُ لِأُتَمِّمَ حُسْنَ الْأَخْلَاقِ मैं अच्छे अख़्लाक़ की तअ़लीम के लिए भेजा गया हूँ।

आप (सल्ल०) के अख़्लाक़ (स्वभाव) की एक झलक-

ह़ज़रत अबूदर्दा (रज़ि०) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा क़ियामत के दिन मोमिन की तराज़ू में जो सब से ज़्यादह भारी चीज़ रखी जाएगी वह उस के अच्छे अख़्लाक़ होंगे और यह भी फ़रमाया कि बुरी बातों को कहने वालो से अल्लाह तआ़ला नाराज़ रहता है। **(रवाहुल तिर्मिज़ी, वक़ाल ह़दीस ह़सन सह़ीह़)**

आप ने यह भी फ़रमाया कि मुझे तुम में से सब से ज़्यादह वह लोग मह़बूब हैं जिन के अख़्लाक़ सब से ज़्यादह अच्छे हैं और यह भी फ़रमाया कि ईमान वालों में कामिल तरीन वह लोग हैं जिन के अख़्लाक़ सब से अच्छे हैं। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 431)**

ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से उन के एक शागिर्द ने पूछा कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) घर में किस तरह़ रहते थे, उन्होंने कहा कि अपने घर वालों के काम काज में रहते थे। जब नमाज़ का वक़्त हो जाता तो नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले जाते थे।

ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने यह बयान किया कि आप ने कभी किसी को अपने हाथ मुबारक से नहीं मारा, न किसी औ़रत को न किसी ख़ादिम को। हाँ, अगर फ़ी सबीलिल्लाह जिहाद में किसी को मारा हो तो और बात है और अगर किसी से आप को तक्लीफ़ पहुँचती तो उस का बदला नहीं लिया। हाँ, अगर अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों में से किसी की बेहुरमती होने लगती तो आप उस का बदला ले लेते थे। **(रवाहु मुस्लिम)**

ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने यह भी फ़रमाया कि आप न बुरा बोलने वाले थे और न बाज़ारों में शोर मचाते थे और न बुराई का बदला बुराई से देते थे, बल्कि माफ़ फ़रमाते थे और दरगुज़र फ़रमा देते थे। **(रवाहुल् तिर्मिज़ी)**

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) ने बयान किया कि मैंने दस साल रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत की, मुझ से कभी कोई नुक़्सान हो गया तो कभी मलामत (निन्दा) नहीं फ़रमाई। अगर आप के घरवालों की तरफ़ से किसी की तरफ़ से मलामत (निन्दा) होती तो फ़रमाते कि छोड़ो जाने दो जो चीज़ मुक़द्दर में थी वह पेश आनी ही थी। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 519)**

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) ने यह भी बयान किया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कोई शख़्स मुसाफ़ह़ (हाथ मिलाना) करता तो आप (सल्ल०) उस की तरफ़ से अपना चेहरा नहीं फेरते थे जब तक वही अपना चेहरा न फेर लेता और आप को कभी नहीं देखा गया कि किसी के पास बैठने वाले की तरफ़ टांगें फैलाए हुए हों। **(रवाहु तिर्मिज़ी)**

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस (रज़ि०) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बढ़कर मुस्कुराने वाला मैंने नहीं देखा। **(मिश्कातुलू मसाबीह़ पेज नं० 520)**

हज़रत मआ़ज़ बिन जबल (रज़ि०) को जब आप (सल्ल०) ने (यमन जाने के लिए) रुख़सत फ़रमाया तो जब उन्होंने रिकाब में पांव रखा तो आख़िरी वसीयत यह फ़रमाई कि اَحْسِنْ خُلُقَكَ لِلنَّاسِ लोगों से अच्छे अख़्लाक़ के साथ पेश आना।

हज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि बेशक मोमिन आदमी अपने अच्छे अख़्लाक़ की वजह से रातों को नमाज़ों में क़याम करने वाले और दिन को रोज़े रखने वाले का दर्जा पा लेता है। **(रवाहु अबूदाऊद)**

5-7 فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ۙ بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ۞ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۠ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۞

فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ۙ (सो आप देख लेंगे) بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ (कि तुम में से किसे जुनून है) जो लोग आप को दीवाना कहते थे। **(अलू अ़याज़ु बिल्लाह)**

पहले उन की तर्दीद की, फिर फ़रमाया कि जल्द ही आप भी देख लेंगे और यह लोग भी देख लेंगे कि दीवाना कौन है? हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से इस का मतलब यूँ बयान किया गया है कि यह अहले बातिल जो आप को दीवाना बता रहे हैं क़ियामत के दिन उन को पता चल जाएगा कि यह ख़ुद ही दीवाने थे और बाज़ ह़ज़रात ने आयत का यह मतलब बताया है, कि जल्द ही सब के सामने इसी दुनिया में बात आ जाएगी कि दीवाना कौन है? चुनाँचे रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बात फैली, दअ़वत आगे बढ़ी, अहले अ़रब मुसलमान हुए और जो दुश्मन थे जांनिसार हो गए और जिन्हें क़ुबूले ह़क़ की तौफ़ीक़ न हुई वह ज़लील हुए। ग़ज़्व-ए-बद्र के वाक़िये ने सब को बता दिया कि दीवाना कहने वाले ही दीवाने थे। **(रुहुलू मआ़नी भाग 29 पेज नं० 29)**

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۠ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۞

(बिलाशुब्हा आप का रब उस शख़्स को ख़ूब जानता है जो उस की राह से भट्का हुआ है और वह हिदायत पाने वालों को भी ख़ूब जानता है) हर एक को उस के मुताबिक़ बदला देगा।

8-16 فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ۞ وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ۞ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ۙ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۢ
بِنَمِيْمٍ ۙ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۙ عُتُلٍّۢ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ۙ اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ۞
اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۞ سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ۞

झुठलाने वालों की बात

यह नौ आयात का अनुवाद है। इन में से पहली दो आयतों में फ़रमाया कि आप झुठलाने वालों की बात न मानिए वह चाहते हैं कि आप कुछ नर्म पड़ जाएँ तो वह भी आप के मामले में नर्मी अख़्तियार कर लें।

अहले बातिल का यह तरीक़ा रहा है कि ख़ुद तो हक़ की तरफ़ झुकते नहीं हैं, उन की पहली कोशिश यह होती है कि दाअ़ियाने हक़ को दअ़वत दें कि तुम अपनी दअ़वत छोड़ दो और हमारे कुफ़्र व गुमराही में शरीक हो जाओ, जब इस पर क़ाबू नहीं चलता तो कहते हैं कि अच्छा आप कुछ नर्म पड़ जाएँ अपनी दअ़वत और दअ़वत के कामों में नर्मी अख़्तियार कर लें, हम भी अपनी मुख़ालिफ़त में और सख़्ती में कमी कर देंगे।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया कि इन की बातों में न आएँ जो हुक्म हुआ है उस के मुताबिक़ दअ़वत देते रहें और दअ़वत में किसी भी तरह की नर्मी और चापलूसी को मन्ज़ूर न फ़रमाएँ।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि मुश्रिकीने मक्का ने यूँ कहा था कि आप हमारे मअ़बूदों (उपास्यों) को बुरा न कहें, हम भी आप की मुख़ालिफ़त न करेंगे। इस पर यह आयतें नाज़िल हुई। मालूम हुआ कि मख़्लूक़ को राज़ी करने के लिए किसी हक़ काम या हक़ बात को छोड़ देना जायज़ नहीं।

एक काफ़िर के दस अवगुण-

इस के बाद जो सात आयात हैं उन में किसी का नाम नहीं लिया, अल्बत्ता दस चीज़ों का ज़िक्र फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया कि इन अवगुणों वाले शख़्स की पैरवी न कीजिए। इस से ऐसे लोगों की निन्दा की गई है जो इन अवगुणों वाला हो।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि अहले मक्का में जो लोग इस्लाम और दाअ़ी इस्लाम (सल्ल०) के सख़्त तरीन दुश्मन थे, उन में एक शख़्स 'वलीद बिन अल् मुग़ीरा' भी था। यह शख़्स बहुत ही ज़्यादह मुख़ालिफ़त पर उतरा हुआ था, इन आयात में उसी का ज़िक्र है, नाम लिये बिना इर्शाद फ़रमाया कि ऐसे-ऐसे शख़्स की फ़रमाँबरदारी न कीजिए।

(1) (حَلَّافٍ) फ़रमाया यानी बहुत ज़्यादह क़समें खाने वाला।

(2) दूसरे (مَّهِينٍ) फ़रमाया यानी ज़लील।

(3) तीसरे هَمَّازٍ फ़रमाया जो दूसरों को ऐब लगाता हो।

(4) चौथे مَّشَّآءٍ بِنَمِيمٍ यानी चुग़लख़ोर है जो लोगों के दर्मियान फ़साद फैलाने के लिए चुग़लख़ोरी करता हो और इस में ख़ूब आगे बढ़ा हुआ हो।

(5) पाँचवें مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ यानी ख़ैर से रोकने वाला, इस में हिदायत से रोकना भी आ गया और जहाँ अल्लाह की रज़ामन्दी के कामों में माल ख़र्च करने की ज़रूरत हो वहाँ हाथ रोक लेने और कंजूसी करने को भी शामिल हो गया।

(6) छठे مُعْتَدٍ फ़रमाया यानी हद से बढ़ने वाला ज़ुल्म करने वाला।

(7) सातवें أَثِيمٍ 'गुनाहगार'।

(8) आठवें عُتُلٍّ फ़रमाया यानी सख़्त मिज़ाज।

(9) नवें फ़रमाया بَعْدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ यानी जो कुछ ज़िक्र हुआ। उस के बाद यह भी फ़रमाया कि वह मुन्क़तअ़ अल् नस्ब है यानी उस का बाप मालूम न था, हक़ीक़त में क़ुरैशी न था। 'मुग़ीरा' ने उस की अठ्ठारह साल उ़म्र होने के बाद उसे अपना मुँह बोला बेटा बना लिया था। इसी वजह से बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लफ़्ज़ 'ज़नीम' का अनुवाद ह़रामज़ादह (ह़राम की औलाद) किया है।

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि जिस बच्चे का नसब साबित न हो उस का क्या क़ुसूर है? इस का जवाब यह है कि पैदा होने वाले पर मलामत नहीं है, लेकिन ऐसे बच्चों में बुरे काम और बुरे अख़्लाक तर्बियत न होने की वजह से पैदा हो जाते हैं, लिहाज़ा उन में खानदानी शराफ़त आ़मतौर पर नहीं पाई जाती।

इर्शाद फरमाया कि चूंकि यह माल वाला और बेटों वाला है इसलिए यह ऐसी ह़रकत करता है कि जब उस पर हमारी आयात तिलावत की जाती हैं तो झुठलाने के तौर पर कह देता है कि यह पुराने लोगों की चीजें हैं जो नक़्ल दर नक़्ल चली आ रही हैं। चाहिए तो यह था कि अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों पर शुक्र करता और उस के आयात की तस्दीक़ करता, लेकिन उस ने माल और औलाद पर घमंड कर के आयात क़ुर्आनिया को झुठलाने पर कमर बाँध ली।

'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' (रज़ि०) ने फ़रमाया कि जहाँ तक हमारा इ़ल्म है अल्लाह तआ़ला ने किसी भी शख़्स के अन्दर इतनी बुरी चीज़ें नही रखी है जितनी जो 'वलीद बिन अल् मुग़ीरा' के अन्दर थी। आख़िरत में जो कुफ़्र पर मर जाने की सज़ा है वह अपनी जगह है, दुनिया में उस को यह सज़ा दी गई कि उस की नाक में ग़ज़्व-ए-बद्र के मौक़े पर एक तलवार लगी जिस की वजह से नाक पर ज़ख़्म आ गया और मुस्तक़िल एक निशान बन गया, उस की नाक भी बड़ी थी जिसे 'ख़रतूम' शब्द की संज्ञा दी है। 'ख़रतूम' हाथी की नाक को कहते हैं यह शख़्स ज़िन्दगी भर अपनी ऐ़बदार नाक को लिए फिरता था और सब के सामने उस की बद्सूरती दिखाई देती थी।

17-33

إِنَّا بَلَوْنَاهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ۝ وَلَا يَسْتَثْنُونَ ۝ فَطَافَ عَلَيْهَا
طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ۝ فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ۝ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ۝ أَنِ اغْدُوا عَلَىٰ
حَرْثِكُمْ إِن كُنتُمْ صَارِمِينَ ۝ فَانطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَافَتُونَ ۝ أَن لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُم
مِّسْكِينٌ ۝ وَغَدَوْا عَلَىٰ حَرْدٍ قَادِرِينَ ۝ فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُّونَ ۝ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۝
قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ۝ قَالُوا سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ
عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلَاوَمُونَ ۝ قَالُوا يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا طَاغِينَ ۝ عَسَىٰ رَبُّنَا أَن يُبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَا إِنَّا إِلَىٰ
رَبِّنَا رَاغِبُونَ ۝ كَذَٰلِكَ الْعَذَابُ ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

एक बाग़ के मालिकों का वाक़िआ़

रसूलुल्लाह (सल्ल०) के हिजरत फ़रमाने के बाद मक्का के मुश्रिकों पर अल्लाह तआ़ला ने क़ह़त (सूखा) भेज दिया था। क़ह़त की वजह से बहुत तक्लीफ़ उठाई। इस के बारे में फ़रमाया कि मक्का वालों

को आज़माइश में डाला जैसा कि बाग़ वालों को आज़माइश में डाला था। यह बाग़ कहाँ, बाग़ वाले कौन थे? इस के बारे में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि यह बाग़ यमन में शहर सनूआ से दो फ़रसख़ के फ़ासले पर था, उसे वहीं के लोगों ने बोया था जो लोग उस के वारिस चले आ रहे थे, वह बड़े सख़ी थे जिस दिन बाग़ के फल काटते थे गरीब लोग (Poor) जमा हो जाते थे, उसी तरह़ खेती काटने के दिन और जिस दिन भूसा और दाना अलग करते थे गरीब लोग आ जाते थे, यह लोग गरीबों को दिल खोलकर फल, खेती और भूसा निकाले हुए दाने दे दिया करते थे। आख़िर में यह हुआ कि उन में से एक शख़्स की मौत हो गई उस ने अपने तीन लड़के वारिस छोड़े। जब खेती काटने का मौक़ा आया उन तीनों भाईयों ने मश्वरह किया कि माल कम है अहलो व अयाल ज़्यादह हैं, अब अगर हम इसी तरह़ सख़ावत करते रहें और गरीबों को देते रहें तो हमारे लिए माल कम पड़ जाएगा, अब तो मिस्कीनों से जान छुड़ाना चाहिए।

ग़रीबों को न देने की सज़ा-

लिहाज़ा उन्होंने आपस में यह तय किया कि आइन्दा हम बिल्कुल सुबह़-सुबह़ बाग़ में पहुँच जाएँ और गरीबों के आने से पहले काट कर घरों में ले आएँगे। मश्वरे से आपस में यह बातें तय कीं और क़समें भी खाईं कि हम ज़रूर ऐसा करेंगे, लेकिन इन्शाअल्लाह किसी के मुँह से नहीं निकला। पहले तो मिस्कीनों को मह़रूम करने की क़सम खाई, दूसरे इन्शाअल्लाह कहना भूल गए लिहाज़ा अल्लाह तआला ने रातों रात उस बाग़ पर आफ़त भेज दी, यह लोग सो ही रहे थे उन्हें पता भी न चला कि बाग़ का क्या बना, रात को जो आफ़त आई तो वह खेती ऐसी हो गई कि जैसे काट दी गई हो, उसी को فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ से तअबीर फ़रमाया।

वहाँ पहुँचे तो कुछ भी न पाया। ह़ज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने كَالصَّرِيْمِ फ़रमाया है कि यानी उन लोगों की खेती काली राख की तरह़ हो गई।

सुबह़ को जो यह लोग उठे तो आपस में एक दूसरे को बुलाया कि आओ अगर तुम्हें अपनी खेती की पैदावार पूरी लेनी है और मिस्कीनों को कुछ नहीं देना है तो सुबह़-सुबह़ चलो और जल्दी चलो वरना आदत के मुताबिक़ मसाकीन आ जाएँगे।

चुनाँचे यह तीनों भाई चल दिये चले जा रहे थे और आपस में चुपके-चुपके यूँ कह रहे थे कि देखो! आज हम तक कोई मिस्कीन न पहुँचने पाए जो कुछ मश्वरह किया है उस पर क़ाबू पाने की कोशिश करो और अपने माल को अपने क़ब्ज़े में कर लो।

बाग़ में पहुँचे तो देखा कि बाग़ तो जला हुआ है, कहने लगे कि यह हमारा बाग़ नहीं है हम तो रास्ता भटक गए हैं चलो अपना बाग़ तलाश करो, उन में से बाज़ ने कहा कि अरे यह बात नहीं है हमारा बाग़ यहीं था हम उस की ख़ैर से मह़रूम कर दिये गये हैं क्योंकि हम ने यह ठान लिया था कि मसाकीन (ग़रीबों) को कुछ नहीं देना है इस पर हमारी गिरफ़्त हुई है जिस की वजह से हमें कुछ नहीं मिला, उन

में से जो सब से अच्छा आदमी था उस ने कहा कि क्या मैंने तुम से न कहा था कि तुम अल्लाह की तस्बीह़ क्यों नहीं बयान करते यानी इन्शाअल्लाह क्यों नहीं कहते।

अब जब उन लोगों ने बाग़ को बर्बाद देखा तो बड़ी शमिन्दगी हुई और कहने लगे कि हम अपने रब की पाकी बयान करते हैं कि बिलाशुब्हा हम ने ज़ुल्म का फ़ैसला किया था कि मिस्कीनों को कुछ न देंगे।

इस के बाद आपस में एक दूसरे को मलामत करने लगे और इल्ज़ाम देने लगे कि तूने यह राय दी थी और तूने यूँ कहा था और कहने लगे कि हाय! हमारी ख़राबी हम ने सरकशी वाला काम किया। अल्लाह की नेअ़मत का शुक्र अदा करते, मसाकीन को देते तो अच्छा होता सरकशी कर के हम ने इस महरूमी को ख़ुद मोल लिया।

(अब समझ में आ गया कि हमें वही करना चाहिए था जो हमारे बाप दादा करते थे।) उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला हमें इस बाग़ से बेहतर अ़ता फ़रमाएगा जो बाग़ जलकर राख हो गया, हम अपने रब की तरफ़ पलटते हैं।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (रज़ि०) ने फ़रमाया कि मुझे यह बात पहुँची है कि उन लोगों ने इख़्लास के साथ तौबः की, तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें एक बाग़ अ़ता फ़रमा दिया जिस के अंगूर के ख़ोशे इतने बड़े-बड़े थे कि एक ख़ोशा एक ख़च्चर पर लादकर ले जाते थे।

आख़िर में फ़रमाया كَذٰلِكَ الْعَذَابُ (इसी तरह़ अ़ज़ाब है) जो शख़्स हमारी सीमाओं से आगे बढ़ता है और हुक्म की मुख़ालिफ़त करता है हम उसे इसी तरह़ अ़ज़ाब देते हैं। وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ (और आख़िरत का अ़ज़ाब बहुत बड़ा है।)

لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ (काश कि यह लोग जानते होते।)

आयत नं० 34 से 52 तक

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيمِ ۝ أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ۝ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝ أَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ
فِيهِ تَدْرُسُونَ ۝ إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ۝ أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بٰلِغَةٌ إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ ۝ سَلْهُمْ
أَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيمٌ ۝ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِنْ كَانُوا صٰدِقِينَ ۝ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى
السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ۝ خٰشِعَةً أَبْصٰرُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سٰلِمُونَ ۝ فَذَرْنِي وَمَنْ يُكَذِّبُ
بِهٰذَا الْحَدِيثِ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ۝ أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرَمٍ
مُثْقَلُونَ ۝ أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ۝ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُومٌ ۝ لَوْلَا
أَنْ تَدٰرَكَهُ نِعْمَةٌ مِنْ رَبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ۝ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصّٰلِحِينَ ۝ وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا
لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصٰرِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ۝ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعٰلَمِينَ ۝

अनुवाद-

(34) परहेज़गारों के लिए उनके 'रब' के यहां नेअ़मत के बाग़ हैं। (35) तो क्या 'हम' मुस्लिमों
(आज्ञाकारियों) को मुजरिमों जैसा कर देंगे? (36) तुम लोगों को क्या हो गया है! कैसा फ़ैसला करते हो?-
(37) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ते हो; (38) कि उसमें तुम्हारे लिए वह कुछ है जो तुम
पसंद करते हो; (39) या तुमने 'हमसे' क़समें ले ली हैं जो क़ियामत के दिन तक बाक़ी रहने वाली हैं, कि
तुम्हारे लिए वही कुछ है जो तुम फ़ैसला करो? (40) उनसे पूछो, ''तुममें से कौन इसकी ज़मानत लेने वाला
है?''(41) क्या उन्होंने शरीक ठहरा रखे हैं,? तो लाएँ अपने शरीकों को, अगर वे सच्चे हैं। (42) जिस
दिन पिंडुली खुल जाएगी (अर्थात मुसीबत आ पड़ेगी) और (काफिर) सज्दे के लिए बुलाए जाएँगे, तो वे सज्दः
न कर सकेंगे। (43) उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी, ज़िल्लत उन पर छा रही होगी, और यह सज्दः की ओर
उस हालत में भी बुलाए जाते थे, कि भले चंगे थे। (44) तो आप मुझे और उन लोगों को छोड़ दीजिए, जो
इस बात को झुठलाते हैं, 'हम' उनको धीरे-धीरे ले जाएँगे ऐसे तरीक़े पर, कि उन्हें ख़बर भी न होगी। (45)
और 'मैं' उन्हें मोहलत दिये जाता हूँ, बेशक 'मेरा' उपाय बहुत मज़बूत है। (46) क्या आप उनसे कुछ बदला
मांग रहे हैं कि वह इसके जुर्माने के बोझ से दबे जा रहे हैं; (47) या उनके पास ग़ैब की ख़बर है कि (जिसे)
वे लिखा करते हैं? (48) तो आप अपने 'रब' के हुक्म पर सब्र कीजिए, और मछली वाले (यूनुस) की तरह
न हो जाइए जबकि उन्होंने (उस हालत में) पुकारा और वह (ग़म व) गुस्से से घुट रहे थे। (49) अगर उनके
रब की नेअ़मत उनके साथ न होती तो वह बुरी हालत के साथ मैदान में डाल दिये जाते; (50) तो उनके
'रब' ने उनको चुन लिया और उन्हें अच्छे लोगों में शामिल कर दिया। (51) और जब काफ़िर ज़िक्र (कुर्आन)
को सुनते हैं तो ऐसा लगता है कि वे अपनी निगाहों की ज़ोर से तुम्हें फिसला देंगे और कहते हैं, ''यह तो
मजनून है।'' (52) और यह (कुर्आन) सारे संसार के लिए नसीहत है।

आयत नं० 34 से 52 तक की व्याख्या

34-41 إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٣٤﴾ أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٥﴾ مَا لَكُمْ كَيْفَ
تَحْكُمُونَ ﴿٣٦﴾ أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ﴿٣٧﴾ إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ﴿٣٨﴾ أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا
بَالِغَةٌ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۙ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ ﴿٣٩﴾ سَلْهُمْ أَيُّهُم بِذَٰلِكَ زَعِيمٌ ﴿٤٠﴾ أَمْ لَهُمْ
شُرَكَاءُ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٤١﴾

मुत्तक़ियों के लिए नेअ़मत वाले बाग़

इन आयात में अल्लाह तआ़ला ने मुत्तक़ी बन्दों के इनआ़मात बयान फ़रमाए हैं। पहले इर्शाद फ़रमाया कि उन्हें उन के रब के पास नेअ़मतों वाले बाग़ मिलेंगे। इस के बाद फ़रमाया, क्या हम फ़रमाँबरदारों को मुजरिमों की तरह़ कर देंगे? यानी जो लोग मुजरिम हैं उन्हें अपने जुर्म की सज़ा मिलेगी और फ़रमाँबरदार बन्दे अपने ईमान और नेक आ़माल का फल पाएँगे, अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उन की नवाज़िश होगी और नेअ़मतें मिलेंगी, न तो यह होगा कि फ़रमाँबरदार नेअ़मतों से मह़रूम होकर मुजरिमों के बराबर हो जाएँ और न यह होगा कि काफ़िरों को नेअ़मतें दे दी जाएँ।

जब ईमान और तक़्वा वालों की नेअ़मतों का ज़िक्र होता था तो अहले कुफ़्र (इन्कारी) यूँ कहते थे कि दुनिया में हमें भी यह नेअ़मतें मिलेंगी, बल्कि हम नेअ़मतों के ज़्यादह ह़क़दार हैं, उन की इस बात को रद्द फ़रमा दिया गया कि أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ और मज़ीद फ़रमाया مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ (तुम्हें क्या हुआ तुम कैसा फ़ैसला करते हो) तुम्हारा यह फ़ैसला तो अ़क़्ल और दुनियादारी के उसूल के भी ख़िलाफ़ है। दुनिया में जो जज हैं, क्या मुजरिम और ग़ैर मुजरिम के साथ बराबरी का बर्ताव करते हैं? तुम ने यह कैसे कहा कि अल्लाह तआ़ला जो सारी दुनिया के बादशाह और सब से बड़ा इन्साफ़ वाला है वह मुजरिम और ग़ैर मुजरिमों के साथ बराबरी का बर्ताव करेगा।

أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ यह बात जो तुम ने कही है तुम्हारे पास इस की क्या दलील है? क्या तुम्हारे पास आसमान से कोई किताब नाज़िल हुई है जिसे तुम आपस में पढ़ते हो? और क्या इस किताब में यह विषय है कि तुम जो चाहो अपने पास से अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ कह दोगे, उसी के मुताबिक़ फ़ैसला हो जाएगा?

फिर फ़रमाया, क्या तुम्हारे लिए हमारे ऊपर क़समें हैं जो क़ियामत तक बाक़ी रहने वाली हैं कि तुम्हें वह दिया जाएगा जिस का तुम फ़ैसला करते हो?

मतलब यह हुआ कि तुम बताओ क्या अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से कोई ऐसा अ़हद है कि जो तुम कह दोगे वही कर देंगे और तुम्हारे कहने के मुताबिक़ फ़ैसला होगा? ऐसा नहीं है फिर बढ़-चढ़ कर यह बातें अपनी तरफ़ से कैसे कर रहे हो? फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) से ख़िताब फ़रमाया سَلْهُمْ أَيُّهُم بِذَٰلِكَ زَعِيمٌ

(आप उन से दर्याफ़्त कर लीजिए कि ऐसा कौन शख़्स है जो उन की बातों को सहीह़ साबित करने का ज़िम्मेदार है) यानी उन की बेहूदा बातों को कोई सही अ़क़्लमन्द नहीं कह सकता।

फिर फ़रमाया أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ क्या उन के ठहराए हुए कुछ शरीक हैं (सो वह अपने शरीकों को ले आएँ अगर सच्चे हैं) यानी क्या उन्होंने शरीक ठहराए हैं जिन्होंने उन्हें सवाब देने का और फ़रमाँबरदारों के बराबर करने का वादा कर रखा है। अगर ऐसा है तो अपने शरीकों को पेश करें, अगर अपने ख़याल में सच्चे हैं।

यानी यह जो उन्होंने कहा कि फ़रमाँबरदार और मुजरिम बराबर होंगे, न उन के पास इस विषय की कोई आसमानी किताब है, न किसी दूसरे वह्य के तरीक़े से अल्लाह तआला ने उन से ऐसा वादा फ़रमाया है, न अल्लाह की मख़्लूक़ में से उस के शरीक कुछ हैं जिन्होंने इस बात की ज़िम्मेदारी ली हो कि हम तुम्हारी सच्ची बात सच कर देंगे या करवा देंगे। जब उन में से कोई बात भी नहीं है तो यह जाहिलाना बात कैसे कहते हैं?

42-43 يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٤٢﴾ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ
وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَالِمُونَ ﴿٤٣﴾

‘साक़’ की तजल्ली

इन आयात में क़ियामत के दिन की बाज़ चीज़ों को बयान फ़रमाया है और वह यह हैं कि जब ‘साक़’ की तजल्ली होगी और लोगों से कहा जाएगा कि सज्दः करो तो मोमिनीन सज्दः कर लेंगे और मुनाफ़िक़ीन और रियाकार सज्दः न कर सकेंगे और उन की कमरें तख़्ता हो जाएँगी, सज्दः करना चाहेंगे तो गुद्दी के बल गिर पड़ेंगे।

‘सह़ीह़ बुख़ारी’ पेज नं० (731) और पेज नं० (1107) और सह़ीह़ मुस्लिम पेज नं० (100) और पेज नं० (104) पर इस की तफ़्सीर आई है और साक़ की तजल्ली होना मुतशाबिहात में से है और उस पर ईमान लाना ज़रूरी है, कैफ़ियत के समझने में वक्त ख़राब न किया जाए।

सज्दः की तरफ़ बुलाए जाने से यह शुब्हा न करना चाहिए कि वह तक्लीफ़ के लिए नहीं है, क्योंकि बुलाया जाने से मुराद सज्दः करने का हुक्म ‘अम्र बिल्सुजूद’ नहीं है, बल्कि इस तजल्ली में यह असर होगा कि सब सज्दः करना चाहेंगे, जिस में मोमिन इस पर क़ादिर होंगे और अहले मुनाफिकों को क़ुद्रत न होंगी और काफिरों का क़ादिर (सम्भव) न होना इस से ज़्यादा मालूम होता है जिस का आगे ज़िक्र है।

قال البغوی فی معالم التنزيل قوله عزوجل يدعون الی السجود فلا يستطعون يعنی
الكفار والمنافقون تصير اصلابهم كصياصی البقر فلا يستطيعون السجود.

काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बद्ह़ाली बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि उन की आँखें झुकी हुई होंगी और उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी। वजह इस की यह है कि यह लोग दुनिया में सज्दः की तरफ़

बुलाए जाते थे कि अल्लाह तआला को इख़्लास के साथ सज्दः करें, उस वक़्त यह लोग सही सालिम थे, सज्दः पर क़ुद्रत रखते थे, लेकिन सज्दः नहीं करते थे। अगर करते थे तो इख़्लास से न था, दुनिया में हुक्म न मानने की वजह से आज उन की रुस्वाई और ज़िल्लत हुई।

मुआलिमुल् तन्ज़ील भाग (4) पेज नं० (383) हज़रत सईद बिन जुबैर (रज़ि०) से وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ की तफ़्सीर बयान करते हुए लिखा है कि كانوايعمعون حی علی الفلاح فلا يجيبون यानी दुनिया में वह अज़ान की आवाज़ सुनते थे और कानों में حی علی الصلوٰة और حی علی الفلاح की आवाज़ आती थी, लेकिन नमाज़ के लिए नहीं आते थे।

44-47 فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۚ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ۝ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۝ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ۝

झुठलाने वालों के लिए मोहलत

इन आयात में इन्कार करने वालों और झुठलाने वालों को तम्बीह की गई है और तरीक़ा ऐसा अख़्तियार किया गया है कि बज़ाहिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ख़िताब है और इस में आप (सल्ल०) को तसल्ली भी है।

इर्शाद फ़रमाया कि आप मुझे और उन लोगों को रहने दीजिए जो इस कलाम (किताब) को झुठलाते हैं यानी अ़ज़ाब आने में जो देर लग रही है उस से रंजीदा न हों, हम उन्हें बद्तरीन जहन्नम के अ़ज़ाब की तरफ़ ले जा रहे हैं और वह इस तौर पर कि उन्हें ख़बर भी नहीं, उन्हें मोहलत दी जा रही है, उन्होंने इस मोहलत को अपने लिए फ़ायदेमन्द समझ रखा है और दुनिया की नेअ़मतों और लज़्ज़तों में पड़कर अपनी जानों को कामियाब समझ रहे हैं, हालांकि सरासर नाकामी और अ़ज़ाब की तरफ़ ले जा रहे हैं। यह ढ़ील एक तद्बीर है और मज़बूत तद्बीर है उनको जो मोहलत दी जा रही है वह उस की वजह से और ज़्यादह गुनाहों में फंसते जा रहे हैं और यह हमारी तरफ़ से ढ़ील है।

फिर फ़रमाया, क्या आप उन से कुछ मुआवज़ा या बदला चाहते हैं जिस की वजह से वह दबे जा रहे हैं? मतलब यह है कि आप का तब्लीग़ फ़रमाना और ईमान की दअ़वत देना यह सब अल्लाह की रज़ा के लिए है। आप अल्लाह तआला ही से सवाब की उम्मीद रखते हैं उन से तो आप किसी तरह की उजरत या बदले का मुताल्बा नहीं करते। अगर उन से कुछ चाहते होते तो उन को इस की अदाएगी मुश्किल पड़ जाती। जब आप उन से कोई चीज़ तलब करते ही नहीं तो उन्हें ख़ुद समझ लेना चाहिए कि दअ़वत के काम में इतनी मेहनत व कोशिश क्यों कर रहे हैं (लेकिन वह तो दुनियादारी के नशे में समझदारी को पास आने ही नहीं देते और बराबर इन्कार किये जा रहे हैं।)

फिर फ़रमाया اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ

(क्या उन के पास ग़ैब का इल्म है जिसे वह लिख लिया करते हैं।

मतलब यह है कि उनको किसी तरीक़े से अल्लाह के हुक्म मालूम हो जाते हैं, जिस की वजह से साहिबे वह्य यानी मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पैरवी से बेनियाज़ हैं। ख़ुलासा यह है कि उन के पास ऐसा कोई तरीक़ा नहीं है जिस के ज़रिये अल्लाह तआ़ला के हुक्मों को ख़ुद ही मालूम कर लिया करें, ह़ालांकि अपने ख़ालिक़ के हुक्मों का जानना ज़रूरी है। जब और कोई ज़रिया अल्लाह के हुक्मों को मालूम करने का नहीं है और आप की नुबूव्वत का इन्कार करने की भी कोई वजह नहीं है, तो इसका इन्कार करना उन की नासमझी, बेवक़ूफ़ी और ह़िमाक़त है।

48-50 فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ ۘ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ۝ لَوْلَا أَنْ تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِنْ رَبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ۝ فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝

मछली वाले की तरह़ न हो जाए

इन आयात में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को सब्र फ़रमाने का हुक्म दिया गया है कि अल्लाह तआ़ला ने जो आप (सल्ल०) के मुख़ालिफ़ों को मोहलत दी है उन पर जल्द अ़ज़ाब नहीं आया और आप को सब्र की तल्क़ीन फ़रमाई है उस पर अ़मल कीजिए और मछली वाले की तरह़ न हो जाइए। मछली वाले से ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) मुराद हैं, जब कि वह अपनी क़ौम से नाराज़ होकर चले गये थे।

(जिस का ज़िक्र सूरः यूनुस, सूरः अम्बिया और सूरः अल् साफ़्फ़ात में गुज़र चुका है) तो उन्हें मछली ने निगल लिया। मछली के पेट में अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ़ करते रहे।

अल्लाह तआला से इस ह़ालत में उन्होंने दुआ की कि वह ग़म से फट रहे थे। यह कई ग़म थे, एक क़ौम के ईमान न लाने का, एक बिला इजाज़त ह़क़ तआ़ला के यहाँ से चले आने का, एक मछली के पेट में चले जाने का और वह दुआ़ यह है: لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ जिस से मक़्सूद इस्तिग़्फ़ार और निजात माँगना है।

لَوْلَا أَنْ تَدَارَكَهُ अगर अल्लाह तआ़ला का इन्आ़म उन की रहनुमाई न करता तो वह बद्ह़ाली के साथ मैदान में डाल दिये जाते, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उन पर फ़ज़्ल फ़रमा दिया और मछली के पेट से बाहर लाया, ख़ुश्की में पहुँचे कमज़ोर थे और उन के पास एक बेलदार दरख़्त उगा दिया जिस से साया हो गया, जैसा कि सूरः साफ़्फ़ात है।

فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝

(फिर उन के रब ने उन को चुन लिया और क़रीबी बना लिया और उन्हें नेक लोगों में शामिल कर दिया (अल्लाह की इजाज़त के बिना क़ौम को छोड़ कर चले जाने की ग़ल्ती इज्तिहादी (Research) का जो हुआ था अल्लाह तआ़ला ने उस को माफ़ फ़रमा दिया और नेक लोगों में उन का दर्जा रखा।

51-52 وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ۝ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝

काफ़िरों की चाहत

मुश्रिकीने अ़रब की दुश्मनी इन्तिहा को पहुँच गई थी, रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर हर तरह़ का वार करने को तैयार रहते थे और जो भी मौक़ा मिलता उस से नहीं चूकते थे, आप (सल्ल०) को तक्लीफ़ पहुँचाने की तरह़-तरह़ की तद्बीरें करते थे, उन्होंने आप को बुरी नज़र लगवाने की तद्बीर भी सोची।

बाज़ लोग जिन की आँखों में फ़ित्री तौर पर नज़र लगाने की ख़ासियत होती है, उस वक़्त इस तरह़ का एक शख़्स था उसे क़ुरैशे मक्का ने तय्यार किया कि 'मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह' पर ऐसी नज़र डाल जिस से आप मरीज़ हो जाएँ और आप को तक्लीफ़ पहुँच जाए।

साह़िबे 'मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' और 'साह़िबे रुहुल् मआनी' ने यह बात लिखी है कि उन लोगों ने आप पर नज़र लगवाने का इरादा किया और एक आदमी को इस पर तय्यार किया, लेकिन उस की आँखों का आप पर कुछ असर न हुआ। अल्लाह तआ़ला ने आप को मह़फ़ूज़ फ़रमाया और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया है नज़र लगाना मुराद नहीं है, बल्कि बुरी-बुरी निगाहों से देखना मुराद है यानी वह आप को दुश्मनी की वजह से बुरी निगाहों से देखते हैं और इसी हसद की वजह से आप को दीवाना बताते हैं, ह़ालांकि यह क़ुर्आन जो आप सुनाते हैं तमाम जहानों के लिए नसीह़त ही नसीह़त है भला दीवाना आदमी ऐसी बातें सुना सकता है?

नज़र का लगना

ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह़०) लिखते हैं कि इस आयत से मालूम हुआ कि नज़र का लग जाना और उस का असर होना ह़क़ है जो अल्लाह तआ़ला के हुक्म से होता है, इस के बाद उन्होंने बड़ी तअ़दाद में ऐसी अह़ादीस नक़्ल की हैं जिस में नज़र दूर करने के लिए इस दुआ के पढ़ने का ज़िक्र है।

मुवत्ता इमाम मालिक में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि नज़र लग जाना ह़क़ है। ह़ज़रत अस्मा बिन्त उमैस रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया, या रसूलल्लाह! जअ़फ़र के बच्चों को नज़र जल्दी लग जाती है तो क्या मैं उन के लिए फूंक़ सकती हूँ। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, हाँ, फूंक दिया करो क्योंकि अगर कोई चीज़ तक़्दीर से आगे बढ़ने वाली होती तो नज़र पढ़ जाती। **(मिश्कातुलू मसाबीह़ पेज नं० 390)**

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ह़ज़रत ह़सन और हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा को (तकालीफ़ से) मह़फ़ूज़ रखने के लिए यह पढ़ा करते थेः-

أُعِيذُ كُمَا بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَّةٍ

(अल्लाह के पूरे कलिमात के ज़रिये मैं तुम्हें हर शैतान से, हर ज़हरीले जानवर और बुराई के साथ नाज़िल होने वाली हर आँख से पनाह में देता हूँ।) **(रवाहुलू बुख़ारी)**

और फ़रमाते थे कि तुम्हारे बाप ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) इन कलिमात को इस्माईल और इस्ह़ाक़ (अ़लै०) की ह़िफ़ाज़त के लिए पढ़ा करते थे।

हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि नहीं है झाड़ना मगर नज़र लगाने से या ज़हरीले जानवर के डर से।

(रवाहु अह्मद, तिर्मिज़ी, मिश्कात पेज नं० 390)

दूसरे मरीज़ों के लिए भी झाड़ना जायज़ है, जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) से साबित है। इन दोनों चीज़ों के लिए झाड़ने की ज़्यादह ज़रूरत होती है इसलिए इस तरह फ़रमाया जो कुछ भी फूँका जाए अल्लाह के नामों से, क़ुर्आन मजीद की आयात से और मस्नून दुआओं से हो, शिर्किया शब्दों से न हो। सूरः नून वल् क़लम की यह आख़िरी दो आयतें हैं नज़रे बद् के लिए, पढ़ी जा सकती हैं।

(भाग-69)

सूर-ए-हाक़्क़ः

(सूरः नं. 69)

सूरः हाक़्क़ः का संक्षिप्त परिचय

नाम– इस सूरः के शुरु की तीन आयतों में कलिमा "الحاقة" आया है। यही इस का नाम रख दिया गया है। बाज़ ने इस का नाम "السلسلة" और "الداعية" भी बताया है।

नाज़िल होने का ज़माना– 'क़ुर्तुबी' ने लिखा है कि तमाम लोगों के नज़्दीक यह सूरः मक्की है। इब्ने मरदूविया और बैहक़ी आदि ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से यही रिवायत नक़्ल की है।

आयत नं० 1 से 27 तक

الْحَاقَّةُ ۝ مَا الْحَاقَّةُ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ۝ فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ۝ وَأَمَّا
عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۝ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَانِيَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَىٰ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ
نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۝ فَهَلْ تَرَىٰ لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ ۝ وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَاتُ بِالْخَاطِئَةِ ۝ فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ
أَخْذَةً رَابِيَةً ۝ إِنَّا لَمَّا طَغَى الْمَاءُ حَمَلْنَاكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۝ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ۝ فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ
وَاحِدَةٌ ۝ وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ۝ فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ وَانْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ
وَاهِيَةٌ ۝ وَالْمَلَكُ عَلَىٰ أَرْجَائِهَا ۚ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَانِيَةٌ ۝ يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝ فَأَمَّا
مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ هَاؤُمُ اقْرَءُوا كِتَابِيَهْ ۝ إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلَاقٍ حِسَابِيَهْ ۝ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝ فِي جَنَّةٍ
عَالِيَةٍ ۝ قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ۝ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۝ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ
فَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَهْ ۝ وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ۝ يَا لَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۝

अनुवाद–

(1) सचमुच होने वाली, (2) वह सचमुच होने वाली क्या है? (3) और आप को क्या ख़बर है कि वह सचमुच होने वाली क्या है? (4) समूद ने और आ़द ने उस खड़खड़ाने वाली को झुठला दिया (5) तो समूद तो ज़ोरदार आवाज़ से हलाक कर दिये गये, (6) और आ़द ठंडी तेज़ हवा के ज़रिये हलाक किये गये। (7) 'उस' ने उस हवा को सात रात और आठ दिन तक उन पर मुसल्लत कर दिया था, तो तुम उन लोगों को देखते कि (इस तरह) ढेर हो गये जैसे खुजूर के खोखले वृक्षों के तने हों? (8) तो क्या तुम्हें उनमें से कोई बचा हुआ नज़र आता है? (9) और फ़िरऔन और इससे पहले के लोगों ने, और उल्टी हुई बस्ती वालों ने गुनाह के काम किये थे। (10) तो उन्होंने अपने 'रब' के रसूल की नाफ़रमानी की, फिर 'उसने' उनको सख़्ती के साथ पकड़ लिया। (11) जब पानी ह़द से ज़्यादा हो गया तो 'हमने' तुम्हें नौका में सवार कर दिया; (12) ताकि 'हम' तुम्हारे लिए इस घटना को नसीह़त बना दें, और ताकि उसे याद रखने वाले कान याद रखें; (13) तो जब सूर में एक फूँक मारी जाएगी; (14) और उठा ली जायेगी ज़मीन और पहाड़, फिर (दोनों को) एक ही बार में चूरा-चूरा कर दिया जाएगा; (15) तो उस दिन घटित होने वाली घटना घटित

हो जाएगी; (16) और आसमान फट जाएगा, तो वह उस दिन कमज़ोर हो जाएगा; (17) और फ़रिश्ते उसके किनारों पर (आ जाएँगे), और उस रोज़ आप के रब के अर्श (सिंहासन) को आठ फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे। (18) जिस दिन तुम पेश किये जाओगे, तुम्हारी कोई बात छिपी न रहेगी। (19) तो जिसके दाहिने हाथ में आ़माल नामा (कर्म पत्र) दिया जाएगा, तो वह कहेगा, ''लो मेरा आ़माल नामा पढ़ लो; (20) मैं पहले ही यक़ीन रखता था कि मेरा हिसाब मेरे सामने पेश होने वाला है।'' (21) तो वह (व्यक्ति) अपनी पसंदीदा ज़िन्दगी में होगा, (22) बुलन्द जन्नत के बाग़ों में, (23) जिनके फल झुके हुए होंगे, (24) खाओ और पियो मज़े से उन आ़माल के बदले में जो तुमने पिछले दिनों में आगे भेजे थे। (25) और जिसके बाएँ हाथ में आ़माल नामा दिया जाएगा, तो वह कहेगा, ''काश, मेरा आ़माल नामा मुझे न दिया जाता; (26) और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है! (27) 'काश' मौत ही मेरा फ़ैसला कर देती!

आयत नं० 1 से 27 तक की व्याख्या

1-3 الْحَاقَّةُ ۝ مَا الْحَاقَّةُ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ۝

"الحاقة" से मुराद क़ियामत का दिन है, इसलिए कि इस से सम्बन्धित तमाम ग़ैबी ख़बरें उस दिन साबित हो जाएँगी और ख़ुद क़ियामत का वजूद साबित हो जाएगा और बन्दों के आ़माल का बदला उस दिन सामने आ जाएगा।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि अ़रब जब मुख़ातब के दिल में किसी अहम चीज़ के जानने का शौक़ पैदा करना चाहते हैं तो पहले उस का थोड़ा सा ज़िक्र करते हैं, फिर उस की तफ़्सील बयान करते हैं, ताकि पहले उस के ज़ेहन में यह बात बैठ जाए कि जिस चीज़ का ज़िक्र हो रहा है वह कोई बड़ी चीज़ है, ताकि उस का तसव्वुर दिल व दिमाग़ में अच्छी तरह़ बैठ जाए। यहाँ भी क़ियामत का ज़िक्र पहले मुख़्तसर फिर तफ़्सीली तौर पर इसी मक़्सद के लिए आया है।

4-6 كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ۝ فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ۝ وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۝

"القارعة" भी क़ियामत का नाम है, इसलिए कि वह अपनी हौलनाकियों के ज़रिये लोगों को झिंझोड़ देगी और उन के दिलों पर कपकपी तारी कर देगी। बाज़ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि इस से मुराद क़ुर्आन करीम है, इसलिए कि नबी करीम (सल्ल०) इस की आयतें पढ़कर लोगों को डराते थे और उन्हें ख़्वाबे ग़फ़्लत से झिंझोड़ते थे, लेकिन पहला अर्थ ही अहम है।

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की तरह़ क़ौमे समूद और क़ौमे आ़द ने भी क़ियामत के दिन को झुठलाया, तो क़ौमे समूद के लोग एक सख़्त तरीन चीख़ के ज़रिये हलाक कर दिये गए। यह क़ौम शाम व हिजाज़ के दर्मियान "حِجرً" नाम की जगह आबाद थी, जिसे आज कल 'मदायन सालेह़' के नाम से जाना जाता है और जो सऊदी अ़रब के शहर "العُلا" से सिर्फ़ चन्द मील की दूरी पर है।

और क़ौमे आ़द एक सख़्त ठंडी और तेज़ आँधी के ज़रिये हलाक कर दी गई। यह लोग "أحقاف"

में आबाद थे जो उ़मान और ह़ज़र मूत (यमन) के दर्मियान रेगिस्तानी इलाक़ा था।

7-8 سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۚ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ۝

अल्लाह तआ़ला ने इस आँधी को उन पर सात रातों और आठ दिनों के लिए मुसल्लत कर दिया था जो लगातार चलती रही और उन को चुन-चुन कर ख़त्म करती रही, चुनाँचे उन की लाशों के इस तरह़ ढ़ेर लग गए जैसे खजूरों के पेड़ जड़ से उखड़ कर ज़मीन पर गिर पड़े हों।

जैसा कि सूरः अल् क़मर आयत नं० (20) में आया है:-

كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ

"यानी कि वह जड़ से कटे हुए खजूर के तने हैं"।

इस तरह़ अल्लाह तआ़ला ने हमेशा के लिए उस क़ौम को ख़त्म कर दिया, उन का एक शख़्स भी बाक़ी न रहा, दुनिया से उन की नस्ल मिट गई।

'यह़या बिन सलाम' कहते हैंः कलिमा "الخاوية" में इशारा है कि उन के जिस्म रुहों से इस तरह़ ख़ाली थे जैसे खजूर के खोखले दरख़्त होते हैं।

9-10 وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۚ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ۝

आ़द व समूद की तरह़ इस सरज़मीन पर दूसरी सरकश क़ौमें भी पाई गईं। मिस्र में फ़िरऔ़न पैदा हुआ जिस की हिदायत के लिए अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा बिन इ़मरान (अ़लै०) को बहुत से मोअ़जिज़ात देकर भेजा, लेकिन उस ने कुफ़्र की राह अख़्तियार की और फ़िरऔ़न-ए-मिस्र से पहले भी ऐसी क़ौमें पाई गईं जिन्होंने अपने ज़माने के रसूलों को झुठलाया और क़ौमे लूत की बस्तियाँ पाई गईं जिन के रहने वालों ने गुनाहों का काम किया और उन तमाम काफ़िर क़ौमों ने अपने रब के रसूलों को झुठला दिया, तो अल्लाह तआ़ला ने उन की सख़्त गिरफ़्त की।

11-12 اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِى الْجَارِيَةِ ۙ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ۝

उन काफ़िर व सरकश क़ौमों में क़ौमे नूह़ के लोग भी थे, जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने समुद्र में डिबो दिया। जब तूफ़ान का पानी ज़मीन पर हर तरफ़ फैल गया, ढ़ाल और ऊँची ज़मीन में कोई फ़र्क़ न रहा, तो अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत नूह़ और उन के मुसलमान साथियों को कश्ती में सवार होने का हुक्म दिया, चुनाँचे कश्ती में सवार लोगों के सिवा सब हलाक हो गए और कश्ती बाक़ी लोगों के लिए इ़बरत व नसीहत का ज़रिया बन गई कि अल्लाह तआ़ला किस तरह़ अपने रसूलों की मदद करता है और अपने दुश्मनों को बर्बाद कर देता है।

यह वाक़िआ़ हर अ़क़्लमन्द के दिल व दिमाग़ में हमेशा के लिए दर्ज हो गया और उन्हें मालूम हो गया कि अल्लाह से सरकशी करने वाली क़ौम का अन्जाम कैसा होता है।

13-17 فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ۝ وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ۝
فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ وَانْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۝ وَالْمَلَكُ عَلَىٰ أَرْجَائِهَا ۚ وَيَحْمِلُ
عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَانِيَةٌ ۝

क़ियामत को झुठलाने वालों की हलाकत व बर्बादी के क़िस्से बयान करने के बाद अब उस के आने की कैफ़ियत बयान की जा रही है। सब से पहले इस्राफ़ील (अ़लै०) सूर फूंकेंगे, जिस के असर से तमाम रुहें अपने जिस्मों में दाख़िल हो जाएँगी और सब लोग रब्बुल् आ़लमीन के सामने हाज़िरी के लिए खड़े हो जाएँगे और ज़मीन से पहाड़ उठा कर एक दूसरे से इस तरह् टकरा दिये जाएँगे कि एक सेकेण्ड में पूरी दुनिया तबाह व बर्बाद हो कर पूरी ज़मीन एक चट्यल मैदान बन जाएगी और क़ियामत वाक़ेअ़ हो जाएगी और आसमान फट पड़ेगा, उस का रंग बदल जाएगा और निहायत कमज़ोर और ढ़ीला ढ़ाला हो जाएगा, फ़रिश्ते आसमान के किनारों पर पनाह लेंगे।

'ज़िहाक' का क़हना है कि क़ियामत के दिन जब आसमान फट जाएगा, तो फ़रिश्ते उस के किनारों पर पनाह लेंगे यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला उन्हें ज़मीन पर उतरने का हुक्म देगा, तो वह उतर कर ज़मीन और उस पर रहने वालों को अपने घेरे में ले लेंगे।

उस दिन आठ फ़रिश्ते अपने सरों पर अ़र्श को उठाए होंगे। बाज़ ने कहा है कि असंख्य फ़रिश्ते आठ सफ़ों में बटे हुए अ़र्श को अपने सरों पर उठाए होंगे।

'हाफ़िज़ इब्ने कसीर' ने लिखा है कि 'अ़र्श' से मुराद या तो 'अ़र्श अ़ज़ीम' है या वह अ़र्श जो क़ियामत के दिन फ़ैसले के लिए ज़मीन पर रखा जाएगा। वल्लाहु आ़लम।

18 يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝

अल्लाह तआ़ला ने जिन्नों और इन्सानों को मुख़ातब कर के फ़रमाया कि क़ियामत के दिन तुम सब अपने रब के सामने हिसाब और जज़ा व सज़ा के लिए पेश किये जाओगे और वह पेशी इसलिए होगी, ताकि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे उन आ़माल को जाने जिन की उसे ख़बर नहीं थी, बल्कि इस से मक़्सूद तुम्हें आज़माना और तुम्हारी तम्बीह होगी। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

لَا تَخْفَىٰ مِنْكُمْ خَافِيَةٌ "तुम अपने रब के सामने पेश किये जाओगे और तुम्हारे करतूतों में से कोई बात उस से छुपी हुई नहीं होगी"।

19-20 فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ هَاؤُمُ اقْرَءُوا كِتَابِيَهْ ۝ إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلَاقٍ حِسَابِيَهْ ۝

उस दिन जिस का आ़माल नामा उस के दाएँ हाथ में दिया जाएगा वह कामियाब होगा और मारे ख़ुशी के अपने आस-पास के लोगों से कहेगा कि ज़रा मेरा आ़मालनामा (रिजल्ट) लो और इसे पढ़ो तो सही, इस से तो रौशनी फूट रही है, इस में गुनाहों की कालिख़ नज़र नहीं आ रही है। मुझे दुनिया में इस बात का यक़ीन था कि क़ियामत के दिन मुझे अपने आ़माल का बदला ज़रूर मिलेगा, इसीलिए मैंने

ईमान और नेक अ़मल के ज़रिये इस दिन के लिए तैयारी की थी और गुनाहों से बचा था और अगर कभी नादानी की वजह से कोई गुनाह किया तो फ़ौरन अल्लाह की तरफ़ पलूटा और उस गुनाह से तौबः किया तो वह गुनाह मेरे नाम-ए-आ़माल में दर्ज नहीं किया गया है।

21-24 فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾

अल्लाह तआ़ला ने ऐसे नेक इन्सान का अन्जाम यह बताया है कि उसे जन्नत के बालाख़ानों में ख़ुशियों और राहतों से भरी ज़िन्दगी मिलेगी। उस जन्नत के फल हर हाल में उस के क़रीब होंगे, वह जब भी उन में से कोई फल खाना चाहेगा उस के क़रीब आ जाएगा और उन की इ़ज़्ज़त बढ़ाने के तौर पर कहा जाएगा कि तुम सब ख़ुश व ख़ुर्रम रहो और जो चाहो खाओ और जो चाहो पियो, यह जन्नत और उस की सारी नेअ़मतें तुम्हें उन नेक आ़माल की वजह से मिली हैं जो तुम ने दुनिया की ज़िन्दगी में की थी।

25-27 وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾ وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾

और उस दिन जिस का आ़मालनामा (Result) उस के बाएँ हाथ में दिया जाएगा वह बद्‌बख़्त और नामुराद होगा और ग़म व अफ़्सोस की वजह से कहेगा कि ऐ काश! मेरा नाम-ए-आ़माल मुझे न दिया गया होता और मुझे मेरा हि़साब मालूम न होता, ऐ काश! दुनिया में जो कुछ मौत आई थी, उस के बाद मैं ज़िन्दा न किया जाता।

आयत नं० 28 से 52 तक

مَآ اَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ۝ هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطٰنِيَهْ ۝ خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ۝ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۝ ثُمَّ فِىْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ
ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ۝ اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ۝ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ۝
وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ۝ لَّا يَاْكُلُهٗٓ اِلَّا الْخٰطِـُٔوْنَ ۝ فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ۝ وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ۝ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ۝
وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۗ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَوْ
تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ۝ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ۝ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ۝ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ
حٰجِزِيْنَ ۝ وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ۝ وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَاِنَّهٗ لَحَقُّ
الْيَقِيْنِ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝

अनुवाद-

(28) मेरे माल ने मुझे कुछ भी फ़ायदा न पहुँचाया, (29) मेरी जो हुकूमत (सत्ता) थी वह बरबाद हो गयी।'' (30) ''इसे पकड़ो और इसको तौंक पहना दो; (31) फिर भड़कती हुई आग में झोंक दो, (32) फिर ऐसी ज़ंजीर में इसको जकड़ दो जिसकी माप सत्तर गज़ है, (33) यह अज़ीम (महिमावान) अल्लाह पर ईमान नहीं रखता था, (34) और न मिस्कीन को खाना खिलाने पर उभारता था, (35) तो आज इसका कोई दोस्त नहीं, (36) और न ग़िस्लीन (पीप) के अलावा कोई खाना है, (37) उसे केवल गुनहगार ही खाएँगे।'' (38) तो मैं उन चीज़ों की क़सम खाता हूँ जिनको तुम देखते हो, (39) और उन (चीज़ों) की भी जिन को तुम नहीं देखते; (40) कि यह क़ुर्आन कलाम है एक इज़्ज़तदार फ़रिश्ते का लाया हुआ, (41) और यह किसी शायर का कलाम (वाणी) नहीं, मगर तुम लोग बहुत ही कम ईमान लाते हो; (42) और यह किसी काहिन का कलाम (वाणी) नहीं तुम लोग बहुत ही कम समझते हो; (43) यह उतारा हुआ है रब्बुल आलमीन की ओर से। (44) और अगर यह (रसूल) 'हमारे' ज़िम्मे कुछ बातें गढ़ लेते, (45) तो 'हम' उनका दाहिना हाथ पकड़ लेते; (46) फिर उनकी रगे दिल (अर्थात गर्दने रग) काट देते, (47) तो तुम में से कोई इस से बचाने वाला न होता, (48) और यह (किताब) परहेज़गारों के लिए नसीहत है। (49) और 'हम' जानते हैं कि तुममें से कुछ इसको झुठलाने वाले हैं, (50) और यह काफ़िरों के लिए बड़ा पछतावा है, (51) और निश्चय ही यह बिल्कुल यक़ीनी सत्य है, (52) तो आप रब्बे अज़ीम (महिमावान) के नाम की तस्बीह बयान करते रहिए।

आयत नं० 28 से 52 तक की व्याख्या

28-29 مَآ اَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ۝ هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطٰنِيَهْ ۝

जहन्नमी अपने नाकामी पर अफ़्सोस करते हुए कहेगा कि मेरा माल आज मुझे अज़ाबे इलाही से बचा न सका और मेरी बादशाही, लश्कर, जंगी सामान और मेरी कुव्वत और मेरा दबदबा, मेरे कुछ भी

काम न आया। सब दूर हो गये और अफ़्सोस के सिवा अब मेरे पास कुछ भी न रहा।

30-32 خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ۝ ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ۝ ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۝

तब अल्लाह तआला जहन्नम के दारोग़ा से कहेगा कि इसे पकड़ लो और इस के हाथ गर्दन से लगाकर बाँध दो, फिर इसे जहन्नम के अंगारों पर जलाओ और उलूटो-पलूटो (फिर इसे जहन्नम की गर्म ज़ंजीरों में से एक जंज़ीर में इस तरह़ पिरो दो कि उस के दुबुर (लैट्रीन करने की जगह) से दाख़िल करो और मुँह से निकाल दो) ताकि उस में लटका रहे। أعاذنا الله من عذاب جهنم

33-34 إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۝ وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝

वह बद्‌बख़्त इस बद्‌तरीन अन्जाम का इसलिए ह़क़्दार बना कि वह साह़िबे अ़ज़्मत व जलाल अल्लाह पर ईमान नहीं रखता था और मिस्कीनों को खाना न ख़ुद देता था न दूसरों से कहता था, बड़ा ही कंजूस था और दूसरों को भी अल्लाह के लिए मिस्कीनों को खाना खिलाने से रोकता था।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि नेक बख़्ती का दारोमदार अल्लाह के लिए इख़्लास और मख़्लूक़ के साथ एह़सान पर है और यह बद्‌बख़्त इन दोनों सिफ़ात से मह़रूम था।

35-37 فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَاهُنَا حَمِيمٌ ۝ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ۝ لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۝

इस बद्‌बख़्त जहन्नमी का आगे ह़ाल बयान करते हुए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि आज (यानी क़ियामत के दिन) उस का कोई रिश्तेदार या दोस्त नहीं होगा, जो इस के लिए सिफ़ारिशी बने और इसे अल्लाह के अ़ज़ाब से बचा सके।

सूरः मोमिन आयत नं० (18) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हैः-

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ۝

“और उन्हें बहुत ही क़रीब आने वाली (क़ियामत) से आगाह कर दीजिए जबकि दिल ह़लक़ तक पहुँच जाएँगे और सब ख़ामोश होंगे, ज़ालिमों का न कोई दिली दोस्त होगा न सिफ़ारिशी कि जिस की बात मानी जाए”।

और उस बद्‌बख़्त को खाने के लिए जहन्नमियों के ख़ून और पीप के सिवा कुछ भी न मिलेगा। यह बद्‌तरीन खाना सिर्फ़ इन्कारी और वह मुजरिम खाएँगे जो अल्लाह के हुक्मों को पीठ पीछे डाल देते थे और जानबूझकर गुनाह और जुर्म किया करते थे।

38-43 فَلَا أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ۝ وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ۝ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۚ قَلِيلًا مَا تُؤْمِنُونَ ۝ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۚ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ ۝ تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि लोगों! मैं उन तमाम चीज़ों की क़सम खाता हूँ जिन्हें तुम देखते हो और जिन्हें तुम नहीं देखते, यानी तमाम मख़्लूक़ात की और अपनी ज़ात की क़सम खाता हूँ कि मेरे रसूल

सच्चे हैं और उन्होंने यह क़ुर्आन अपने रब की ओर से लोगों को सुनाया है यह किसी शायर का कलाम नहीं है, जैसा कि तुम लोगों में झूठा प्रोपगण्डा करते हो। ह़क़ीक़त यह है कि तुम ईमान से मह़रूम हो, अगर तुम मोमिन होते और नबी करीम (सल्ल०) के अख़्लाक़ (आचरण) में ग़ौर व फ़िक्र करते, तो तुम्हारे लिए रौशन सूरज की तरह़ यह बात स्पष्ट हो जाती कि वह वाक़ई अल्लाह के रसूल हैं और जो क़ुर्आन लेकर आए हैं वह कलामे इलाही है।

और यह क़ुर्आन किसी जादूगर का कलाम नहीं है, जैसा कि बाज़ मुश्रिकीने अ़रब कहते हैं। ह़क़ीक़त यह है कि तुम लोग फ़िक्र व नज़र की नेअ़मत से बिल्कुल मह़रूम हो वरना तुम्हें यह बात यक़ीनन समझ में आ जाती कि क़ुर्आन किसी जादूगर का कलाम नहीं है, इसलिए कि क़ुर्आन ह़क़ व सदाक़त लेकर नाज़िल हुआ है जबकि कहानत की बुनियाद झूठ पर होती है।

मुश्रिकीने मक्का की शंकाओं की तर्दीद करने के बाद अल्लाह तआ़ला ने बतौर ताकीद फ़रमाया कि इस में कोई शुब्हा नहीं कि क़ुर्आन रब्बुलू आ़लमीन का कलाम है, यह किसी इन्सान का कलाम नहीं हो सकता क्योंकि इस कलाम की अ़ज़्मत, इस का जलाल और दिल व दिमाग़ पर पड़ने वाला इस का ग़ैर मामूली असर इस बात पर दलालत करता है कि इस का भेजने वाला वह (अल्लाह) है जो अ़ज़्मत व जलाल और बड़ाई वाला है।

44-47 وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ ۝ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۝ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۝
فَمَا مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ۝

अगर मुह़म्मद (सल्ल०) जैसा कि मुश्रिकीने मक्का आरोप लगाते हैं हमारी तरफ़ झूठ बातें करते, तो हम उन्हें बड़ी सख़्त सज़ा देते और दिल की तरफ़ जाने वाली उन की रग को काट देते जिससे वह ख़त्म हो जाते और तुम में से कोई हमें ऐसा करने से न रोक सकता, लेकिन अल्लाह ने ऐसा नहीं किया, बल्कि उस ने अपने रसूल (सल्ल०) के मोअ़जिज़ात के ज़रिये ताईद (पुष्टि) की, क़ुर्आन नाज़िल कर के उन के सच्चाई की दलील पेश की, दुश्मनों के ख़िलाफ़ उन की मदद फ़रमाई।

यह सारी बातें दलील हैं कि नबी करीम (सल्ल०) ने अपनी तरफ़ से क़ुर्आन में एक कलिमा (शब्द) का भी घटाया-बढ़ाया नहीं, बल्कि क़ुर्आन का एक-एक शब्द कलामे इलाही है।

48-52 وَإِنَّهُ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ۝ وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنكُم مُّكَذِّبِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى
الْكَافِرِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

यहाँ क़ुर्आन करीम की अल्लाह तआ़ला ने यह सिफ़त (गुण) बयान की है कि अहले तक़्वा इस से दीन व दुनिया के हर मामले में रौशनी और रहनुमाई ह़ासिल करते हैं, मुसलमानों में बड़े-बड़े रब्बानी उ़ल्मा और आइम्मा पैदा होते हैं जो क़ुर्आन करीम की तअ़लीमात की रौशनी में मोमिनों की दीनी रहनुमाई करते हैं।

आयत नं० (49) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि लोगों! हमें पूरी ख़बर है कि तुम में से बाज़ लोग दुनियावी फ़ायदे के लिए और नफ़्स की पैरवी में इस कुर्आन को झुठलाते हैं, तो हम उन्हें ऐसे ही नहीं छोड़ देंगे बल्कि कुर्आन करीम से इस मुँह मोड़ने का उन्हें ज़रूर बदला देंगे और आयत नं० (50) में कहा गया है कि क़ियामत के दिन जब काफिर देखेंगे कि कुर्आन करीम पर ईमान लाने वाले नवाज़े जा रहे हैं और उन्हें जन्नत की तरफ़ ले जाया जा रहा है, तो उन का अफ़्सोस इन्तेहाई शदीद होगा।

आयत नं० (51) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि कुर्आन करीम अल्लाह की बरहक़ किताब है, इस में ज़र्रह बराबर भी शक की गुन्जाइश नहीं है।

इसलिए ऐ मेरे नबी! आप अपने अ़ज़ीम रब की पाकी बयान करने के लिए سُبۡحَانَ رَبِّيَ الۡعَظِيۡمِ पढ़ते रहा कीजिए।

(भाग–70)

सूर–ए–मआ़रिज

(सूरः नं. 70)

सूरः मआ़रिज का संक्षिप्त परिचय

नाम– आयत नं० (3) مِّنَ اللّٰهِ ذِی الْمَعَارِجِ से इस का नाम लिया गया है। इसे सूरः سَاَلَ سَآئِلٌ भी कहा जाता है।

नाज़िल होने का ज़माना– 'कुर्तुबी' ने लिखा है कि यह सूरः मक्की है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा और इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से यही मरवी है।

आयत नं० 1 से 35 तक

سَاَلَ سَآئِلٌ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ۝1 لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ۝2 مِّنَ اللّٰهِ ذِی الْمَعَارِجِ ۝3 تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِیْ يَوْمٍ
كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۝4 فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ۝5 اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۝6 وَّ نَرٰىهُ قَرِيْبًا ۝7 يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ
كَالْمُهْلِ ۝8 وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝9 وَلَا يَسْئَلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۝10 يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِیْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۭ بِبَنِيْهِ ۝11
وَصَاحِبَتِهٖ وَ اَخِيْهِ ۝12 وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِیْ تُئْوِيْهِ ۝13 وَمَنْ فِی الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۝14 كَلَّا ؕ اِنَّهَا
لَظٰى ۝15 نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ۝16 تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ۝17 وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ۝18 اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ۝19 اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ۝20
وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ۝21 اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ۝22 الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ۝23 وَالَّذِيْنَ فِیْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ۝24 لِّلسَّآئِلِ
وَالْمَحْرُوْمِ ۝25 وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝26 وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۝27 اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ۝28
وَّالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝29 اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝30 فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ
ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝31 وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۝32 وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ۝33 وَالَّذِيْنَ هُمْ
عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝34 اُولٰٓئِكَ فِیْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ۝35

अनुवाद–

(1) सवाल किया, एक सवाल करने वाले ने ने अ़ज़ाब के विषय में, जो होने वाला है; (2) काफ़िरों पर, (जिसे) कोई उसको टालने वाला नहीं; (3) यह (अज़ाब) अल्लाह की ओर से होगा, जो बुलन्दियों वाला है; (4) फ़रिश्ते और रुहें 'उसकी' ओर चढ़ कर जाती हैं, यह अ़ज़ाब उस दिन होगा, जिसकी मुद्दत (अवधि) पचास हज़ार साल की होगी। (5) तो आप ऐसा सब्र कीजिए जो 'सब्र जमील' हो (उत्तम धैर्य)। (6) वह उन लोगों की नज़र में दूर हैं, (7) और 'हमारी' नज़र में क़रीब, (8) जिस दिन आसमान ऐसा हो जाएगा जैसे पिघला हुआ ताँबा, (9) और पहाड़ रंगीन ऊन की तरह होंगे, (10) और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा, (11) (हालांकि) एक-दूसरे को सामने देख रहे होंगे, मुजरिम चाहेगा कि उस दिन के अ़ज़ाब से छुटकारा पाने के लिए फ़िदिया (मुक्ति प्रतिदान) में अपने बेटों को दे दे, (12) और अपनी पत्नी, और अपने भाई को; (13) और अपने ख़ानदान को, जो उसे पनाह देता था, (14) और धरती पर जितने आदमी हैं सब को दे दे, और अपने को बचा ले; (15) हरगिज़ नहीं!! वह भड़कती हुई आग होगी; (16) खाल को उधेड़

देने वाली है, (17) वह अपनी ओर बुलाएगी हर उस व्यक्ति को जिसने (हक़ से) पीठ फेरी और मुँह मोड़ा। (18) और (माल) जमा किया, फिर उसको सैंत कर रखा, (19) बेशक इन्सान बेसब्रा पैदा किया गया है, (20) जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है तो घबरा उठता है, (21) और जब उसे अच्छी ह़ालत मिल जाती है, तो कंजूसी करने लगता है; (22) सिवाय नमाज़ियों के, (23) जो नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं, (24) और जिनके मालों में एक निर्धारित ह़क़ है, (25) सवाल करने वालों और महरूमों का; (26) और जो बदला पाने के दिन को सच मानते हैं, (27) और जो अपने रब के अ़ज़ाब से डरते हैं, (28) बेशक उनके 'रब' का अ़ज़ाब है ही ऐसा, कि उससे बेख़ौफ़ न रहा जाए; (29) और जो अपनी शर्मगाहों (गुप्तांगों) की रक्षा करने वाले हैं। (30) सिवाय अपनी पत्नियों या लौंडियों के, उन्हें कुछ मलामत नहीं (31) तो जो लोग इनके सिवा कुछ और चाहते हों, वे सीमा से बढ़ जाने वाले हैं, (32) और जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद (प्रतिज्ञा) की रिआ़यत करने वाले हैं; (33) और जो अपनी गवाहियों को अदा करते हैं, (34) और जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं, (35) यही लोग जन्नतों (बाग़ों) में इ़ज़्ज़त के साथ रहेंगे,

आयत नं० 1 से 35 तक की व्याख्या

1-3 سَاَلَ سَآىِٕلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍۙ لِّلْكٰفِرِیْنَ لَیْسَ لَهٗ دَافِعٌۙ مِّنَ اللّٰهِ ذِی الْمَعَارِجِؕ

नसई और ह़ाकिम आदि ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत किया है कि इस आयते करीमा में سَآىِٕلٌ यानी पूछने वाले से मुराद 'नज़र बिन ह़ारिस' है, जिस ने अल्लाह तआ़ला के काफ़िरों से वाद-ए-अ़ज़ाब का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा था कि ऐ अल्लाह! अगर तेरी ओर से यही बात ह़क़ है तो हम पर आसमान से पत्थरों की बारिश कर दे या कोई दर्दनाक अ़ज़ाब हम पर नाज़िल कर दे।

'नज़र बिन ह़ारिस' के इस क़ौल को अल्लाह तआ़ला ने सूरः अन्फ़ाल आयत नं० (32) में बयान किया हैः-

اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَیْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِیْمٍ

तो अल्लाह तआ़ला ने इस सूरः की आयात नं० (1/2) में इस बात का जवाब दिया है कि एक पूछने वाले ने उस अ़ज़ाब के बारे में पूछा है जिस का वाक़िआ होना यक़ीनी है और वह अ़ज़ाब काफ़िरों के लिए उन के कुफ़्र की वजह से है और उस का फ़ैसला अल्लाह की ओर से हो चुका है, अब इसे कोई टाल नहीं सकता है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः ह़ज्ज आयत नं० (48) में फ़रमाया हैः-

وَیَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ یُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ

"और मुश्रिकीने मक्का आप से अ़ज़ाब लाने की जल्दी करते हैं और अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ हरगिज़ नहीं करेगा"। चुनाँचे सह़ीह़ रिवायत से साबित है कि 'नज़र बिन ह़ारिस' मैदाने बद्र में बुरी तरह़ मारा गया।

"ذي المعارج" यह अल्लाह की सिफ़त है यानी यह अ़ज़ाब उस अल्लाह की ओर से है जो **'मआ़रिज'** वाला है। मुफ़स्सिरीन ने इस कलिमा के तीन अर्थ बयान किये हैंः एक रिवायत में इब्ने अ़ब्बास

रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से इस का अर्थ "ذي السماوات" नक़्ल किया है यानी आसमानों वाला, इसलिए कि फ़रिश्ते उन आसमानों की तरफ़ चढ़ते हैं। दूसरी रिवायत क़तादह से है कि इस का मतलब यह "ذی الفواضل والنعم" है यानी वह अल्लाह जो नेअ़मतों और एहसानात वाला है और तीसरी बात यह है कि "معارج" से मुराद जन्नत के वह दर्जे हैं जो अल्लाह की तरफ़ से उस के नेक लोगों को मिलेंगे।

4 تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۝

इस आयते करीमा में "روح" से मुराद जिब्रईल (अ़लै०) हैं जो फरिश्तों में शामिल हैं, लेकिन अल्लाह के नज़्दीक उन के खुसूसी मक़ाम की वजह से उन के नाम को स्पष्ट किया गया है।

'इब्ने जरीर' ने इस आयत की तफ़्सीर यह बयान की है कि फ़रिश्ते और जिब्रईल अल्लाह तआ़ला की ओर जाते हैं वह इस तरह कि एक दिन में सातवें ज़मीन की आख़िरी तह से सातवें आसमान के ऊपर तक उन के चढ़ने की तेज़ रफ़्तारी दूसरी मख़्लूक़ात के पचास हज़ार साल की रफ़्तार के बराबर है।

आयत की दूसरी तफ़्सीर यह बयान की है कि फ़रिश्ते और जिब्रईल अल्लाह तआ़ला की ओर उस दिन चढ़ेंगे जिस दिन अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ात के दर्मियान फ़ैसला करेगा और वह दिन पचास हज़ार साल के बराबर होगा।

तीसरी तफ़्सीर यह बयान की है कि आयत में दिन से मुराद 'क़ियामत का दिन' है यानी वह दिन काफ़िरों के लिए 'पचास हज़ार साल' के बराबर होगा, लेकिन अल्लाह तआ़ला उसे मोमिनों के लिए आसान बना देगा और 'मुजाहिद' का क़ौल है कि आयत में दुनिया की उम्र पचास हज़ार साल बताई गई है, लेकिन मालूम नहीं कि कितनी मुद्दत गुज़र चुकी है और कितनी बाक़ी है।

5-8 فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ۝ اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۝ وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ۝ يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۝

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को नसीहत की है कि दअ़वत की राह में मुश्रिकीन की ओर से आप को जो तक्लीफ़ पहुँचती है उस पर सब्र से काम लीजिए, लोगों के सामने परेशानी और नाराज़गी का इज़्हार न कीजिए और अल्लाह के सिवा किसी के सामने इन तक्लीफ़ों पर शिकवा न कीजिए।

मुश्रिकीन चूंकि आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते इसलिए मरने के बाद उठाए जाने और क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब को अपनी बद्‌बख़्ती की वजह से बहुत दूर समझते हैं, लेकिन हमारे नज़्दीक तो उस का दिन बहुत ही क़रीब है इसलिए कि उस का आना यक़ीनी है और हर आने वाली चीज़ क़रीब ही होती है। हम अपनी रह़मत और ह़िल्म (संयमी होने) की वजह से उन पर अ़ज़ाब लाने में जल्दी नहीं कर रहे हैं।

9-10 وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝ وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۝

उस दिन की हौलनाकियों को बयान करते हुए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उस दिन आसमान टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा और पिघले हुए तांबे की तरह बह पड़ेगा और पहाड़ रंगे हुए ऊन की तरह

बिलकुल हल्का होकर हर तरफ़ उड़ने लगेगा और हर चीज़ फ़ना के घाट उतार दी जाएगी। उस के बाद अल्लाह तआ़ला तमाम जिन्नों और इन्सानों को दोबारह पैदा करेगा और सब नंगे पांव, नंगे बदन मैदाने मह़शर में इकट्ठा किये जाएँगे। जब इन चीज़ों का ऐसा ह़ाल होगा, तो उस दिन कमज़ोर इन्सान का क्या ह़ाल होगा जिस ने गुनाहों के ज़रिये अपने कंधों को बोझल बना रखा होगा, यक़ीनन उस का दिल अपनी जगह छोड़ देगा और अपने निजात की फ़िक्र में ऐसा परेशान होगा कि अपनी ज़ात के सिवा सब को भूल जाएगा। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः अ़बस आयत नं० (37) में फ़रमाया हैः-

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُّغْنِيْهِ उन में से हर एक को उस दिन फ़िक्र होगी जो उस के लिए काफ़ी होगी।

इसी बात को अल्लाह तआ़ला ने यहाँ यूँ फ़रमाया है कि “कोई रिश्तेदार और दोस्त अपने किसी रिश्तेदार और दोस्त को नहीं पूछेगा”।

11-14 يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ۭ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۢ بِبَنِيْهِ ۝ وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ۝
وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـــْٔوِيْهِ ۝ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۝

उस दिन एक दूसरे को न पूछना इसलिए नहीं होगा कि उन के दर्मियान कोई ह़िजाब नहीं होगा, बल्कि दूसरों के बारे में सोचने के लिए किसी के दिल में उस दिन गुन्जाइश ही नहीं होगी। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि “लोगों को उन के क़रीबी लोग याद दिलाए जाएँगे और उन से उन की पहचान कराई जाएगी” लेकिन हर एक दूसरे से भागेगा।

उस दिन काफ़िर तमन्ना करेगा कि काश! कोई ऐसी सूरत निकल आती कि वह अपनी औलाद, बीवी, भाई, सारा ख़ानदान और सारी दुनिया की चीज़े देकर अपनी निजात करा लेता यानी वह ऐसी घड़ी होगी कि जिन से वह दुनिया में बेइन्तिहा मुह़ब्बत करता था, उन की भी कुर्बानी देकर सिर्फ़ जान छुड़ा लेना चाहेगा।

15-19 كَلَّا ۭ اِنَّهَا لَظٰى ۝ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ۝ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ۝ وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ۝
اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ۝

लेकिन उस दिन न कोई रिश्तेदारी काम देगी और न ही कोई फ़िद्या (माल) कुबूल किया जाएगा। हर आदमी के पास सिर्फ़ उस का अच्छा या बुरा अ़मल होगा और उस के नतीजे का उसे सामना होगा और वह आग होगी जिस का मुजरिमों से वादा किया गया था, उस के सख़्त अंगारे होंगे जो सर और हर अंग के चमड़े को उधेड़ कर अलग कर देंगे, जिस के अलग करने से आदमी मरता नहीं लेकिन तक्लीफ़ व मुसीबत में होता है।

उस दिन जहन्नम अपनी तरफ़ हर उस काफ़िर व सरकश को पुकारेगी जिस ने दुनिया में अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म से मुँह मोड़ा होगा और उसे पीठ पीछे डाल दिया था और माल इकट्ठा कर के तह-ब-तह रखता रहा, न उस की ज़कात अदा की और न उस में से सद्क़ः व ख़ैरात किया और जिसे जहन्नम पुकारेगी उसे धक्के देकर उस में पहुँचा दिया जाएगा।

जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः तूर आयत नं० (13) में फ़रमाया हैः-

يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا "जिस दिन वह धक्के देकर जहन्नम के आग की तरफ़ लाए जाएँगे"।

20-21 اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ۙ وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ۙ

इन्सान फित्री (Naturally) तौर पर ऐसा पैदा किया गया है कि जब उसे कोई भारी मुसीबत पहुँचती है तो सब्र नहीं कर पाता, रोने पीटने लगता है, बेचैनी का इज़्हार करने लगता है और जब अल्लाह की ओर से माल व दौलत से नवाज़ा जाता है तो निचले दर्जे का बख़ील (कन्जूस) बन जाता है, अपने ऊपर अल्लाह के एह़सानात को भूल जाता है, अपने और ग़ैरों पर एक पैसा ख़र्च करने में उस की जान निकलने लगती है।

22-35 اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ۙ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ۙ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۙ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۙ وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۚ اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ۙ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۙ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۚ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۚ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۚ اُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ۚ

इस बीमारी का अल्लाह तआ़ला ने जो इन्सान का ख़ालिक़ है एक ही इलाज बताया है कि बन्दा इस दुनिया में अल्लाह का होकर रहे, उस ने जो फ़रायज़ बताए हैं उन्हें पाबन्दी से अदा करे और जिन बुरे कामों से मना किया है उन से बचे। ऐसा करने से अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से उस के अन्दर ऐसी रुह़ानी कुव्वत पैदा कर देता है कि जब उस पर कोई मुसीबत आती है तो परेशान नहीं होता, बल्कि ईमान व यक़ीन के साथ उसे बर्दाश्त करता है कि रब्बुल् आ़लमीन की तक़्दीर में ऐसा होना लिखा था, इसलिए हिम्मत के साथ सब्र और अल्लाह से दुआ़ करता है।

जब अल्लाह तआ़ला उसे दौलत से नवाज़ता है तो उस का शुक्र अदा करता है, किब्र व ग़ुरूर में मुब्तिला नहीं होता, आपे से बाहर नहीं हो जाता और उस माल में अल्लाह और बन्दों का जो ह़क़ होता है उसे निहायत खुश दिली से अदा करता है, बल्कि उस की जो माली ह़ैसियत होती है उस एतिबार से ग़रीबों, मोह़ताजो, बेकसों, यतीमों और बेवाओं पर हमेशा ख़र्च करता रहता है।

आयात नं० (22) से (25) तक अल्लाह तआ़ला ने बयान फ़रमाया है कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि दोनों बीमारियों से अल्लाह तआ़ला उन को शिफ़ा देगा।

(1) जो अपनी नमाज़ें पाबन्दी के साथ और उन के अरकान व शरायत और सुनन की रिआ़यत करते हुए अदा करते हैं।

(2) उन के माल में अल्लाह ने माँगने वालों और मह़रूमों का जो ह़क़ मुक़र्रर किया है, उसे खुशदिली के साथ अदा करते हैं।

(3) मरने के बाद उठाए जाने, क़ियामत के दिन और उस दिन की जज़ा व सज़ा पर ईमान रखते हैं।

(4) जब वह शैतान के नरग़े में आकर कोई वाजिब छोड़ देते हैं या कोई ह़राम काम कर बैठते हैं तो अल्लाह के अ़ज़ाब का तसव्वुर कर के उन के जिस्मों पर कपकपी तारी हो जाती है, इसलिए कि वह जानते हैं कि अल्लाह का अ़ज़ाब किसी को भी अपनी गिरफ़्त में ले सकता है। उस से बेख़ौफ़ होकर काफ़िर व मुनाफ़िक़ ही ज़िन्दा रहता है, मोमिन अपने रब के ख़ौफ़ से हर वक़्त कांपता रहता है।

(5) वह लोग अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करते हैं यानी ज़िना और लवातत (Homosex) से बचते हैं और शौहर व बीवी और अपनी लौंडी के सिवा किसी के सामने अपनी शर्मगाह नहीं खोलते अलबत्ता अगर वह अपनी बीवियों से जिमाअ़ (सम्भोग) करते हैं या उन लौंडियों से जिन्हें इस्लामी जिहाद या शरई तौर पर ख़रीद कर ह़ासिल किया था, तो वह क़ाबिले मलामत नहीं है। अगर कोई शख़्स इन दोनों तरीक़ों के सिवा किसी और तरीक़े से औ़रत को ह़ासिल करता है और उस से जिमाअ़ (सम्भोग) करता है तो वह अल्लाह के मुक़र्रर की हुई ह़द से आगे बढ़ने वाला क़रार दिया जाएगा।

(6) और वह लोग अमानतों और अ़हद की ह़िफ़ाज़त करते हैं और सब से अहम अमानत और सब से पुख़्ता मीसाक़ बन्दे का अपने रब से यह अ़हद व मीसाक़ है कि वह जब तक ज़िन्दा रहेगा उस की बन्दगी करता रहेगा और उस के रसूल की बात को सब की बात से ऊपर रखेगा।

(7) और वह लोग अपने पास मौजूद शहादतों को नहीं छुपाते, बल्कि जब उन को ज़रूरत पड़ती है तो अधिकारियों के सामने उन्हें बयान कर देते हैं।

(8) और वह लोग अपनी पाँचों नमाज़ें एहतिमाम के साथ खुशूअ़ व खुज़ूअ़ और रुकूअ़, सज्दः और क़ियाम में एतिदाल (सन्तुलन) का लिह़ाज़ करते हुए उन के मुक़र्रर वक़्तों में अदा करते हैं।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि आयत में नमाज़ों के एहतिमाम का ज़िक्र दो बार आना, नमाज़ की फ़ज़ीलत और दूसरे नेक आमाल के मुक़ाबिले में उस की अहमियत की दलील है।

अल्लाह के जो मोमिन बन्दे इन गुणों वाले होंगे, अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से आयत नं० (19) में जिन बीमारियों का ज़िक्र हुआ उस से वह मह़फ़ूज़ रहेंगे और जब दुनिया से रुख़सत होकर अपने रब के पास पहुँचेंगे तो अल्लाह उन्हें इ़ज़्ज़त व इक्राम के साथ जन्नतों में जगह देगा।

आयत नं० 36 से 44 तक

فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ۝ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ۝ اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ۝
كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ۝ فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ۝ عَلٰۤى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ
بِمَسْبُوْقِيْنَ ۝ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ۝ يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى
نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ۝ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝

अनुवाद-

(36) तो क्या हो गया है उन काफ़िरों को कि आप की ओर दौड़े चले आ रहे हैं; (37) दाएँ और बाएँ से, गिरोह के गिरोह हो कर? (38) क्या उनमें से हर व्यक्ति यह उम्मीद रखता है कि वह नेअ़मत के बाग़ में दाख़िल कर दिया जाएगा? (39) हरगिज़ नहीं!! 'हमने' उन्हें उस चीज़ से पैदा किया, जिसे वे जानते हैं। (40) तो कुछ नहीं, मैं क़सम खाता हूँ पूरबों और पश्चिमों के 'रब' की, कि बेशक 'हम' इस पर क़ुदरत (सामर्थ्यवान) रखने वाले हैं; (41) कि उनकी जगह उनसे बेहतर लोग ले आएँ और हम पीछे रह जाने वाले नहीं। (42) तो आप उनको उनके व्यर्थ बातों में पड़े रहने दीजिए, कि यह उसी में खेलते रहें, यहाँ तक कि यह उस दिन से मुलाक़ात कर लें जिसका इनसे वादा किया जा रहा है; (43) उस दिन यह अपनी क़ब्रों से तेज़ी के साथ निकलेंगे, जैसे (शिकारी) शिकार के जाल की ओर दौड़ते हों; (44) उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी, उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी, 'यही' वह दिन होगा जिसका उनसे वादा किया जाता था।

आयत नं० 36 से 44 तक की व्याख्या

36-37 فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ۝ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) के ज़माने में पाये जाने वाले कुफ़्फ़ार व मुशिरकीन हर रोज़ आप को और आप के ज़रिये होने वाले मोअ़जिज़ात को देखते थे और उन के सामने क़ुर्आने करीम की तिलावत होती थी, लेकिन उन तमाम चीज़ों का उन पर कोई असर नहीं होता था, वह गिरोहों और जमाअ़तों की शक्ल में आप की दअ़वत से राहे फ़रार अख़्तियार करते थे। अल्लाह तआ़ला ने उन काफ़िरों की इसी संगदिली और बद्‌बख़्ती पर इन दोनों आयतों में हैरत का इज़्हार किया है।

जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः अल् मुदस्सिर आयात नं० (49/50/51) में फ़रमाया हैः-

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۝ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۝ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۝ "उन्हें क्या हो गया है कि नसीहत से मुँह मोड़ रहे हैं यानी वह बिदके हुए गधे हैं, जो शेर से भागे हों"।

'औफ़ी' ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से इन दोनों आयतों का मतलब यह बयान किया है कि इन काफ़िरों को क्या हो गया है कि यह आप की तरफ़ देखते हुए आप के दाएँ और बाएँ से आप

का मज़ाक़ उड़ाते हुए भागते हैं।

'क़तादह' ने उन की तफ़्सीर यह बयान की है कि अहले कुफ़्र जानबूझकर जमाअ़तों (गिरोहों) की शक्ल में नबी करीम (सल्ल०) के दाएँ और बाएँ से निकल कर चले जाते हैं और अल्लाह की किताब और उस के नबी की सुन्नत को सुनना नहीं चाहते।

38-39 اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ۝ كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ۝

मुश्रिकीने मक्का मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहते थे कि अगर यह लोग जन्नत में जाएँगे तो हम ज़रूर जन्नत में जाएँगे। इसी को रद्द करते हुए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, क्या इन में से हर शख़्स लालच करता है कि वह नेअ़मतों वाली जन्नत में जाएँगे? ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता, इसलिए कि उन्होंने अपनी रुहों को शिर्क व गुनाहों के ज़रिये पलीद बना रखा है।

दूसरी बात यह है कि क्या वह अपनी पैदाइश की ह़क़ीक़त को भूल गए हैं, वह तो एक ह़क़ीर चीज़ (वीर्य) से पैदा किये गये हैं, फिर यह बड़ापन कैसा, यह तो किसी चीज़ की क़ुद्रत नहीं रखते हैं, फिर यह कैसे दावा करते हैं कि यह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होंगे।

40-41 فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَ الْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ۝ عَلٰۤى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۝

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' ने इस आयत की तफ़्सीर यूँ बयान की है उस रब की क़सम जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, मश्रिक़ व मग़्रिब को बनाया, सूरज व चाँद को इस तरह़ बनाया है कि वह रोज़ाना एक पूरब से निकलता हैं और एक पश्चिम में डूबता है।

(यानी हर साल तीन सौ साठ बार पूरब से निकलता हैं और तीन सौ साठ बार पश्चिम में डूबता है) बात वैसी नहीं है जैसी तुम गुमान करते हो कि मरने के बाद उठाया जाना, क़ियामत ह़िसाब और जज़ा व सज़ा नहीं है, बल्कि यह तमाम बातें सच और यक़ीनी हैं और इस में ह़ैरत की कौन सी बात है, वह तो अल्लाह की अ़ज़ीम क़ुद्रत क़ियामत से बड़ी चीज़ जो रोज़ कर रहा हैं यानी आसमानों और ज़मीन की पैदाईश और उन में पाई जाने वाली तमाम मख़्लूक़ात को एक ख़ास निज़ाम का पाबन्द बनाया।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि पूरब और पश्चिम के रब की क़सम! हम यक़ीनन इस पर क़ादिर हैं कि क़ियामत के दिन इन्सानों को उन के मौजूदा जिस्म से अच्छा जिस्म दे कर पैदा करें और हम ऐसा करने से बेबस नहीं हैं।

जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः अल् क़ियामः आयात नं० (3/4) में फ़रमाया हैः-

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ۝ بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰۤى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ۝

"क्या इन्सान यह ख़याल करता है कि हम उस की हड्डियाँ जमा नहीं करेंगे। हाँ, ज़रूर करेंगे हम तो क़ुद्रत रखते हैं कि हम उस की पोर-पोर तक दुरुस्त कर दें।

42 فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَ يَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ۝

इससे साबित हो गया कि क़ियामत आएगी, लोग दोबारह ज़िन्दा किये जाएँगे और मुश्रिकीने मक्का अल्लाह की किताब और उस के रसूल की दअ़वत को ठुकरा कर झूठी क़ियामत पर इस्रार करते हैं, तो ऐ मेरे नबी! आप इन्हें इन के ह़ाल पर छोड़ दीजिए दुनिया में फ़ासिद अ़क़ायद और गलत बातों में लगे रहें, खाएँ पियें और मज़े उड़ाएँ और शिर्क व गुनाह का काम करते रहें यहाँ तक कि क़ियामत का वह दिन आ जाए जिस दिन के अ़ज़ाब का उन से वादा किया गया है।

43-44 يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ۝ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِیْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝

उस दिन उन का ह़ाल यह होगा कि वह अपनी क़ब्रों से निकल कर पुकारने वाले की आवाज़ की तरफ़ इस तरह तेज़ी के साथ दौड़ेंगे कि जैसा कोई रास्ते से भट्का हुआ अचानक रास्ते को पा कर उस की तरफ़ तेज़ी के साथ दौड़ता है। उन की निगाहें ज़िल्लत व रुस्वाई से झुकी होंगी और उन का पूरा वजूद ज़िल्लत के बोझ तले दबा होगा, आँखें झुकी होंगी, जिस्म व जान की हर ह़रकत बन्द होगी, ज़बान गुंग होगी और उन से कहा जाएगा कि यही वह दिन है जिस का उन से दुनिया में वादा किया जाता था। वबिल्लाह तौफ़ीक़।

(भाग–71)

सूर–ए–नूह़

(सूरः नं. 71)

सूरः नूह़ का संक्षिप्त परिचय

नाम– पहली आयत में ही ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) का नाम आया है। इस सूरः में हज़रत नूह़ (अ़लै०) की दअ़वत का तफ़्सीली ज़िक्र है, इसीलिए इस का नाम सूरः नूह़ रखा गया है।

नाज़िल होने का ज़माना–

यह सूरः सब के नज़्दीक मक्की है। इब्ने मरदूविया आदि ने अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا मक्का में नाज़िल हुई थी। इस सूरः में सिर्फ़ नूह़ (अ़लै०) का वाक़िआ़ बयान किया गया है, इसलिए कि वह अकेले नबी थे जो साढ़े नौ साल तक अपनी क़ौम को तौह़ीद की दअ़वत देते रहे और उन्हें शिर्क से डराते रहे।

उन की मुद्दते नुबूव्वत का ज़िक्र सूरः अ़न्कबूत आयत नं० (14) में गुज़र चुका है। 'इब्ने अबी शैबा' 'इब्ने अबी ह़ातिम' ह़ाकिम और इब्ने मरदूविया आदि ने 'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत की है कि अल्लाह तआ़ला ने जब हज़रत नूह़ (अ़लै०) को रसूल बना कर भेजा तो उस वक़्त उन की उ़म्र चालीस साल की थी। उस के बाद वह अपनी क़ौम को साढ़े नौ सौ साल तक अल्लाह की तरफ़ बुलाते रहे और तूफ़ान के बाद साठ साल ज़िन्दा रहे, यहाँ तक कि लोगों की तअ़दाद बढ़ गई और चारों तरफ़ फैल गए ।

आयत नं० 1 से 28 तक

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالَ يَٰقَوْمِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ أَنِ
اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُونِ ۝ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ لَوْ كُنتُمْ
تَعْلَمُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ۝ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ۝ وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا
أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝ ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝ ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ
لَهُمْ إِسْرَارًا ۝ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا ۝ وَيُمْدِدْكُم بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَل
لَّكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَل لَّكُمْ أَنْهَارًا ۝ مَّا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۝ وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝ أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ
طِبَاقًا ۝ وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝ وَاللَّهُ أَنبَتَكُم مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ۝ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ
إِخْرَاجًا ۝ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ۝ لِّتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۝ قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ
يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ۝ وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا ۝ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا ۙ وَلَا
يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ۝ وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ۝ مِّمَّا خَطِيئَاتِهِمْ أُغْرِقُوا فَأُدْخِلُوا
نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوا لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَنصَارًا ۝ وَقَالَ نُوحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ۝ إِنَّكَ
إِن تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ۝ رَّبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَن دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ۝

अनुवाद-

(1) 'हमने' नूह को उनकी क़ौम की ओर भेजा, ''अपनी क़ौम को ख़बरदार कीजिए! इससे पहले कि
उन पर दुःख देने वाला अ़ज़ाब आ जाए।'' (2) उन्होंने कहा, ''ऐ क़ौम! मैं तुम्हें स्पष्ट ख़बर देने वाला हूँ,
(3) कि 'अल्लाह' की इबादत करो और 'उसी' से डरो और मेरी पैरवी करो।'' (4) 'वह' तुम्हारे गुनाहों
को माफ़ कर देगा और तुम को एक निश्चित समय तक मोहलत देगा, जब अल्लाह का निश्चित किया हुआ
समय आ जाएगा तो उसको टाला न जा सकेगा, काश तुम जान लेते, (5) (जब लोगों ने न माना तो नूह
ने) कहा, ''ऐ रब! मैंने अपनी क़ौम को रात और दिन बुलाया, (6) तो मेरे बुलावे ने उनका भागना और
ही ज़्यादा कर दिया; (7) और मैंने जब कभी उन्हें बुलाया, ताकि 'आप' उनको माफ़ कर दें, तो उन्होंने अपनी
उंगलियाँ अपने कानों में ठूंस लीं, और कपड़े ओढ़ लिए, और ज़िद पर अड़े रहे और बड़ा ही घमंड किया।''
(8) फिर मैंने उन्हें बुलन्द आवाज़ से बुलाया। (9) फिर मैंने उनको खुले तौर पर भी समझाया, और
चुपके-चुपके भी। (10) तो मैंने कहा, ''अपने रब से माफ़ी की दुआ़ करो, 'वह' बहुत माफ़ करने वाला है;
(11) वह तुम पर खूब बरसने वाली बारिश भेजेगा, (12) और मालों से और बेटों से तुम्हारी मदद फ़रमाएगा,
और तुम्हारे लिए बाग़ और तुम्हारे लिए नहरें बना देगा।'' (13) तुम्हें क्या हो गया है कि अल्लाह की बड़ाई
से डरते नहीं? (14) हालांकि तुम्हें 'उसने' विभिन्न दशाओं में पैदा किया है। (15) क्या तुम देखते नहीं!
कि किस तरह अल्लाह ने आसमान को तह दर तह बनाया, (16) और उनमें चांद को नूर और सूरज को

चिराग़ बनाया। (17) और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से खास तरीके से पैदा किया। (18) फिर 'वह' तुम्हें उसी में ले जाएगा और तुम्हें (उसी से) निकालेगा। (19) और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया, (20) ताकि तुम उसके खुले हुए रास्तों में चलो। (21) नूह़ ने कहा, ''ऐ मेरे रब! उन्होंने मेरी नाफ़रमानी की, और उनकी बात मानी जिनके माल और औलाद ने उनको नुक़सान ही (ज़्यादा) पहुँचाया है (22) और उन्होंने बहुत बड़ी चाल चली, (23) और कहने लगे, 'हरगिज़ न छोड़ो अपने मअ़बूदों (उपास्यों) को, और कभी न छोड़ना 'वद्द' (देव) को, और न 'सुवाअ़' (देव) को, और न 'यगूस,' (देव) को और न 'यअ़ूक़' (देव), और 'नस्र' (देव) को; (24) और उन्होंने बहुत लोगों को गुमराह किया है, और 'तू' इन ज़ालिमों की गुमराही को और बढ़ा दे।'' (25) वे अपने गुनाहों की वजह से ग़र्क कर (डुबा) दिये गये, फिर आग में दाख़िल कर दिये गये, तो अल्लाह के सिवा उन्होंने अपना कोई मददगार नहीं पाया। (26) और नूह़ ने कहा, ''ऐ मेरे रब! 'तू' धरती पर काफ़िरों (इन्कार करने वालों) में से किसी बसने वाले को न छोड़, (27) अगर 'तू' ने इनको छोड़ दिया तो वे 'तेरे' बन्दों को गुमराह करेंगे, और उनसे जो औलाद होगी वह भी दुराचार, काफ़िर ही होगी। (28) ऐ मेरे रब! मुझे माफ़ कर दे और मेरे मां-बाप को, और उनको जो मेरे घर में ईमान वाला बन कर दाख़िल हो, और ईमान वाले मर्दों, और ईमान वाली औ़रतों को भी; और ज़ालिम लोगों की हलाकत (विनाश) को और बढ़ा दे।''

आयत नं० 1 से 28 तक की व्याख्या

1-20

إِنَّآ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِۦٓ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالَ يَٰقَوْمِ إِنِّى
لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ أَنِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ وَٱتَّقُوهُ وَأَطِيعُونِ ۝ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰٓ أَجَلٍ
مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ ٱللَّهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّى دَعَوْتُ قَوْمِى لَيْلًا وَنَهَارًا ۝
فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِىٓ إِلَّا فِرَارًا ۝ وَإِنِّى كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوٓا۟ أَصَٰبِعَهُمْ فِىٓ ءَاذَانِهِمْ وَٱسْتَغْشَوْا۟
ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا۟ وَٱسْتَكْبَرُوا۟ ٱسْتِكْبَارًا ۝ ثُمَّ إِنِّى دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝ ثُمَّ إِنِّىٓ أَعْلَنتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ
لَهُمْ إِسْرَارًا ۝ فَقُلْتُ ٱسْتَغْفِرُوا۟ رَبَّكُمْ إِنَّهُۥ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُرْسِلِ ٱلسَّمَآءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا ۝ وَيُمْدِدْكُم
بِأَمْوَٰلٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَل لَّكُمْ جَنَّٰتٍ وَيَجْعَل لَّكُمْ أَنْهَٰرًا ۝ مَّا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۝ وَقَدْ خَلَقَكُمْ
أَطْوَارًا ۝ أَلَمْ تَرَوْا۟ كَيْفَ خَلَقَ ٱللَّهُ سَبْعَ سَمَٰوَٰتٍ طِبَاقًا ۝ وَجَعَلَ ٱلْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ ٱلشَّمْسَ سِرَاجًا ۝
وَٱللَّهُ أَنۢبَتَكُم مِّنَ ٱلْأَرْضِ نَبَاتًا ۝ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ۝ وَٱللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ
ٱلْأَرْضَ بِسَاطًا ۝ لِّتَسْلُكُوا۟ مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۝

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की दअ़वत

यहाँ से सूरः 'नूह़' शुरु हो रही है और भी कई सूरतों में ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की बेअ़सत का और उन के क़ौम की नाफ़रमानी और अन्जाम का ज़िक्र हो चुका है। ह़ज़रत आदम (अ़लै०) के लगभग एक

हज़ार साल के बाद ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की बेअ़सत हुई और वह अपनी क़ौम में लगभग साढ़े नौ सौ साल रहे। उन लोगों में मूर्ति पूजा फैल गई थी, मूर्ति बना लेते थे और उन के नाम भी लगभग रख लेते थे, जिसका इस सूरः के दूसरे रुकूअ़ में ज़िक्र है।

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने उन्हें तरह़-तरह़ से समझाया, तौह़ीद और अल्लाह के अ़िबादत की दअ़वत दी, लेकिन उन लोगों ने न माना और तरह़-तरह़ से कट हुज्जती करने लगे जिस का कुछ ज़िक्र सूरः अअ़राफ़ और सूरः हूद में गुज़र चुका है।

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने उन से फ़रमाया कि सिर्फ़ अल्लाह की अ़िबादत करो। मैं अल्लाह का रसूल हूँ, मेरी बात मानो मैं जिस तरह़ कहूँ उसी तरह़ ज़िन्दगी गुज़ारो। ईमान क़ुबूल कर लोगे तो तुम्हारे पिछले सब गुनाह माफ़ हो जाएँगे और अल्लाह तआ़ला ने जो तुम्हारे लिए एक वक़्त मुक़र्रर फ़रमा दिया है वह तुम्हें उस वक़्त तक पहुँचा देगा (यह वक़्त ईमान और फ़रमाँबरदारी की सूरत में है) और अगर तुम कुफ़्र और गुनाह पर जमे रहे तो वह वक़्त तुम्हारा सफ़ाया कर देगा, बिलाशुब्हा अल्लाह ने जो वक़्त मुक़र्रर किया है उस में देर नहीं की जाती, लिहाज़ा तुम उस वक़्त के आने से पहले ईमान क़ुबूल कर लो जो बह़ालत कुफ़्र तुम्हारे हलाक होने के लिए मुक़र्रर है। अल्लाह तआ़ला का मुक़र्रर वक़्त जब आता है तो देरी नहीं की जाती। क्या ही अच्छा होता कि तुम इसे जानते होते और ह़क़ को मान लेते।

ऊपर जिन बातों का ज़िक्र था वह ऐसी बातें थीं जिन के ज़रिये ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने अपनी क़ौम को समझाया था, लेकिन जब न मानी तो अल्लाह तआ़ला से उन्होंने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मैंने अपनी क़ौम को रात दिन दअ़वत दी, ईमान की तरफ़ बुलाया और इस के लिए कोई कोताही नहीं की, सुस्ती से काम नहीं लिया, लेकिन वह लोग उल्टी ही चाल चले, मैंने उन्हें जितनी दअ़वत दी वह उतना ही दूर भागे, मैंने कहा कि ईमान क़ुबूल करो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा देगा तो उन्होंने अपने कानों में उंगलियाँ दे लीं यानी बात सुनना भी गवारा न किया और इसी पर बस नहीं, बल्कि कपड़े ओढ़ कर लेट गए ताकि न मुझे देख सकें न मेरी बात सुन सकें, उन्हें कुफ़्र पर इस्रार है और उन में घमण्ड भी है। वह समझते हैं कि मेरी बात मानेंगे (शिर्क को छोड़कर तौह़ीद पर आ जाएँगे) तो उन की बड़ाई में फ़र्क़ आ जाएगा, क़ुबूले ह़क़ की राह में घमण्ड रुकावट बना हुआ है।

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने मज़ीद अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मैंने उन्हें ज़ोर से भी दअ़वत दी कि शायद ज़ोर से बात करने से मान जाएँ लेकिन वह न मानें, आहिस्ता तरीक़े पर भी उन्हें समझाया बुझाया, ह़क़ पर लाने की कोशिश की लेकिन उन्होंने ध्यान न दिया। उन से मैंने कहा कि देखो! ईमान क़ुबूल कर लो, अपने रब से मग़्फ़िरत चाहो वह बहुत बड़ा माफ़ करने वाला है, तुम्हारे गुनाह माफ़ फ़रमा देगा और ख़ूब ज़्यादा बारिश भी भेजेगा। यह जो तुम्हें क़ह़तसाल (सूखा) की तक्लीफ़ हो रही है दूर हो जाएगी, अल्लाह तआ़ला तुम्हारे मालों को भी बढ़ा देगा और बेटों में भी तरक़्क़ी होगी वह तुम्हें बाग़ भी देगा और नहरों में पानी भी हो जाएगा।

अल्लाह तआ़ला के इन्आ़मात तुम्हारे सामने हैं, उस की बनाई हुई चीज़ों को देख रहे हो और यह

भी जानते हो कि यह सब कुछ उसी ने पैदा फ़रमाया है। फिर क्या वजह है कि तुम अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत के क़ायल नहीं होते।

देखो! उस ने तुम्हें मुख़्तलिफ़ तरीक़े से पैदा फ़रमाया, तुम पहले नुत्फ़ा थे फिर जमे हुए ख़ून की सूरत बन गए फिर हड्डियाँ बन गईं और उन पर गोश्त चढ़ गया। यह सब अल्लाह तआ़ला की कारीगरी है उस ने तुम्हें पैदा फ़रमाकर एह़सान फ़रमाया, लेकिन तुम्हें क्या हो गया अ़क़्लों पर पत्थर पड़ गए कि अल्लाह तआ़ला की ज़ात पर ईमान नहीं लाते और उस के एक होने के क़ायल नहीं होते।

इन्सानों के अपने अन्दर जो दलायल तौह़ीद हैं उन के ज़िक्र के साथ ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने दूसरे दलायल की तरफ़ भी मुतवज्जेह किया और फ़रमाया, क्या तुम यह नहीं देखते कि अल्लाह तआ़ला ने नीचे ऊपर सात आसमान पैदा फ़रमाए और उन में चाँद को नूर बनाया और सूरज को चिराग़ बनाया। जिस तरह़ एक घर में एक चिराग़ के ज़रिये सारे घर की चीज़ों को देख लिया जाता है उसी तरह़ सूरज के ज़रिये अहले दुनिया सूरज की रौशनी में वह सब कुछ देख लेते हैं जो ज़मीन के ऊपर है।

फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें ज़मीन से एक ख़ास तरीक़े पर पैदा किया है जिसका ज़िक्र ह़ज़रत आदम (अ़लै०) की पैदाइश के सिलसिले में गुज़र चुका है, फिर वह तुम्हें इसी ज़मीन में वापस फ़रमा देगा यानी मौत के बाद इसी ज़मीन में चले जाओगे, फिर वह तुम्हें क़ियामत के दिन एक ख़ास तरीक़े पर क़ब्रों से निकालेगा, हड्डियाँ आपस में मिलकर फिर बन जाएँगी, फिर वह उन पर गोश्त पैदा फ़रमा देगा और क़ब्रों से तेज़ी के साथ निकल कर मैदाने ह़श्र की तरफ़ रवाना हो जाओगे।

इस में ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने अल्लाह तआ़ला की शान 'ख़ालिक़ियत' भी बयान फ़रमाई और मैदाने ह़श्र की ह़ाज़िरी का भी एह़सास दिला दिया।

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि देखो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिस्तर यानी फ़र्श बना दिया, जिस तरह़ बिस्तर बिछा हुआ होता है उसी तरह़ ज़मीन तुम्हारे लिए बिछी हुई है इस ज़मीन पर चलते फिरते हो यहाँ से वहाँ आते जाते हो, अल्लाह तआ़ला ने जो रास्ते बना दिये हैं उन से फ़ायदा उठाते हो, अपनी ह़ाजात पूरी करते हो, ज़मीन को तुम्हारे क़ाबू में दे रखा है, इस से तरह़ तरह़-तरह़ के नफ़े ह़ासिल करते हो।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः मुल्क में फरमायाः-

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ (सूरः मुल्क आयत नं० 15)

(अल्लाह वही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को मुसख़्ख़र फ़रमाया, सो तुम उस के रास्तों में चलो और अल्लाह के रिज़्क़ में से खाओ।)

नोट- सूरज को जो चिराग़ बताया उस के बारे में साह़िबे रुहुल् मआ़नी फ़रमाते हैं कि मुम्किन है सिराज से इस लिए तश्बीह दी हो कि चिराग़ में खुद अपनी ज़ाती रौशनी होती है, किसी दूसरी चीज़ से छन कर नहीं आती। सूरज में अपनी रौशनी है जो किसी दूसरे सय्यारे से नहीं आई, जबकि चाँद की रौशनी सूरज

से छन कर आती है, लिहाज़ा चाँद को 'नूर' और सूरज को 'सिराज' फ़रमाया।

ज़मीन को जो यहाँ सूरः नूह़ में बिसात फ़रमाया और सूरः नबा में مِهٰدًا फ़रमाया और सूरः ग़ाशिया (आयत नं० 20) में وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ फ़रमाया। इस से ज़मीन का बराबर होना साबित नहीं होता, क्योंकि बड़े गोलार्ध पर बहुत सी चीज़ें रख दी जाएँ चाहे कितनी ही बड़ी हों तो यह मह़सूस नहीं होगा कि यह बड़े गोलार्ध पर रखी हैं।

जैसे एक गेंद पर एक चींटी बैठ जाए तो उस के जिस्म के एतिबार से गेंद एक सतह़ ही मालूम होगी और यह बात भी समझ लेना चाहिए कि ज़मीन का गोला होना या गोला न होना कोई शरई हुक्म नहीं है जिस का एतिक़ाद रखा जाए। ज़मीन अगर गोली हो तो किसी आयत से उस का इन्कार साबित नहीं है।

21-28

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ۝ وَمَكَرُوا
مَكْرًا كُبَّارًا ۝ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا ۙ وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ
وَنَسْرًا ۝ وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ۝ مِّمَّا خَطِيئَاتِهِمْ أُغْرِقُوا
فَأُدْخِلُوا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوا لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَنصَارًا ۝ وَقَالَ نُوحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى
الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ۝ إِنَّكَ إِن تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا
كَفَّارًا ۝ رَّبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَن دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَلَا تَزِدِ
الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ۝

क़ौम का कुफ़्र व शिर्क पर इस्रार

इन आयात में ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) का अपनी काफ़िर क़ौम की बर्बादी के लिए और अहले ईमान की मग़्फ़िरत के लिए दुआ़ करना और क़ौम की सरकशी और क़ौम की हलाकत का ज़िक्र है।

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने अल्लाह तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ किया कि मैंने इन लोगों को समझाया लेकिन इन लोगों ने मेरी बात नहीं मानी। अहले दुनिया की बात मानते हैं जिन के पास माल और औलाद हैं, इन की नज़रें उन्हीं पर जमी हुई हैं और वह लोग उन्हें जो कुछ समझाते और बताते हैं उसी को मानते हैं यह लोग ईमान पर आने नहीं देते, कुफ़्र पर ही जमे रहने की तल्क़ीन करते हैं।

इसलिए दुनियावी रईसों और चौधरियों का माल और औलाद इन की अ़वाम के लिए ख़सारा दर ख़सारा का सबब बन गया, न वह लोग माल औलाद वाले होते, न यह लोग उन्हें बड़ा मानते, न उन के कहने पर कुफ़्र पर जमते, इन के चौधरियों ने ह़क़ से बाज़ रखने के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएँ कीं और इन्हें ताकीद के साथ यह समझाया कि तुम अपने उन मअ़बूदों (उपास्यों) को जिन की अ़िबादत करते हो हरगिज़ मत छोड़ो, यह तो उन्होंने मुख़्तसर सबक़ पढ़ाया। फिर उन की एक-एक मूर्ति का नाम लेकर कहा कि तुम लोग हरगिज़ न 'वद्द' को छोड़ना, न 'सुवाअ़' को और न 'यऊक' को और न 'यऊक़'

को और न 'नस्र' को। इन रईसों और चौधरियों ने क़ौम के लोगों को बड़ी तअ़दाद में गुमराह कर दिया, अब उन पर ख़ैर के आने की ज़रा भी उम्मीद नहीं रही।

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में फिर अ़र्ज़ किया कि इन की गुमराही और ज़्यादा बढ़ा दीजिए। इन लोगों ने ह़क़ को क़ुबूल न किया, कुफ़्र पर और ख़ताओं पर जमे रहे। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) से फ़रमाया कि لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ अब तुम्हारी क़ौम में से कोई मुसलमान न होगा, जिन्हें ईमान लाना था वह ला चुके।

और यह थोड़े से लोग थे, जैसा कि सूरः हूद में फ़रमाया وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ **(सूरः हूद आयत नं० 40)** "और इन के साथ नहीं ईमान लाए मगर थोड़े से लोग"।

नाव बनाने का हुक्म-

अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया कि आप एक कश्ती (नाव) बना लें, जब कश्ती (नाव) तैयार हो जाए तो अपने घर वालों को और दूसरे अहले ईमान को इसमें सवार कर लेना। ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने ऐसा ही किया, कश्ती रवाना हो गई आसमान से पानी बरसा और ज़मीन से पानी उबला, ज़बरदस्त तूफ़ान आया, पूरी काफ़िर क़ौम हलाक हो गई जिन में हज़रत नूह़ (अ़लै०) की बीवी और एक बेटा भी था।

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) क़ौम की तरफ़ से बहुत ज़्यादा बद्‌दिल हो गए थे, दिल खट्टा हो गया था, किसी के भी हिदायत पर आने की उम्मीद न रही, इसीलिए अल्लाह तआ़ला की बारगाह में उन के लिए बद्‌दुआ़ कर दी थी कि ऐ रब! काफ़िरों में से किसी एक शख़्स को भी न छोड़िए, अगर यह ज़िन्दा रहे तो न इन से ईमान लाने की उम्मीद है और न इन की औलाद में मोमिन होने की उम्मीद है, इन की जो औलाद होगी वह भी काफ़िर और फ़ाजिर ही होगी। जब इन का यह ह़ाल है तो यह ज़मीन पर क्यों बोझ बनें, इन का हलाक होना ही ज़्यादा बेहतर है।

फिर ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने अपने लिए मग़्फ़िरत की दुआ़ की, उस में अपने साथ वालिदैन को और आ़म मोमिनीन और मोमिनात को भी शामिल कर लिया और आख़िर में काफ़िरों को मज़ीद बद्‌दुआ़ दे दी कि ऐ रब! ज़ालिमों की हलाकत और ज़्यादा बढ़ा दीजिए।

नोट- यह जो फ़रमाया مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا

(अपनी ख़ताओं की वजह से वह लोग डुबो दिये गये, फिर आग में दाख़िल कर दिये गये।) इस में चूंकि اُغْرِقُوْا और اُدْخِلُوْا दोनों हैं, इसलिए ह़ज़रात उ़लमा-ए-किराम ने इस आयत से अ़ज़ाबे क़ब्र को साबित किया है। अ़ज़ाबे क़ब्र में काफ़िर मुब्तिला होते हैं और बाज़ गुनाहगार अहले ईमान को भी तक्लीफ होती है। अह़ादीस शरीफ़ा में इस की तफ़्सीलात आई हैं।

अ़ज़ाबे क़ब्र के जो दलायल हैं उन में एक निशानी भी है। ज़ाहिर है कि दोज़ख़ का दाख़िला तो क़ियामत के दिन होगा। फ़रमाया कि वह लोग डुबो दिये जाने के बाद आग में दाख़िल कर दिये गए। इस से साबित हुआ कि बरज़ख़ में भी आग का अ़ज़ाब है उस बरज़ख़ की तक्लीफ़ को जो मौत के बाद क़ियामत क़ायम होने से पहले है, अ़ज़ाबे क़ब्र बताया जाता है।

(भाग–72)

सूर–ए–जिन्न

(सूरः नं. 72)

सूरः जिन्न का संक्षिप्त परिचय

नाम– पहली आयत में 'जिन्न' का शब्द आया है और सूरः में ईमान की तअ़रीफ़ और कुफ़्र की मज़म्मत और जिन्नों से सम्बन्धित बातों का ज़िक्र हैं, इसी लिए इस का नाम 'सूरः जिन्न' रख दिया गया है।

ज़माना-ए-नुज़ूल–

'कुर्तुबी' ने लिखा है कि यह सूरः तमाम मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों) के नज़्दीक मक्की है। 'इब्ने मरदूविया' और बैहक़ी ने 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत की है कि सूरः जिन्न मक्का में नाज़िल हुई थी। 'इब्ने मरदूविया' ने ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से भी यही रिवायत नक़्ल की है।

आयत नं० 1 से 19 तक

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ۝ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ ۖ وَلَن نُّشْرِكَ بِرَبِّنَا
أَحَدًا ۝ وَأَنَّهُ تَعَالَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ۝ وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۝ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن
تَقُولَ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝ وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا
كَمَا ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ۝ وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهُبًا ۝ وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ
لِلسَّمْعِ ۖ فَمَن يَسْتَمِعِ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شِهَابًا رَّصَدًا ۝ وَأَنَّا لَا نَدْرِي أَشَرٌّ أُرِيدَ بِمَن فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝
وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِنَّا دُونَ ذَٰلِكَ ۖ كُنَّا طَرَائِقَ قِدَدًا ۝ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن نُّعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَن نُّعْجِزَهُ هَرَبًا ۝
وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ آمَنَّا بِهِ ۖ فَمَن يُؤْمِن بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ۝ وَأَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ ۖ فَمَنْ
أَسْلَمَ فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝ وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝ وَأَن لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَاهُم مَّاءً غَدَقًا ۝
لِّنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَمَن يُعْرِضْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝ وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۝ وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ
عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝

अनुवाद-

(1) कह दीजिए, ''मेरे पास वह्य आयी है कि जिन्नात के एक गिरोह ने मेरी ओर बात (क़ुर्आन) सुनने के लिए ध्यान दिया, तो उन्होंने कहा कि 'हमने अ़जीब क़ुर्आन सुना है; (2) जो भलाई और सूझ-बूझ की राह दिखाता है, तो हम उस पर ईमान ले आए, और हम अपने रब के साथ हरगिज़ किसी को साझीदार न ठहराएंगे; (3) और बहुत बुलन्द है हमारे 'रब' की इज़्ज़त, वह न पत्नी रखता है और न औलाद; (4) और यह कि 'हममें' जो मूर्ख हैं, वह अल्लाह के विषय में झूठ गढ़ते हैं; (5) और हम यह समझते थे कि इन्सान और जिन्न अल्लाह के विषय में झूठ नहीं बोलते, (6) और यह कि कुछ मर्द इन्सानों में से ऐसे थे जो जिन्नात के मर्दों की पनाह लिया करते थे, (इससे) उनकी सरकशी और बढ़ गई थी; (7) और यह कि उनका भी यही गुमान था, जैसा कि तुमने गुमान किया था, कि अल्लाह दोबारा किसी को ज़िन्दा न करेगा; (8) और यह कि 'हमने' आसमान को टटोला, तो 'हमने' उसे इस ह़ाल में पाया कि वह सख़्त चौकीदारों और शहाबों (शोलों) से भरा हुआ है; (9) और यह कि 'हम' उसमें बैठने की जगहों पर बातें सुनने के लिए बैठा करते थे, तो जो सुनना चाहे, तो वह अपने लिए घात में लगा एक अंगारा (उल्क़ा) पाएगा; (10) और यह हम नहीं जानते कि उन के साथ जो धरती में हैं, बुराई का इरादा किया गया है, या उनके रब ने उनके लिए भलाई का इरादा किया है; (11) और यह कि हममें से कुछ नेक हैं और कुछ उसके अतिरिक्त, हम विभिन्न तरीक़ों पर थे; (12) और हम ने यह समझ लिया है कि हम न धरती में अल्लाह को हरा (पराजित कर) सकते हैं, और न (आसमान में कहीं) भाग कर उसको थका सकते हैं; (13) और जब हमने हिदायत को सुन लिया, तो हम उस पर ईमान ले आए, तो जो व्यक्ति अपने रब पर ईमान लाएगा, तो उसे न किसी कमी का डर होगा और न किसी ज़ुल्म का; (14) और यह कि 'हममे' से कुछ मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं और हममें से कुछ हक़ से हटे हुए, तो जिस ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया तो उसने भलाई की

राह ढूंढ़ ली; (15) और जो हक़ से हटे हुए हैं, वे जहन्नम का ईंधन होंगे।'' (16) और यह कि अगर ये लोग सीधी राह पर क़ायम हो जाते तो हम उन्हें पीने को बहुत सा पानी देते; (17) ताकि 'हम' इसमें उनका इम्तिहान लें, और जो व्यक्ति अपने रब के ज़िक्र से मुँह मोड़ेगा, तो 'वह' उसे चढ़ते हुए अ़ज़ाब में डाल देगा। (18) और यह कि मस्जिदें (सब सज्दे) अल्लाह ही के लिए हैं, तो तुम अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो। (19) और जब अल्लाह का बन्दा 'उसको' पुकारने के लिए खड़ा होता है, तो यह लोग उस पर जत्थे बन कर टूट पड़ते हैं।

आयत नं० 1 से 19 तक की व्याख्या

1-19

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ۝ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا
بِهِ ۖ وَلَن نُّشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ۝ وَأَنَّهُ تَعَالَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ۝ وَأَنَّهُ كَانَ
يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۝ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن تَقُولَ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝ وَأَنَّهُ كَانَ
رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ
اللَّهُ أَحَدًا ۝ وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهُبًا ۝ وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ
لِلسَّمْعِ ۖ فَمَن يَسْتَمِعِ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شِهَابًا رَّصَدًا ۝ وَأَنَّا لَا نَدْرِي أَشَرٌّ أُرِيدَ بِمَن فِي الْأَرْضِ أَمْ
أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝ وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِنَّا دُونَ ذَٰلِكَ ۖ كُنَّا طَرَائِقَ قِدَدًا ۝ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن
نُّعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَن نُّعْجِزَهُ هَرَبًا ۝ وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ آمَنَّا بِهِ ۖ فَمَن يُؤْمِن بِرَبِّهِ فَلَا
يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ۝ وَأَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ ۖ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝
وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝ وَأَن لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَاهُم مَّاءً غَدَقًا ۝ لِّنَفْتِنَهُمْ
فِيهِ ۚ وَمَن يُعْرِضْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝ وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۝
وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝

जिन्नात को ईमान की दअ़वत देना

यहाँ से सूरः जिन्न शुरु हो रही है। जिन्न पुरानी मख़्लूक़ है, जो हज़रत आदम की पैदाइश से पहले से दुनिया में मौजूद है। उन लोगों में भी मोमिन और काफ़िर नेक और बुरे सब क़िस्म के लोग हैं। अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इन्हें भी ईमान लाने का हुक्म था और है। जिस तरह़ आदम की औलाद में काफ़िर और मुश्रिक हैं, उसी तरह़ जिन्नात में भी मुश्रिक, काफ़िर और मोमिन भी होते हैं।

ह़ज़रत ख़ातिमुल् अम्बिया सय्यदना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बेअ़सत से पहले कुछ लोग काहिन (तांत्रिक, भविष्य की बातें बताने वाले) थे, यह लोग आने वाले वाक़िआ़त की ख़बरें बताया करते थे और यह ख़बरें शैतान उन के पास लाते थे। शैतानों का यह तरीक़ा था कि आसमान के क़रीब तक जाते और वहाँ जो ज़मीन में पेश आने वाले ह़ादसों का फ़रिश्तों में ज़िक्र होता था उसे सुन लेते थे। फिर

काहिनों (भविष्य की बात बताने वाले) के कान में आकर बता देते थे। काहिन इस बात को लोगों में फैला देते थे, यह बात चूंकि ऊपर से सुनी हुई थी इसलिए सही़ हो जाती थी, सुनने वाले उन काहिनों के मुरीद हो जाते थे और कहते थे कि देखो उस को आने वाले वाक़िआ़त का इ़ल्म न होता तो पहले कैसे बता देता?

इस तरह़ शैतानों और काहिनों ने मिलकर इन्सानों को बहकाने का सिल्सिला जारी कर रखा था। जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बेअ़सत हुई तो शैतानों को ऊपर पहुँचने से रोक दिया गया, इस के बाद उन में से कोई शख़्स ख़बरें सुनने के लिए ऊपर पहुँचता तो उस पर अंगारे फेंके जाते।

'सह़ीह़ बुख़ारी' में है कि जब यह सूरतेह़ाल पेश आई तो शैतान आपस में कहने लगे कि हमारे और आसमान की ख़बरों के दर्मियान आड़ लगा दी गई है और हम पर अंगारे फेंके जाने लगे हैं, इसलिए ज़मीन के पूरब और पश्चिम में सफ़र करो और देखो कि वह क्या नई चीज़ पैदा हुई है जिस की वजह से हमें आसमानी ख़बरें सुनने से रोक दिया गया है।

चुनाँचे उन्होंने ज़मीन में पूरब और पश्चिम का सफ़र किया और अस्ल सूरते ह़ाल का सुराग़ लगाते हुए घूमते फिरे, उन में की एक जमाअ़त 'तिहामा' की तरफ़ आई।

(यह अ़रब का वह इलाक़ा है जिस में हिजाज़ है) इस जमाअ़त (समूह) ने देखा कि 'नख़्ला' नाम के स्थान में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अपने सह़ाबा (रज़ि०) को नमाज़ फ़ज्र पढ़ा रहे हैं। जब उन के कानों में क़ुर्आन की आवाज़ पहुँची तो ख़ूब ध्यान के साथ सुनने लगे और आपस में कहने लगे कि हो न हो यही चीज़ है जो तुम्हारे ख़बरें सुनने के दर्मियान रुकावट बन गई हैं। इस के बाद वह अपनी क़ौम की तरफ़ वापस हो गए और उन से कहाः

اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا يَّهْدِىْ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَا اَحَدًا

इस पर अल्लाह तआ़ला ने قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ नाज़िल फ़रमाई।

(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 732 भाग 2)

शयातीन जिस आज़ादी से आसमान तक जाते थे और वहाँ फ़रिश्तों का जो मुज़ाकिरा दुनियावी बातों से सम्बिन्धत होता था उसे सुन कर नीचे आ जाते और काहिनों के कान में कह देते थे, यह सिल्सिला तो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की बेअ़सत पर ख़त्म हो गया, लेकिन शैतानों ने एक और धंधा निकाला और वह यह कि नीचे से लेकर बादलों तक पहुँच जाते और वहाँ फ़रिश्तों की बातें सुनने के लिए कान लगाकर सुनने की कोशिश करते तो उन पर अंगारा फेंक दिया जाता, उस अंगारा के लगने से पहले कोई बात सुनकर ऊपर वाले ने उसे अपने नीचे वाले के कान में कह दी और होते-होते वह बात काहिन (तांत्रिक) तक पहुँच गई तो वह अपने पास से इस में सौ झूठ मिलाकर लोगों में ख़बरें फैला देता था। उन ख़बरों में कोई बात सच्ची निकल आती तो उस की अहमियत बढ़ जाती।

अह़ादीस शरीफ़ा में तफ़्सील है और सूरः साफ़्फ़ात की आयत اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ (**सूरः साफ़्फ़ात आयत नं० 10**) में इसी को बयान फ़रमाया है कि शयातीन ऊपर से बात उचकने की कोशिश करते

हैं तो 'शिहाब' या 'साक़िब' यानी 'रौशनी, अंगारा' से मारे जाते हैं।

'हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' से रिवायत है कि कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से दर्याफ़्त किया कि यह काहिन (तांत्रिक) जो बतौर पेशीनगोई कुछ बना देते हैं उस की क्या ह़क़ीक़त है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि यह लोग कुछ भी नहीं है। अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! कभी ऐसा होता है कि काहिन (तांत्रिक) जो बात बयान करता है ठीक निकल जाती है, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया वह एक सह़ी बात होती है जिसे जिन्न उचक लेता है और अपने दोस्त के कान में डाल देता है जिसे वह उस में सौ से ज़्यादह झूठ मिला देते हैं। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 1392 बुख़ारी व मुस्लिम)**

'हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' ने यह भी बयान फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से यह भी सुना कि फ़रिश्ते बादलों में उतरते हैं वह आपस में उन फ़ैसलों का ज़िक्र करते हैं जो आ़लमे बाला में हो चुके होते हैं, शयातीन कान लगाकर चुराने की कोशिश करते हैं और जो बात सुनते हैं उसे काहिनों के कानों में जाकर कह देते हैं और काहिन उस में अपने पास से सौ झूठ मिला देते हैं।

(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 393 अ़निल बुख़ारी)

قُلْ اُوْحِیَ اِلَیَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ

आप फ़रमा दीजिए कि मुझे अल्लाह की तरफ़ से यह वह़्य की गई है कि जिन्नात में से चन्द लोगों ने क़ुर्आन सुना और फिर उस से प्रभावित हुए और अपनी क़ौम से कहा कि यक़ीन जानो कि हम ने एक अ़जीब क़ुर्आन सुना है जो हिदायत का रास्ता बताता है, हमारी समझ में क़ुर्आन की बात आ गई इस में जो हिदायत है यानी तौह़ीद की दअ़वत है, वह हम ने क़ुबूल कर ली और हम उस पर ईमान ले आए। जब हम ने तौह़ीद को समझ लिया तो शिर्क की गुमराही हम पर खुल गई, अब हम अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराएँगे।

उसी शिर्क के सिल्सिले में यह बात थी कि हम अल्लाह तआ़ला के लिए बीवी और औलाद बनाते थे, हम इस से भी तौबः करते हैं। हमारे रब की बड़ी शान है उस ने किसी को न अपनी बीवी बनाया और न अपने लिए कोई औलाद बनाई, अब तक जो हम कुफ़्र और शिर्क करते रहे उस की वजह से हम में जो बेवक़ूफ़ लोग थे, वह अल्लाह की शान में ह़द से आगे बढ़कर बातें करते थे और हम यह समझते रहे कि इन्सान और जिन्नात अल्लाह तआ़ला के बारे में जो बातें कहते हैं वह झूठी न होंगी और इतने लोग मिलकर झूठ न बोलते होंगे, लिहाज़ा हम ने भी उन की बताई हुई बातों को अपना लिया था। यह उन लोगों ने अपने मुश्रिक होने का उ़ज़्र बयान किया, लेकिन यह उ़ज़्र ग़लत है तौह़ीद जानने के लिए अल्लाह तआ़ला ने अ़क़्ल दी है, गुमराहों का इत्तिफ़ाक़ पैरवी के लायक़ नहीं होता।

जिन्नात ने मज़ीद यह भी कहा कि इन्सानों में से बहुत से आदमी जिन्नात की पनाह लिया करते थे, जिस का तरीक़ा यह था कि जब कभी सफ़र में रात को कहीं किसी ख़ौफ़ज़दह जगह में ठहरना होता तो उन में से बाज़ लोग यूँ पुकारते थेः-

يا عزيز هذاالودى اعوذبک من السفهاء الذين فى طاعتک (ऐ इस वादी के सरदार! मैं उन बेवक़ूफ़ों

से तेरी पनाह लेता हूँ जो तेरी फ़रमाँबरदारी में है) इस बात ने जिन्नात को और चढ़ा दिया और बद्‌दिमाग़ बना दिया, वह समझने लगे कि देखो! हम इतने बड़े हैं कि जिन्नात और इन्सान हमारी पनाह लेते हैं जैसा कि मुसीबत के वक़्त अल्लाह तआ़ला की पनाह ली जाती है इसी तरह़ हमारी पनाह ली जाती है।

जिन्नात ने अपनी क़ौम को यह भी बताया कि जिस तरह़ तुम्हारे अन्दर क़ियामत के दिन का इन्कार करने वाले हैं, हमें पता चल गया है कि इसी तरह़ इन्सानों में भी है। क़ुर्आन सुनकर क़ियामत का इन्कार करते हैं, इन्कार करने से क़ियामत टलने वाली नहीं चाहे इन्सान इन्कार करे और चाहे जिन्नात इन्कार करें।

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ जिन्नात ने यह भी कहा कि हम इस से पहले आसमान की तरफ़ जाया करते थे, वहाँ मौक़ा देख-देखकर बैठते थे और ऊपर जो बातें होती थीं उन्हें सुना करते थे। अब तो ह़ालत यह हैं कि हम ऊपर जाते हैं तो देखते हैं कि आसमान सख़्त पहरा से भरा हुआ है (यह पहरा फ़रिश्तों का है) और उस पहरा के अ़लावा एक यह बात भी है कि जब हम ऊपर जाते हैं तो शोलों को तैयार पाते हैं, अब अगर कोई ऊपर की बातों को सुनना चाहे तो जो शोले पहले से तैयार हैं, उन में से एक शोला उसे मार देता है। (इस की तफ़्सीर सूरः ह़िज्र और सूरः साफ़्फ़ात में गुज़र चुकी है।)

وَأَنَّا لَا نَدْرِي أَشَرٌّ أُرِيدَ بِمَن فِي الْأَرْضِ जिन्नात ने कहा कि यह जो पैग़म्बर मुह़म्मद मुस्तफ़ा (सल्ल०) मब्अूस हुए हैं उन के आने का नतीजा क्या होने वाला है, ज़मीन वाले उन की रिसालत के इन्कारी होकर सज़ा पाने वाले हैं या ज़मीन के बसने वाले उन की पैरवी करके हिदायत पर आएँगे और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ख़ैर और भलाई के ह़क़्दार होंगे यानी नतीजा क्या निकलने वाला है हमें इस का इ़ल्म नहीं।

मुम्किन है जिन्नात ने अपने इस मुख़्तसर बात से जिन्नातों को होशियार किया हो क्योंकि वह भी ज़मीन के रहने वाले हैं और मतलब यह हो कि देख लो कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हिदायत आ चुकी है, अगर तुम ने उसे न माना तो अ़ज़ाब में पड़ोगे।

जिन्नात ने मज़ीद कहा कि पहले से हम में नेक लोग भी हैं, जो अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद के क़ायल हैं, उस की अ़िबादत करते हैं और उस के अ़लावा भी हैं जो नेक नहीं है, काफ़िर और फ़ाजिर हैं। जो अब तक हम मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर थे और हम में चूंकि बहुत से लोग हिदायत पर नहीं थे इसलिए यूँ समझते थे कि अगर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से कोई गिरफ़्त की बात हुई तो हम भाग निकलेंगे, लेकिन अब हमारी समझ में आ गया कि हम ज़मीन में जहाँ कहीं भी हों अल्लाह तआ़ला के क़ब्ज़े क़ुद्‌रत में हैं और हम कहीं भी भाग कर अल्लाह तआ़ला को बेबस नहीं कर सकते, उस को पूरी तरह़ हम पर क़ुद्‌रत है, हम जहाँ कहीं भी हों।

وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ آمَنَّا بِهِ ۖ فَمَن يُؤْمِن بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا

(और बेशक जब हम ने हिदायत को सुन लिया तो हम उस पर ईमान ले आए।)

जो शख़्स अपने रब पर ईमान ले आए उसे किसी तरह़ के किसी नुक़्सान का ख़ौफ़ नहीं होगा, ईमान का भी बदला मिलेगा और आ़माल का भी सवाब मिलेगा, इस में कोई कमी न होगी, किसी की कोई नेकी शुमार से रह जाए या किसी नेकी का सवाब न मिले ऐसा न होगा।

وَلَا رَهَقًا इस के बारे में बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि इस से मुराद यह है कि नेक मोमिन को किसी ज़िल्लत का सामना न होगा और बाज़ हज़रात ने यह मतलब बताया है कि किसी मोमिन पर कोई ज़ुल्म न होगा यानी ऐसा न होगा कि कोई बुरा अ़मल न किया हो और वह उस के आ़मालनामे में लिख दिया जाए (ऐसा तो काफ़िरों के साथ भी न होगा लेकिन काफ़िरों के हक़ में यह चीज़ कोई फ़ायदेमन्द न होगी।)

मोमिन बन्दों के साथ अल्लाह तआ़ला का बड़े इनूआ़म व इक्राम का मामला है जो भी नेकियाँ दुनिया में होंगी उन को बढ़ा चढ़ा कर कई गुना कर के अज्र व सवाब दिया जाएगा।

सूरः निसा (आयत नं० 40) में हैः-

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۖ وَإِن تَكُ حَسَنَةً يُضَاعِفْهَا وَيُؤْتِ مِن لَّدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا (बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला एक ज़र्रह बराबर भी ज़ुल्म न करेगा और अगर कोई नेकी होगी तो उसे कई गुना कर देगा और अ़मल करने वाले को अपने से अज्र अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाएगा।)

जिन्नात ने यह भी कहा कि हम में बाज़ मुस्लिम हैं यानी अल्लाह के फ़रमाँबरदार हैं और बाज़ फ़ासिक (गुनाहगार) हैं। सो जो शख़्स फ़रमाँबरदार हो गया इस्लाम क़ुबूल कर लिया, उन लोगों ने सोच समझ कर बहुत बड़ी हिदायत का इरादा कर लिया (यानी दुनिया व आख़िरत में अपना भला कर लिया) और जो लोग ज़ालिम हैं, राहे हक़ से हटे हुए हैं, इस्लाम के बाग़ी हैं, वह लोग दोज़ख़ का ईधन होंगे।

وَأَن لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَاهُم مَّاءً غَدَقًا

(साहिबे रुहुल् मआ़नी फ़रमाते हैं कि यह أَنَّهُ اسْتَمَعَ पर मअ़तूफ़ है।) मतलब यह है कि मेरी तरफ़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से यह वह्य भी की गई है कि इन्सान और जिन्न इस्लाम के तरीक़े पर क़ायम रहते तो हम उन्हें ख़ूब अच्छी तरह पानी पिलाते यानी उन्हें माल की फ़रावानी से नवाज़ते और उन्हें बड़ी-बड़ी नेअ़मतें देते لِّنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ताकि हम इस में उन का इम्तिहान लें कि उन नेअ़मतों का शुक्र अदा करते हैं या नहीं।

وَمَن يُعْرِضْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا

(और जो शख़्स अपने रब के ज़िक्र से एराज़ करे अल्लाह तआ़ला उसे सख़्त अ़ज़ाब में दाख़िल करेगा।)

وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا

(और बिलाशुब्हा सब सज्दे अल्लाह ही के लिए हैं सो अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो) यानी किसी दूसरे की अ़िबादत न करो। सज्दः अ़िबादत का हो या सज्दः तअ़ज़ीमी हो, इन सब सज्दों की मुमानिअ़त है और अल्लाह के अ़लावा किसी के लिए भी किसी क़िस्म का कोई सज्दः जायज़ और मुबाह़ नहीं है। पहले तो बादशाहों में यह रस्म थी कि दरबार में आने वाले उन को सज्दे किया करते थे और अब बहुत से पीरों और फ़क़ीरों ने यह तरीक़ा निकाल रखा है कि मुरीदीन उन के पास आते हैं या रुख़सत होते हैं तो उन्हें सज्दः करते हैं, यह ह़राम है और शिर्क है।

अगर मसाजिद को मस्जिद की जमअ़ मान लिया जाए तब भी मतलब यह होगा कि जहाँ कहीं भी कोई सज्दः करने की जगह है यह जगह अल्लाह तआ़ला ही को सज्दः करने के लिए ख़ास है, चाहे अ़िबादगाह के लिए कोई जगह बना ली जाए जिसे मस्जिद कहते हैं, चाहे ज़रूरत के वक़्त सफ़र ह़ज़र में कहीं भी किसी जगह नमाज़ पढ़ने का इरादा कर लिया जाए। यह अ़िबादत बहरह़ाल अल्लाह तआ़ला ही के लिए मख़्सूस रखना लाज़िम है, अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी की भी अ़िबादत करना ह़राम है।

وَاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا साहिबे रूहुल् मआ़नी लिखते हैं कि यह भी اَنَّهُ اسْتَمَعَ मतलब यह है कि मेरी तरफ़ यह भी वह़्य आई है कि जब अल्लाह का बन्दा यानी मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) अल्लाह की अ़िबादत करने के लिए खड़ा हुआ तो यह जिन्नात उन के पास जमघटे लगाकर जमा हो गए यानी उन्होंने जो आप की अ़िबादत का मुशाहिदा किया और आप की क़िरात सुनी और आप की पैरवी में जो आप के अस्ह़ाब का रुकूअ़ सज्दः देखा तो जमाअ़तें बना-बना कर खड़े हो गए क्योंकि यह मन्ज़र उन्होंने कभी देखा न था।

ह़ज़रत ह़सन और क़तादा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ का मतलब यह है कि अल्लाह का बन्दा (रसूलुल्लाह सल्ल०) जब अपने काम यानी उन लोगों को तौह़ीद की दअ़्वत देता है तो उन को नागवार मालूम होता है और लोग आप की दुश्मनी पर तुल जाते हैं और एक दूसरे की मदद करने के लिए आप के पास जमघटा लगा लेते हैं।

नोट– اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ (मैं अल्लाह के पूरे कलिमात के वास्ते से हर उस चीज़ के शर से पनाह लेता हूँ जो अल्लाह तआ़ला ने पैदा फ़रमाए।)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया है कि जो शख़्स किसी मन्ज़िल पर उतर कर इन कलिमात को पढ़ ले तो वहाँ से रवाना होने तक उसे कोई भी चीज़ नुक़्सान नहीं पहुँचाएगी। **(रवाहु मुस्लिम)**

ज़माना-ए-जिहालत में अ़रब के लोग जब-जब किसी मन्ज़िल पर उतरते थे तो शयातीन की पनाह लेते थे। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने यह ऊपर वाली दुआ़ पढ़ाने को बताई है, जिस में अल्लाह तआ़ला के 'कलिमाते ताम्मा' के ज़रिये पनाह माँगने की तअ़लीम दी गई है।

20-28

قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ۝ قُلْ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ۝ قُلْ
اِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۝ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ
وَرِسٰلٰتِهٖ ۭ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۝ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا
يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ۝ قُلْ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا
تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْٓ اَمَدًا ۝ عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰي غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۝ اِلَّا مَنِ
ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ۝ لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ
اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۝

हमेशा का अ़ज़ाब

इन आयात में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दअ़वते ह़क़ और नाफ़रमानों को तम्बीह का ज़िक्र है और अल्लाह तआ़ला की सिफ़त इल्म कमाल का ज़िक्र है। पहले तो यह फ़रमायाः-

قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ कि आप सामने वालों से यह फ़रमा दें कि मैं सिर्फ़ अपने रब को पुकारता हूँ और सिर्फ़ उसी की अ़िबादत करता हूँ और उस के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता (जो अपने लिए मेरा ज़ाती फ़ैसला है और यक़ीन के साथ है उसी की तरफ़ मैं तुम्हें भी दअ़वत देता हूँ।)

आप यह भी बता दें कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ उस की मख़्लूक़ हूँ, उस का रसूल हूँ, मैं तुम्हें अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ह़क़ की दअ़वत देता हूँ किसी नुक़्सान या किसी भलाई के पहुँचाने का अख़्तियार नहीं रखता।

(तुम जो यूँ कहते हो कि आप रसूल हैं तो हम पर अ़ज़ाब नाज़िल कर दें, तुम्हारी यह फ़रमाईश ग़लत है, अ़ज़ाब लाना मेरे अख़्तियार की बात नहीं है और जब अ़ज़ाब आ जाए तो उस को दूर करना भी मेरे बस का काम नहीं है) और यह भी समझ लो कि अगर मैं अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी का कोई काम करूँ और अल्लाह तआ़ला मेरी पकड़ फ़रमाए तो मुझे उस की गिरफ़्त से कोई नहीं बचा सकता और न मैं उस के सिवा कोई पनाह की जगह पा सकता हूँ लिहाज़ा मुझ से फ़रमाईश करते हो कि रिसालत का काम छोड़ दूँ या रिसालत के विषयों को बदल दूँ। यह मुझ से नहीं हो सकता, अल्लाह की तरफ़ से पैग़ाम पहुँचाना या उस के पैग़ाम को अदा करना मेरा यही काम है।

अगर तुम न मानोगे और अल्लाह की नाफ़रमानी करोगे और मेरी नाफ़रमानी करोगे तो समझ लो कि नाफ़रमान के लिए दोज़ख़ की आग है, जिस में नाफ़रमान हमेशा-हमेश रहेंगे।

حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا जब क़ियामत का दिन होगा जिस के इन्कारी हो रहे हैं (ह़ालाँकि वह वादा सच्चा है) तो उस वक़्त पता चल जाएगा कि मदद्गारों के एतिबार से कौन कमज़ोरतर है और जमाअ़त (समूह) के एतिबार से भी समझ लेंगे कि किस की जमाअ़त कम है।

यहाँ इस दुनिया में मुसलमानों को कमतर और ज़लील समझते हैं और यह भी समझते हैं कि उन की संख्या कम है और अपने को बुलन्द समझते हैं। क़ियामत के दिन देखेंगे कि जिन्हें कमतर जाना वही बुलन्द निकले, उन की तो आपस में सिफ़ारिशें भी होंगी और मुजरिमीन का कोई दोस्त न होगा, न मदद्गार, न सिफ़ारिश करने वाला।

قُلْ اِنْ اَدْرِيْٓ जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने सामने वालों को क़ियामत की बात बताते थे और यह समझते थे कि मरने के बाद ज़िन्दा उठाए जाओगे और मैदाने ह़श्र में ह़ाज़िरी दोगे और वहाँ फ़ैसले होंगे तो वह लोग बतौर इन्कार यूँ कहते थे कि बताओ क़ियामत कब आएगी? उस के आने का कौन सा वक़्त मुक़र्रर है? अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से फ़रमाया कि आप उन से फ़रमा दीजिए कि मुझे मालूम नहीं जिस का तुम से वादा किया जा रहा है, वह वक़्त क़रीब है या मेरे रब ने उसकी लम्बी मुद्दत मुक़र्रर की है।

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا

(अल्लाह तआ़ला को सब कुछ मालूम है, वह ग़ैब का जानने वाला है, वह अपने ग़ैब पर किसी को बाख़बर नहीं फ़रमाता) और क़ियामत का वक़्त भी उन्हीं चीज़ों में से है, जिस का किसी को इ़ल्म नहीं

اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ۙ لِّيَعْلَمَ اَنْ
قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۧ

हाँ, मगर अपने किसी क़रीबी पैग़म्बर को अगर किसी ऐसे इ़ल्म की ख़बर करना चाहता है जो इ़ल्म नुबूव्वत से हो, जैसे पेशीनगोईयाँ या इ़ल्म अह़काम तो (इस तरह़ ख़बर देता है कि) उस पैग़म्बर के आगे और पीछे मुह़ाफ़िज़ फ़रिश्ते भी भेज देता है (ताकि वहाँ शयातीन का गुज़र न हो।)

चुनाँचे रसूलुल्लाह (सल्ल०) के लिए ऐसे पहरेदार फ़रिश्ते चार थे और यह इन्तिज़ाम इसलिए किया जाता है कि (ज़ाहिरी तौर पर) अल्लाह तआ़ला को मालूम हो जाए कि उन फ़रिश्तों ने अपने परवरदिग़ार के पैग़ाम (रसूल तक बह़िफ़ाज़त) पहुँचा दिये (और इस में किसी का दख़ल नहीं) और अल्लाह तआ़ला उन (पहरेदारों) के तमाम ह़ालात का अह़ाता किये हुए है (इसलिए पहरेदार ऐसे मुक़र्रर किये गए हैं जो इस काम के पूरे-पूरे अहल हैं।)

और उस को हर चीज़ की गिनती मालूम है, इसलिए इस का इ़ल्म न होना नुबूव्वत में किसी कमी को नहीं जताता, बल्कि नबी को तो उ़लूमे नुबूव्वत अ़ता किये जाते हैं और वही बेअ़सत का मक़्सद होता है और उन में ग़ल्ती की कोई शंका नहीं होती।

الحمد لله على اتمام تفسير سورة الجن

दारुल् उ़लूम नद्वतुल उ़लमा
लखनऊ।
05–07–2011

(भाग–73)

सूर–ए–मुज़्ज़म्मिल

(सूरः नं. 73)

सूरः मुज़्ज़म्मिल का संक्षिप्त परिचय

नाम– पहली आयत में ही लफ़्ज़ **'अल् मुज़्ज़म्मिल'** आया है, यही इस सूरः का नाम रख दिया गया।

नाज़िल होने का ज़माना–

'मावर्दी' के क़ौल के मुताबिक़ पूरी सूरः हसन, इक्रिमा और 'हज़रत जाबिर' (रज़ि०) के नज़्दीक मक्की है। 'इब्ने मरदूविया' और 'बैहक़ी' ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है कि **'सूरः मुज़्ज़म्मिल'** मक्का में नाज़िल हुई थी और 'नुह्हास' ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है कि **'सूरः मुज़्ज़म्मिल'** मक्का में नाज़िल हुई थी सिवाय आख़िरी आयत إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ के, जो मदीना में नाज़िल हुई थी।

आयत नं० 1 से 20 तक

يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۝ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۝ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ۝ اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ
قَوْلًا ثَقِيْلًا ۝ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ۝ اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ۝ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ
تَبْتِيْلًا ۝ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ۝ وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ۝ وَذَرْنِيْ
وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ۝ اِنَّ لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ۝ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ۝ يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ
وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ۝
فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ۝ فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبَا ۝ السَّمَآءُ
مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ۝ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝ اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ
ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ
فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِي الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ
وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا وَمَا
تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

अनुवाद-

(1) ऐ कपड़े में लिपटने वाले, (2) रात को (नमाज़ में) खड़े रहा करो, मगर थोड़ी सी रात; (3) आधी रात या उससे थोड़ा कम, (4) या उससे कुछ ज़्यादा कर लो, और कुर्आन को तर्तीब (ठहर-ठहर कर) के साथ पढ़ो। (5) 'हम' आप पर बहुत जल्द एक भारी कलाम डालने वाले हैं। (6) कुछ शक नहीं कि रात का उठना जी को दबाने के लिए ज़्यादा प्रभावी और बात को ज़्यादा दुरुस्त रखने वाला है; (7) आप दिन को काम में व्यस्त रहते हैं, (8) और अपने रब के नाम का ज़िक्र करते रहें और सबसे हट कर 'उसी' की ओर ध्यान करें। (9) ('वही') पूरब और पश्चिम का रब है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं; तो 'उसी' को अपना करता-धरता बना लो। (10) और सब्र कीजिए, यह लोग जो कुछ कहते हैं, और भले तरीक़े से उनसे अलग हो जाइए; (11) और मुझे और उन झुठलाने वाले खुशहाल लोगों का मामला छोड़ दीजिए और उनको थोड़ी सी मोहलत दीजिए, (12) कुछ शक नहीं कि 'हमारे' पास बेड़ियाँ हैं और भड़कती हुई आग है, (13) और गले में अटकने वाला खाना है, और दुःख देने वाला अ़ज़ाब है। (14) जिस दिन धरती और पहाड़ कांप उठेंगे और पहाड़ बिखरी हुई रेत बन जाएँगे। (15) 'हमने' तुम्हारी ओर एक रसूल भेजा, जो तुम्हारे ऊपर गवाह है, जैसा कि 'हमने' फ़िरऔन की ओर रसूल भेजा था; (16) तो फ़िरऔन ने रसूल की नाफ़रमानी की, तो 'हमने' उसे सख़्त वबाल में पकड़ लिया; (17) अगर तुमने भी इन्कार किया तो उस दिन से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा; (18) आसमान उसकी वजह से फट जाएगा, 'उसका' वादा तो हो कर रहेगा? (19) यह (कुर्आन) तो एक नसीहत है, तो जिसका जी चाहे अपने 'रब' का रास्ता

अपना ले। (20) आप का रब खूब जानता है कि आप और आप के साथ के लोग दो तिहाई रात के क़रीब और आधी रात, और तिहाई रात तक (नमाज़ में) खड़े रहते हैं, और अल्लाह रात और दिन के समय को निर्धारित करता है, 'वह' जानता है कि उसकी ठीक-ठीक गिनती नहीं कर सकते, तो उसने तुम पर मेहरबानी की, तो तुम क़ुर्आन से उतना हिस्सा पढ़ लिया करो जो आसान हो, 'वह' जानता है कि तुम में मरीज़ भी होंगे, और कुछ वह लोग भी होंगे जो ज़मीन में सफ़र करते हैं और अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करते हैं, और कुछ अल्लाह की राह में क़िताल (युद्ध) करेंगे, तो तुम क़ुर्आन में से उतना हिस्सा पढ़ लिया करो जितना कि आसानी से पढ़ा जा सके; और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात देते रहो, और अल्लाह को नेक क़र्ज़ दो, और अच्छा क़र्ज़; तुम जो भलाई अपने लिए भेजोगे उसे अल्लाह के पास पाओगे, वह बेहतर और बदले में बहुत बढ़ कर होगा, और अल्लाह से माफ़ी माँगते रहो, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, रहम वाला है।

आयत नं० 1 से 20 तक की व्याख्या

1-9 يَاأَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۝ قُمِ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ نِصْفَهُ أَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا ۝ أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ۝
إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ۝ إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْئًا وَأَقْوَمُ قِيلًا ۝ إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ۝
وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۝ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۝

तर्तील से पढ़ने का हुक्म

यह सूरः मक्की है, कुछ मुफ़स्सिरीन ने इसकी बाज़ आयात को इस से अलग माना है और मदनी सूरः बताया है। शब्द مُزَّمِّل (मुज़्ज़म्मिल) में ज़ा और मीम की तशदीद के साथ है। अस्ल में مُزَّمِّل 'मुज़्ज़मिल' था जिसके ज़ा का ज़ा में मिला दिया गया, लिहाज़ा مُزَّمِّل हो गया। जैसे- मुतातह्हिर से मुतह्हर बन गया। يَاأَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ का तर्जुमः है, "ऐ कपड़ों में लिपटने वाले"।

बाज़ उ़लमा ने फ़रमाया है कि मुश्रिकीन की तरफ़ से आप (सल्ल०) को कोई रंजीदा करने वाली बात पहुँची थी जो आप (सल्ल०) को नागवार गुज़री, तो आप (सल्ल०) कपड़ा ओढ़ कर लेट गए जिस तरह ग़मगीन आदमी किया करता है। अल्लाह तआ़ला ने आप को ख़िताब फ़रमाया कि "ऐ कपड़ा ओढ़ने वाले" **(तफ़्सीर क़ुर्तुबी, पेज नं० 32 भाग 19)** यह ख़िताब मुहब्बत की वजह से था। जैसा कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने हज़रत अ़ली (रज़ि०) को इसी मुहब्बत में कहा था قُمْ يَا أَبَا تُرَابٍ 'कुम या अबी तुराब' **(सहीह़ बुख़ारी पेज नं० 62, भाग 1)** फ़रमाकर उठाया और हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) को قُمْ يَا نُوْمَان 'कुम या नोमान' कहकर जगाया था।

मुश्रिकीन ने आप (सल्ल०) को कोई नामुनासिब लक़ब दिया था जिससे आप को रंज पहुँचा। अल्लाह तआ़ला ने يَاأَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ या अय्यहुल् मुज़्ज़म्मिल से ख़िताब फ़रमाकर उस को दूर फ़रमा दिया, अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को हुक्म फ़रमाया कि रात को उठ कर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करें और यूँ फ़रमायाः-

قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۝ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ۝

यानी आधी रात क़ियाम किया करें या आधी से कुछ कम करें या आधी से कुछ बढ़ा दें।

आधी से कम का मतलब एक तिहाई 1/3 है और आधी से कुछ ज़्यादा का मतलब दो तिहाई 2/3 है। अल्लाह तआ़ला ने रात को क़ियाम फ़रमाने का हुक्म दिया और मिक़्दार वक़्त में तीन सूरतों का अख़्तियार दे दिया।

रात को क़ियाम करने के साथ ही وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا फ़रमाया यानी क़ुर्आन को ठहर-ठहर कर पढ़ो, यूँ तो जब भी क़ुर्आन की तिलावत की जाए ठहर-ठहर कर तिलावत करें और जल्दी-जल्दी न पढ़ें, जिस से हुरुफ़ कटें और ह़क़ीक़ी माना के ख़िलाफ़ हो जाए लेकिन ख़ासतौर से नमाज़े तहज्जुद में जो तर्तील का हुक्म फ़रमाया उस की वजह यह है कि रात की नमाज़ों में लम्बी तिलावत की जाती है और रात के वक़्त सुहाने वक़्त में तिलावत में ज़्यादा दिल लगता है, लेकिन साथ ही कभी नींद के झोंके भी आ जाते हैं उन झोंकों की वजह से जल्दी-जल्दी ख़त्म करने की कोशिश न करें। जितना पढ़ें सहीं पढ़ें और जब नींद आ जाए तो सो जाए। ह़दीस शरीफ़ में भी इर्शाद फ़रमायाः-

اذا نفس احدکم وھو یصلی فلیر قد حتیٰ ذھب عنه النوم

आधी रात क़ियाम करें या तिहाई रात या दो तिहाई रात। रातों को नमाज़ में क़ियाम करना जिसे नमाज़े तहज्जुद कहते हैं उम्मत के लिए सुन्नत है, अफ़ज़ल है और बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत का काम है, लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) को जो हुक्म दिया गया है उस का क्या दर्जा था?

इस के बारे में अल्लामा 'क़ुर्तुबी' (रह़०) लिखते हैं कि बाज़ उ़लमा ने फ़रमाया है कि रात को क़ियाम करना आप पर फ़र्ज़ और ज़रूरी था कि 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' (रज़ि०) से मरवी है कि 'क़ियामुल् लैल' न सिर्फ़ नबी अक्रम (सल्ल०) पर बल्कि आप से पहले जो अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) थे उन पर भी फ़र्ज़ था।

क़ुर्आन मजीद ठहर-ठहर कर साफ़ और मख़ारिज व सिफ़ात का लिहाज़ कर के पढ़े। क़ारी ह़ज़रत ने तिलावत के तीन दर्जात बताए हैंः-

क़ुर्आन मजीद ठहर-ठहर कर साफ़ और मख़ारिज व सिफ़ात का लिहाज़ कर के पढ़े। क़ारी ह़ज़रत ने तिलावत के तीन दर्जात बताए हैंः-

(1) तर्तील

(2) तद्बीर

(3) ह़द्र

यह उन के परिभाषिक शब्द हैं।

(1) तर्तील का मतलब यह है कि ख़ूब आहिस्ता-आहिस्ता ठहर-ठहर कर तिलावत की जाए और ह़द्र का मतलब यह है कि जल्दी-जल्दी पढ़ा जाए।

(२) तद्बीर दोनों के दर्मियान पढ़ने को कहते हैं।

लेकिन तीनों सूरतों में से जो सूरत भी अख़्तियार की जाए। अक्षरों का काटना और तज्वदी के ख़िलाफ़ पढ़ना दुरुस्त नहीं है।

ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) का इर्शाद नक़्ल किया है कि الترتيل تجويد الحروف ومعرفة الوقوف (कि तज्वीद हुरुफ़ को सह़ीह़ तरीक़े पर अदा करना और वकूफ़ (वक़्फ़ या ठहरने) के पहचानने का नाम है।)

आजकल बहुत से लोग जिन में क़ारी ह़ज़रात हैं, ह़द्र से पढ़ते वक़्त बहुत से हुरुफ़ खा जाते हैं और कलिमात के अख़ीर में जो अलिफ़ होता है उसे छोड़ देते हैं। رَبَّنَا اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا में हर जगह अलिफ़ खा जाते हैं, यह सह़ी नहीं है।

फिर फ़रमाया اِنَّا سَنُلْقِىْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا (बिलाशुब्हा हम आप पर एक भारी कलाम डालने वाले हैं) भारी कलाम से क़ुर्आन मजीद मुराद है। जिस वक़्त यह आयात नाज़िल हुईं उस वक़्त क़ुर्आन शरीफ़ का कुछ ह़िस्सा नाज़िल हो चुका था, अक्सर ह़िस्सा नाज़िल होना बाक़ी था, दुश्मनों की तरफ़ से ग़लत सुलूक भी होने वाला था और दअ़वत व इर्शाद की मज़ीद ज़िम्मेदारी सौंपी जाने वाली थी। इसीलिए इर्शाद फ़रमाया कि हम आप पर अ़नक़रीब एक बड़ा भारी कलाम उतारेंगे। कलाम को पहुँचाने पर दुश्मनों की तरफ़ से जो आप को तक्लीफ़ पहुँची थी उस के अ़लावा यह बात भी थी कि जिस वक़्त आप पर वह़्य आती थी, आप को बड़ी मशक़्क़त बर्दाश्त करनी पड़ती थी।

'ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' ने बयान फ़रमाया कि सख़्त सर्दी के ज़माने में वह़्य आती थी तो आप (सल्ल०) की ह़ालत बदल जाती थी और जब फ़रिश्ता रुख़्सत हो जाता तो आप का पसीना बहता था। **(सह़ीह़ बुख़ारी, भाग 1 पेज नं० 1)**

एक मर्तबः वह़्य के आने के वक़्त आप (सल्ल०) की रान मुबारक ह़ज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़ि०) की रान पर थी, उस से ह़ज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़ि०) की रान फटने लगी।

इस के बाद फ़रमाया اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِىَ اَشَدُّ وَطْاً

(बिलाशुब्हा रात का उठना ख़ूब मशक़्क़त वाला है।)

यानी इस से नफ़्स पर दबाव पड़ता है और नफ़्स को बड़ी तक्लीफ़ होती है। यह तक्लीफ़ देखने में तक्लीफ़ है और दुनियावी तक्लीफ़ है, लेकिन इस में नफ़्स का फ़ायदा भी बहुत है। नमाज़े तहज्जुद की वजह से जो दर्जात बुलन्द होंगे उन की वजह से इन्सान सारी तक्लीफ़ें भूल जाएगा।

फ़रमाया रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बिलाशुब्हा जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं जिन का ज़ाहिर अन्दर से और अन्दर का बाहर से नज़र आता है, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें उन लोगों के लिए तैयार फ़रमाया है जो खाना खिलाएँ और सलाम फैलाएँ और रात को नमाज़ पढ़ें, जबकि लोग सो रहे हों।

(अलुतर्ग़ीब वलु तर्हीब भाग 1, पेज नं० 424)

وَّاَقْوَمُ قِيْلًا (और रात का उठना बात अदा होने के लिए ख़ूब उ़म्दह है।)

यानी रात को उठ कर तहज्जुद पढ़ते हैं और दुआ़ओं में मशग़ूल होते हैं, उस वक़्त चूंकि सन्नाटा होता है शोर नहीं होता और इधर-उधर की आवाज़ें नहीं आतीं इसलिए अ़िबादत में ख़ूब जी लगता है

दिल और ज़बान दोनों मुवाफ़िक़ हो जाते हैं और इत्मिनान के साथ क़िरात भी अदा होती है और दुआ़ भी होती है।

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا (बेशक आप को दिन में लम्बा काम रहता है) आप की मश्गूलियतें कई तरह़ की होती हैं। घर के काम भी है, आने जाने वाले लोगों का इस्तिक़बाल और दअ़वत का काम भी है, इसलिए लम्बी नमाज़ पढ़ने के लिए रात बनाई गई, ताकि सुकून से नमाज़ पढ़ सके।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ (और अपने रब का नाम लेते रहिए।)

यानी रात को तो आप नमाज़ पढ़ते ही हैं दूसरे वक़्तों में भी अल्लाह का नाम लेते रहिए और चूंकि अल्लाह तआ़ला का नाम ज़िक्र करना नमाज़ ही के साथ ख़ास नहीं है, इसलिए आ़म वक़्तों में भी अल्लाह की याद में लगे रहिए। रसूलुल्लाह (सल्ल०) इस पर ख़ुसूसियत के साथ अ़मल करते थे।

ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बयान फ़रमाती हैं। اِنَّ النَّبِیَّ ﷺ كان يذكر الله فى كل احيانه यानी रसूलुल्लाह (सल्ल०) हर वक़्त अल्लाह को याद करते रहते थे।

وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا (और हर तरफ़ से कट कर उसी की तरफ़ मुतवज्जेह रहिए।) अपने पूरे दिल का रुख़ अल्लाह की तरफ़ रखिए यानी अल्लाह तआ़ला से जो तअ़ल्लुक़ है उस तअ़ल्लुक़ के आसार हर तअ़ल्लुक़ पर ग़ालिब रखिए बज़ाहिर बीवियों से भी तअ़ल्लुक़ रहे और औलाद से भी और साथियों से भी, लेकिन अल्लाह तआ़ला का तअ़ल्लुक़ बहरहाल ग़ालिब रहे उस के अह़काम की अदाएगी में कोई फ़र्क़ न आए।

ह़क़ीक़त में यह बहुत बड़ी नसीह़त है जो भी बन्दा पूरे तौर पर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाता है वह लोगों से भी मिलता जुलता है, लेकिन उस का अन्दुरुन अल्लाह की याद ही से मअ़मूर रहता है और मख़्लूक़ को राज़ी रखने की वजह से अल्लाह तआ़ला की कोई नाफ़रमानी नहीं करता।

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا

(वह पूरब और पश्चिम का रब है उस के सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं सो आप उसी को अपना कारसाज़ बनाए रखिए।)

इस में बता दिया गया कि अल्लाह तआ़ला के अ़लावा कोई ह़ाजत रवा नहीं और कोई मअ़बूद भी नहीं। पूरब और पश्चिम और जो कुछ उन के दर्मियान वजूद में आता है सब उसी की मर्ज़ी से होता है वही सब का रब है आप उसी को अपना कारसाज़ बनाए रहें, उसी के सामने अपनी ह़ाजत रखें उसी से सब कुछ माँगे और उसी की तरफ़ मुतवज्जेह रहें।

10-14

وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ۝ وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ
وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ۝ إِنَّ لَدَيْنَا أَنكَالًا وَجَحِيمًا ۝ وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ۝ يَوْمَ
تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ۝

क़ियामत का हाल

यह पाँच आयात हैं। पहली आयत में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को अल्लाह तआ़ला ने तसल्ली दी है कि आप जल्दी न करें, यह लोग जो आप को झुठलाने में लगे हुए हैं उन को कुछ मुहलत दे दें। यह नाज़ो नेअ़मत में पल रहे हैं, बढ़ रहे हैं और दुनियावी माल और नेअ़मतें उन के लिए ग़फ़्लत का ज़रिया बन रही हैं। इन चीज़ों में पड़ कर वह आप की दअ़वत को ठुकरा रहे हैं यह उन के ह़क़ में कोई अच्छी बात नहीं है। यह जो कुछ खा पी रहे हैं और मज़े कर रहे हैं, थोड़े दिन की बात है और इस में उन का इम्तिह़ान भी है।

सूरः क़लम में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद हैः-

فَذَرْنِي وَمَنْ يُكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيثِ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ **(सूरः क़लम, आयत नं० 44)** (सो आप मुझे और उन को छोड़ दीजिए जो इस बात को झुठलाते हैं, हम उन को इस तौर पर ढ़ील दे रहे हैं कि उन को ख़बर भी नहीं।)

इस के बाद काफ़िरों के अ़ज़ाब का ज़िक्र फ़रमाया कि यह लोग जो झुठलाने में लगे हुए हैं हम ने उन के लिए बेड़ियाँ तैयार कर रखी हैं और उन के लिए दोज़ख़ है और उन के लिए ऐसा खाना है जो गले में फंस जाने वाला होगा और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।

ह़ज़रत अबूदर्दा (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) से रिवायत फ़रमाते हैं कि दोज़ख़ियों को (इतनी ज़बरदस्त) भूक लगा दी जाएगी जो तन्हा उस अ़ज़ाब के बराबर होगी जो उन को भूक के अ़लावा हो रहा होगा, लिहाज़ा वह खाने के लिए फ़रियाद करेंगे उस पर उन को 'ज़रीअ़' (नागफनी जैसा, सूरः ग़ाशिया की तफ़्सीर देखें) का खाना दिया जाएगा, जो न मोटा करेगा न भूक ख़त्म करेगा, फिर दोबारा खाना माँगेगे तो उन को طَعَامًا ذَا غُصَّةٍ (गले में अटकने वाला खाना) दिया जाएगा। जो गलों में अटक जाएगा उस के उतारने के लिए तद्बीरें सोचेंगे तो याद करेंगे कि दुनिया में पीने की चीज़ों से गले की अट्की हुई चीज़ें किस तरह़ उतारा करते थे।

लिहाज़ा पीने की चीज़ें तलब करेंगे तो खौलता हुआ पानी लोहे की हाँडियों के ज़रिये उन के सामने कर दिया जाएगा। वह हाँडियाँ जब उन के चेहरों के क़रीब होंगी तो उन के चेहरों को भून डालेंगी, फिर जब पानी पेटों में पहुँच जाएगा तो पेट के अन्दर चीज़ों (यानी आँतों) के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा। **(मिश्कातुल् मसाबीह़)**

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَهِيلًا ۝

यह अ़ज़ाब उस दिन होगा जिस दिन ज़मीन और पहाड़ हिलने लगेंगे यानी उन में भूचाल आ जाएगा और पहाड़ रेत के तोदे होंगे जिन में जमाव न होगा और नीचे को ढ़ले जा रहे होंगे। (यह अनुवाद उस सूरत में है जबकि يَوْمَ تَرْجُفُ हो, عَذَابًا أَلِيمًا का और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि ذَرْنِي से सम्बन्धित है।

15-19 إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ۝ فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ

الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ۝ فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبَا ۝
اِلسَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ۚ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ۝ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝

रब का रास्ता

इन आयात में झुठलाने वालों को ख़िताब है कि जिस तरह़ तुम झुठलाते हो, उसी तरह़ तुम से पहले लोगों ने भी झुठलाया है और फिर उस की सज़ा उन्होंने पाई है। हम ने तुम्हारी तरफ़ रसूल भेजा है, जो क़ियामत के दिन तुम पर गवाही देगा कि इन लोगों ने मुझे झुठलाया जैसा कि हम ने फ़िरऔन के पास रसूल भेजा था। फ़िरऔन ने रसूल की नाफ़रमानी की तो हम ने उस को सख़्त पकड़ा, दुनिया में वह अपने लश्करों के साथ दरिया में डुबो दिया गया और आख़िरत की सज़ा उस के अलावा है, अब तुम जो हमारे रसूल को झुठला रहे हो और कुफ़्र पर जमे हुए हो तुम सोच लो कि उस दिन के अ़ज़ाब से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा यानी उस दिन ऐसी सख़्ती होगी, जो बच्चों को बूढ़ा कर देगी, उस दिन आसमान फट जाएगा और अल्लाह का जो वादा है वह पूरा होकर रहेगा।

(बच्चों को बूढ़ा कर देने का क्या मतलब है? इस के बारे में बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि यह इशारा है शिद्दत का यानी वह दिन इतना सख़्त होगा कि मुसीबत की वजह से बच्चे बूढ़े हो जाएँगे और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया, कि चूंकि वह दिन बहुत लम्बा होगा इसलिए दिन में बच्चे बूढ़े हो जाएँगे जो बचपन में वफ़ात पा चुके थे वह क़ब्रों से उसी ह़ाल में निकलेंगे, फिर क़ियामत के दिन हौलनाकी की वजह से बूढ़े हो जाएँगे।)

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ (बिलाशुब्हा यह नसीह़त है।)

فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا (सो जो चाहे अपने रब की तरफ़ रास्ता अख़्तियार कर ले।)

यानी जिस रास्ते पर चलने से वह राज़ी होता है और जिस के अख़्तियार करने पर उस से आख़िरत की नेअ़मतों का वादा है उस रास्ते को अख़्तियार कर ले, वह दीन इस्लाम है।

20 اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَىِ الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ۚ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ
الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ۚ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ
مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ
مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ۚ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

'क़ियामुल् लैल' में कमी

शुरु सूरः में जो रात को नमाज़ों में क़ियाम करने का हुक्म फ़रमाया था (जिस में अख़्तियार था।) उस के मुताबिक़ रसूलुल्लाह (सल्ल०) और आप के साथी रात को नमाज़ में क़ियाम फ़रमाते थे।

'अ़ल्लामा कुर्तुबी' (रह़०) ने लिखा है कि जब आयते करीमा قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۙ नाज़िल हुई तो ह़ज़राते सह़ाबा को इस पर अ़मल करना दुश्वार हुआ, क्योंकि तिहाई रात, दो तिहाई रात, और आधी रात, का पहचानना मुश्किल था, लिहाज़ा इस डर से सुबह़ तक क़ियाम करते थे कि वक़्त मुक़र्रर में कमी न हो जाए। जिस की वजह से उन के पैर फूल जाते और रंग बदल जाते, लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला ने उन पर रह़म फ़रमाया।

इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला को मालूम है कि आप और आप के साथ वालों में बाज़ लोग दो तिहाई रात के क़रीब और बाज़ आधी रात और बाज़ तिहाई रात को खड़े रहते हैं जिस से परेशानी में मुब्तिला होते हैं, लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला ने मेहरबानी फ़रमाई और पहला हुक्म मन्सूख़ (निरस्त) फ़रमा दिया, सो अब तुम से जितना क़ुर्आन मजीद आसानी के साथ पढ़ा जा सके पढ़ लिया करो।

(इस से नमाज़े तहज्जुद में क़ुर्आन पढ़ना मुराद है) अब अल्लाह तआ़ला ने आसानी फ़रमा दी और तहज्जुद की फ़र्ज़ियत भी मन्सूख़ (निरस्त) हो गई और कितनी नमाज़ पढ़े और कितनी देर नमाज़ पढ़े इस को मुक़र्रर नहीं किया, लिहाज़ा आसानी की सूरत बन गई। इस नस्ख़ (निरस्त) की एक वजह तो عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ यानी अल्लाह को मालूम है कि तुम में से मरीज़ भी होंगे और वह लोग भी होंगे जो तलाश-ए-मआ़श के लिए ज़मीन में सफ़र करेंगे और वह लोग भी होंगे जो अल्लाह की राह में क़िताल करेंगे। इन ह़ालात में तहज्जुद की और अवक़ात मुक़र्ररह की पाबन्दी मुश्किल थी, लिहाज़ा आसानी कर दी गई। तहज्जुद पढ़ना मुस्तह़ब क़रार दिया गया और वक़्त भी कोई मुक़र्रर नहीं रखा गया।

'अ़ल्लामा कुर्तुबी' शेख़ 'अबू नस्र क़ुरैशी' से नक़्ल करते हैं कि मशहूर बात यह है कि क़ियामुल् लैल की फ़र्ज़ियत उम्मत के ह़क़ में मन्सूख़ (ख़त्म) हो गई और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ह़क़ में बाक़ी रही और एक क़ौल यह है कि अस्ल वजूब तो सब के लिए बाक़ी रहा। अल्बत्ता क़ियाम की मिक़्दार वाजिब नहीं रही, जितनी देर चाहे पढ़े। **(तफ़्सीर क़ुर्तुबी पेज नं० 54 भाग)**

'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' ने ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से नक़्ल किया है कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः मुज़्ज़म्मिल के शुरु में क़ियाम को फ़र्ज़ क़रार दिया था, लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला ने बारह माह तक सूरः मुज़म्मिल का आख़िरी ह़िस्सा नाज़िल नहीं फ़रमाया। उस के बाद आख़िरी ह़िस्सा नाज़िल फ़रमाकर छूट दे दी और क़ियामुल् लैल नवाफ़िल के हुक्म में बाक़ी रह गया और एक रिवायत में है कि आठ माह के बाद यह छूट नाज़िल हुई। **(रुहुल् मआ़नी भाग 29, पेज नं० 187)**

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۙ

(और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह को क़र्ज़ दो अच्छा क़र्ज़।)

यानी उस की मख़्लूक़ पर ख़र्च करो और उस की रज़ा के कामों में माल लगाओ। यह सब है तो माल वाले भी अल्लाह तआ़ला के बन्दे हैं, लेकिन उस ने करम फ़रमाया कि अपने दिये हुए माल में से ख़र्च करने का नाम क़र्ज़ रख दिया कि इस पर बड़े-बड़े अज्र व सवाब का वादा फ़रमा दिया।

सूरः बक़रः **(आयत नं० 245)** में फ़रमायाः-

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً ۔ (कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे क़र्ज़ ह़सन फिर वह उस के लिए उसे कई गुना कर के बढ़ा दे।)

وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرًا وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۔

(और जो कोई ख़ैर अपनी जानों के लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के पास पा लोगे वह बहुत बेहतर होगी और बहुत बड़े सवाब का ज़रिया होगी।)

وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ

(और अल्लाह से मग्फ़िरत तलब करो) क्योंकि अ़ामाल में कुछ न कुछ कोताही होती रहती है।)

إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ (बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।)

दुआ़ओं का तालिब
मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
दारुल् उलूम, नद्वतुल उलूमा, लखनऊ
08–08–2011

(भाग-74)

सूर-ए-मुद्दस्सिर

(सूरः नं. 74)

सूरः मुद्दस्सिर का संक्षिप्त परिचय

नाम– पहली आयत ही में शब्द **'अल् मुद्दस्सिर'** आया है, यही इस सूरः का नाम रख दिया गया है।

नाज़िल होने का ज़माना–

यह सूरः मक्की है। 'इब्ने मरदूविया' और 'बैहक़ी' ने 'हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत की है कि **'सूरः मुद्दस्सिर'** मक्का में नाज़िल हुई थी। जम्हूर उ़लमा के नज़्दीक नबी करीम (सल्ल०) पर सब से पहली वह्य اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ नाज़िल हुई, इस के बाद कुछ दिनों तक वह्य का नुज़ूल बन्द हो गया, फिर सूरः अल् मुद्दस्सिर नाज़िल हुई।

आयत नं० 1 से 31 तक

يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝ قُمْ فَاَنْذِرْ ۝ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝ فَاِذَا
نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ۝ فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۝ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ۝ ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۝ وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۝
وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ۝ وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ۝ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ۝ كَلَّا ۭ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ۝ سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ۝ اِنَّهٗ
فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝ ثُمَّ نَظَرَ ۝ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۝ ثُمَّ اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۝ فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا
سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ۝ اِنْ هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝ سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ۝ لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ۝ لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ۝ عَلَيْهَا
تِسْعَةَ عَشَرَ ۝ وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰۗىِٕكَةً ۠ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ
مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ۭ وَمَا هِيَ اِلَّا
ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ۝

अनुवाद-

(1) ऐ कपड़े में लिपटने वाले, (2) उठिये और ख़बरदार कीजिए; (3) और अपने 'रब' की बड़ाई बयान कीजिए, (4) और अपने कपड़ों को पाक रखिए, (5) और (बुतों की) गन्दगी से अलग रहिए; (6) और किसी पर एहसान इसलिए न कीजिए कि ज़्यादा (बदला) हासिल हो जाए, (7) और अपने 'रब' के लिए सब्र कीजिए। (8) तो जब सूर फूँका जाएगा, (9) तो वह दिन बड़ा ही सख़्त दिन होगा, (10) इन्कार करने वालों पर आसान न होगा, (11) छोड़ दो 'मुझे' और उस व्यक्ति को जिसे 'मैंने' अकेला पैदा किया है, (12) और उसको बहुत सा माल दिया; (13) और हाज़िर रहने वाले बेटे (दिये), (14) और 'मैंने' उसके लिए हर तरह का सामान दिया, (15) फिर वह उम्मीद रखता है कि 'मैं' उसे और ज़्यादा दूँगा, (16) ऐसा हरगिज़ नहीं, यह हमारी आयतों का विरोधी है, (17) जल्द ही 'मैं' उसे 'सऊद' (अर्थात दोज़ख के पहाड़) पर चढ़ा दूँगा। (18) उसने सोचा और एक बात बनाई, (19) तो उस पर अल्लाह की मार हो कैसी बात बनाई? (20) फिर यह मारा जाए उसने कैसी बात बनाई? (21) फिर उसने देखा, (22) फिर मुँह बनाया और ज़्यादा मुँह बनाया, (23) फिर मुँह मोड़ा, और फिर घमंड किया; (24) तो बोला, ''यह एक जादू है जो पहले से चला आ रहा है, (25) यह इन्सान का कलाम (वाणी) है।'' (26) 'मैं' जल्द ही उसे 'सक़र' (दोज़ख़) में झोंक दूँगा; (27) और तुम्हें क्या मालूम कि सक़र क्या है? (28) न वह बाक़ी रखेगी, और न छोड़ेगी; (29) वह शरीर को बिगाड़ देने वाली है, (30) उस पर उन्नीस (फ़रिश्ते) नियुक्त हैं; (31) और 'हमने' उस आग के निगरां फ़रिश्ते बनाए हैं, और 'हमने' उनकी संख्या को इन्कार करने वालों के लिए मुसीबत और आज़माइश बना कर रखा है, ताकि अह्ले किताब को यक़ीन हो जाए, और ईमान वालों का ईमान और बढ़ जाए, अह्ले किताब और ईमान वाले किसी शक में न पड़ें; और जिन लोगों के दिलों में रोग है, और काफ़िर कहेंगे, ''इस मिसाल से अल्लाह का क्या मक़सद है?'' इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है, और जिसे चाहता है सीधी राह दिखाता है, और तुम्हारे रब की सेनाओं को खुद 'उसके' सिवा कोई नहीं

जानता, और यह (कुर्आन) इन्सान के लिए नसीहत है;

आयत नं० 1 से 31 तक की व्याख्या

1-7 يَاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝ قُمْ فَاَنْذِرْ ۝ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝

दअ़वत का हुक्म

शब्द मुद्दस्सिर का मतलब कपड़ा ओढ़ने या कपड़े में लिपटने का है। सहीह़ बुख़ारी (पेज नं० 2 भाग 1) में ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से पहली मर्तबः वह्य आने का वाक़िआ़ बयान करते हुए नक़्ल किया गया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ग़ारे ह़िरा में अ़िबादत के लिए कई रातें गुज़ारा करते और खाने-पीने का सामान साथ ले जाया करते थे।

एक दिन फ़रिश्ता आया, उस ने कहा اِقْرَأْ पढ़िए (आगे आप की ज़बानी बयान किया) मैंने कहा مَا اَنَا بِقَارِئٍ कि "मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ"। इस पर फ़रिश्ते ने मुझे पकड़ा और मुझे इतनी ज़ोर से दबाया कि तक्लीफ़ इन्तेहा को पहुँच गई, फिर उस ने मुझे छोड़ दिया और वही बात कहीं कि اِقْرَأْ मैंने वही जवाब दिया مَا اَنَا بِقَارِئٍ फिर उस ने मुझे दोबारा पकड़ कर इतना दबाया कि तक्लीफ़ इन्तेहा को पहुँच गई।

फ़रिश्ते ने तीसरी मर्तबः फिर मुझे दबाया और छोड़ दिया और फ़रिश्ता यूँ पढ़ता चला गयाः-

اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝ रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने यह शब्द सुने और इस को दोहरा लिया, उस के बाद आप (सल्ल०) वहाँ से अपने घर तशरीफ़ ले आए उस वक़्त दिल कांप रहा था, अपनी पत्नी ह़ज़रत ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलिद (रज़ियल्लाहु अ़न्हा) से फ़रमायाः-

زَمِّلُوْنِیْ زَمِّلُوْنِیْ (मुझे कपड़ा उढ़ाओ, मुझे कपड़ा उढ़ाओ) चुनाँचे उन्होंने आप को कपड़ा ओढ़ा दिया, आप (सल्ल०) थोड़ी देर लेटे रहे यहाँ तक कि घबराहट की कैफ़ियत जाती रही, उस के बाद बहुत दिन तक वह्य नहीं आई। बाज़ ह़ज़रात ने कहा तीन साल तक वह्य रुकी रही।

'ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी' (रह़०) ने 'फ़त्रह़ अल्वह्य' का वाक़िआ़ बयान करते हुए रसूलुल्लाह (सल्ल०) से यूँ नक़्ल किया है कि मैं एक दिन जा रहा था मैंने आसमान से आवाज़ सुनी, नज़र उठाई तो देखा कि जो फ़रिश्ता मेरे पास ह़िरा में आया था वही आसमान और ज़मीन के दर्मियान एक कुर्सी पर बैठा हुआ है और देखकर मुझ पर ख़ौफ़ (भय) तारी हो गया। मैं वापस होकर घर पहुँचा और वही बात कही कि زَمِّلُوْنِیْ زَمِّلُوْنِیْ ज़म्मिलूनी-ज़म्मिलूनी मुझे कपड़ा उढ़ाओ, मुझे कपड़ा उढ़ाओ। इस मौक़े पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

يَاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝ قُمْ فَاَنْذِرْ ۝ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝ इस के बाद लगातार वह्य आने लगी और आती रही। **(सह़ीह़ बुख़ारी, भाग 1 पेज नं० 3)**

ऊपर की आयात में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को पहले तो يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ से मुख़ातिब फ़रमाया, क्योंकि उस वक़्त आप कपड़ा ओढ़े हुए थे।

फिर हुक्म फ़रमाया कि قُمْ (आप खड़े हो जाइए) فَاَنْذِرْ (और आप डराइए) इस में आप को दअ़वते तौह़ीद के काम की ज़िम्मेदारी दिया।

'साहि़बे रुहुल् मआ़नी' फ़रमाते हैं कि यूँ तो आप बशीर (बशारत देने वाले) थे और नज़ीर (डराने वाले) भी, लेकिन शुरु में चूंकि डराना ही ज़्यादा था, इसलिए सिर्फ़ डराने का ज़िक्र फ़रमाया।

दूसरा हुक्म फ़रमाया وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ (और अपने रब की बड़ाई बयान कीजिए।)

यानी अपने रब की अज़्मत और बड़ाई का एतिक़ाद भी रखिए और उसे बयान कीजिए। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला की बड़ाई बयान करना नमाज़ के शुरु में भी था और नमाज़ में तब्दीली के बाद भी अल्लाह तआ़ला की बड़ाई बयान की जाती है, बार-बार اَللّٰهُ اَكْبَرُ अल्लाहु अकबर कहा जाता है।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ

(और अपने कपड़ों को पाक कीजिए।)

इस में ज़ाहिरी शब्दों में तो कपड़ों को पाक रखने का हुक्म है, लेकिन ह़ज़राते मुफ़स्सिरीन और उ़लमा-ए-किराम ने इस से यह बात भी ली है कि अपने नफ़्स को और दिल को हर तरह़ से साफ़ और पाक रखिए क्योंकि जहाँ कपड़ों को नापाक रखने की इजाज़त न होगी, वहाँ क़ल्ब और नफ़्स को पाक रखना ज़रूरी होगा।

फिर फ़रमाया وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ (और गुनाहों को छोड़े रहिए) इस में अंगों के पाक करने का हुक्म है, क्योंकि आ़मतौर से गुनाह अंगों से होते हैं। बाज़ ह़ज़रात ने الرُّجْزَ से मूर्ति पूजा मुराद लिया है यानी मूर्तियों की अ़िबादत छोड़ दीजिए। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कभी मूर्तियों की अ़िबादत नहीं की। यह ख़िताब आप के ज़रिये मुश्रिकीने मक्का को है।

'साहि़बे रुहुल् मआ़नी' ने (**भाग 29, पेज नं० 136**) में नक़्ल किया है कि الرُّجْزَ से दुनिया मुराद है जो सब से बड़ा मअ़बूद (उपास्य) है क्योंकि मूर्तियों की अ़िबादत तो मन्दिरों में होती है और दुनिया की अ़िबादत हर जगह है। मसाजिद में दुनिया की अ़िबादत होती है यानी दुनिया के लिए जंग की जाती है। दुनिया के लिए मसाजिद बनाई जाती हैं। दुनिया के लिए क़ुर्आन पढ़ाया जाता है, दुनिया के लिए तक़रीर की जाती है जिस में अल्लाह की रज़ा मक़्सूद नहीं होती, अपनी तअ़रीफ़ करवाना ह़ाज़िरीन से पैसे लेना आदि मक़्सद होता है।

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ

(यानी किसी पर एह़सान करते हुए यह नियत न रखो कि जिस को दे रहा हूँ यह शख़्स मुझे उस के बदले में ज़्यादा देगा, न ज़बान से तलब करो न दिल में उस का ख़याल करो, जो देना हो अल्लाह की रज़ा के लिए दे दो।

सूरः दहर (**आयत नं० 8, 9**) में अल्लाह के बन्दों की तअ़रीफ़ करते हुए फ़रमाया हैः-

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۝ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝

(और खाना खिलाते हैं, खाने की मुहब्बत होते हुए मिस्कीन को और यतीम को और क़ैदी को कहते हैं कि हम तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए खिलाते हैं तुम से किसी बदले या शुक्रिया के तलबगार नहीं हैं।) इस से मालूम हुआ कि जब किसी को कुछ दे या माल ख़र्च करे तो जिस पर ख़र्च किया है उस से माली फ़ायदे की उम्मीद तो क्या शुक्रिया तक की उम्मीद न रखे।

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝ (और अपने रब के लिए सब्र कीजिए) चूंकि आप को दअ़वत का काम करने का हुक्म हुआ और इस से सामने वालों को तक्लीफ़ पहुँचना था, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने सब्र का हुक्म भी फ़रमा दिया यानी आप दअ़वते तौहीद के काम पर जमे रहें और दुश्मनों से जो तक्लीफ़ पहुँचे उस पर सब्र करते रहें और यह सब्र अल्लाह की रज़ा के लिए हो। जब अल्लाह की रज़ा मक़्सूद होगी तो सब्र करना कुछ मुश्किल न होगा, सवाब मिलने की उम्मीद तक्लीफ़ को आसान बना देगी। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है: اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ **(सुरः ज़ुमर, आयत नं० 10)**

8-30

فَاِذَا نُقِرَ فِى النَّاقُوْرِ ۝ فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۝ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ۝ ذَرْنِىْ وَمَنْ خَلَقْتُ
وَحِيْدًا ۝ وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۝ وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ۝ وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ۝ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ۝
كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ۝ سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ۝ اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝ ثُمَّ قُتِلَ
كَيْفَ قَدَّرَ ۝ ثُمَّ نَظَرَ ۝ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۝ ثُمَّ اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۝ فَقَالَ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ۝ اِنْ
هٰذَاۤ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝ سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ۝ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ۝ لَا تُبْقِىْ وَلَا تَذَرُ ۝ لَوَّاحَةٌ
لِّلْبَشَرِ ۝ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۝

दोज़ख़ का अ़ज़ाब

मुआ़लिमुत् तन्ज़ील भाग (4) पेज नं० (415) में 'अ़ल्लामा बग़वी' (रह०) ने लिखा है कि एक दिन 'वलीद बिन मुग़ीरा' मस्जिदे हराम में था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) से उस ने सूरः ग़ाफ़िर के शुरु की दो आयात सुनीं और आयात सुन कर प्रभावित हुआ। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने महसूस फ़रमा लिया कि यह मुतास्सिर हो रहा है, आप (सल्ल०) ने दोबारा आयात को दोहराया, इस के बाद 'वलीद' वहाँ से चला गया और अपनी क़ौम बनी मख़्ज़ूम में जाकर कहा कि अल्लाह की क़सम मैंने मुहम्मद (सल्ल०) से अभी-अभी ऐसा कलाम (वाणी) सुना है जो न इन्सानों की वाणी है, न जिन्नात की और इस में बड़ी मिठास है।

और वह ख़ुद बुलन्द होता है दूसरों के बुलन्द करने की ज़रूरत नहीं। इस के बाद वह अपने घर चला गया। जब क़ुरैश को यह बात मालूम हुई तो कहने लगे कि 'वलीद' ने तो नया दीन क़ुबूल कर लिया, अब तो सारे क़ुरैश इस नये दीन को क़ुबूल कर लेंगे। यह सुनकर 'अबू जेहल' ने कहा कि मैं तुम्हारी मुश्किल दूर करता हूँ यह कहकर वह 'वलीद' के पास चला गया और उस के पास रंजीदा होकर बैठ

गया। 'वलीद' ने कहा ऐ मेरे भाई के बेटे! क्या बात है तुम ग़मग़ीन नज़र आ रहे हो, 'अबूजेहल' ने कहा रंजीदा होने की बात ही है क़ुरैश ने फ़ैसला किया था कि तेरे लिए माल जमा करें और तेरे बुढ़ापे में तेरी मदद करें अब वह यह ख़याल कर रहे हैं कि तूने मुहम्मद (सल्ल०) का कलाम सुना है और तू उन के पास जाता है, वहाँ 'इब्ने अबी क़ुहाफ़ा' (हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि०) भी मौजूद होता है और तू उन लोगों के खाने में से खा लेता है। यह बात 'वलीद' को बड़ी बुरी लगी और कहने लगा (कि क़ुरैश ने ऐसा ख़याल क्यों किया?)

क्या क़ुरैश को मालूम नहीं है कि मैं उन से बढ़ कर हूँ और मुहम्मद (सल्ल०) और उन के साथियों के खाना से कभी उनका पेट भरा भी है जो उन के पास फ़ाज़िल खाना हो (जिस से मैं खा लूँ।)

इस के बाद 'वलीद' 'अबूजेहल' के साथ रवाना हुआ और अपनी क़ौम की मजलिस में पहुँचा और कहने लगा, तुम लोग ख़याल करते हो कि मुहम्मद (सल्ल०) दीवाना आदमी है तो क्या तुम ने कभी देखा कि वह अपना गला घूंट रहा हो। सब ने कहा नहीं, फिर कहने लगा कि तुम लोग ख़याल करते हो कि वह जादूगर है तो क्या तुम ने कभी उन्हें जादूगरों वाली बात करते हुए देखा है? कहने लगे नहीं! कहने लगा तुम कहते हो कि मुहम्मद (सल्ल०) शायर है, क्या तुम ने उन्हें कोई शेअ़र कहते हुए सुना है? कहने लगे नहीं! कहने लगा तुम कहते हो कि वह झूठा है क्या तुम ने उस की ज़िन्दगी में कभी कोई बात ऐसी आज़माई है जिस में उस ने झूठ बोला हो, सब ने कहा नहीं! (उन लोगों को क्या मजाल थी कि कोई झूठ आप की तरफ़ मन्सूब करते, उन्होंने तो ख़ुद ही आप को नुबूव्वत के मिलने से पहले अमीन का लक़ब दे रखा था।)

क़ुरैश ने वलीद से कहा तो तू बता फिर क्या बात है। उस ने कहा कि मेरी समझ में तो यह आता है कि वह जादूगर है, तुम देखते नहीं हो कि उस की बातों से मियाँ-बीवी के और बाप-बेटों के दर्मियान जुदाई हो जाती है।

'रुहुल् मआ़नी' में यूँ है कि अबू जेहल ने 'वलीद' से कहा कि तेरी क़ौम तुझ से राज़ी नहीं हो सकती जब तक कि तू उस के बारे में कोई ऐसी बात न कह दे (जिस से मालूम हो जाए कि तू उस शख़्स का मानने वाला नहीं है।) 'वलीद' ने कहा कि मुझे मोहलत दी जाए ताकि मैं सोच लूँ, फिर उस ने सोच कर कहा कि वह जादूगर हैं।

'वलीद बिन मुग़ीरा' मालदार भी था, खेती बाड़ी, दूध के जानवर, फलों का बाग़, तिजारत, ग़ुलाम और बांदी का मालिक होना, इन सब चीज़ों का मुफ़स्सिरीन ने ज़िक्र किया है और उस के लड़के भी थे जो हाज़िर रहते थे, उन की संख्या दस थी और जब उस के सामने जन्नत का ज़िक्र आया तो कहने लगा कि मुहम्मद (सल्ल०) जन्नत की ख़बर दे रहे हैं। अगर यह सच्ची है तो समझ लो कि वह मेरे लिए ही पैदा की गई है।

इन बातों को सामने रखकर देखें तो अव्वल तो क़ियामत का ज़िक्र फ़रमाया कि जिस दिन सूर फूंका जाएगा वह दिन काफ़िरों पर सख़्त दिन होगा, जिस में उन के लिए ज़रा भी आसानी न होगी। इस के

बाद एक बड़े काफ़िर यानी 'वलीद बिन मुग़ीरा' का ज़िक्र फ़रमायाः-

ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا (मुझे और उस शख़्स को रहने दीजिए जिसे मैंने अकेला पैदा किया है हम उसे सज़ा दे देंगे) आप को उस के बारे में फ़िक्रमन्द होने की ज़रूरत नहीं, उस के पैदा करने में मेरा कोई शरीक नहीं और जब उसे मैंने पैदा किया तो वह बिल्कुल अकेला था माल और औलाद उस के पास कुछ नहीं थी।

(على ان يكون "وحيدا" حالا من الفاعل او المفعول)

उस काफ़िर के बारे में दूसरी बात यह बताई कि मैंने उसे कसीर माल दिया है जो बढ़ता रहता है **(قال فی معالم التنزيل ممدوداً ای کثیراً قيل هو ما يمد بالنماء کالزرع والضرع والتجارة** और तीसरी बात यह फ़रमाई कि मैंने उस को बेटे दिये हैं जो उस के सामने रहते हैं।

चौथी बात यह फ़रमाई कि मैंने उसे हर तरह़ का सामान दिया, यह مهدت له تمهيداً का अनुवाद है-

फिर फ़रमाया ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ

(फिर वह तमन्ना करता है कि मैं उसे और ज़्यादा माल और औलाद दे दूँ।) इस से दुनिया में और माल व औलाद देने की भी नफ़ी हो गई और जो उस ने कहा था अगर जन्नत वाक़ई पैदा हुई है तो मुझे ही मिलेगी, इस की भी तर्दीद हो गई।

मुआ़लिमुल् तन्ज़ील में लिखा है कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद 'वलीद' बराबर माल और औलाद के एतिबार से नुक़्सान उठाता रहा यहाँ तक कि वह मर गया, कब मरा कहाँ मरा इस के बारे में 'साहि़बे रुहुल् मआ़नी' लिखते हैं कि बाज़ इतिहा़सकारों का कहना है कि ग़ज़्व-ए-बद्र में मारा गया और एक क़ौल यह है कि उसे ह़ब्शा के बादशाह ने क़त्ल कर दिया था, बहर सूरत वह कुफ़्र पर ही मारा गया।

इस के बाद फ़रमाया سَأُرْهِقُهُ صَعُودًا

(मैं उसे सऊद पर चढ़ाऊँगा) ह़ज़रत अबू सईद खुद्री (रज़ि०) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि 'सऊद' आग का एक पहाड़ है जिस पर दोज़ख़ी को सत्तर साल तक चढ़ाया जाएगा। जब एक बार चढ़ाया जाएगा तो उसी तरह़ सत्तर साल तक उतरता रहेगा और हमेशा इसी तरह़ होता रहेगा (यानी हमेशा-हमेश चढ़ने और उतरने में रहेगा उस से कभी फ़ारिग़ न होगा (और यह उतरना चढ़ना मुश्किल से होगा।) **(तिर्मिज़ी)**

आगे इस बात का ज़िक्र है कि जब 'वलीद' से कहा गया कि क़ौम कुरैश तुझ से राज़ी नहीं हो सकती जब तक तू मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बारे में कोई ऐसी बात न कह दे जो कुरैश के जज़्बात के मुताबिक़ हो तो उस ने कहा कि मैं सोच कर बताऊँगा إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ

(बिलाशुब्हा उस ने सोचा कि कुर्आन के बारे में क्या बात करुँ। फिर सोच कर एक बात बना ली فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ (फिर उस पर खुदा की मार हो कैसी बात सोची) ثُمَّ نَظَرَ (फिर उस ने हा़ज़िरीन के चेहरों को देखा कि जो बात अपने जी में सोचा वह उन से कह दे।)

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ (फिर उस ने मुँह बनाया और ज़्यादा मुँह बनाया) ताकि देखने वाले यूँ समझें कि उसे

कुर्आन से वाक़ई बहुत नफ़रत है और अन्दर से घृणा बहुत ज़्यादा है।

ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ (फिर उस ने मुँह फेरा और घमण्ड किया) इस में भी नफ़रत का इज़्हार है।

فَقَالَ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ۝ إِنْ هَٰذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝

(फिर कहने लगा यह तो बस जादू ही है जो दूसरों से लिया गया है और यह अल्लाह तआ़ला का कलाम (वाणी) नहीं है और न अल्लाह का भेजा हुआ है, बल्कि इन्सानों का कलाम है।

'वलीद बिन मुग़ीरा' की यह बात नक़्ल कर के इर्शाद फ़रमायाः-

سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ۝ (मैं उसे दोज़ख़ में दाख़िल करूँगा।)

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ۝ (और ऐ मुख़ातब! तुझे ख़बर है कि दोज़ख़ कैसी चीज़ है?) لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ (न वह बाक़ी रहने देगी न छोड़ेगी।)

لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ۝ (वह बदन की ह़ालत को बिगाड़ कर रख देगी।)

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ (उस पर उन्नीस फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं।)

31 وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۙ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا ۙ وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ
وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ
مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۚ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْبَشَرِ ۝

अल्लाह तआ़ला के लश्कर

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से नक़्ल किया गया है कि जब यह आयत नाज़िल हुई जिस में उन्नीस फ़रिश्तों का ज़िक्र है, तो 'अबू जेहल' ने कुरैश से कहा तुम्हारा नास हो मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) का बयान है कि दोज़ख़ पर उन्नीस फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं, तो क्या तुम पहलवान होते हुए उन से मार खा जाओगे? क्या तुम में से हर दस आदमी एक फ़रिश्ते के लिए काफ़ी न होंगे।

वहीं 'उसैद बिन कल्दह' भी मौजूद था, उस ने कहा कि सत्रह फ़रिश्तों से तो मैं निमट लूँगा, दस मेरी पीठ पर सात मेरे पेट पर हों तो मैं निपटा दूँगा और बाक़ी दो से तुम निपट लेना और एक रिवायत में यूँ है कि उस ने कहा कि मैं पुल सिरात पर तुम्हारे आगे-आगे चलूँगा, दस फ़रिश्तों को दाहिने मोंढ़े से और नौ फ़रिश्तों को बाएँ मोढ़ें से ढ़केल दूँगा और हम पुल सिरात से गुज़र कर जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे।

इस पर अल्लाह तआ़ला ने आयते करीमा وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۙ नाज़िल फ़रमाई। मतलब यह है कि दोज़ख़ के कार्यकर्ता फ़रिश्ते हैं इन्सान नहीं हैं जिससे इन्सानों पर कल्पना कर के कोई शख़्स यूँ कहने लगे कि मैं इतने से निपट लूँगा। हर-हर फ़रिश्ते की बहुत बड़ी कुव्वत है। बाज़ रिवायात में है कि एक फ़रिश्ते की कुव्वत तमाम जिन्नात और इन्सानों के बराबर है। **(अल् दुर्रे मन्सूर भाग 6, पेज नं० 284)**

وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا (और हम ने दोज़ख़ के कार्यकर्ताओं जो मिक़्दार रखी है उस में हिक्मत यह है कि काफ़िरों की जाँच और इम्तिहान हो वह उस को झुठलाएँ और गुमराही में पड़ें।

لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ

(ताकि वह लोग यह यक़ीन कर लें जिन्हें किताब दी गई है।)

यानी यहूद व नसारा के पास जो किताबें हैं उन में भी यह ज़िक्र था कि दोज़ख़ के कार्यकर्ताओं की तअ़दाद उन्नीस है। अब जब उन्होंने अल्लाह की आख़िरी किताब क़ुर्आन मजीद का यह एलान सुना जिस में फ़रिश्तों की यही तअ़दाद बताई गई है तो उन्हें यक़ीन आ जाएगा कि वाक़ई क़ुर्आन मजीद अल्लाह की किताब है और इस तरह़ से ईमान क़ुबूल करने की रग़बत होगी।

وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا (और उन में से जो लोग ईमान ला चुके हैं उन का ईमान और बढ़ जाएगा।)

وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ

(और अहले किताब और मोमिनीन शक न करें) कि दोज़ख़ के कार्यकर्ताओं की तअ़दाद उन्नीस है।

وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا (और ताकि वह लोग जिन के दिलों में मर्ज़ है और काफ़िर लोग यूँ कहें कि अल्लाह ने उसे अ़जीब विषय बयान कर के क्या इरादा किया है (जिन के दिलों में ईमान होता है वह एतिराज़ नहीं करते, अल्लाह और उस के रसूल की जो बात सुनते हैं फ़ौरन मान लेते हैं।

كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ

(अल्लाह इसी तरह़ गुमराह करता है जिसे चाहे और हिदायत देता है जिसे चाहे।)

अल्लाह तआ़ला पर कोई एतिराज़ नहीं हो सकता وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ (और आप के रब के लश्करों को सिर्फ़ वही जानता है।)

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यह मुश्रिकीन की उस बात का जवाब है कि मुह़म्मद (सल्ल०) के मदद्गार बस उन्नीस ही लोग हैं। इर्शाद फ़रमाया कि आप के रब के लश्कर तो बहुत ज़्यादा हैं जिन्हें सिर्फ़ वही जानता है।

(यह उन्नीस तो अस्ल ज़िम्मेदार हैं और उन के साथी तो बहुत ज़्यादा हैं। 'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद' (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन दोज़ख़ को लाया जाएगा, उस वक़्त उस की सत्तर हज़ार बागें होंगी, हर बाग़ के साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे जो उसे खींच रहे होंगे।

وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْبَشَرِ (यानी दोज़ख़ का ज़िक्र और उस के ह़ालात का बयान सिर्फ़ इसलिए है कि इन्सान नसीह़त ह़ासिल करें और वहाँ के अ़ज़ाब से डर कर ईमान लाए।) लोग ईमान तो लाते नहीं इन्कार की तरफ़ मुतवज्जेह होते हैं और मज़ीद कुफ़्र में इज़ाफ़ा कर देते हैं, यह मुन्किरीन की बद्बख़्ती है।

आयत नं० 32 से 56 तक

كَلَّا وَالْقَمَرِ ۝ وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ۝ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ۝ اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ۝ نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ۝ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ۝
كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ۝ اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ۝ فِيْ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوْنَ ۝ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ۝ قَالُوْا لَمْ
نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۝ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ۝ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ۝ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝ حَتّٰىٓ اَتٰىنَا
الْيَقِيْنُ ۝ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ۝ فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۝ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۝ فَرَّتْ مِنْ
قَسْوَرَةٍ ۝ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۝ كَلَّا ۭ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۝ كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ۝
فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۝ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝

अनुवाद–

(32) हाँ, चाँद की क़सम! (33) और रात की जब वह पीठ फेरे, (34) और सुबह की जब वह रोशन हो जाए, (35) कि वह (आग) एक बहुत बड़ी (आफ़त) है, (36) बशर (इन्सानों) को ख़बरदार करने वाली; (37) जो तुममें से आगे बढ़ना चाहे या पीछे रहना चाहे; (38) हर व्यक्ति जो कुछ उसने कमाया है उसके बदले रेहन (गिरवी) है, (39) सिवाय दाएँ वालों के; (40) वे जन्नत के बागों में होंगे, वहाँ वे पूछ रहे होंगे; (41) मुजरिमों से, (42) ''तुम्हें क्या चीज़ 'सक़र' (दोज़ख) में ले आयी?'' (43) वे कहेंगे, ''हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे, (44) और न मिस्कीनों (मोहताजों) को खाना खिलाते थे, (45) और बहस करने वालों के साथ हम भी बहस करते थे, (46) और बदला के दिन को झुठलाते थे, (47) यहाँ तक कि यक़ीनी चीज़ (मौत) हमारे सामने आ गयी।'' (48) तो सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश कुछ भी फ़ायदा न पहुँचा सकेगी। (49) उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीहत से मुँह फेर रहे हैं, (50) जैसेः- बिदके हुए जंगली गधे हैं, (51) जो शेर से (डर कर) भाग जाते हैं। (52) बल्कि उनमें से हर व्यक्ति चाहता है कि उसे खुला सहीफ़ा (किताबें) दिया जाए; (53) ऐसा हरगिज़ नहीं, बल्कि यह आख़िरत से डरते नहीं। (54) कुछ शक नहीं कि यह (क़ुर्आन) तो एक नसीहत है, (55) तो जिसका जी चाहे नसीहत हासिल कर ले। (56) और याद भी तभी रखेंगे जब अल्लाह चाहे, 'वह' डरने के लायक़ और बख़्शिश का मालिक है।

आयत नं० 32 से 56 तक की व्याख्या

32-56 كَلَّا وَالْقَمَرِ ۝ وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ۝ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ۝ اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ۝ نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ۝ لِمَنْ شَآءَ
مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ۝ كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ۝ اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ۝ فِيْ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوْنَ ۝
عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ۝ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۝ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ۝
وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ۝ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝ حَتّٰىٓ اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ۝ فَمَا
تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ۝ فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۝ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۝
فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۝ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۝ كَلَّا ۭ بَلْ لَّا

يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۝ كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ۝ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۝ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ
هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝

दोज़ख़ियों से सवाल

इन आयात में पहले तो यह फ़रमाया कि चाँद की, रात की और सुबह़ की क़सम यह दोज़ख़ (जिस का ऊपर से ज़िक्र चला आ रहा है) बड़ी भारी चीज़ों में से एक चीज़ है। उस के अ़ज़ाब को मामूली न समझा जाए।

इसी दुनिया में रहते हुए जो इस की ख़बर अल्लाह की किताब ने दी है यह ख़बर सच्ची है और इस का बयान करना इसलिए है कि इन्सान इस की ख़बर और ह़ालात सुनकर डरे।

(अल् क़ुर्तुबी भाग 19, पेज नं० 85)

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ

(यानी क़ियामत का ज़िक्र डराने वाला है उस शख़्स के लिए जो आगे बढ़ना चाहे या पीछे हटना चाहे।)

हर शख़्स अपने-अपने अ़मल को देख ले कि ईमान और आ़माले सालिह़ा में आगे बढ़ रहा है या झूठ व इन्कार की वजह से जन्नत से पीछे हट रहा है।

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ

"हर जान अपने अ़मल की वजह से मरहून (गिरवी) है"।

जैसे- कोई शख़्स किसी के पास अपनी कोई चीज़ उधार रख देता है, फिर उसे छुड़ा नहीं सकता जब तक वह माल अदा न कर दे जिस के बदले कोई चीज़ उधार रखी है। उसी तरह़ क़ियामत के दिन हर शख़्स का अ़मल रोके रखेगा यानी ह़िसाब किताब होगा।

अहले कुफ़्र और अहले शिर्क का जुर्म चूंकि सब से बड़ा है इसलिए अहले कुफ़्र और अहले शिर्क अपने इस जुर्म की वजह से हमेशा बन्द रहेंगे। उन्हें कोई अ़मल फ़िद्या कोई सिफ़ारिश दोज़ख़ से न छुड़ा सकेगी।

अब रहे वह लोग जो मोमिन थे, लेकिन उन्होंने आ़माले सालिह़ा भी किये और बुरे आ़माल भी कर लिया तो यह लोग नेकियाँ ज़्यादा होने की वजह से छूट जाएँगे और बहुत से लोग सिफ़ारिशों से और बहुत से लोग बन्दों के ह़क़ अदा कर के और बहुत से लोग केवल अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व मग़्फ़िरत की वजह से छूट जाएँगे, जिन की नेकियों के आ़मालनामे भारी होंगे वह लोग निजात पाएँगे और जिन लोगों पर दूसरे लोगों के हुक़ूक़ थे वह हुक़ूक़ की वजह से पकड़े जाएँगे उन की नेकियाँ जिन के ह़क़ बाक़ी थे, उन्हें दे दी जाएँगी। अगर हुक़ूक़ अदा करने से पहले नेकियाँ ख़त्म हो गईं तो उन पर जिन के हुक़ूक़ अदा करना बाक़ी थे, उनके गुनाह डाल कर दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा।

(मुस्लिम कमा ह़दीस अल् क़िसास स फ़िल् मिश्कात पेज नं० 435)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस (रज़ि०) से रिवायत है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया कि

क़ियामत के रोज़ अल्लाह अपने बन्दों को जमा फ़रमाएगा जो नंगे बेख़त्ना और बिल्कुल खाली हाथ होंगे, फिर ऐसी आवाज़ देंगे जिसे दूर वाले ऐसे सुनेंगे जैसे क़रीब वाले सुनेंगे और उस वक़्त यह फ़रमाएँगे कि मैं बदला देने वाला हूँ, मैं बादशाह हूँ (आज) किसी दोज़ख़ी के हक़ में यह न होगा कि दोज़ख़ में चला जाए और किसी जन्नती पर इस का ज़रा भी कोई हक़ हो और यह भी न होगा कि कोई जन्नती जन्नत में चला जाए और किसी दोज़ख़ी का उस पर कोई हक़ हो, जब तक कि मैं साहिबे हक़ को बदला न दूँ यहाँ तक कि अगर किसी ने किसी को एक हाथ भी ज़ुल्मन मार दिया था तो उस का बदला भी दिला दूँगा।

रावी कहते हैं कि हम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! बदला कैसे दिया जाएगा? ह़ालांकि हम नंगे बेख़त्ना और बिल्कुल ख़ाली हाथ होंगे, जवाब में सरवरे आ़लम (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि नेकियों और बुराईयों से लेन-देन होगा। **(क़ाल फ़िल् तर्ग़ीब भाग 4, पेज नं० 404, रवाहु अह़मद)**

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि जिस ने अपने ज़र ख़रीद ग़ुलाम को ज़ुल्मन एक कोड़ा भी मारा था, क़ियामत के रोज़ उस को बदला दिया जाएगा।

'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद' (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि ह़ज़रत रसूले करीम (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि (अगर) वालिदैन का अपनी औलाद पर क़र्ज़ होगा तो वह भी क़ियामत का दिन होगा वह अपनी औलाद से उलझ जाएँगे (कि हमारा क़र्ज़ अदा करो) वह जवाब देगा कि मैं तो तुम्हारी औलाद हूँ (वह इस का कुछ असर न लेंगे) और मुताल्बा पूरा करने पर इस्रार करते रहेंगे, बल्कि यह तमन्ना करेंगे कि काश! इस पर हमारा और भी क़र्ज़ होता। **(अल् तर्ग़ीब वल् तरहीब भाग 14, पेज नं० 405 तब्रानी)**

إِلَّآ أَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ

(लेकिन दाहिनीं तरफ़ वाले मरहून (गिरवी) न होंगे यानी ईमान और आ़माले सालिह़ा की वजह से उन ह़ज़रात की निजात हो जाएगी वह अपने आ़माल की वजह से गिरिफ़्त में न होंगे जन्नत में दाख़िल होने के लिए उन के लिए कोई रुकावट न होगी यह वही दाहिने वाले हैं जिन का सूरः अल् वाक़िअ़ः (आयत नं० 27, 28) में ज़िक्र है।

وَأَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَآ أَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۞ فِىْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۞

فِىْ جَنّٰتٍ ۛ (ह़ज़रात अस्ह़ाबुल् यमीन जन्नत में होंगे।)

يَتَسَآءَلُوْنَ ۞ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ۞ यानी काफ़िरों के बारे में सवाल कर रहे होंगे और यह सवाल ख़ुद मुजरिमीन से होगा।

مَا سَلَكَكُمْ فِىْ سَقَرَ (तुम्हें किस चीज़ ने दोज़ख़ में दाख़िल किया।)

قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۞ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ۞ "मुजरिमीन जवाब देंगे कि हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे और हम मिस्कीन को खाना नहीं खिलाते थे"।

وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ (और बकवास करने वालों के साथ बकवास करते थे।) शब्द ख़ौज़ का अर्थ है किसी चीज़ में फँसते चले जाना। मतलब यह है कि काफ़िर और हठधर्मी जब इस्लाम की बुराईयाँ करने बैठते और इस्लाम की मुख़ालिफ़त में दूर-दूर की बातें सोचते तो हम भी उन के साथ लग जाते थे और

उन की बातों में शरीक हो जाते थे। हमारा जुर्म सिर्फ़ अह़काम पर अ़मल न करने ही का न था, बल्कि हम काफ़िर थे और काफ़िरों के साथ इस्लाम की मुख़ालिफ़त करने में मश्ग़ूल रहते थे।

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝ حَتّٰى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ۝ (और हम बदले के दिन यानी आख़िरत के दिन को झुठलाया करते थे और यह झुठलाना और इन्कार आख़ीर वक़्त तक रहा यहाँ तक कि हमें मौत आ गई।

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ (सो उन लोगों को शफ़ाअ़त करने वालों की शफ़ाअ़त नफ़ा न देगी) काफ़िर के लिए कोई शफ़ाअ़त करने वाला न होगा, जो उसे दोज़ख़ से निकलवा दे।

सूरः मोमिन (**आयत नं० 18**) में फ़रमायाः-

مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ (ज़ालिमों के लिए न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारिश करने वाला होगा जिस की बात मानी जाए।)

आख़िरत में उन की यह बद्ह़ाली होगी और दुनिया में उन का यह ह़ाल है कि नसीह़त से मुँह मोड़ते हैं एराज़ कर के चले जाते हैं और एराज़ भी मामूली नहीं सख़्त एराज़ करते हैं।

इसी को फ़रमायाः-

كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۝ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۝ (क़ुर्आन की बातें सुनकर वह इस तरह़ मुँह मोड़ते हैं कि गधे हैं जो शेर से डर कर भाग रहे हैं। 'क़स्वरह' का अनुवाद शेर किया गया है, यह ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से मन्क़ूल है।

(كما ذكر فى معالم التنزيل وفيه اقوال اخر وهذه الكلمة لا واحد لها من لفظها.)

بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً

यानी उन को ईमान लाना नहीं है, कुफ़्र पर जमे रहने के लिए ऐसे मुतालिबात करते हैं जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बस में नहीं हैं। कहते हैं कि अगर आप अल्लाह के रसूल हैं तो हम में से हर शख़्स के सर के पास जब सुबह़ सो कर उठें तो एक पर्चा होना चाहिए जिस में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से यह लिखा हुआ हो कि आप अल्लाह के रसूल हैं और यह भी लिखा हो कि इन की पैरवी करो। यह उन की जाहिलाना बातें हैं, सत्य के स्पष्ट होने के बाद सत्य को न मानना और ह़ीले बहाने तलाश करना मज़ीद कुफ़्र दर कुफ़्र है। (**दुर्रे मन्सूर भाग 6 पेज नं० 286**)

كَلَّا ۭ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ

(ह़क़ीक़त में बात यह है कि यह आख़िरत से नहीं डरते न इन्हें आख़िरत का यक़ीन है और न वहाँ के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ है) इसीलिए ऐसी बातें करते हैं जिन का ऊपर ज़िक्र हुआ।

وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ اللّٰهُ ۭ

(और नहीं नसीह़त ह़ासिल करेंगे मगर यह कि अल्लाह तआ़ला चाहे।)

هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ

(वही है जिस से डरना चाहिए और वही माफ़ करने वाला है।)

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने आयते करीमा هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ की तिलावत फ़रमाई, फिर फ़रमाया कि तुम्हारे रब ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं इस का अहल हूँ कि मुझ से डरा जाए लिहाज़ा कोई मेरे साथ दूसरे मअ़बूद न ठहराए। सो जो शख़्स मुझ से डरा और मेरे साथ कोई मअ़बूद न ठहराया मैं इस का अहल हूँ कि उसे बख़्श दूँ।

(रुहुल् मआ़नी पेज नं० 154, भाग 29 व अहमद व तिर्मिज़ी व हाकिम)

(भाग–75)

सूर–ए–क़ियामः

(सूरः नं. 75)

सूरः क़ियामः का संक्षिप्त परिचय

नाम– पहली आयत में ही शब्द "اَلْقِيٰمَةِ" आया है, यही इस का नाम हो गया। बाज़ रिवायात में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी इस का नाम "سورة لا اُقسم" सूरः लाउक्सिमु भी आया है।

नाज़िल होने का ज़माना– यह सूरः मक्की है। 'इब्ने मरदूविया' ने और बैहक़ी ने (दलायल में) इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि सूरः क़ियामः और एक रिवायत के मुताबिक़ "سورة لا اُقسم" 'सूरः लाउक़्सिमु' मक्का में नाज़िल हुई थी। 'इब्ने मरदूविया' ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से भी यही रिवायत नक़्ल की है।

आयत नं० 1 से 40 तक

لَآ أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۝ وَلَآ أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝ أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَلَّن نَّجْمَعَ عِظَامَهُ ۝ بَلٰى قٰدِرِينَ عَلٰى أَن نُّسَوِّيَ
بَنَانَهُ ۝ بَلْ يُرِيدُ الْإِنسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۝ يَسْـَٔلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ۝ فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝
يَقُولُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ۝ كَلَّا لَا وَزَرَ ۝ إِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۝ يُنَبَّؤُا الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۝
بَلِ الْإِنسَانُ عَلٰى نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۝ وَلَوْ أَلْقٰى مَعَاذِيرَهُ ۝ لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ۝ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْاٰنَهُ ۝ فَإِذَا قَرَأْنٰهُ فَاتَّبِعْ
قُرْاٰنَهُ ۝ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ۝ كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۝ وَتَذَرُونَ الْاٰخِرَةَ ۝ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۝ إِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝
وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۝ تَظُنُّ أَن يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۝ كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۝ وَقِيلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ۝ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ۝
وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۝ إِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ۝ فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۝ وَلٰكِن كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝ ثُمَّ ذَهَبَ إِلٰى أَهْلِهِ يَتَمَطّٰى ۝
أَوْلٰى لَكَ فَأَوْلٰى ۝ ثُمَّ أَوْلٰى لَكَ فَأَوْلٰى ۝ أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَن يُتْرَكَ سُدًى ۝ أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّن مَّنِيٍّ يُمْنٰى ۝ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ
فَسَوّٰى ۝ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثٰى ۝ أَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰى أَن يُحْـِۧيَ الْمَوْتٰى ۝

अनुवाद-

(1) मैं क़सम खाता हूँ क़ियामत के दिन की, (2) और क़सम खाता हूँ ऐसे नफ़्स (आत्मा) की, जो अपने ऊपर मलामत करे; (3) क्या इन्सान यह समझता है कि 'हम' हरगिज़ उसकी हड्डियों को इकट्ठा न करेंगे? (4) क्यों नहीं! 'हम' तो इस पर क़ादिर हैं कि उसकी पोरों तक को ठीक कर दें? (5) बल्कि इन्सान चाहता है कि अपने आगे की ज़िन्दगी में भी बुरे कर्म करता रहे, (6) पूछता है, ''क़ियामत का दिन कब आएगा?'' (7) तो जब निगाह चौंधिया जाए; (8) और चाँद बेनूर हो जाए; (9) और सूरज और चाँद इकट्ठे कर दिये जाएँ; (10) उस दिन इन्सान कहेगा, ''कहाँ भाग जाऊँ?'' (11) बेशक कहीं पनाह नहीं; (12) उस दिन केवल तेरे रब ही के पास ठिकाना होगा; (13) उस दिन इन्सान को उसका सब अगला पिछला किया हुआ बता दिया जाएगा; (14) बल्कि इन्सान अपनी हालत पर खुद ही निगाह रखता है; (15) और चाहे वह कितने ही हीले बहाने तलाश करे। (16) (ऐ मुहम्मद) आप अपनी ज़बान को हरकत न दें इस (कुर्आन) को जल्दी याद करने के लिए; (17) 'हमारे' ज़िम्मे है उसका जमा करना और पढ़वा देना; (18) तो जब 'हम' उसको पढ़ें, तो फिर आप भी वैसे ही पढ़ें, (19) फिर उसे स्पष्ट करना 'हमारे' ज़िम्मे है। (20) बल्कि (लोगों!) तुम दुनिया से मुहब्बत करते हो; (21) और आख़िरत को छोड़ देते हो। (22) उस दिन बहुत से चेहरे-तरो ताज़ा होंगे, (23) अपने 'रब' की ओर देख रहे होंगे। (24) और बहुत से चेहरे उस दिन उदास होंगे; (25) वे समझ रहे होंगे कि उनके साथ कमरतोड़ मामला होने वाला है। (26) देखो! जब जान हंसली (कण्ठ) तक पहुँच जाएगी; (27) और लोग कहने लगेंगे ''है कोई झाड़-फूंक करने वाला?'' (28) और वह समझेगा कि यह सबसे जुदाई का समय है; (29) और पिंडुली से पिंडली लिपट जाएगी; (30) उस दिन तुझ को अपने रब की ओर जाना होगा। (31) तो उसने न तस्दीक़ की और न नमाज़ पढ़ी, (32) और झुठलाया और मुँह मोड़ा, (33) फिर अपने घर वालों की ओर अकड़ता हुआ चल दिया, (34) अफ़सोस है! तुझ पर? फिर अफ़सोस है!! (35) फिर अफ़सोस है!!! तुझ पर, फिर अफ़सोस है; (36) क्या इन्सान

यह समझता है कि उसे यूँ ही छोड़ दिया जाएगा? (37) क्या वह वीर्य की एक बूंद न था? जो (रहम में) टपकाया जाता है? (38) फिर वह खून का लोथड़ा था, तो अल्लाह ने उसको (शरीर) बनाया और उस (के अंगों) को दुरुस्त किया; (39) फिर उससे जोड़ा बनाया, मर्द और औ़रत; (40) क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे?

आयत नं० 1 से 40 तक की व्याख्या

1-2 لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۙ

आयात नं० (1/2) के शुरु में मौजूद "لَا" ला के बारे में बहुत से मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि यह ज़ायद है और "لَآ اُقْسِمُ" का अर्थ "اُقْسِمُ" उक्सिमू बताया है। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि यह "لَا" ला ज़ायद नहीं है, बल्कि नफ़ी के अर्थ में है और इस के ज़रिये मुश्रिकीन के "मरने के बाद उठाए जाने" के बारे में ग़लत अ़क़ीदे की नफ़ी की गई है और आयत का मतलब यह है कि बात वैसी नहीं है जैसी मुश्रिकीन कहते हैं कि मरने के बाद उठाए जाने और क़ियामत के दिन के बदले का तसव्वुर सही नहीं है। मैं मरने के बाद उठाए जाने के अ़क़ीदे के सही होने पर क़ियामत के दिन की क़सम खाता हूँ और आदमी के نَفْسِ اللَّوَّامَةِ नफ़्सिल्लव्वामः की क़सम खाता हूँ जो हमेशा भलाई पर उक्साता है और बुराई से रोकता है, इसलिए कि उसे यक़ीन होता है कि क़ियामत ज़रूर आएगी, इन्सान दोबारा ज़िन्दा किये जाएँगे और उन्हें उन के अच्छे और बुरे आ़माल का बदला दिया जाएगा।

दोनों आयतों में जिस बात पर अल्लाह ने क़सम खाई वह यह है कि काफ़िरों! तुम ज़रूर दोबारा ज़िन्दा किये जाओगे, तुम से ज़रूर तुम्हारे आ़माल का हिसाब लिया जाएगा और तुम्हें सज़ा दी जाएगी, चूंकि यह बात सन्दर्भ में (Back ground) थी, इसीलिए आयत में इस का ज़िक्र विस्तार के साथ नहीं किया गया है।

3 اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ۙ

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने वही बात कही हैं जिस को साबित करने के लिए उस ने ऊपर की दोनों आयतों में क़सम खाई है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, क्या काफ़िर व हठधर्मी यह समझते हैं कि वह मर कर गल सड़ जाएँगे, उन का वजूद हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएगा और हम उन की हड्डियाँ ज़मीन से निकाल कर उन्हें जमा कर के उसे दोबारा ज़िन्दा नहीं करेंगे? यह उनकी नादानी है।

हम इस बात पर सक्षम हैं कि उन की हड्डियों को जमा करें, बल्कि हम तो इस से बड़ी बात की कुद्रत रखते हैं कि उस के हाथ और पांव की उंगलियों की पोर-पोर को जमा कर के इकट्ठा कर दें।

4 بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ۙ

आयत नं० (4) का दूसरा मतलब यह भी बयान किया गया है कि हम तो इन्सान की उंगलियों को बनाने पर भी क़ुद्‌रत रखते हैं, जो छोटी और नाज़ुक होती हैं। एक दूसरे से अलग और ह़रकत करने की सलाह़ियत रखती हैं, तो फिर उस के जिस्म की बड़ी हड्डियों को दोबारा बनाने पर क्यों नहीं क़ादिर होंगे? जबकि पहली बार हम ने ही उन्हें बनाया था।

5 بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ۝

इस में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि काफ़िर इन्सान अल्लाह तआ़ला का इसलिए इन्कार नहीं करता है कि उस के पास इस की दलील नहीं पहुँची और उस का वह दिल से इन्कारी नहीं है, बल्कि उस की नियत ख़राब होती है, वह केवल घमण्ड की वजह से चाहता है कि आख़िरत के इन्कार पर उस का इस्रार बाक़ी रहे और ह़क़ीक़त का एतिराफ़ न करे।

6-15 يَسْئَلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ۝ فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝ يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۝ كَلَّا لَا وَزَرَ ۝ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ۨالْمُسْتَقَرُّ ۝ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ۝ بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۝ وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ۝

मरने के बाद उठाए जाने और क़ियामत का इन्कार करने वाले बतौर मज़ाक़ पूछते हैं कि क़ियामत कब आएगी, इसलिए वह क़ियामत को अ़क़्ल से दूर की बात समझते हैं। अल्लाह तआ़ला ने उस के इस मज़ाक़ भरे सवाल का जवाब देते हुए फ़रमाया कि हाँ, जब क़ियामत आएगी तो आदमी की आँखें शिद्दते ख़ौफ़ व दहशत से पथरा जाएँगी और ह़रकत करने से रुक जाएँगी।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः इब्राहीम आयत नं० (42) में फ़रमाया है اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ۝ "अल्लाह तआ़ला उन्हें उस दिन तक मोहलत दिये हुए है जिस दिन आँखें फटी की फटी रह जाएँगी।

उस दिन सूरज हमेशा के लिए अपनी रौशनी खो देगा और सूरज व चाँद दोनों इकट्ठा कर दिये जाएँगे, दोनों की रौशनी ख़त्म हो जाएगी। रात और दिन का एक दूसरे के बाद आना बन्द हो जाएगा, उस दिन इन्सान मारे दहशत के हर तरफ़ भागने की कोशिश करेगा, लेकिन उसे कोई भागने का रास्ता न मिलेगा। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

كَلَّا لَا وَزَرَ हरगिज़ नहीं, अब कोई पनाह की जगह नहीं है, अब तो सभी रब्बुल् आ़लमीन के सामने खड़े हैं और अपने बारे में उस के फ़ैसले के इन्तिज़ार में हैं कि जन्नत का फ़ैसला होता है या जहन्नम का। उस दिन हर आदमी को उस के अच्छे आ़माल की ख़बर दी जाएगी जो उस की निजात का ज़रिया बनेंगे और उन आ़माल की भी जिन की अदाएगी में उस ने कमी से काम लिया था। बाज़ लोग कहते हैं कि यह ख़बर इन्सान को आ़माल वज़न होने के वक़्त दी जाएगी और बाज़ लोग कहते हैं कि यह ख़बर उसे मौत के वक़्त दी जाएगी। 'क़ुर्तुबी' के नज़्दीक पहला क़ौल बेहतर है।

आयत नं० (14) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, बल्कि इन्सान के हर अंग उस के करतूतों की गवाही देंगे। जैसा कि सूरः नूर आयत नं० (24) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ जिस दिन काफ़िरों की ज़बानें, उन के हाथ और पाँव उन के ख़िलाफ़ उन के करतूतों की गवाही देंगे।

'हसन बसरी' ने इस की तफ़्सीर में यह बयान किया है कि उस दिन हर आदमी अपने ऐबों से ख़ूब वाक़िफ़ होगा अगरचे अ़ज़ाब से बचाव की नाकाम कोशिश में झूठे उ़ज़्र पेश करेगा, लेकिन उस का कोई फ़ायदा नहीं होगा।

16-19 لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ۝ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ۝ فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ۝
ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ۝

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर जब वह्य नाज़िल होती तो आप होंठ हिलाने लगते। आप से कहा गया कि आयतों को याद करने के लिए अपनी ज़बान न हिलाइए यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम उन्हें आप के सीने में महफ़ूज़ कर दें, ताकि नुज़ूले वह्य ख़त्म होने के बाद आप उन्हें पढ़ें। इसलिए जब हम पूरी वह्य नाज़िल कर चुकें, तब आप पढ़िए। फिर उस के बयान करने की ज़िम्मेदारी भी हम पर है।

'बुख़ारी' की एक दूसरी रिवायत में है कि इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास जिब्रईल वह्य लेकर आते तो आप ग़ौर से सुनते और जब जिब्रईल चले जाते तो आप वैसे ही पढ़ते जिस तरह जिब्रईल ने पढ़ा था।

सूरः ताहा आयत नं० (114) में अल्लाह तआ़ला ने इसी विषय को यूँ बयान फ़रमायाः-

وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُقْضَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ

"आप वह्य ख़त्म होने से पहले क़ुर्आन पढ़ने में जल्दी न कीजिए"।

'हाफ़िज़ इब्ने कसीर' ने 'हसन बसरी', क़तादा, मुजाहिद और ज़िहाक आदि का क़ौल (कथन) नक़्ल किया है कि इन आयात के नाज़िल होने का सबब वही है जो ऊपर बयान किया गया यानी अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को वह्य का इ़ल्म हासिल करने की कैफ़ियत सिखाई।

मुफ़स्सिरीन ने ज़िक्रे क़ियामत के दर्मियान इन आयतों के आने की कई वजह बयान की हैं। उन में से एक यह है कि जब यह सूरः وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ तक नाज़िल हुई, तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने चाहा कि इसे जल्द याद कर लें और ज़बान हिलाने लगें, ताकि उस का कोई हिस्सा ज़ाया न हो जाए तो अल्लाह तआ़ला ने لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ से ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ तक नाज़िल फ़रमाया, फिर क़ियामत के विषय में कलाम मुकम्मल किया।

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि नबी करीम (सल्ल०) ने अपनी तेईस साला नुबूव्वत की ज़िन्दगी में क़ुर्आन करीम की तशरीह के लिए जो कुछ कहा और किया और जितनी बातों की ताईद और जितनी बातों से मना फ़रमाया, जिसे इस्लाम की ज़बान में 'हदीस' कहा जाता है, वह पूरा का पूरा अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल किये हुए वह्य का हिस्सा था अगरचे क़ुर्आन नहीं था, लेकिन क़ुर्आन की इस आयत

में अल्लाह के वादे के मुताबिक़ वह ज़ख़ीरा क़ुर्आन की तशरीह़ और उस का बयान था और उम्मत के लिए आसमानी वह्य की ह़ैसियत से वाजिबुल् इत्तिबाअ़ था।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः नज्म आयात नं० (3/4) में इसी बात की ताईद में फ़रमाया हैः-

وَمَا يَنطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۝

“अल्लाह के नबी अपनी ख़्वाहिश से कोई बात नहीं कहते हैं, वह तो सिर्फ़ वह्य है जो उतारी जाती है”।

20-21 كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۝ وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ۝

चार आयतों के बाद जिन में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को वह्य का इ़ल्म ह़ासिल करने की तअ़लीम दी है, फिर आख़िरत की नेअ़मतों और उस के अ़ज़ाब का ज़िक्र किया है।

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को आख़िरत की फ़िक्र की नसीह़त की है और कहा है कि तुम दुनिया, उस की लज़्ज़तों और शहवतों के पीछे दौड़ते हो और आख़िरत की फ़िक्र से ग़ाफ़िल हो गए हो, इसलिए दुनिया की लज़्ज़तें फ़ौरन ह़ासिल हो जाती हैं और आख़िरत की नेअ़मतें निगाहों से ओझल हैं, ह़ालांकि अगर तुम अ़क़्ल से काम लेते, हमेशा के अन्जाम पर तुम्हारी निगाह होती, तो आख़िरत को दुनिया पर तर्जीह़ देते और क़ियामत के दिन तुम्हें ऐसी हमेशा की ख़ुशी मिलती जिस के बाद बद्बख़्ती, दुःख और मुसीबत तुम्हारे क़रीब न फटकती।

22-23 وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۝ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝

जो लोग आख़िरत को दुनिया पर तर्जीह़ (वरीयता) देते हैं, क़ियामत के दिन उन के चेहरे शादाब, पुर रौनक और चमकते हुए होंगे। जन्नत और उस की बे बहा नेअ़मतों को पा कर ख़ुश होंगे और उन्हें सब से बड़ी नेअ़मत यह मिलेगी कि उन का रब उन के सामने जलवा अफ़रोज़ होगा, जिसे देखकर उन्हें ऐसी ख़ुशी मिलेगी जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता और जिस के बाद वह जन्नत की सारी नेअ़मतों को भूल जाएँगे। अल्लाह तआ़ला हमें भी उन अहले जन्नत में शामिल कर दे।

24-25 وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۝ تَظُنُّ أَن يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۝

जो लोग दुनिया और उस की वक़्ती लज़्ज़तों को जन्नत और उस की हमेशा की ख़ुशियों पर तर्जीह (वरीयता) देते हैं, क़ियामत के दिन उन के चेहरे ग़म की वजह से बेरौनक और उदास होंगे, उन पर तक्लीफ़ की वजह से कालिख़ छाई होगी, इसलिए कि उन्हें यक़ीन हो जाएगा कि आज उन के लिए कोई ख़ैर नहीं, उन्हें ऐसी सज़ा दी जाएगी जो उन की रीढ़ की हड्डी को टुकड़े-टुक़ड़े कर देगी यानी वह इन्तेहाई सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तिला किये जाएँगे।

26-30 كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۝ وَقِيلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ۝ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ۝ وَالْتَفَّتِ
السَّاقُ بِالسَّاقِ ۝ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ۝

इस आयते करीमा में भी आयात नं० (1/2/3) की तरह़ मुश्रिकीन के मरने के बाद उठाए जाने के बारे में ग़लत अ़क़ीदे का इन्कार किया गया है और इन्सान को मुख़ातब कर के कहा गया है कि बात वैसी नहीं जैसी तुम समझते हो कि क़ियामत नहीं आएगी और तुम दोबारा ज़िन्दा नहीं किये जाओगे, तुम ज़रूर ज़िन्दा किये जाओगे।

अल्लाह तआ़ला ने फिर ताकीद के तौर पर फ़रमाया, जब तुम्हारी रुह़ ह़लक़ की हड्डी तक पहुँच जाएगी और तुम्हारे क़रीबी तुम्हारा ह़ाल देखकर बेबसी में पुकार उठेंगे कि कोई है जो फूंक झाड़ के ज़रिये इस की बीमारी और तक्लीफ़ को दूर कर दे और तुम्हें यक़ीन हो जाएगा कि अब तुम अपने घरवालों और क़रीबी लोगों को छोड़कर दुनिया से कूच कर जाओगे, तो उस दिन तुम आख़िरत की तरफ़ सिधार जाओगे, तुम्हारा जिस्म मिट्टी में दफ़्न कर दिया जाएगा और तुम्हारी रुह़ तुम्हारे रब के पास पहुँचा दी जाएगी, ताकि क़ियामत के दिन वह तुम्हें ज़िन्दा कर के तुम्हारे अन्जाम के बारे में अपना फ़ैसला फ़रमाए।

31-35 فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ ۝ وَلَٰكِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝ ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّىٰ ۝
أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ۝ ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ۝

इन्सान रोज़ अपनी आँखों से यह मन्ज़र देखता है कि लोग बेबसी की ह़ालत में मर जाते हैं और कोई उन्हें बचा नहीं पाता। उन की रुहें जिस्म से निकल कर अपने पैदा करने वाले के पास चली जाती हैं। होना तो यह चाहिए था कि इन्सान मौत से नसीह़त ह़ासिल करता और आख़िरत में आग के अ़ज़ाब से बचने की कोशिश करता, लेकिन वह ऐसा नहीं करता। ऐसे ही काफ़िर व घमण्डी और ग़ाफ़िल इन्सान के बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उस ने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, उस की नेअ़मतों का इन्कार किया, अपनी ज़िन्दगी में उस ने नमाज़ों का एहतिमाम नहीं किया।

दीने ह़क़ को झुठलाया और ताअ़त व बन्दगी की राह पर नहीं चला और इन तमाम गुनाहों के बावजूद उस का दिल सन्तुष्ट रहा और अल्लाह से डर कर कभी तौबः के नहीं सोचा, बल्कि घमण्ड के साथ अकड़ता हुआ अपने घरवालों के पास चला गया।

मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अबू जेहल का हाथ पकड़ा, फिर कहा कि तुम्हारे लिए बर्बादी ही बर्बादी है तो अबू जेहल ने कहा, तुम मुझे किस चीज़ की धमकी देते हो और तुम्हारा रब मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता, मैं इस वादी का इज़्ज़तदार आदमी हूँ तो यह आयतें नाज़िल हुईं और अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल की पुष्टि में उस काफ़िर व घमण्डी इन्सान का अन्जाम बता दिया कि उस के लिए हलाकत व बर्बादी है।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि शब्द أَوْلَىٰ (औला) को चार बार ज़िक्र करने का मक़्सद यह है कि उस के लिए हलाकत व बर्बादी ज़िन्दगी में है और मरने के बाद भी है और जिस दिन वह दोबारा उठाया जाएगा और जब जहन्नम में डाला जाएगा।

'नसई' ह़ाकिम, तब्रानी, इब्ने अल् मुन्ज़िर और इब्ने जरीर वग़ैरह ने ह़ज़रत सईद बिन जुबैर

से रिवायत की है कि मैंने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ औला लक फ़औला के बारे में पूछा, क्या रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने 'अबू जेहल' को यह बात अपनी तरफ़ से कही थी या अल्लाह ने हुक्म दिया था? तो उन्होंने कहा, आप (सल्ल०) ने अपनी तरफ़ से कहा था, फिर अल्लाह ने उसे क़ुर्आन में नाज़िल कर दिया।

इस रिवायत को 'हाकिम' ने 'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' की शर्त के मुताबिक़ सही कहा है।

36-40 أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَن يُتْرَكَ سُدًى ۝ أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّن مَّنِيٍّ يُمْنَىٰ ۝ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ۝
فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۝ أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ۝

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान की पैदाइश का मक़्सद बयान किया है, उस ने इसे अपनी ताअ़त व बन्दग़ी के लिए पैदा किया है, इसलिए वह यह न समझे कि इसे इस दुनिया में जानवरों की तरह़ आज़ाद छोड़ दिया गया है, बल्कि अल्लाह ने इसे विभिन्न मरहले (Stages) में बनाया है और क़ियामत के दिन इस से पूछा जाएगा और फिर अच्छे या बुरे आ़माल के मुताबिक़ उसे जज़ा या सज़ा दी जाएगी।

आदमी अगर अपनी पैदाइश की शुरुआ़त पर ग़ौर करे तो ईमान ले आएगा कि अल्लाह तआ़ला उसे दोबारा पैदा करने पर क़ादिर है।

अल्लाह ने फ़रमाया, उसे ख़ूब मालूम है कि वह वीर्य की एक ह़क़ीर बूँद था, जिसे उस के बाप की पीठ से निकाल कर उस की माँ के पेट में टपकाया गया, फिर कुछ दिनों के बाद वह मनी (वीर्य) ख़ून बन गया, फिर अल्लाह तआ़ला ने उसे गोश्त का एक टुकड़ा बनाया और अंगों को बनाकर उस टुकड़े में जान डाल दी, फिर उस मनी से पैदा किये हुए इन्सानों को अल्लाह ने (मर्दवज़न) दो क़िस्म के इन्सान बनाए।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, ऐ इन्सानों! जो अल्लाह वीर्य को विभिन्न मरहले (Stages) से गुज़ार कर तुम्हें पैदा करने पर क़ादिर है, क्या वह मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं? वह यक़ीनन इस पर क़ादिर है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

दुआ़ओं का तालिब
मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी
दारुल उलूम, नद्वतुल उ़लमा, लखनऊ।
10–12–2011

(भाग-76)

सूर-ए-दह्र

(सूरः नं. 76)

सूरः दह्र का संक्षिप्त परिचय

नाम– पहली आयत में ही शब्द الدَّهْر आया है, यही इस का नाम हो गया। इस का दूसरा नाम "سورة الإنسان" सूरतुल् इन्सान है और इसे "سورة الأمشاج" सूरतुल् अम्शाज और सूरः "هل أتى" हल अता भी कहते हैं।

नाज़िल होने का ज़माना–

अक्सर उ़लमा के नज़्दीक यह सूरः मदनी है और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से और 'इब्ने मरदूविया' ने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि यह सूरः मक्का में नाज़िल हुई थी। तीसरा क़ौल यह है कि शुरु सूरः से आयत नं० (22) तक मदनी है और इस के बाद से आख़िर सूरः तक मक्की है।

'इमाम मुस्लिम' ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जुमअ़ के दिन सुबह़ की नमाज़ में "الم سجده" अलिफ़ लाम मीम सज्दः और "هَلْ أَتَى عَلَى الإِنْسَانِ" हल अता अलल् इन्सान पढ़ते थे।

आयत नं० 1 से 31 तक

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُوْرًا ۝ اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا
بَصِيْرًا ۝ اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّ اِمَّا كَفُوْرًا ۝ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۠ وَ اَغْلٰلًا وَّ سَعِيْرًا ۝ اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ
كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۝ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝ يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَ يَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝
وَ يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّ يَتِيْمًا وَّ اَسِيْرًا ۝ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّ لَا شُكُوْرًا ۝ اِنَّا نَخَافُ
مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ۝ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَ لَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّ سُرُوْرًا ۝ وَ جَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّ حَرِيْرًا ۝
مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآىِٕكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّ لَا زَمْهَرِيْرًا ۝ وَ دَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَ ذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۝
وَ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّ اَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ۝ قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ۝ وَ يُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا
كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۝ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ۝ وَ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا
مَّنْثُوْرًا ۝ وَ اِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّ مُلْكًا كَبِيْرًا ۝ عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّ اِسْتَبْرَقٌ ۫ وَّ حُلُّوْۤا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَ سَقٰىهُمْ
رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ۝ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّ كَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۝ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ۝ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ
رَبِّكَ وَ لَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ۝ وَ اذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا ۝ وَ مِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَ سَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ۝ اِنَّ
هٰۤؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَ يَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ۝ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَ شَدَدْنَاۤ اَسْرَهُمْ ۚ وَ اِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَاۤ اَمْثَالَهُمْ
تَبْدِيْلًا ۝ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝ وَ مَا تَشَآءُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَ الظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝

अनुवाद-

(1) बेशक इन्सान पर एक ऐसा वक्त भी आ चुका है, जिसमें कि वह कोई ऐसी चीज़ न था, ''जिसका ज़िक्र किया जाता।'' (2) 'हमने' इन्सान को एक मिले-जुले नुत्फ़ा (वीर्य) से पैदा किया, ताकि उसे आज़माएँ, तो 'हमने' उसे सुनने, देखने वाला बनाया। (3) 'हमने' उसे राह दिखाया, तो वह (चाहे) शुक्रगुज़ार हो या नाशुक्रा हो। (4) 'हमने' इन्कार करने वालों के लिए ज़ंजीरें और तौक़ और दहकती हुई आग तैयार कर रखी है। (5) भले लोग ऐसे जाम से पिएँगे जिसमें काफ़ूर मिला हुआ होगा; (6) एक ऐसा स्रोत होगा! जिससे अल्लाह के बन्दे पिएँगे, इस तरह कि उसे बहाकर (नहरें जहां चाहेगे) ले जाएँगे; (7) यह लोग नज़र (मन्नत) पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं, जिसकी मुसीबत हर ओर से फैली हुई होगी; (8) और इसके बावजूद कि उनको खुद खाने की ख्वाहिश है, मिस्कीनों को, और यतीमों को, और कैदियों को खिलाते हैं। (9) 'हम' तुम्हें केवल अल्लाह को राज़ी करने के लिए खिलाते हैं, 'हम' तुमसे कोई बदला या शुक्रिया नहीं चाहते। (10) 'हम' अपने 'रब' से उस दिन से डरते हैं जिस दिन कि सख़्त परेशानी छायी होगी। (11) तो अल्लाह उनको उस दिन की मुसीबत से बचा लेगा और ताज़गी और खुशी देगा; (12) और उन्होंने जो सब्र किया, उसके बदले में उन्हें जन्नत और रेशम (का लिबास) अ़ता किया जाएगा; (13) वहाँ वे तख़्तों पर तकिया लगाए बैठे

होंगे, न उन्हें धूप की सख़्ती महसूस होगी और न सख़्त सर्दी की तेज़ी; (14) और उन पर उस (बाग़) के साये क़रीब होंगे, और उसके फल झुके हुए होंगे, (15) उनके आगे चांदी के बरतन और शीशे के गिलास गर्दिश में होंगे (16) शीशे भी चाँदी के जो ठीक अन्दाज़ा करके बनाए गये होंगे; (17) और वहाँ वे एक और जाम पिएँगे जिसमें ज़न्जबील (सोंठ) मिली हुई होगी। (18) यह एक स्रोत होगा, जिसका नाम सल-सबील है। (19) और उनकी सेवा में ऐसे लड़के भाग दौड़ कर रहे होंगे जो हमेशा उसी आयु के रहेंगे, जब तुम उन्हें देखोगे तो समझोगे कि बिखरे हुए मोती हैं; (20) और जब तुम देखोगे तो बहुत सी नेअ़मतें और विशाल राज्य दिखाई देगा; (21) उनके ऊपर हरे बारीक रेशमी कपड़े होंगे, और उन्हें चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे और उनका रब उन्हें शराबे- तहूर (पवित्र पेय) पिलाएगा। (22) ''यह है तुम्हारा बदला और तुम्हारी कोशिश का शुक्रिया।'' (23) 'हमने' आप पर कुर्आन उतारा थोड़ा-थोड़ा कर के; (24) तो आप अपने 'रब' के हुक्म और फ़ैसले के लिए सब्र से काम लीजिए, और उन लोगों में से किसी गुनहगार, या नाशुक्रे की बात न मानिए; (25) और अपने रब का ज़िक्र कीजिए सुबह और शाम, (26) और रात के कुछ हिस्से में भी 'उसे' सज्दः कीजिए, और रात को देर तक उसकी तस्बीह़ कीजिए। (27) यह लोग जल्द ह़ासिल होने वाली चीज़ (दुनिया) से मुहब्बत करते हैं, और एक भारी दिन को अपने पीछे छोड़ देते हैं। (28) 'हमने' ही उनको पैदा किया है, और उनके जोड़ मज़बूत बनाए, और 'हम' जब चाहें उनके जैसे लोग बदल दें। (29) यह एक नसीह़त है, तो जो चाहे अपने रब की ओर जाने की राह अपना ले; (30) और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते जब तक कि अल्लाह ही न चाहे, बेशक अल्लाह इ़ल्म वाला, ह़िकमत वाला है। (31) 'वह' जिसे चाहता है अपनी रह़मत में दाख़िल करता है और ज़ालिमों के लिए उसने दुःख देने वाला अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

आयत नं० 1 से 31 तक की व्याख्या

1 هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْئًا مَّذْكُورًا ۝

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को उस की कमज़ोरी और ह़िक़ारत याद दिलाई है कि उस का बाप (आदम) चालीस साल तक मिट्टी का एक पुत्‌ला बना पड़ा रहा। एक दूसरे क़ौल के मुताबिक़ एक सौ बीस साल तक मिट्टी, गारे और ठीकरे से गुज़रता रहा, तब जाकर अल्लाह तआ़ला ने उस में रुह़ डाली।

इस पूरी मुद्दत में वह मिट्टी का एक तोदा रहा, अल्लाह के सिवा किसी को कुछ मालूम न था कि उस का तोदा क्या होगा और उस का क्या नाम होगा, फिर अल्लाह तआ़ला ने उस में रुह़ फूंकी और उसे इन्सान बनाया।

2-3 إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝ إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ۝

अल्लाह तआ़ला ने फिर आदम की औलाद को ग़न्दे और ह़क़ीर पानी के एक मिले जुले क़त्‌रे से पैदा किया।

"امشاج" अम्शाज़ से मुराद वह मख़्लूत है जो मर्द और औ़रत दोनों की मनी (वीर्य) से बनता है।

मर्द की मनी सफ़ेद और गाढ़ी होती है और औरत की मनी पीली और पतली होती है, दोनों के मिलने से इन्सान की पैदाइश होती है।

अल्लाह तआला ने आदमी को अह़काम व शरीअ़त का पाबन्द बनाया है कि उसे आज़्माए और देखे कि वह अपने रब का फ़रमाँबरदार बन्दा बनता है या नाफ़रमानी करता है और उसे सुनने और देखने की कुव्वत दी और अ़क्ल से नवाज़ा, ताकि वह ख़ैर व शर और हिदायत व गुमराही के दर्मियान तमीज़ करे और राहे हिदायत पर चल कर या तो अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा बने या उस से मुँह मोड़ कर नाशुक्री करे और हलाकत व बर्बादी की राह पर चल पड़े।

4 إِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِينَ سَلٰسِلَا۟ وَأَغْلٰلًا وَسَعِيرًا۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने उस अ़ज़ाब की ख़बर दी है जो उस ने काफ़िरों के लिए तैयार कर रखा है। फ़रमाया कि हम ने काफ़िरों के लिए जंज़ीरें, बेड़ियाँ और भड़कती आग तैयार कर रखी है। सूरः अल् मोमिन आयात नं० (71/72) में फ़रमाया हैः-

إِذِ الْأَغْلٰلُ فِىٓ أَعْنٰقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ يُسْحَبُونَ۝ فِى الْحَمِيمِ ثُمَّ فِى النَّارِ يُسْجَرُونَ۝

“जब उन की गर्दनों में तौक़ होंगे और जंज़ीरें होंगी, घसीटे जाएँगे खौलते हुए पानी में, फिर जहन्नम की आग में जलाए जाएँगे”।

5-6 إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا۝ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने उन नेअ़मतों की ख़बर दी है जो उस ने नेक लोगों के लिए तैयार कर रखी है। फ़रमाया कि ऐसे लोग निहायत लज़ीज़ शराब पियेंगे जिस में काफूर मिला होगा, ताकि उसे ठंडा कर दे और उस की तेज़ी को ख़त्म कर दे और यह काफूर निहायत ही लज़ीज़ होगा और दुनियावी काफूर की ख़राबियों से पाक होगा।

और वह लज़ीज़ शराब कभी ख़त्म नहीं होगी, इसलिए कि वह हमेशा जारी रहने वाला चश्मा (स्रोत) होगा, जिसे अहले जन्नत अपनी मर्ज़ी और ख़्वाहिश के मुताबिक़ जब और जहाँ चाहेंगे जारी कर लेंगे। इधर उन का इरादा होगा और उधर एक सिकेण्ड में उन के सामने जारी हो जाएगा।

7-9 يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا۝ وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا
وَأَسِيرًا۝ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَآءً وَلَا شُكُورًا۝

अहले जन्नत को यह नेअ़मतें इस वजह से मिलेंगी कि वह जिन नेक आमाल को अपने ऊपर वाजिब कर लेते थे, उन्हें ज़रूर पूरा करते थे और यह दलील है इस बात की कि वह अल्लाह की ओर से वाजिब किये हुए नेक आमाल को बदरजे औला पूरा करते थे और उस दिन के अ़ज़ाब से डरते थे जिस का शर ज़मीन व आसमान को भर देगा। उसी ख़ौफ़ का नतीजा था कि वह हर उस बुरे अ़मल से दूर थे, जो क़ियामत के दिन अ़ज़ाब का ज़रिया बना।

वह मिस्कीन, यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते थे, बावजूद यह कि उन के पास खाना कम होता था या मतलब यह है कि वह अल्लाह को राज़ी करने के लिए और उस की मुह़ब्बत ह़ासिल करने के लिए मिस्कीन, यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते थे। इस की ताईद इस के बाद वाली आयत नं० (9) से होती है जिस में अल्लाह तआ़ला ने खाना खिलाने वालों की बात नक़्ल की है, वह जिन्हें खाना खिलाते हैं उन से कह देते हैं कि हम तो सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा ह़ासिल करने के लिए तुम्हें खाना खिला रहे हैं, हम को तुम से इस का न कोई बदला चाहिए और न इस के लिए हम यह चाहते हैं कि तुम हमारी तअ़रीफ़ करो।

10 إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ﴿١٠﴾

वह अहले जन्नत दुनिया में यह भी कहते थे कि हम अपने रब की तरफ़ से उस दिन से डरते हैं जो अपनी हौलनाकियों की वजह से बड़ा ही सख़्त दिन होगा।

11-14 فَوَقَاهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّاهُمْ نَضْرَةً وَسُرُورًا ﴿١١﴾ وَجَزَاهُم بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ﴿١٢﴾
مُّتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۖ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ﴿١٣﴾ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا
وَذُلِّلَتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ﴿١٤﴾

अल्लाह तआ़ला इन नेकियों की वजह से उन्हें उस दिन के अ़ज़ाब से बचा लेगा और फ़रिश्ते आगे बढ़ कर उन से कहेंगे कि यही वह दिन है जिस का तुम से दुनिया में वादा किया जाता था। अल्लाह तआ़ला उन का सम्मान करेगा, उन के चेहरे पर खुशी और उन के दिलों को सन्तुष्ट करेगा और हर तरह़ की नेअ़मतों से नवाज़ेगा।

चूंकि यह सब्र के साथ अल्लाह की बन्दग़ी करते रहे, गुनाहों से परहेज़ करते रहे, दअ़वत इलल्लाह का काम करते रहे और उस की राह की तक्लीफ़ों को बर्दाश्त करते रहे, इसलिए अल्लाह तआ़ला उन्हें जन्नत देगा और पहनने के लिए रेशम के कपड़े देगा, जिसे उन्होंने दुनिया में अल्लाह का हुक्म मानते हुए नहीं पहना था।

वह अहले जन्नत उन जन्नतों में गऊ तकियों पर टेक लगाए बड़े इत्मिनान व राह़त के साथ बैठे होंगे, वहाँ न वह सूरज की ग़र्मी को मह़सूस करेंगे, न सख़्त सर्दी को, बल्कि हर वक़्त उन के सरों पर घना साया होगा।

वहाँ के दरख़्त हर वक़्त उन पर साया किये रहेंगे और उन के फल हर वक़्त और हर ह़ाल में उन के क़ब्ज़े में होंगे, कोई चीज़ उन के हाथों को उन तक पहुँचने से नहीं रोकेगी।

15-16 وَيُطَافُ عَلَيْهِم بِآنِيَةٍ مِّن فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرَا ﴿١٥﴾ قَوَارِيرَا مِن فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ﴿١٦﴾

जब अहले जन्नत को पीने की ख़्वाहिश होगी तो छोटी उ़म्र के बच्चे और ख़िद्मतगार चाँदी के बर्तन के लिए उन के पास पहुँच जाएँगे, उन के हाथों में शीशे के प्याले होंगे और वह शीशे चाँदी के बने होंगे,

यानी वह चाँदी शीशे की तरह़ साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ होगी और वह बर्तन और प्याले उसी शक्ल के होंगे जिस की वह ख़्वाहिश करेंगे, न उस से बड़े होंगे और न छोटे यानी उन के ज़ौक़ व ख़्वाहिश की पूरी रिआ़यत होगी, ताकि पीते वक़्त उन को इन्तेहाई लज़्ज़त व ख़ुशी मिले।

17-18 وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا ۝ عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّىٰ سَلْسَبِيلًا ۝

अहले जन्नत को जन्नत में ऐसी शराब पिलाई जाएगी जिस में ज़न्जबील मिली होगी। अ़रब के लोग ज़न्जबील की ख़ुशबू के लिए उसे शराब में मिलाकर पीना पसन्द करते थे और यह ज़न्जबील मिली शराब जन्नत में एक 'सलूसबील' नामी स्रोत से जारी रहेगी, जिस की शराब निहायत लज़ीज़ होगी।

19 وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۚ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا ۝

अहले जन्नत की ख़िद्‌मत के लिए हर वक़्त उन के इर्द-गिर्द छोटी उ़म्र के बच्चे उन के इशारों के मुन्तज़िर रहेंगे। वह बच्चे हमेशा ख़ूबसूरत और शादाब रहेंगे, अल्लाह तआ़ला उन्हें जन्नत में ही पैदा करेगा, न वह बड़ी उ़म्र के होंगे, न ही उन का हुस्न व जमाल कभी बदलेगा। जब अहले जन्नत की उन पर नज़र पड़ेगी तो वह बड़े हुस्न व जमाल और चेहरों की बेइन्तिहा शादाबी की वजह से ऐसे लगेंगे जैसे-साफ़ शफ़्फ़ाफ़ फ़र्श पर बिखरे मोती के दाने हों।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि उन बच्चों को बिखरे हुए मोतियों से इस मुनासिबत से कहा गया है कि वह अहले जन्नत की ख़िद्‌मत के लिए हर तरफ़ फैले होंगे और तेज़ी के साथ उन की ख़िद्‌मत कर रहे होंगे, बरख़िलाफ़ 'हूरे ऐ़न' के जो सीप में बन्द मोतियों की तरह़ बताया गया है, इसलिए कि वह ख़िद्‌मत के लिए नहीं बल्कि अहले जन्नत की लज़्ज़त के लिए होंगी।

20 وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ۝

नबी करीम (सल्ल०) से कहा जा रहा है कि आप जब जन्नत और अहले जन्नत पर निगाह डालेंगे तो वहाँ लातअ़दाद (असंख्य) नेअ़मतें इतनी दूर तक फैली हुई देखेंगे जिस की सीमाओं का आप अन्दाज़ा नहीं लगा पाएँगे। हर जन्नती के लिए अलग-अलग ख़ूबसूरत मह़ल्लात व बिल्डिंगे, सरसब्ज़ व शादाब बाग़ात, लज़ीज़ तरीन मेवे, बहती नहरें, चहचहाती चिड़ियाँ और बीवियाँ होंगी और उन के इर्द-गिर्द फैले हुए ग़िलमान (सेवक) होंगे, जो ख़िद्‌मत के लिए उन के इशारों के मुन्तज़िर रहेंगे और इन तमाम नेअ़मतों से बड़ी नेअ़मत अहले जन्नत को यह मिलेगी कि उन का रब उन से राज़ी होगा, उन्हें उस का क़ुर्ब ह़ासिल होगा और वह जन्नत से कभी नहीं निकाले जाएँगे।

21-22 عَالِيَهُمْ ثِيَابُ سُندُسٍ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ ۖ وَحُلُّوا أَسَاوِرَ مِن فِضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ۝
إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُم مَّشْكُورًا ۝

अहले जन्नत ऐसे लिबास पहने होंगे जो सब्ज़ बारीक रेशम के बने हुए होंगे और कुछ दूसरे दबीज़

रेशम के बने होंगे और वह चाँदी के कंगन पहने होंगे। यहाँ अल्लाह तआ़ला ने ज़िक्र फ़रमाया कि अहले जन्नत चाँदी के कंगन पहने होंगे और सूरः फ़ातिर आयत नं० (23) में फ़रमाया है कि वह सोने के कंगन पहने होंगे और सूरः ह़ज्ज आयत नं० (23) में फ़रमाया, कि वह सोने और मोती के बने कंगन पहने होंगे, तो इन आयात का मतलब यह है कि अहले जन्नत के कंगन तीनों तरह़ के होंगे और अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक पहना करेंगे।

अहले जन्नत को उन का रब एक दूसरे क़िस्म की शराब भी पिलाएगा, जिस का नाम "**شراب طهور**" 'शराबे तहूर' होगा, जो न दुनिया की शराब की तरह़ नापाक होगी और न ही उस में किसी क़िस्म की ख़राबी होगी।

जब अहले जन्नत इन तमाम नेअ़मतों को अपनी आँखों से देख लेंगे और इन से फ़ायदा उठाने लगेंगे, तो इन से कहा जाएगा कि यह सब कुछ तुम्हारे ईमान व तक़्वा का बदला है और तुम्हारे नेक अ़मल को अल्लाह ने ज़ाया नहीं किया है।

23-26 إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ﴿٢٣﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا أَوْ كَفُورًا ﴿٢٤﴾
وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٢٥﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ﴿٢٦﴾

मुफ़स्सिरीन ने नक़्ल किया है कि आयत नं० (24) में آثِمًا 'आसिमन' से मुराद 'उ़त्बा बिन रबीआ़' और كَفُورًا 'कफ़ूरा' से मुराद 'वलीद बिन मुग़ीरा' है। इन दोनों ने नबी करीम (सल्ल०) से कहा था कि तुम लोगों को दअ़वते इस्लाम देना बन्द कर दो, हम तुम्हें मालामाल कर देंगे और अपनी ख़ूबसूरत तरीन औ़रतों से तुम्हारी शादी कर देंगे तो अल्लाह तआ़ला ने إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا इस के बाद की आयतें नाज़िल फ़रमाईं।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इस क़ुर्आन को हम ने आप पर नाज़िल किया है, इसे आप ने नहीं गढ़ा है जैसा कि आप पर आरोप धरते हैं। इसलिए आप अपने रब की पैग़म्बरी की ज़िम्मेदारियों को क़ुबूल कीजिए और उसे लोगों तक पहुँचाइए और मुश्रिकीने क़ुरैश में 'अबू जेहल' और 'उ़त्बा बिन रबीआ़' जैसे गुनाहगारों और 'वलीद बिन मुग़ीरा' जैसे नाफ़रमानों और नाशुक्रों की बात न मानिए, अपनी दअ़वत को लेकर आगे बढ़ते रहिए और अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए, तस्बीह़ व ज़िक्र में मश्ग़ूल रहिए और हाथ फैला कर उस के सामने गिरया वज़ारी कीजिए और रातों में उठ कर तहज्जुद की नमाज़ पढ़िए और देर तक अपने रब की पाकी बयान करते रहिए।

नमाज़ अल्लाह की मदद ह़ासिल करने का बेहतरीन ज़रिया है। नबी करीम (सल्ल०) को जब कोई परेशानी होती या कोई अहम मामला पेश आता, तो आप फ़ौरन नमाज़ पढ़ने लगते।

सूरः बक़रः आयत नं० (45) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हैः-

وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ और सब्र और नमाज़ के ज़रिये अल्लाह की मदद तलब करो"।

सूरः क़ाफ़ आयत नं० (40) में फ़रमाया है وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ "और रात के कुछ ह़िस्से में

अल्लाह की तस्बीह़ कीजिए और नमाज़ों के बाद भी" रात में अल्लाह की तस्बीह़ करने से मुराद तहज्जुद की नमाज़ है।

27 إِنَّ هَٰؤُلَآءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۝

कुफ़्फ़ारे मक्का और दूसरे काफ़िरों के बारे में कहा जा रहा है कि यह लोग दुनिया के वक़्ती फ़ायदों को पसन्द करते हैं और उन्हीं को ह़ासिल करने के लिए उन की सारी मेह़नत है और क़ियामत के दिन की हौलनाकियों को भूल बैठे हैं और दुनिया की तरफ़ ऐसी दौड़ लगा रहे हैं कि आख़िरत की तरफ़ पीछे मुड़ कर देखते भी नहीं यानी जैसे कि दुनिया के लिए पैदा ही किये गये हैं और इन्हें मौत आनी ही नहीं है।

28 نَّحْنُ خَلَقْنَٰهُمْ وَشَدَدْنَآ أَسْرَهُمْ ۖ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ أَمْثَٰلَهُمْ تَبْدِيلًا ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इन्हें हम ने पैदा किया है और इन के जिस्मों में रंग और हड्डियाँ पैदा कर के इन्हें मज़बूत बनाया है और जब इन्हें पहली बार ऐसा बनाया है तो यक़ीनन हम इन्हें दोबारा पैदा करने पर क़ादिर हैं, ताकि इन के आ़माल का इन्हें बदला दें और इस पर क़ादिर हैं कि इन्हें हलाक कर दें और इन की जगह इन्हीं जैसी दूसरी क़ौम को ले आएँ या इन की सूरतों को बिगाड़ कर के इन्हें बुरी शक्ल का बना दें।

29-30 إِنَّ هَٰذِهِۦ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَآءَ ٱتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ سَبِيلًا ۝ وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ
أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

अल्लाह तआ़ला ने नसीह़तों से भरी इस सूरः के आख़िर में फ़रमाया कि यह आयतें नसीह़त वाली हैं, अब जो चाहे ईमान और बन्दग़ी की राह पर चल कर अपने आप को राज़ी कर ले, ताकि आख़िरत में कामियाब हो और अ़ज़ाब से बच जाए।

आयत नं० (30) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि लोगों! सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की तुम्हारी चाहत अल्लाह की चाहत के अधीन है यानी जब अल्लाह तआ़ला तुम्हें हिदायत देना चाहेगा और तुम्हें भलाई की तौफ़ीक़ देगा, तभी तुम इस राह पर चल सकोगे।

31 يُدْخِلُ مَن يَشَآءُ فِى رَحْمَتِهِۦ ۚ وَٱلظَّٰلِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًۢا ۝

इसमें अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह जिसे चाहता है अपनी रह़मत में दाख़िल कर देता है और उस की चाहत में कोई दख़ल अन्दाज़ नहीं हो सकता और ज़ालिमों के लिए उस ने दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार किया है, उस के फ़ैसलों को कोई नहीं बदल सकता।

इसलिए बन्दों को चाहिए कि वह अपने रब से उस की रह़मत का सवाल करें, उस से ख़ैर की तौफ़ीक़ और आख़िरत के अ़ज़ाब से निजात माँगे।

(भाग-77)

सूर-ए-मुर्सलात

(सूरः नं. 77)

सूरः मुर्सलात का संक्षिप्त परिचय

नाम– पहली आयत में ही "المرسلات" अलमुर्सलात का शब्द आया है। इसलिए यही इस सूरः का नाम हो गया। इस का दूसरा नाम "سورة العُرف" सूरतुल् उर्फ़ भी है, शब्द "العُرف" 'उर्फ़' भी पहली ही आयत में आया है।

नाज़िल होने का ज़माना–

यह सूरः मक्की है। 'क़तादा' ने केवल आयत नं० (48) وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ को मदनी कहा है।

'इब्ने मरदूविया' और 'बैहक़ी' ने 'हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा' से रिवायत की है कि सूरः मुर्सलात मक्का में नाज़िल हुई थी। 'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' आदि ने इब्ने मस्ऊद (रज़ि०) से रिवायत की है कि हम रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ 'मिना' के एक ग़ार में थे, तो सूरः وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا वल्मुर्सलाते उ़र्फ़ा नाज़िल हुई। रसूलुल्लाह (सल्ल०) पढ़ते जाते थे और मैं उन से याद करता जाता था।

आयत नं० 1 से 50 तक

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۝١ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۝٢ وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۝٣ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۝٤ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۝٥ عُذْرًا
اَوْ نُذْرًا ۝٦ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ۝٧ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۝٨ وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۝٩ وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۝١٠ وَاِذَا الرُّسُلُ
اُقِّتَتْ ۝١١ لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ۝١٢ لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۝١٣ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۝١٤ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١٥ اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٦
ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ۝١٧ كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ۝١٨ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١٩ اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝٢٠
فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝٢١ اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝٢٢ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ۝٢٣ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٢٤ اَلَمْ نَجْعَلِ
الْاَرْضَ كِفَاتًا ۝٢٥ اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ۝٢٦ وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ۝٢٧ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٢٨
اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝٢٩ اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ۝٣٠ لَا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ اللَّهَبِ ۝٣١ اِنَّهَا
تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ۝٣٢ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ۝٣٣ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٣٤ هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ۝٣٥ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ۝٣٦
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٣٧ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ۝٣٨ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ۝٣٩ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٤٠ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ۝٤١ وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ۝٤٢ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٤٣
اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝٤٤ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٤٥ كُلُوْا وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ۝٤٦ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٤٧ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ ۝٤٨ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٤٩ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ۝٥٠

अनुवाद-

(1) उन हवाओं की क़सम! जो लगातार भेजी जाती हैं, (2) तो खूब तेज़ हो जाती हैं, (3) और (बादलों को) उठाकर फैलाती हैं, (4) फिर उनको फाड़ कर अलग करती हैं, (5) फिर याद दिहानी डालती हैं, (अर्थात फ़रिश्तों की क़सम! जो वह्य लाते हैं), (6) हुज्जत क़ायम करने या ख़बरदार करने के लिए (ताकि उज़्र दूर कर दिया जाए), (7) जिसका वादा तुमसे किया जा रहा है वह होकर रहेगा। (8) तो जब सितारे बेनूर कर दिये जाएँगे, (9) और जब आसमान फट जाएगा, (10) और पहाड़ चूर-चूर कर दिये जाएँगे, (11) और जब रसूलों को इकट्ठा किया जाएगा। (12) किस दिन के लिए (उनका मामला) टाला गया है? (13) फ़ैसले के दिन के लिए, (14) और तुम्हें क्या मालूम कि फ़ैसले का दिन क्या है? (15) तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (16) क्या 'हमने' अगले लोगों को तबाह नहीं किया? (17) फिर बाद वालों को उनके पीछे तबाह करते रहे? (18) मुजरिमों के साथ 'हम' ऐसा ही मामला करते हैं। (19) तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए, (20) क्या 'हमने' तुमको मामूली पानी से पैदा नहीं किया, (21) फिर 'हमने' उसे एक सुरक्षित जगह में रखा, (22) एक निश्चित अवधि तक? (23) तो 'हमने' एक योजना बनायी (और) 'हम' क्या ही खूब योजना बनाने वाले हैं? (24) तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए; (25) क्या 'हमने' धरती को समेटने वाली नहीं बनायी (26) ज़िन्दों को और मुर्दों को (27) और उसमें ऊँचे-ऊँचे पहाड़ जमाए और तुम लोगों को मीठा पानी पिलाया? (28) तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए, (29)

चलो! उस चीज़ की ओर जिसे तुम झुठलाते थे, (30) चलो तीन शाखाओं वाली छाया की ओर (31) जिसमें न छांव है और न शोलों की लपट से बचाव (32) वह आग महल की तरह ऊँची चिंगारियाँ फेंकती होगी- (33) मानो वे ज़र्द (पीले) ऊँट हैं। (34) तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए (35) यह वह दिन होगा कि होंट तक न हिला सकेंगे, (36) और न उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि उज़्र (कारण) पेश कर सकें; (37) तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए, (38) ''यही फ़ैसले का दिन है, 'हमने' तुम को इकट्ठा कर दिया है और तुम से पहले के लोगों को भी, (39) अगर तुम कोई चाल चल सकते हो तो मेरे मुक़ाबले में चल कर देखो। (40) तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए, (41) बेशक, परहेज़गार सायों और स्रोतों में होंगे; (42) और उन फलों के बीच जो वे चाहें। (43) ''खाओ- पियो मज़े से, उन कामों के बदले में जो तुम करते रहे हो;'' (44) 'हम' अच्छे काम करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं; (45) तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए; (46) ''खाओ और मज़े उड़ा लो, थोड़ा सा, तुम बेशक मुजरिम हो!'' (47) तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए; (48) और जब उनसे कहा जाता है, ''झुको, तो नहीं झुकते।'' (49) तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए; (50) अब इसके बाद यह किस कलाम (वाणी) पर ईमान लाएँगे?

आयत नं० 1 से 50 तक की व्याख्या

1-6 وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۙ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۙ وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۙ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۙ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۙ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۙ

जम्हूर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا इस से मुराद 'खुशगवार हवा' है। बाज़ लोगों ने कहा है कि इस से मुराद 'फ़रिश्ते' हैं और बाज़ ने 'अम्बिया' मुराद लिया है। पहले क़ौल (कथन) के मुताबिक़ अल्लाह तआ़ला ने उन हवाओं की क़सम खाई है जिन्हें अल्लाह दुनिया में अपने बाज़ हुक्मों के लागू करने के लिए भेजता है।

दूसरे क़ौल के मुताबिक़ उन फ़रिश्तों की क़सम खाई है जो वह्य इलाही और दूसरे हुक्मों के साथ दुनिया में भेजे जाते हैं और तीसरे क़ौल के मुताबिक़ अल्लाह तआ़ला ने रसूलों की क़सम खाई, जिन्हें वह अपने बन्दों के पास पैग़ाम देने के लिए भेजता था।

عُرْفًا उ़र्फ़ा का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला उन्हें भलाई के कामों के लिए भेजता है या मतलब यह है कि अल्लाह उन्हें एक के बाद दूसरे को भेजता है।

"العاصفات" अलुआ़सिफ़ात से मुराद तेज़ हवाएँ हैं और "الناشرات" अन्नाशिरात से मुराद या तो हवाएँ हैं जो बादल और बारिश को फ़िज़ा में फैला देती हैं। अल्लाह तआ़ला ने सूरः रूम आयत नं० (48) में फ़रमाया हैः-

اَللّٰهُ الَّذِیْ یُرْسِلُ الرِّیٰحَ فَتُثِیْرُ سَحَابًا فَیَبْسُطُهٗ فِی السَّمَآءِ "अल्लाह ही हवाओं को भेजता है, जो बादल को बिखेर देती हैं, फिर अल्लाह तआ़ला उसे आसमान में फैला देता है" या इस से मुराद फ़रिश्ते हैं जो ज़मीन में शरीअ़त के हुक्मों और इ़ल्म व हिक्मत व नुबूव्वत व हिदायत को फैला देते हैं।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर के नज़्दीक यही बेहतर है कि अल् मुर्सलात, अल् अस्साफ़्फ़ात और अल् नाशिरात तीनों से मुराद हवाएँ हैं।

"الفارقات" अल् फ़ारिक़ात से मुराद वह फ़रिश्ते हैं जो वह्य लेकर हक़ व बातिल और हलाल व हराम के दर्मियान फ़र्क़ करने के लिए आसमान से ज़मीन पर आते हैं या वह क़ुर्आनी आयात हैं जो हक़ व बातिल के दर्मियान फ़र्क़ करती हैं या वह हवाएँ हैं जो बादल को चारों तरफ़ बिखेर देती हैं।

"المقيات" अल् मिक़्यात से मुराद वह फ़रिश्ते हैं जो अल्लाह की उस वह्य को अम्बिया-ए-किराम तक पहुँचाते हैं जिन से मक़्सूद इन्सानों के लिए दीने हक़ को बता देना होता है, ताकि गुमराही के लिए किसी के पास कोई उज़्र बाक़ी न रहे। मक़्सूद उन्हें अल्लाह के अ़ज़ाब से डरा देना होता है, ताकि अल्लाह की नाफ़रमानी न करें।

7 إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعٌ ۝

ऊपर की आयतों में अल्लाह तआ़ला ने अपनी चार क़िस्म की मख़्लूक़ात की क़समें खाने के बाद इस आयते करीमा में वह बात बयान की है, जिस की सदाक़त लोगों के दिलों में बैठाने के लिए इतनी सारी क़समें खाई हैं।

फ़रमाया कि जिस क़ियामत के आने का तुम से वादा किया जाता है, यक़ीनन वह आकर रहेगी।

सूरः अल् ज़ारियात आयत नं० (6) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ "और बेशक क़ियामत ज़रूर आएगी"।

8-11 فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ ۝ وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ۝ وَإِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۝ وَإِذَا الرُّسُلُ أُقِّتَتْ ۝

जब क़ियामत आ जाएगी तो सितारे बिखर जाएँगे और अपनी रौशनी खो देंगे और आसमान फट जाएँगे और उस के आस-पास झुक जाएँगे और पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे और ग़ुबार बन कर हवा में उड़ने लगेंगे। अल्लाह तआ़ला ने सूरः ताहा आयत (105) में फ़रमाया हैः-

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا

"वह आप से पहाड़ों के बारे में पूछते हैं, तो आप कह दीजिए कि उन्हें मेरा रब चूरा-चूरा कर के उड़ा देगा"।

और उस दिन अम्बिया के लिए मुक़र्रर किया हुआ वक़्त आ जाएगा, ताकि उन के और उन की उम्मतों के दर्मियान फ़ैसला कर दिया जाए।

12-15 لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ ۝ لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

नबियों और रसूलों के लिए फ़ैसले का मुक़र्रर किया हुआ वक़्त एक बहुत ही हैबत नाक और ख़तरनाक दिन तक रोक दिया गया। यह वह दिन होगा जब काफ़िरों को रुस्वा किया जाएगा और वह सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तिला किये जाएँगे और मोमिनों को इ़ज़्ज़त मिलेगी और उन्हें जन्नत में दाख़िल किया

जाएगा और उस दिन आख़िरत से मुतअ़ल्लिक़ वह तमाम बातें खुल कर सामने आ जाएँगी जिन से अम्बिया-ए-किराम अपनी क़ौमों को डराया करते थे।

कु़र्आन करीम ने لِاَیِّ یَوْمٍ اُجِّلَتْ फिर कहा है لِیَوْمِ الْفَصْلِ यानी अम्बिया व रसूलों के लिए मुक़र्रर किया हुआ वक़्त उस दिन तक टाल दिया गया है जिस दिन तमाम मख़्लूक़ात के दर्मियान फ़ैसला किया जाएगा और फिर उस दिन की हैबत दिल में बैठाने के लिए फ़रमायाः-

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ

"तुम्हें क्या मालूम कि फ़ैसले का वह दिन कैसा (हैबत नाक और डरावना दिन) होगा" यानी वह निहायत ही ख़तरनाक दिन होगा। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो लोग दुनिया में उस फ़ैसले के दिन को झुठलाते हैं, उन के लिए उस दिन हलाकत व बर्बादी होगी।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन आयात नं० (10/11) में फ़रमाया हैः-

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝

"उस दिन झुठलाने वालों के लिए बड़ी ख़राबी होगी, जो क़ियामत के दिन को झुठलाते हैं"।

16-19 اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ۝ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने उन काफ़िर क़ौमों और मोमिनों का ज़िक्र किया है जो काफ़िर क़ौम अपने गुनाहों की वजह से हलाक कर दी गईं। फ़रमाया, क्या हम ने उन क़ौमों को हलाक नहीं कर दिया जिन्होंने हमारे रसूलों को झुठलाया और हमारी आयतों का इन्कार किया?

जैसे क़ौमे नूह़, क़ौमे आ़द और क़ौमे समूद। उन के बाद आने वाली जिन क़ौमों का भी वही तरीक़ा रहा, हम ने उन्हें नहीं छोड़ा और हम मुजरिमों के साथ हमेशा ऐसा ही बर्ताव करते आए हैं।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इन आयात में मुजरिम क़ुरैश के लिए बहुत बड़ी धमकी थी, कि अगर उन्होंने अपनी ह़ालत नहीं बदली तो हो सकता है कि उन्हें भी हलाक कर दिया जाए। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने आयत नं० (19) में फ़रमाया कि हलाकत व बर्बादी है उन मुजरिमों के लिए जो अल्लाह के रसूल और उस की आयतों का इन्कार करते हैं।

20-24 اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝ اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝

इन आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को उस की ह़क़ीक़त याद दिलाई है कि वह घमण्ड व गुरूर के बजाए अल्लाह की कुद्रत और उस के अथाह इ़ल्म का एतिराफ़ करे, इस से अल्लाह तआ़ला ने उन के दिल व दिमाग़ में मरने के बाद वाली ज़िन्दगी को उतारना चाहा है, कि जिस ने तुम्हें पहली बार एक बूँद से पैदा किया है, वह यक़ीनन तुम्हें दोबारा पैदा करने पर क़ादिर है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, लोगों! क्या हम ने तुम्हें ह़क़ीर पानी के एक क़त्रे (बूँद) से पैदा नहीं

किया है, हम ने उस क़त्रे को माँ के गर्भ तक पहुँचाया जहाँ जाकर वह ठहर गया और वहाँ एक मुद्दत तक ठहरा रहा और पलता रहा यहाँ तक कि वह एक रुह़ वाला बच्चा बनकर बाहर आने के क़ाबिल बन गया।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, वह अल्लाह था जिस ने उस बूँद को गर्भ के अन्धेरे में विभिन्न दौर में मुख़्तलिफ़ (Stagez) से गुज़ारा और उस में रुह़ फूंक कर उसे बाहर निकाला, वह अल्लाह बड़ा ही ज़बरदस्त क़ुद्रत वाला है और वही तमाम तअ़रीफ़ों का ह़क़्दार है।

इसलिए हलाकत व बर्बादी है उन मुजरिमों के लिए जो अल्लाह की क़ुद्रत और अ़ल्लामुल् ग़ुयूब होने का इन्कार करते हैं या इस बारे में शुब्हा करते हैं कि वह मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर है।

25-26 أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۝ أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, लोगों! क्या हम ने ज़मीन को तुम्हारे ज़िन्दों और मुर्दों के लिए ठहरने की जगह नहीं बनाया, तुम्हारे ज़िन्दे ज़मीन पर बनी बिल्डिंगों में पनाह लेते हैं और तुम्हारे मुर्दे लोगों को, ज़मीन अपने अन्दर जगह देती है, उन्हें अपने आप से चिमटा लेती है। जिस तरह़ बिल्डिंगे अल्लाह की नेअ़मत हैं, उसी तरह़ क़ब्रें भी उस की नेअ़मत हैं जिन में मुर्दे दफ़्न कर दिये जाते हैं, ताकि जानवर और दूसरी चीज़ें उन की तौहीन (अपमानित) न करें।

27-28 وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَامِخَاتٍ وَأَسْقَيْنَاكُم مَّاءً فُرَاتًا ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, लोगों! क्या हम ने ज़मीन पर बड़े ऊँचे पहाड़ों के खूंटे नहीं गाड़ दिये हैं, ताकि उस में हरकत न पैदा हो और तुम उस में बसहूलत ज़िन्दग़ी गुज़ार सको।

क्या हम ने तुम्हें मीठा साफ़ पानी नहीं पिलाया है। इन तमाम सवालों का जवाब एक है कि हाँ, यक़ीनन यह सारी नेअ़मतें अल्लाह की दी हुई हैं। तो फिर ऐ काफ़िरों! तुम क्यों अल्लाह की नेअ़मतों को झुठलाते हो? क्यों उसके रसूल और उस की किताब को झुठलाते हो? याद रखो कि क़ियामत के दिन हलाकत व बर्बादी है ऐसे ही झुठलाने वालों के लिए।

29-34 انطَلِقُوا إِلَىٰ مَا كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝ انطَلِقُوا إِلَىٰ ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ۝ لَّا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ ۝ إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ۝ كَأَنَّهُ جِمَالَتٌ صُفْرٌ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

जो लोग दुनिया की ज़िन्दग़ी में आख़िरत और जहन्नम के अ़ज़ाब को झुठलाते थे, क़ियामत के दिन उन से जहन्नम पर तैनात फ़रिश्ते कहेंगे कि जिस जहन्नम को तुम झुठलाया करते थे उस में दाख़िल हो जाओ, तुम लोग जहन्नम के धुवां के उस साये की तरफ़ बढ़ते चले जाओ जो ऊपर उठता चला गया है और ऊपर जाकर अपनी शिद्दत की वजह से तीन शोलों में बट गया है। वह साया किसी दरख़्त या दीवार के साये की तरह़ नहीं होगा जो आदमी को धूप की सख़्ती से बचाता है, इसलिए वह जहन्नमी को आग की तपिश से नहीं बचाएगा। वह आग ऐसी होगी जिस से मह़ल्लात की तरह़ अ़ज़ीम अंगारे छूटते

रहेंगे, जो अपनी कालिख़ और ज़र्दी की वजह से ज़र्दी मायल काले ऊँटों की तरह़ होंगे यानी वह अंगारे बड़े ही हैबतनाक होंगे।

सूरः ज़ुमर आयत नं० (16) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हैः-

لَهُم مِّن فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِن تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ "जहन्नमियों के लिए उन के ऊपर से आग के शोले सायबान (Tent) की तरह़ होंगे और उन के नीचे से भी वैसे ही आग के शोले मिस्ल सायबान (Tent) के होंगे" और उन के नीचे से भी वैसे ही आग के शोले कालीन जैसे होंगे"।

सूरः अअ़राफ़ आयत नं० (41) में फ़रमाया हैः-

لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ

"जहन्नमियों के लिए जहन्नम की आग का बिछौना होगा और उन के ऊपर उसी का ओढ़ना होगा"। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हलाकत व बर्बादी है उन के लिए जो दुनिया में आख़िरत, जन्नत, जहन्नम और अल्लाह के रसूल और उस के क़ुर्आन को झुठलाया करते हैं।

35-37 هَٰذَا يَوْمُ لَا يَنطِقُونَ ۝ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

अल्लाह और उस के रसूल को झुठलाने वालों के लिए वह दिन इतना सख़्त होगा कि ख़ौफ़ व दहशत के मारे उन की ज़बानें बन्द होंगी, एक बात भी उन के मुँह से नहीं निकलेगी। मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि क़ियामत के दिन लोग कई ह़ालात से गुज़रेंगे, बाज़ ह़ालात में वह बात करेंगे, बल्कि आपस में एक दूसरे से झगड़ेंगे। जैसा कि सूरः ज़ुमर आयत नं० (31) में आया हैः-

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ

"फिर तुम लोग क़ियामत के दिन अपने रब के पास एक दूसरे से झगड़ोगे"।

बाज़ ह़ालात में मारे दहशत के उन की ज़बान से एक कलिमा भी नहीं निकलेगा। जैसा कि बाज़ ह़ालात में अल्लाह तआ़ला की ओर से उन के मुँह पर मुहर लगा दी जाएगी। जैसा कि सूरः यासीन आयत नं० (65) में आया है الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ "हम आज के दिन उन के मुँह पर मुहर लगा देंगे"।

उन झुठलाने वालों को उस दिन उ़ज़्र पेश करने की इजाज़त ही नहीं दी जाएगी जिससे से वह अपना उ़ज़्र पेश करें।

सूरः नह़ल आयत नं० (84) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ "फिर काफ़िरों को इजाज़त नहीं दी जाएगी और न उन से तौबः करने को कहा जाएगा"।

38-40 هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۖ جَمَعْنَاكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ۝ فَإِن كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ۝
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

उस दिन आख़िरत को झुठलाने वाले काफ़िरों से कहा जाएगा कि यही वह फ़ैसले का दिन है जिस का तुम से वादा किया जाता था। आज हम ने मैदाने मह़शर में तुम्हें और तुम ही जैसे पहले के लोगों में आख़िरत के दिन को झुठलाने वालों को जमा कर दिया है। अगर अपनी निजात के लिए कोई भी तद्बीर

कर सकते हो तो मेरे अ़ज़ाब से बचने के लिए कर डालो।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस अन्दाज़े कलाम से मक़्सूद जहन्नमियों को रुहानी अ़ज़ाब देना होगा, जो जिस्मानी अ़ज़ाब से ज़्यादा सख़्त होगा वरना मालूम है कि उस दिन जहन्नमी बेयार व मदद्गार होंगे, उन के दिल व दिमाग़ पर नाउम्मीदी का एक बादल छाया होगा और अपनी निजात से बिल्कुल नाउम्मीद हो चुके होंगे।

उस दिन हलाकत व बर्बादी होगी उन काफ़िरों के लिए जो अल्लाह, उस के रसूल, उस की किताब और आख़िरत के रोज़ को झुठलाते हैं।

41-45 إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَعُيُونٍ ۝ وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۝ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, जो लोग अल्लाह की गिरफ़्त से डरते हुए फ़रायज़ को अदा करते हैं और गुनाहों से बचते हैं, वह घने दरख़्तों के साये में होंगे और उन दरख़्तों के दर्मियान से नहरें जारी होंगी और जिन फलों की वह इच्छा करेंगे अपने सामने पाएँगे और उन की इ़ज़्ज़त के लिए अल्लाह तआ़ला उन से कहेगा, तुम लोग दुनिया में किये हुए नेक आ़माल के बदले जो चाहो खाओ, पियो और राह़त की ज़िन्दगी गुज़ारो। हम अपने रब से डरने वालों और ईमान व नेक अ़मल वाली ज़िन्दगी गुज़ारने वालों को ऐसा ही अच्छा बदला देते हैं।

लेकिन उस दिन हलाकत व बर्बादी होगी उन काफ़िरों के लिए जो अल्लाह, उस के रसूल, उस की किताब और आख़िरत को झुठलाते हैं।

46-47 كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُم مُّجْرِمُونَ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

यहाँ मुश्रिकीने मक्का से बतौर धमकी कहा जा रहा है कि ऐ मुजरिमों! खाओ पियो और थोड़े दिनों के लिए ख़ूब ऐ़श कर लो, जल्द ही तुम अपने अन्जाम को पहुँचने वाले हो। इस तरह़ अक्सर क़ुरैश मैदाने बद्र में मारे गए और क़ियामत के दिन उन का ठिकाना जहन्नम होगा। इसी लिए अल्लाह तआ़ला ने उन के बारे में फ़रमाया कि हलाकत व बर्बादी होगी तुम जैसों के लिए जो अल्लाह, उस के रसूल, उस की किताब और आख़िरत को झुठलाते हैं।

48-49 وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

उन मक्का वालों से जब कहा जाता था कि तुम लोग दीने ह़क़ को क़ुबूल कर लो, अल्लाह के लिए नमाज़ पढ़ो और उस के लिए ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ अपना लो, तो उन की गर्दनें अकड़ जाती थीं। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने उन के बारे में फ़रमाया कि हलाकत व बर्बादी होगी उस दिन उन जैसों के लिए जो अल्लाह, उस के रसूल, उस की किताब और आख़िरत के दिन को झुठलाते हैं।

50 فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ारे कुरैश ने जब इस कुर्आन को झुठला दिया है, जिस के अल्लाह की किताब होने के दलायल स्पष्ट रूप में मौजूद हैं, तो फिर वह किस किताब पर ईमान लाएँगे यानी अगर वह इस किताब पर ईमान नहीं लाएँगे तो कुफ़्र व हठधर्मी के अन्धेरों में भटकते रहेंगे यहाँ तक कि मौत उन्हें आ दबोचेगी और हमेशा के लिए जहन्नम रसीद हो जाएँगे और एक इन्सान की इस से बढ़कर बद्नसीबी क्या हो सकती है कि उस की मौत कुफ़्र पर हो और मरने के बाद उस का ठिकाना जहन्नम हो। أعاذنا الله من نار جهنم وبالله التوفيق

दुआ़ओं का तालिब
मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
दारुल उलूम् नद्वतुल उलमा, लखनऊ
08–01–2012

(भाग–78)

सूर–ए–नबा

(सूरः नं. 78)

सूरः नबा का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का में नुबूव्वत के शुरु ज़माने में उतरी, इसमें चालीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं। इसका नाम सूरः नबा है, जिसका अर्थ होता है 'ख़बर'।

यह सूरः उस समय उतरी जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने मक्का के लोगों के सामने क़ुर्आन पढ़ा और बताया कि अल्लाह के सिवा किसी की इ़बादत (उपासना) न करो, मैं अल्लाह की ओर से भेजा हुआ रसूल (सन्देष्टा) हूँ। वही अल्लाह क़ियामत (महाप्रलय) के दिन दोबारा सब को उठा कर इस ज़िन्दग़ी के कामों का लेखा जोखा लेगा। फिर जो लोग ईमान वाले और नेक होंगे, इस दुनिया में रहकर अपने पैदा करने वाले की मर्ज़ी के मुताबिक़ ज़िन्दग़ी गुज़ारे होंगे, उनको हमेशा के लिए जन्नत में भेज दिया जाएगा और जो लोग इन्कारी होंगे, उन्हें हमेशा के लिए जहन्नम में भेज दिया जाएगा।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की इन सब बातों को सुनकर लोग आश्चर्य करते और इसे बिल्कुल असम्भव और अ़क्ल में न आने वाली बात समझकर आपस में वाद विवाद करते, हँसी उड़ाते, ताकि लोगों पर यह प्रभाव डालें कि यह विषय विचार करने के लायक़ ही नहीं है, बल्कि यह एक काल्पनिक बात है।

इसलिए इस सूरः की शुरुआ़त ही ऐसे शब्द से हो रही है जिस से उन विरोधियों के स्वभाव का पता चलता है जिनको जवाब देते हुए अल्लाह की महानता पर विचार करने को कहा गया है, जो ज़मीन से आसमान तक फैली हुई है और कुछ आयतों में इन्कारियों के अन्जाम को भी बताते हुए कहा गया है कि वह मालिक सूर फूंकेगा तो लोग क़ब्रों आदि से निकलकर समूह के समूह निकल पड़ेंगे। ज़मीन व आसमान, पहाड़ व समुद्र सब अपना-अपना स्थान छोड़ देंगे। जहन्नम ताक में होगी उस दिन उस की इजाज़त के बिना कोई सिफ़ारिश भी नहीं कर सकेगा, फिर इन्कार करने वाले (काफ़िरों) को अफ़्सोस के सिवा कुछ हाथ न आएगा।

आयत नं० 1 से 40 तक

عَمَّ يَتَسَآءَلُونَ ۝ عَنِ النَّبَإِ الْعَظِيمِ ۝ الَّذِي هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ ۝ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۝ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۝ أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهَادًا ۝ وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ۝
وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا ۝ وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا ۝ وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۝ وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۝
وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا ۝ وَأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا ۝ لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ۝ وَجَنَّاتٍ أَلْفَافًا ۝ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ۝ يَوْمَ يُنْفَخُ
فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ۝ وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ۝ وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۝ إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝ لِلطَّاغِينَ مَآبًا ۝
لَابِثِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ۝ لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ۝ إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ۝ جَزَاءً وِفَاقًا ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ۝ وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَّابًا ۝
وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ۝ فَذُوقُوا فَلَنْ نَزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ۝ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ۝ حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ۝ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۝ وَكَأْسًا دِهَاقًا ۝ لَا
يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّابًا ۝ جَزَاءً مِنْ رَبِّكَ عَطَاءً حِسَابًا ۝ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ۝ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفًّا ۖ لَا
يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ۝ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ مَآبًا ۝ إِنَّا أَنْذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ
وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَا لَيْتَنِي كُنْتُ تُرَابًا ۝

अनुवाद-

(1) लोग किस चीज़ के बारे में पूछ-गच्छ कर रहे हैं? (2) उस बड़ी ख़बर के बारे में; (3) जिसमें यह लोग मतभेद कर रहे हैं। (4) हरगिज़ ऐसा नहीं, जल्द ही मालूम हो जाएगा; (5) फिर जल्द ही इन्हें मालूम हो जाएगा। (6) क्या 'हमने' ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया; (7) और पहाड़ों को मेखें? (8) और 'हमने' तुमको जोड़ा-जोड़ा भी (नर-मादा) पैदा किया; (9) और 'हमने' तुम्हारी नींद को तुम्हारे आराम का ज़रिया बनाया। (10) और 'हमने' रात को पर्दा बनाया; (11) और 'हमने' दिन को रोज़ी कमाने का ज़रिया बनाया; (12) और 'हमने' ही तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए; (13) और 'हमने' ही चिराग़(सूर्य) बनाया; (14) और 'हमने' भरे बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया; (15) ताकि उससे अनाज और हरियाली; (16) और घने-घने बाग़ उगाए। (17) बेशक फ़ैसले का वक़्त निश्चित है; (18) जिस दिन 'सूर' में फूंक मारी जाएगी तो तुम लोग झुंड के झुंड चले आओगे। (19) और आसमान खोल दिया जाएगा, तो (उसमें) दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएँगे; (20) और पहाड़ चलाए जाएँगे, तो वह चमकती हुई रेत के समान हो कर रह जाएँगे। (21) बेशक दोज़ख घात में है; (22) सरकशों का वही ठिकाना है; (23) उसमें बेमुद्दत पड़े रहेंगे; (24) उसमें न वे ठंडी चीज़ का ज़ायक़ा चखेंगे न किसी पीने की चीज़ का; (25) सिवाय खौलता हुआ पानी और बहती हुई पीप के। (26) बदला है पूरा-पूरा। (27) बेशक यह लोग हिसाब की उम्मीद ही न रखते थे; (28) और 'हमारी' आयतों को खूब झुठलाया करते थे; (29) और 'हमने' हर चीज़ की गिनती करके किताब में दर्ज कर दिया है; (30) बस अब मज़ा चखते रहो (अज़ाब, को) और अधिक बढ़ाते ही रहेंगे। (31) बेशक परहेज़गारों के लिए कामियाबी है; (32) (जहाँ) बाग़ और अंगूर, (33) और नौजवान, हम उम्र औरतें; (34) और (शराब के) छलकते प्याले; (35) न वहाँ वे बकवास सुनेंगे, और न झूठ; (36) यह आपके रब की ओर से बदला है तय (किया हुआ) इनआम, (37) वह आसमानों और ज़मीन का और इन दोनों के बीच जो कुछ है सब का रब बड़ी रहमत वाला है, उस से बात करना, उनके बस में न होगा। (38) जिस दिन

रुह़ (जिब्रईल अ़लै०) और तमाम फ़रिश्ते क़तार बाँधे खड़े होंगे। तो कोई बोल न सकेगा, मगर जिसको रह़मान ही इजाज़त दे और वह बात भी ठीक कहे। (39) वह दिन सच है, अब जो कोई चाहे अपने रब के पास अपना ठिकाना बना ले। (40) 'हमने' तुमको उस क़रीब आने वाले अ़ज़ाब से ख़बरदार कर दिया है, जिस दिन आदमी देख लेगा, जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेजा था,और काफ़िर(इन्कारी) कहेगा, ''काश मैं मिट्टी ही (अर्थात मिट्टी से आदमी बनाया ही न गया) होता।''

सूरः नबा की संक्षिप्त व्याख्या

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं, "जब क़ुर्आन मजीद उतरना शुरु हुआ तो मक्का के काफ़िर आपस में वाद-विवाद करने लगे कि क़ुर्आन में क़ियामत का उल्लेख है, यह कैसे सम्भव है? कोई स्वीकार करता है और कोई इन्कार।"

इसलिए इस सूरः को शुरु करने के बाद उनकी ह़ालत बयान करते हुए क़ियामत का मन्ज़र खींचा गया है, फिर लोगों को जवाब देते हुए क़ुर्आन कहता है; यह लोग आपस में किस विषय के बारे में बातचीत कर रहे हैं और मज़ाक़ उड़ा रहे हैं। इन्हें आप बता दीजिए कि यह बेकार बातों में न पड़ें, बहुत जल्द इन्हें मालूम हो जाएगा। जो आज समझाने से नहीं समझते लेकिन कल क़ियामत में, जब अपनी आँखों से देख लेंगे तो इन्हें यक़ीन आ जाएगा।

1-16 عم يتساءلون ۝ عن النبإ العظيم ۝ الذي هم فيه مختلفون ۝ كلا سيعلمون ۝ ثم كلا سيعلمون ۝ ألم نجعل الأرض مهادا ۝
والجبال أوتادا ۝ وخلقناكم أزواجا ۝ وجعلنا نومكم سباتا ۝ وجعلنا الليل لباسا ۝ وجعلنا النهار معاشا ۝ وبنينا فوقكم
سبعا شدادا ۝ وجعلنا سراجا وهاجا ۝ وأنزلنا من المعصرات ماء ثجاجا ۝ لنخرج به حبا ونباتا ۝ وجنات ألفافا ۝

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन व आसमान के उन तथ्यों की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा है कि यदि इन्हें दोबारा उठाए जाने में कोई शक हो तो इन से पूछिए कि क्या अल्लाह ने ज़मीन को बिछौना और पहाड़ों को मेखे नहीं बना दिया? जो हमारी सत्ता प्रकट करती हैं और उसी ने नींद को सुख, शान्ति का ज़रिया बनाया, ताकि तुम आराम कर सको और रात को पर्दा बनाया जिस से पूरी दुनिया ढ़क जाती है।

दिन को खाने कमाने और धन्धा करने के लिए बनाया, ताकि तुम बाल बच्चों की ज़रुरतों को पूरा कर सको। सात स्थायी आसमान और सूरज बनाया, ताकि पूरी दुनिया रौशन हो सके। इसी तरह़ बादलों से मूसलाधार बारिश करते हैं, जिससे तरह़-तरह़ के अन्न और जड़ी बूटियाँ घास-पात और घने बाग ऊगते हैं। तो क्या इनमें से किसी चीज़ में भी उसकी क़ुद्रत दिखाई नहीं देती? कि जो अल्लाह इन वस्तुओं को पहली बार पैदा कर चुका है, उसके लिए यह मुम्किन क्यों नहीं है कि वह दोबारा इनको पैदा कर सके? हरग़िज़ ऐसा नहीं, बल्कि वह पूरी क़ुद्रत वाला है, उसके लिए हर चीज़ मुम्किन है।

17-23 إن يوم الفصل كان ميقاتا ۝ يوم ينفخ في الصور فتأتون أفواجا ۝ وفتحت السماء فكانت أبوابا ۝ وسيرت الجبال
فكانت سرابا ۝ إن جهنم كانت مرصادا ۝ للطاغين مآبا ۝ لابثين فيها أحقابا ۝

बेशक फ़ैसले का दिन तय है, उस दिन नेक और बुरे लोगों को अलग-अलग कर दिया जाएगा। फिर अल्लाह तआ़ला सबसे हिसाब-किताब लेकर उनके साथ न्याय करेगा, जिससे खरा खोटा सामने आ जाएगा और उस से पहले सूर फूंका जाएगा तो तुम लोग समूह के समूह निकल आओगे, जो एक निश्चित समय है।

इस से मालूम हुआ कि दो बार सूर फूंका जाएगा, पहली फूंक से पूरी दुनिया नष्ट हो जाएगी और दूसरी फूंक से सारे इन्सान समूह के समूह अपने पालनहार (रब) के सामने इकट्ठा हो जाएँगे। उस दिन यह पहाड़ नष्ट भ्रष्ट होकर अपनी-अपनी जगह छोड़ देंगे और चूर-चूर होकर उड़ रहे होंगे।

जो शख़्स अल्लाह और उस के रसूल की पैरवी न करने वाला होगा, उसको जहन्नम में मुद्दतों पड़े रहना होगा, जहाँ मुसीबतों का अन्त न होगा तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ बढ़ती ही जाएगी। **(इब्ने कसीर)**

24-26 لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ۝ إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ۝ جَزَاءً وِفَاقًا ۝

उस जहन्नम में खौलता हुआ पानी दिया जाएगा जिस से मुँह के पास लगाते ही उसका होंठ जल जाएगा और पेट में जाते ही आँते टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगी। बहती हुई घाव की पीप के सिवा वहाँ न ठंडक का स्वाद मिल सकेगा और न पानी का, यह उनके कामों का बदला होगा।

27-30 إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ۝ وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَّابًا ۝ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ۝ فَذُوقُوا فَلَن نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ۝

यह इसलिए होगा कि दुनिया में यह लोग अपने इन्कार और ढिटाई से हमारी आयतों को झुठलाया करते थे। हमारे पास वापस आकर हिसाब किताब देने का न डर था और न कोई उम्मीद, लेकिन अल्लाह तआ़ला कहेंगे, "हमने हर बात की गणना (दर्ज) कर रखी थी कि किसी का कोई अ़मल हमारे इ़ल्म से बाहर नहीं, हम काफ़िरों यानी इन्कारियों को उनके कर्मानुसार बदला देंगे"। इस तरह़ उसका अ़ज़ाब बढ़ता ही चला जाएगा और कहा जाएगा, अब चखो अ़ज़ाब का मज़ा इसके सिवा तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा।

31-36 إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ۝ حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ۝ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۝ وَكَأْسًا دِهَاقًا ۝ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّابًا ۝
جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَطَاءً حِسَابًا ۝

फिर इस आयत में अच्छे काम करने वालों से कहा जा रहा है कि परहेज़गारों के लिए बेहतरीन ठिकाना होगा, जहाँ वह रहेंगे, उनके रहने के लिए बाग़, खाने के लिए अंगूर और दिल बहलाने के लिए एक ही उ़म्र की नौजवान औ़रतें, पीने के लिए शराबे तहूर के छलकते हुए जाम होंगे। इन लोगों के कानों में वहाँ बेहूदा, झूठी या बकवास बातें नहीं पड़ेंगी। यह सब जो कुछ बदले में मिलेगा वह तुम्हारे रब की मेहेरबानी होगी, कि इनके नेक कामों का पूरे हिसाब से बहुत ज़्यादा बदला मिलेगा।

इस इनआ़म के बारे में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "कोई आदमी अपने अ़मल से जन्नत में नहीं जा सकता, जब तक अल्लाह का फ़ज़्ल न हो।" सहाबा ने अ़र्ज़ किया, "क्या अल्लाह के रसूल आप भी?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "हाँ, मैं भी अपने अ़मल से जन्नत में नहीं जा सकता" यानी

यह सब जो कुछ मिलेगा उस पालनहार की मेहेरबानी (कृपा) का ही नतीजा होगा।

37-38 رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ۝ يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ
اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ۝

वही आसमान व ज़मीन और जो कुछ इन दोनों के बीच में है सबका पैदा करने वाला 'रह़मान' (करुणा निधान) है। बेशक क़ियामत के दिन डर के मारे उस से कोई बात न कर सकेगा। उस दिन रुह़ (जिब्रईल अ़लै०) और फ़रिश्ते उसके सामने पंक्ति बाँध कर खड़े होंगे और उस वक़्त तक किसी को बोलने की ह़िम्मत न होगी जब तक 'रह़मान' (करुणा निधान) किसी को इजाज़त न दे और वह जो बोलेगा तो ठीक-ठाक बोलेगा यानी कोई पीर फ़क़ीर यहाँ तक कि पैग़म्बर भी अल्लाह की इजाज़त के बिना सिफ़ारिश नहीं कर सकेंगे।

39-40 ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ۝ اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۚ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ
وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ۝

फ़रमाया, "ऐ इन्सानों! हम तुमको उस अ़ज़ाब से, जो बहुत जल्द आने वाला है सचेत करते हैं, जिसको आदमी अपनी आँखों से देख लेगा और जो उसके हाथों ने आगे भेजा होगा। यह दिन ज़रूर होगा" यानी जिसका जी चाहे अपने रब के पास अपना ठिकाना बना ले यानी उस दिन हर आदमी अपने कर्मों को अपने सामने देख लेगा।

जो लोग दुनिया में अपने रब के हुक्मों का पालन न किया होगा वह तो अपने बुरे आ़माल की वजह से सर पीट कर रह जाएँगे कि काश! हम मिट्टी ही होते जिससे हमारा ह़िसाब-किताब न होता।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं, "क़ियामत के दिन पूरी ज़मीन बराबर कर दी जाएगी जिससे इन्सान, जिन्नात और इस ज़मीन के तमाम पालतू या जंगली जानवर सभी इकट्ठा कर दिये जाएँगे और जानवरों में से यदि किसी ने किसी पर ज़ुल्म किया होगा, तो उससे उसका बदला दिलाया जाएगा। यहाँ तक कि अगर किसी सींग वाली बकरी ने बिना सींग वाली बकरी को मारा होगा, तो उस दिन उस को भी उसका बदला दिलवाया जाएगा।

फिर जब सबको बदला दिया जा चुकेगा तो सभी जानवरों को हुक्म होगा कि मिट्टी बन जाओ, फिर वह सब मिट्टी बन जाएँगे। उस वक़्त काफ़िर इच्छा करेंगे कि काश! हम भी जानवर होते तो आज हम भी इसी तरह़ मिट्टी होकर जहन्नम की आग से बच जाते।

दुआ़ओं का तालिब
मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
दारुल उलूम् नद्वतुल उलमा, लखनऊ

(भाग–79)

सूर–ए–नाज़िआ़त

(सूरः नं. 79)

सूरः नाज़िआत का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का में उतरी, इस में छियालिस आयतें और दो रुकूअ़ हैं। "ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का बयान है कि यह सूरः सूरः नबा के बाद उतरी"।

इस सूरः में क़ियामत और मरने के बाद की ज़िन्दगी और मरते वक़्त अल्लाह के हुक्म से जान निकालने वाले और उसके हुक्म के मुताबिक़ काम करने वाले फ़रिश्तों की क़सम खाकर यह यक़ीन दिलाया गया है कि क़ियामत ज़रूर आएगी और मरने के बाद दूसरी ज़िन्दगी मिलेगी। इसके बाद अगली आयत में बतलाया गया है कि यह काम जिसे तुम बिल्कुल नामुम्किन समझते हो, अल्लाह के लिए हरगिज़ कोई कठिन काम नहीं है।

फिर क़ियामत का ज़िक्र करते हुए उसके अन्जाम का ज़िक्र किया गया है। जो दुनिया में क़ियामत को झुठलाया करते थे, वह उस दिन डर से कांप रहे होंगे और सहमी हुई निगाहों से वह सब कुछ देख रहे होंगे, जिसे वह दुनिया में असम्भव समझते थे।

फिर ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और फ़िरऔ़न का क़िस्सा संक्षेप में बयान करके लोगों को सचेत (होशियार) किया गया है कि रसूलों (ईशदूतों) को झुठलाने, उनके बताए हुए रास्ते को रद्द करने पर फ़िरऔ़न का क्या अन्जाम हुआ, ठीक इसी तरह़ यदि तुम लोग भी करोगे तो तुम्हारा भी वही अन्जाम होगा।

अगली आयत में दलील के तौर पर पूछा गया है कि तुम्हें दोबारा पैदा करना ज़्यादा कठिन काम है या इस दुनिया का बनाना, जो अपने असंख्य सितारों व ग्रहों के साथ फैली हुई है? यानी जिस पैदा करने वाले के लिए इन सब का पैदा करना कठिन काम नहीं, उसके लिए तुम्हें दोबारा पैदा करना कैसे कठिन हो सकता है?

आख़िर में मक्का के काफ़िरों के उस सवाल का भी जवाब दिया गया है, जिसे वह बार-बार पूछते थे कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) बताइए क़ियामत कब आएगी?

उन लोगों का जवाब देते हुए कहा गया है कि क़ियामत के आने के वक़्त का इ़ल्म अल्लाह के सिवा किसी को नहीं है। रसूल का काम सिर्फ़ सचेत कर देना है, कि क़ियामत अपने निर्धारित वक़्त पर ज़रूर आएगी। अब जिसका जी चाहे उसके डर से अपना रवैया ठीक कर ले और जिसका जी चाहे रद्द करता रहे। जब वह निर्धारित समय आएगा, तो उस समय उन्हें मालूम हो जाएगा कि उन्होंने किस तरह़ हमेशा के लिए अपनी आख़िरत बिगाड़ ली थी।

आयत नं० 1 से 46 तक

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۝١ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۝٢ وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۝٣ فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۝٤ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۝٥ يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝٦ تَتْبَعُهَا
الرَّادِفَةُ ۝٧ قُلُوْبٌ يَّوْمَىِٕذٍ وَّاجِفَةٌ ۝٨ اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۝٩ يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِي الْحَافِرَةِ ۝١٠ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۝١١ قَالُوْا تِلْكَ اِذًا
كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۝١٢ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝١٣ فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۝١٤ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۝١٥ اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝١٦ اِذْهَبْ
اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝١٧ فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ۝١٨ وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ۝١٩ فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ۝٢٠ فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۝٢١ ثُمَّ اَدْبَرَ
يَسْعٰى ۝٢٢ فَحَشَرَ فَنَادٰى ۝٢٣ فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ۝٢٤ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ۝٢٥ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۝٢٦ ءَاَنْتُمْ
اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَاۤءُ ۚ بَنٰىهَا ۝٢٧ رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا ۝٢٨ وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ۝٢٩ وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا ۝٣٠ اَخْرَجَ مِنْهَا مَاۤءَهَا وَمَرْعٰىهَا ۝٣١
وَالْجِبَالَ اَرْسٰىهَا ۝٣٢ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ۝٣٣ فَاِذَا جَاۤءَتِ الطَّاۤمَّةُ الْكُبْرٰى ۝٣٤ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ۝٣٥ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى ۝٣٦ فَاَمَّا مَنْ
طَغٰى ۝٣٧ وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝٣٨ فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَأْوٰى ۝٣٩ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ۝٤٠ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوٰى ۝٤١ يَسْـَٔلُوْنَكَ
عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۝٤٢ فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ۝٤٣ اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ۝٤٤ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ۝٤٥ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا
عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ۝٤٦

अनुवाद-

(1) उन (फ़रिश्तों) की क़सम, जो (इन्कारियों की जान) डूब कर खींचते हैं; (2) और उन (फ़रिश्तों) की क़सम जो आसानी से निकालते हैं; (3) और उन (फ़रिश्तों) की जो तैरते फिरते हैं, (4) फिर एक-दूसरे से आगे बढ़ते हैं; (5) फिर (दुनिया के) कामों का इन्तिज़ाम करते हैं। (6) जिस दिन हिला डालने वाली घटना हिला डालेगी; (7) (फिर) उसके पीछे आने वाला (भौंचाल) आएगा। (8) उस दिन (लोगों के) दिल काँप रहे होंगे; (9) उनकी आँखें (ख़ौफ़ से) झुकी हुई होंगी, (10) यह लोग कहते हैं क्या पहली हालत में फिर लौटाए जाएँगे? (11) क्या जब हम सड़ी गली खोखली हड्डियाँ हो जाएँगे? (12) कहते हैं यह वापसी तो बड़े घाटे की होगी? (13) (अल्लाह कहता है) वह तो केवल एक ज़ोर की डाँट होगी; (14) फिर वे एक समतल मैदान में जमा होंगे, (15) क्या आपको मूसा के क़िस्से की ख़बर पहुँची है? (16) जब उनके रब ने उन्हें पाक मैदान 'तुवा' में पुकारा। (17) फ़िरऔन की ओर जाओ वह बहुत शरारत पर उतर आया है; (18) फिर कहो,''क्या तू चाहता है कि (अपने आप को) पाक-साफ़ कर ले?'' (19) और मैं तुझे तेरे रब की ओर राह बताऊँ ताकि तू डरे। (20) तो (मूसा ने) उस (फ़िरऔन) को बड़ी निशानी दिखाई; (21) फिर उसे भी झुठला दिया और न माना। (22) फिर पलटा और (विरोध में) कोशिश करने लगा; (23) फिर (लोगों को) इकट्ठा किया फिर पुकारा; (24) फिर कहा, मैं हूँ तुम्हारा सबसे बड़ा रब। (25) तो अल्लाह ने उसे दुनिया व आख़िरत के अ़ज़ाब में पकड़ लिया। (26) बेशक इसमें बड़ी नसीहत है हर उस व्यक्ति के लिए जो डरे। (27) (इनसे पूछो) क्या तुम लोगों का पैदा करना कठिन काम है, या आसमान का? उसी ने उसको बनाया; (28) उसकी छत को ऊँचा किया, फिर उसे बराबर कर दिया। (29) और उसी ने रात को अंधेरी बनाया और (दिन को) धूप निकाली; (30) और उसके बाद ज़मीन को फैला दिया। (31) उसी

ने इसमें से उसका पानी और चारा निकाला; (32) और पहाड़ों को उसमें जमा दिया। (33) यह सब कुछ तुम्हारे लिए और तुम्हारे चौपायों के फ़ायदे के लिए। (34) तो जब वह बड़ी आफ़त आएगी। (35) तो उस दिन इन्सान अपने किये को याद करेगा। (36) और जहन्नम सामने लाई जाएगी जो देखना चाहे, (37) तो जिसने शरारत की, (38) और दुनिया की ही ज़िन्दगी को अहमियत (प्रमुखता) दी होगी; (39) (बेशक) उसका ठिकाना जहन्नम होगा। (40) और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरता रहा, और अपने जी को मनमानी से रोकता रहा; (41) तो बेशक उसका ठिकाना जन्नत होगा। (42) (ऐ मुहम्मद) आप से पूछते हैं कि वह घड़ी कब आएगी? (43) तो आप उसके ज़िक्र से, किस फ़िक्र में हैं? (44) उसकी जानकारी आप के रब ही को (मालूम) है (45) बेशक आप तो केवल सचेत करने वाले हैं हर उस व्यक्ति को, जो उसका डर रखे। (46) जिस दिन यह लोग उसे देख लेंगे, तो उन्हें ऐसा महसूस होगा कि, यह (दुनिया में केवल) एक दिन के पिछले पहर या अगले पहर से ज़्यादा नहीं ठहरे।

सूरः नाज़िआ़त की संक्षिप्त व्याख्या

1-10 وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۝ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۝ وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۝ فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۝ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۝
يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۝ قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۝ اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۝
يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ ۝

नाज़िआ़ति-

इस सूरः में सबसे पहले 'वाव' अर्थात 'वन्नाज़आ़ति' आया है, जो क़सम के अर्थ में होता है। यहाँ पर फ़रिश्तों के कुछ हालात बता कर उनकी क़सम खाई है।

'नाज़िआ़त' नज़अ़ से बना है, जिसका अर्थ होता है किसी वस्तु को खींच कर निकालना, जो पेड़ पौधों और गड़ी हुई वस्तुओं को अपनी शक्ति से उखाड़ फेंके।

इस तरह़ 'नाज़िआ़त' का मतलब वह फ़रिश्ते हैं, जो काफ़िरों की जान कठिनाई से निकालते हैं। इसके लिए यह ज़रूरी नहीं कि देखने वाले को भी इस कठिनाई का अनुभव हो। यह तो उसकी रुह़ (आत्मा) के साथ होता है, जिसे अल्लाह ही को ख़बर है या मरने वाला जानता है।

नाशिताति-

'नश्त' शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है किसी बन्धन को खोल देना। जैसे- किसी चीज़ में पानी या हवा आदि भरी हो और उसका बन्धन खोलने से वह पानी आसानी से निकल जाए। यहाँ नाशिता कह कर बताया गया है कि मोमिनों की रुहों (आत्माओं) को फ़रिश्ते बहुत आसानी से निकालते हैं।

सब्ह़न-

'सब्ह़न' का शाब्दिक अर्थ होता है 'तैरना'। यहाँ पर तेज़ी से चलने के अर्थ में लिया गया है।

जैसे-समुद्र में कोई रुकावट नहीं होती, तैरने वाला सीधे अपने ठिकाने पर पहुँचता है यानी फ़रिश्ते इन्सानों की रुहों को लेकर आसमान की ओर आते जाते हैं।

साबिक़ाति-

'साबिक़ाति' का मतलब है कि उस रुह़ को फ़रिश्ते अच्छे या बुरे ठिकाने पर पहुँचाने में तेज़ी से काम लेते हैं। मोमिन की रुह़ को जन्नत की हवाओं और नेअ़मतों की जगह में पहुँचाते हैं, काफ़िरों की रुहों को जहन्नम की हवाओं और अ़ज़ाबों की जगह में पहुँचाते हैं।

अल्लाह के हुक्म से फ़रिश्ते (जिस रुह़ को सवाब और आराम का हुक्म होता है या जिसे अ़ज़ाब देने का हुक्म होता है) उसका प्रबन्ध करते हैं।

तर्जुफ़ुर्राजिफ़-

'राजिफ़ः' का अर्थ होता है 'कपकपी' और भूकम्प वाली। 'रादिफ़ः' का अर्थ होता है पीछे आने वाली। पहले झटके के बाद दूसरा झट्का। यानी सूर दो बार फूंका जाएगा, पहली बार जब सूर फूंका जाएगा तो पूरा ब्रहम्माण्ड नष्ट हो जाएगा, दोबारा सूर फूंकने पर तमाम लोगों को ज़िन्दा कर दिया जाएगा।

उस दिन बहुत से दिल घबराहट से धड़क रहे होंगे, उनकी आँखें शर्म से झुकी हुई होंगी। यह उन लोगों का ह़ाल होगा जो उस क़ियामत के दिन को दुनिया में झुठलाया करते थे और ढिटाई से उसका मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

ह़ाफ़िरः-

'ह़ाफ़िरः' का वास्तविक अर्थ क़दम या चिन्ह के हैं, लेकिन यहाँ मुहावरती मतलब होगा कि जब उन्हें डराया जाता है कि मरने के बाद ह़िसाब किताब के लिए ज़िन्दा किये जाओगे, तो वह इस का मज़ाक़ उड़ाते हुए एक दूसरे से मज़ाक़ के तौर पर पूछते हैं कि क्यों जी! मरने और हड्डियों के ख़त्म हो जाने के बाद फिर हम दोबारा ज़िन्दा किये जाएँगे?

11-14 ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۝ قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۝ فَاِنَّمَا هِیَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝ فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۝

अइज़ा-

'अइज़ा' में 'अ' प्रश्नवाचक शब्द है, जिससे उन के मज़ाक़ का पता चलता है। एक तो वह लोग दोबारा ज़िन्दा होने को ही मज़ाक़ समझते हैं कि कहीं ऐसा भी हो सकता है कि मरने के बाद सड़ गल कर हड्डी हो जाने के बाद जब ख़ाक़ में मिल जाएँगे तो दोबारा भी उठाया जाएगा?

अब मज़ाक़ उड़ाने के बाद दोबारा संजीदा मूड बनाकर कहते हैं कि यदि इन लोगों की बात सच निकली तो हमारे लिए तो बड़ी नाकामी और घाटे का लौटना होगा। यह लोग जितनी बक्वास करना चाहें कर लें, लेकिन याद रखें कि अल्लाह तआ़ला जब इनको उठाना चाहेगा तो उसे न कोई प्रबन्ध करना पड़ेगा

और न एक पल की देर लगेगी। केवल एक ही डांट पर यह सब क़ब्रों से निकल कर मैदाने हश्र में जमा हो जाएँगे।

साहिरः-

'साहिरः' कहते हैं समतल या बराबर ज़मीन को और खुले मैदान को, यहाँ पर मैदाने हश्र के बारे में इशारा है और डाँट से मुराद सूर के दोबारा फूंके जाने से है।

15-24 هَلْ أَتٰىكَ حَدِيثُ مُوسٰى ﴿١٥﴾ إِذْ نَادٰىهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٦﴾ إِذْهَبْ إِلٰى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغٰى ﴿١٧﴾
فَقُلْ هَلْ لَكَ إِلٰى أَنْ تَزَكّٰى ﴿١٨﴾ وَأَهْدِيَكَ إِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ﴿١٩﴾ فَأَرٰىهُ الْآيَةَ الْكُبْرٰى ﴿٢٠﴾ فَكَذَّبَ وَعَصٰى ﴿٢١﴾
ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعٰى ﴿٢٢﴾ فَحَشَرَ فَنَادٰى ﴿٢٣﴾ فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلٰى ﴿٢٤﴾

यहाँ पर हज़रत मूसा (अ़लै०) के उस क़िस्से की ओर इशारा है जब वह मद्‌यन नामी शहर से वापस होते हुए 'तूर' के क़रीब पहुँचे। आग की चमक देखकर आग लेने या रास्ता मालूम करने के लिए रात के अंधेरे में 'वादिये तुवा' की ओर गए। वहाँ उनको एक पेड़ से आवाज़ आई, "कि ऐ मूसा! मैं तुम्हारा रब हूँ, मैंने तुम्हें एक बहुत बड़े काम के लिए चुना है, तो फ़िरऔ़न के पास मेरे रसूल बनकर जाओ और उसको मेरा सन्देश पहुँचा दो"।

यह वह सन्देश है जिसे अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा (अ़लै०) को देकर फ़िरऔ़न के पास भेजा, और कहा, "वह बहुत सरकश हो गया है"।

'तग़ा' अर्थात फ़िरऔ़न के 'रब्बे आ़ला' (सबसे बड़ा रब) होने का दावा और बनी इस्राईल के साथ ज़ुल्म करते रहना है। इसको ख़त्म करने के लिए अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा (अ़लै०) को भेजा कि उसको नर्मी के साथ सही रास्ते पर आने की दअ़वत दें, अगर समझ जाए तो ठीक है वरना उसके ख़तरनाक अन्जाम को बताएँ।

फ़िरऔ़न ने हज़रत मूसा (अ़लै०) से कहा, 'यदि बात सुनने और समझने की इच्छा हो तो मैं बताऊँ कि तेरा और तमाम दुनिया का रब (पालनहार) कौन है? जिससे तेरे दिल में अल्लाह का डर और पूरा इ़ल्म हो जाए क्योंकि डर का होना इ़ल्म के बिना असम्भव है"।

इस पर फ़िरऔ़न ने कहा, "मैं तो अपने सिवा किसी और को रब (पालनहार) नहीं मानता, अगर तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से भेजे जाने यानी रसूल होने की कोई सनद (प्रमाण) हो तो दिखाओ?" उसके इस तरह़ कहने पर हज़रत मूसा (अ़लै०) ने कई बड़ी निशानियाँ दिखाईं, यानी लाठी से साँप बना देना आदि।

इस मुअ़जिज़े (चमत्कार) को देखने के बाद फ़िरऔ़न ने हज़रत मूसा (अ़लै०) को अल्लाह का रसूल नहीं माना, बल्कि उनको जादूगर और झूठा बताकर इन्कार कर दिया और पीछे हट गया, ताकि जादूगरों से मुक़ाबिला करा के हज़रत मूसा (अ़लै०) और हारून (अ़लै०) को हरा (पराजित कर) दे, लेकिन जब दरबारियों से मश्वरा (विचार विमर्श) किया तो उन्होंने यह राय दी कि यह दोनों (मूसा और हारून अ़लै०)

बड़े माहिर जादूगर हैं, आम जादूगरों से इनका मुक़ाबिला अच्छा नहीं है।

इसलिए पूरे मुल्क के माहिर जादूगरों को दअ़वत दी जाए और एक खुले मैदान में उनका मुक़ाबिला कराया जाए। उसके हुक्म से ऐसा ही हुआ, लेकिन इसका नतीजा इसके उल्टा ही हो गया। सारे जादूगरों ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को अल्लाह का रसूल होना स्वीकार कर लिया और वह समझ गए कि यह जादूगर नहीं हैं।

यह चाल फ़िरऔ़न की सबसे आख़िरी थी कि उसने तमाम मुल्क के दानिश्वर (बुद्धिजीवी) लोगों को जमा करके कहा "मैं ही तुम्हारा सब से बड़ा रब हूँ"। एक तक़रीर की जिस की पूरी व्याख्या तो सूरः ज़ुख़रुफ़ में है, परन्तु संक्षेप में उसका कुछ भाग इस तरह हैः

"और फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम को पुकारा कि क्या मिस्र की बादशाही और यह नहरें जो मेरे नीचे बह रही हैं मेरे लिए नहीं हैं, क्या तुम लोग देख नहीं रहे हो? तो (बताओ) यह मूसा बेहतर हुआ या मैं इससे बेहतर हूँ, जो एक कमज़ोर आदमी है? और अपनी बात खुलकर कह भी नहीं सकता (यदि अल्लाह का रसूल है) तो ऐसा क्यों न हुआ कि इस पर सोने के कंगन उतारे जाते या इसके साथ फ़रिश्ते जमा होकर आते? इन बातों से उसने अपनी क़ौम की अ़क्ल मार दी और उन्होंने मान भी लिया, बेशक वह नाफ़रमान लोग थे। जब उन्होंने हमको नाराज़ कर दिया, तो हमने उनसे बदला लेकर उन सबको पानी में डुबो दिया"। **(सूरः ज़ुख़रुफ़ 51-52)**

25-29 فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ﴿٢٦﴾ أَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا
أَمِ السَّمَاءُ ۚ بَنَاهَا ﴿٢٧﴾ رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوَّاهَا ﴿٢٨﴾ وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ﴿٢٩﴾

'नकाल' ऐसे अ़ज़ाब को कहते हैं जिसे देखकर दूसरों को नसीह़त हो और सब डर जाएँ। यानी जब फ़िरऔ़न सब कुछ देख सुन लेने के बाद भी अपनी ढ़िटाई पर जमा रहा तो अल्लाह तआ़ला ने उसको दुनिया व आख़िरत दोनों जगह के अ़ज़ाब में पकड़ लिया।

'वलूऊला' से मुराद वह अ़ज़ाब है जो दुनिया में समुद्र की मौजों के हवाले हुआ और 'नकाललू आख़िरति' में बताया गया है कि वह आख़िरत में भी जहन्नम के अ़ज़ाब में झोंक दिया जाएगा।

बेशक उन लोगों के लिए नसीह़त है, जो अल्लाह की पकड़ से डरने वाले हों। यहाँ यह इशारा ख़ास तौर से क़ुरैशे मक्का की ओर किया गया है। जबकि यह शब्द तो सभी लोगों के लिए है कि होशियार वही है जो दूसरों के अन्जाम से सबक़ ह़ासिल करे।

अगर इस पर तअ़ज्जुब हो कि मरने और हड्डियों के गल जाने के बाद तुम्हें दोबारा कैसे उठाया जाएगा तो सोचो कि यह इतना बड़ा आसमान जो तुम्हारे सरों पर फैला हुआ है, उसको पैदा करना ज़्यादह मुश्किल है या तुम्हारा पैदा करना। अगर इस पूरे क़ायनात का पैदा करने वाला इस आसमान को बना सकता है तो दूसरा कौन ऐसा काम है जो उसके लिए मुश्किल हो।

'समक' का अर्थ होता है 'छत'। यहाँ फिर उस मालिक की क़ुद्रत को याद दिलाते हुए कहा गया

है कि उसने आसमान को बनाया, उसकी छत को बुलन्द किया और फिर उसको इस तरह़ बराबर किया कि उसमें कोई कमी नहीं?

30-33 وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا ۝ أَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰىهَا ۝ وَالْجِبَالَ أَرْسٰىهَا ۝ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۝

आसमान की निशानियों के बाद ज़मीन और उसकी निशानियों की तरफ़ इशारा किया गया है। जिस मालिक ने ज़मीन को हमारे लिए बिछाया, उसके अन्दर से उसका पानी और चारा निकाला, उसको सन्तुलित (बराबर) रखने के लिए उसके अन्दर पहाड़ों को गाड़ दिया, तो क्या तुम्हें दोबारा पैदा करना उसके लिए कुछ मुश्किल है? जब उसे इन सब के बनाने में कोई परेशानी नहीं हुई, तो क्या एक अपनी ही पैदा की हुई मख़्लूक़ को दोबारा पैदा करना मुश्किल हो जाएगा?

उसी मालिक ने तो तुम्हारे ज़िन्दगी गुज़ारने की तमाम चीज़ें, आसमान से लेकर ज़मीन तक पैदा कीं, चौपायों को भी तुम्हारे लिए पैदा किया और उन का पूरा इन्तिज़ाम भी किया।

34-44 فَإِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى ۝ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعٰى ۝ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى ۝ فَأَمَّا مَنْ طَغٰى ۝
وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ فَإِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَأْوٰى ۝ وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ۝ فَإِنَّ
الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوٰى ۝ يَسْأَلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۝ فِيْمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ۝ إِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ۝

'अत्ताम्मतुल् कुब्रा' का मतलब होता है बड़ी हलचल और बड़ा हंगामा। मतलब यहाँ 'क़ियामत' से है यानी जब वह बड़े हंगामे का दिन आएगा, तो यह सब ज़मीन व आसमान दरहम, बरहम हो जाएगा।

उस दिन इन्सान अपने किये हुए कामों को याद कर के पछताएगा। जो आज दुनिया की ज़िन्दग़ी के ऐश में मस्त हैं यहाँ जब उस दिन से डराया जाता है, तो उसका मज़ाक़ उड़ाता है, लेकिन उस दिन इसे होश आ जाएगा और यह देख लेगा कि दुनिया में क्या कमाई कर के आया है।

आज तो इसे आख़िरत अनिश्चित मालूम होती है, लेकिन उस दिन जहन्नम का पर्दा उन लोगों के लिए खोल दिया जाएगा जिन्हें उसमें जाना है। यानी वह बिल्कुल तैयार है, बस पर्दा उठते ही वह सबके सामने होगी जिसे यह अपनी आँख से देखे बिना मानने के लिए तैयार न था।

दुनिया में जिन लोगों ने जहन्नम से डर कर ज़िन्दग़ी गुज़ारी होगी वह जहन्नम से इतना दूर होंगे कि कोई आहट भी नहीं मिल सकेगी, लेकिन जिस ने इस दुनिया में सरकशी की होगी यानी अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी के बजाए अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ चला होगा और दुनिया की ज़िन्दग़ी को आख़िरत की ज़िन्दग़ी पर तर्जीह (प्रमुखता) दी होगी, उस दिन वह जहन्नम में ही जाएगा, जिस से वह कभी निकल न पाएगा।

45-46 إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ۝ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحٰىهَا ۝

जो आदमी दुनिया में हर काम करने से पहले डरता रहा कि मुझे एक दिन अपने रब के सामने

पेश होकर इन आ़माल का ह़िसाब देना है और इस डर की वजह से अपने आप को क़ाबू में रखा होगा, नाजायज़ ख़्वाहिशों से रुका होगा तो ऐसे ही लोगों का ठिकाना जन्नत है।

ऊपर की आयत में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि आप लोगों के सवाल की परवाह न कीजिए। यह आप से जो क़ियामत के बारे में सवाल करते हैं आप का काम सिर्फ़ लोगों को आगाह करना है, उन को सन्तुष्ट (राज़ी) करना आप के ज़िम्मे नहीं। आप उन लोगों को यह बताने नहीं गए हैं कि क़ियामत किस दिन आएगी इसका इ़ल्म आपके रब के सिवा किसी के पास नहीं।

जो लोग क़ियामत को जानबूझ कर नहीं मानते तो उनको मनवाने की ज़िम्मेदारी आप पर नहीं है, उनको उनके ह़ाल पर छोड़ दीजिए आप तो सिर्फ़ डराते रहिए। यानी आपका डराना सिर्फ़ उन्हीं को फ़ायदा पहुँचाएगा जो दलीलों को बिना देखे मानने और उससे डरने के लिए तैयार हों। जिस दिन यह इन्कारी क़ियामत को देखेंगे, ऐसा लगेगा जैसे-दुनिया में वह एक दिन के पिछले पहर या उसके अगले पहर से ज़्यादा नहीं ठहरे, उस वक़्त ऐसा मालूम होगा कि जैसे क़ियामत बहुत ही जल्द आ गई।

दुआ़ओं का तालिब
मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
दारुल उलूम् नद्वतुल उलमा, लखनऊ
16-02-2012

(भाग-80)

सूर-ए-अ़बस

(सूरः नं. 80)

सूरः अ़बस का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का में नुबूव्वत के शुरु ज़माने में नाज़िल हुई, इसमें बयालिस आयतें और एक रुकूअ़ हैं।

इस सूरः में बताया गया है कि माल, दौलत व नामवरी मिलने से कोई आदमी इ़ज़्ज़त वाला नहीं हो जाता, बल्कि तअ़ज़ीम और इ़ज़्ज़त के लायक़ वह इन्सान है जो अपने आप को सुधारने में लग जाए और अच्छी बातें सीखने की कोशिश करे।

एक बार रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास क़ुरैश के कुछ लोग जो उन में बड़े मालदार और प्रभावशाली समझे जाते थे, जिन के कुछ रिवायतों से नामों का भी पता चलता है। जैसे- उ़त्बा, शैबा, अबू जेहल, उमय्या इब्ने ख़लफ़ जैसे लोग बैठे थे। आप (सल्ल०) उन्हें इस्लाम के बारे में कुछ समझा रहे थे, ताकि उनकी वजह से इस्लाम को फैलाने में मदद मिले।

आप (सल्ल०) उन से बातचीत कर ही रहे थे कि इतने में 'इब्ने उम्मे मक्तूम' नामी एक अन्धे आदमी (उस वक़्त ह़ाफ़िज़ इब्ने हजर और ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर के मुताबिक़ इब्ने मक्तूम इस्लाम क़ुबूल कर चुके थे) आप (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुए और उन्होंने आप (सल्ल०) से पूछा कि मुझे वह बातें बताइए जो अल्लाह ने आप (सल्ल०) को बताई हैं, ताकि मैं उनको समझ कर अ़मल करुँ।

इस बातचीत के दौरान आप (सल्ल०) को इब्ने मक्तूम (रज़ि०) का हस्तक्षेप (दख़्लअन्दाज़ी) पसन्द न आया, क्योंकि उन्होंने आते ही अपनी बात शुरु कर दी, जिससे आप (सल्ल०) की बातों में रुकावट पैदा हो गई, आप (सल्ल०) के चेहरे पर नाराज़गी मह़सूस हुई, इस पर यह सूरः नाज़िल हुई।

इस सूरः के शुरु की आयतों पर विचार करने से ऐसा मह़सूस होता है कि बड़े-बड़े सरदारों की ओर ध्यान देना ही वह वजह थी जिस से इस सूरः में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को अन्धे की ओर ध्यान करवाया गया, लेकिन पूरी सूरः पर ग़ौर किया जाए तो यह पता चलता है कि सच में क़ुरैशी काफ़िर सरदारों पर यह एक डांट थी जो अपने गर्व, अभिमान, हठधर्मी और असत्य-प्रियता की वजह से अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की दअ़वत को बड़ी हीनता के साथ रद्द कर रहे थे।

इस सूरः में उन लोगों के बारे में जो अपने घमण्ड और बुराई की वजह से रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तअ़लीम को मानने से इन्कार कर रहे थे और वह यह भी चाहते थे कि आप (सल्ल०) ग़रीब साथियों को अपने पास से हटा दें, तो ऐसा न होगा बल्कि वह आप (सल्ल०) की मजलिस में ज़रूर बैठेंगे। इसलिए यहाँ कहा गया है कि उन की परवाह न कीजिए क्योंकि उनके ईमान की ज़िम्मेदारी आप पर नहीं है कि आप उन की वजह से अपने जान निछावर करने वाले साथियों को छोड़ देंगे।

आप के ऊपर असली ज़िम्मेदारी उनके तर्बियत की है, जो आप के पास पूरे शौक़ से आते हैं।

फिर आगे की आयतों में क़ुर्आन की अ़ज़्मत को बयान करके आख़िर में क़ियामत का मन्ज़र खींचा गया है कि उस दिन वह लोग कामियाब होंगे जिन्होंने दुनिया में क़ुर्आन और रसूल (सल्ल०) की सुन्नत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी होगी।

आयत नं० 1 से 42 तक

عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ ۝١ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ۝٢ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىٓ ۝٣ اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ۝٤ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ۝٥ فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ۝٦ وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ۝٧
وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ۝٨ وَهُوَ يَخْشٰى ۝٩ فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ۝١٠ كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝١١ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۝١٢ فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝١٣ مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝١٤ بِاَيْدِيْ
سَفَرَةٍ ۝١٥ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝١٦ قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ۝١٧ مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ۝١٨ مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۝١٩ ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ۝٢٠ ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ۝٢١
ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ۝٢٢ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ۝٢٣ فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ۝٢٤ اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ۝٢٥ ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ۝٢٦ فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ۝٢٧
وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ۝٢٨ وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ۝٢٩ وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ۝٣٠ وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا ۝٣١ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ۝٣٢ فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ۝٣٣ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ
مِنْ اَخِيْهِ ۝٣٤ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ۝٣٥ وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ۝٣٦ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ۝٣٧ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۝٣٨ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۝٣٩
وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝٤٠ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۝٤١ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۝٤٢

अनुवाद-

(1) (उसने) त्योरी चढ़ाई और मुँह फेर लिया; (2) (इस बात पर) कि उनके पास एक अन्धा आया। (3) और आप को क्या मालूम, शायद वह सुधार पैदा करता? (4) या नसीह़त पर ध्यान देता और नसीह़त करना उसके लिए लाभदायक होता। (5) जो आदमी लापरवाही करता है; (6) उसकी ओर तो आप ध्यान देते हैं। (7) और (वह न सुधरे तो) आप पर उसकी कुछ (ज़िम्मेदारी) नहीं; (8) और जो (आदमी) आप के पास दौड़ता हुआ आया, (9) और वह(अल्लाह से) डर रहा होता है; (10) तो आप उससे ग़फ़्लत बरतते हैं, (11) हरग़िज़ ऐसा न कीजिए, बेशक यह (क़ुर्आन) तो एक नसीह़त नामा है; (12) जिसका जी चाहे याद रखे। (13) यह (क़ुर्आन) अदब के क़ाबिल पन्नों पर है। (14) जो बुलन्द मक़ाम पर (और) पाक है; (15) (ऐसे) लिखने वालों के हाथों में; (16) जो मुह़तरम(सम्मानीय) और नेक हैं। (17) (अल्लाह की) मार हो ऐसे इन्सानों पर, यह कैसा नाशुक्रा है। (18) उसे (अल्लाह ने) किस चीज़ से पैदा किया? (19) नुत्फ़े (sperm) से पैदा किया, फिर उसे एक ख़ास अन्दाज़ से बनाया; (20) फिर उसका (दुनिया में आने का) रास्ता आसान कर दिया; (21) फिर उसे मौत दी,फिर क़ब्र में पहुँचाया। (22) फिर जब चाहेगा, उसे (दुबारा) उठा कर खड़ा करेगा। (23) कुछ सन्देह नहीं कि अल्लाह ने उसे जो हुक्म दिया था, उसने उस पर अ़मल न किया। (24) तो इन्सान को चाहिए कि अपने खाने पर नज़र डाले; (25) बेशक 'हमने' ही तो (मूसलाधार) पानी बरसाया; (26) फिर 'हमने' ही ज़मीन को चीरा फ़ाड़ा; (27) फिर 'हमने' ही उसमें से अनाज उगाया; (28) और अंगूर और तरकारियाँ; (29) और ज़ैतून और खजूरें; (30) और घने-घने बाग़; (31) और फल और चारा; (32) तुम्हारे और तुम्हारे मवेशियों के लिए बसर का सामान (बनाया)। (33) तो जब (कान फाड़ देने वाली) आवाज़ आएगी; (34) उस दिन आदमी अपने भाई से दूर भागेगा; (35) और अपनी माँ, और अपने बाप से; (36) और अपनी पत्नी और अपने बेटों से, (37) हर आदमी को, उस दिन अपनी ही ऐसी चिन्ता होगी, कि उसको अपने सिवा किसी का होश न होगा। (38) और कितने चेहरे उस दिन चमक रहे होंगे; (39) हँसते और खिले हुए चेहरे; (40) और कितने चेहरों पर उस दिन धूल पड़ी होगी; (41) और (उनके चेहरों पर) कालस छा रही होगी; (42) यही काफ़िर (इन्कार करने वाले,) और फ़ाजिर (दुराचारी) लोग होंगे।

सूरः अ़बस की संक्षिप्त व्याख्या

अक्सर मुफ़स्सिरीन और ह़दीस विशेषज्ञों ने इस सूरः के उतरने की वजह यह बताई है कि एक बार अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथ मक्का के कुछ बड़े सरदार बैठे हुए थे। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) उनको इस्लाम समझा रहे थे कि इतने में 'इब्ने उम्मे मक्तूम' नामी एक अन्धे आदमी आप (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुए और उन्होंने आप (सल्ल०) से इस्लाम के बारे में कुछ पूछना चाहा। रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह बात पसन्द न आई और आपने उनको प्राथमिकता न दी। इस पर अल्लाह तआ़ला की ओर से यह सूरः उतरी।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के प्राथमिकता न देने की बड़ी वजह यह थी कि 'इब्ने उम्मे मक्तूम' पक्के मुसलमान और हर वक़्त घर आने-जाने वालों में से थे, जो दूसरे वक़्तों में भी सवाल कर सकते थे और उनको बाद में जवाब देने से किसी दीनी नुक़्सान का ख़तरा भी न था। जबकि मक्का के सरदार आप (सल्ल०) के पास हर वक़्त न आते थे, न ही हर वक़्त उनको अल्लाह की बात पहुँचाई जाती थी, उस वक़्त यह लोग आप (सल्ल०) की बात बहुत ग़ौर से सुन रहे थे जिस से उनके ईमान लाने की उम्मीद भी हो गई थी, बात के काटने पर वह लोग ईमान ही से मह़रूम हो सकते थे, इसलिए आप (सल्ल०) ने अपनी बात जारी रखी, जिस पर अल्लाह तआ़ला की ओर से यह आयतें उतरीं।

1-2 عَبَسَ وَتَوَلَّىٰٓ ۝ أَن جَآءَهُ ٱلْأَعْمَىٰ ۝

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने एक अन्धे के आने से माथे पर बल डाल कर मुँह फेर लिया (अर्थात यह ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अति प्रेमी थे, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चाहा कि इन से तो बाद में भी बात कर लेंगे। पहली आयत में तो इस तरह़ कहा गया, लेकिन इस की अगली ही आयत में आप (सल्ल०) को मुख़ातब करते हुए कहा गया है, कि कहीं आप को यह शक न हो जाए कि अल्लाह ने आप की ओर से लापरवाही की है, इसलिए दूसरी आयत के बारे में इस आयत से हल्का करके पेश किया गया है, जो आप (सल्ल०) के अति प्रिय (मह़बूब) होने की दलील है।

3-7 وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُۥ يَزَّكَّىٰٓ ۝ أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنفَعَهُ ٱلذِّكْرَىٰٓ ۝ أَمَّا مَنِ ٱسْتَغْنَىٰ ۝ فَأَنتَ لَهُۥ تَصَدَّىٰ ۝ وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكَّىٰ ۝

यहाँ ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को मुख़ातब करते हुए कहा जा रहा है कि वह अन्धा, सच्चा इच्छुक था। आपको क्या मालूम कि आपकी मेहरबानी से वह पूरे तौर पर संवर जाता और उस का मन पाक हो जाता या आपकी कोई बात कान में पड़ती और उसको सच्चे दिल से सोचता, समझता और फिर यह बात किसी दर्जे में उसके काम आती।

जो शख़्स आप के धर्म से बेरुख़ी कर रहा है, आप उसको तो समझा बुझा रहे हैं कि यह किसी तरह़ समझ कर ईमान ले आए ताकि उनके इस्लाम लाने का प्रभाव दूसरों पर भी पड़े, जबकि वह आपकी ज़िम्मेदारी नहीं है कि घमण्डी और शेखी बाज़ भी सीधे रास्ते पर आ ही जाएँ। आप का काम तो सिर्फ़

हक़ बात पहुँचा देना है जिसे आप पूरा कर रहे हैं।

8-12 وَأَمَّا مَن جَاءَكَ يَسْعَىٰ ۝ وَهُوَ يَخْشَىٰ ۝ فَأَنتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ ۝ كَلَّا إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝ فَمَن شَاءَ ذَكَرَهُ ۝

कहीं ऐसा न हो कि इन घमण्डियों की फ़िक्र में दूसरों का नुक़्सान हो जाए कि जो अल्लाह से डर कर आप के पास दौड़ा हुआ आए और आपकी नसीह़त को मानने के लिए तैयार भी हो, तो आप उन घमण्डियों की फ़िक्र में इस पर ध्यान न दें, हरग़िज़ ऐसा न कीजिए।

क़ुर्आन तो नसीह़त की चीज़ है अर्थात यदि घमण्डी क़ुर्आन न पढ़े और इस नसीह़त पर कान न धरें, तो अपना ही बुरा करेंगे। क़ुर्आन इसलिए नहीं है कि इस के सुनाने के लिए किसी की ख़ुशामद की जाए, इसे आप बिना किसी भेदभाव के हर आदमी को सुनाइए बल्कि जो इस के सुनने के लिए ख़ुद दौड़ कर आए उसे अच्छी तरह़ सुनाइए और समझाइए। आप का काम नसीह़त करना है, सो आपने कर दिया यानी जो अपना फ़ायदा चाहे वह इसको पढ़े और समझे।

13-16 فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝ مَّرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝ بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۝ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝

क़ुर्आन को किसी के सर पर ज़बरदस्ती मढ़ना नहीं है यानी किसी को ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल नहीं करवाना है, बल्कि यह क़ुर्आन तो तमाम इन्सानों के लिए नसीह़त नामा और सीधा रास्ता दिखाने वाला है। क़ुर्आन तो वह है जिसकी आयतें आसमान से ऊपर बहुत सम्मानित, साफ़ सुथरे पृष्ठों में लिखी हुई हैं, ज़मीन पर भी ईमानदार लोग इसके पृष्ठों को इ़ज़्ज़त, सम्मान और पवित्रता के साथ ऊँचे स्थान पर रखते हैं।

यह क़ुर्आन ऐसे लिखने वालों के हाथों में है जो बड़े दर्जे वाले, नेकी करने वाले हैं यानी फ़रिश्ते इकट्ठा लिखते हैं, उसी के मुताबिक़ वह़्य उतरती है। यहाँ के पृष्ठों में लिखने और इकट्ठा करने वाले दुनिया के बुज़ुर्ग, नेक काम करने वाले और फ़रिश्तों जैसा स्वभाव रखने वाले बन्दे हैं जो इस की ह़िफ़ाज़त करते हैं।

17-32 قُتِلَ الْإِنسَانُ مَا أَكْفَرَهُ ۝ مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۝ مِن نُّطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ ۝ ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ۝
ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۝ ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنشَرَهُ ۝ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَا أَمَرَهُ ۝ فَلْيَنظُرِ الْإِنسَانُ إِلَىٰ طَعَامِهِ ۝ أَنَّا
صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ۝ ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ۝ فَأَنبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ۝ وَعِنَبًا وَقَضْبًا ۝ وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ۝
وَحَدَائِقَ غُلْبًا ۝ وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ۝ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۝

इन्सान पर अल्लाह की मार हो, यह कैसा नाशुक्रा है कि इस क़ुर्आन जैसी नेअ़मत की क़द्र नहीं करता, जबकि अल्लाह ने इसे एक वीर्य (sperm) से पैदा किया यहाँ तक कि हाथ पैर आदि तमाम शारीरिक अंग ठीक ढंग और विशेष अन्दाज़े से बनाया। कोई अंग बेतुका, बेढ़ंगा नहीं रखा बल्कि इस के अन्दर चेतना, सुन्दरता और ज्ञान सब कुछ अल्लाह ने अपनी कृपा से देने के बाद सारे रास्ते आसान कर दिये। यहाँ तक कि माँ के पेट से आसानी के साथ निकाला और मरने के बाद इस की लाश को क़ब्र

में रखने का आदेश दिया।

फिर वह जब चाहेगा इसको दोबारा ज़िन्दा कर के खड़ा कर देगा और ऐसे बड़े-बड़े काम जिसके अधिकार में हों, क्या उसकी नसीहत से मुँह मोड़ना या इन्कार करना किसी आदमी के लिए बेहतर होगा? लेकिन यह इन्सान बड़ा नाशुक्रा है।

इन्सान अपने खाने-पीने के सामान को ही देख ले कि हमने कैसे पानी बरसाया, ज़मीन को फाड़ा, उस में से अनाज, अंगूर, तरकारी, ज़ैतून, खजूर के घने बाग़, मेवे और घास उगाए।

33-42 فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ﴿٣٣﴾ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿٣٤﴾ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ﴿٣٥﴾ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ
يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴿٣٧﴾ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾
تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾

इन आयतों से पता चलता है कि दुनिया में जो खाने-पीने का इन्तिज़ाम किया गया है, वह थोड़े ही दिन का है। दुनिया तो एक दिन ख़त्म होकर रहेगी और क़ियामत आ जाएगी तो उस दिन पहला सूर (ऐसी तेज़ आवाज़ जिससे कान बहरे हो जाएँगे) फूंका जाएगा, जिससे तमाम इन्सान ज़िन्दा होकर मैदाने ह़श्र में इकट्ठा हो जाएँगे।

उस दिन हर आदमी को अपनी-अपनी पड़ी होगी, कोई किसी को न पूछेगा। भाई, माँ, बाप, पत्नी और बेटे सब एक दूसरे से दूर भागेंगे कि कहीं ऐसा न हो कि मेरी नेकियों में से कोई अपने अधिकार की माँग करने लगे। उस दिन नेक लोग खुश व खुर्रम होंगे और उन के चेहरे ख़ुशी से चमक रहे होंगे। बद्कार, गुनाहगार लोगों के चेहरे से उदासी और घबराहट टपक रही होगी, यह वह लोग होंगे जिन्होंने अल्लाह के दीन को ठुकराया होगा।

दुआ़ओं का तालिब
मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
दारुल उलूम् नद्वतुल उलमा, लखनऊ
03-03-2012

(भाग-81)

सूर-ए-तक्वीर

(सूरः नं. 81)

सूरः तक्वीर का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का के शुरु ज़माने में उतरी इसमें उन्तीस आयतें हैं, जिसके शुरु की छः आयतों में क़ियामत का ज़िक्र है, कि जब सूरज प्रकाशहीन (बेनूर) हो जायेगा, सितारे बिखर जाएँगे, पहाड़ ज़मीन से उखड़कर उड़ने लगेंगे, लोगों को अपनी महबूब चीज़ों तक का होश न रहेगा, जंगलों के जानवर घबरा कर इकट्ठे हो जाएँगे और समुद्र भड़क उठेंगे यानी दुनिया ख़त्म कर दी जाएगी।

फिर अगली सात आयतों में बताया गया है कि रुहें (आत्माएँ) नये सिरे से उनके जिस्मों से जोड़ दी जाएँगी, नाम-ए-आमाल खोल दिये जाएँगे, अपराधों की पूछ-तांछ होगी, आसमान के सारे पर्दे हट जाएँगे, जन्नत और जहन्नम सब सामने कर दी जाएगी। मरने के बाद (परलोक) का मन्ज़र खींचने के बाद इन्सान को सोचने का मौक़ा दिया गया है कि उस समय हर इन्सान को ख़ुद ही मालूम हो जाएगा कि वह क्या ले कर आया है?

इस के बाद अगली आयतों में रिसालत का ज़िक्र किया गया है कि इन्सानों के सुधार के लिए अल्लाह की ओर से बराबर सन्देष्टा (Messenger) आते रहे और सत्य मार्ग का पालन करते और करवाते रहे। क़ियामत तक के लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को आख़िरी नबी बनाकर भेजा गया, ताकि वह तमाम इन्सानों को सीधा रास्ता प्रदर्शित करवा दें।

फिर कहा गया है कि इस कुर्आन को मामूली ग्रन्थ मत समझो, इसलिए कि कुर्आन एक बड़े श्रेष्ठ, अमानतदार फ़रिश्ते (दूत) के ज़रिये हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर भेजा गया है। इसमें वह बातें बता दी गई हैं जिससे इन्सान बेख़बर है यानी एक दिन इस दुनिया का ख़ात्मा हो जाएगा और इन्सानों को दोबारा उठाया जाएगा। फिर उस के उन कामों की, जो दुनिया में किये थे जाँच पड़ताल होगी, उनमें से जिस ने कुर्आन के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारी होगी उसे जन्नत मिलेगी और जो उसे न माना होगा, उसे दोज़ख़ मिलेगी।

इस सूरः के बारे में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो शख़्स चाहे कि क़ियामत के दिन को दुनिया में अपनी आँखों से देख ले, उसे चाहिए कि **'इज़श्शम्सु कुव्विरत'** पढ़े।

आयत नं० 1 से 29 तक

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝ وَإِذَا النُّجُومُ انكَدَرَتْ ۝ وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝ وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝ وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝ وَإِذَا النُّفُوسُ
زُوِّجَتْ ۝ وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ۝ بِأَيِّ ذَنبٍ قُتِلَتْ ۝ وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝ وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝ وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝ وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۝
عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ۝ فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝ وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ۝ وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۝ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝ ذِي
قُوَّةٍ عِندَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝ مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ۝ وَمَا صَاحِبُكُم بِمَجْنُونٍ ۝ وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ ۝ وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۝ وَمَا
هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ۝ فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ۝ لِمَن شَاءَ مِنكُمْ أَن يَسْتَقِيمَ ۝ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ
رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

अनुवाद-

(1) जब सूरज लपेट दिया जाएगा; (2) और जब तारे धुँधले हो जाएँगे; (3) और जब पहाड़ चलाए जाएँगे; (4) और जब दस महीने की गाभिन ऊँटनियाँ (व्यर्थ) छूटी फिरेंगी; (5) और जब जंगली जानवर इकट्ठे हो जाएँगे; (6) और जब समुद्र भड़का दिये जाएँगे; (7) और जब रुहें (बदनों से) मिला दी जाएँगी (8) और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा; (9) वह किस कुसूर में मारी गई? (10) और जब नाम-ए-आमाल (कर्म-पत्र के दफ़्तर) खोल दिये जाएँगे; (11) और जब आसमान का पर्दा खींच लिया जाएगा; (12) और जब जहन्नम दहकाई जाएगी; (13) और जब जन्नत क़रीब लाई जाएगी; (14) तब हर नफ़्स (जीव) को मालूम हो जाएगा कि वह क्या लेकर आया है। (15) तो मैं उन (सितारों) की क़सम खाता हूँ, जो पीछे हटने लगते हैं। (16) और चलते-चलते दुबक (छिप) जाते हैं। (17) और रात की, जब फैल जाए; (18) और सुबह की जब वह साँस ले; (अर्थात नमूदार हो)। (19) बेशक यह (कुर्आन) एक बाइज़्ज़त फ़रिश्ते का लाया हुआ पैग़ाम (वाणी) है; (20) जो बड़ा बलवान (और) अ़र्श (सिंहासन) के मालिक के नज़दीक़ उसका बड़ा मर्तबा है; (21) (वहाँ) उसका हुक्म माना जाता है और अमानतदार है। (22) और तुम्हारे साथी (मुहम्मद) कोई दीवाने नहीं हैं; (23) और उन्होंने तो उस (फ़रिश्ते) को आसमान के खुले किनारे (क्षितिज) पर देखा है; (24) और वह ग़ैब (परोक्ष) की बातों के बताने में कंजूस नहीं, (25) और न यह (कुर्आन) किसी धिक्कारे हुए शैतान की बात है। (26) तो तुम लोग किधर चले जा रहे हो? (27) यह (कुर्आन) तो सारे संसार वालों के लिए एक नसीहत है; (28) तुममें से हर उस व्यक्ति के लिए जो सीधा रास्ता अपनाना चाहे; (29) और तुम (कुछ) नहीं चाह सकते जब तक कि वह अल्लाह रब्बुलआलमीन (सारे संसार का रब) न चाहे।

सूरः तक्वीर की संक्षिप्त व्याख्या

1-10 إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝ وَإِذَا النُّجُومُ انكَدَرَتْ ۝ وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝ وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝ وَإِذَا
الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝ وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝ وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ۝ بِأَيِّ ذَنبٍ قُتِلَتْ ۝ وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝

क़ियामत का मन्ज़र

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है, "एक समय ऐसा आएगा कि दुनिया का यह पूरा कारखाना टूट-फूट

जाएगा। सूरज की फैली हुई किरणें जिनसे धूप फैलती है और गर्मी पैदा होती है लपेट कर तह कर दी जाएँगी, सूर्य प्रकाशहीन (बेनूर) हो जाएगा, फिर सितारे टूट-टूट कर गिर पड़ेंगे, पहाड़ अपनी जगह से हिल जाएँगे, जो हवा में उड़ते फिरेंगे। इन्सान ऐसे बद्हवास हो जाएँगे कि ऊँटनियों को, जो गाभिन हों या बच्चा देने के क़रीब होंगी या बच्चा दे चुकी होंगी यूँ ही छोड़ देंगे और वह इधर-उधर भटकती फ़िरेंगी।"

जबकि इस दुनिया में इन्सान उस से फ़ायदा उठाने के लिए उस की ख़ूब ख़िद्मत व हिफ़ाज़त करता है, लेकिन उस दिन यह भूल जाएगा यहाँ तक कि उस दिन जंगली जानवर, हिरन, शेर, नील गाय, छोटे पक्षी सब एक ही जगह इकट्ठा हो जाएँगे, न कोई किसी से भागेगा और न कोई किसी को पकड़ेगा। समुद्र आग की तरह़ गर्म होकर इस तरह़ जोश मारेगा जैसे- तन्दूर की आग ईधन झोंकने को भड़कती है। आदमियों में उनके अ़ामाल के मुताबिक़ गिरोह बना दिये जाएँगे।

ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़कियों से पूछा जाएगा कि बताओ तुम्हें किस गुनाह में क़त्ल (क़त्ल करना या कोई ऐसा तरीक़ा अपनाना जिससे ह़मल न ठहरे। जैसे- आजकल दुनिया में 'कम सन्तान सुखी इन्सान' के नाम से इसको रोकने के सैकड़ों तरीक़े हैं, उस को भी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने मना फ़रमाया है यानी ख़ुफ़िया तौर से बच्चे को ज़िन्दा दफ़्न करना और दूसरी रिवायतों में जो 'अज़्ल' यानी ऐसा तरीक़ा अपनाना कि नुत्फ़ा माँ के रह़म में न जाए उस पर रसूल (सल्ल०) ने जहाँ मना नहीं फ़रमाया, वहीं ख़ामोशी या किसी ख़ास ज़रूरत या ह़ालात के साथ ख़ास रखा है, (जिसे उ़लमा से मालूम करके अ़मल किया जा सकता है लेकिन) वह भी इस तरह़ कि जो हमेशा के लिए नस्लकुशी की शक्ल न बने। (मज़हरी)

आजकल दवाएँ खाई जाती हैं या इलाज किया जाता है उनमें ज़्यादहतर ऐसी हैं जिनसे नस्ल औलाद का होना बंद हो जाता है (इसकी इजाज़त किसी भी ह़ाल में शरीअ़त में नहीं है) ताकि उनके माँ बाप को मालूम हो जाए कि वह दुनिया में बड़े धोखे में थे कि यह हमारी औलाद है, हम जैसा चाहें उन के साथ व्यवहार करें। अतः उन्हें यह समझना चाहिए था कि उन्हें अल्लाह तआ़ला ने पैदा किया है और वही उन का मालिक है।

उसने हमें अमानत के तौर पर दिया है कि उन को उस के हुक्म के मुताबिक़ परवरिश करें, वरना क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़कियों से पूछेगाः-

"कि तुमने क्यों गुनाह किया था, जिस की वजह से तुम्हारे बाप ने तुम्हें ज़िन्दा गाड़ दिया था?" वह कहेगी, "कि हम बिल्कुल बेगुनाह थे हमारे बाप ने हम पर ज़ुल्म किया, कि इस बेरहमी के साथ हमें मारा"। उस दिन हर आदमी का अ़ामाल-नामा खोलकर उस के हाथ में दे दिया जाएगा।

11-18 وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝ وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝ وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۝ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ۝ فَلَا
أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝ وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ۝ وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۝

जब आसमान का पर्दा उठाया जाएगा और उसके अन्दर की सब चीज़ें बाहर निकल आएँगी, दोज़ख़ को दहकाया व भड़काया जाएगा, जन्नत को क़रीब लाया जाएगा तो उस वक़्त हर इन्सान को मालूम हो

जाएगा कि वह दुनिया में क्या कमा कर लाया है जो यहाँ काम आए? बेशक क़ियामत के आने में कोई शक व सन्देह नहीं, जिस की ख़बर क़ुर्आन में दी गई है।

19-29

انه لقول رسول كريم ۝ ذي قوة عند ذي العرش مكين ۝ مطاع ثم امين ۝ وما صاحبكم بمجنون ۝
ولقد راه بالافق المبين ۝ وما هو على الغيب بضنين ۝ وما هو بقول شيطن رجيم ۝ فاين تذهبون ۝ ان
هو الا ذكر للعلمين ۝ لمن شاء منكم ان يستقيم ۝ وما تشاءون الا ان يشاء الله رب العلمين ۝

सच्चे पैग़म्बर की शान-

क़ुर्आन के बारे में फ़रमाया गया है कि क़ुर्आन अल्लाह का कलाम है जो एक रसूल यानी जिब्रईल (अ़लै०) के ज़रिये ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) तक आया। वह फ़रिश्ता बड़ी क़ुव्वत व ताक़त वाला है, उस (फ़रिश्ते) की बात अ़र्श वाले मानते हैं और वह अल्लाह के नज़्दीक अमानतदार है। ऐसा क़ासिद (दूत) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को पढ़ कर सुनाता है, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को तुम जानते हो कि यह तुम्हारे ही सामने पले बढ़े और तुम इन्हें 'अमीन व सादिक़' भी कहते हो, उन्होंने न कभी धोखा दिया, न तुम्हें कोई नुक़्सान पहुँचाया और न तुम्हें उनकी सच्चाई में कभी कोई शंका हुई।

यह ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) को आसमान के साफ़ किनारे पर पूरब की ओर पहले देख चुके हैं। जब वह हमारा पैग़ाम लेकर उन के पास आया तो उन्होंने उनको पहचान लिया और जो ग़ैब (परोक्ष) की बातें उस से सुनीं, वह पूरी की पूरी पहुँचा दीं, कंजूसी नहीं की।

यानी यह क़ुर्आन किसी शैतान मरदूद का कलाम (वाक्य) नहीं, फिर इस में शक व सन्देह कैसा? यह तो सारी दुनिया के लिए नसीह़त नामा है, जो सीधे रास्ते पर चलना चाहे वह इस से फ़ायदा उठाए, लेकिन इस से वह भागेंगे जो बद्बख़्त (दुष्ट) होंगे और दुनिया की ही ज़िन्दगी को सब कुछ समझते होंगे या ज़िद्दी हठधर्मी होंगे जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने सीधे रास्ते पर चलाना न चाहा होगा, क्योंकि उन में सीधे रास्ते पर चलने की क्षमता ही न रही होगी। अल्लाह ही सारी दुनिया का पालनहार और ह़ाकिम है, उसने हर एक के लिए उस के फ़ायदे की चीज़ बना दी है, लेकिन उस से फ़ायदा वही उठाएगा जिसे वह चाहेगा।

दुआ़ओं का तालिब
मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
दारुल उलूम् नद्वतुल उलमा, लखनऊ
25-02-2012

(भाग–82)

सूर–ए–इन्फ़ितार

(सूरः नं. 82)

सूरः इन्फ़ितार का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का के शुरु ज़माने में उतरी, इसमें 19 आयतें और एक रुकूअ़ हैं। इसके शुरु की आयतों में सबसे पहले क़ियामत के दिन का मन्ज़र खींचा गया है कि जब वह दिन आएगा तो हर शख़्स का किया-धरा सब सामने आ जाएगा।

इसलिए इसे याद रखना चाहिए कि यह दुनिया में अपने आप ही नहीं आ गया, बल्कि इसका एक पैदा करने वाला है जो इसकी परवरिश करता है, आ़माल लिखने वाले फ़रिश्ते इसके पास हर वक़्त मौजूद रहते हैं जो कुछ वह कहता या करता है, फ़ौरन उसे लिख लेते हैं और उसका आ़माल नामा (लेखा-जोखा) तैयार होता रहता है, जिसे क़ियामत के दिन हर आदमी को उसके हाथ में दिया जाएगा। उस वक़्त साफ़ मालूम हो जाएगा कि उसने कौन सा ऐसा काम किया है जो उसे न करना चाहिए था और कौन सा ऐसा काम है जो उसे करना चाहिए। इन्सान का काम यह है कि वह अपने पालनहार को पहचाने, उसके रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को माने और कुर्आन के मुताबिक़ ज़िन्दग़ी गुज़ारे।

आख़िर में फिर कहा गया है कि बदले का दिन ज़रूर आने वाला है, जिसमें नेक लोगों को जन्नत का सुख और बुरे लोगों को जहन्नम का अ़ज़ाब मिल कर रहेगा, उस दिन कोई किसी के काम न आएगा, फ़ैसले का अख़्तियार सिर्फ़ अल्लाह ही के हाथ में होगा।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने इस सूरः के बारे में फ़रमाया, जो शख़्स चाहता हो कि क़ियामत के दिन को इस तरह़ देख ले जैसे कोई चीज़ अपनी आँखों से देखी जाती है तो उसे चाहिए कि वह सूरः तक्वीर, सूरः इन्फ़ितार और सूरः इन्शिक़ाक़ पढ़े।

आयत नं० 1 से 19 तक

إذا السماء انفطرت ۝ وإذا الكواكب انتثرت ۝ وإذا البحار فجرت ۝ وإذا القبور بعثرت ۝ علمت نفس ما قدمت وأخرت ۝ يا أيها الإنسان ما غرك
بربك الكريم ۝ الذي خلقك فسواك فعدلك ۝ في أي صورة ما شاء ركبك ۝ كلا بل تكذبون بالدين ۝ وإن عليكم لحافظين ۝
كراما كاتبين ۝ يعلمون ما تفعلون ۝ إن الأبرار لفي نعيم ۝ وإن الفجار لفي جحيم ۝ يصلونها يوم الدين ۝ وما هم عنها بغائبين ۝
وما أدراك ما يوم الدين ۝ ثم ما أدراك ما يوم الدين ۝ يوم لا تملك نفس لنفس شيئا والأمر يومئذ لله ۝

अनुवाद-

(1) जब आसमान फट जाएगा; (2) और जब सितारे टूट-कर बिखर जाएँगे; (3) और जब समुद्र बह (कर मिल) जाएँगे; (4) और जब क़ब्रें उखाड़ दी जाएँगी; (5) तब हर जानदार (आदमी) को मालूम हो जाएगा कि आगे उसने क्या भेजा था, और क्या उसने पीछे छोड़ा था? (6) ऐ इन्सान! किस चीज़ ने तुझ को अपने उस करम वाले रब की ओर से धोखे में डाल रखा है? (7) जिसने तुम को बनाया, फिर (तुम्हारे अंगों को) ठीक किया, और फिर तुमको सन्तुलित किया; (8) जिस रूप में चाहा तुम को बना दिया। (9) मगर अफ़सोस है कि तुम लोग बदला दिये जाने को झुठलाते हो। (10) हालाँकि तुम पर निगरानी करने वाले (फ़रिश्ते) तैनात हैं; (11) बाइज़्ज़त (प्रतिष्ठावान) लिखने वाले; (12) जो कुछ तुम करते हो उनको उसकी ख़बर है। (13) बेशक नेक लोग मज़े (जन्नत) में होंगे; (14) और बुरे (लोग) जहन्नम में; (15) इन्साफ़ के दिन उसमें दाख़िल होंगे; (16) और वह 'उससे' कहीं ग़ायब न हो सकेंगे, (17) और तुम क्या जानों कि बदले का दिन क्या है? (18) फिर तुम्हें क्या मालूम कि बदले का दिन कैसा है? (19) (वह दिन ऐसा है) जिसमें कोई आदमी किसी का कुछ भी भला न कर सकेगा और हुक्म (शासन) उस दिन अल्लाह ही का होगा।

सूरः इन्फ़ितार की संक्षिप्त व्याख्या

1-5 إذا السماء انفطرت ۝ وإذا الكواكب انتثرت ۝ وإذا البحار فجرت ۝ وإذا القبور بعثرت ۝ علمت نفس ما قدمت وأخرت ۝

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि जब यह आसमान फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा, तारे टूट कर बिखर जाएँगे, समुद्र व दरिया जोश से उबल कर ज़मीन पर फैल जाएँगे, क़ब्रें उलट दी जाएँगी तो उसके अन्दर की चीज़ें बाहर आ जाएँगी, यही क़ियामत होगी।

इन्सान ने जो कुछ दुनिया में किया था सब उसके सामने आ जाएगा कि क्या उसने आगे भेजा था और क्या पीछे छोड़ा था।

6-12 يا أيها الإنسان ما غرك بربك الكريم ۝ الذي خلقك فسواك فعدلك ۝ في أي صورة ما شاء ركبك ۝
كلا بل تكذبون بالدين ۝ وإن عليكم لحافظين ۝ كراما كاتبين ۝ يعلمون ما تفعلون ۝

दुनिया का धोखा-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं, कि इन्सान अपने पालनहार के बारे में अपनी ग़लतफ़हमी की वजह

से धोखे में पड़ गया है। कुछ लोग तो कहने लगे कि हमारा पालनहार कोई नहीं और हमारे साथ जो कुछ हो रहा है वह अपने आप हो रहा है। कुछ लोगों ने यह मान लिया कि कोई पालनहार तो है, लेकिन वह एक नहीं बहुत से हैं जो आपस में मिलजुल कर दुनिया को चला रहे हैं।

कुछ कहते हैं कि वह एक है और वह बड़ा रह़म वाला है, हम चाहे जो करें माफ़ कर देगा और जो कुछ लोग कहते हैं कि उस अल्लाह को यदि रह़ीम मानेंगे तो वह अन्यायी हो जाएगा। इन सब बातों का जवाब देते हुए क़ुर्आन कहता है किः-

"तुम्हारा पालनहार एक है और वह करीम है, लेकिन क़ादिर और ह़िक्मत वाला भी है। उसने इन्सान को सन्तुलित स्वभाव का बनाया, लेकिन हर एक की शक्ल सूरत, चाल-ढ़ाल अलग-अलग रखी, इसलिए हर एक के काम अलग-अलग हैं। इसलिए अन्जाम भी हर एक का अलग-अलग ही होगा, इसलिए फ़ैसले का एक दिन होना चाहिए। अतः सुन लो इसके लिए अमानतदार फ़रिश्ते तय कर दिये गए हैं कि हर इन्सान के अ़ामाल लिखते रहें।

13-19 إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝ وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۝ يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۝ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۝ وَمَا
أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ ۝

इन्साफ़ का दिन-

क़ियामत के दिन सभी काम को क़ुर्आन पाक की कसौटी पर परखा जाएगा। जो काम क़ुर्आन की तअ़लीम के मुताबिक़ होगा वही नेक काम कहलाएगा और उसका करने वाला नेक लोगों में शामिल किया जाएगा। जो क़ुर्आन की शिक्षा के अनुसार न होगा वह बुरा समझा जाएगा और उसको बुरे लोगों में शामिल किया जाएगा।

फिर नेक लोग जन्नत में दाख़िल कर दिये जाएँगे और वह हमेशा आराम व सुकून से वहीं रहेंगे, बुरे (दुष्ट) लोग दोज़ख़ में झोंक दिये जाएँगे, जहाँ वह उस की गर्मी व तपिश से बेचैन होंगे, वहाँ वह न निकल सकेंगे और न ही एक सेकेण्ड के लिए उससे अलग हो सकेंगे, हमेशा उसी में रहना होगा। यह सब क़ियामत के दिन होगा जो बड़ा ही हौलनाक डरावना दिन होगा, यह भी सुन लो! कि उस दिन कोई किसी के काम न आएगा और न कोई किसी को ज़र्रा बराबर भी फ़ायदा पहुँचा सकेगा। वहाँ तो सिर्फ़ अल्लाह ही का हुक्म चलेगा और कोई कुछ न कर सकेगा और आख़िरी फ़ैसला वही होगा जो वह करेगा।

(भाग-83)

सूर-ए-मुतफ़्फ़िफ़ीन

(सूरः नं. 83)

सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का के शुरु ज़माने में उस समय उतरी जब कि मक्का वालों ने सड़कों, बाज़ारों, सभाओं में मुसलमानों पर आवाज़े कसने और उसकी बुराई करने का सिलसिला शुरु कर दिया। कुछ मुफ़स्सिरीन ने इसे मदनी सूरः भी कहा है। इस भ्रम का कारण हक़ीक़त में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का वह कथन है कि जब नबी-ए-करीम (सल्ल०) मदीना आए तो वहाँ के लोगों में कम नापने और तौलने का रोग फैला हुआ था, तो अल्लाह तआ़ला ने इस सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन को उतारा, जिसके बाद लोग अच्छी तरह़ नापने-तौलने लगे।

इस सूरः की छः आयतों में उस आम बुराई की ओर जो कारोबारी लोगों में बहुत ज़्यादा फैली हुई थी उस का ज़िक्र है (कि अगर दूसरों से कोई सामान लेना होता तो पूरा नाप-तौल कर लेते और जब किसी को देना होता तो नाप तौल में घटा देते।)

जब तक लोगों में यह एह़सास न हो कि एक दिन अल्लाह के सामने पेश होना है, कौड़ी-कौड़ी का ह़िसाब देना है, उस समय तक यह सम्भव ही नहीं कि वह अपने मामलों में न्याय कर सकें।

अगली आयतों में बताया गया है कि बुरे लोगों के आ़माल पहले ही जराएम पेशा लोगों के रजिस्टर में दर्ज हो रहे हैं और आख़िरत में उनको भारी तबाही से दो-चार होना पड़ेगा। जो लोग नेक होंगे उन का अच्छा ठिकाना होगा।

आख़िर में ईमान वालों को तसल्ली दी गई है और काफ़िरों को आगाह किया गया है कि आज जो लोग ईमान लाने वालों को तुच्छ (ज़लील) समझ रहे हैं, क़ियामत के दिन उन्हें मालूम हो जाएगा कि कौन ज़लील था।

आयत नं० 1 से 36 तक

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ۝ وَإِذَا كَالُوهُمْ أَو وَّزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ۝ أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُم مَّبْعُوثُونَ ۝
لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَّارِ لَفِي سِجِّينٍ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ۝ كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ۝ وَيْلٌ
يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ۝ وَمَا يُكَذِّبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ كَلَّا ۖ بَلْ ۜ
رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ كَلَّا إِنَّهُمْ عَن رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُو الْجَحِيمِ ۝ ثُمَّ يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ
تُكَذِّبُونَ ۝ كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ۝ كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ۝ يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ۝ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝ عَلَى
الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ ۝ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ۝ يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ۝ خِتَامُهُ مِسْكٌ ۚ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ۝ وَمِزَاجُهُ
مِن تَسْنِيمٍ ۝ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ۝ وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ۝ وَإِذَا انقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ
انقَلَبُوا فَكِهِينَ ۝ وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ۝ وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ۝ فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ۝ عَلَى الْأَرَائِكِ
يَنظُرُونَ ۝ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

अनुवाद-

(1) नाप तौल में कमी करने वालों के लिए ख़राबी है; (2) जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लें; (3) और जब उनको नाप कर या तौल कर दें तो कम दें। (4) क्या इन्हें इसका ख़याल नहीं है कि उठाए भी जाएँगे ? (5)एक बड़े दिन में; (6) उस दिन, जबकि सारे इन्सान 'रब्बुल आ़लमीन' (सारी दुनिया के रब) के सामने खड़े होंगे। (7) सुन लो बद्कारों के आ़माल नामे 'सिज्जीन' में हैं, (8) और आप को क्या मालूम कि सिज्जीन क्या है? (9) एक लिखा लिखाया दफ़्तर है। (10) उस दिन बड़ी दुर्दशा होगी, झुठलाने वालों की; (11) जो इन्साफ़ के दिन को झुठलाते हैं; (12) और उसे नहीं झुठलाता,मगर वह जो सीमा से बढ़ने वाला गुनाहगार है। (13) जब भी उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो कहता है, ''यह तो पहले लोगों के क़िस्से, हैं। (14) सुन लो ऐसा नहीं, बल्कि उनके दिलों पर उनके बुरे कामों का ज़ंग बैठ गया है। (15) सुन लो बेशक उस दिन यह लोग अपने 'रब' के दीदार(दर्शन) से रोक दिये जाएँगे। (16) फिर बेशक, इन्हें जहन्नम में डाल दिया जाएगा। (17) फिर उनसे कहा जाएगा, ''यह उसी का नतीजा है जिसे तुम झुठलाते थे।'' (18) सुन लो, कि नेक लोगों के आ़माल (कर्मपत्र) अ़िल्लीयीन में (विद्यमान) है? (19) और तुम को कुछ मालूम भी है कि अ़िल्लीयीन क्या है? (20) एक लिखा लिखाया दफ़्तर है; (21) जिस की निगरानी अल्लाह के मुक़र्रब (समीपवर्ती) फ़रिश्ते करते हैं। (22) बेशक नेक लोग बड़ी नेअ़मतों में होंगे; (23) मस्नदों (सिंहासन) पर बैठे नज़ारे कर रहे होंगे; (24) उनके चेहरों पर तुम सुख आनन्द की ताज़गी महसूस करोगे; (25) उनको सील बंद उम्दा ख़ालिस शराब पिलाई जाएगी, (26) जिस पर मुश्क(कस्तूरी के सुगन्ध) की मुहर लगी होगी, जो लोग दूसरों पर बाज़ी ले जाना चाहते हों,वह इस चीज़ को पाने में बाज़ी ले जाने की कोशिश करें (27) और उस शराब में 'तस्नीम' (जन्नत का स्रोत) के पानी की मिलावट होगी; (28) वह एक झरना है जिससे मुक़र्रब (समीपवर्ती बन्दे) पिएँगे। (29) जो मुजरिम थे वे (दुनिया में) ईमान वालों की हँसी उड़ाया करते थे, (30) और जब उनके पास से गुज़रते थे, तो वह हिक़ारत से इशारा करते थे; (31) और जब

अपने घरों को लौटते थे तो इतराते हुए लौटते थे; (32) और जब उनको देखते तो कहा करते थे, ''यह (लोग) तो गुमराह हैं।'' (33) और (हालाँकि) वे उन पर निगराँ (संरक्षक) बना कर नहीं भेजे गये थे। (34) तो आज के दिन ईमान वाले, काफ़िरों (इन्कार करने वालों) पर हसेंगे, (35) और मस्नदों (सिंहासन) पर (बैठकर) देख रहे होंगे। (36) क्या खूब इन काफ़िरों को बदला मिला, जो यह किया करते थे।

सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन की संक्षिप्त व्याख्या

1-6

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ۝ وَإِذَا كَالُوهُمْ أَو وَّزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ۝
أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُم مَّبْعُوثُونَ ۝ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

बुरे काम का अन्जाम-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं जो लोग दूसरों से अपना ह़क़ तो पूरा-पूरा लेते हैं, लेकिन दूसरों को देते वक़्त नाप-तौल में कमी करते हैं, उन लोगों का अन्जाम अच्छा नहीं, वह बड़ी मुसीबत में फंसने वाले हैं। उनके ह़क़ में बेहतर यही है कि वह नाप-तौल में इन्साफ़ से काम लें। जब दूसरों से लेते वक़्त पूरा-पूरा लेते हैं तो दूसरों को देते वक़्त पूरा-पूरा क्यों नहीं देते?

इन लोगों को इस का ध्यान रखना चाहिए कि मरने के बाद दोबारा उठना होगा और सब को उठ कर अपने परवरदिग़ार के पास ह़ाज़िर होना होगा, तब इनसे पूछा जाएगा कि वह अपने ही फ़ायदे के लिए क्यों फंसे हुए थे और दूसरों को नुक़्सान पहुँचा कर अपना ख़ज़ाना भरने की फ़िक्र में हर वक़्त क्यों लगे रहते थे? क्या उन्हें पता नहीं था कि इस दुनिया का पैदा करने वाला एक रब (पालनहार) भी है।

अगर तुम दुनिया में दूसरों पर ज़ुल्म करोगे तो क़ियामत में तुम से उस का सवाल किया जाएगा, कि तुमने इन्साफ़ क्यों नहीं किया और यह कैसे समझ लिया कि हम चाहे जो करें कोई पूछने वाला नहीं? यानी अल्लाह से डर कर बुरे कामों से बचो, वरना अल्लाह तआ़ला सख़्त अ़ज़ाब देगा।

7-12

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَّارِ لَفِي سِجِّينٍ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ۝ كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝
الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ۝ وَمَا يُكَذِّبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि तुम्हारा यह ख़याल बिल्कुल ग़लत है कि हम जो चाहें करें कोई पूछने वाला नहीं? हरग़िज़ ऐसा नहीं। याद रखो! तुम जो कुछ करते हो वह बराबर लिखा जा रहा है, वही तुम्हारा आ़माल नामा है यानी हर बुरे आदमी के आ़माल नामे का रजिस्टर उसके मरने के बाद एक दफ़्तर (कार्यालय) में सुरक्षित कर दिया जाता है, जिस का नाम 'सिज्जीन' है।

क़ियामत के दिन यह आ़माल नामे निकाल कर लोगों को दे दिए जाएँगे, उस दिन उन लोगों की बहुत बुरी गत बनेगी जो नबियों (ईशदूतों या अन्तिम महाईशदूत ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की बातों को या मरने के बाद अच्छे बुरे कामों का बदला मिलने को झुठलाया करते थे और कहते थे,

यूँ ही झूठ-मूठ की गढ़ी हुई बातों हैं।

याद रखो! क़ियामत को कोई समझदार इन्सान झुठला ही नहीं सकता, उसको तो वही झुठलाएगा जिस के दिमाग़ की चूलें खिसक चुकी हों और गुनाहों में फंसा रहता हो।

13-17 إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ كَلَّا إِنَّهُمْ
عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَمَحْجُوبُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُو الْجَحِيمِ ۝ ثُمَّ يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि इस क़ुर्आन को क़िस्से कहानी की बात समझना उन लोगों की समझ का फेर है जिन्हें इनमें हिदायत (सत्य मार्ग पर चलने) की रौशनी दिखाई नहीं देती, उनकी अ़क़्लों पर ग़लत ख़यालात की धूल जम गई है और दिलों पर बुरे कामों की नुहूसत की जंग लग गई है। उन की नज़र में यह आयतें पुराने ज़माने के लिए या पुराने क़िस्से कहानियों की किताब मालूम होती है, जिसे यह झूठ समझते हैं।

लेकिन इन के झुठलाने का वबाल इनके ही ऊपर पड़ने वाला है। जब क़ियामत के दिन ईमान वाले अपने पालनहार का दीदार करेंगे, उस दिन यह बद्‌बख़्त अपने पालनहार के दीदार से रोक दिये जाएँगे, उस समय यह अपनी क़िस्मत का मातम करेंगे और अल्लाह तआ़ला का हुक्म होगा कि इन्हें जहन्नम में झोंक दिया जाए। इन के लिए आज यहाँ जहन्नम ही की आग और उसकी तक्लीफ़ें हैं।

इस बीच उन से कहा जाएगा कि क्या तुम ने दुनिया में जो ढ़िठाई अपनाई थी, उस का मज़ा चखा? वह दोज़ख़ जिस से तुम्हें दुनिया में रसूल डराते थे, लेकिन तुम दुनिया के नशे में उनकी बातों को झूठ समझते थे।

18-24 كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ۝ كِتَابٌ مَرْقُومٌ ۝ يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ۝ إِنَّ الْأَبْرَارَ
لَفِي نَعِيمٍ ۝ عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ۝ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ۝

ऊपर की आयतों में अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि बुरे और अच्छे लोग हरगिज़ बराबर नहीं हो सकते, बुरे लोगों का हा़ल तो तुम सुन चुके। अब अच्छे लोगों का हा़ल सुनो।

अच्छे लोगों के आ़माल नामे 'अि़ल्लीयीन' में सुरक्षित हैं, लेकिन तुम्हें क्या मालूम कि अि़ल्लयीन क्या है? सुनो वह एक दफ़्तर (कार्यालय) है, जहाँ नेक लोगों के आ़माल नामे सुरक्षित रखे जाते हैं और वहाँ अल्लाह के वह बन्दे जो पद में अल्लाह के समीपवर्ती हैं, उन्हें देखते हैं ख़ुश होते हैं और वह वहीं हा़ज़िर रहते हैं।

क़ियामत के दिन अल्लाह के नेक बन्दे राह़त व आराम से मस्नदों और मसहरियों (बेडों) पर बैठकर तकिया लगाए जन्नत के नज़ारे को देख रहे होंगे और उनके चेहरे ख़ुशी से चमक रहे होंगे।

जो शख़्स उन्हें देखेगा उनके चेहरों की रौनक और मुस्कुराहट से ही पहचान लेगा, वह दिल ही दिल में मग्न होंगे। उन की हा़लत उन लोगों से बिल्कुल अलग होगी, जो दुनिया में बुरे कामों में ज़िन्दगी भर फंसे रहे उन्हें यह चैन सुकून कहाँ नसीब! जन्नत के इस सुहाने नज़ारे और अल्लाह के दीदार से उनकी

आँखें ओझल होंगी और अच्छे लोग इन सब से मज़ा ले रहे होंगे।

25-28 يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ۝ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ۚ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ۝ وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ۝
عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ۝

जन्नत की शराब-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि नेक लोग जन्नत का नज़ारा मस्नदों (बेहतरीन बेडों) पर बैठकर कर रहे होंगे, फिर इन्हें पीने के लिए ख़ालिस साफ़ सुथरी शराब (मज़ेदार पीने की चीज़) दी जाएगी, जिस के बोतलों की डाट मुश्क से बन्द की गई होगी और उस में तस्नीम का पानी मिलाया गया होगा।

तस्नीम जन्नत का वह चश्मा (स्रोत) है, जिस से अल्लाह के परहेज़गार (क़रीबी) लोग पिएँगे, उसी का पानी इस शराब में मिलाकर इन नेक लोगों को पिलाया जाएगा यानी वह शराब दुनिया की गन्दी और अ़क़्ल को बिगाड़ने वाली न होगी, वह तो अच्छे क़िस्म की ठंडे जूस की तरह़ होगी।

29-33 اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ۝ وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ۝ وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى
اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ۝ وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ۝ وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ۝

जो लोग अच्छी और साफ़ सुथरी चीज़ें पसन्द करते हैं, उन्हें चाहिए कि जन्नत की शराब को ह़ासिल करने की पूरी कोशिश करें यानी दुनिया में ईमान क़ुबूल करके नेक काम करें और बुरे काम को छोड़ दें।

फिर अल्लाह तआ़ला अगली आयत में फ़रमाते हैं कि बुरे लोग दुनिया में अच्छे लोगों की हंसी उड़ाया करते थे और बेवक़ूफ़ समझते हैं और यह दुनियादार गुनाहगार लोग जब दुनिया में इन दीनदार परहेज़गार लोगों के पास से गुज़रते हैं तो कन्ख़ियों से एक दूसरे की ओर देखते हुए इशारा करते हैं कि इन बेवक़ूफ़ों को देखो कि यह लकीर के फ़क़ीर ही बने हैं। यह तो बस नमाज़, रोज़ा और तब्लीग़ ही में फँसे रहते हैं और खेल तमाशा टी०वी०वी०सी०आर० नेट आदि के प्रोग्रामों में दिल बहलाना सब कुछ छोड़ रखा है। जब दुनिया के मज़े छोड़ दिये तो क्या मिलेगा, सारे लोग तरक़्क़ी कर रहे हैं और यह दिन पर दिन कमज़ोर होते जा रहे हैं।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि इन दुनियादारों से पूछो कि तुम इन दीनदार लोगों के पीछे क्यों पड़े हो? क्या तुम्हें दुनिया में इन दीनदारों का चौकीदार (निगराँ) या देखरेख करने वाला बना कर भेजा गया है कि इनकी देखभाल करो?

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन पांसा पलट जाएगा और जब ईमानदार परहेज़गारों की बारी आएगी तो वह लोग उन लोगों का मज़ाक़ उड़ाएँगे जो दुनिया में दीनदारों का मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

34-36 فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ۝ عَلَى الْاَرَآئِكِ ۙ يَنْظُرُوْنَ ۝ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝

मरने के बाद पाँसा पलट जाएगा-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि दुनिया में ह़क़ का इन्कार करने वाले ईमान वालों की हंसी उड़ाया करते थे, तब ईमानदार सब्र से काम लेते थे।

अब क़ियामत के दिन ईमानदार इन्कार करने वालों की हंसी उड़ाएँगे और कहेंगे कि क्या तुम ने उस हंसी का मज़ा चखा जो तुम हमारी दुनिया में उड़ाया करते थे?

उस वक़्त यह अपने करतूतों का पछतावा करेंगे कि काश! हम इन ईमान वालों का कहना मान लेते, दुनिया में इन्हीं जैसे हो जाते तो आज यह दिन न देखना पड़ता।

(भाग–84)

सूर–ए–इन्शिक़ाक़

(सूरः नं. 84)

सूरः इन्शिक़ाक़ का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का के शुरु ज़माने में उस वक़्त उतरी जबकि लोग क़ुर्आन को झुठला रहे थे। उन विरोधियों का जवाब देते हुए इस सूरः में बताया गया है कि क़ुर्आन की बातें गढ़े हुए क़िस्से या अफ़्साने नहीं, बल्कि एक हक़ीक़त है और याद रखो! एक ऐसा दिन आने वाला है जिस दिन आसमान फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा, ज़मीन अपने अन्दर की सब चीज़ें बाहर फेंक देगी।

उस दिन इन्सान को उठाया जाएगा और परवरदिग़ार के सामने खड़ा किया जाएगा और कहा जाएगा कि तू दुनिया में तो बहुत ख़ुश नज़र आता था और समझता था कि हमेशा यूँ ही रहेगा, लेकिन तेरा यह ख़याल कितना ग़लत था।

उस वक़्त पूछा जाएगा कि बता दुनिया के अन्दर तू किन चीज़ों में फँसा रहा कि तुझे यह भी होश न आया कि एक दिन दुनिया को छोड़ कर तो चला ही जाएगा और परवरदिग़ार को अपने किये का हिसाब देगा। फिर उस दिन अल्लाह तआ़ला पूछेंगे कि क्या आज तुझे अपने आ़माल याद हैं? ले अपना 'नाम-ए-आ़माल' पढ़ और देख दुनिया में तूने क्या काम किया था?

इस तरह़ हर शख़्स को उसका 'अअ़माल-नामा' दे दिया जाएगा। जिस का अअ़मालनामा उसके दाएँ हाथ में मिलेगा, उसको ह़िसाब-किताब में कुछ मुश्किल नहीं होगी और जिसको पीठ के पीछे से हाथ में दिया जाएगा वह बड़ी मुश्किल में फंस जाएगा।

आयत नं० 1 से 25 तक

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ۝ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ۝ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۝ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ يَا أَيُّهَا الْإِنسَانُ إِنَّكَ
كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ۝ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۝ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ۝ وَيَنقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝ وَأَمَّا
مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۝ فَسَوْفَ يَدْعُو ثُبُورًا ۝ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۝ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝ إِنَّهُ ظَنَّ أَن لَّن يَحُورَ ۝ بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ
كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۝ فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۝ وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۝ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۝ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ۝ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَإِذَا
قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۩ ۝ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ۝ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۝ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

अनुवाद-

(1) जब आसमान फट जाएगा, (2) और अपने रब का हुक्म बजा लाएगा और हक़ भी यही है। (3) और जब धरती फैला दी जाएगी; (4) और जो कुछ इसके अन्दर है उसे बाहर फेंक देगी, और ख़ाली हो जाएगी, (5) और अपने रब के फ़रमान को बजा लाएगी, और उसे चाहिए भी यही। (6) ऐ इन्सान! बेशक तू मेहनत करता ही है अपने रब की ओर पहुँचने में, खूब मेहनत किये जा, तो उससे जा मिलेगा। (7) तो जिसका आ़माल-नामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा (8) उससे आसान हिसाब लिया जाएगा। (9) और वह अपने घरवालों के पास खुश- खुश लौटेगा। (10) और जिसका आ़माल नामा उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा, (11) वह मौत को पुकारेगा, (12) और भड़कती आग में दाख़िल होगा। (13) वह अपने घर वालों में मस्त रहता था, (14) उसने समझ रखा था कि उसको कभी लौटना नहीं है। (15) क्यों नहीं उसका रब तो उसको देख रहा था। (16) नहीं, मैं क़सम खाता हूँ, शफ़क़ (संध्या लालिमा) की, (17) और रात की और जो कुछ वह अपने अन्दर समेट लेती हैं, उसकी; (18) और चाँद की जब वह पूरा हो जाता है; (19) कि तुम को निश्चय ही एक मन्ज़िल से दूसरे मन्ज़िल में पहुँचना है। (20) फिर इन लोगों को क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते? (21) और जब उनके सामने कुर्आन पढ़ा जाता है तो सज्दः नहीं करते। (22) बल्कि काफ़िर (इन्कार करने वाले) झुठला रहे हैं, (23) और यह लोग जो कुछ जमा कर रहे (अर्थात छिपा रहे) हैं, उसे अल्लाह खूब जानता है। (24) तो आप उनको एक दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए। (25) हाँ, जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल किये, उनके लिए अच्छा बदला है जो कभी ख़त्म न होगा।

सूरः इन्शिक़ाक़ की संक्षिप्त व्याख्या

1-6

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ۝ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ۝ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۝
وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ يَا أَيُّهَا الْإِنسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ۝

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि याद रखो! एक ऐसा वक़्त आने वाला है जब यह आसमान अल्लाह तआ़ला के हुक्म से फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। इस का काम भी यही है कि अल्लाह का हुक्म माने; इधर ज़मीन को खींच कर फैला दिया जाएगा, उसके अन्दर की चीज़ें बाहर निकल पड़ेंगी और वह खाली

हो जाएगी, पहाड़, टीले आदि सब बराबर हो जाएँगे। ज़मीन के लिए यही अल्लाह का हुक्म होगा वह उस के हुक्म को पूरा करेगी और उस का काम भी यही है कि वह अल्लाह के हुक्म को पूरा करे।

ऐ इन्सान! सुन ले, कि तुझे दुनिया में मेहनत और मशक़्क़त की ज़िन्दगी बसर करनी है चाहे वह मेहनत और मशक़्क़त अल्लाह तआला के हुक्म को पूरा करने में हो या अपनी इच्छाओं को पूरा करने में। आख़िरकार तू मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा और तुझे इस का फल मिल कर ही रहेगा, जो तू दुनिया में किया करता था।

7-12

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ ۝ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ۝ وَيَنقَلِبُ إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦ مَسْرُورًا ۝
وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ وَرَآءَ ظَهْرِهِۦ ۝ فَسَوْفَ يَدْعُوا۟ ثُبُورًا ۝ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۝

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि इन्सान को दुनिया में इस का ख़याल रखना चाहिए कि वह यहाँ मेहनत मशक़्क़त करते-करते आख़िरकार मर जाएगा और फिर दोबारा ज़िन्दा करके उठाया जाएगा और वह अपने पालनहार के सामने जाएगा। फिर जो कुछ दुनिया में उस ने किया होगा वह पूरा का पूरा सब लिखा हुआ इसको दे दिया जाएगा, यह इसका 'अअ़माल' होगा। किसी को दाहिने हाथ में सामने से मिलेगा और किसी को उस के पीठ के पीछे से, उस के बाएँ हाथ में पकड़ा जाएगा।

जिस का आ़माल नामा उसके दाहिने हाथ में मिलेगा वह उसे पढ़ लेगा और ख़ुशी से फूला न समाएगा और मुस्कुराता हुआ ख़ुशी-ख़ुशी अपने साथियों के पास जाकर अपनी ख़ुशी का ह़ाल बयान करेगा।

लेकिन जिस का आ़माल नामा उस की पीठ के पीछे से मिला होगा वह अफ़्सोस के मारे हाय-हाय करेगा और मौत को पुकारेगा कि किसी तरह़ फिर उसको मौत आ जाए जिस से इसकी जान इन आफ़तों से छूट जाए लेकिन वहाँ तो मौत आनी ही नहीं। वहाँ तो उसे दोज़ख़ की आग से पाला पड़ेगा और उस दहकती हुई आग में डाल दिया जाएगा।

13-20

إِنَّهُۥ كَانَ فِىٓ أَهْلِهِۦ مَسْرُورًا ۝ إِنَّهُۥ ظَنَّ أَن لَّن يَحُورَ ۝ بَلَىٰٓ ۚ إِنَّ رَبَّهُۥ كَانَ بِهِۦ بَصِيرًا ۝ فَلَآ أُقْسِمُ بِٱلشَّفَقِ ۝
وَٱلَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۝ وَٱلْقَمَرِ إِذَا ٱتَّسَقَ ۝ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ۝ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

बुरे आ़माल का नतीजा-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि यह वही तो है जो दुनिया में अपने घर वालों के साथ ख़ूब ख़ुशियाँ मनाया करता था और आख़िरत का ख़याल तक दिल में न आता था। यदि कोई कहता कि दुनिया में इतना न फंस कि आख़िरत को बिल्कुल भुला दे तो कहा करता था कि आख़िरत क्या चीज़ है? दुनिया ही में जन्नत है। क्या देखते नहीं कि दुनिया में क्या-क्या मज़े हैं और कितनी तरक़्क़ी हो रही है?

अल्लाह तआ़ला कल क़ियामत के मैदान में फ़रमाएँगे कि दुनिया में तू कहता था कि मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना और अल्लाह के सामने ह़िसाब-किताब देना बक्वास है और यह सोच कर दुनिया में जो चाहता था करता था।

ऐ इन्सान! अच्छी तरह़ सुन ले कि तू अल्लाह तआ़ला के सामने ह़िसाब के लिए खड़ा किया जाएगा, तेरा पालनहार तेरा सब काम देख रहा है तेरे ह़ालात से वह पूरी तरह़ वाक़िफ़ है, उसको मालूम है उसने फ़ैसला कर लिया है कि बुरे काम करने वालों को सज़ा दी जाएगी और अच्छे काम करने वाले हमेशा मज़े में रहेंगे।

हरगिज़ यह मत सोच कि इस अदलती बदलती दुनिया में तेरा ह़ाल एक ही तरह़ से रहेगा। क्या तू देखता नहीं कि दिन ख़त्म होकर शाम आती है, शफ़क़ (भोर की सुर्ख़ी) फैलती है, फिर रात का अंधेरा छा जाता है, फिर चाँद निकलता है पहले छोटा सा दिखाई देता है फिर बढ़ कर पूरा हो जाता है; ठीक इसी तरह़ यह इन्सान भी मुख़्तलिफ़ सूरतों से गुज़रता है।

जैसे-बचपन, जवानी, बुढ़ापा और मौत, यह सब तुम जानते हो तो यह भी जान लो कि मौत के बाद भी उन ह़ालात से गुज़ारे जाओगे जिन का ज़िक्र क़ुर्आन पाक में कई जगह किया गया है।

21-25 وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۩ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ
فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ

अफ़्सोसनाक ह़ालत-

ज़माने की ह़ालत अदलती बदलती देखकर यह बात साफ़ हो जाती है कि इन्सान की भी ह़ालतें इसी तरह़ बदलती रहती हैं। फिर इसे यक़ीन क्यों नहीं आता कि जैसे- बचपन के बाद जवानी और जवानी के बाद बुढ़ापा और बुढ़ापा के बाद मौत आती है, ऐसे ही मौत के बाद क़ब्र, ह़श्र-ह़िसाब-किताब, आ़माल की जाँच, पुल सिरात से गुज़रना यह सब पेश आएगा।

क्या वजह है कि क़ुर्आन की बातों को सच्चा नहीं मानता जब कि वह तमाम ह़ालात से आगाह करता है जिसे इन्हें दिल व जान से क़ुबूल करना चाहिए?

यह लोग इस क़ुर्आन की मुख़ालिफ़त करते हैं और अल्लाह के सामने नहीं झुकते और न सज्दः करते हैं, बल्कि कुछ इन्कार करने वाले तो क़ुर्आन को ही झूठा कहने से नहीं चूकते, उन के दिलों में जो बुरे इरादे भरे हुए हैं अल्लाह तआ़ला उन्हें ख़ूब जानता है कि उनके बुरे अ़मल की उन्हें ज़रूर सज़ा मिलेगी।

दुनिया आख़िरत की खेती है-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि लोगों को ख़ुशख़बरी सुना दो कि दुनिया में तुम जो कुछ कर रहे हो, उस का फल मरने के बाद आख़िरत में ज़रूर मिलेगा, किसी का अ़मल बेकार न जाएगा। बुरे काम करने वाले दुख भरा अ़ज़ाब उठाएँगे और ईमान क़ुबूल करके अच्छे काम करने वाले बहुत अच्छा बदला पाएँगे जो कभी ख़त्म न होगा।

(भाग-85)

सूर-ए-बुरूज

(सूरः नं. 85)

सूरः बुरूज का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का में उस वक़्त उतरी जबकि मक्का के काफ़िरों का ज़ुल्म मुसलमानों पर अपनी आख़िरी सीमा को पहुँच चुका था, इसलिए इस सूरः में उन लोगों को धमकी दी गई जो मुसलमानों को सताते थे, ताकि मुसलमानों को तसल्ली हो।

इस में 'यमन' के शहर 'नजरान' के 'ज़ूनवास' नामी यहूदी बादशाह की ओर इशारा किया गया है, उसने एक ख़न्दक (गढ़ा) खोद कर उसमें आग दहकाई और उस समय के ईमान वालों को उस में डालकर जला दिया। इन लोगों ने जल कर जान देना क़ुबूल कर लिया, लेकिन ईमान से फिरना क़ुबूल नहीं किया। आख़िर में बादशाह तबाह हुआ और बाद में उस के मुल्क यमन पर हब्शा के बादशाह का क़ब्ज़ा हो गया, जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जन्म तक रहा। 'ज़ूनवास' और यहूदी लोग ख़न्दक़ (गढ़े) के पास बैठे ईमान वालों का तमाशा देख रहे थे।

इस ऐतिहासिक घटना की ओर इशारा करते हुए मक्का के काफ़िरों को यह सुनाया जा रहा है कि अल्लाह पर ईमान रखने वालों को उनके ईमान की वजह से सताना कितना तबाही का ज़रिया होता है और यह दुनिया में बच भी गए तो आख़िरत में इन्हें दोज़ख़ की आग में जलना ही होगा। इसी तरह ईमान लाने के बाद जिन्होंने उस पर अ़मल किया वह जन्नत में जाएँगे, यही सबसे बड़ी कामियाबी है।

आगे की आयतों में काफ़िरों को आगाह किया गया है कि अल्लाह की पकड़ बड़ी सख़्त है, अगर तुम अपने गिरोह की ताक़त के भ्रम में हो तो याद रखो! तुम से बड़े गिरोह फ़िरऔ़न और समूद के पास थे।

उनका जो हश्र हुआ उस से सबक़ सीखना चाहिए। अल्लाह की ताक़त तुम्हें इस तरह़ घेरे हुए है कि उसके घेरे से निकल नहीं सकते और क़ुर्आन जिसके झुठलाने पर तुम तुले हो उसकी हर बात अटल है। वह उस सुरक्षित पट्टिका (लौहे़ मह़फ़ूज़) में दर्ज है जिसका लिखा किसी के बदलने से नहीं बदल सकता।

इस सूरः में साफ़-साफ़ बताया गया है कि जो अल्लाह को सच्चे दिल से मान चुका हो, उनके विरोधी कभी नहीं पनप सकते, विरोधी इस वजह से बेफ़िक्र न हो जाएँ कि उनके पास कुव्वत व ताक़त सब कुछ है, वह जो चाहे करें कोई उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकता, यह उनकी भूल है। इन्हें छूट दी गई है कि अगर सब नहीं समझते तो कुछ ही समझ जाएँ वरना अल्लाह तआ़ला ने उन्हें पकड़ लिया तो फिर वह छूट नहीं सकते।

आयत नं० 1 से 22 तक

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ۝ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۝ وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ۝ قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۝ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۝ اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ۝
وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ۝ وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۝ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ
جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۬ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ۝ اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ۝ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ۝ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ۝ ذُو الْعَرْشِ
الْمَجِيْدُ ۝ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ۝ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ۝ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ۝ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ۝ بَلْ
هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ۝ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۝

अनुवाद-

(1) बुर्जों (किलेबन्द) वाले आसमान की क़सम, (2) और उस दिन की, (क़सम) जिसका वादा है, (3) और हाज़िर होने वाले की और जिसमें हाज़िरी होती है उसकी (अर्थात हज के दिन की) (4) कि मारे गये ख़न्दक़ों (गढ़े) वाले, (5) आग जिसमें ईंधन (झोंक रखा) था, (6) जबकि वे उन (के किनारे) पर बैठे हुए थे, (7) और जो (दुर्व्यवहार) ईमान वालों के साथ कर रहे थे, उनको सामने देख रहे थे; (8) उनको मोमिनों (ईमानवालों) की यही बात बुरी लगती थी कि वे अल्लाह पर ईमान ले आए थे, जो हर तरह ज़बरदस्त प्रशंसा के लायक़ है, (9) जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है और अल्लाह हर चीज़ का साक्षी (जानने वाला) है। (10) बेशक जिन लोगों ने ईमान वाले और ईमानवालियों को सताने के बाद तौबः न की, तो उनके लिए जहन्नम का अ़ज़ाब होगा और उनके लिए जलने का भी अ़ज़ाब होगा। (11) बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उनके लिए ऐसे बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती हुई होंगी, यही है बड़ी कामियाबी। (12) बेशक तुम्हारे रब की पकड़ बहुत सख़्त है। (13) बेशक 'उसी ने' पहली बार पैदा किया है और 'वही' दुबारा (ज़िन्दा) करेगा। (14) और 'वही' बख़्शने वाला (क्षमाशील), मुहब्बत करने वाला है। (15) अर्शवाला(अर्श का स्वामी) बड़ा बुज़ुर्ग (गौरव शाली) शान वाला, (16) तो जो चाहता है कर देता है, (17) क्या आप तक उन सेनाओं की ख़बर पहुँची है? (18) फ़िरऔ़न और समूद की; (19) बल्कि यह काफ़िर (इन्कारी) झुठलाने में लगे हुए हैं। (20) और अल्लाह (भी) उन्हें चारों ओर से घेरे हुए है (अर्थात इनकी एक-एक बात उसे मालूम है,) (21) बल्कि यह तो वह कुर्आन है जो बड़ी शान वाला (गौरवशाली ग्रन्थ) है, (22) (उस) लौहे मह़फ़ूज़ (सुरक्षित पाट्टिका) में,

सूरः बुरूज की संक्षिप्त व्याख्या

इस के नाज़िल होने के विषय में कई क़िस्से मुफ़स्सिरीन ने लिखे हैं, लेकिन 'सही मुस्लिम' तिर्मिज़ी और 'मुस्नद अह़मद' में जो क़िस्सा बयान किया गया है, उस का सारॉंश इस तरह़ हैः-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के पैदा होने से सत्तर वर्ष पहले यमन का बादशाह जिसका नाम ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) की रिवायत के मुताबिक़ 'यूसुफ़ ज़ूनवास' था, उसके यहाँ एक जादूगर रहता था,

जब जादूगर के मरने का वक़्त क़रीब आया तो उसने बादशाह से कहा, "मुझे एक बुद्धिमान लड़का दिया जाए जिसे मैं अपना ज्ञान दूँ, कहीं मेरे बाद यह ज्ञान ख़त्म न हो जाए"।)

इसलिए एक लड़का इस काम के लिए चुना गया जिसका नाम 'अ़ब्दुल्लाह बिन तामिर' था, जो रोज़ाना जादूगर के पास जाकर उस से इ़ल्म (जादू) सीखने लगा। रास्ते में एक ईसाई सन्यासी रहता था, जो उस वक़्त के सच्चे दीन पर था, लड़का उसके पास रास्ते में थोड़ी देर बैठ जाता यहाँ तक कि गुप्त रूप से सन्यासी द्वारा ईमान वाला हो गया।

सन्यासी-

इस सन्यासी के पास बैठने की वजह से जादूगर के पास देर से पहुँचता तो वह इस की पिटाई करता, वापसी में फिर सन्यासी (राहिब, पादरी) के पास बैठता तो घर पहुँचने में देर हो जाती जिससे घर वाले उसको मारते, लेकिन उसने किसी की परवाह न की यहाँ तक कि वह एक वली हो गया।

एक दिन लड़के ने देखा कि किसी बड़े जानवर ने रास्ता रोक रखा है, जिसके कारण लोग परेशान हैं, उसने एक पत्थर हाथ में लेकर दुआ़ की, कि ऐ अल्लाह! यदि सन्यासी का धर्म सच्चा है, तो यह जानवर 'मेरे पत्थर' से मारा जाए। इतना कहकर पत्थर फेंका, जिस से उस जानवर का काम तमाम हो गया।

लोगों में शोर हुआ कि लड़के को विचित्र ज्ञान प्राप्त है, किसी अन्धे ने सुनकर दुआ़ की कि मेरी आँखें अच्छी कर दो। लड़के ने कहा, "अच्छी करने वाला मैं नहीं, वह तो अल्लाह है, जिस का कोई साझीदार नहीं। अगर तू अल्लाह को मान ले और ईमान ले आए तो मैं दुआ़ करूँ। उम्मीद है कि वह तुझको आँखों वाला बना दे, तो ऐसा ही हुआ"।

यह ख़बरें धीरे-धीरे बादशाह तक पहुँची, उसने गुस्से में आकर लड़के, अन्धे और उस सन्यासी को अपने दरबार में बुलवाया और कुछ बातचीत के बाद अन्धे व सन्यासी को क़त्ल कर के लड़के के बारे में हुक्म दिया कि किसी ऊँचे पहाड़ से गिरा कर मार दिया जाए। अल्लाह की क़ुद्रत कि जो लोग उसको लेकर गए थे सब पहाड़ से गिर कर मर गए और लड़का ठीक-ठाक चला आया।

इसके बाद बादशाह से कहा कि मैं खुद अपने मरने की तरकीब बताता हूँ। आप शहर के लोगों को एक बड़े मैदान में जमा करके सबके सामने मुझे सूली पर लटकाएँ और यह शब्द कहकर मेरे तीर मारें "बिस्मिल्लाहि रब्बिलग़ुलाम" (उस अल्लाह के नाम पर जो रब है इस लड़के का) बादशाह ने ऐसा ही किया और लड़का अपने रब के नाम पर क़ुर्बान हो गया।

लड़के के रब पर ईमान-

यह विचित्र घटना देखकर सभी लोगों ने नारा लगाया कि "हम सब लड़के के रब पर ईमान लाए"। लोगों ने बादशाह से कहा हम जिस चीज़ को रोकना चाहते थे वही हुआ, पहले तो कभी-कभी एक दो लोग इस्लाम क़ुबूल कर रहे थे और अब तो पूरी जनता ने ही इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

इस पर क्रोधित होकर बादशाह ने बड़ी-बड़ी ख़न्दकें खुदवाईं और उनको ख़ूब आग के अंगारों से भरवा कर एलान करवा दिया कि जो आदमी इस्लाम न छोड़ेगा उसे इन ख़न्दक़ों (गढ़ों) में डाल दिया जाएगा। सभी लोगों ने आग में जलना पसन्द किया, लेकिन एक भी आदमी इस्लाम से नहीं फिरा। एक औरत जिसकी गोद में दूध पीता बच्चा था, बच्चे की वजह से आग में गिरने से घबराई, मगर बच्चे ने अल्लाह के हुक्म से आवाज़ दी कि 'अम्मा जान' सब्र कीजिए कि आप सीधे रास्ते (सत्य मार्ग) पर हैं, इन जलने वालों की संख्या बारह हज़ार थी।

इस ज़ुल्म पर अल्लाह ने क़सम खा कर अपने गुस्से को इस तरह़ बयान किया हैः-

1-3 وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ۝ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۝ وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ۝

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास, मुजाहिद, ज़िह़ाक़, ह़सन बसरी, क़तादा आदि ने 'बुरूज' का मतलब बड़े-बड़े सितारों यानी बुर्जो वाले आसमान की क़सम और उस दिन की क़सम जिस का वादा है यानी क़ियामत, और क़सम है हाज़िर होने वाले दिन की और क़सम है उस दिन की जिस में लोगों की हाज़िरी होती है।

यहाँ पर आसमान, क़ियामत, जुमअ़ः और अ़रफ़ा की क़सम खाकर यह बताना है कि अल्लाह तआ़ला हर जगह और हर ज़माने का मालिक है, इसलिए उसकी आज्ञा का पालन न करने वाला कभी और कहीं नहीं बच सकता। जैसा कि यमन का यहूदी बादशाह और उस के मानने वाले जिन्होंने ईमान वालों को जलाने के लिए आग दहकाई थी, वह ख़ुद ही बर्बाद हो गए। यह लोग ख़न्दक़ (गढ़) के किनारे बैठ कर जलने वालों का तमाशा देख रहे थे और अपनी सत्ता के प्रभाव को देखकर ख़ुश हो रहे थे, जिसका क़िस्सा तफ़्सील से ऊपर गुज़रा।

4-9 قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۝ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۝ اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ۝ وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ۝
وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि यह दीन के इन्कारी ईमान वालों को आग में डाल कर इसलिए नहीं जला रहे थे कि उन्होंने कोई जुर्म किया था, ऐसी सज़ा तो वह अत्याचारियों को भी नहीं देते, लेकिन वह तो सिर्फ़ उन्हें इसलिए जला रहे थे कि वह अल्लाह पर ईमान ला चुके थे।

तमाम इन्सानों का फ़र्ज़ है कि उस पर ईमान लाएँ क्योंकि उसी ने सब को पैदा किया, उसी की आसमानों व ज़मीनों पर बादशाही है, वह हर एक चीज़ के कण-कण को जानता है और वही सब का मालिक है।

जब ऐसे अल्लाह के मानने वालों की सिर्फ़ इस अपराध पर कि वह क्यों उसी अकेले अल्लाह की अ़िबादत (उपासना) करते हैं आग में जलाया जाए तो क्या ऐसा हो सकता है कि यह ज़ालिम यूँ ही छोड़ दिया जाए और वह अल्लाह ज़ालिमों को सख़्त सज़ा न दे।

अतः इन ज़ालिमों को अल्लाह ने बर्बाद कर दिया, ऐसे ही आइन्दा भी वह जब चाहेगा ज़ालिमों को

बर्बाद कर देगा। अच्छी तरह़ सुन लो कि जो लोग ईमान वाले मर्दों व ईमान वाली औ़रतों को दुःख पहुँचाएँगे और अपनी ह़रकत से बाज़ न आएँगे तो उन की भी ख़ैर नहीं।

10 إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ۝

उन्हें मरने के बाद दोज़ख़ का अ़ज़ाब दिया जाएगा और फ़सादियों को अपने फ़साद फैलाने का अन्जाम दुनिया में भी मिलेगा जैसा कि ख़न्दक़ में जलाने वालों को मिला, जिस का ऊपर ज़िक्र हुआ।

11 إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝

बेशक जो लोग दुनिया में अल्लाह को दिल से अपना मअ़बूद (उपासक) और रब मानकर उस की आज्ञा का पालन करेंगे, तो उनको मरने के बाद जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा जहाँ हरे भरे बाग़ों में मह़लों के अन्दर रहेंगे, जिन के पेड़ों और मह़लों के नीचे नहरें बहती होंगी और वहाँ हर तरफ़ बहार ही बहार होगी। ह़क़ीक़त में जिन्हें जन्नत नसीब होगी वह अपनी माँगी मुराद पा लेंगे और यही सब से बड़ी कामियाबी होगी।

दुनिया में जितने अपराधी लोग अपनी धुन में मस्त हैं और रसूल (सन्देश वाहक) के समझाने से नहीं मानते वह कान खोल कर सुन लें कि अल्लाह के बराबर किसी में ताक़त नहीं, उसके नाफ़रमान उसकी पकड़ से नहीं बच सकते और न ही उस से कोई छूट सकता है।

12-16 إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝ إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ۝ وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ۝ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝
فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ۝

फ़साद की जड़-

ऊपर की आयतों में बताया गया है कि अच्छी तरह़ समझ लें कि अल्लाह की पकड़ बहुत सख़्त है। सब कुछ पहली बार भी उसी ने पैदा किया और दोबारा भी वही पैदा करेगा, वह दुनिया में भी सज़ा देता है और आख़िरत में भी वही देगा। फिर यह जान लो कि वह बख़्शने वाला (क्षमाशील) और मुह़ब्बत करने वाला भी है।

वही सबसे बड़ी हुकूमत का मालिक अर्थात अपने इ़ल्म के मुताबिक़ जो कुछ करना चाहे देर नहीं लगती और न कोई रोकने टोकने का अधिकार रखता है, इसलिए न उसके इनआ़म पर किसी को घमण्ड करना चाहिए और न बदला लेने से बेख़ौफ़ होना चाहिए बल्कि हमेशा उसके जलाल (प्रताप) व जमाल (शोभा) के गुणों पर नज़र रखे।

उम्मीद के साथ 'भय' और 'डर' को दिल से दूर न होने देना चाहिए इसलिए कि वह जब चाहता है बड़े से बड़े ताक़तवर का चन्द सेकेण्ड में काम तमाम कर देता है।

17-22 هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۝ فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ۝ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ۝ وَاللَّهُ مِن وَرَائِهِم
مُّحِيطٌ ۝ بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ۝ فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ۝

क्या फ़िरऔन और समूद का क़िस्सा आप ने सुना है, वह कितने ताक़तवर थे? लेकिन अल्लाह की पकड़ के सामने किसी की भी न चली, इन्कारी लोग बड़ी भारी ग़लती और भूल में पड़े हैं।

वह हमेशा क़ुर्आन की आयतों को और अल्लाह के रसूलों को झुठलाने ही में लगे रहते हैं, जबकि वह हर तरह़ से अल्लाह ही के क़ब्ज़े में है। इनके झुठलाने से क़ुर्आन को कुछ भी नुक़्सान नहीं पहुँच सकता कि इन मूर्खों के झुठलाने से उसकी शान (वैभव) और बड़ाई कम हो जाए।

यह तो लौहे मह़फ़ूज़ (उस पट्टिका में अंकित है) में लिखा हुआ है, वहाँ किसी की मजाल नहीं जो इसे मिटा सके या परिर्वतन कर सके, क्योंकि वह तो एक ऐसी तख़्ती (पट्टिका) है जिसकी ह़िफ़ाज़त का पूरा इन्तिज़ाम है। उस पर जो लिखा गया है वह तो न कभी मिट सकता है और न कोई मिटा सकता है।

(भाग–86)

सूर–ए–तारिक़

(सूरः नं. 86)

सूरः तारिक़ का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः उस वक़्त मक्का में उतरी जब कि मक्का के काफ़िर क़ुर्आन और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का मज़ाक़ उड़ाने लगे थे।

इस सूरः में इन्सान को बताया गया है कि दुनिया में इन्सान जो कुछ करता है वह लिख लिया जाता है और जब क़ियामत क़ायम होगी तो उस के सामने उस का 'आमालनामा' (कर्मपत्र) पेश कर दिया जाएगा। यदि क़ियामत के आने में किसी को कोई शक हो और समझ में न आए कि मरने के बाद इन्सान फिर कैसे ज़िन्दा किया जाएगा तो इन्सान को अपनी पहली पैदाइश पर ग़ौर कर लेना चाहिए कि जिसने पहली बार वीर्य (sperm) से इन्सान को पैदा कर दिया, तो दोबारा पैदा करना तो उस के लिए और आसान है यानी क़ियामत के दिन इन्सान की सारी चीज़ें जिन्हें वह छुप कर करता था, बिलकुल खुलकर सामने आ जाएँगी और मुजरिमों को उस दिन सज़ा से कोई नहीं बचा सकेगा।

इसमें (5) से (8) तक की आयतों में इन्सान के जन्म से उसके दोबारा उठाए जाने तक का ज़िक्र है, फिर (9) से (10) तक की आयतों में बताया गया है कि उस दिन सारे भेद खोल दिये जाएँगे और इन्सानों का कोई मदद करने वाला न होगा।

इसी तरह़ (11) से (14) तक की आयतों में आसमान व ज़मीन को गवाह बना कर बताया गया है कि क़ुर्आन जिस हिसाब के दिन की बातें कर रहा है वह दिन निश्चित समय पर आकर रहेगा, फिर उस दिन काफ़िरों की सारी चालें फेल हो जाएँगी और वहाँ तो सिर्फ़ ह़क़ का ही बोलबाला होगा।

आयत नं० 1 से 17 तक

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ۝ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝ إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝ خُلِقَ مِنْ مَاءٍ
دَافِقٍ ۝ يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۝ إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۝ فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۝ وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝
وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۝ إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝ وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۝ إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۝ وَأَكِيدُ كَيْدًا ۝ فَمَهِّلِ الْكَافِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ۝

अनुवाद-

(1) आसमान की क़सम, और (उस तारे की) जो रात में नमूदार (उदय) होता है, (2) और तुम्हें क्या मालूम कि रात में उदय होने वाला क्या है? (3) वह चमकता हुआ तारा है (जो प्रातः काल होने के निकट उदय होता है), (4) बेशक हर जानदार पर (एक) संरक्षक नियुक्त है। (5) फिर इन्सान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है। (6) वह (उस) उछलने वाले पानी से पैदा किया गया है, (7) जो (पुरूष की) पीठ और (स्त्री की) छाती की हड्डियों के बीच से निकलता है। (8) बेशक 'वह' उसको (दुबारा पैदा करके) लौटाने पर कुदरत (सामर्थ्य) है। (9) जिस दिन छिपे भेद जाँचे जाएँगे, (10) तो (उस समय) उसके पास न कोई ताक़त होगी और न कोई मददगार, (11) क़सम है पानी बरसाने वाले आसमान की, (12) और ज़मीन की, जो (बीज का अंकुर फूटते समय) फट जाती है; (13) बेशक यह कलाम (वाणी) फ़ैसला कर देने वाला है। (14) और यह कोई हंसी मज़ाक़ में टालने की बात नहीं। (15) यह लोग चालें चल रहें हैं; (16) और 'हम' भी (उनकी चालों का फ़ल चखाने का) उपाय कर रहे हैं। (17) तो आप इन काफ़िरों (इन्कारियों) को यूँ ही रहने दीजिए, इनको इनके हाल पर छोड़ दीजिए।

सूरः तारिक़ की संक्षिप्त व्याख्या

1-7

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ۝ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝ إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝
فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝ خُلِقَ مِنْ مَاءٍ دَافِقٍ ۝ يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۝

इन्सान की हक़ीक़त-

इस सूरः में अल्लाह तआला ने आसमानों और सितारों की क़सम खाकर यह बताया है कि हमने हर इन्सान की हिफ़ाज़त के लिए फ़रिश्ते तय कर दिये हैं जो उसके साथ हर वक़्त रहते हैं, इसके अलावा और भी फ़रिश्ते हैं जो इसे हर बलाओं से बचाते रहते हैं और उस के तमाम कामों को लिखते रहते हैं।

"हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "हर मोमिन पर अल्लाह की ओर से 360 फ़रिश्ते उस की हिफ़ाज़त (रक्षा) के लिए हर वक़्त उस के साथ रहते हैं, जो इन्सान के हर-हर अंग की हिफ़ाज़त करते हैं। उनमें से सात फ़रिश्ते सिर्फ़ इन्सान के आँख की हिफ़ाज़त के लिए हैं। यह फ़रिश्ते इन्सान से हर बला व मुसीबत जो इस के लिए मुक़द्दर नहीं है, उसी तरह से दूर रखते हैं जिस तरह शहद में रखे हुए बर्तन पर आने वाली मक्खियों को दूर किया जाता है, अगर इन्सान पर यह हिफ़ाज़ती पहरा न हो

तो शैतान उसे उचक ले।” **(कुर्तुबी)**

यहाँ पहली आयत में अल्लाह तआ़ला ने आसमान की क़सम खाई है वह इसलिए कि जिसने आसमान पर सितारों को ऐसा बनाया है कि सब अपने निर्धारित समय के अनुसार काम कर रहे हैं, उस को ज़मीन पर तुम्हारी या तुम्हारे कामों की हिफ़ाज़त करना कोई कठिन बात नहीं। जिस तरह़ सितारे हर वक़्त मौजूद हैं लेकिन रात ही में दिखाई देते हैं, ऐसे ही तमाम आ़माल (कार्य) आ़मालनामों में महफ़ूज़ है, मगर वह क़ियामत ही के दिन दिखाई देंगे।

जब यह बात है तो इन्सान को क़ियामत की फ़िक्र करनी चाहिए और यह देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया यानी नुत्फ़ा (वीर्य) से और यह इन्सान के अन्दर उसी ग़िज़ा से बनता है, जिसे वह खाता है।

इन्सान की बनवाट–

इस तरह़ मर्द की कमर से (from Testis through vasa deferense) की वीर्य (sperm) का निकलना और औ़रत के सीने से (from ovary) यानी मर्द व औ़रत के मिलने से इन्सान बन जाता है।

इन्सान की पैदाइश जिस वीर्य (sperm) के ज़रिये होती है, क़ुर्आन ने उस पर ग़ौर करने को कहा है। जब हम नये अनुसंधानों (New Research) का अध्ययन करते हैं तो अपने ख़ालिक़ (सृष्टा) की क़ुद्रत को देखकर चकित रह जाते हैं। जैसा कि नई रिसर्च इस तरह़ हैः-

"The usual quantity of semen ejaculated at each coitus (Sexual Intercourse) averages about 3.5 Ml. and in each Ml. of semen is an average of about 120 million (10^6) sperm. This means an average of total 400 million sperm are usually present in each ejuculation."

(Guyton & Hall, "Text book of Medical physiology",9th edition Page No. 1008)

पुरुष के एक ही समय में निकलने वाले शुक्राणुओं में इतनी शक्ति होती है कि वह पचास करोड़ इन्सान पैदा कर सकता है, यह और बात है कि उसके ख़ालिक़ (सृष्टा) ने उन कीटाणुओं के गर्भाधारण (Fertilize) होने की ऐसी व्यवस्था बनाई है कि एक समय में एक से ज़्यादा कीटाणु प्रयोग नहीं हो पाते, तो मरने के बाद इन्सान को दोबारा ज़िन्दा करना तो इस से भी आसान काम है। मरने के बाद दोबारा उठाए जाने पर वही लोग शक करते हैं जो अपनी पहली पैदाइश पर ग़ौर नहीं करते।

यह स्पष्ट है कि किसी चीज़ को पहली बार बनाना ज़्यादा मुश्किल होता है, जब वह एक बार बन गई हो तो दोबारा बनाना तो बहुत ही आसान हो जाता है।

8-14 إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۝ فَمَا لَهُ مِن قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۝ وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝ وَالْأَرْضِ
ذَاتِ الصَّدْعِ ۝ إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝ وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۝

यानी क़ियामत के दिन इन्सान के तमाम आ़माल जिसे वह दुनिया में लोगों से छिपा कर किया करता था कि किसी को पता न चले, उन सब को सामने कर दिया जाएगा।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन इन्सान के हर

छुपे राज़ को खोल देगा, हर अच्छे बुरे अ़क़ीदे और अ़मल की निशानी इन्सान के चेहरे पर ज़ीनत या तारीक़ी (अंधकार) व कालेपन के रूप में कर दी जाएगी"। **(कुर्तुबी)**

उस दिन इन्सान बिल्कुल बेबस होगा इसलिए कि उसका जुर्म साबित हो चुका होगा, उस की सज़ा से बचने का न कोई रास्ता होगा और न कोई मदद्गार।

अगर इन्सान दुनिया में ग़ौर करे तो समझ में आ जाएगा कि जिस तरह़ आसमान के ह़ालात बदलने से बारिश होती है, ज़मीन के फटने से ग़ल्ला और घास आदि फूट निकलते हैं, उसी तरह़ एक दिन ह़ालात ऐसे बदलेंगे कि हर चीज़ फ़ना हो जाएगी और फिर ऐसे ह़ालात बनेंगे कि जिसे अल्लाह चाहेंगे दोबारा पैदा हो जाएगा।

यह बातें कोई मज़ाक़ की नहीं कि यूँ ही मुँह से निकल गई हों, बल्कि यह बातें तो तय हो चुकी हैं कि हम ऐसा ज़रूर करेंगे यानी अल्लाह कु़र्आन जो कुछ आख़िरत के बारे में बयान करता है वह झूठ और सच का दो टूक फ़ैसला है, बेशक सच्ची वाणी की ख़बर देता है, जो यक़ीनी तौर से सामने आकर रहेगा।

यहाँ पर क़सम इस वजह से खाई गई है कि क़ुर्आन ऊपर से उतरता है, फिर जिसमें योग्यता होती है उसको मालामाल कर देता है। जैसे- बारिश आसमान की ओर से आती है और अच्छी ज़मीन को फ़ायदा पहुँचाती है, जिस तरह़ यहाँ बारिश का पानी गिरने से मुर्दा और बेजान ज़मीन हरियाली से लहलहाने लगती है उसी तरह़ क़ियामत के दिन मुर्दों को ज़िन्दा करने पर अल्लाह क़ादिर है।

15-17 إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۝ وَأَكِيدُ كَيْدًا ۝ فَمَهِّلِ الْكَافِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ۝

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि यह क़ियामत के मुन्किर (काफ़िर) लोग आ़माल के नतीजों से ग़ाफ़िल होकर इस्लाम की मुख़ालिफ़त के लिए आपस में योजना बना रहे हैं और इस्लाम को मिटाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं, लेकिन याद रखें! कि मैं भी अपनी तद्बीर (योजना) कर रहा हूँ और मेरी गुप्त योजना (भी जिसका इनको पता नहीं) अन्दर ही अन्दर काम कर रही है कि इनके तमाम मक्र (धोखों) के जाल में तोड़फोड़ कर रख दिये जाएँगे और इनके तमाम दांव पेच इन्हीं की ओर मोड़ दिये जाएँगे।

अब ख़ुद ही समझ लें कि अल्लाह के उपायों के सामने किसकी मक्कारी और चाल कामियाब हो सकती है, निश्चित रूप से वह लोग नाकाम और शर्मिन्दा हो कर रहेंगे।

इसलिए यह बेहतर है कि आप इनको सज़ा देने में जल्दी न करें और इनकी बुरी बातों से घबराकर बद्दुआ़ (अभिशाप) न करें, बल्कि थोड़े दिन ढ़ील दें उसके बाद देखें कि क्या नतीजा आता है?

(भाग–87)

सूर–ए–अअ़्ला

(सूरः नं. 87)

सूरः अअ़ला का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का के शुरु में उस वक़्त उतरी जब कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) पर वह़्य नाज़िल हुए ज़्यादा दिन नहीं गुज़रे थे और आप (सल्ल०) क़ुर्आन को अपनाने में यह शंका मह़सूस कर रहे थे कि कहीं कोई आयत भूल न जाएँ।

इसकी पहली आयत में अल्लाह का सिफ़ाती (गुणवाचक) नाम 'अल्-अअ़ला' बताया गया है, इसलिए इस सूरः का नाम 'अल्-अअ़ला' रखा गया है।

इस तरह़ आयत नं० (1) से (5) तक में अल्लाह की पाकीज़गी बयान करने का हुक्म देते हुए उसकी सिफ़तें (गुण) बयान की गई हैं, ताकि उसको किसी ऐसे नाम से याद न किया जाए जो अपने अन्दर किसी तरह़ की कमज़ोरी रखता हो, इसीलिए ईमान में पाकीज़गी लाने के लिए अल्लाह को सिर्फ़ उन्हीं अच्छे नामों से याद किया जाए जो उसके लिए बेहतर हों।

इसके बाद तीन आयतों में बताया गया है कि तुम्हारा पालनकर्ता जिस के तस्बीह़ का हुक्म दे रहा है वह ऐसा है जिसने सृष्टि की हर चीज़ को पैदा किया तथा उसे ठीक-ठाक रखा, उसका संतुलन क़ायम किया। फिर जहाँ तक उसे पहुँचना था, वहीं तक पहुँचने की उसे राह बताई, जानदारों के लिए चारा और ग़ल्ला पैदा किया, फिर उसे सुखा कर इकट्ठा करने का रास्ता बताया और इन्सान की हिदायत के लिए क़ुर्आन मजीद को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर नाज़िल किया।

आगे की आयतों में बताया गया है कि ऐ मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप इस फ़िक्र में न पड़ें कि यह क़ुर्आन जो आप पर उतारा जा रहा है, यह याद कैसे रहेगा। इसको आप के ज़ेहन (बुद्धि) में मह़फ़ूज़ कर देना हमारा काम है और इसका मह़फ़ूज़ रहना हमारी मेहरबानी का नतीजा होगा। इस तरह़ धीरे-धीरे हम आप को पढ़ा देंगे और आप उस में से कोई ह़िस्सा न भूलने पाएँगे। लेकिन हाँ, अल्लाह जिसे भुलाना चाहेगा वह आप भूल जाएँगे क्योंकि उसकी आइन्दा ज़रूरत ही न पड़ेगी, इसलिए कि अल्लाह तमाम छुपे और खुले को जानता है।

अगली आयत में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से फ़रमाया गया कि आप के ज़िम्मे हर एक को सत्यमार्ग (सीधे रास्ते) पर ले आने का काम नहीं है, बल्कि आप का काम बस तब्लीग़ (सत्य को प्रसारित) कर देना है और इसका सीधा-सादा तरीक़ा यह है कि आप नसीह़त तो आम लोगों को करें, लेकिन उन लोगों को ख़ासतौर से समझाएँ जिन से यह उम्मीद हो कि वह आप की नसीह़त से फ़ायदा उठाएँगे।

इसलिए कि जिसके मन में गुमराही के बुरे अन्जाम का डर होगा, वह सच्ची बात सुन कर क़ुबूल कर लेगा और जो न मानेगा वह जहन्नम में दाख़िल कर दिया जाएगा, जहाँ न वह ज़िन्दा होगा न मुर्दा, बल्कि हमेशा मुसीबत में ही फँसा रहेगा।

आख़िर में बताया गया है कि तमाम इन्सानों को यह पैग़ाम पहुँचा दो कि जिसने पाकी के साथ अल्लाह का नाम लिया और नमाज़ पढ़ी उसने कामियाबी ह़ासिल कर ली, लेकिन लोगों का यह ह़ाल है कि दुनिया की ज़िन्दग़ी को प्राथ्मिकता (अव्वलियत) देते हैं, जबकि आख़िरत की ज़िन्दग़ी बेहतर है। यह पैग़ाम ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के सह़ीफ़ों (ग्रन्थों) में मौजूद हैं।

आयत नं० 1 से 19 तक

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ۝ الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّى ۝ وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَى ۝ وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَى ۝ فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَى ۝ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسَى ۝
إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَى ۝ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرَى ۝ فَذَكِّرْ إِنْ نَفَعَتِ الذِّكْرَى ۝ سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَخْشَى ۝ وَيَتَجَنَّبُهَا
الْأَشْقَى ۝ الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَى ۝ ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ۝ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّى ۝ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّى ۝ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ
الدُّنْيَا ۝ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۝ إِنَّ هَٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَى ۝ صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ۝

अनुवाद-

(1) (ऐ रसूल!) अपने आलीशान रब के नाम की तस्बीह़ (गुण गान) कीजिए, (2) 'जिसने' पैदा किया और (शरीर को) दुरूस्त किया,(3) और 'जिसने' (हर जीवधारी की दशा के अनुकूल) योजना बनाई फिर (उसे उसकी) राह दिखाई, (4) और 'जिसने' चारा उगाया, (5) फिर उसको सूखा काला कूड़ा करकट बना दिया। (6) 'हम' जल्द ही आप को पढ़ाएँगे कि आप (उसमें से कुछ) नहीं भूलेंगे। (7) मगर जो अल्लाह चाहै। बेशक 'वह' खुली और छिपी बात को जानता है। (8) और 'हम' आपको आसान तरीक़े की राह हमवार (प्रशस्त) कर देंगे। (9) तो नसीह़त करते रहिए,जहाँ तक नसीह़त के फ़ायदा पहुँचने की उम्मीद हो, (10) जो (अल्लाह का) खौफ़ रखता होगा, वही नसीह़त क़ुबूल करेगा, (11) इस (नसीह़त नामे) से अलग वही रहेगा, जो बड़ा बद़नसीब होगा, (12) जो बड़ी आग में दाख़िल होगा; (13) फिर न उसमें मरेगा, न जिएगा। (14) बेशक वह कामियाब हो गया जिसने अपना तज़किया (निखारने का काम) किया, (15) और अपने रब का नाम लिया और नमाज़ पढ़ता रहा। (16) बल्कि तुम लोग तो दुनिया की ज़िन्दगी को प्रमुखता देते हो, (17) और आख़िरत (परलोक) बेहतर और बाक़ी रहने वाली है। (18) यह शिक्षा पहले सह़ीफ़ों (ईश ग्रन्थों) में भी है (19) इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में।

सूरः अअ़ला की संक्षिप्त व्याख्या

1-5 سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ۝ الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّى ۝ وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَى ۝ وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَى ۝ فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَى ۝

अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र की अहमियत-

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने लोगों को अपनी तस्बीह़ व तअ़रीफ़ की ओर मुतवज्जेह किया है कि ऐ लोगों! तुम उस अल्लाह की तस्बीह़ किया करो। तस्बीह़ (याद) की सबसे बेहतर शक्ल तो नमाज़ और ख़ास तौर से रात की नमाज़ है।

लेकिन जिस तरह़ सांस, इन्सान के ज़िन्दग़ी की ज़रूरत के लिए हर वक़्त ज़रूरी है, उसी तरह़ अल्लाह तआ़ला की याद उसकी रुहानी ज़िन्दग़ी के लिए हर वक़्त ज़रूरी है। इस वजह से केवल नमाज़ों के वक़्तों में ही नहीं, बल्कि ज़िन्दग़ी के दूसरे वक़्तों में भी अल्लाह की याद से दिल को आबाद रखना चाहिए ताकि शैतान को बहकाने का मौक़ा न मिले।

अल्लाह तआ़ला को उन नामों से याद किया जाए जो अपने अर्थ और भावार्थ में पाक और बलन्द हों, जिसमें शिर्क का कोई अर्थ न निकलता हो। जैसे-राम एक धार्मिक व्यक्तित्व का नाम है जिनको विष्णु का अवतार समझा जाता है। **(देखिए Moles Worth's Marathi English Dictionary P. 693)**

इसलिए इस शब्द को रह़ीम के समानार्थ समझ कर अल्लाह के लिए हरगिज़ प्रयोग नहीं किया जा सकता।

इसी तरह़ 'शिव' धर्म में तीन ख़ुदाओं (त्रिमूर्ति) में से एक ख़ुदा का नाम है साथ ही इसका अर्थ पुरुष के जननेन्द्रिय के भी हैं। **(देखिए Students Sanskrit English Dictionary, By Apte P.556)**

इससे अन्दाज़ा किया जा सकता है कि मुश्रिकों (अनेकेश्वरा वादियों) ने अपने ख़ुदाओं का नाम रखने में किस मानसिकता का सुबूत दिया है।

इसी वजह से इस आयत में अल्लाह की पाकीज़गी बयान करने को कहा गया है कि वह हर तरह़ के ऐ़ब और शिर्क से पाक है, इसलिए उसी का नाम जपो।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने इसी आयत की बिना पर सज्दे में "सुब्ह़ान रब्बियल-अअ़्ला" (पाक है मेरा सर्वोच्च रब) पढ़ने का हुक्म दिया था। **(अबू दाऊद किताबुस्सलाम)**

इसी वजह से सज्दे में "सुब्ह़ान रब्बियल आ़ला" कहा जाता है कि जिस अल्लाह ने सब कुछ बनाया और तमाम मख़्लूक़ के पुर्जे ठीक-ठाक अपनी-अपनी जगह पर बिठाए फिर हर इन्सान की ह़द उस की क़ाबिलियत के अन्दाज़ा से मुक़र्रर किया और हर एक को उसके आ़माल तक पहुँचने का रास्ता भी दिखाया, इसलिए हर आदमी के योग्यता की सीमा उस की क़ाबिलियत के मुताबिक़ होगी। उसी ने जानवरों के लिए ज़मीन से चारा उगाया, फिर उस को सुखा कर काला और हल्का फुल्का कर दिया। जब चारा उगता है तो हरा भरा होता है, लेकिन एक वक़्त ऐसा आता है कि काला कूड़ा करकट बन कर रह जाता है, यह एक मिसाल है।

इसी तरह़ एक दिन यह दुनिया भी उजड़ जाएगी, इस लिए इन्सान को हरा भरा देखकर इस भुलावे में न रहना चाहिए कि इस पर हमेशा बहार ही छाई रहेगी, कभी पतझड़ नहीं आएगा।

6-13 سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰىٓ ۙ إِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۚ إِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ۙ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۚۖ فَذَكِّرْ إِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ۙ
سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۙ وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ۙ الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۚ ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۙ

यह आयत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर उस समय नाज़िल हुई जबकि आप (सल्ल०) पर बड़ी-बड़ी सूरतें नाज़िल होने लगी थीं, तो आप (सल्ल०) के दिल में यह ख़याल आया कि कहीं ऐसा न हो कि मैं इनको भूल जाऊँ। यानी अल्लाह ने अपने मह़बूब बन्दे ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को तसल्ली देने के लिए इन आयतों पर नाज़िल फ़रमायाः-

कि ऐ मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! यह क़ुर्आन हम आपको इस तरह़ पढ़ाएँगे कि आपके दिल में बैठ जाएगा और आप उसमें से भूलने न पाएँगे सिवाए उस के जिस को हम चाहें। इसलिए कि

अल्लाह को हर तरह़ की तमाम बातों का इ़ल्म है। वह आप के ज़रिये तमाम इन्सानों के लिए एक मुकम्मल और आसान ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा देगा, जिसे आप लोगों को बताइए।

जो क़ुर्आन और हिदायत और आप के उपदेश से फ़ायदा उठाना चाहता हो और उस के दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ भी हो वह ज़रूर फ़ायदा उठाएगा और जो बद्‌बख़्त होगा वह आपकी नसीह़त से दूर भागेगा, ऐसे लोग ही मरने के बाद अपने करतूतों की वजह से जहन्नम की आग में डाले जाएँगे और हमेशा उसमें जलते रहेंगे।

14-19 قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّىٰ ۝ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّىٰ ۝ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝
إِنَّ هَٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ۝ صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ ۝

कामियाब व्यक्ति–

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं, कामियाब वह हैं जो हर तरह़ की गन्दग़ी और नापाकी (यानी शिर्क व कुफ़्र (अनेकेश्वरवाद और अनिश्वरवाद) की बुराईयों को छोड़ दें और नमाज़ से पहले यदि ग़ुस्ल ज़रूरी हो तो ग़ुस्ल करें वरना वुज़ू करके पाक व साफ़ हों। उसके बाद खड़े होकर 'अल्लाहु अक्बर' कहते हुए नमाज़ पढ़ें।

जो व्यक्ति यह तरीक़ा अपनाएगा वह ज़रूर आख़िरत में कामियाब होगा। फिर जो लोग आख़िरत का ख़याल नहीं करते और इसी दुनिया की ज़िन्दग़ी को सब कुछ समझ लेते हैं, लेकिन जो आख़िरत को छोड़ कर इसी को अपनाते हैं वह कैसे कामियाब होंगे।

आख़िर में कहा गया है कि यही वह तौह़ीद (एकेश्वरवाद) का पैग़ाम है, जो ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की किताबों में भी दर्ज था। अब वही तौह़ीद का पैग़ाम क़ुर्आन के ज़रिये पूर्ण रूप से इन्सानों तक पहुँचाया जा रहा है।

फ़ज़ीलत–

यह सूरः छोटी होने के बावजूद तौह़ीद, रिसालत और आख़िरत तीनों विषयों पर आधारित है। इसीलिए सह़ाबा-ए-किराम ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु, अबू मूसा और अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु जब यह सूरः शुरु करते तो "सुब्ह़ान रब्बियल अअ़ला" कहा करते थे। **(क़ुर्तुबी)**

यानी नमाज़ के अ़लावा तिलावत करने के वक़्त भी 'सुब्ह़ान रब्बियल अअ़ला' कहना मुस्तह़ब है, इसीलिए यह सूरः जुमअ़ और ईद की नमाज़ों में किरत के लिए ज़्यादह बेहतर है।

ह़दीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) दोनों ईद और जुमा में **'सब्बिह़िस्म रब्बिकल्-अअ़ला'** और **'हल अताक ह़दीसुल् ग़ाशियः'** पढ़ा करते थे। **(मुस्लिम)**

(भाग–88)

सूर–ए–ग़ाशिया

(सूरः नं. 88)

सूरः ग़ाशिया का संक्षिप्त परिचय

सूरः अल् ग़ाशिया मक्का के शुरु ज़माने में उस वक़्त नाज़िल हुई जबकि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) खुलकर दअ़वत का काम शुरु कर चुके थे और मक्का के लोग उसे सुन-सुनकर नज़र अन्दाज़ कर रहे थे।

इसमें सबसे पहले क़ियामत की उस सब से बड़ी आफ़त की ख़बर दी गई है जिस से बेख़बरी में पड़े हुए इन्सान चौंक जाएँ। उस के बाद उन लोगों का अन्जाम बयान किया गया है जो क़ियामत का इन्कार करते हैं और अल्लाह के यहाँ जवाब देने का यक़ीन नहीं रखते, उन को दुनिया की कुछ निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है, जो अल्लाह की क़ुद्रत और ह़िक्मत को ज़ाहिर करती हैं, जिन पर ग़ौर करने से क़ुर्आन के उस बयान की तस्दीक़ होती है कि वह अल्लाह क़ियामत के बरपा करने जन्नत व दोज़ख़ वाली दुनिया पैदा करने पर क़ादिर (सक्षम) है।

क़ियामत के दिन इन्सानों के दो गिरोह होंगे, एक गिरोह के चेहरों पर ज़िल्लत और थकान होगी जिनका ठिकाना जहन्नम होगी, जहाँ उन्हें दहकते हुए आग में जलाया जाएगा, खौलता हुआ पानी और खाने के लिए काँटेदार झाड़ होंगे, जिन से न वह मोटे होंगे और न ही उनकी भूख मिटेगी।

दूसरे गिरोह के चेहरे ख़ुशी से चमक, दमक रहे होंगे वह दुनिया में जो भले काम किये थे उसकी वजह से संतुष्ट होंगे, वह ऊँचे-ऊँचे बाग़ों में होंगे, जहाँ कोई बक्वास बातें सुनने में न आएँगी, स्रोत (चश्मे) हर तरफ़ बह रहे होंगे, ऊँचे-ऊँचे तख़्त बिछे होंगे और शरबतों से भरे हुए जाम सामने रखे होंगे, मख़्मल के गद्दे चारों तरफ़ लगे होंगे।

फिर फ़रमाया गया कि क्या यह लोग ग़ौर नहीं करते कि यह ऊँट कैसे बनाए और आकाश या पहाड़ या पृथ्वी। इन्हीं तीनों चीज़ों पर यदि वह ग़ौर करें तो अपने सर्वशक्तिमान अल्लाह तक पहुँच जाएँगे।

आयत नं० 1 से 26 तक

هَلْ أَتٰكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ۝١ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝٢ عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝٣ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝٤ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝٥ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ
ضَرِيعٍ ۝٦ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ۝٧ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝٨ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝٩ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝١٠ لَّا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً ۝١١ فِيهَا
عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝١٢ فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ۝١٣ وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ۝١٤ وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ۝١٥ وَزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ۝١٦ أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ
خُلِقَتْ ۝١٧ وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝١٨ وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝١٩ وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝٢٠ فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنتَ مُذَكِّرٌ ۝٢١ لَّسْتَ
عَلَيْهِم بِمُصَيْطِرٍ ۝٢٢ إِلَّا مَن تَوَلَّىٰ وَكَفَرَ ۝٢٣ فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ۝٢٤ إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ۝٢٥ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُم ۝٢٦

अनुवाद-

(1) क्या आप को उस छा जाने वाली घटना (क़ियामत) की ख़बर पहुँची है? (2) कितने चेहरे उस दिन ख़ौफ़ से सहमे हुए होंगे; (3) मेहनत करने वाले थके माँदे, (4) दहकती हुई आग में दाख़िल होंगे, (5) खौलते हुए गर्म पानी के स्रोत से उन्हें पानी पिलाया जाएगा। (6) उनको 'ज़रीअ' (काँटेदार झाड़ियों) के सिवा और कोई खाना न मिलेगा। (7) जो न मोटा करेगा न भूख मिटाएगा। (8) और बहुत से चेहरे उस दिन खिले हुए होंगे। (9) अपने आ़माल से खुश होंगे। (10) आ़ला (उच्च) दर्जे के बाग़ (जन्नत) में होंगे। (11) कोई बेहूदा या बकवास बात वहाँ न सुनेंगे। (12) उसमें बहता हुआ चश्मा (स्रोत) होगा, (13) उसमें ऊँचे बिछे हुए तख़्त (सिंहासन) होंगे। (14) और मीना (जग, गिलास) रखे हुए होंगे। (15) और गाव तकिये बराबर से (पंक्तिबद्ध) लगे हुए होंगे। (16) और उम्दा फ़र्श (कालीन) बिछी हुई होंगी। (17) क्या वह ऊँटों को नहीं देखते कि कैसे (अजीब) पैदा किये गये हैं? (18) और आसमान की ओर (नहीं देखते!) कि कितना ऊँचा बनाया गया है। (19) और पहाड़ों की ओर कि कैसे जमाये गये हैं? (20) और ज़मीन को, कि कैसे बिछाई गयी है। (21) सो आप नसीहत करते रहिये, आप तो केवल नसीहत ही करने वाले हैं। (22) आप उन पर दारोग़ा (निरीक्षक) नहीं हैं। (23) मगर जो मुँह मोड़ेगा और इन्कार करेगा। (24) तो अल्लाह उसको बड़ा अ़ज़ाब देगा। (25) बेशक इनको तो हमारी ओर ही लौट कर आना है। (26) फिर इनका ह़िसाब लेना हमारे ही ज़िम्मे है।

सूरः ग़ाशिया की संक्षिप्त व्याख्या

1-8

هَلْ أَتٰكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ۝١ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝٢ عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝٣ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝٤ تُسْقٰى مِنْ
عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝٥ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيعٍ ۝٦ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ۝٧ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝٨

बुरे लोगों का अन्जाम-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, क्या तुम्हें उस दिन का ह़ाल मालूम हुआ है जो सबको घेर लेगा यानी क़ियामत का दिन। वह दिन ऐसा होगा कि बहुत से लोगों के चेहरे ज़लील व रुस्वा होंगे और जहन्नम की दहकती हुई आग में फेंक दिये जाएँगे। वहाँ जब यह पानी माँगेगे तो इन्हें ख़ौलते हुए चश्मों (स्रोत)

से पानी दिया जाएगा और जब खाना माँगेगें तो इनको काँटेदार ज़हरीले फल दिये जाएँगे जिससे यह न अपनी भूक मिटा सकेंगे और न ही अपने बदन को कुछ कुव्वत पहुँचा सकेंगे। यह अन्जाम उन बुरे लोगों का होगा जिसने अपने पैदा करने वाले मालिक की बात को मानकर ज़िन्दगी न गुज़ारी होगी।

9-16 لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝ لَّا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً ۝ فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝ فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ۝
وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ۝ وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ۝ وَزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ۝

अच्छे लोगों का अन्जाम–

बुरे लोगों का अन्जाम बताने के बाद अब नेक और अच्छे लोगों का अन्जाम बताया जा रहा है कि उस दिन बहुत से लोगों के चेहरे खिले हुए (प्रफ़ुल्लित) होंगे। यह वह लोग होंगे जिन्होंने सही़ तरीक़े से अल्लाह की दुनिया में अ़िबादत व उपासना की होगी, उनकी यह मेह़नत कुबूल हो गई, इस पर वह बहुत ख़ुश होंगे। फिर उन्हें जन्नतुल् फ़िरदौस में दाख़िल कर दिया जाएगा जहाँ हर तरह़ का सुकून व इत्मिनान होगा, कोई ऐसी गंदी बात जिससे इनका दिल दुखे वहाँ नहीं सुनेंगे।

जन्नत में बहते हुए चश्में (स्रोत) होंगे, बड़े-बड़े तख़्त (सिंहासन) बिछे हुए होंगे जो शानदार कालीन और तकियों से सजे होंगे। इनके पास पानी आदि पीने के लिए शानदार तरीक़े से प्याले सजे रखे होंगे और अपने मह़ल के जिस कोने पर भी उन की नज़र पड़ेगी कालीन ही कालीन बिछी हुई नज़र आएगी।

17-26 أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝ وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝ وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝
وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝ فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنتَ مُذَكِّرٌ ۝ لَّسْتَ عَلَيْهِم بِمُصَيْطِرٍ ۝ إِلَّا مَن تَوَلَّىٰ
وَكَفَرَ ۝ فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ۝ إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ۝ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُم ۝

ऊपर क़ियामत और जन्नत और दोज़ख़ का जो ज़िक्र हुआ उस का इन्कार करने वालों को यहाँ सोचने और विचार करने पर मजबूर किया गया है कि जिस अल्लाह ने ऊँट जैसे जानवर को पैदा किया, इतना बुलन्द आसमान बनाया और इतने मज़बूत पहाड़ों को खड़ा किया और ज़मीन को फैला दिया, वही अल्लाह एक दिन इन सबको फ़ना कर के यहाँ के रहने वालों को जन्नत या दोज़ख़ में जगह देगा।

दुनिया की तमाम चीज़ों में अल्लाह ने यहाँ इन चार चीज़ों (ऊँट, पहाड़, ज़मीन व आसमान) को ख़ासतौर पर ज़िक्र किया है कि अ़रब के लोग ऊँटों पर सफ़र करते थे, उन के दाएँ बाएँ बड़े-बड़े ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों की क़तारे होती थीं, नीचे ज़मीन और ऊपर आसमान होता था।

इसके बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को सम्बोधित करते हुए कहा जा रहा है कि अगर लोग इन निशानियों में ग़ौर करके भी हमारी क़ुदरत को न स्वीकार करें तो आप इनकी बहुत ज़्यादा फ़िक्र न कीजिए, सिर्फ़ आप इन्हें नसीह़त ही करते रहिए।

आप को तो हमने तब्लीग़ व नसीह़त के लिए भेजा है और जो लोग आप की नसीह़त से मुँह मोड़ेंगे और कुफ़्र व शिर्क में फंसे रहेंगे तो उन नाफ़रमानों को एक दिन तो हमारे पास लौट कर आना ही है, हम उस दिन उन से ह़िसाब व किताब लेंगे और सख़्त अ़ज़ाब में डाल देंगे।

(भाग-89)

सूर-ए-फ़ज्र

(सूरः नं. 89)

सूरः फ़ज्र का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का के शुरु ज़माने में नाज़िल हुई जबकि मक्का में इस्लाम कुबूल करने वालों के ख़िलाफ़ जुल्म की चक्की चल चुकी थी। इसीलिए इसमें मक्का वालों को आद, समूद और फिरऔन के अन्जाम से बाख़बर किया गया है।

इस सूरः में सबसे पहले फ़ज्र (अरुणोदय) दस रातों सम व विषम (घुस-ताक) और विदा होती हुई रात की क़सम खाकर सवाल किया गया है कि जिस बात का तुम इन्कार कर रहे हो उसके सत्य होने की गवाही देने के लिए क्या यह चीज़ें काफ़ी नहीं हैं?

सच तो यह है कि यह चीज़ें उस नियमितता का चिन्ह हैं जो दिन व रात की व्यवस्था में पाई जाती हैं, उनकी क़सम खाकर यह सवाल इस अर्थ में किया गया है कि अल्लाह की इस व्यवस्था को देखने के बाद भी क्या इस बात की गवाही देने के लिए किसी और चीज़ की ज़रुरत बाक़ी रह जाती है कि यह व्यवस्था जिस अल्लाह ने स्थापित की है, क्या उसके लिए आख़िरत में दोबारा उठना कठिन है?

आगे की आयतों में इतिहास की कुछ बड़ी क़ौमों के अन्जाम को इस बात की ताईद में पेश किया गया है कि इस क़ायनात का शासक, व्यक्तियों और क़ौमों पर नज़र रखे हुए हैं और वह एक दिन ज़रूर उनसे पूछताछ कर के हिसाब लेगा।

इसके बाद इन्सान के कुकर्मों ख़ासतौर से कमज़ोर के अधिकार छीनने पर कड़ी पकड़ से आगाह किया गया है और साफ़-साफ़ बताया गया है कि इस तरह़ के ग़लत काम आख़िरत के इन्कार का ही नतीजा है।

आख़िर में बताया गया है कि एक दिन तमाम इन्सानों का हिसाब किताब होगा, जिस दिन अल्लाह की अदालत क़ायम होगी उस वक़्त इनआ़म व सज़ा का इन्कार करने वालों की समझ में वह बात आ जाएगी जिसे आज समझाने से वे नहीं मान रहे हैं, मगर उस वक़्त समझने का कोई फ़ायदा न होगा, इन्कारी लोग हाथ मलकर रह जाएँगे।

जिसने इस्लाम को मानकर ज़िन्दग़ी गुज़ारी होगी, वह अल्लाह के दिये हुए बदले से प्रसन्न होंगे, उन्हें बुलाया जाएगा कि वह अपने पालनहार के पसन्दीदा बन्दों में शामिल हों और जन्नत में दाख़िल हो जाएँ।

आयत नं० 1 से 30 तक

وَالْفَجْرِ ۝ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝ وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ۝ هَلْ فِىْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِىْ حِجْرٍ ۝ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝ اِرَمَ ذَاتِ
الْعِمَادِ ۝ الَّتِىْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِى الْبِلَادِ ۝ وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝ وَفِرْعَوْنَ ذِى الْاَوْتَادِ ۝ الَّذِيْنَ طَغَوْا فِى الْبِلَادِ ۝ فَاَكْثَرُوْا
فِيْهَا الْفَسَادَ ۝ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۝ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝ فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّىْٓ
اَكْرَمَنِ ۝ وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّىْٓ اَهَانَنِ ۝ كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۝ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝
وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۝ وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝ كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝ وَجِايْٓءَ يَوْمَئِذٍۢ
بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ۝ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِىْ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ۝ وَّلَا يُوْثِقُ
وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ۝ يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝ ارْجِعِىْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝ فَادْخُلِىْ فِىْ عِبٰدِىْ ۝ وَادْخُلِىْ جَنَّتِىْ ۝

अनुवाद-

(1) फ़ज्र(भोर) की क़सम; (2) और दस रातों की, (3) और सम और विषम (जुफ्त-ताक़) की; (4) और रात की जबकि वह विदा हो रही हो; (5) यह चीज़ें अक़लमन्दों के नज़दीक क़सम खाने योग्य हैं। (6) क्या तुमने देखा नहीं कि तुम्हारे रब ने आद (जाति) वालों के साथ क्या किया? (7) जो इरम वाले ऊँचे खम्बों (लम्बेक़द) वाले; (8) वे ऐसे थे जिनके समान, बस्तियों में पैदा नहीं हुए, (9) और समूद के साथ जो घाटी में पत्थरों को तराशा करते (घर बनाते) थे। (10) और फ़िरऔन के साथ (क्या किया) जो मेखें (खेमें) रखता था? (11) जो मुल्कों में सरकश हो रहे थे; (12) तो उनमें बड़ा फ़साद मचा रखा था; (13) तो आप के रब ने उन पर अ़ज़ाब का कोड़ा बरसाया। (14) बेशक आपका रब (अवज्ञाकारियों की) घात में है। (15) मगर इन्सान का ह़ाल यह है कि जब इज़्ज़त और नेअ़मत देकर उसका 'रब' उसे आज़माता है तो वह खुश होकर कहता है कि मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी। (16) और जब वह उसे आज़माता है (कि) उसकी रोज़ी उस पर तंग कर देता है तो कहता है, ''मेरे रब ने मुझे ज़लील किया।'' (17) ऐसा नहीं, बल्कि तुम लोग यतीम की इज़्ज़त नहीं करते; (18) और न मिस्कीन (मोहताजों) को खाना खिलाने पर (एक-दूसर को) उभारते हो। (19) और मय्यित का सारा माल समेट कर खा जाते हो। (20) और धन के मोह में मस्त रहते हो। (21) कुछ नहीं जब धरती तोड़-फोड़ कर चूरा कर दी जाएगी। (22) और आपका 'रब' (विराजमान होगा) और फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध खड़े होंगे; (23) और उस दिन जहन्नम सामने लाई जाएगी तब इन्सान की समझ में आ जाएगा, और उस समय उसके समझने से क्या लाभ? (24) वह कहेगा कि काश! मैं अपने इस जीवन के लिए कुछ नेक काम कर लिया होता, (25) फिर उस दिन ऐसा अ़ज़ाब देगा, जैसा अ़ज़ाब देने वाला कोई नहीं; (26) और जैसा (मुजरिमों को) जकड़ेगा वैसा किसी ने भी जकड़ा न होगा; (27) ऐ इत्मिनान पाने वाली रुह़ (शान्ति आत्मा!); (28) वापस चल अपने रब की ओर (कि) तू उससे राज़ी वह तुझसे राज़ी, (29) तू शामिल हो जा, मेरे (नेक) बन्दों में; (30) और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।

सूरः फ़ज्र का संक्षिप्त व्याख्या

1-14 وَالْفَجْرِ ۝ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝ وَاللَّيْلِ إِذَا يَسْرِ ۝ هَلْ فِي ذَٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرٍ ۝ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ
فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝ إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝ الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۝ وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝
وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ۝ الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۝ فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ۝ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ
عَذَابٍ ۝ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝

इस सूरः में जो कुछ अल्लाह ने बयान फ़रमाया है उस की अहमियत को बताने के लिए कुछ चीज़ों की क़सम खाई गई है।

क़सम है फ़ज्र के वक़्त की यानी फ़ज्र उस समय को कहते हैं जब रात के अंधेरे में से दिन की रौशनी पूरब की ओर आसमान पर ज़ाहिर होती है, इसी का दूसरा नाम 'सुब्हे सादिक़' भी है, जो अल्लाह की क़ुद्रत का एक नमूना है। जिस तरह़ तुम रात में सोते और सुबह़ को आँखें मलते हुए उठ जाते हो उसी तरह़ मर जाने के बाद तुम्हारे ऊपर वह वक़्त भी आएगा कि जब सूर फूंका जाएगा और तुम क़ियामत की सुब्ह़ को उठ जाओगे और ऐसा मह़सूस करोगे कि अभी सोये थे और अभी जाग गए हो, इसलिए क़ियामत को दूर मत समझो।

ज़िल्ह़िज्जा के महीने की दस रातों की क़सम, जिसे ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अ़िबादत करने के लिए अल्लाह को सब दिनों में ज़िल्हिज्जा के शुरु के दस दिन सब से अफ़ज़ल हैं, उसके एक दिन का रोज़ः एक साल के रोज़ों के बराबर है और उन में हर रात की अ़िबादत शबेक़द्र के बराबर है।"

(तिर्मिज़ी)

इसी तरह़ जुफ़्त (युग्म even) और ताक़ (अयुग्म odd) की यानी यहाँ पर जुफ़्त और ताक़ (युग्म और अयुग्म) रातें ही मानी जा सकती हैं, क्योंकि रात का ज़िक्र पहले भी हुआ है और बाद में भी, रातें किसी महीना में जुफ़्त होती हैं और किसी में ताक़ यानी कोई महीना 30 का कोई 29 का या 30 व 31 का होता है।

इसी तरह़ रात की क़सम खाकर कहा गया है कि जब यह विदा होने लगे यानी क्या अ़क़्ल वालों के लिए यह क़समें काफ़ी नहीं हैं? ठीक इसी तरह़ आदमी के अपने ह़ालात बदलते रहते हैं और एक वक़्त ऐसा आएगा कि दुनिया के सारे अदलते-बदलते ह़ालात ख़त्म हो जाएँगे और आख़िरत में अपने तमाम आ़माल का ह़िसाब देना होगा और फिर उस के आ़माल के मुताबिक़ उस को बदला दिया जाएगा।

ज़ुल्म का अन्जाम-

तीन ज़ालिम क़ौमों का यहाँ ज़िक्र किया गया है।

1- क़ौमे आद 2- क़ौमे समूद 3- क़ौमे फ़िरऔ़न

क़ौमे आद-

अल्लाह तआ़ला ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को मुख़ातब करते हुए कहता है, कि क्या आप को क़ौमे आद (जो इस समूह में से थी) का क़िस्सा मालूम है कि हमने उस के साथ क्या किया जो बड़े क़द और ताक़त वाली क़ौम थी? उस जैसी क़ौम उस वक़्त किसी दूसरे देश या शहर में नहीं थी।

क़ौमे आद का ज़माना ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) से लगभग दो हज़ार साल पहले का बताया गया है कि तूफ़ाने नूह़ के बाद मुल्क 'यमन' में यह क़ौम आबाद हुई। फिर इतनी तरक़्क़ी की कि पूरा अ़रब और मुल्क मिस्र आदि पर हुकूमत क़ायम कर ली, माल व दौलत और ताक़त में उनके बराबर कोई नहीं था। यह क़ौम मूर्ती की पूजा करती थी और इसे अपनी ताक़त पर बड़ा घमण्ड था। इन के सुधार के लिए अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत हूद (अ़लै०) को भेजा।

ह़ज़रत हूद (अ़लै०) बराबर उन्हें दीने ह़क़ (इस्लाम) की तब्लीग़ करते रहे और उनको समझाते रहे कि अपनी ताक़त पर घमण्ड न करो, बल्कि अल्लाह की नेअ़मत पर उस का शुक्र अदा करो, लेकिन उन्होंने अपने पैग़म्बर की बात न मानी और ज़ुल्म व ज़्यादती करने लगे, तब ह़ज़रत हूद (अ़लै०) ने फ़रमाया कि अब तुम्हारी बर्बादी का वक़्त क़रीब आ गया है।

लेकिन यह सुनकर भी उन के दिलों में अल्लाह का ख़ौफ़ पैदा न हुआ और अपने पुराने तरीक़े पर क़ायम रहे, तो अल्लाह तआ़ला ने अपने अ़ज़ाब की शुरुआ़त कर दी। जिस में सबसे पहले क़हतसाली (सूखा पड़ने) की शक्ल में अ़ज़ाब भेजा गया, तो यह बहुत घबराए।

ह़ज़रत हूद (अ़लै०) ने हमदर्दी की वजह से फिर एक बार समझाया गया कि अब भी देवी, देवताओं और इन मूर्तियों की उपासना छोड़कर सत्य मार्ग को अपना लो, लेकिन उन बद्नसीबों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो फिर अल्लाह तआ़ला की ओर से सख़्त हवा का तूफ़ान शुरु हो गया, जो आठ दिन और सात रातों तक चलता रहा। जिससे क़ौमे आद ***(इस क़ौम के दो नाम हैं आद और इरम क्योंकि 'आद' बेटा है 'आस' का, और वह 'इरम' का, और वह 'साम' बिन नूह़ (अ़लै०) का, इन्हें कभी 'आद' कहते हैं, और कभी 'इरम' कहते हैं, और इरम का एक बेटा 'इरम' है और 'आबिर' का बेटा समूद है जिसके नाम से एक क़ौम है। इस तरह़ 'आद' और समूद दोनों 'इरम' से मिल जाते हैं यानी आद मिलते हैं आस से और 'समूद' मिलते हैं 'आबिर' से)*** की बस्तियाँ तबाह हो गईं।

क़ौमे समूद-

यह क़ौम शहर 'वादियुल्क़ुरा' से 'ह़िज्र' तक आबाद थी (यह दोनों स्थान मुल्क शाम और ह़िजाज़ के बीच में है) जो वादियुल्क़ुरा (शहर का नाम है) में पहाड़ से पत्थर तराश कर बड़े मज़बूत और ख़ूबसूरत मकान बनाया करते थे और इन्हीं पत्थरों से जानदार चीज़ों और फूल पौधों की तस्वीरें भी तराश्ते और बुतों की पूजा करते।

इनके सुधार के लिए अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) को भेजा, ताकि आप इन्हें नसीह़त करें कि जिस मालिक ने तुम को यह नेअ़मतें दी हैं सिर्फ़ उसी की उपासना व बन्दग़ी करो, नहीं तो तुम

पर अल्लाह का क़हर व अ़ज़ाब टूट पड़ेगा। उन्होंने आपकी नसीह़त न मानी और एक ख़ास ऊँटनी की माँग की कि गाभिन ऊँटनी पहाड़ से अगर पैदा हो जाए तो हम सब अल्लाह पर यक़ीन करके एकेश्वरवादी हो जाएँगे। इस पर अल्लाह ने उन की माँग पूरी की और एक पहाड़ से ऊँटनी पैदा हो गई, लेकिन यह बाग़ी इस को देखकर भी ईमान न लाए और बुतपरस्ती करते रहे।

जब यह बद्नसीब क़ौम अपनी ह़रकतों से बाज़ न आई तो अल्लाह तआ़ला ने अपने अ़ज़ाब व क़हर की ऐसी बिजली गिराई कि यह अपने मज़बूत घरों में वैसे ही औंधे पड़े रह गए जैसे कभी यहाँ बसते ही न थे। जिनके खण्डरात मुल्क शाम जाते हुए आज भी नज़र आते हैं और अल्लाह तआ़ला ने उसी में से ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) और उन ग़रीब व कमज़ोर लोगों को जिन का क़ौम मज़ाक़ उड़ाती थी, उस अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रखा। **(तफ़्सील के लिए सूरः शम्स देखें)**

फ़िरऔ़न–

फ़िरऔ़न जिसे ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने बहुत समझाया और दीने ह़क़ की ओर बराबर बुलाते रहे, मगर उसने क़ुबूल न किया। आख़िरकार ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) का पीछा करने में दरिया-ए-नील में डुबो कर मारा गया।

अल्लाह तआ़ला ने इसे मेखों वाला फ़िरऔ़न इसलिए कहा कि जब यह किसी पर ज़ुल्म करता तो उस के हाथ पैर चार कीलों में बाँध देता, इसलिए कहा कि इसकी फ़ौज इतनी ज़्यादह थी कि जिधर जाती उस के इतने खेमे लगते कि हर तरफ़ खेमों की मेंखें ही मेंखें दिखाई पड़तीं। (वल्लाहु आ़लम)

15-23

فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ ۝ وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ
فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ۝ كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۝ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝ وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا
لَّمًّا ۝ وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝ كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝ وَجِايْٓءَ يَوْمَىِٕذٍۭ
بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ۝

इन्सान का ह़ाल–

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने काफ़िर इन्सान की ग़ल्ती का ज़िक्र करते हुए कहा है कि जब हम इस इन्सान पर इन्आ़म करते हैं, तो यह गर्व व ग़ुरूर करने लगता है कि यह सब मेरी मेह़नत व कोशिश से हुआ और मेरा अल्लाह मुझसे राज़ी है। जब अल्लाह तआ़ला इस पर रोज़ी तंग कर देता है, तो कहता है कि अल्लाह ने मुझ पर सख़्ती कर रखी है और वह मुझ से नाराज़ है जबकि मैं इन नेअ़मतों का ह़क़्दार हूँ।

इस पर अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि हम इम्तिह़ान के तौर पर माल व दौलत और इ़ज़्ज़त देकर आज़्माते हैं कि वह हमारा शुक्र अदा करता है या नहीं और किसी को ग़रीब बना कर आज़्माते हैं कि वह इस ह़ाल में भी सब्र व शुक्र करता है या नहीं।

अल्लाह तआ़ला इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत का ज़रिया उसे नहीं कहते जिसे काफ़िर समझते हैं, बल्कि इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत का ज़रिया वह है, जिस का ज़िक्र अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है।

यतीमों और ग़रीबों के साथ अच्छा व्यवहार-

(1) इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने यतीमों के साथ अच्छा व्यवहार करने का हुक्म दिया है। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) इर्शाद फ़रमाते हैं कि सब से अच्छा घर वह है जिसमें यतीम की परवरिश हो रही हो और उस के साथ अच्छा व्यवहार भी हो रहा हो और बद्तरीन घर वह है जिस में यतीम हो और उसके साथ बद्सुलूकी और ज़्यादती की जा रही हो। फिर आप (सल्ल०) ने अपने हाथ की दो उँगलियों को उठा कर फ़रमाया कि यतीम का पालन पोषण करने वाला और मैं जन्नत में इस तरह़ होंगे यानी बिल्कुल क़रीब-क़रीब"।

(2) इन्सान को चाहिए कि ग़रीबों, मिस्कीनों को खाना खिलाए और दूसरों को भी खाना खिलाने को कहे।

(3) वरासत में जो माल मिले उसमें तमाम ह़क़्दारों का ह़िस्सा लगाए किसी को मह़रूम न करे।

(4) चौथी बात माल से मुह़ब्बत न करे इसलिए कि यही तमाम बुराइयों की जड़ है।

यह चार बातें जिसमें होती हैं उस से अल्लाह तआ़ला ख़ुश होता है और जिसमें नहीं होतीं उस से नाराज़।

24-30 يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ۝ وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ۝ يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝ ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝ فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۝ وَادْخُلِي جَنَّتِي ۝

अल्लाह जो इन्सानों के अच्छे बुरे तमाम कामों को देख रहा है, क्या वह इन को बदला नहीं देगा? नहीं! बल्कि वह ज़रूर बदला देगा और उसने बदले का एक दिन रखा है। उस दिन यह ज़मीन टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी और पहाड़ ज़र्रा-ज़र्रा हो जाएँगे यानी इस दुनिया को ख़त्म करके एक दूसरी दुनिया होगी, तमाम मख़्लूक़ एक जगह जमा होगी और परवरदिग़ार फ़रिश्तों की क़तारों के साथ क़ियामत के मैदान में होंगे और जहन्नम को ह़ाज़िर किया जाएगा, तो काफ़िरों की समझ में आ जाएगा कि हमें दुनिया में किस की बन्दग़ी करनी चाहिए थी।

मगर उस वक़्त का समझना कुछ काम न आएगा क्योंकि वह वक़्त बदले का होगा, अ़मल और सोचने का वक़्त ख़त्म हो चुका होगा।

उस दिन अल्लाह तआ़ला काफ़िर इन्सानों को सख़्त से सख़्त सज़ा देंगे और उस दिन नेक लोगों को जिसने दुनिया में अल्लाह और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और क़ुर्आन की शिक्षानुसार ज़िन्दग़ी गुज़ारी होगी, उन्हें फ़रिश्ते तसल्ली देकर कहेंगे कि तुम तो इत्मिनान वाली रुह़ हो, तुम घबराओ नहीं बल्कि ख़ुशी-ख़ुशी अपने परवरदिग़ार की अदालत में पेशी दो, वह तुमसे ख़ुश हैं और तुम उनसे ख़ुश हो। अल्लाह तआ़ला कहेंगे कि तुम मेरे मुक़र्रब (समीपवर्ती) बन्दों में शामिल हो जाओ, यह जन्नत मैंने तुम्हारे ही लिए तैयार कर रखी है।

(भाग–90)

सूर–ए–बलद

(सूरः नं. 90)

सूरः बलद का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का के शुरु ज़माने में नाज़िल हुई। 'अलू-बलद' से मुराद मक्का शहर है, इसलिए इस सूरः का नाम 'अलू-बलद' है।

शुरु की आयतों में इन्सान को बताया गया है कि दुनिया के अदलते-बदलते हालात की फ़िक्र में हर वक़्त न फंसे रहना चाहिए, बल्कि हर हाल में अपनी ज़िन्दगी निखारने की कोशिश करनी चाहिए और वह काम करना चाहिए जिससे दुनिया व आख़िरत में भलाई हो।

फिर इन्सानों को बताया गया है कि शहर बनाकर रहना इन्सान की बुनियादी ज़रुरत है, इसलिए कि इन्सान शहर बनाए बिना एक सामाजिक ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता, तो शहर वालों पर जो फ़रायज़ होते हैं उनका उन्हें इल्म भी होना ज़रूरी है।

इसी तरह इन्सान को अपने पालनहार को भुलाकर ज़िन्दगी नहीं गुज़ारनी चाहिए क्योंकि अल्लाह ही ने उसकी अच्छी शक्ल बनाई, जिसमें दो आँखें, एक ज़बान और दो होंठ बनाए। जिससे उसका चेहरा शानदार हो गया, उसे समझ और अक़्ल अ़ता की जिससे अपना भला बुरा अच्छी तरह पहचान सकता है कि किन-किन बातों में उसका फ़ायदा है और किन बातों में उसका नुक़्सान।

जो लोग अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाएँगे और आपस के कामों में मेलजोल बढ़ाएँगे तो दुनिया व आख़िरत दोनों जगह उनका भला होगा।

लेकिन जो लोग हमारी आयतों को न मानेंगे और झूठ समझेंगे वह लोग बड़े आभागे होंगे, दुनिया में जैसे-तैसे गुज़र करने के बाद जब वह क़ियामत में दोबारा पैदा होंगे तो उनको आग में डाल दिया जाएगा, जो उन्हें हर ओर से घेर लेगी, इसलिए इन्सान को समझना चाहिए कि वह दुनिया में आराम के लिए नहीं आया, बल्कि अल्लाह के हुक्मों को पूरा करने के लिए आया है।

आयत नं० 1 से 20 तक

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْ كَبَدٍ ۝ اَیَحْسَبُ اَنْ لَّنْ یَّقْدِرَ عَلَیْهِ اَحَدٌ ۝
یَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ۝ اَیَحْسَبُ اَنْ لَّمْ یَرَهٗۤ اَحَدٌ ۝ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَیْنَیْنِ ۝ وَلِسَانًا وَّشَفَتَیْنِ ۝ وَهَدَیْنٰهُ النَّجْدَیْنِ ۝ فَلَا اقْتَحَمَ
الْعَقَبَةَ ۝ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝ فَكُّ رَقَبَةٍ ۝ اَوْ اِطْعٰمٌ فِیْ یَوْمٍ ذِیْ مَسْغَبَةٍ ۝ یَّتِیْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝ اَوْ مِسْكِیْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝ ثُمَّ
كَانَ مِنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ الْمَیْمَنَةِ ۝ وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۝
عَلَیْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ۝

अनुवाद-

(1) मैं क़सम खाता हूँ इस शहर (मक्का) की (2) और (ऐ रसूल) आपके लिए इस शहर को ह़लाल कर दिया गया। (3) और क़सम खाता हूँ,बाप (अर्थात आदम) और उसके औलाद की; (4) वास्तव में 'हमने' इन्सान को तकलीफ़ (की ह़ालत) में (रहने वाला) बनाया। (5) क्या उसने यह समझ रखा है कि उस पर कोई क़ाबू न पा सकेगा? (6) वह कहता है ''मैंने'' बहुत सा माल बर्बाद कर दिया; (7) उसने क्या समझ रखा है कि कोई उसे देख नहीं रहा है? (8) क्या 'हमने' उसे दो आँखें नहीं दीं? (9) और एक ज़बान और दो होंठ (नहीं दिए) (10) और उसको (अच्छे बुरे) दोनों रास्ते भी दिखा दिये। (11) फ़िर भी वह घाटी से (सुरक्षित) पार नहीं हुआ। (12) और तुम्हें क्या मालूम कि वह घाटी क्या है? (13) किसी गर्दन को (दास्ता से) छुड़ाना; (14) या भूख के दिन खाना खिला देना; (15) या किसी रिश्ते नाते वाले यतीम को; (16) या किसी फ़क़ीर को जो मिट्टी में (लोट रहा) हो, (17) फिर यह उन लोगों में से हो जो ईमान लाए और सब्र करने की नसीह़त करते हैं और एक दूसरे पर रह़म करने की वसीयत करते हैं। (18) यही लोग दाहिने वाले (अर्थात भाग्यशाली) हैं। (19) और जिन्होंने 'हमारी' आयतों को मानने से इन्कार किया वे बाएँ वाले (अर्थात दुर्भागी) हैं। (20) उन पर आग होगी (जिसे) बन्द कर दिया गया होगा।

सूरः बलद की संक्षिप्त व्याख्या

1-15

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْ كَبَدٍ ۝
اَیَحْسَبُ اَنْ لَّنْ یَّقْدِرَ عَلَیْهِ اَحَدٌ ۝ یَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ۝ اَیَحْسَبُ اَنْ لَّمْ یَرَهٗۤ اَحَدٌ ۝ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ
عَیْنَیْنِ ۝ وَلِسَانًا وَّشَفَتَیْنِ ۝ وَهَدَیْنٰهُ النَّجْدَیْنِ ۝ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝
فَكُّ رَقَبَةٍ ۝ اَوْ اِطْعٰمٌ فِیْ یَوْمٍ ذِیْ مَسْغَبَةٍ ۝ یَّتِیْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝

यहाँ पर अल्लाह तआ़ला ने दो चीज़ों की क़सम खाई है, पहली मक्का शहर की जो दुनिया में सबसे ज़्यादा अफ़्ज़ल है। इसके बारे में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को मुख़ातब करते हुए ख़ुशख़बरी दी जा रही है कि इस शहर में जहाँ घास-फूस भी उखाड़ना मना है, किसी जानदार का शिकार करना जुर्म है, इस अम्न वाले शहर में ऐ नबी! हम आप के लिए इन इस्लाम के दुश्मनों को क़त्ल और जंग करना ह़लाल कर देंगे।

इस तरह़ फ़तेह़ मक्का में एक रोज़ के लिए आप (सल्ल०) को अल्लाह तआ़ला ने इस शहर में जिहाद की इजाज़त भी दी थी।

'दूसरी क़सम' बाप की और औलाद की खाई, बाप से मुराद ह़ज़रत आदम (अ़लै०) और औलाद से मुराद उनकी तमाम औलादें हैं।

इन्सान की कमज़ोरी-

इन दोनों क़समों को खाकर अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि हमने इन्सान को बड़ी मशक़्क़त से पैदा किया यानी कभी बीमारी, कभी रंज, तो कभी फ़िक्र में यानी इन्सान बहुत ही कमज़ोर है, क्योंकि इन तमाम ग़म व फ़िक्र को अपने से दूर नहीं कर सकता, इसलिए इसे तो यह चाहिए था कि अपनी कमज़ोरी का एह़सास करके अपने पैदा करने वाले अल्लाह के सामने अपने आपको झुका देता, लेकिन काफ़िरों का तो यहाँ तक ख़याल है कि उस अल्लाह में कोई ताक़त ही नहीं और ऊपर से यह भी कहते हैं कि हमने इतना माल ख़र्च कर डाला।

(यह उन काफ़िरों के बारे में ख़ासतौर से है जो इस्लाम की मुख़ालिफ़त में माल ख़र्च करते थे और अपनी शान बताने के लिए झूठ-मूठ चार गुना माल खर्च करने की चर्चा करते थे) उनको मुख़ातब करते हुए अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, क्या तुम यह समझते हो कि तुम को किसी ने नहीं देखा? ऐसा हरगिज़ नहीं, हम तुम्हारे ह़ालात से पूरी तरह़ वाक़िफ़ हैं, तुमने माल शैतानी राह में हमारे हुक्म के ख़िलाफ़ ख़र्च किया है, क़ियामत के दिन ज़रूर हम तुम्हें सज़ा देंगे।

16-20 أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝ أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۝ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُؤْصَدَةٌ ۝

अल्लाह का इनूआ़म-

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों को अपने कुछ इनूआ़म याद दिलाए हैं:-

(1) हम ने उन्हें देखने के लिए दो आँखें दीं।

(2) ज़बान दी।

(3) दो होंठ दिये।

जिनसे यह उन्हें बात करने में खाना खाने में मदद लेते हैं। यह भी हमारा ही इनूआ़म है कि हमने इनको अच्छाई और बुराई के दोनों रास्ते दिखा दिये, ताकि बुरे रास्ते से रुक कर अपने आप को मुसीबतों से बचा सकें, फिर भी यह इन्सान दीन की घाटी में नहीं जाता, जिस तरह़ पहाड़ की घाटी से निकल कर आदमी अपने दुश्मन से छुट्कारा पा लेता है, उसी तरह़ जो आदमी दीन की घाटी में घुस गया वह शैतान की चालों से मह़फ़ूज़ होकर कामियाब हो गया। (यहाँ घाटी से मतलब नेक आ़माल हैं) यानी जिसने अच्छा अ़मल कर लिया, वह जहन्नम की आग से बच गया।

मज़्लूम की मदद-

इन्सानों को चाहिए कि गुलामों और क़ैदियों को दूसरों से छुड़ा कर निजात दिलाएँ। जब ग़ल्ला महंगा हो और लोग भूखे मर रहे हों तो अपने रिश्तेदारों, यतीमों और मुहताजों को खाना खिलाया करें और अल्लाह पर ईमान रखें, लोगों को सब्र और आपस में रहम करने की ताकीद करते रहें। जो इन बातों को अपनाएगा बस वही ख़ुशक़िस्मत है।

जो लोग हमारी आयतों का इन्कार करते हैं वह बड़े बद्क़िस्मत हैं, उनकी दुनिया तो गुज़र जाएगी, लेकिन मरने के बाद दोज़ख़ में ढकेल दिये जाएँगे और आग में डालकर हर तरफ़ से उसके दरवाज़े बन्द कर दिये जाएँगे।

(भाग–91)

सूर–ए–शम्स

(सूरः नं. 91)

सूरः शम्स का संक्षिप्त परिचय

इस की पहली आयत में शम्स (सूरज) की क़सम खाई गई है, इसलिए इस सूरः का नाम 'अश्-शम्स' है। यह सूरः मक्का के शुरु ज़माने में नाज़िल हुई।

इस सूरः में बताया गया है कि दुनिया का इन्तिज़ाम आपसी जोड़ों (Opposing Pairs) से मिलकर चलता है। जैसे-सूरज की गर्म रौशनी, चाँद की ठंडी रौशनी, दिन का उजाला, रात का अंधेरा, ऊँचा आसमान और नीची ज़मीन, दुनिया की गर्मी और ठंडक, उजाले और अंधेरे का नमूना, इन्सान के अपने अन्दर भी मौजूद है। उसके अन्दर भलाई और बुराई दोनों की क्षमता रख दी गई है। अगर वह भलाई की ओर झुकेगा तो ज़िन्दग़ी में कामियाब होगा और बुराई की ओर झुकेगा तो तबाह व बर्बाद हो जाएगा।

समूद की क़ौम के हालात का ज़िक्र करते हुए कहा गया है कि वे बुराई की ओर झुकें और उनके एक शख़्स ने अल्लाह की भेजी हुई ऊँटनी को ही काट डाला तो अल्लाह ने उस क़ौम को तबाह व बर्बाद कर दिया, क्योंकि अल्लाह जो चाहे कर सकता है, उसे किसी तरह़ का कोई ख़ौफ़ नहीं होता।

इस सूरः में यह भी बताया गया है कि अल्लाह ने जिस तरह़ दुनिया में सूरज, चाँद, दिन, रात और ज़मीन व आसमान बनाए हैं उसी तरह़ इन्सान की हिदायत का भी इन्तिज़ाम किया है। इन्सान का शरीर तो ज़ाहिरी चीज़ों से सम्बन्धित है इसलिए वह उन चीज़ों से फ़ायदा उठाएगा जो दुनिया की ज़ाहिरी चीज़ें हैं।

जैसे- सूरज, चाँद आदि लेकिन उसके अन्दर एक चीज़ और है जिसे 'रुह़' या आत्मा कहते हैं, उसके लिए दुनिया की ज़ाहिरी चीज़ों में फंस जाना तबाही ही तबाही है।

चूंकि इन्सान को यह अख़्तियार है कि भलाई को पसंद करे या बुराई में फंस कर रह जाए इसलिए इन्सान का एक समूह दूसरे समूह से अलग नज़र आता है, लेकिन जो बुराई को अपनाएगा उस का अन्जाम बुरा ही होगा। जैसे-समूद की क़ौम का हुआ।

आयत नं० 1 से 15 तक

وَالشَّمْسِ وَضُحٰىهَا ۝١ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ۝٢ وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰىهَا ۝٣ وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ۝٤ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ۝٥ وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ۝٦
وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۝٧ فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ۝٨ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝٩ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۝١٠ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ۝١١ اِذِ انْۢبَعَثَ
اَشْقٰىهَا ۝١٢ فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ۝١٣ فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۙ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۝١٤ وَلَا
يَخَافُ عُقْبٰهَا ۝١٥

अनुवाद-

(1) सूरज और उसके धूप चढ़ने की क़सम, (2) और चाँद की, जबकि उसके पीछे आए, (3) और दिन की, जब उसे चमका दे, (4) और रात की, जबकि वह (सूरज पर) छा जाए, (5) और आसमान की और उस ज़ात की 'जिसने' उसे क़ायम किया; (6) और ज़मीन की और उस ज़ात की जिसने 'उसे' बिछाया। (7) और नफ़्स (मानव-आत्मा) की और उस ज़ात की 'जिसने' उसे ठीक-ठाक किया। (8) फिर 'उसने' बुराई और परहेज़गारी में तमीज़ करने की समझ उसके जी में डाल दिया। (9) बेशक वह कामियाब हो गया जिसने अपने नफ़्स को (गुनाहों से) पाक रखा। (10) और वह नाकाम हुआ जिसने अपने मन को (पापों में) दबा दिया। (11) समूद (जाति) ने अपनी शरारत से झुठलाया, (12) जब उनमें का एक बड़ा बद्नसीब उठा, (13) तो अल्लाह के रसूल (स़ालेह़) ने उन से कहा खबरदार! अल्लाह की ऊँटनी और उसके पिलाने से, (बाधा न डालना), (14) मगर उन्होंने उसकी बात झुठलाई और नसें काट दीं, तो उन पर उनके रब ने ऐसी आफ़त डाली कि एक साथ सब को (मिट्टी में) बराबर कर दिया। (15) और उसे किसी दुष्फ़ल (अंजाम) का कोई डर नहीं।

सूरः शम्स की संक्षिप्त व्याख्या

1-10 وَالشَّمْسِ وَضُحٰىهَا ۝١ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ۝٢ وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰىهَا ۝٣ وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ۝٤ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ۝٥
وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ۝٦ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۝٧ فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ۝٨ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝٩ وَقَدْ خَابَ
مَنْ دَسّٰىهَا ۝١٠

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला सात चीज़ों की क़सम खाकर फ़रमाता है कि सूरज और उस के धूप चढ़ने के वक़्त को देखो, चाँद पर नज़र डालो, जब वह सूरज के पीछे-पीछे चलता है, फिर उन को देखो जो सूरज को निकालता है और चमकाता है; फिर रात को देखो जब वह आकर सूरज को छिपा लेती और ढ़ाँप लेती है।

इसी तरह़ आसमान की ओर नज़र उठाओ और ऊपर की दुनिया पर ग़ौर करो जिसने इसे एक जगह पर ठहरा रखा है; ज़मीन को देखो, उस पर ग़ौर करो जो दूर-दूर तक फैली हुई है; फिर इन्सान पर ग़ौर करो कि किस तरह़ उस के अन्दर दुनिया की हर चीज़ का नमूना अपनी-अपनी जगह पर रख दिया है। इस इन्सान को ऐसी समझ दी गई है कि ग़लत और सह़ी रास्ते में फ़र्क़ कर लेता है इसे इतनी

छूट दी गई है कि चाहे ग़लत रास्ता अपनाए और चाहे सही़ रास्ता अपनाए।

इन्सान की कामियाबी व नाकामी–

ऊपर की बातों पर ग़ौर करने से यह बात मालूम होती है कि इन्सान अपनी अ़क़्ल और ताक़त को अपने आप को सुधारने में लगाए और अल्लाह के भेजे हुए रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर भरोसा करके किताब (क़ुर्आन) की रौशनी में सही़ रास्ते पर चले।

इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जिस इन्सान ने अपने आप को इस तरह़ सुधारा कि यह "बुराईयों से बचता रहा" वह व्यक्ति हर तरह़ से कामियाब हो गया।

ह़ज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से रिवायत करते हैं कि 'तज़क्का' का मतलब "लाइलाहा इल्लल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि" है, यानी 'अल्लाह के सिवा किसी अन्य पर आस्था न रखे और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को आख़िरी रसूल माने, 'यही ह़ज़रत इक्रिमा और ह़ज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा भी फ़रमाते हैं।

लेकिन जो शख़्स अपने आप को बुराई के दलदल में फँसा दे (जिसमें सबसे बड़ी बुराई अल्लाह के सिवा किसी पर भरोसा इस तरह़ का रखना जैसे अल्लाह पर रखा जाता है शिर्क है, जो सबसे भयानक बुराई है (कि आदमी बहुदेववाद में फंस जाए।) वह बहुत ही घाटे में होगा और मरने के बाद सख़्त अ़ज़ाब में डाला जाएगा। आगे की आयत में इन्हीं नाकाम लोगों को ह़ाल बताया गया है।

11-14 كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوٰىهَآ ۝ إِذِ انۢبَعَثَ أَشْقٰىهَا ۝ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ۝
فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا ۥ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُم بِذَنۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۝

ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) का चमत्कार–

यह क़ौम शहर 'वादियुल् क़ुरा' से हिज्र तक आबाद थी, यह दोनों स्थान मुल्क शाम और 'हिजाज़' के बीच में है जो 'वादियुल् क़ुरा' में पहाड़ के पत्थर तराशा करते थे। यह लोग मज़बूत और ख़ूबसूरत मकान बनाने में बड़े ही माहिर थे, इन के सुधार के लिए अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) को नबी बना कर भेजा, जो अपनी क़ौम को बराबर तौह़ीद (एकेश्ववाद) की नसीह़त करते रहे, लेकिन क़ौम सुनी अन्सुनी करती रही और एक पहाड़ की ओर इशारा करके कहा कि इस पहाड़ के एक कोने से ऐसी ऊँटनी निकालिए जो डील-डौल में ख़ूब मोटी और दस माह की गाभिन हो, जो बाहर निकलकर बच्चे को जन्म दे। जिसे हम सब अपनी आँखों से देखें तब हम ईमान (इस्लाम) क़ुबूल करेंगे।

यानी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने अपने परवरदिग़ार से दुआ़ की, जिससे उस पहाड़ से आवाज़ आनी शुरु हो गई जैसे जानवर से बच्चा पैदा होने के समय आती है और देखते ही देखते उस में से एक ऊँटनी निकल आई जो बिल्कुल वैसी ही थी जैसी क़ौम ने माँग की थी और फिर थोड़ी ही देर बाद उस ऊँटनी को भी दर्द हुआ और उसने लोगों के सामने बच्चा भी दे दिया।

अल्लाह तआ़ला हर क़ौम को वह मोअ़जिज़ह (चमत्कार) दिखाते हैं जिसमें वह महारत रखती है। यह लोग चूंकि पत्थरों से जानवरों की अजीब व ग़रीब सूरतें बनाने में माहिर थे, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने इन पत्थरों से जानदार ऊँटनी निकालने का मोअ़जिज़ह (चमत्कार) दिखाया कि यदि तुम में कोई ताक़त व क़ुद्‌रत है तो अपनी इन तराशी हुई मूर्तियों में जान डालें जिस तरह़ हम ने डाली है, अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते तो हमारी इ़बादत (उपासना) करो।

यह सब देखने के बाद भी ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) की क़ौम ने तौह़ीद (एकेश्वरवाद) के सन्देश को ठुकरा दिया और जो वादा किया था कि अगर ऐसा हो जाए तो हम इस्लाम क़ुबूल कर लेंगे, उन सब से फिर गए।

इस पर ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) ने फ़रमाया कि तुमने मोअ़जिज़ा (चमत्कार) देखने के बाद भी अल्लाह की अ़िबादत से इन्कार किया, इसलिए तुम पर सख़्त अ़ज़ाब आएगा और इसके बचाव का सिर्फ़ एक ही तरीक़ा है कि तुम अब अल्लाह की इस ऊँटनी और इसके बच्चे को आराम से रखो, इसे किसी तरह़ की तक्लीफ़ न पहुँचे।

कुछ दिन यह लोग इस पर क़ायम रहे और जब उन्होंने देखा कि जिस जंगल में यह ऊँटनी चरती है उस जंगल में हमारा कोई जानवर उस के डर की वजह से नहीं चर पाता और जहाँ यह पानी पीती है उसको खाली कर देती है, तो उन्होंने ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) से आकर शिकायत की, जिस पर आपसी तौर से यह तय हुआ कि एक दिन तुम्हारे जानवर चरा करेंगे और एक दिन यह ऊँटनी, कुछ दिन ऐसा ही हुआ मगर यह भी उन्हें अच्छा न लगा तो उन्होंने आपस में सलाह किया कि इस ऊँटनी को मार डाला जाए।

अतः उन लोगों ने "कज्ज़ार बिन सालिक" नामी व्यक्ति को तैयार किया जिसने अपने साथियों के साथ ह़मला किया और उस की कूचें काट दीं जिस से वह ज़मीन पर गिर पड़ी और अपनी जान दे दी, उसके बच्चे ने जब यह देखा तो वह घबरा कर भागा और जाकर उसी पहाड़ के पीछे खड़ा हो गया।

ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) को जब यह मालूम हुआ तो फ़ौरन घर से बाहर आए और फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! तुमने यह अच्छा नहीं किया, अब भी तुम्हारे लिए अल्लाह के अ़ज़ाब से बचाव का एक रास्ता है, वह यह कि उस ऊँटनी के बच्चे को अपने साथ प्यार व मुह़ब्बत के साथ लाओ और अच्छे तरीक़े से उसे रखो, लेकिन आप की क़ौम ने आप की सुनी अनूसूनी कर दी। फिर ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) को देखकर तीन बार रोने की आवाज़ निकाली, उसी समय पहाड़ फटा और बच्चा उसी में घुस गया।

अल्लाह का अ़ज़ाब–

ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) बड़े दुःख के साथ अपनी क़ौम के पास आए और कहा तुम लोगों ने ख़ुद अल्लाह के अ़ज़ाब को बुला लिया है और इस बच्चे ने जो तीन बार आवाज़ निकाली है, उस का मतलब यह है कि अल्लाह के अ़ज़ाब की मोह़लत तुम्हारे लिए अब सिर्फ़ तीन दिन है। पहले दिन तुम्हारे चेहरे

ज़र्द रंग के हो जाएँगे, दूसरे दिन सुर्ख़ रंग के और तीसरे दिन काले हो जाएँगे।

जब यह लोग अगले दिन सो कर उठे तो उन के मुँह ज़र्द हो गये, अब उन्हें यक़ीन हो गया कि ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) ने जो कुछ कहा है वह सच होकर ही रहेगा। यह सब देखकर तौबः करने के बजाए उन लोगों में बदला लेने की भावना पैदा हो गई। ऊँटनी का क़ातिल 'कज्जार बिन सालिक' ने अपने साथियों के साथ ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) को शहीद करने का प्रोग्राम बनाया और उस को तलाश करते हुए मस्जिद में पहुँचा, इसके पहुँचने से पहले अल्लाह के हुक्म से एक पेड़ ने आप को बता दिया कि दुश्मन आप को शहीद करने आ रहे हैं, आप (अ़लै०) अपने घर चले जाएँ यह सुनते ही आप घर चले आए लेकिन यह लोग घर भी ढूँढ़ते हुए पहुँच गये, तो फ़रिश्तों ने इन्हें ऐसा मारा जिस से यह लोग अन्धे हो गए और घबराते हुए अपने घर की ओर भागे और रास्ते ही में मर गए।

ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) के क़त्ल की साज़िश-

लोगों ने फ़रिश्तों के मार को देखकर सोचा कि शायद सालेह़ (अ़लै०) ने ही क़त्ल कर दिया है, इस पर क़ौम के लोगों ने ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) का घर घेर लिया और कहा तुमने एक ऊँटनी के बदले में इतने लोगों को क़त्ल किया है तो तुमको और तुम्हारे घर वालों को हम क़त्ल करेंगे। ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) ने फ़रमाया, ऐसा नहीं है बल्कि उन लोगों ने ही हमारे घर पर चढ़ाई की थी और फिर अल्लाह के अ़ज़ाब ने उनका यह ह़ाल कर दिया।

यह बातचीत चल ही रही थी कि इसी बीच "जुन्दा बिन उ़मर" (यह उस शहर के सबसे रईस आदमी थे, जिन्होंने कुछ दिन पहले इस्लाम कुबूल किया था) को ख़बर मिली तो फ़ौरन अपनी फ़ौज के साथ ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) की मदद के लिए पहुँच गए और दुश्मनों का मुक़ाबिला किया। आख़िर में सुलह़ इस बात पर हुई कि ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) इस शहर से निकल जाएँ, ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) ने इसे मन्ज़ूर कर लिया और शहर छोड़ दिया।

तीसरे दिन जब उन के मुँह काले हो गए तो अ़ज़ाब से बचने के लिए पहाड़ों में जो मकानात बनाए थे उस में घुस गए लेकिन इधर जिब्रईल (अ़लै०) ने एक ज़ोरदार आवाज़ निकाली, जिससे पहाड़ हिलने लगे और तूफ़ान चलना शुरु हो गया। इतने में दोबारा आवाज़ निकाली, जिससे सब औंधे मुँह ज़मीन पर गिर पड़े और पित्ते फट गए जिससे सब के सब मौत के घाट पहुँच गए।

15 وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ۝

आख़िर में कहा गया है कि दुनिया के बादशाह तो कभी-कभी किसी को सज़ा सुनाने के बाद यह दहशत महूसस करते हैं कि कहीं उस के साथी मुझ पर ह़मला न कर दें, लेकिन अल्लाह को तो इस का भी कोई डर नहीं।

(भाग-92)

सूर-ए-लैल

(सूरः नं. 92)

सूरः लैल का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का के शुरु ज़माने में नाज़िल हुई। इसकी पहली आयत में लैल (रात) की क़सम खाई गई है, इसीलिए इस सूरः का नाम 'अल्-लैल' है।

इसमें यह बताया गया है कि इन्सानों के गिरोह इस दुनिया में जो काम कर रहे हैं, वे वैसे ही हैं जैसे दिन रात और नर मादा है। इस के बाद ही बताया गया है कि जैसे दुनिया में विभिन्न ह़ालात हैं, ऐसे ही इन्सान की कोशिशें भी भिन्न हैं, जो जैसा रास्ता अपनाएगा उसके लिए उस पर चलने की सहूलतें पैदा कर दी जाएँगी, चाहे वह रास्ता बुरा हो या भला, रास्ते के अपनाने का यह ख़ुद ज़िम्मेदार है। भला रास्ता अपनाने वाले के लिए उस पर चलने के लिए आसानियाँ पैदा होती चली जाएँगी और जो बुरा रास्ता अपनाएगा उस पर उसके लिए चलने का सामान इकट्ठा हो जाएगा।

लेकिन पहले का अन्जाम अच्छा होगा दूसरे का बुरा, उसके बाद अच्छे और बुरे रास्ते की निशानियाँ भी साफ़ कर दी गई और यह भी बता दिया गया कि किस रास्ते पर चलकर इन्सान कहाँ पहुँचेगा। नेक कामों में माल ख़र्च करना, अल्लाह से डर कर बुरी बातों से बचना, क़ुर्आन की बताई हुई बातों को सच मानना और उनको पूरी तरह़ क़ुबूल करना यह सब अच्छे रास्ते की निशानियाँ हैं, जो लोग ऐसा करते हैं वही सह़ी रास्ते पर चल रहे हैं।

अल्लाह की बताई हुई बातों को न मानना, जन्नत और दोज़ख़ की हंसी उड़ाना, अच्छे कामों और अच्छी आदतों को केवल बनावटी बातें समझना, यह कहना कि यह गढ़ी हुई बातें हैं यही सब बुरे रास्ते की निशानियाँ हैं। जो लोग ऐसा करते हैं वह ग़लत रास्ते पर चल रहे हैं। जिन लोगों ने अच्छा रास्ता अपनाया वह आराम और मज़े की जगह यानी जन्नत में पहुँच जाएँगे और जिन्होंने बुरा रास्ता अपनाया वह मुश्किल में फँस जाएँगे और दोज़ख़ ही उनका ठिकाना होगा।

माल व दौलत पर घमण्ड करना बेकार है, यह इन्सान के किसी काम न आएगा, यह सिर्फ़ उसी को फ़ायदा देगा जो उसे अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी ह़ासिल करने के लिए ख़र्च करेगा और किसी पर एह़सान न जताएगा। ऐसे लोग जन्नत में हंसी ख़ुशी जाएँगे और बाक़ी दोज़ख़ में जलेंगे।

आयत नं० 1 से 21 तक

وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشٰى ۝ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلّٰى ۝ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنْثٰى ۝ إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝ فَأَمَّا مَنْ أَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝
فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرٰى ۝ وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۝ فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرٰى ۝ وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدّٰى ۝ إِنَّ عَلَيْنَا
لَلْهُدٰى ۝ وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولٰى ۝ فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۝ لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ۝ الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝ وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ۝
الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكّٰى ۝ وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزٰى ۝ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلٰى ۝ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۝

अनुवाद-

(1) रात की क़सम, जबकि ढाक ले, (2) और दिन की क़सम, जबकि वह रौशन हो, (3) और क़सम है उस ज़ात की जिसने नर और मादा को पैदा किया, (4) बेशक तुम सबकी कोशिश तरह-तरह की है। (5) तो जिसने (अल्लाह के रास्ते में माल) दिया और (बुराई से) बच कर चला, (6) और भली बात को सच माना, (7) तो उसको 'हम' आसान रास्ते की तौफ़ीक़ (सुविधा) देंगे, (8) और जिसने कंजूसी की और (अल्लाह से) बेपरवाह बना रहा, (9) और भली बात को झुठलाया, (10) तो 'हम' उसे तंगी वाले रास्ते में पहुँचा देंगे, (11) और उस का माल उसके कुछ काम न आएगा, जबकि वह (दोज़ख़ में) गिरेगा। (12) बेशक हिदायत देना 'हमारे' ज़िम्मे है। (13) और बेशक आख़िरत और दुनिया दोनों के 'हम' ही मालिक हैं। (14) तो मैंने तुमको डरा दिया है भड़कती हुई आग से। (15) उसमें नहीं झुलसेगा, मगर वह (जो) बद्नसीब (होगा); (16) जिसने झुठलाया और मुहँ फेरा। (17) और उससे बचा लिया जाएगा जो बहुत परहेज़गार है, (18) जो अपना माल (गुनाहों से) पाक़ीज़गी ह़ासिल करने के लिए देता है। (19) और उसके ऊपर किसी का कोई एह़सान नहीं था जिसका बदला चुकाने के लिए (माल) देता हो, (20) बल्कि वह अपने सर्वश्रेष्ठ रब की रज़ामंदी हासिल करने के लिए देता है। (21) और वह बहुत जल्द खुश हो जाएगा।

सूरः लैल की संक्षिप्त व्याख्या

1-14 وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشٰى ۝ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلّٰى ۝ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنْثٰى ۝ إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝ فَأَمَّا مَنْ أَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝
وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝ فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرٰى ۝ وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۝ فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرٰى ۝ وَمَا
يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدّٰى ۝ إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۝ وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولٰى ۝ فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۝

इन्सान की दो क़िस्में-

इन्सान की दो क़िस्में होती हैं:-

पहली क़िस्म- इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने तीन चीज़ों की क़सम खाई है, उसके बाद फ़रमाया इन्सानों की कोशिशें भिन्न हैं। इनमें से एक गिरोह वह है जो अच्छे काम करता है, उस गिरोह की अल्लाह ने तीन खुसूसियात ज़िक्र की हैं। जो इस तरह़ हैं:-

(1) अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं।

(2) अल्लाह से डरते हैं और ऐसा काम नहीं करते जिससे अल्लाह नाराज़ हो।

(3) कलिमा 'लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि' की तस्दीक़ यानी एक अल्लाह पर यक़ीन रखते हैं, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को आख़िरी पैग़म्बर मानते हुए उन्हीं की सिर्फ़ पैरवी करते हैं, बेशक यह गिरोह कामियाब है और यही जन्नत में जाने वाला है।

इन्सान की दूसरी क़िस्म-

दूसरे क़िस्म के इन्सान वह हैं जो बुरे काम करते हैं उन के यह अवगुण (बुरी सिफ़ात) हैं:-

(1) अल्लाह की राह में ख़र्च करने में कंजूसी करते हैं यहाँ तक कि ज़कात व फ़ित्रा देने में भी कंजूसी करते हैं।

(2) दुनिया में फंस कर अल्लाह को भुला देते हैं और आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाते हैं।

(3) कलिमा का इन्कार करते हैं यानी अल्लाह को छोड़कर अन्य की पूजा करते हैं, यह लोग माल की मुहब्बत में अल्लाह के हुक्मों को तोड़ देते हैं। अतः इन का माल कल क़ियामत के दिन इनके किसी काम न आएगा, जब इनको जहन्नम में डाला जा रहा होगा।

इसलिए आदमी को इस धोखे में न रहना चाहिए कि आख़िरत में उसी तरह़ रिश्वत देकर छोड़ दिया जाएगा जिस तरह़ दुनिया में रिश्वत देकर बच जाता है। वहाँ का अधिकारी तो अल्लाह है, जो हर चीज़ से पाक है।

इसलिए अच्छी तरह़ समझ लेना चाहिए कि गुनाहगारों के लिए वहाँ भड़कती हुई आग होगी।

15-21 لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ۝ الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝ وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝ الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۝
وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ۝ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ۝ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۝

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि हमने क़ुर्आन के ज़रिये लोगों को राह दिखा दी है, कि जो अच्छे काम करेगा वह जन्नत में जाएगा और जो बुरे काम करेगा वह जहन्नम में जाएगा। इसलिए ज़बरदस्ती हम किसी पर नहीं करते, दुनिया व आख़िरत सब हमारे हाथ में है। हर जगह हम जज़ा व सज़ा दे सकते हैं।

याद रखो! हम तुम्हें दोज़ख़ की भड़कती हुई आग से डरा चुके हैं, उसमें वही जाएगा जो बड़ा बद्नसीब होगा, जो हमारी बातों को झुठलाएगा और मुँह मोड़ेगा।

'मुस्नद अह़मद' की रिवायत है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने अपने ख़ुत्बा में फ़रमाया, "ऐ लोगों! मैं तुमको जहन्नम की आग से डरा चुका हूँ। इस शब्द को आप इतनी तेज़ आवाज़ से फ़रमा रहे थे कि बाज़ार तक आप की आवाज़ जा रही थी और जोश में चादर कंधों से खिसक कर पैर पर गिर गई थी"।

अच्छे लोगों के लिए ख़ुशख़बरी-

दोज़ख़ की आग से उसको बचा लिया जाएगा जो बुरे कामों से बचेगा और अपना माल इसलिए ख़र्च करेगा ताकि कंजूसी और लालच से अपने दिल को पाक करे, दिखावा नाम व नमूद उसे पसंद न हो और न उस पर किसी का एहसान हो, जिसे वह बदला देने के लिए माल देता हो।

उस का तो मक़्सद माल ख़र्च करने से सिर्फ़ अपने मालिक की रज़ा हो। उस का यह मक़्सद उसे जल्द हासिल हो जाएगा और उसे राज़ी व ख़ुश व ख़ुर्रम कर दिया जाएगा यानी जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।

(भाग–93)

सूर–ए–जुहा

(सूरः नं. 93)

सूरः ज़ुहा का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का के शुरु ज़माने में उस वक़्त नाज़िल हुई जबकि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के पास शुरु ही में ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) एक दो बार वह्य लेकर आए। उस के बाद बहुत दिनों तक वह्य आनी बन्द रही, इस पर मुख़ालिफ़ीन कहने लगे कि अब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को अल्लाह ने छोड़ दिया और इन से नाराज़ हो गया है, आप (सल्ल०) को इस का बड़ा रंज हुआ।

इसके थोड़े ही दिन बाद यह सूरः नाज़िल हुई और आप (सल्ल०) को संतुष्ट किया गया कि आप का पालनहार (रब) आप से नाराज़ नहीं, बल्कि भविष्य में आप को ऐसी चीज़ मिलने वाली है जिससे आप राज़ी हो जाएँगे। आप के विरोधी जो कहते हैं यह सब झूठ है, दुनिया में अंधेरा और उजाला बारी-बारी आता है।

'अंधेरे का यह मतलब नहीं कि उसके बाद उजाला न होगा, अल्लाह तआ़ला ने अपनी ह़िक्मत से दुनिया में यह नियम बना दिया है कि ह़ालात बदलते रहते हैं और हर ह़ालत में उस के मुताबिक़ जैसे बेहतर होता है इन्तिज़ाम किया जाता है।

आगे बताया गया है कि आप के पालनाहर ने आप पर बड़ी मेहरबानी की, यतीम (अनाथ) होने के वक़्त आप के पालन-पोषण का इन्तिज़ाम किया, आप को गुमराही में इधर-उधर भटकने से बचा लिया और आपको मालदार किया। याद रखिए! आप का अन्जाम इस से भी ज़्यादह बेहतर होगा।

यह भविष्यवाणी (पेशीनगोई) उस समय की जा रही है, जबकि आप (सल्ल०) की उम्र पचास साल के लगभग है, तमाम लोगों ने आप के ख़िलाफ़ कमर बाँध रखी थी, उस समय कौन समझ सकता था कि आप (सल्ल०) की ह़ालत बहुत अच्छी हो जाएगी। वही हुआ जो इस सूरः में कहा गया है कि 10 साल में तरक़्क़ी हुई उस को देखकर दुनिया वाले आज भी अचम्भे में हैं।

आयत नं० 1 से 11 तक

وَالضُّحٰى ۝ وَالَّيْلِ إِذَا سَجٰى ۝ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ۝ وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ۝ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ۝ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۝
وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۝ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ۝ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝

अनुवाद-

(1) सूरज की रोशनी की क़सम (2) और रात की (अंधेरी) जब वह छा जाए। (3) (ऐ मुह़म्मद!) आप के रब ने न तो आप को छोड़ा और न नाराज़ हुआ। (4) और आख़िरत (बाद का युग) आप के लिए पहले (के युग अर्थात दुनिया) से कहीं बेहतर है। (5) और जल्द ही आप का रब आप को इतना देगा कि आप राज़ी हो जाएँगे। (6) क्या (यह सत्य) नहीं है कि उसने आप को यतीम पाया तो ठिकाना दिया? (7) और रास्ते से अन्जान देखा तो सीधा रास्ता दिखा दिया? (8) और नादार(निर्धन) पाया तो ग़नी (धनवान) कर दिया। (9) तो आप भी यतीम पर सितम (अत्याचार) न कीजिएगा (10) और माँगने वाले को मत झिड़किएगा, (11) और अपने रब के एह़सान को बयान करते रहा कीजिए।

सूरः ज़ुह़ा की संक्षिप्त व्याख्या

1-2 وَالضُّحٰى ۝ وَالَّيْلِ إِذَا سَجٰى ۝

ह़ज़रत उरवा (रज़ि०) से रिवायत है कि सात मुसलमान ऐसे थे जो मक्का के काफ़िरों के ग़ुलाम थे। जब वह मुसलमान हो गए तो उन काफ़िरों ने उन पर विभिन्न प्रकार (मुख़्तलिफ़ तरीक़े) से ज़ुल्म करना शुरु कर दिया। इस पर ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने माल ख़र्च कर के उन्हें आज़ाद करा लिया, जिस पर यह आयतें नाज़िल हुईं।

एक बार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) बीमार हो गये, तो दो तीन रातें आप (सल्ल०) ने क़याम नहीं फ़रमाया। एक औ़रत-[1] आप (सल्ल०) के पास आई और कहने लगी कि ऐ मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! मालूम होता है कि तेरे शैतान ने तुझे छोड़ दिया, दो तीन रातों से मैं देख रहा हूँ कि तेरे क़रीब नहीं आया (जिस पर अल्लाह ने यह सूरः नाज़िल फ़रमाई।) **(सह़ी बुख़ारी)**

ह़ालात का उलटफ़ेर-

ऊपर की आयतों में जो क़समें खाई गई हैं, उनमें इस की तरफ़ इशारा मिलता है कि इस दुनिया की व्यवस्था अल्लाह तआ़ला ने इस तरह़ बनाई है कि यहाँ हमेशा किसी चीज़ की एक ही ह़ालत नहीं रहती, यहाँ दिन की रौशनी है तो रात का अंधेरा भी।

इसलिए जिस तरह़ रात के अंधकार को देखकर किसी का रौशनी से मायूस हो जाना सह़ी नहीं,

1- यह औ़रत अबू लहब की बीवी उम्मे जमील थी। (फ़त्हुल बारी)

उसी तरह़ तक्लीफ़ और मुसीबत के उमड़ते हुए बादलों को देखकर यह ख़्याल करना भी सह़ी नहीं कि यह बादल कभी छटने वाला ही नहीं। जिस तरह़ आज़्माइश के लिए रात और दिन दोनों का वजूद ज़रूरी है, उसी तरह़ तक्लीफ़ और राह़त दोनों आज़ुमाइश के लिए भी ज़रूरी हैं, तक्लीफ़ें इन्सान की तर्बियत (प्रशिक्षण) और उसकी छिपी हुई सलाह़ियतों को उभारने का साधन भी हैं।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने जब दअ़्वत शुरु की तो कठिनाइयों के पहाड़ टूटने लगे और आपके इस दावे की वजह से कि आप (सल्ल०) पर आसमान से वह़्य नाज़िल होती है, विरोध का एक तूफ़ान उमड़ पड़ा। एक नबी को इन ह़ालात में घिरा हुआ देखकर यह सवाल लाज़मी था कि अगर नबी वास्तव में अल्लाह का मह़बूब हैं तो उस की राह में यह मुश्किलें कैसी?

और फिर जब वह़्य कुछ दिनों के लिए रुक जाती, तो मुख़ालिफ़ीन यह कहने लगते कि अल्लाह ने आपको छोड़ दिया और आप से नाराज़ हो गया।

मुख़ालिफ़ीन के इन संदेहों को दूर करते हुए नबी (सल्ल०) को इत्मिनान और तसल्ली दी जा रही है कि जिन ह़ालात में अपने आप को घिरा हुआ पा रहे हैं वह सिर्फ़ नुबूव्वत का ही तक़ाज़ा नहीं बल्कि तमाम इन्सानों का भी तक़ाज़ा है कि हर एक को आज़्माइश से गुज़ारा जाता है जिससे अम्बिया (अ़लै०) भी अलग नहीं।

एक पैग़म्बर जब सत्य मार्ग की मुश्किलों, आफ़तों और मुख़ालिफ़त के तूफ़ान से गुज़रता है, तो उससे बहुत बड़े-बड़े फ़ायदे होते हैं। एक यह कि पैग़म्बर की अख़्लाक़ी ख़ूबियाँ (नैतिक विशेषताएँ) निखर कर सामने आती है, मानने वालों को पैग़म्बर से मुह़ब्बत व अ़क़ीदत हो जाती है और वह उस पर अपनी जान तक निछावर करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

इसी तरह़ पैग़म्बर की ह़िम्मत और ह़ौसले को देखकर उसके मानने वालों में भी स्थिरता और बहादुरी आ जाती है। रहा अल्लाह की वह़्य को नाज़िल होने में देरी तो यह भी इस का कारण नहीं है कि अल्लाह अपने पैग़म्बर से नाराज़ हो गया, बल्कि वह़्य का पूरा मामला अल्लाह की ह़िक्मत और मस्लेह़त पर होता है।

3-11 مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ۝ وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ ۝ وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ۝ أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا
فَآوَىٰ ۝ وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ۝ وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ ۝ فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝ وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا
تَنْهَرْ ۝ وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝

यह सूरः उस वक़्त नाज़िल हुई जबकि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर वह़्य आने में देर हो गई, जिस की वजह से 'अबू लहब' की बीवी 'उम्मे जमील' ने ताना देना शुरु किया और कहने लगी कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से उसका अल्लाह नाराज़ हो गया और उसने उनको छोड़ दिया। इस पर अल्लाह तआ़ला ने दिन और रात के अंधेरे की क़सम खाकर फ़रमाया, "हमने उनके पैग़म्बर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को न छोड़ा है और न ही हम उससे नाराज़ हुए हैं"।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने अपने प्यारे नबी को मुख़ातब करके फ़रमाया, आख़िरत में हम आपको इतनी नेअ़मतें देंगे कि आप ख़ुश हो जाएँगे"।

यानी ऐ मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप यक़ीन रखिए कि आगे चलकर आप की पिछली ह़ालत से अगली ह़ालत बेहतर होने वाली है और आप का रब अपने ख़ज़ाने से इतना ज़्यादह देने वाला है कि आप राज़ी हो जाएँगे, यानी आख़िरत के उन हमेशा-हमेश रहने वाले इनूआ़मों को भी जो न कभी ख़त्म होने वाला है, जिसके बुलन्दी की कल्पना भी नहीं की जा सकती और एक मतलब यह भी हो सकता है कि आप पर अल्लाह तआ़ला के इनूआ़मात बराबर बढ़ते ही चले जाएँगे, कि हर पहली ह़ालत पिछली ह़ालत से बेहतर व अफ़ज़ल होती चली जाएगी, इसमें रुहानी तरक़्क़ी भी दाख़िल है, दुनिया के आर्थिक ह़ालात, इ़ज़्ज़त व हुकूमत भी।

आप (सल्ल०) की पसंदीदा चीज़ों में दीन-ए-इस्लाम को तरक़्क़ी, इस्लाम का दुनिया में फैलना सब दाख़िल है।

उम्मत के लिए सिफ़ारिश-

ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला मेरी उम्मत के बारे में मेरी सिफ़ारिश क़ुबूल फ़रमाएँगे यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाएँगे, "रज़ीता या मुह़म्मद" ऐ मुह़म्मद! अब आप राज़ी हैं तो मैं अ़र्ज़ करुँगा, "या रब रज़ीतु" यानी ऐ मेरे परवरदिग़ार! मैं राज़ी हूँ"।

इस बात को साबित करने के लिए अल्लाह तआ़ला तीन इनूआ़मात का ज़िक्र फ़रमा रहे हैंः-

आप (सल्ल०) की यतीमी-

पहला इनूआ़म यह है ऐ मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) जिस वक़्त दुनिया में आप ने आँखें खोंली उस वक़्त आप यतीम थे। (आप की पैदाइश से पहले ही आप के पिता का इन्तिक़ाल हो चुका था और उन्होंने कुछ माल व दौलत भी तो नहीं छोड़ी थी कि जिससे आप की परवरिश हो सकती) ऐसे वक़्त में हमने आप की मदद की और आपके परवरिश का इन्तिज़ाम किया यानी आपकी आप के दादा अ़ब्दुल् मुत्तलिब के ज़रिये परवरिश करवाई और आप जब आठ साल के हुए तो दादा का भी इन्तिक़ाल हो गया, तो आप के चचा 'अबू तालिब' के ज़रिये परवरिश करवाई।

आप (सल्ल०) बेख़बर थे-

दूसरा इनूआ़म यह है कि ऐ मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) आप दीन के बारे में बिल्कुल बेख़बर थे, क्योंकि आप ने ऐसे माहौल में अपने आप को पाया था जहाँ का कोई अ़क़ीदा, कोई रस्म व रिवाज सही न था (परन्तु ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उच्च स्वभाव पर क़ायम थे) अतः बेअ़सत से पहले आप (सल्ल०) का ग़ारे हिरा में एकाग्रता के साथ अल्लाह की अ़िबादत में लीन हो जाना

इस बात का सुबूत है कि आप तौहीद (एकेश्वरवाद) पर क़ायम थे, यानी जितनी इब्राहीम (अ़लै०) के सच्चे दीन की रौशनी आप (सल्ल०) के पास मौजूद थी, आप उस रौशनी में चलते, लेकिन आप पर हिदायत की राह पूरी तरह़ रौशन नहीं थी।

इसलिए आप (सल्ल०) को शरीअ़त की विस्तृत जानकारी उस समय नहीं थी। अतः क़ुर्आन ने स्वयं इसका स्पष्टीकरण किया है कि "तुम नहीं जानते थे कि किताब क्या होती है और ईमान क्या होता है"? **(सूरः अश्शुअ़रा 52)**

इसी ह़ालत को यहाँ..... "ज़ाल्ल" (जो राह से बेख़बर हो) से संज्ञा (Symbolise) दी गई है। दूसरे शब्दों में राह की खोज और ह़क़ की तलाश की ह़ालत थी।

(आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बारे में मालूम है कि न कभी आप ने अल्लाह का इन्कार किया और न बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) अपनाई, न बुराई से आप (सल्ल०) का कोई वास्ता रहा और न दुष्कर्म से और न ही आप (सल्ल०) ने कभी किसी ग़लत चीज़ की तरफ़ दअ़वत दी।)

आप (सल्ल०) नादार थे–

तीसरा इनूआ़म यह है कि ऐ मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) आप बेसरो सामान, फ़क़ीर व ग़रीब थे, हमने आपको ग़नी व मालदार किया वह इस तरह़ से कि ह़ज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के माल में आप (सल्ल०) ने मामला किया और शाम (Syria) के व्यवसायिक सफ़र में ख़ूब फ़ायदा हुआ। ह़ज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने आप (सल्ल०) की दयानतदारी (सत्यनिष्ठा) और अच्छे अख़्लाक़ से प्रभावित होकर आप (सल्ल०) से निकाह़ कर लिया, जिसके बाद आप (सल्ल०) की माली ह़ालत काफ़ी अच्छी हो गई।

यह सब अल्लाह तआ़ला ही की मेहरबानी का नतीजा था कि निर्धनता की दशा सम्पन्नता से बदल गई। जिस मालिक ने आप की तर्बियत इस तरह़ की हो क्या वह आप को छोड़ सकता है? हरग़िज़ नहीं।

इन नेअ़मतों का ज़िक्र करने के बाद आप (सल्ल०) से शुक्र के तौर पर कहा जा रहा है कि आप इन ख़ास तीन कामों के करने का हुक्म दीजिए।

यतीमों पर सख़्ती मत कीजिए–

यतीमों के बारे में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "उनके साथ शफ़्क़त व मुह़ब्बत का मामला कीजिए, यतीम के दिल को रंजीदा मत कीजिए"। आप (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया, 'मुसलमानों के घरों में सबसे बेहतर घर वह है जिसमें कोई यतीम हो और उसके साथ एह़सान व मुह़ब्बत का सुलूक किया जाता हो; और सबसे बुरा घर वह है जिसमें कोई यतीम हो और उसके साथ बुरा सुलूक किया जाता हो"। **(बुख़ारी)**

माँगने वाले को मत झिड़किए–

दूसरा हुक्म यह दिया गया है कि मोह़ताजों के साथ अच्छा व्यवहार कीजिए। अगर किसी माँगने वाले

की मदद न की जा सकती हो तो अच्छे अन्दाज़ से उज्र (असमर्थता) कर दें और उन लोगों का तरीक़ा न अपनाएँ जो माल के घमण्ड में ग़रीबों को घृणा की नज़र से देखते हैं और माँगने वालों को डाँटते और झिड़कते हैं।

आप (सल्ल०) ने माँगने वाले को कभी नहीं डाँटा, बल्कि खाली हाथ लौटाना भी पसंद नहीं फ़रमाया। इसी तरह़ कोई ज्ञान की बात पूछे तो उसे अगर मालूम हो तो ज़रूर बताना चाहिए।

नेअ़मतों का ज़िक्र–

तीसरा हुक्म यह है कि ऐ मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हमने जितनी नेअ़मतों से आप (सल्ल०) को नवाज़ा है आप उनका ज़िक्र लोगों में किया कीजिए क्योंकि यह भी शुक्र अदा करने का तरीक़ा है। इसीलिए ह़दीस में आया है कि यदि तुम पर कोई एह़सान करे तो तुम उसके एह़सान का बदला दो और माल न होने की वजह से बदला न दे सको तो इतना ज़रूर करो कि लोगों में उसकी तअ़रीफ़ करो, तो गोया तुमने उसके एह़सान का शुक्र अदा किया। ऐसे ही दीन की जो दौलत आप (सल्ल०) को दी गई है, उसको लोगों में तक़्सीम कीजिए यानी तब्लीग़ कीजिए।

इसीलिए ह़दीस में है कि जो व्यक्ति लोगों के एह़सान पर उनका शुक्र अदा नहीं करता वह अल्लाह का भी शुक्र नहीं अदा करता। **(मज़हरी)**

(भाग–94)

सूर–ए–इन्शिराह

(सूरः नं. 94)

सूरः इन्शिराह का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का के शुरु ज़माने में नाज़िल हुई। इस में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि जैसे आप पर पहले मेहरबानियाँ होती रहीं, उसी तरह आइन्दा भी होती रहेंगी।

जिस वक़्त आप (सल्ल०) ने इस्लाम का प्रचार (दअ़वत) शुरु किया तो देखते ही देखते वह समाज आपका दुश्मन हो गया, जिसमें आप पहले बड़े इ़ज़्ज़त की नज़र से देखे जाते थे। वही रिश्तेदार, दोस्त, क़बीले व मुहल्ले वाले आपको गालियाँ देने लगे जो पहले आपको हाथों हाथ लेते थे। मक्का में आपकी बात सुनने के लिए कोई तैयार न होता था, रास्ता चलते आप पर आवाज़ें कसी जाने लगीं, क़दम-क़दम पर आपके सामने कठिनाइयाँ ही कठिनाइयाँ थीं। इसी तरह़ आप को तसल्ली देने के लिए पहले सूरः ज़ुहा उतारी गई और फिर यह सूरः उतरी।

इसमें अल्लाह तआ़ला ने सब से पहले आपको बताया कि हमने आपको तीन बहुत बड़ी नेअ़मतें दी हैं, जिनके होते हुए आप मायूस न हों।

पहली नेअ़मत सीना खोल देने की।

दूसरी नेअ़मत आपके ऊपर से हमने वह भारी बोझ उतार दिया जो नुबूवत से पहले आपकी कमर तोड़ रहा था।

तीसरी आप की याद के फैल जाने की नेअ़मत जो कभी किसी को नहीं दी गई।

आगे आप (सल्ल०) को तसल्ली देते हुए कहा गया है कि यह मुसीबतें जिनका सामना आपको करना पड़ रहा है कोई बहुत लम्बा ज़माना नहीं, बल्कि इस तंगी के साथ-साथ सम्पन्नता का युग भी चलता आ रहा है, जैसा कि सूरः ज़ुहा में कहा गया है कि आपके लिए 'हर बाद का युग पहले के युग से बेहतर होगा' और जल्द ही आप का रब आप को वह सब कुछ देगा जिससे आप का दिल ख़ुश हो जाएगा।

आख़िर में कहा गया है कि इन संकटों का सामना करने की ताक़त आपके अन्दर एक ही चीज़ से पैदा होगी और वह यह है कि जब आप को अपने कामों से वक़्त मिले तो अ़िबादत में लग जाएँ और हर तरफ़ से कट कर सिर्फ़ अपने रब से ही लौ लगाएँ।

इस सूरः में बताया गया है कि इन्सान को जो नेअ़मत या समझ मिली है वह सब अल्लाह तआ़ला ही की ओर से है, हर जगह वही सीधा रास्ता सुझाता है और वही मुसीबतों को दूर करता है। इ़ज़्ज़त, शोहरत, सत्ता मिलती है तो उसी की ओर से। हर मुश्किल दो आसानियों के बीच में होती है उस के शुरु में भी आसानी होती है और आख़िर में भी।

आयत नं० 1 से 8 तक

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝ وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۝ الَّذِي أَنقَضَ ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝ فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ إِنَّ مَعَ
الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝ وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَب ۝

अनुवाद-

(1) (ऐ मुहम्मद!) क्या 'हमने' आपके लिए आप का सीना खोल नहीं दिया? (2) और आप से वह भारी बोझ उतार दिया, (3) जो आप की कमर तोड़े डाल रहा था? (4) और आप का ज़िक्र (चर्चा) बुलंद किया, (5) तो बेशक हर मुश्किल के साथ आसानी भी है। (6) बेशक हर मुश्किल के साथ आसानी है। (7) बस जब भी आप फ़ारिग़ (निश्चिंत) हों, तो इबादत में लीन हो जाया करें (8) और अपने रब की ओर लौ लगाया करें।

सूरः इन्शिराह की संक्षिप्त व्याख्या

जैसा कि सूरः ज़ुहा से आख़िर तक की सूरतों में रसूलुल्लाहि (सल्ल०) के ख़ास इनूआमात और आप (सल्ल०) के फ़ज़ायल का और क़ियामत के हालात का ज़िक्र है। सूरः इन्शिराह में उन ख़ास-ख़ास नेअ़मतों का ज़िक्र है, जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अल्लाह तआ़ला ने किया।

1-3 أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝ وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۝ الَّذِي أَنقَضَ ظَهْرَكَ ۝

पहला एहसान-

यह है कि आप (सल्ल०) के सीने को खोल दिया यानी दिल का इत्मिनान और हिम्मत व हौसला दिया, जो ईमान के नतीजे में पैदा हुआ है। जिसके हासिल हो जाने के बाद सत्य मार्ग की मुश्किलों को बर्दाश्त करना और विरोध का मुक़ाबिला करना आसान हो जाता है। जैसा कि सूरः अनूआ़म में कहा गया है कि "जिस व्यक्ति को अल्लाह तआ़ला हिदायत का इरादा करता है उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है"।

यहाँ हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को 'शरह सद्र' (आत्म विश्वास एवं सन्तोष) की नेअ़मत से मालामाल किये जाने का जो ज़िक्र हुआ है उस का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) की तमाम ज़ेहनी उलझन को दूर कर दिया और आप (सल्ल०) को वह मज़बूत इरादा व हौसला और पाकीज़गी दी जो नुबूवत की महान ज़िम्मेदारियों को संभालने के लिए ज़रूरी थी और कुछ हदीसों में तो यह भी है कि फ़रिश्तों ने अल्लाह तआ़ला के हुक्म से आप (सल्ल०) के सीना मुबारक को ज़ाहिरी तौर पर चाक करके साफ़ किया। कुछ मुफ़स्सिरीन ने तो इस आयत से 'शक्के सद्र' का चमत्कार ही मुराद लिया है।
(इब्ने कसीर)

4 وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝

दूसरा एह्सान–

यहाँ फ़रमाया कि आप (सल्ल०) का वह बोझ उतार दिया जिसने आप की कमर तोड़ रखी थी, यानी रिसालत की ज़िम्मेदारी एक भारी भरकम और कमरतोड़ ज़िम्मेदारी थी, जो एक ऐसे माहौल में जहाँ लोग जाहिलियत की ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे और बुतपरस्ती व शिर्क में लतपत थे, उन्हें तौहीद (एकेश्वरवाद) और आख़िरत की ओर बुलाना और यह कहना कि अल्लाह ने मुझे रसूल (सन्देष्टा) बना कर भेजा है, कोई आसान काम न था, बल्कि कठिन से कठिन और जान घुलाने का काम था।

अतः जैसे ही हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने दअ़वत शुरु की, हर तरफ़ से मुख़ालिफ़त का एक तूफ़ान उठ खड़ा हुआ और आप की रिसालत का लोगों ने न केवल इन्कार किया, बल्कि मज़ाक़ भी उड़ाया।

इसी तरह़ यह ज़िम्मेदारी वह कमर तोड़ ज़िम्मेदारी थी, जिसको अदा करने की फ़िक्र में आप (सल्ल०) इस तरह़ डूबे रहते थे कि जैसे-ग़मों का पहाड़ आप पर टूट पड़ा हो, बाद में यह स्थिति नहीं रही क्योंकि 'शरह़ सद्र' ने ज़बरदस्त शक्ति एवं ढ़ारस का सामान किया।

कुछ मुफ़स्सिरीन का कहना है कि इससे वह जायज़ काम मुराद हैं, जो कभी-कभी मसलह़त व ह़िक्मत की वजह से आप (सल्ल०) से हो जाते थे और बाद में वह मस्लह़त या प्राथ्मिकता के ख़िलाफ़ मालूम होते तो आप (सल्ल०) बहुत रंजीदा होते, जैसे-कोई गुनाह से घबराता और परेशान होता है।

इस सूरः में आप (सल्ल०) को ख़ुशख़बरी दी गई है कि इन कामों पर आप (सल्ल०) से कोई पूछताछ नहीं होगी।

तीसरा एह्सान–

यह सबसे बड़ा एह़सान था जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को दुनिया में दिया गया।

'रफ़अ़ ज़िक्र' (ज़िक्र को बुलन्द किया) यानी आप (सल्ल०) का नाम अत्यन्त अदब और आदर से लिया जाएगा। आप (सल्ल०) की रिसालत की चर्चा आम होगी और आप (सल्ल०) के रिसालत की गवाही दिये बिना कोई व्यक्ति भी इस्लाम में दाख़िल नहीं हो सकता।

अज़ान में आप (सल्ल०) का नाम हमेशा गूँजता रहेगा, कोई नमाज़ आप के अच्छे ज़िक्र से खाली न होगी, कोई आप को यतीमों का रक्षक कहेगा तो कोई गुलामों का मौला, तो कोई अख़्लाक़ सिखाने वाले और नफ़्स को पाक करने वाले की हैसियत से जानेगा, तो कोई इतिह़ास रचने वाले क्रान्तिकारी व्यक्तित्व से, कहीं विश्वनायक के उपनाम से पुकारे जाएँगे तो कहीं "रह़मतुल्लिल्आ़लमीन" के उपनाम से आप की शान में नअ़त पढ़कर लोग गर्व मह़सूस करेंगे।

ईमान वालों को आप (सल्ल०) से गहरी अ़क़ीदत (श्रद्धा) होगी और रात दिन आप (सल्ल०) की सेवा में दुरुद व सलाम का तोह़फ़ा पेश करते रहेंगे "सल्लल्लाहु अ़लैहि़ वसल्लम"।

आप (सल्ल०) को यहाँ इत्मिनान दिलाया गया है कि आप (सल्ल०) के मुख़ालिफ़ आप को चाहे जितना झुठलाएँ वह आप का कुछ न बिगाड़ पाएँगे। आपकी शान तो बहुत ही बुलन्द है।

5-6 فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝

हर मुश्किल के साथ आसानी है-

अल्लाह तआ़ला हर तक्लीफ़ के बाद राह़त और मुश्किलों के बाद आसानी की राह खोलता है। इस ह़क़ीक़त को पेश करके ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को इत्मिनान दिलाया गया है कि मुश्किल आगे भी आ सकती है, लेकिन आप परेशान न हों क्योंकि हर मुश्किल आसानी की भूमिका (Back Ground) है और कठिनाई आराम की ज़मानत है।

इससे मालूम हुआ कि आदमी सच्चे रास्ते की पेश आने वाली मुश्किलों से परेशान और दुखी न हो, बल्कि इत्मिनान रखे कि मुश्किलों के बाद आसानियों का दौर भी आने वाला है और आसानियों का दौर इतना क़रीब है कि गोया साथ ही चला आ रहा है यानी मरते ही जन्नत।

आज भी अल्लाह का यही क़ानून है कि जो ह़क़ के लिए मुश्किलों और तक्लीफ़ों पर सब्र करता है और सच्चे दिल से अल्लाह पर भरोसा करता है, तो अल्लाह तआ़ला उसकी मुश्किलों को ज़रूर दूर कर देते हैं।

7-8 فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝ وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝

फ़रग़ब– 'फ़ारिग़' होना अर्थात हर तरह़ की व्यवस्था से छुट्टी पाना, लेकिन यहाँ ख़ासतौर से इशारा दअ़वती सरगर्मियों से छुट्टी पाने की तरफ़ है, क्योंकि इससे पहले की सूरः की आख़िरी आयत में तब्लीग़ व दअ़वती ज़िम्मेदारियों के बारे में फ़रमाया गया था कि जब तुम फ़ारिग़ (कार्यमुक्त) हो जाओ तो अ़िबादत में लीन हो जाया करो यानी नमाज़, ज़िक्र, दुआ़ व इस्तिगफ़ार कि इस से इन्सान कभी फ़ारिग़ नहीं हो सकता। यद्यपि शरीअ़त के सभी आदेश अपनी जगह महत्व रखते हैं, लेकिन जो चीज़ तमाम आदेशों में फ़ज़ीलत रखती है वह अ़िबादत ही है यानी अपने रब की ओर ध्यान रखा करें, उसे ज़्यादा से ज़्यादा याद करें, उसकी तस्बीह़ (पाकी बयान) व ह़म्द (गुणगान) बयान करें, उसके कलाम की तिलावत करें उससे माफ़ी (इस्तिग़फ़ार) माँगा करें और उससे दुआ़एँ माँगा करें।

यहाँ ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को ज़ाहिरी तौर से सम्बोधित किया गया है, लेकिन यह हिदायत सब के लिए आ़म है।

(भाग–95)

सूर–ए–तीन

(सूरः नं. 95)

सूरः तीन का संक्षिप्त परिचय

इस सूरः के बारे में हज़रत 'क़तादा' (रज़ि०) कहते हैं कि यह सूरः मदनी है। 'हज़रत इब्ने अ़ब्बास' (रज़ि०) से दो क़ौल का ज़िक्र मिलता है, एक मक्की और दूसरा मदनी होने का, लेकिन अक्सर उ़लमा इसे मक्की मानते हैं और इसके मक्की होने की निशानी यह है कि इस में शहर मक्का के लिए 'हाज़ल बलदिल् अमीन' (यह शांतिमय नगर) के शब्द इस्तेमाल हुए हैं।

इस सूरः में बताया गया है कि हमने इन्सान को हर तरह़ का जीवन साधन दिया, इस की बनावट ऐसी बनाई जो हर तरह़ से ठीक-ठाक है, हमारे रसूल और हमारी किताबें सब इसी की गवाही देती हैं। इसमें हर तरह़ की अच्छी बुरी चीज़ें आ गईं।

इसे अगर इस की बुरी क़ुव्वतों ने दबा लिया तो यह सबसे नीचे चला जाएगा और अगर इसने अच्छी बातें अपनाई तो इसे इस का अच्छा बदला मिलेगा, जो कभी न ख़त्म होगा।

जब आदमी को इस इम्तिहान में फंसा दिया गया तो अब कौन है जो क़ियामत के दिन को और बदला मिलने को झूठा समझेगा? अल्लाह तआ़ला तमाम ह़ाकिमों से बढ़कर ह़ाकिम है, फिर जो सबसे बड़ा ह़ाकिम है वह इन्साफ़ क्यों नहीं करेगा।

आयत नं० 1 से 8 तक

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۝ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ۝ وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝ ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۝ اِلَّا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝

अनुवाद-

(1) इन्जीर और ज़ैतून की क़सम, (2) और तूरे सीनीन की, (3) और इस अमन वाले शहर (मक्का) की, (4) बेशक 'हमने' इन्सान को बहुत ही ख़ूबसूरत (साँचे में ढ़ाल कर) बनाया। (5) फिर उसे (दोज़ख़ में) नीचों से भी नीचे कर दिया; (6) मगर जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे, उनके लिए कभी न ख़त्म होने वाला बदला है। (7) फिर तुझको क्या हो गया है, (ऐ आदम की औलाद!) जो तू बदले के दिन को झुठलाता है? (8) क्या अल्लाह सब ह़ाकिमों से बड़ा ह़ाकिम नहीं?

सूरः तीन की संक्षिप्त व्याख्या

1-8 وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۝ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ۝ وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝
ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝ فَمَا يُكَذِّبُكَ
بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने चार चीज़ों की क़सम खाई है:-

1- इंजीर के पेड़ की 2- ज़ैतून के पेड़ की 3- कोहेतूर की 4- मक्का शहर की

इंजीर और ज़ैतून-

इंजीर और ज़ैतून की क़सम खाने की वजह यह हो सकती है कि यह दोनों इन्सान के शरीरों के लिए फ़ायदेमन्द हैं और यह भी वजह हो सकती है कि यहाँ 'तीन' और ज़ैतून के ज़िक्र से मुराद वह जगह हो, जहाँ यह पेड़ बड़ी मात्रा में पाये जाते हों। वह मुल्क शाम है जहाँ बहुत से नबी आए यहाँ तक कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) भी इसी मुल्क में रहते थे, जो हिज्रत करके मक्का आए। इस तरह़ इन क़समों से वह तमाम जगह आ गईं जहाँ ख़ास-ख़ास अम्बिया आए।

शिक्षा-

ह़ज़रत ईसा, ह़ज़रत मूसा और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अपने मानने वालों को तौहीद की जो तअ़लीम दी, इंजीर और ज़ैतून की सरज़मीन (बैतुलूमक़दिस) गवाह है कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) ने अल्लाह की अदालत को उजागर किया और ज़ैतून के पहाड़ पर अपने चेलों (मुरीदों) को यही शिक्षा दी थी कि तुम्हारी कोशिशों का उद्‌देश्य आख़िरत का हुसूल है।

इन्सान की ख़ूबसूरती-

अल्लाह तआ़ला ने तमाम मख़्लूक़ को इस तरह़ पैदा किया है कि उसका मुँह नीचे को झुका हुआ है, सिर्फ़ इन्सानों को सीधा बनाया जो अपने हाथों से खाता पीता है, फिर इसकी साख़्त (बनावट) को बड़े अच्छे ढंग से बनाया कि उन में जानवरों की तरह़ बेढ़ंगापन नहीं है। हर अहम अंग दो-दो बनाए उनमें उचित दूरी रखी, फिर इस में बुद्धि एवं विवेक की कुव्वत रखी।

ह़क़ीक़त में यह इन्सान अल्लाह के क़ुद्रत की निशानी है। इन्सान की पैदाइश में उन तमाम चीज़ों का एहतिमाम है 'अह़सने तक़्वीम' है, जिस का ज़िक्र अल्लाह तआ़ला ने तीन तरह़ क़समों के बाद फ़रमाया। (फ़त्हुल् क़दीर)

इन्सान के अन्दर भलाई और बुराई पाई जाती है, लेकिन जहाँ तक इसकी ह़क़ीक़त का सम्बन्ध है वह भलाई को ही पसन्द करने वाला है।

इन्सान की ह़ालत-

'ह़ज़रत ज़िहाक' व 'इब्ने जरीर' आदि ने इस आयत से मुराद बुढ़ापे की ह़ालत ली है कि अल्लाह तआ़ला पहले हुस्न व जमाल और जवानी अ़ता करता है, फिर इस को उसी तरह़ छीन लेता है जैसे तर व ताज़ा फल में से रस निचोड़ लिया जाए।

दूसरा मतलब यह हो सकता है कि इन्सान अपनी सलाह़ियतों का आदर न करें और गिरावट की अन्तिम सीमा तक पहुँच जाए कि वह जहन्नम की गहराइयों में जा गिरे यानी अ़िबादत के पाक जज़्बे की यह तौह़ीन कि इन्सान ईंट पत्थर को मअ़बूद बना ले यहाँ तक कि लिंग को पूजने लगे, इन्सानों के ख़ून का यह अपमान कि जानवरों की क़ीमत और सम्मान इन्सानी जानों से भी ज़्यादह हो जाए।

महिलाओं पर यह अत्याचार कि पुरुष उनको अपनी ह़वस का निशाना बना लें, अपने स्वार्थ की यह सीमा कि ग़रीबों का ख़ून चूसने लगें, इन्सानों का इतना अनादर कि उनको तक्लीफ़ देने के दर्दनाक तरीक़े प्रयोग में लाए जाने लगें और मानव समाज का यह अपमान कि उसके साथ ऐसी दुश्मनी कि साइंस और टेक्नालोजी को उसकी तबाही के लिए इस्तेमाल किया जाए और गिरावट की अन्तिम सीमा तक पहुँच जाए।

जिसने अपनी क़दर की यानी अपने को ईमान और नेक अ़मल से संवारा वह पस्ती में गिरने से बच गया और आख़िरत की मन्ज़िल को सामने रखते हुए बुलंदियों पर चढ़ गया, इसलिए वह आख़िरत में कभी न ख़त्म होने वाले इन्आ़म से पुरस्कृत किया जाएगा।

इन स्पष्ट और सुदृढ़ तर्क के सामने आ जाने के बाद क़ियामत और कर्मों के फल के बारे में पैग़म्बर को झुठलाने का क्या मतलब है? अतः जो लोग इसके बावजूद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को झुठलाने में लगे हुए हैं, वही असत्य हैं।

अल्लाह का सब ह़ाकिमों से बढ़कर ह़ाकिम होना एक अखण्डनीय वास्तविकता है क्योंकि आसमान, ज़मीन, इन्सान, फ़रिश्ते और जिन्न सब पर उसी की हुकूमत है। फिर क्या तुम उससे यह उम्मीद रखते

हो कि वह अच्छे और बुरे इन्सानों में फ़र्क़ न करेगा? और क्या वह मुजरिमों को सज़ा और नेकी करने वालों को इनूआ़म न देगा?

जब तुम दुनिया के हाकिमों से इन्साफ़ की उम्मीद रखते हो तो अल्लाह तआ़ला के बारे में जो सब शासकों का शासक है, यह सोचना कैसे सम्भव है कि वह कभी न्याय करने वाला नहीं और न इनूआ़म, हरगिज़ नहीं बल्कि अच्छे लोगों को जन्नत और बुरे लोगों को जहन्नम देगा।

"अल्लाह जो किसी पर ज़ुल्म नहीं करता और उसके न्याय का ही यह तक़ाज़ा है कि वह क़ियामत लाए और उन से पूछताछ करे, जिन पर इस दुनिया में ज़ुल्म हुआ"। **(तिर्मिज़ी)**

(भाग–96)

सूर–ए–अ़लक़

(सूरः नं. 96)

सूरः अ़लक़ का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का में नाज़िल हुई। इसकी आयत नं० (2) में इन्सान को 'अलूक़ा' (ख़ून की फुट्की) से पैदा किये जाने का ज़िक्र हुआ है, इसलिए इस सूरः का नाम 'अलू-अ़लक़' है और दूसरा नाम 'इक़रअ़' (पढ़) भी है, इसलिए कि सूरः की शुरुआ़त इसी शब्द से हुई है।

पहली वह्य जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर नाज़िल हुई वह इस सूरः की पाँच आयतें थीं, शेष आयतें बाद में उस समय नाज़िल हुईं जबकि अबू जेहल ने नबी (सल्ल०) को मस्जिदे ह़राम में नमाज़ पढ़ने से रोकने की कोशिश की और आप (सल्ल०) की खुली मुख़ालिफ़त पर उतर आया।

आप (सल्ल०) बहुत दिन तक ग़ारे ह़िरा में अल्लाह तआ़ला से लौ लगाए बैठे थे कि अचानक एक दिन ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) वह्य लेकर आए और आप (सल्ल०) से कहा 'इक़रअ़' पढ़िए, आप (सल्ल०) ने कहा, "मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ"।

ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने आप (सल्ल०) को ज़ोर से दबाया और फिर वही कहा, आप (सल्ल०) ने फिर वही जवाब दिया। तीसरी बार ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने ज़ोर से दबा कर कहा, "इक़रा बिस्मिरब्बिक" पढ़िये, 'अपने पालनहार के नाम से'।

आप का पालनहार वह है जिसने सब कुछ पैदा किया और इन्सान को एक ख़ून के लोथड़े से बनाया। अब आप (सल्ल०) अपने पालनहार का नाम लेकर पढ़िए वह बड़ा करीम है, उसी ने इन्सान को सब कुछ क़लम के ज़रिये से सिखाया और जो वह न जानता था उसे बताया यहाँ तक कि पहली वह्य नाज़िल हुई।

इसके बाद जब मक्का वालों ने आप (सल्ल०) की बात न सुनी, सताने पर तुल गए, अबू जेहल ने आप (सल्ल०) को नमाज़ पढ़ने में सताया और घमण्डियों की सी बातें कीं तो आगे की आयतें नाज़िल हुईं।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इन्सान बेख़बर होकर सरकशी पर कमर बाँधता है, इसको जानना चाहिए कि वह फिर दोबारा अपने पालहार ही की ओर लौट कर जाएगा जो उस से पूछेगा कि बता सरकशी किस घमण्ड पर की थी, आगे अबू जेहल की हठधर्मी का बयान है जिसे सख़्ती से धमकाया गया है।

आख़िर में ईमान वालों को हिदायत दी गई है कि इन सरकशों की बात न मानें और अल्लाह की बन्दग़ी में लगे रहें।

आयत नं० 1 से 19 तक

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۝ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝ كَلَّآ اِنَّ
الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ۝ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۝ اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ۝ اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى ۝ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ۝ اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ۝ اَوْ اَمَرَ
بِالتَّقْوٰى ۝ اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝ اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ۝ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ەۙ لَنَسْفَعًاۢ بِالنَّاصِيَةِ ۝ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝ فَلْيَدْعُ
نَادِيَهٗ ۝ سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۝ كَلَّا ۗ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۝

अनुवाद-

(1) अपने रब का नाम लेकर पढ़िए, 'जिसने' पैदा किया। (2) 'उसने' इन्सान को खून के लोथड़े से पैदा किया। (3) पढ़िए और (याद रखिये कि) आपका रब बड़ा करीम है, (4) 'जिसने' क़लम के ज़रिये इल्म सिखाया, (5) और इन्सान को वह इल्म सिखाया, जिसे वह न जानता था। (6) मगर इन्सान शरारत पर उतर आता है। (7) (इस आधार पर) कि वह अपने आप को बेनियाज़ समझता है, (8) बेशक (सबको) आपके रब ही की ओर लौट कर जाना है। (9) आपने उस व्यक्ति को देखा, जो रोकता है, (10) एक बन्दे को जबकि वह नमाज़ पढ़ता है? (11) भला देखो तो अगर वह हिदायत (सीधी राह) पर हों, (12) या परहेज़गारी का हुक्म देता हो। (13) भला देखो तो अगर उसने (दीन को) झुठलाया और उससे मुँह मोड़ा, (14) क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह देख रहा है? (15) खबरदार, अगर वह बाज़ न आएगा तो हम उसकी पेशानी (माथे) के बाल पकड़ कर घसीटेंगे, (16) (उस) पेशानी को जो झूठा और खताकार है। (17) तो वह बुला ले अपने हिमायतियों की टोली को! (18) हम भी बुलाएँगे, अज़ाब के अपने फ़रिश्तों को। (19) खबरदार, आप उसका कहना न मानिए और सज्दे करते रहिए और कुर्ब (निकटता) ह़ासिल करते रहिए।

सूरः अ़लक़ की संक्षिप्त व्याख्या

सबसे पहली वह़्य-

तमाम टीकाकारों का इत्तिफ़ाक़ है कि वह़्य (ईशवाणी) की शुरुआत "सूरः अ़लक़" यानी 'इक़्रअ' से हुई और इस सूरः के शुरु की पाँच आयतें "मालम यअ़लम" तक सबसे पहले नाज़िल हुईं। उस के बाद सूरः मुद्दस्सिर, फिर उसके बाद सूरः फ़ातिह़ा मुकम्मल सूरः नाज़िल हुई।

इस तरह़ सूरः के एतिबार से सूरः फ़ातिह़ा मुकम्मल पहली सूरः है और आयत के एतिबार से सूरः अ़लक़ पहली आयत है।

सह़ीह़ैन (बुख़ारी व मुस्लिम) की एक ह़दीस में नुबूव्वत और वह़्य की शुरुआ़त का क़िस्सा इस तरह़ है कि उम्मुल् मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया, "सबसे पहले ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर वह़्य का सिल्सिला "रुयाये सालिह़ा" यानी सच्चे ख़्वाबों से शुरु हुआ, वह इस तरह़ कि जो कुछ आप सपनों में देखते बिल्कुल उसी तरह़ बाद में पेश आता"।

इसके बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को अकेले में अ़िबादत करने का जज़्बा पैदा हुआ, जिस के लिए आप (सल्ल०) ने ग़ारे ह़िरा को चुना (यह गुफ़ा मक्का से तीन मील की दूरी पर जन्नतुल् बक़ी के आगे एक पहाड़ में है, जिसे जबलेनूर कहा जाता है।)

ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं,"आप (सल्ल०) इस गुफ़ा में जाकर रातों को ठहरते, अ़िबादत करते और कई-कई दिन के खाने का सामान साथ ले जाते"।

ग़ारे ह़िरा में आप (सल्ल०) कितने दिनों तक वह़्य से पहले बैठ चुके थे, इसमें टीकाकारों का मतभेद है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि आप (सल्ल०) एक माह यानी रमज़ान का पूरा महीना ठहरे।

(इब्ने इस्ह़ाक़-सीरत)

ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं, वह़्य आने की सूरत यह हुई कि फ़रिश्ता यानी जिब्रईल (अ़लै०) ग़ारे ह़िरा में आप के पास आए और आप से कहा, "इक़्रा यानी पढ़िए," आप (सल्ल०) ने फ़रमाया "मा अना बिक़ारी" यानी मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ (क्योंकि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उम्मी (Unlettered) थे यानी आप किसी स्कूल में लिखना-पढ़ना नहीं सीखा था।)

ह़ज़रत सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं, "आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, मेरे इस जवाब पर जिब्रईल (अ़लै०) ने मुझे ख़ूब ज़ोर से दबाया जिसकी तक्लीफ़ सीने में मुझे मह़सूस होने लगी, उसके बाद मुझे छोड़ दिया और फिर वही बात कही इक़्रा, मैंने फिर वही जवाब दिया कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ, तो फिर ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने दोबारा सीने में लेकर इतनी ज़ोर से दबाया की उसकी तक्लीफ़ मह़सूस होने लगी फिर छोड़ दिया और तीसरी बार फिर कहा "इक़्रा" मैंने फिर वही जवाब दिया "मा अना बिक़ारी" तो तीसरी बार फिर गले से लगाया और छोड़ कर कहाः-

1-5 اقرا باسم ربك الذي خلق ۚ خلق الانسان من علق ۚ اقرا وربك الاكرم ۙ الذي علم بالقلم ۙ
علم الانسان ما لم يعلم ۗ

क़ुर्आन की सबसे पहली पाँच आयतें लेकर आप (सल्ल०) घर वापस आए और ह़ज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से (जो आप की बीवी थीं) कहा "ज़म्मिलूनी ज़म्मिलूनी" मुझे उढ़ाओ, मुझे उढ़ाओ, तो ह़ज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने आप (सल्ल०) पर कपड़ा (चादर) डाला। फिर थोड़ी देर बाद आप (सल्ल०) ने ह़ज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को 'ग़ारे ह़िरा' का पूरा क़िस्सा सुनाया और फ़रमायाः-

"आज मुझ पर एक अ़जीब ह़ालत हुई" तो ह़ज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला आप (सल्ल०) को हरगिज़ नाकाम न होने देगा, क्योंकि आप रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं, बोझ से दबे हुए लोगों का बोझ उठाते हैं, बेरोज़गार को रोज़ी से लगाते हैं, मेह़मानों की मेहमानदारी करते हैं और ग़रीबों की मदद करते हैं"। (इस तरह़ उन्होंने तसल्ली दी।)

इसके बाद ह़ज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा आप (सल्ल०) को अपने चचाज़ाद भाई वरक़ा बिन नौफ़ल के पास ले गईं, पढ़े लिखे आदमी थे, 'अ़िब्रानी भाषा भी जानते थे और अ़रबी तो उनकी भाषा

ही थी। वह अ़िब्रानी भाषा से इञ्जील को अ़रबी ज़बान में लिखते थे, जो उस वक़्त बहुत बूढ़े थे, बुढ़ापे की वजह से आँख की रौशनी चली गई थी।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने उन से कहा, ऐ मेरे चचा ज़ाद भाई! अपने भतीजे की बात सुनिए तो वरक़ा बिन नौफ़ल ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पूरा क़िस्सा सुना। वरक़ा बिन नौफ़ल ने सुनते ही कहा कि यह वही फ़रिश्ता है, जिस को अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा (अ़लै०) पर उतारा था। काश! मैं आप (सल्ल०) की नूबूव्वत के ज़माने में मौजूद होता और काश! कि उस वक़्त ज़िन्दा होता, जबकि आपकी क़ौम आपको आप के वतन से निकालेगी।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने तअ़ज्जुब से पूछा, क्या मेरी क़ौम मुझे निकाल देगी? 'वरक़ा' ने कहा हाँ, बेशक निकाल देगी क्योंकि जब भी कोई आदमी दीने हक़ लेकर आया है, जो आप (सल्ल०) लाए हैं तो उनकी क़ौम ने उनको सताया और यदि मैंने वह ज़माना पाया तो मैं आपकी पूरी मदद करूँगा। लेकिन वरक़ा इसके थोड़े ही दिन के बाद इन्तिक़ाल कर गए और इसी वह्य के बाद लगभग तीन साल तक वह्य का सिल्सिला बन्द रहा। **(मज़हरी)**

अपने रब का नाम लेकर क़ुर्आन पढ़ो। इस में 'ब' इस ओर संकेत करता है कि क़ुर्आन पढ़ते वक़्त अपने रब से सहायता माँगी जाए। इस का तरीक़ा यह है "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" पढ़ा जाए इसीलिए सूरः फ़ातिहा जो क़ुर्आन का मुक़द्दिमा (प्रस्तावना अथवा भूमिका) है और दूसरी तमाम सूरतों की शुरुआ़त सिवाय सूरः 'तौबः' के बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम (अल्लाह रह़मान और रह़ीम के नाम) से ही होती है।

आगे की आयतों में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, "ऐ इन्सान! हमने तुझ को जमे हुए ख़ून से पैदा फ़रमाया" यानी शुक्राणु (sperm) के मिलाप (Fertilize) होने के बाद की वह स्थिति है जबकि इन्सान अपनी पैदाइश के शुरुआ़ती दौर में होता है। उसके बाद सबसे आ़ला बन जाता है, फिर उस मालिक ने इस को वह चीज़ें सिखाईं जिस को वह नहीं जानता था।

अल्लाह तआ़ला की सिफ़त 'अक्रम' बताई गई है यानी वह बड़े सम्मान वाली और बुलन्द हस्ती है और वह बन्दों के हक़ में अत्यन्त परोपकारी है, इसलिए वही सम्मान का अधिकारी है। इन्सान की रचना तो अत्यन्त तुच्छ तत्वों से हुई है इसलिए उसे घमण्ड नहीं करना चाहिए। दूसरे अल्लाह का कितना बड़ा एहसान है कि उस मालिक ने सर्वश्रेष्ठ सृष्टि बनाकर इसकी हिदायत का सामान किया।

इसी तरह इन्सानों की पैदाइश के बाद शिक्षा का ज़िक्र किया है, क्योंकि अच्छी शिक्षा ही से हक़ीक़त में इन्सान-इन्सान बनता है।

क़लम और किताब-

हज़रत 'मुजाहिद' ने हज़रत 'अबू अम्र' से नक़्ल किया है कि अल्लाह तआ़ला ने चार चीज़ों को अपने से स्वयं (खुद) बनाया है और उसके सिवा बाक़ी मख़्लूक़ (सृष्टि) के लिए हुक्म दिया। 'कुन' यानी

हो जा वह बन गई। वह चार चीज़ें यह हैः-

(1) कलम

(2) अ़र्श

(3) जन्नत

(4) आदम (अ़लै०)

क़लम की विशेषताएँ-

'ह़ज़रत क़तादा' (रज़ि०) ने फ़रमाया कि 'क़लम' अल्लाह तआ़ला की बहुत बड़ी नेअ़मत है, यदि यह न होता तो न कोई धर्म होता, न दुनिया के कारोबार ठीक ढंग से होते।

ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ने फ़रमाया यह अल्लाह का बहुत बड़ा इन्आ़म है कि उसने अपने बन्दों को उन चीज़ों का इ़ल्म दिया जिन को वह नहीं जानते थे और उनको जाहिलियत की अंधेरी से इ़ल्म के नूर की तरफ़ निकाला और लिखने के इ़ल्म की दअ़वत दी, क्योंकि इसमें बहुत से फ़ायदे हैं।

'उम्मी' रखने की वजह-

यहाँ इस का भी ज़िक्र है कि अस्ल तअ़लीम देने वाला अल्लाह है और उसके लिए क़लम के सिवा भी बहुत से तरीक़े हो सकते हैं। इसलिए अल्लाह ने फ़रमाया, इन्सान को वह इ़ल्म दिया जिस से वह पहले नावाफ़िक़ था, अतः इन्सान के अन्दर सबसे पहले अ़क़्ल पैदा की जो इ़ल्म का सबसे अहम ज़रिया है।

इन्सान अपनी अ़क़्ल से ख़ुद बिना किसी तअ़लीम के बहुत सी चीज़ें समझता है, जिन का उस से बराबर वास्ता पड़ता रहता है। इसी तरह़ अपने पैदा करने वाले मालिक की पैदा की हुई तमाम चीज़ों को भी देखकर पहचानना चाहिए।

एक छोटा सा बच्चा माँ के पेट से पैदा होने के साथ ही अपनी माँ की छातियों को पहचान लेता है, फिर दूध उतारने के लिए मुँह को दबाना उसे किसने सिखाया और कौन सिखा सकता है।

इन्सान को एक हुनर रोने का अल्लाह तआ़ला ने पैदाइश से ही सिखा दिया, यह रोना उस की तमाम ज़रुरतों को पूरा करने का ज़रिया बनता है। उस को रोता हुआ देखकर माँ बाप इस फ़िक्र में पड़ जाते हैं कि इसको क्या तक्लीफ़ है? इस की भूख,प्यास, सर्दी, गर्मी की सारी ज़रुरतें उसी रोने से ही पूरी होती हैं। यह रोने की तअ़लीम इस बच्चे को कौन सिखा सकता था और किस तरह़ सिखाता, इसी तरह़ का मिलता जुलता इ़ल्म अल्लाह हर जानदार को सिखाता है। मालूम हुआ कि इन्सान को जो इ़ल्म व हुनर मिला है वह उसका ज़ाती नहीं है, बल्कि सब पैदा करने वाले मालिक का दिया हुआ है। **(मज़हरी)**

इक़्रअ़ की पाँच आयतें सबसे पहले नाज़िल हुई, उसके बहुत दिन बाद बाक़ी आयतें अबू जेहल की एक घटना पर नाज़िल हुई।

6-13 كَلَّآ إِنَّ الْإِنسَانَ لَيَطْغَىٰٓ ۝ أَن رَّآهُ اسْتَغْنَىٰ ۝ إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ ۝ أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ۝ عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ۝
أَرَأَيْتَ إِن كَانَ عَلَى الْهُدَىٰٓ ۝ أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ۝ أَرَأَيْتَ إِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝

शाने नुज़ूल (अवतरण काल)

एक बार अबू जेहल ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो कहने लगा कि मैं आप को इससे कई बार मना कर चुका हूँ लेकिन आप नहीं मानते। आप (सल्ल०) ने उसको झिड़क दिया तो कहने लगा, ऐ मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) याद रख मक्का में सबसे ज़्यादह लोग मेरे साथ हैं और यह भी कहा कि अगर अब नमाज़ पढ़ते देखूँगा तो (नऊज़ूबिल्लाह) आप (सल्ल०) की गर्दन पर पैर रख दूँगा।

अतः एक बार इस इरादे से चला भी, लेकिन क़रीब आकर रुक गया और पीछे हटने लगा, लोगों ने वजह पूछी तो कहने लगा कि मुझे एक आग की ख़न्दक़ बीच में रुकावट मालूम हुई और उसमें भयानक चीज़ें थीं। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "वह फ़रिश्ते थे, यदि वह बद्‌बख़्त आगे आता तो फ़रिश्ते उसकी बोटी-बोटी कर देते"।

इस पर अल्लाह तआ़ला ने इन आयतों को नाज़िल फ़रमाया, "दुनिया के काफ़िर ख़ासतौर से अबू जेहल अपनी ताक़त के घमण्ड में आकर इन्सानियत ही को भूल गया और ह़द यह है कि अपने आप को ख़ुदा का मुह़ताज भी समझता था। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, "जब कल मर कर मेरे पास आएगा तब उसे ह़क़ीक़त का पता चलेगा"।

यह आयतें 'अबू जेहल' के बारे में ख़ासतौर से हैं, लेकिन इसमें तमाम इन्सानों की एक कमज़ोरी बयान की गई है वह यह कि इन्सान जब तक दूसरों का मुह़ताज रहता है तो सीधा चलता है और जब उस को यह मह़सूस होने लगता है कि मैं किसी का मोह़ताज नहीं तो फिर अपनी औलाद और माल पर घमण्ड करने लगता है और उस के दिल में दूसरों पर ज़ुल्म का रुझान पैदा होने लगता है। जैसा कि मालदारों, हुकूमत वालों और औलाद या साथी व सेवकों के रखने वालों में मर्ज़ पैदा हो जाता है।

ऐसे लोग अपने जत्थे की ताक़त में मस्त हो कर किसी को नज़र में नहीं लाते, चूंकि अबू जेहल का भी यही ह़ाल था कि वह मक्का के ख़ुशह़ाल लोगों में से था और उसके क़बीले के लोग बल्कि पूरे शहर के लोग उसकी इ़ज़्ज़त करते और बात मानते थे। इस घमण्ड में आकर उसने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की भी मुख़ालिफ़त करनी शुरु कर दी थी। अगली आयतों में ऐसे शरीरों के बुरे अन्जाम का ज़िक्र किया गया है।

14-17 أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ۝ كَلَّا لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۝ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝ فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۝

मरने के बाद सबको अल्लाह के पास जाना है और वहाँ अच्छे बुरे आ़माल का ह़िसाब देना है, उस समय इस दुनिया में की हुई शरारतों के बुरे अन्जाम को अपनी आँखों से देख लेगा और यह भी हो सकता है कि यह इन्सान, जो अपने आपको सबसे बेनियाज़ समझता है, अगर ध्यान दे तो अपनी हर ह़ालत बल्कि हर ह़रकत में अपने आपको पालनहार (रब) का मोह़ताज ही पाएगा। अगर उसने किसी इन्सान का मोह़ताज नहीं बनाया तो कम से कम इसको देखना चाहिए कि अल्लाह तआ़ला का हर चीज़

में यह मोह़ताज है और इन्सानों की मोह़ताजी से अलग समझना भी एक धोखा है, इसलिए कि इन्सान अकेला अपनी ज़रुरतें पूरी नहीं कर सकता।

अपने केवल खाने की चीज़ों पर ही ध्यान दे कि हज़ारों इन्सानों को अपनी ख़िद्मत में लगा लेना किसी के बस की बात नहीं, यही ह़ाल उसके कपड़े और दूसरी ज़रुरतों का है कि उनको पूरा करने में हज़ारों लाखों इन्सानों और जानवरों की मेह़नत का दख़ल होता है, जो इस के गुलाम या दास नहीं। अगर यह इन सबको वेतन (तन्ख़्वाह) दे कर भी चाहता कि अपने इस काम को पूरा करवा ले तो हरगिज़ इस के बस में न था।

इन बातों पर ग़ौर करने से यह राज़ खुलता है कि इसकी तमाम ज़रुरतों के इकट्ठा करने का तरीक़ा ख़ुद इसका बनाया हुआ नहीं बल्कि अल्लाह ने अपनी ह़िक्मत से बनाया और चलाया है। किसी के दिल में डाल दिया कि ज़मीन में खेती का काम करें, किसी के दिल में डाल दिया कि वह लकड़ी बनाने का काम करे, किसी के दिल में लोहार के काम की, किसी को मेह़नत मज़दूरी की, किसी को तिजारत की, कि ज़रुरतों के बाज़ार लगा दिये। न कोई हुकूमत इस तरह़ कर सकती थी न कोई व्यक्ति, इसलिए इस का ह़क़ीक़ी नतीजा यह निकला कि तमाम चीज़ें अल्लाह ही की क़ुद्रत से हो रही हैं।

18-19 سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿١٨﴾ كَلَّا ۖ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ﴿١٩﴾

इस आयत तक उस घटना की ओर इशारा है कि जब अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया और आप (सल्ल०) ने नमाज़ पढ़ना शुरु किया तो अबू जेहल ने आप (सल्ल०) को नमाज़ पढ़ने से रोका और धमकी दी कि भविष्य में अगर नमाज़ पढ़ेंगे या सज्दः करेंगे तो वह मआ़ज़ अल्लाह आप (सल्ल०) की गर्दन को पैर से कुचल देगा, उसके जवाब में यह आयत नाज़िल हुई।

क्या वह (अबू जेहल) यह नहीं जानता कि अल्लाह तआ़ला देख रहा है? यानी ज़ालिम व मज़लूम, को देख रहा है, फिर वह ज़ालिम को सज़ा क्यों नहीं देगा और मज़लूम की फ़रियाद कैसे नहीं सुनेगा यानी इन्साफ़ का एक दिन होगा, जबकि फ़रिश्ते उसके मस्तक (पेशानी) के बाल पकड़ कर घसीटेंगे और उसे जहन्नम में झोंक देंगे।

इस आयत में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को मुख़ातब करते हुए कहा गया है कि आप (सल्ल०) अबू जेहल की बातों में कान न धरें, सज्दः करें और नमाज़ पढ़ें। यही अल्लाह से क़रीब करने का रास्ता है।

नोट- इस आयत को पढ़ने और सुनने वाले पर सज्द-ए-तिलावत वाजिब है।

(भाग–97)

सूर–ए–क़द्र

(सूरः नं. 97)

सूरः क़द्र का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः भी अक्सर उ़लमा के नज़्दीक मक्का के शुरु ज़माने में नाज़िल हुई। इस में बताया गया है कि यह क़ुर्आन दुनिया में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर शबे क़द्र में नाज़िल होना शुरु हुआ, जो रमज़ानुल् मुबारक के आख़िरी दिनों में से कोई रात थी।

यह रात इसी वजह से हज़ार महीनों से ज़्यादह बेहतर बताई गई है। इसी रात में ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) फ़रिश्तों के एक गिरोह के साथ नीचे उतरते हैं और उस वक़्त ख़ैर व बरकत का नुज़ूल होता है।

ह़दीस से मालूम होता है कि क़ुर्आन मजीद दुनिया में इन्सान की हिदायत के लिए नाज़िल करने का फ़ैसला लैलतुल् क़द्र में 'लौहे़ मह़फ़ूज़' से आसमान पर किया गया, फिर वहाँ से ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) थोड़ा-थोड़ा लेकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आते रहे। इस तरह़ 23 साल में पूरा क़ुर्आन आप (सल्ल०) तक पहुँचा दिया गया, इसी लिए 'लैलतुल् क़द्र' की बड़ी फ़ज़ीलत है।

इस सूरः में कहा गया है कि यह एक रात जिसे लैलतुल् क़द्र कहा गया है हज़ार महीनों से बेहतर है। जो शख़्स इस रात में अल्लाह की अ़िबादत करेगा, उस के सभी गुनाह जो पहले कर चुका होगा माफ़ कर दिये जाएँगे।

आयत नं० 1 से 5 तक

إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴿١﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ﴿٢﴾ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ﴿٤﴾ سَلَامٌ
هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿٥﴾

अनुवाद-

(1) 'हमने' इस (कुर्आन) को शबे क़द्र में नाज़िल किया। (2) और आप को क्या मालूम कि क़द्र की रात क्या है? (3) क़द्र की रात हज़ार महीनों से बेहतर है; (4) इसमें फ़रिश्ते और रूहुल अमीन (जिब्राईल अलै०) अपने रब की इजाज़त से हर हुक्म लेकर उतरते हैं। (5) यह (रात अम्न व) सलामती है, फ़ज्र (भोर) के तुलूअ़ (उदय) होने तक।

सूरः क़द्र की संक्षिप्त व्याख्या

1-2 إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴿١﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ﴿٢﴾

'इब्ने अबी ह़ातिम' ने मुजाहिद से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने बनी इस्राईल के एक मुजाहिद का क़िस्सा सुनाया जो एक हज़ार महीने तक लगातार जिहाद करता रहा, कभी उन्होंने हथियार नहीं उतारा, मुसलमानों को यह सुनकर तअ़ज्जुब हुआ, इस पर यह सूरः अल् क़द्र नाज़िल हुई। इस में इस उम्मत के लिए केवल एक रात की अ़िबादत को उस मुजाहिद की उ़म्र भर की अ़िबादत यानी एक हज़ार महीने से बेहतर बताया गया है। **(मज़हरी)**

हमने इस कुर्आन को शबे क़द्र की रात में नाज़िल किया, क़द्र का अर्थ मान-सम्मान के हैं। इस तरह़ शबे क़द्र का अर्थ हुआ 'मान-सम्मान' वाली रात या 'इ़ज़्ज़त वाली रात'। यह वह रात है जिस में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर पहली वह़्य नाज़िल हुई, जबकि आप ग़ारे हिरा (हिरा की गुफ़ा) में बैठे हुए थे। चूंकि इस रात को यह फ़ज़ीलत ह़ासिल हुई और इसमें कुर्आन नाज़िल होना शुरु हुआ, इसलिए इसे 'लैलतुल् क़द्र' कहा गया। इसी को सूरः दुखान में लैलतिल मुबारकः (मुबारक रात) भी कहा गया है।

इसी तरह़ एक अर्थ 'क़द्र' का यह भी है कि इस रात में तमाम मख़्लूक़ (प्राणी) के लिए जो कुछ तक़्दीर में लिखा है उसका जो ह़िस्सा इस साल रमज़ान के महीने से अगले रमज़ान के महीने तक पेश आने वाला है, वह चार फ़रिश्तों को दे दिया जाता है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने उन चार फ़रिश्तों के नाम इस तरह़ गिनाये हैं:-

(1) ह़ज़रत इस्राफ़ील (अ़लै०)
(2) ह़ज़रत मीकाईल (अ़लै०)
(3) ह़ज़रत इज़्राईल (अ़लै०)

(4) हज़रत जिब्राईल (अ़लै०)।

इन लोगों को इसी रात में हर इन्सान की उ़म्र, मौत, रिज़्क़ और बारिश लिखवा दी जाती हैं यहाँ तक कि जिस व्यक्ति को इस साल में ह़ज नसीब होना होगा वह भी लिख दिया जाता है। **(क़ुर्तुबी)**

3-4 لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ۝ تَنَزَّلُ الْمَلَٰئِكَةُ وَالرُّوحُ

लैलतुल् क़द्र-

क़ुर्आन से साबित है कि शबे क़द्र रमज़ान के महीने में होती है, लेकिन किस रात में होती है इख़्तिलाफ़ है। तफ़्सीर मज़्हरी के मुताबिक़ लैलतुल् क़द्र रमज़ान के आख़िरी अशरह (दशक) में होती है, मगर उसमें भी कोई तारीख़ पता नहीं, किसी भी रात में हो सकती है। वह हर रमज़ान में बदलती रहती है और इस दस में ख़ासतौर से ताक (विषम) रातों में होती हैं। जैसे- (21-23-25-27-29) अगर शबे क़द्र को इन रातों में ख़ास करके बदलती हुई मान लें कि कभी विषम तो कभी सम तो बेहतर है।

'सही बुख़ारी' में हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, शबे क़द्र को रमज़ान के आख़िरी अश्रह (दस दिनों) में तलाश करो। **(बुख़ारी)**

'सही मुस्लिम' में हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, शबे क़द्र को रमज़ान के आख़िरी अश्रह की ताक (विषम) रातों में तलाश करो। **(मुस्लिम)**

लैलतुल् क़द्र की फ़ज़ीलत-

इस रात की सब से बड़ी फ़ज़ीलत तो वही है जो इस सूरः में बयान हुई कि इस एक रात की अ़िबादत एक हज़ार महीनों (यानी तिरासी साल) से ज़्यादह की अ़िबादत से बेहतर है।

बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है, "रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, कि जो शबे क़द्र में अ़िबादत के लिए खड़ा रहा, उसके तमाम पिछले गुनाह माफ़ हो गए"। **(बुख़ारी, मुस्लिम)**

शबे क़द्र की अहम दुआ़-

हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा, "अगर मैं शबे क़द्र को पाऊँ तो क्या दुआ़ करूँ?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, यह दुआ़ करो-

"अल्लाहुम्मा इन्नका अ़फ़ुउन तुहिब्बुल अ़फ़्व फ़अ़फ़ु अ़न्नी"

"ऐ अल्लाह! आप बहुत माफ़ करने वाले और माफ़ी को पसन्द करते हैं, मेरी ख़ताएँ माफ़ फ़रमा दीजिए"। **(क़ुर्तुबी)**

4-5 فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ۝ سَلَامٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝

इस आयत में बताया गया है कि क़ुर्आन शबे क़द्र में नाज़िल हुआ। इस का यह मतलब भी हो सकता है कि पूरा क़ुर्आन 'लौहे-महफ़ूज़' से इस रात में उतारा गया हो, फिर हज़रत जिब्राईल (अ़लै०) इस को

तेईस साल में अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ थोड़ा-थोड़ा लाते रहे हों और यह भी हो सकता है कि कु़र्आन की शुरुआ़त इसी रात में हुई हो।

आस्मानी किताबें और रमज़ान-

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) से रिवायत है, "रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "इब्राहीमी सहीफ़ा तीसरी रमज़ान को, तौरेत छठी रमज़ान को, इन्जील तेरहवीं रमज़ान को, ज़बूर अठ्ठारहवीं रमज़ान को नाज़िल हुआ और कु़र्आन हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर चौबीसवी रमज़ान को नाज़िल हुआ"। **(मज़हरी)**

रुह़- "रुह़ से मुराद हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) हैं। हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, जब शबे क़द्र होती है तो जिब्रईल (अ़लै०) फ़रिश्तों की बड़ी जमाअ़त के साथ ज़मीन पर उतरते हैं और जितने अल्लाह के बन्दे मर्द व औ़रत नमाज़ व ज़िक्र करते होते हैं, सब के लिए रह़मत की दुआ़ करते हैं"। **(मज़हरी)**

अम्रिन सलाम-

'अम्रिन सलाम' यानी यह रात सलामती वाली है हर बुरी चीज़ से। **(इब्ने कसीर)**

यह रात सलाम और सलामती ही है और ख़ैर ही ख़ैर है, इसमें बुराई का नाम नहीं। **(कु़र्तुबी)**

एक अर्थ यह भी है कि फ़रिश्ते ऐसा हुक्म लेकर आते हैं, जो ख़ैर व सलाम है। **(मज़्हरी)**

यह बरकत रात के किसी ख़ास वक़्त के साथ मख़्सूस नहीं यानी शुरु रात से तुलूअ़-ए-फ़ज्र (अरुणोदय) तक रहती है, इसलिए यह पूरी रात इस लायक़ है कि अ़िबादत में गुज़ारी जाए।

नोट- अगर मुख़्तलिफ़ देशों और शहरों में शबे क़द्र अलग-अलग दिनों में हो तो उसमें भी कोई ह़र्ज नहीं, क्योंकि हर जगह के ह़िसाब से जो रात शबे क़द्र होगी उस जगह उसी रात में शबे क़द्र की बरकतें ह़ासिल होंगी।

(भाग–98)

सूर–ए–बय्यिनः

(सूरः नं. 98)

सूरः बय्यिनः का संक्षिप्त परिचय

इस सूरः के मक्की और मदनी होने में इख़्तिलाफ़ है। अक्सर उ़लमा के नज़्दीक मदीना में हिजरत के पहले ही साल नाज़िल हुई। इस सूरः में बताया गया है कि दुनिया में दीनदार और बेदीन दोनों की ह़ालत ख़राब हो चुकी थी, यहूद व नसारा और मुश्रिक दोनों अल्लाह का इन्कार कर बैठे थे, अपने मअ़बूद (उपास्य) अलग-अलग बना कर फ़िर्क़ों में बँट गये थे, आपस में लड़ते-झगड़ते और ज़ुल्म का बाज़ार गर्म रखते थे। कोई व्यक्ति ऐसा न था जो लोगों को समझा कर सीधे रास्ते पर लगाने की कोशिश करता बस इसी का इन्तिज़ार था कि कोई रसूल आए और लोगों को समझाए।

अतः वह रसूल आया और बात बिल्कुल साफ़ हो गई, लेकिन लोग अपनी हठधर्मी पर ही जमे रहे, लोगों ने न माना, फिर अहले किताब और मुश्रिकों से भी कहा गया कि वह भी सुन लें कि जो ईमान न लाएँगे और नेक काम न करेंगे तो उन के लिए दोज़ख़ है और जो लोग ईमान लाएँगे और नेक कामों में इस दुनिया के अन्दर लगे रहेंगे वह बड़े ही अच्छे लोग हैं, उन्हें मरने के बाद जन्नत मिलेगी, वह अल्लाह से और अल्लाह उन से राज़ी हो जाएगा वह हमेशा वहीं रहेंगे।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़ज़रत उबई बिन कअ़ब से फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें सूरः 'लम यकुनिल्लज़ीन कफ़रु' सुनाऊँ। ह़ज़रत 'उबई बिन कअ़ब' ने अ़र्ज़ किया, क्या अल्लाह तआ़ला ने मेरा नाम लेकर यह हुक्म दिया? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया हाँ, यह सुनकर ह़ज़रत 'उबई बिन कअ़ब' की आँखें आँसुओं से भर गईं। **(बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर)**

'ह़ज़रत उबई बिन कअ़ब' (रज़ि०) अहले किताब में से थे, जो नबी करीम (सल्ल०) पर ईमान लाए थे, चूंकि इस सूरः में ईमान लाने वालों के लिए ख़ुशख़बरी है, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उनकी सराहना के लिए उन्हें यह सूरः सुनाने का हुक्म अपने नबी को दिया, ताकि इ़ज़्ज़त व मर्तबः साबित हो।

आयत नं० 1 से 8 तक

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝ فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝ وَمَا تَفَرَّقَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝ جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ
وَرَضُوْا عَنْهُ ۚ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۝

अनुवाद-

(1) किताब वालों और मुश्रिकों में से जो लोग काफ़िर थे वे बाज़ आने वाले नहीं, जब तक कि उनके पास स्पष्ट प्रमाण न आ जाए; (2) (अर्थात) अल्लाह की ओर से एक रसूल, जो पाक सहीफ़ों (ग्रन्थों) को पढ़ कर सुनाए; (3) जिनमें सही ठोस अह़काम (आदेश) लिखे हुए हों, (4) और जिन लोगों को किताब (ग्रन्थ) दी गयी थी, वे इसके बाद भी फूट में पड़ गये कि उनके पास स्पष्ट प्रमाण आ चुका था। (5) और उनको इसके अलावा कोई हुक्म नहीं दिया गया था, कि केवल अल्लाह ही की इबादत करें, अपने धर्म को उसके लिए ख़ालिस करके, (एकाग्र होकर) और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें, और यही सही दीन (धर्म) है। (6) बेशक जो लोग काफ़िर हैं अह्ले किताब और मुश्रिकों में से वे जहन्नम की आग में पड़ेंगे, (और) हमेशा उसी में रहेंगे, यही तमाम मख़्लूक़ (प्राणियों) में सबसे बुरे हैं (7) बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम करते रहे वे तमाम मखलूक़ में सबसे बेहतर हैं, (8) उनका बदला (पुरस्कार) उनके रब के पास हमेशा रहने के लिए जन्नतें (बाग़) हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेश रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी होगा और वे 'उससे' राज़ी होंगे, यह (इनआम) उसके लिए है जो अपने रब से डरे।

सूरः बय्यिनः की संक्षिप्त व्याख्या

अहले किताब से मुराद यहाँ वह लोग हैं जिन के पास अम्बिया (अ़लै०) किताब लाए। उन की किताब में तौह़ीद (एकेश्वरवाद) का सिद्धान्त स्पष्ट रूप से मौजूद था, लेकिन तब्दीली की वजह से उसमें शिर्क (बहुदेववाद) की मिलावट भी हो गई है। यहूदी व ईसाई तौह़ीद को मानते थे और शिर्क उनके अन्दर ग़लत व्याख्या और बेजा बहानों की वजह से आ गया था, वह आख़िरत और रिसालत के सिल्सिले को भी मानते थे, इसलिए कुर्आन ने इस गिरोह के लिए 'अहले किताब' की परिभाषा प्रयोग की और उनके साथ मामला करने में ख़ास शरई आदेश भी दिये। जैसे- उनकी औ़रतों से निकाह़ किया जा सकता है और उनकी ज़बीहा (वध्य) अगर शरअ़ी तरीक़े पर हों तो खाया जा सकता है।

इसके अ़लावह किसी को अहले किताब नहीं कहा गया, इसलिए इस आदेश का पालन (Implementation) किसी दूसरे धार्मिक गिरोह पर नहीं किया जा सकता चाहे उनके पास कोई धार्मिक पुस्तक ही क्यों न मौजूद हो।

1-8 لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِينَ مُنْفَكِّينَ حَتّٰى تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝ رَسُولٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝
فِيهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا
لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۥ حُنَفَآءَ وَيُقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ أُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ ۙ أُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝ جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۖ
رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने अहले किताब यानी यहूदी, ईसाई और मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) यानी बुत परस्त और अग्नि परस्तों के बारे में फ़रमाया कि यह सब के सब जिहालत व गुमराही के गहरे अंधेरे में फंसे हुए थे, हमने इनको गुमराही से निजात पाने की राह दिखाई कि सब से बड़े रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को भेज दिया, जिन पर क़ुर्आन नाज़िल हुआ।

मगर इन बद्बख़्तों का यह ह़ाल है कि इस साफ़ दलील के आ जाने के बाद भी इस की मुख़ालिफ़त करना शुरु कर दी।

चाहिए तो यह था कि जो आपसी इख़्तिलाफ़ था उसे भी ख़त्म कर देते, मगर इसके बजाए इन बद्बख़्तों ने क़ुर्आन पाक और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के बारे में भी इख़्तिलाफ़ शुरु कर दिया, जबकि आप (सल्ल०) के पहले अहले किताब आप की नुबूवत पर सहमत थे, क्योंकि उनकी किताबों में आप (सल्ल०) के आने की स्पष्ट भविष्यवाणियाँ मौजूद थीं, इसलिए यह लोग आप (सल्ल०) के कामियाबी की दुआ़ भी किया करते थे।

लेकिन जब आप (सल्ल०) आए तो आप की नुबूवत व रिसालत का इन्कार करने लगे, जबकि इन किताबों में सिर्फ़ एक अल्लाह की बन्दगी का हुक्म था। इन यहूदियों को बुत परस्ती में भी कोई झिझक न हुई और वह 'ह़ज़रत उ़ज़ैर' (अ़लै०) को अल्लाह का बेटा बना बैठे और ईसाइयों ने एक की जगह तीन ख़ुदा बना लिए और दोनों गिरोहों ने अपने धर्म शास्त्रियों (उ़लमा) और गुरुजनों (पीरों) को रब बना लिया कि वह जिस चीज़ को चाहें ह़राम क़रार दे दे और जिसे चाहें ह़लाल।

दीन–

दीन का मतलब इताअ़त (आज्ञापालन) है, जो दिल से बिना शर्त के अल्लाह तआ़ला को ख़ालिक़ और मालिक मानकर उसी की इताअ़त करे।

इसलिए यह इताअ़त (आज्ञा पालन) ह़क़ीक़ी रूप से उसी के लिए होनी चाहिए जिसकी हिदायत पिछली किताबों में भी दी गई थी और क़ुर्आन में भी दी गई है। इताअ़त (आज्ञा पालन) में अल्लाह की शरीअ़त और उसका पूरा दीन शामिल है।

अ़िबादत–

अल्लाह की अ़िबादत का मतलब यह है कि दिल का झुकाव अल्लाह के सिवा किसी की पूजा,

उपासना की तरफ़ न हों उसकी अ़िबादत में बिद्अ़तों (अप्रमाणित चीज़ों) को शामिल न करें, बल्कि इख़्लास के साथ अल्लाह के लिए अपने आपको ह़वाले कर देने का नाम अ़िबादत है। चूंकि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का तरीक़ा यही था, इसलिए 'हनीफ़ियत' इब्राहीमी तरीक़े का दूसरा नाम है।

इसी तरह़ नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने का हुक्म अहले किताब को दिया गया था, लेकिन उन्होंने नमाज़ को छोड़ दिया यहाँ तक कि तौरेत से इस हुक्म को ग़ायब ही कर दिया। अल्बत्ता ज़कात के एह़काम किसी न किसी रूप में अब भी बाइबिल में मौजूद हैं।

यानी सच्चे दीन की यह बुनियादी शिक्षाएँ हैं, यही दीन (इस्लाम) अहले किताब को दिया गया था, लेकिन उन्होंने इन बुनियादी शिक्षाओं को खो दिया और खोखली दीनदारी को लेकर बैठ गए।

यहाँ कुफ़्र से मुराद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को अल्लाह का आख़िरी रसूल और क़ुर्आन को उसकी नाज़िल की हुई आख़िरी किताब मानने से इन्कार कर देना है।

अहले किताब और मुश्रिकीन के बारे में फ़रमाया, जो अल्लाह तआ़ला के नाफ़रमान और मुन्किर हैं हम उन को दोज़ख़ के दहकते हुए अंगारों में फेंक देंगे, जिनमें वह हमेशा जलते रहेंगे। जो क़ुर्आन और रसूल (सल्ल०) पर ईमान लाए और उसके तक़ाज़ों को पूरा किया, तो हम उन को जन्नत में दाख़िल करेंगे जहाँ ऐसे बाग़ात होंगे जिनके नीचे नहरें बहती हुई होंगी, यह लोग उस में हमेशा रहेंगे और यह अल्लाह तआ़ला से ख़ुश होंगे और अल्लाह तआ़ला इन से ख़ुश होगा।

याद रहे यह सब सिर्फ़ उस व्यक्ति के साथ होता है जो अपने परवरदिगार से डरता हो, क्योंकि जब तक डर और ख़ौफ़ दिल में न होगा उस वक़्त तक उस की नाफ़रमानी से नहीं बचा जा सकता और उसके बतलाए हुए नेक काम नहीं किये जा सकते, इसलिए बुनियादी चीज़ अल्लाह का ख़ौफ़ (डर) है।

(भाग–99)

सूर–ए–ज़िल्ज़ाल

(सूरः नं. 99)

सूरः ज़िल्ज़ाल का संक्षिप्त परिचय

इसके मक्की और मदनी होने में इख़्तिलाफ़ है, लेकिन अक्सर उ़लमा के नज़्दीक यह सूरः मदीना के शुरु ज़माने में नाज़िल हुई। इसमें क़ियामत की उस घटना का ज़िक्र किया गया है कि जब वह क़ायम होगी अल्लाह तआ़ला ज़मीन को हुक्म देगा, जिससे ज़मीन हिलने लगेगी और भयंकर भूचाल आएगा, कोई ऊँची बिल्डिंग, टीला, पहाड़ आदि बाक़ी न रहेगा, पूरी ज़मीन समतल मैदान हो जाएगी और अपने अन्दर की सभी चीज़ें जैसे- सोना, चाँदी आदि हर तरह़ के पदार्थ बाहर निकाल फेंकेगी।

सारे इन्सान तअ़ज्जुब से कहेंगे कि आज ज़मीन को क्या हो गया? उस वक़्त ज़मीन अपनी सभी ख़बरें बयान कर देगी और ज़मीन का हर हिस्सा गवाही देगा, क्योंकि अल्लाह ने उसे यही हुक्म दिया होगा कि सब कुछ कह डाले, सारे इन्सान अपनी-अपनी क़ब्रों से जहाँ कहीं भी होंगे गिरोह के गिरोह बाहर निकल पड़ेंगे, ताकि हर एक के आ़माल उस के सामने रख दिये जाएँ और हर आदमी अपनी ज़र्रा भर भी की हुई भलाई व बुराई अपने सामने देख ले।

आयत नं० 1 से 8 तक

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۝ وَقَالَ الْإِنسَانُ مَا لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ۝
يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ۝ فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۝ وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۝

अनुवाद-

(1) जब धरती भोंचाल से हिला दी जाएगी; (2) और धरती अपने (अन्दर के) सारे बोझ बाहर निकाल फेंकेगी; (3) और इन्सान कहेगा, ''इस को क्या हो गया है?'' (4) उस दिन वह अपने (ऊपर गुज़रे हुए) हालात की ख़बर बयान कर देगी, (5) क्योंकि आप के रब ने उसे हुक्म दे दिया होगा। (6) उस दिन लोग अलग-अलग टोलियों में आएँगे, ताकि उन्हें उनके आमाल (कर्मपत्र) दिखा दिए जाएँ। (7) तो जिसने ज़र्रा बराबर (कण भर) भी भलाई की होगी,वह उसको देख लेगा; (8) और जिसने ज़र्रा बराबर (कण भर) भी बुराई की होगी वह उस को देख लेगा।

सूरः ज़िल्ज़ाल की संक्षिप्त व्याख्या

1-4 إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۝ وَقَالَ الْإِنسَانُ مَا لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝

इसमें क़ियामत के दूसरे दौर का ज़िक्र है, जबकि तमाम मरे हुए इन्सान ज़िन्दा कर दिये जाएँगे। उस दिन भूमण्डल इतनी ज़ोर से हिलाया जाएगा कि उसे हिलाये जाने की सही कल्पना भी नहीं की जा सकती। ज़मीन पर जितने भी ज़लज़ले आए हैं, क़ियामत का ज़लज़ला इतना ज़बरदस्त होगा कि बड़े से बड़ा ज़लज़ला भी उसके मुक़ाबिले में कुछ न होगा।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने उस ज़लज़ले के बारे में फ़रमाया है, "ज़मीन अपने जिगर के टुकड़ों को सोने की बड़ी-बड़ी चट्टानों के रूप में उगल देगी, उस समय एक व्यक्ति जिसने माल के लिए किसी को क़त्ल किया होगा वह देख कर कहेगा कि यह वह चीज़ है जिसके लिए मैंने इतना बड़ा जुर्म किया था। जिस व्यक्ति ने अपने रिश्तेदारों के माल की वजह से तअल्लुक़ात तोड़े होंगे, वह कहेगा, "कि यह है वह चीज़ जिसके लिए मैंने यह सब किया था"।

चोर जिसका हाथ चोरी की सज़ा से काटा गया था उसको देखकर कहेगा कि इसके लिए मैंने अपना हाथ कटवाया था, फिर कोई भी उस सोने की ओर नज़र उठाकर भी न देखेगा। **(मुस्लिम)**

उस दिन ज़मीन अपने बोझ निकाल बाहर फेंकेगी यानी मुर्दों को क़ियामत के दिन ज़मीन उगल देगी। इससे बताने का मक़्सद यह है कि मरने के बाद इन्सान का जो शरीर मिट्टी में मिल जाता है हक़ीक़त में ख़त्म नहीं होता, बल्कि वह अमानत बनकर ज़मीन के पास रहता है, चाहे रासायनिक विधि पर (Chemical basis) उसने किसी भी तत्व का रूप धारण कर लिया हो, इस अमानत को अपने असली रूप में क़ियामत के दिन ज़मीन हाज़िर कर देगी यानी मानव शरीर के अंग-अंग रासायनिक परिवर्तन

से गुज़रने के बाद अपने वास्तविक रूप में फिर सामने आ जाएँगे।

उस दिन इन्सान क़ब्र से निकलते ही बद्‌हवासी की शक्ल में पुकार उठेगा "कि ज़मीन को क्या हो गया है यह क्यों इस तरह़ हिल रही है और अपने ख़ज़ाने क्यों उगल रही है"।

इसके बाद ज़मीन अपनी सारी बीती सुनाएगी। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने यह आयत तिलावत फ़रमाई और पूछा, "जानते हो ज़मीन की ख़बरें क्या हैं?" सह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया, "अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं," आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "उसकी ख़बरें यह हैं कि जिस बन्दे या बन्दी ने ज़मीन की पीठ पर जो कुछ किया होगा उसकी गवाही देगी और कहेगी फ़लाँ-फ़लाँ व्यक्ति ने यह-यह काम इस-इस दिन किया था"। **(तिर्मिज़ी)**

उस दिन ज़मीन पर गुज़री हुई तमाम घटनाएँ इस तरह़ सुनाई जाएँगी जैसे सब की सब टेप कर ली गई हों या वीडियो कैमरा तैयार कर लिया गया हो और क़ियामत के दिन यह पूरा रिकार्ड इन्सान को सुना दिया जाएगा, ताकि ज़मीन पर उसने जो कुछ किया था उसका 'प्रमाण' इकट्‌ठा करके इन्साफ़ हो जाए।

5-8 بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ۞ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۞ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۞
وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۞

यह सवाल पैदा हो सकता है कि ज़मीन तो बेजान धातु है, फिर यह इन्सानों के कर्मों की गुज़री दास्तान किस तरह़ सुनाएगी? इसका जवाब इसी आयत में दिया गया है कि अल्लाह तआ़ला के हुक्म से बोल उठेगी। एक-दूसरे स्थान पर क़ुर्आन में यह भी कहा गया है कि "क़ियामत के दिन मुजरिमों की खालें भी उसके ख़िलाफ़ गवाही देंगी और यह जब तअ़ज्जुब से पूछेंगे कि तुमने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यों दी, तो खालें जवाब देंगी कि जिस अल्लाह ने हर चीज़ को बोलने की ताक़त दी है उसी ने हमें ज़बान भी दे दी"। **(हामीम सज्दः)**

जो ह़स्ती मिट्टी से इन्सान बनाकर खड़ा कर सकती है, उसके लिए मिट्टी में बात करने की ताक़त पैदा करना मुश्किल क्यों है? आज के इस साइंसी दौर में तो समझना और भी आसान है कि टेलीवीज़न, टेप रिकार्ड और फ़ोटोग्राफ़ी आदि से इन्सान के चाल-चलन कण-कण पर अंकित हो जाते हैं।

क़ियामत के दिन लोग ज़मीन के मुख़्तलिफ़ जगहों से मुख़्तलिफ़ ह़ालतों में यानी क़ब्रों से लोग इस तरह़ निकलेंगे कि किसी के साथ न उसके ख़ानदान के लोग होंगे, न रिश्तेदार, न उसके क़रीबी, न सेवक, न ज़ायदाद बल्कि हर शख़्स अपने आ़माल के जवाब के लिए अपने रब के पास अकेला ह़ाज़िर होगा, जिसका ज़िक्र सूरः मरयम के (95) नं० और सूरः अन्‌आ़म के (94) नं० की आयत में भी किया गया है।

क़ियामत तक जितने इन्सान भी पैदा हुए और मरे, चाहे कोई ज़मीन में दफ़्न हुआ हो या समुद्र में डुबोया गया हो या उसकी लाश जला दी गई हो या हवा में उड़ा दी गई हो, क़ियामत के दिन सबके सब ज़मीन से निकल पड़ेंगे, ताकि वह जो कुछ किया करते थे उसका नतीजा अपने सामने देख लें, "और उन्हें उनके सारे आ़माल दिखा दिये जाएँ"।

इससे मालूम होता है कि इन्सान के सामने उसकी अ़मली ज़िन्दगी के मन्ज़र पेश किये जाएँगे, क़ियामत के दिन हर शख़्स को जो ख़ुद उसने किया था या कहा था पूरी ज़िन्दगी पेश की जाएगी, जो वह अपनी छोटी से छोटी नेकी और छोटी से छोटी बुराई को देख लेगा और ख़ैर से मुराद ईमान है कि ईमान के बिना अल्लाह के नज़्दीक कोई नेक अ़मल कुबूल नहीं यानी आख़िरत में ऐसे नेक अ़मल को जो कुफ़्र की हालत में किया गया हो उसका कोई बदला न होगा, दुनिया में चाहे भले ही उसको उसका बदला दिया जाए।

इसलिए इस आयत से पता चलता है कि जिस व्यक्ति के दिल में ज़र्रा बराबर भी ईमान होगा कभी न कभी जहन्नम से निकाल ही लिया जाएगा, क्योंकि इस आयत के मुताबिक़ उसको अपनी नेकी का फल भी आख़िरत में मिलना ज़रूरी है और अगर कोई नेकी भी न हो तब भी ख़ुद ईमान ही बहुत बड़ी नेकी है। इसलिए कि जिस अ़मल के लिए शर्त ईमान है वही न हुआ तो उसके आ़माल बेकार ही जाएँगे, क्योंकि आख़िरत में उसे ख़ैर (भलाई) समझा ही न जाएगा।

इसी तरह़ शर (बुराई) है यानी कुफ़्र व शिर्क से जिसने अपनी ज़िन्दगी में तौबः न की हो, इसलिए कि तौबः से गुनाहों का माफ़ होना कुर्आन व सुन्नत से साबित है और जिस गुनाह से तौबः न की वह छोटा हो या बड़ा आख़िरत में में उसका नतीजा ज़रूर सामने आएगा, इसीलिए रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से फ़रमायाः-

"देखो! ऐसे गुनाहों से बचने का पूरा ख़याल रखो जिनको छोटा या कमतर समझा जाता है क्योंकि अल्लाह तआ़ला की ओर से उस पर भी पकड़ हो सकती है"। **(नसई, इब्ने माजा)**

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है "रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने सूरः 'अज़्-ज़िल्ज़ाल' को आधा कुर्आन और 'कुलहुवल्लाहु अ़हद' को तिहाई कुर्आन और 'कुल्याअय्युहल काफ़िरून' को चौथाई कुर्आन फ़रमाया"। **(तिर्मिज़ी, मज़हरी)**

(भाग-100)

सूर-ए-आ़दियात

(सूरः नं. 100)

सूरः आ़दियात का संक्षिप्त परिचय

इस सूरः के मक्की या मदनी होने में इख़्तिलाफ़ है, लेकिन ज़्यादहतर उ़लमा के नज़्दीक यह मक्की है। इस सूरः में इन्सान का ध्यान घोड़ों की ओर करवाया गया है, जिनसे तमाम इन्सान ख़ासतौर से अ़रब के लोग बहुत से काम लेते हैं और वह उनकी मर्ज़ी के मुताबिक़ उनका काम अन्जाम देते हैं और वह इसलिए कि उनका मालिक उनके चारा पानी का इन्तिज़ाम करते हैं। अ़रब के घोड़े अपने मालिक की वफ़ादारी में मशहूर हैं इसलिए उनका ध्यान इस ओर करवाया जा रहा है कि तुमने घोड़े से यह सबक़ सीखा होता कि घोड़ा किस तरह़ अपने मालिक का वफ़ादार होता है, लेकिन बात यह है कि इन्सान अपने पालनहार का जिसने उसे सब कुछ दिया 'नाशुक्रा' है, जबकि वह अपनी आँखों से घोड़ों की वफ़ादारी और शुक्रगुज़ारी साफ़-साफ़ देख रहा है।

अगली आयत में बताया गया है कि इन्सान को माल जमा करने की धुन ने भी कहीं का न रखा, यह हर वक़्त अपने फ़ायदे के पीछे ही पड़ा रहता है और अपने पालनहार मालिक का उसे ख़याल भी नहीं आता, जल्द ही क़ब्रों में तुम सब को दुबारा ज़िन्दा करके निकाल लिया जाएगा और दिलों में जो भी विचार रखते हो दुनिया में वह सब ऊपर आ जाएँगे। उस दिन इन्सान की समझ में आ जाएगा और उसे बतला भी दिया जाएगा कि अल्लाह तआ़ला उसकी सभी ह़ालत से आगाह था।

आयत नं० 1 से 11 तक

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۝ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۝ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۝ فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۝ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۝ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۝
وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۝ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۝ اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۝ وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ۝
اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ۝

अनुवाद-

(1) उन सरपट दौड़ने वालों (घोड़ों) की क़सम, जो हाँफ़ उठते हैं, (2) फिर पत्थरों पर (नाल) मार कर आग निकालते हैं (3) फिर प्रातः काल (दुश्मनों पर) धावा बोलते हैं, (4) फिर उस समय धूल उड़ाते हैं। (5) फिर उस समय भीड़ (दुश्मन की फौज) में जा घुसते हैं। (6) बेशक इन्सान अपने रब का नाशुक्रा है, (7) और बेशक वह इस पर खुद गवाह है। (8) और बेशक वह तो माल से सख़्त मुहब्बत करने वाला है। (9) क्या वह नहीं जानता कि (एक दिन) क़ब्रों में जो कुछ है उसे बाहर निकाल लिया जाएगा। (10) और जो दिलों में हैं, वे ज़ाहिर कर दिये जाएँगे। (11) बेशक उनका रब, उस दिन उनसे खूब अच्छी तरह बाख़बर (भिज्ञ) होगा।

सूरः आ़दियात की संक्षिप्त व्याख्या

1-5 وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۝ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۝ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۝ فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۝ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۝

जंगी घोड़े-

इस सूरः में अल्लाह तआ़ला ने जंगी घोड़ों के कुछ ख़ास हालात और उनके गुणों का ज़िक्र करते हुए उनकी क़सम खाकर फ़रमाया, "इन्सान अपने रब (पालनहार) का बड़ा नाशुक्रा है"।

यह बात तो क़ुर्आन मजीद में बार-बार मालूम हो चुकी है कि अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ में से मुख़्तलिफ़ चीज़ों की क़सम खा कर किसी ख़ास घटना को बयान फ़रमाते हैं, यह अल्लाह तआ़ला की ख़ासियत है मगर इन्सानों के लिए किसी मख़्लूक़ की क़सम खाना जायज़ नहीं।

महत्व-

यहाँ जंगी घोड़ों की क़सम उसके महत्व को बताने के लिए खाई गई है कि "इन्सान बड़ा नाशुक्रा है," फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि ज़रा जंगी घोड़ों पर नज़र डालें, कि वह मैदाने जंग में अपनी जान को ख़त़रे में डालकर कैसी सख़्त ख़िद्मत इन्सान के हुक्म व इशारे पर करते हैं, हालाँकि इन्सान ने तो उन घोड़ों को पैदा भी नहीं किया, उनको जो घास या दाना इन्सान देता है वह भी उसका पैदा किया हुआ नहीं है, उसका काम सिर्फ़ इतना है कि अल्लाह के पैदा किये हुए रिज़्क़ को उन तक पहुँचाने का एक ज़रिया बनता है।

अब घोड़ों को देखिए कि वह इन्सान के इतने से एह़सान को कैसे पहचानता है कि उसके इस छोटे से इशारे पर अपनी जान को ख़त्रे में डाल देता है और सख़्त तक्लीफ़ बर्दाश्त करने को तैयार हो जाता है। यह इन्सान जिसे एक वीर्य से अल्लाह तआ़ला ने पैदा किया, इसको मुख़्तलिफ़ कामों की कुव्वत दी, अ़क्ल व दिमाग़ दिया, खाने पीने की तमाम चीज़ें पैदा फ़रमाई और इसकी तमाम ज़रुरतों को किस तरह़ आसान करके उस तक पहुँचा दिया कि अ़क्ल ह़ैरान रह जाती है, लेकिन वह इन तमाम एह़सानात का भी शुक्र अदा नहीं करता, इसे सोचना चाहिए कि यह अपने पालनहार का ग़ुलाम है, इसलिए भी यह ज़रूरी होता है कि वह भी इन्हीं घोड़ों की तरह़ अपने पालनहार की आज्ञा पालन करे।

यहाँ पर घोड़ों को उदाहरण में पेश किया गया है जबकि यही वफ़ादारी तमाम जानवरों में पाई जाती है, जिसे अल्लाह तआ़ला ने इस इन्सान की ख़िद्मत के लिए पैदा किया है, फिर भी यह इन्सान नाशुक्री करता है।

सुबह़-

अ़रबों का नियम था कि जब वह किसी बस्ती पर हमला करना चाहते तो रात को घोड़े दौड़ाते और बिल्कुल सुबह़ ह़मला कर देते, रात को इसलिए ह़मला नहीं करते थे कि रात के अंधेरे में लड़ना मुश्किल था और सुबह़ को इसलिए ह़मला कर देते थे कि दुश्मन पर उन्हें अचानक टूट पड़ने का मौक़ा मिलता था यानी यह घोड़े इतनी तेज़ दौड़ते थे कि गर्द व गुबार का एक तूफ़ान बरपा हो जाता और जब यह धावा बोलते तो अपने साथ ग़र्द व गुबार की एक आँधी लिए होते।

6-8 إِنَّ الْإِنسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ۝ وَإِنَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ۝ وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ۝

इन आयतों में अ़रब वासियों के उन ह़मलों का ज़िक्र है जिसे वह विनाश के उद्देश्य से किया करते थे और बचाव करने वाली भीड़ में जा घुसते और उसके बाद लूट्मार कर के औ़रतों और मर्दों को दास-दासी बना लेते, जिससे इलाक़े में अशाँति का माहौल पैदा हो जाता था और बस्तियों पर यह ख़त्रा बना रहता था कि मालूम नहीं कौन क़बीला किस बस्ती पर कब ह़मला कर बैठे।

यहाँ पर अन्याय और जुल्म का एह़सास दिलाने के लिए बताया गया है, जिसमें तेज़ रफ़्तार घोड़ों का प्रयोग किया जाता था। जैसे- आज ग़लत एवं व्यर्थ उद्देश्यों के लिए लड़ी जाने वाली जंगों में तेज़ रफ़्तार मीज़ाइल इस्तेमाल किये जाते हैं और उनके द्वारा बमबारी की जाती है, शहरों और बस्तियों को तबाह किया जाता है, उसकी अन्यायपूर्ण एवं अत्याचारी कार्रवाइयों के ख़िलाफ़ इन्सानियत को झिंझोड़ा जा सकता है।

इसी तरह़ किसी चीज़ को ग़लत एवं नाजायज़ मक़्सद और ज़ालिमाना कार्रवाइयों के लिए प्रयोग करना उस नेअ़मत की नाक़द्री और अपने रब की बड़ी नाशुक्री है।

इस दौर में परमाणु शक्ति का अविष्कार इन्सान के लिए अल्लाह तआ़ला की बहुत बड़ी नेअ़मत है। इस नेअ़मत का शुक्र यह है कि इसे जायज़ कामों के लिए प्रयोग किया जाए लेकिन अगर यह विनाश के कामों जैसे 'एटम बम' बनाने और उससे बड़े-बड़े शहरों को तबाह करने और इन्सानियत पर जुल्म

करने के लिए प्रयोग हों तो यह उस नेअ़मत की नाक़द्री है।

इन्सान की यह नाशुक्री किसी प्रमाण की मुह़ताज नहीं, उसकी आत्मा ख़ुद इस पर गवाह है। उसकी माया अन्दर से कह उठेगी कि उसने यह ग़लत ह़रकत की है।

ह़क़ीक़त यह है कि माल इन्सान को हज़ारों मुसीबतों में घेर लेता है। अ़रब के लोग माल को ख़ैर कहते थे यानी भलाई ही भलाई, इसी कारण क़ुर्आन ने भी यहाँ ख़ैर शब्द का प्रयोग किया है।

यहाँ घोड़ों की क़सम खाकर इन्सान के बारे में दो बातें कहीं गई हैं, एक यह कि 'वह नाशुक्रा है' मुसीबतों को तो याद रखता है, लेकिन नेअ़मतों को भूल जाता है, दूसरे यह कि माल से उसे मुह़ब्बत होती है।

यह दोनों बातें अ़क़्ली तौर पर भी ठीक नहीं, जबकि माल इन्सानी ज़रुरत है जिसे शरीअ़त में ज़रुरत के लिए ह़ासिल करना फ़र्ज़ क़रार दिया गया है, लेकिन उसकी मुह़ब्बत को बुरा कहा गया है, इसलिए कि उसका तअ़ल्लुक़ दिल से है, बीमारी में इन्सान दवा भी पीता है, आपरेशन भी कराता है मगर दिल में उन चीज़ों की मुह़ब्बत नहीं होती बल्कि यह सब मजबूरी पर करता है।

इसी तरह़ मोमिन को सिर्फ़ ज़रुरत भर माल को ह़ासिल करने की फ़िक्र होनी चाहिए मगर दिल से उसे न लगाए।

जैसे- पानी जब तक कश्ती (नाविका) के नीचे रहे तो कश्ती (नाव) के लिए मदद्गार होता है, मगर यही पानी जब कश्ती के अन्दर आ जाए तो कश्ती को ले डूबता है। इसी तरह़ माल जब तक दिल की कश्ती के आस पास रहता है तो लाभदायक रहता है, लेकिन जब दिल के अन्दर दाख़िल हो जाता है तो हलाक कर देता है। आख़ीर में इन दोनों बातों पर नसीह़त की गई है।

9-11 أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۝ وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ۝ إِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ ۝

क्या इन्सान को ख़बर नहीं कि क़ियामत के रोज़ जबकि मुर्दे क़ब्रों से ज़िन्दा करके उठा लिए जाएँगे और दिलों में छुपी हुई बातें सब खुलकर सामने आ जाएँगी? और यह भी सब जानते हैं कि अल्लाह तआ़ला इन सब के ह़ालात से ख़ूब वाक़िफ़ है, वह उसके अ़मल के मुताबिक़ ही आख़िरत में बदला देगा।

उस दिन सबसे पहले सीने के जिस भेद को ज़ाहिर किया जाएगा वह ईमान और कुफ़्र होगा यानी किस के दिल में ईमान था और किस के दिल में कुफ़्र था।

जो लोग दुनिया में अपने को मुसलमान कहलाते रहे, लेकिन दिल में कुफ़्र छिपाये हुए थे, उनके सीनों में उस रोज़ कुफ़्र ही मिलेगा। इसी तरह़ जिन लोगों ने नेकी और भलाई के काम किसी ग़लत मक़्सद के लिए किये होंगे तो उनकी भी ह़क़ीक़त खुल जाएगी, वास्तव में अल्लाह को अन्दर और बाहर के ह़ालात का पूरा-पूरा इ़ल्म है।

इसलिए अक़्लमन्दी का काम यह है कि वह नाशुक्री से बाज़ आ जाए और माल की मुह़ब्बत में ऐसा न फंस जाए कि अच्छे बुरे की तमीज़ न रहे और कल पछताना पड़े।

(भाग–101)

सूर–ए–क़ारिअ़ः

(सूरः नं. 101)

सूरः क़ारिअ़ः का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का के शुरु ज़माने में नाज़िल हुई। इसमें क़ियामत की महान घटना को अल् क़ारिअ़ः (खड़खड़ाने वाली आफ़त) से संज्ञा (मिसाल) दी गई है, इसलिए इसका नाम 'अल् क़ारिअ़ः' है।

इस सूरः में इन्सान को क़ियामत से डराया गया है कि इससे ग़ाफ़िल होकर मत बैठें, इसलिए कि जब वह आएगी इन्सानों के होश व हवास बिगाड़ देगी और अन्दर से बाहर तक की हर चीज़ को ज़ोर से हिला डालेगी, इन्सान परवानों और पतिंगों की तरह् इधर-उधर बिखरे हुए होंगे, बेतहाशा दौड़ते चले जा रहे होंगे और पहाड़ धुनूकी हुई रुई की तरह् उड़ रहें होंगे। उस दिन हर इन्सान के आ़माल तौले जाएँगे, जिनके आ़माल का पल्ला भारी होगा उन्हें ख़ुशी होगी और जिनके आ़माल का पल्ला हल्का होगा वह दहकती हुई आग में झोंक दिए जाएँगे।

इस सूरः में क़ियामत के बारे में बहुत साफ़ बता दिया गया है और किसी बात को नहीं छेड़ा गया, सिर्फ़ इतना ही कहा गया और बहुत ज़ोरदार अन्दाज़ में कहा गया कि क़ियामत में शक की कोई गुन्जाइश नहीं, इसमें शक मत करो। जब वह आएगी तो सब चीज़ों को हिला डालेगी और आदमी इस तरह् बिखरे हुए होंगे जैसे-परवाने (पतिंगे) चिराग के आस-पास होते हैं, फिर उनको जमा करके हिसाब लिया जाएगा, जिनके आ़माल भारी होंगे वह कामियाब होंगे और जिनके आ़माल हल्के होंगे वह दोज़ख़ में डाल दिये जाएँगे।

आयत नं० 1 से 11 तक

اَلْقَارِعَةُ ۝ مَا الْقَارِعَةُ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝ يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۝ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۝ فَاَمَّا
مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ۝ نَارٌ حَامِيَةٌ ۝

अनुवाद-

(1) (वह) खड़खड़ाने वाली (आफ़त); (2) क्या है? (वह) खड़खड़ाने वाली! (3) और आपको क्या मालूम कि वह खड़खड़ाने वाली (आफ़त) क्या है? (4) उस दिन, जब लोग पतिंगों की तरह बिखरे हुए होंगे, (5) और पहाड़ रंग बिरंगे धुने हुए ऊन की तरह हो जाएंगे। (6) फिर जिस (के आमाल) का पलड़ा भारी होगा, (7) वह (मनपसंद) ऐश में राज़ी होंगे। (8) और जिस का पलड़ा हल्का होगा, (9) तो उसका ठिकाना ''हाविया'' (अर्थात आग का गढ़ा) होगा। (10) और आप को क्या मालूम कि वह क्या चीज़ है? (11) (वह) दहकती हुई आग है।

सूरः क़ारिअः की संक्षिप्त व्याख्या

1-4 اَلْقَارِعَةُ ۝ مَا الْقَارِعَةُ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝ يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۝

अल्-क़ारिअः क़ियामत के नामों में से एक नाम है। इसे अल्-क़ारिअः इसलिए कहते हैं कि यह अपनी हौलनाकी व घबराहट की वजह से दिलों को हिला देगी। वह क़ियामत का दिन होगा जिस दिन इन्सान है़रान व परेशान परवानों की तरह़ हो जाएँगे। जिस तरह़ परवाने बिना सरो सामान के मारे-मारे फिरते हैं, इसी तरह़ क़ियामत के दिन गुनाहगारों का ह़ाल होगा, मोमिन उस दिन इत्मिनान से होंगे।

5-11 وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۝ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝
فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ۝ نَارٌ حَامِيَةٌ ۝

पहाड़ों की ह़ालत-

उस दिन यह ऊँचे-ऊँचे पहाड़, धुन्का हुआ ऊन के समान रेशा-रेशा होकर हवा में टुकड़े-टुकड़े उड़ रहे होंगे और जब हिमालय जैसे पहाड़ उस रोज़ उड़ रहे होंगे, तो कौन सा कि़ला और महल है जो बाक़ी रहेगा।

क़ियामत का इन्कार करने वालों को इस बात से तअ़ज्जुब होता है कि पहाड़ जैसी मज़बूत चीज़ को किस तरह़ उखाड़ फेंका जाएगा, लेकिन इन लोगों ने इस पर ग़ौर नहीं किया कि जो ख़ुदा पहाड़ों को ज़मीन में गाड़ने पर क़ादिर (सक्षम) है, वह उनको टुकड़े-टुकड़े करके हवा में उड़ा देने पर क्यों न क़ादिर होगा? वर्तमान वैज्ञानिक दृष्टि से तो समझना और भी आसान हो गया है कि अगर एक ज़र्रे (अणु) में इतनी ताक़त है कि उसको तोड़ने के नतीजे में ज़बरदस्त धमाका हो सकता है तो पहाड़ों के ज़र्रों को तोड़ने

(spiliting) के नतीजे में क़ियामत क्यों बरपा नहीं हो सकती?

आ़माल का वज़न-

उस दिन जिस शख़्स के ईमान व आ़माल का पल्ला भारी होगा, वह पूरा-पूरा बदला पाएगा यानी जन्नत में दाख़िल हो जाएगा और जिसके ईमान व आ़माल का पल्ला हल्का होगा, उसका ठिकाना दहकती हुई आग यानी जहन्नम होगी।

इन आयतों में इशारा किया गया है कि लोग इससे धोखा न खाएँ कि वज़न और तौल तो उन चीज़ों का होता है जिनमें कोई बोझ और वज़न हो। इन्सान के आ़माल अच्छे हों या बुरे उनकी कोई साफ़ (स्पष्ट) शक्ल नहीं जिसको तौला जा सके, फिर आ़माल का वज़न कैसे होगा जबकि वहाँ के पैमाने दुनिया से बहुत भिन्न होंगे।

इसलिए हम आख़िरत में आ़माल के तौलने का पूरी तरह़ इस दुनिया में अन्दाज़ा नहीं कर सकते, लेकिन आज साइंस के अविष्कारों के दौर में भावों एवं दशाओं को नापने के लिए कई तरह़ के यंत्र ईजाद हो गए हैं।

यानी शरीर के ताप को जो एक दशा ही है थर्मामीटर के द्वारा नापा जाता है। इसी तरह़ हवा के दबाव को मालूम करने के लिए बैरोमीटर (Barometer) का प्रयोग किया जाता है और जब मनुष्य की दशाओं एवं भावों का नापना मुम्किन हो गया है तो ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले के लिए आ़माल तौलने वाली मीज़ान (तराज़ू) का पैमाना क़ायम करना क्या मुश्किल है?

यह भी मुम्किन है कि जिस मालिक ने पैदा किया वही आ़माल की कोई शक्ल बना दे। जैसा कि क़ुर्आन के बारे में है कि "क़ुर्आन एक अच्छे नौजवान की शक्ल में आएगा, वह पूछेगा तू कौन है? वह कहेगा, "मैं क़ुर्आन हूँ जिसे तू रातों और दिन को प्यासा रह कर पढ़ा करता था"।

इसी तरह़ मोमिन की क़ब्र में अच्छे अ़मल एक अच्छे रंग और ख़ुशबूदार नौजवान की शक्ल में आएगा और काफ़िर व मुनाफ़िक़ के पास इसके मुख़ालिफ़ शक्ल में। **(मुस्नद अह़मद)**

इसी तरह़ बुरे आ़माल के बारे में है कि बुरे आ़माल साँप, बिच्छू बनकर लिपटेंगे। ह़दीस में है कि जिस शख़्स ने माल की ज़कात अदा नहीं की, वह माल एक ज़हरीले सांप की शक्ल में उसकी क़ब्र में पहुँच कर उसको डसेगा और कहेगा कि मैं तेरा माल हूँ, तेरा ख़ज़ाना हूँ। इसी तरह़ मैदाने ह़श्र में इन्सान के अच्छे आ़माल उसकी सवारी बन जाएँगे और बुरे आ़माल बोझ बनकर उसके सर पर लादे जाएँगे।

एक दूसरी ह़दीस में है कि सूरः बक़रः और सूरः आले इ़मरान मैदाने ह़श्र में दो गहरे बादलों की शक्ल में आकर उन लोगों पर साया करेंगें जो इन सूरतों के पढ़ने वाले थे, यानी हमारे सारे आ़माल अच्छे व बुरे मरने के बाद ख़ास शक्ल में हो जाएँगे और मैदाने ह़श्र में सबसे बड़ा वज़न कलिमा 'लाइलाह इल्लल्लाहु' का होगा जिस पल्ले में यह कलिमा होगा वह सब पर भारी होगा।

कलिमे का वज़न-

तिर्मिज़ी शरीफ़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हश्र में मेरी उम्मत का एक आदमी सारी मख़्लूक़ के सामने लाया जाएगा और उसके निन्नानवें आ़माल-नामें (कर्मपत्र) लाए जाएँगे, उनमें से हर आ़माल नामा इतना लम्बा होगा कि जहाँ तक उसकी नज़र पहुँचती हो यह सब आ़माल-नामा बुराइयों और गुनाहों से भरे हुए होंगे। उस व्यक्ति से पूछा जाएगा कि इन आ़माल नामों में जो कुछ लिखा है, क्या यह सब सही है? या आ़माल नामा लिखने वाले फ़रिश्तों ने तुम पर कुछ ज़ुल्म किया है और ग़लत लिख दिया है।

वह कहेंगे, "ऐ हमारे पालनहार, जो कुछ लिखा है सब सही है और दिल में घबराएगा कि मालूम नहीं अब मेरी निजात हो सकती है कि नहीं? उस वक़्त अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा, आज किसी पर ज़ुल्म नहीं होगा, इन तमाम गुनाहों के मुक़ाबिले में तुम्हारी एक नेकी का पर्चा भी हमारे पास है, जिसमें तुम्हारा कलिमा "अशहदुअल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुह़म्मदर्रसूलुल्लाहि" यानी मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई अ़िबादत के लायक़ नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) आख़िरी रसूल या सन्देष्टा हैं।

वह कहेगा, ऐ हमारे पालनहार! इतनी बड़ी गुनाहों की सूची के मुक़ाबिले में यह छोटा सा पर्चा क्या वज़न रखेगा। उस वक़्त अल्लाह तआ़ला फ़रमाएँगे कि तुम पर ज़ुल्म नहीं होगा, एक पल्ला में वह सब गुनाहों से भरे हुए आ़माल नामे रखे जाएँगे और दूसरे में कलिमा का लिखा हुआ काग़ज़ का टुकड़ा रखा जाएगा, तो कलिमा वाला पल्ला भारी हो जाएगा और गुनाहों वाला पल्ला हल्का हो जाएगा।

इस क़िस्सा को बताने के बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, अल्लाह के नाम के मुक़ाबिले में कोई चीज़ भारी नहीं हो सकती। **(मज़हरी)**

नेकियों का वज़न-

"ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया, जिस मोमिन का पल्ला नेकियों की वजह से भारी होगा, वह अपने आ़माल के साथ जन्नत में भेजा जाएगा और जिसका पल्ला गुनाहों की वजह से भारी होगा वह अपने आ़माल के साथ जहन्नम में फेंक दिया जाएगा"। **(अल् बैहक़ी)**

इसी तरह ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अगर किसी बन्दे के फ़रायज़ में कोई कमी पाई जाएगी तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाएँगे कि देखो! इस बन्दे के पास कुछ नफ़्लें भी हैं या नहीं, यदि नफ़्लें होंगी तो फ़र्ज़ों की कमी नफ़्लों से पूरी कर दी जाएगी। **(अबूदा ऊद)**

इससे मालूम हुआ कि ह़श्र के मैदान में वज़न दो बार होगा। पहली बार कुफ़्र व ईमान का वज़न होगा जिसके ज़रिये मोमिन व काफ़िर में फ़र्क़ बताया जाएगा, उस वज़न में जिसके आ़माल नामे में सिर्फ़ कलिमा होगा उसका पल्ला भारी हो जाएगा और वह काफ़िरों के गिरोह से अलग कर दिया जाएगा, फिर दोबारा वज़न नेक व बद् आ़माल का होगा, उसमें किसी मुसलमान की नेकियाँ और किसी की बुराईयाँ

भारी होंगी, फिर उसी के मुताबिक़ उसको बदला मिलेगा।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़ियामत के दिन कुछ अच्छे मोटे ताज़े आदमी आएँगे, जिनका वज़न अल्लाह के यहाँ एक मच्छर के पर के बराबर भी न होगा"। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) के बारे में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "कि उनकी टांगे देखने में कितनी पतली हैं, लेकिन क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि क़ियामत के दिन तौलने के समय उनका वज़न उ़हद पहाड़ से भी ज़्यादा होगा।"

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "दो कलिमे ऐसे हैं जो ज़बान पर बहुत हल्के, मगर मीज़ानें अ़मल (तराज़ू) में बहुत भारी और अल्लाह के नज़्दीक बहुत महबूब" वह कलिमें यह हैं:-

"सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीम" **(बुख़ारी)**

हज़रत अबूदर्दा (रज़ि०) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "कि मीज़ाने अ़मल (आ़माल तौलने वाले तराज़ू) में अच्छे अख़्लाक़ के बराबर कोई चीज़ वज़नी नहीं होगी"।

(अबूदाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने ह़ब्बान)

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) से रिवायत है, रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम्हें ऐसे दो काम बताता हूँ जिन पर अ़मल करना इन्सान के लिए कुछ भी भारी नहीं और मीज़ाने अ़मल (तराज़ू) में वह सब से ज़्यादा भारी होंगे, एक हुस्न अख़्लाक़ (सद्व्यवहार) और दूसरे ज़्यादह ख़ामोश रहना" यानी बिना ज़रूरत न बोलना।

एक ह़दीस में है ह़श्र के मैदान में एक व्यक्ति ह़ाजिर होगा, जब उसका आ़माल नामा उसके सामने आएगा तो वह अपने नेक आ़माल को बहुत कम पाकर घबराएगा, इतने में अचानक एक चीज़ बादल की तरह़ उठकर आएगी और उसके नेक आ़माल के पल्ले में गिर जाएगी उसको बतलाया जाएगा कि यह तेरे उस अ़मल का बदला है जो तू दुनिया में लोगों को दीन की बातें और मस्ले मसायल बताता, सिखाता था और तेरी उस तअ़लीम का सिल्सिला आगे बढ़ा तो जिस-जिस व्यक्ति ने उस पर अ़मल किया उन सबके अ़मल में तेरा भी ह़िस्सा लगाया गया। **(मज़हरी)**

अहले इ़ल्म के क़लम की रोशनाई-

हज़रत इ़मरान बिन हुसैन (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़ियामत के दिन आ़लिमों की वह रौशनाई (इंक) जिससे उन्होंने इ़ल्म दीन और अहकामे दीन लिखे हैं, उसको और शहीदों के ख़ून को तौला जाएगा तो आ़लिमों की रौशनाई का वज़न शहीदों के ख़ून के वज़न से बढ़ जाएगा"।

इन तमाम ह़दीसों से आ़माल के वज़न करने के तरीक़े मुख़्तलिफ़ मालूम हुए।

(1) पहली बात तो यह है कि आ़माल को जिस्म बना कर तौला जाएगा।

(2) दूसरी बात यह है कि वह रजिस्टर तौले जाएँगे जिनमें इन्सान के आ़माल दर्ज (लिखे) होंगे।

(3) तीसरी बात यह मालूम हुई कि स्वयं अ़मल करने वाले व्यक्ति को तौला जाएगा।

इमाम इब्ने कसीर (क़ुर्आन के टीकाकार) कहते हैं कि तीनों बातें सही़ हो सकती हैं। **(तफ़्सीर इब्ने कसीर)**

आ़माल का वज़न बढ़ाने के लिए दो चीज़ें बहुत ज़रुरी हैंः-

(1) इख़्लास निः स्वार्थ भाव से।

(2) अ़मल व सुन्नत (यानी ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के तरीक़े पर होना।)

हाविया-

हाविया कहते हैं गढ़े या खड्ड को, यह जहन्नम का नाम है। इस नाम की संज्ञा देने का कारण यह है कि यह बहुत गहरी होगी और इसमें दोज़ख़ वालों को ऊपर से फेंक दिया जाएगा, जो दहकती हुई आग से भरी होगी।

जैसे- मौजूदा साइंसदानों के अनुसार सूरज का तापमान 27 मिलियन डिग्री फ़ोरम हाइट, उसका अक्षांस पृथ्वी के अक्षांस से 109 गुना बड़ा और उसकी मोटाई पृथ्वी की मोटाई से तीन लाख तैंतीस हज़ार गुना ज़्यादह है। सूरज वास्तव में गर्म गैसों का संग्रह है जिस से इसमें ज़बरदस्त चुम्बकीय तूफ़ान उठते रहते हैं।

साइंस द्वारा ली गई जानकारियों से सूरज की अथाह विशालता उसकी अनुमान रहित गहराई और उसके ताप का अंदाज़ा होता है, तो क्या जिस अल्लाह ने इतनी बड़ी-बड़ी चीज़ें पैदा की हैं उसे जहन्नम का बनाना कोई मुश्किल काम है? हरगिज़ नहीं।

(भाग–102)

सूर–ए–तकासुर

(सूरः नं. 102)

सूरः तकासुर का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्की है। इसमें तकासुर (धन दौलत को ज़्यादह से ज़्यादह हासिल करने की इच्छा) को हक़ीक़ी आख़िरत की ज़िन्दगी से बेपरवाही की वजह बताया है।

इब्ने अबी हातिम ने अबू बुरैदा (रज़ि०) का क़ौल (कथन) नक़्ल किया है कि यह सूरः अन्सार के दो क़बीलों बनी हारिसा और बनी हर्स के बारे में उतरी, दोनों क़बीलों ने एक-दूसरे के मुक़ाबिले में पहले अपने जीवित व्यक्तियों का बख़ान किया, फिर क़ब्रस्तान जाकर अपने-अपने मरे हुए लोगों का बखान किया।

उस पर यह सूरः नाज़िल हुई कि लोग दुनिया के सामान की बढ़ौतरी में एक-दूसरे से आगे निकलने की कोशिश उम्र भर करते रहते हैं यहाँ तक कि मौत आ जाती है और क़ब्र तक जा पहुँचते हैं, बल्कि क़ब्रस्तान पर भी अपने आदमियों की संख्या दूसरों से ज़्यादा सिद्ध करने के लिए क़ब्रों की गिनती करने लगते हैं कि हमारे मुर्दे तुम्हारे मुर्दों से अधिक हैं। जल्द ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि माल, औलाद, साथी व रिश्तेदारों की ज़्यादती कोई काम नहीं आई।

आयत नं० 1 से 8 तक

أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ ۝ حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ۝ لَتَرَوُنَّ
الْجَحِيمَ ۝ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ۝ ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۝

अनुवाद-

(1) (लोगो!) एक-दूसरे से (धन में) बढ़ने की इच्छा ने तुमको गफ़्लत में डाल रखा है, (2) यहाँ तक कि तुम क़ब्रों तक पहुँच जाते हो। (3) देखो, तुमको बहुत जल्द मालूम हो जाएगा। (4) फिर सुन लो, तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा। (5) सत्य यह है कि अगर तुम्हें सच्चा इल्म हो जाता, (तो दुनिया के पीछे न पड़ते) (6) तुम ज़रूर दोज़ख देखोगे। (7) फिर तुम अपनी आँखों से ऐसा साफ़-साफ़ देखोगे कि तुमको यक़ीन आ जाएगा। (8) फिर उस दिन तुमसे नेअ़मतों के बारे में ज़रूर पूछा जाएगा।

सूरः तकासुर की संक्षिप्त व्याख्या

1-8 أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ ۝ حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ
عِلْمَ الْيَقِينِ ۝ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ۝ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ۝ ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۝

इन्सान की ह़ालत-

'तकासुर' जिस का अर्थ होता है (धन दौलत को ज़्यादह से ज़्यादह ह़ासिल करने की इच्छा) इस सूरः में ग़ाफ़िल और काफ़िर इन्सानों की ह़ालत बयान की गई है कि वह दुनिया में ऐ़श के सामान इकट्ठा करने में ऐसा डूब जाता है कि वह अपने ज़िन्दगी का मक़्सद और मंज़िल को भूल जाता है।

ऐ इन्सान! तू सारी दौड़, धूप और सारे प्रयास धन दौलत इकट्ठा करने और सत्ता को ह़ासिल करने के लिए करता रहता है, लेकिन यह नहीं सोचता कि क्या दुनिया की ही ज़िन्दगी सब कुछ है या इसके आगे भी और कुछ है? वास्तव में इसका अस्ल ठिकाना तो मरने के बाद की ज़िन्दगी है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "आदमी के पास अगर दौलत से भरी दो वादियाँ हों तो वह तीसरी की तमन्ना करेगा, आदमी का पेट तो मिट्टी ही भर सकती है यानी आदमी के लालच की ज़िन्दगी मिट्टी में मिल जाने के बाद ही ख़त्म हो सकती है।

यह सब कुछ बहुत जल्द खुल जाएगा कि धन दौलत की ज़्यादती और संसारिक साज़ो-सामान का बड़ी मात्रा में ह़ासिल हो जाना अस्ल कामियाबी नहीं है, बल्कि अस्ल कामियाबी आख़िरत के नेअ़मतों की प्राप्ति है। अगर क़ुर्आन की ख़बर पर यक़ीन हो तो इन्सान इस दुनिया के पीछे पड़ कर बेपरवाही की ज़िन्दगी हरगिज़ न गुज़ारे, बल्कि उस दिन (क़ियामत) की तैयारी करे।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं, "तुम जहन्नम को मानो या न मानो उसका आना बहरह़ाल एक

हक़ीक़त है और वह दिन ज़रूर आएगा जिस दिन कि तुम अपनी आँखों से देख लोगे। आज जिस चीज़ को तुम नहीं मान रहे हो कल जब तुम्हारे सामने आ जाएगी तो तुम्हें पूरा यक़ीन हो जाएगा"।

नेअ़मतों की पूछताछ-

अल्लाह तआ़ला ने जो दुनिया में नेअ़मतें दे रखी हैं, क़ियामत के दिन उनके बारे में पूछेगा कि हमने तुम्हें यह नेअ़मतें दी थीं। जैसे- सांस, धन-दौलत, औलाद आदि। इसलिए इन सब नेअ़मतों पर अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए और इन सब को उन कामों में इस्तेमाल करना चाहिए जो उसका मालिक पसंद करे, इस तरह़ अगर इन्सान अल्लाह तआ़ला के ह़क़ को अदा करे तो क़ियामत के दिन उसके लिए जवाब में आसानी होगी।

"ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन बन्दे के क़दम हट न सकेंगे जब तक कि पाँच सवालों का जवाब उससे न ले लिया जाए।

1– एक यह कि उसने उ़म्र को किन कामों में ख़र्च किया।

2– दूसरे उसने जवानी कहाँ लगाई।

3–- तीसरे यह कि जो माल उसने ह़ासिल किया था वह किस-किस तरीक़े से ह़ासिल किया।

4– चौथे यह कि उस माल को कहाँ-कहाँ ख़र्च किया।

5– पाँचवें यह कि जो इ़ल्म अल्लाह ने उसको दिया था, उस पर कितना अ़मल किया। **(बुख़ारी)**

एक दूसरी जगह पर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "कि क़ियामत के दिन बन्दे से सबसे पहले तन्दुरुस्ती के बारे में पूछा जाएगा कि क्या हमने तुमको तन्दुरुस्ती नहीं दी थी और क्या हमने तुमको ठंडा पानी नहीं पिलाया था?"

इसी तरह़ क़ियामत के दिन दुनिया की तमाम नेअ़मतों के बारे में सवाल होगा चाहे उसका तअ़ल्लुक़ खाने-पीने से हो या लिबास या मकान से या बीवी और औलाद से या हुकूमत व इ़ज़्ज़त से। **(क़ुर्तुबी)**

इस सूरः की विशेषता-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने सह़ाबा (रज़ि०) से फ़रमाया, क्या तुममे कोई व्यक्ति इसकी क़ुद्‌रत नहीं रखता कि हर दिन क़ुर्आन की एक हज़ार आयतें पढ़ा करे?" सह़ाबा (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया कि हर दिन एक हज़ार आयतें कौन पढ़ सकता है, तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क्या तुम में से कोई 'अल्हाकुमुत्तकासुर' की सूरः नहीं पढ़ सकता?" यानी यह एक हज़ार आयतों के पढ़ने के बराबर है (लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि क़ुर्आन की दूसरी सूरतें न पढ़ी जाएँ।)

(भाग-103)

सूर-ए-अ़स्र

(सूरः नं. 103)

सूरः अ़स्र का संक्षिप्त परिचय

इस सूरः के मक्की व मदनी होने में उ़लमा का मतभेद है, लेकिन ज़्यादहतर लोगों का कहना है कि यह सूरः मक्की है।

इस में बताया गया है कि इन्सान अपनी ज़िन्दगी के ज़माने की क़द्र करे, इसलिए कि ज़िन्दगी के दिन तो कम ही होते रहते हैं। अगर इसने इस वक़्त को क़ीमती न बनाया तो आख़ीर में इन्सान घाटा और ख़सारा उठाएगा।

घाटे खसारे से बचने का तरीक़ा यह है कि अपने मालिक की बात मान कर उसके मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे, नेक काम करे और आपस में एक दूसरे को ईमानदारी के साथ अच्छे काम की नसीह़त करे और समझाए। फिर अच्छे कामों में जो दुश्वारियाँ आएँ उन पर सब्र के साथ बर्दाश्त करे और मुसीबतों की परवाह न करके ह़क़ पर क़ायम रहे।

आयत नं० 1 से 3 तक

وَالْعَصْرِ ۝ إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

अनुवाद-

(1) अ़स्र (ज़माने) की क़सम, (2) बेशक इन्सान बड़े घाटे में है, (3) मगर उन लोगों के सिवा जो ईमान लाए और भले काम करते रहे और एक दूसरे को ह़क़ (सत्य) की नसीह़त करते रहे, और सब्र की ताक़ीद करते रहे।

सूरः अ़स्र की संक्षिप्त व्याख्या

1-3 وَالْعَصْرِ ۝ إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

यह सूरः क़ुर्आन की बहुत छोटी सूरतों में से एक अहम सूरः है।

क़ुर्आन में बहुत सी चीज़ों की कई जगह क़सम खाई गई है जो गवाही और दलील के तौर पर है, यहाँ ज़माने की क़सम भी इसी अर्थ में है।

अल्लाह तआ़ला ने इस सूरः में ज़माने की क़सम खाकर फ़रमाया, “इन्सान बड़े घाटे में है” और इस घाटे से केवल वही लोग मह़फ़ूज़ रह सकते हैं जिन के अन्दर यह चार गुण हों:-

1- ईमान (अल्लाह पर आस्था और ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अन्तिम महाईशदूत मानना)
2- नेक अ़मल।
3- दूसरों को ह़क़ की नसीह़त।
4- सब्र की वसीयत करना।

ज़माने की क़सम खाने की वजह-

1- इन्सान की सबसे क़ीमती पूँजी समय है, जो गुज़रते हुए ज़माने का एक भाग है और वह तेज़ी से गुज़र रहा है, जिस तरह़ बर्फ़ हर वक़्त पिघलती रहती है। यदि बर्फ़ का व्यापारी जल्द बेच कर उसकी क़ीमत वसूल न ले तो बर्फ़ ख़त्म हो जाएगी और उसे घाटा ही घाटा होगा। इसी तरह़ इन्सान को जो उ़म्र मिली है उस से यदि वह फ़ायदा न उठाए अपने आख़िरत (परलोक) का सामान इकट्ठा न करे तो वह घाटे में रहेगा क्योंकि इन्सान के जो भी क्षण गुज़र रहे है उसकी पूँजी बराबर घट रही है। इसलिए समय को उन कामों में लगाना चाहिए जो हमारी आख़िरत (परलोक) को संवारने वाले हों।

2- दूसरी वजह ज़माने को गवाह बनाने की यह है कि इतिह़ास की वह घटनाएँ जो अल्लाह के अ़ज़ाब (प्रकोप) की निशानी है कि जिन कौमों ने कुफ़्र, सरकशी और सच्चाई की मुख़ालिफ़त की और उपद्रव की राह अपनाई वह तबाह हुए यानी ज़माना इस बात को स्पष्ट करता है कि तबाही से बर्बाद होने

वाले कौन हैं और बचने वाले कौन हैं।

3- तीसरी वजह गवाह बनाने की यह हो सकती है कि यह दुनिया एक तरफ़ तो इम्तिहान हाल है जिसके लिए इसे कई विषय के पेपर एक समय तक के लिए दिये गये हैं, लेकिन कोई व्यक्ति पेपर हल करने के बजाए तफ़रीह में पूरा समय गुज़ार दे तो वह निश्चय ही अपना नुक़्सान करेगा।

4- चौथी वजह यह भी हो सकती है कि दुनिया के ख़ात्मे का समय क़रीब है यानी अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की बेअ़सत (अभ्युदय) और क़ियामत के बीच केवल इतना ही फ़ासला है जितना कि इन्सानी आबादी की कुल उ़म्र है। यदि कुल उ़म्र को एक दिन मान लें तो उम्मते मुहम्मदिया की उ़म्र केवल अस्र (अपरान्ह) और मग़्रिब (सूर्यास्त) के बीच का जितना समय होता है उतना ही होगा। अतः हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

"जो उम्मतें गुज़र चुकीं उनके मुक़ाबिले में तुम्हारा दुनिया में रहना उतने ही समय के लिए है जितना समय अ़स्र की नमाज़ और सूरज डूबने के बीच का होता है।

एक दूसरी जगह पर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "हर व्यक्ति जब सुबह़ को उठता है तो अपनी जान का सरमाया तिजारत पर लगाता है, फिर कोई तो अपने उस सरमाया को नुक़्सान होने से बचा लेता है और कोई हलाक कर डालता है"।

5- इस तरह़ जब ज़माना इन्सान का सरमाया है और इन्सान उसका ताजिर है तो आ़म ह़ालत में इस ताजिर का घाटे में होना इसलिए साफ़ है कि इस इन्सान का सरमाया कोई पदार्थ जैसा नहीं। यदि कुछ दिन बेकार भी रखे तो अगले दिन में काम आ सके, बल्कि यह तो बराबर जारी रहने वाला सरमाया है। जो हर सेकेन्ड गल रहा है इसकी तिजारत करने वाले को बड़ा होशियार और चौकस होना चाहिए जो बहती हुई चीज़ से भी फ़ायदा उठा ले।

इसलिए इन्सान को चाहिए कि क़ुर्आन ने जिन चार चीज़ों की ओर घाटे से बचने का संकेत दिया है उस के प्रयोग में ज़रा भी ग़फ़लत न करे, उ़म्र के एक-एक सेकेण्ड की क़द्र करें।

ईमान-

ईमान किसी की बात को किसी के एतिमाद पर यक़ीनी तौर से मान लेने का नाम है और दीन की ख़ास इस्तिलाह़ (पारिभाषिक अर्थ) में ख़बरे रसूल के एतिमाद पर यक़ीनी तौर से मान लेने का नाम ईमान है और जो व्यक्ति अल्लाह तआ़ला पर उस की निशानियों पर ईमान लाए और अपना सब कुछ उसे सौंप दे, उसके किये हुए फ़ैसलों पर राज़ी हो जाए वही मोमिन है।

ईमान अ़क़्ल के लिए हिदायत व रौशनी है, दिल के लिए पाकीज़गी, इसलिए कि यह अ़क़्ल और इरादा दोनों को एक साथ प्रभावित करता है और अ़क़ीदा व अ़मल सब पर भारी पड़ जाता है।

अतः क़ुर्आन के मुताबिक़ मोमिन वह व्यक्ति हुआ जो ख़ुदा का मुख़्लिस (निः स्वार्थ) बन्दा हो, अल्लाह के हुक्मों, आयतों और उसकी फ़रमाँबरदारी को मुहब्बत के साथ राज़ी करने के लिए करता हो।

चूँकि ईमान की जगह दिल और अ़क़्ल है, अ़क़्ल व दिल के मामले में इन्सान न केवल दूसरों को धोखा दे सकता है बल्कि कभी-कभी ख़ुद भी धोखे में रहता है, वह समझता है कि मैं मोमिन हूँ जबकि वह मोमिन नहीं होता। इसी वजह से ईमान के लिए दो गवाह बनाए गए हैं एक क़ौल (कथन) और दूसरा अ़मल।

चूँकि क़ौल (कथन) भी झूठा हो सकता है, इस वजह से केवल ज़बान से इक़रार करने वाला मोमिन नहीं क़रार दिया जाएगा, बल्कि ज़रूरी यह है कि आदमी का अ़मल उसके ईमान की गवाही दे यानी 'अ़मल' ईमान की ह़क़ीक़ी कसौटी है। इसलिए आख़िरत के हमेशा की ज़िन्दगी से वही लोग मह़फ़ूज़ रहेंगे जो ईमान लाकर भलाई के कामों में अपनी ज़िन्दगी ख़र्च करें।

आ़माले सालिह़ा (नेक अ़मल)-

यह ऐसा शब्द है जिसमें हर तरह़ के अच्छे और नेक आ़माल आ जाते हैं। नेक अ़मल की जड़ अल्लाह की फ़रमाँबरदारी है, अतः जो अल्लाह की नाफ़रमानी करता है वह केवल अपना ही दुश्मन नहीं होता बल्कि वह तमाम दुनिया का भी दुश्मन होता है। इसलिए कि उस के नज़्दीक केवल अपना ही स्वार्थ होता है, इस वजह से वह अल्लाह के हुक्मों को नफ़रत से देखता है और इस बात पर ध्यान नहीं देता कि वास्तव में उसकी उन्नति से सब की उन्नति (तरक़्क़ी) प्रभावित होती है और नेक लोगों पर तो सारे संसार का सुधार निर्भर होता है।

सालिह़ीन (नेक लोग) जो कुछ सोचते हैं, पूरे संसार के लिए सोचते हैं, वह केवल अपने ही ज़माने के लोगों के लिए कामियाबी नहीं चाहते, बल्कि वह तमाम मौजूदा और बाद में आने वाले लोगों के लिए भी कामियाबी चाहते हैं।

ह़क़ व सब्र-

ह़क़ व सब्र की दअ़वत (मंत्रणा)। ह़क़ बात उस को कहते हैं जो सच्ची, न्याय पर आधारित और ह़क़ीक़त के मुताबिक़ हो। यह बातिल (असत्य) का विलोम है जो पूरे दीने-ह़क़ (सत्य धर्म) पर लागू होता है और उसकी शिक्षाओं को लोगों के सामने पेश किया जा सके। इसके अतिरिक्त यह उन चीज़ों पर भी लागू होता है जिनका अदा करना नैतिक और क़ानूनी रूप से इन्सान पर ज़रूरी है। जैसे- अल्लाह का ह़क़, माँ-बाप का ह़क़, रिश्तेदारों का ह़क़, पड़ोसियों का ह़क़, ग़रीबों और मोह़ताजों का ह़क़ आदि।

वतवासौ बिस्सब्र-

'तवासौ' शब्द वसीयत से बना है यानी किसी व्यक्ति को ताकीद के साथ नसीह़त करने और नेक काम की हिदायत करने का नाम वसीयत है। इसी वजह से मरने वाला जो अपने बाद के लिए कुछ हिदायतें देता है उसको भी वसीयत कहा जाता है।

इस तरह़ एक ह़क़ की नसीह़त, दूसरे सब्र की वसीयत यानी सह़ी अ़क़ीदा नेक आ़माल और सब्र

करना यानी तमाम गुनाहों और बुरे कामों से बचना, ह़क़ को कुबूल करना तथा उस का ताईद (समर्थन) करना और सच बात कहना। यह सब सब्र की वसीयत में आते हैं।

सच्चाई के रास्ते पर चलने के नतीजे में तरह़-तरह़ की कठिनाइयाँ सामने आती हैं, तक्लीफ़ों का सामना करना पड़ता है या विरोध के तूफ़ान से गुज़रना पड़ता है। नुक़्सान भी बर्दाश्त करना पड़ता हैं, कुर्बानियाँ भी देनी पड़ती हैं इसलिए ह़क़ के साथ सब्र इस्तिक़ामत (दृढ़ता) तहम्मुल एवं बुर्दबारी (सहिष्णुता एवं सहनशीलता) हिम्मत और ह़ौसले का होना भी ज़रूरी है। सब्र में यह तमाम बातें शामिल हैं इसलिए सब्र की नसीह़त को ज़रूरी क़रार दिया गया है।

दअ़वत व तब्लीग़ की अहमियत-

इस सूरः से मालूम हुआ कि इन्सान को अपने आ़माल, क़ुर्आन व सुन्नत के मुताबिक़ कर लेना जितना अहम और ज़रुरी है उतना ही अहम और ज़रुरी यह भी है कि दूसरे तमाम इन्सानों को ईमान और नेक आ़माल की ओर बुलाने की अपनी ताक़त भर पूरी कोशिश, सिर्फ़ अपने अ़मल से ही निजात मिलना काफ़ी नहीं है।

इसीलिए क़ुर्आन व ह़दीस में हर मुसलमान पर उसकी क्षमता, योग्यता के मुताबिक़ लोगों को अच्छाई के फैलाने और बुराई से रोकने का हुक्म दिया गया है।

इस सूरः के विषय में 'इमाम शाफ़ई रह़मतुल्लाहि अ़लैहि' ने फ़रमाया, कि यदि लोग सिर्फ़ इसी सूरः में ग़ौर व फ़िक्र कर लेते तो यही एक सूरः उनके निजात के लिए काफ़ी हो जाती। **(इब्ने कसीर)**

(भाग–104)

सूर–ए–हुमज़ः

(सूरः नं. 104)

सूरः हुमज़ः का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का में नाज़िल हुई। इस में इन्सान को ख़बरदार किया गया है कि जिन चीज़ों में वह यहाँ हर वक़्त फ़ंसा रहता है, वह उसे दोज़ख़ में ले जाकर छोड़ेंगी, इसलिए कि ज़्यादहतर लोग दूसरों को अपने से कमतर समझ कर उन का बयान बहुत हिक़ारत से करते हैं, उन्हें ताना देते हैं, उन के ऐ़ब सच्चे या झूठे उछालते हैं, उनका अपना काम यह है कि पैसा जमा करने में लगे रहते हैं उसे बार-बार गिन-गिन कर तिजोरियों में रखते हैं, समझते हैं कि पैसा ही सब कुछ है और वह सब आफ़तों से बचा लेगा।

याद रखो! कि पैसा किसी के पास न हमेशा रहा है न रहेगा। अगर तुम्हारा यही तरीक़ा रहा तो मरने के बाद दोज़ख़ की आग में झोंक दिये जाओगे और फिर हर तरफ़ से उसके दरवाज़े बन्द कर दिये जाएँगे।

आयत नं० 1 से 9 तक

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ۝ الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ۝ يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ۝ كَلَّا ۖ لَيُنبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝ نَارُ اللَّهِ
الْمُوقَدَةُ ۝ الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ ۝ إِنَّهَا عَلَيْهِم مُّؤْصَدَةٌ ۝ فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝

अनुवाद–

(1) तबाही है हर उस व्यक्ति के लिए जो ताने देता है, (और) बुराइयाँ करने का आदी है। (2) जिसने माल जमा किया और उसे गिन-गिन कर रखा। (3) वह समझता है कि उसका माल हमेशा उसके पास रहेगा। (4) हरगिज़ नहीं, वह व्यक्ति 'हुतमा' (कुचल देने वाली) में फेंक दिया जाएगा, (5) और आप को क्या मालूम कि 'हुतमा' क्या है? (6) वह अल्लाह की भड़काई हुई आग, (7) जो दिलों पर जा चढ़ेगी। (8) बेशक वह उनमें (चारों तरफ से) बंद कर दिये जाएँगे (9) (वे) ऊँचे-ऊँचे सुतूनों (आग के स्तम्भों) में होंगे।

सूरः हुमज़ः की संक्षिप्त व्याख्या

1-4 وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ۝ الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ۝ يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ۝ كَلَّا ۖ لَيُنبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۝

इस सूरः में तीन बड़े गुनाहों पर सख़्त अ़ज़ाब के विषय में ख़बरदार किया गया है। वह तीन गुनाह यह हैं:-

हुमज़ः– यानी ग़ीबत, चुग़ली या किसी के पीठ पीछे उसके ऐबों का ज़िक्र करना।

लुमज़ः– यानी आमने-सामने किसी को ताना देना और बुरा कहना, यह दोनों ही चीज़ें बड़े गुनाहों में से हैं।

इसीलिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह के बन्दों में सबसे बुरे वह लोग हैं जो चुग़लख़ोरी करते हैं और दोस्तों के बीच में फ़साद डलवाते हैं और बेगुनाह लोगों के ऐब तलाश करते रहते हैं"।

माल–

तीसरी चीज़ जो इस आयत में बताई गई है वह है माल की लालच व मुहब्बत। दौलत के पुजारियों को हमेशा धन की फ़िक्र लगी रहती है और लालची पूँजीपति हमेशा पूँजी ही की उलट फेर में लगे रहते हैं, उन का दिल कारोबार में अट्का हुआ होता है, उनका दिमाग़ हिसाब किताब में लगा रहता है, उनका ध्यान पूँजी की वृद्धि और बैंक बैलेंस के बढ़ाने में लगा रहता है। यह फ़िक्र इतना सताती है कि न उन्हें खुदा और आख़िरत के बारे में कुछ सोचने की फ़ुर्सत होती है और न ही वह नसीहत की बातें सुनने के लिए आमादा होते हैं और न ख़ुदा के बन्दों का जो हक़ है वह अदा करते हैं, फिर जमा करने की कोई हद नहीं होती है। लखपति बन जाने के बाद करोड़पति बनना चाहते हैं, फिर अ़रबपति पूँजीपति

इस धोखे में मुब्तिला हो जाते हैं कि दौलत उनके लिए ज़िन्दग़ी है और उनकी इ़ज़्ज़त है।

हालाँकि दौलत न ज़िन्दग़ी है और न ठहरने वाली चीज़। यदि इसमें ज़िन्दग़ी होती तो वह इन्सान को ज़रूर दिल का सुकून अ़ता करती, जबकि मालदारों को यही चीज़ नसीब होती है। अल्बत्ता इन्सान को हमेशा की ज़िन्दग़ी अ़ता करने वाली चीज़ परहेज़गारी (तक़्वा) है न कि दौलत।

क़ुर्आन धन जमा करने की इस सूरत को बुरा क़रार देता है सिवाय इसके कि आदमी अपनी और अपने घरवालों की जरुरतों के लिए दौलत रोके रखे।

5-9 وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝ الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝ فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝

हुतमः-

हुतमः कहते हैं, चूर-चूर कर देने वाली चीज़ और कुचलने वाली को और यह जहन्नम का नाम है। "ह़म्ज़ः व लम्ज़ः" वह बुरी चीज़ें हैं, जिसका ज़िक्र आयत नं० (1) में हुआ कि जो व्यक्ति अल्लाह के नेक बन्दों की इ़ज़्ज़त के परखचे उड़ाएगा तो उसे अपमान करने के जुर्म में वह आग उसे कुचल डालेगी और इसका पता उसी समय चलेगा जबकि वह जहन्नम में अपमान के साथ फेंका जाएगा और यह जहन्नम की आग उसके दिलों में पहुँच जाएगी। यूँ तो हर आग की सिफ़त यही है कि जो चीज़ उसमें पड़ती है, उस को जला देती है। जब इन्सान उस में डाला जाएगा तो उसके सारे अंगों के साथ दिल भी जल जाएगा।

यहाँ जहन्नम की आग की यह ख़ासियत इसलिए ज़िक्र की गई है कि दुनिया की आग जब इन्सान के जिस्म को लगती है तो उस के दिल तक पहुँचने से पहले ही मौत आ जाती है, लेकिन जहन्नम में ऐसा नहीं होगा इसलिए कि वहाँ मौत भी नहीं आएगी और दिल जलेगा तो कितनी तक्लीफ़ होगी।

यानी समझदार इन्सान वह है, जो दुनिया में ही समझ कर अपना सुधार मरने से पहले कर ले।

(भाग–105)

सूर–ए–फ़ील

(सूरः नं. 105)

सूरः फ़ील का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का में नाज़िल हुई। इसके पहली आयत में अस्हाबुल् फ़ील (हाथी वालों) का ज़िक्र हुआ है, इस मुनासिबत से इस सूरः का नाम अलूफ़ील है।

यह पूरी सूरः उस ऐतेहासिक घटना के इ़बरतनाक (शिक्षाप्रद) पहलुओं पर आधारित है जो 'फ़ील' की घटना के नाम से मश्हूर है कि अब्रहा ने कअ़बः को ढ़ाने के लिए हाथियों की फ़ौज लेकर मक्का पर चढ़ाई कर दी थी (ताकि लोग इस कअ़बः को छोड़कर उस की ओर जो उसने 'सन्आ़', यमन में बनाया था उसकी ओर आएँ।) जब यह कअ़बः के पास पहुँचा तो आसमान से झुण्ड के झुण्ड परिंदे आए और उस की फ़ौज पर कंकरियाँ बरसा कर सब को तबाह कर डाला।

आयत नं० 1 से 5 तक

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝ أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ۝ وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝ تَرْمِيهِم بِحِجَارَةٍ مِّن سِجِّيلٍ ۝
فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ۝

अनुवाद-

(1) क्या आप ने नहीं देखा कि आपके रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया? (2) क्या उन की तदबीर (उपाय) को बेकार नहीं कर दिया? (3) और उन पर परिंदों के झुंड के झुंड भेजे, (4) उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर फेंक रहे थे। (5) तो उनको ऐसा कर दिया, जैसे- खाया हुआ भूसा।

सूरः फ़ील की संक्षिप्त व्याख्या

1-3 أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝ أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ۝ وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝

इस सूरः में अस्हाबे फ़ील (हाथी वाले) की घटना का बयान है। जब उन्होंने बैतुल्लाह (कअ़बः) को ढ़ाने के लिए हाथियों की फ़ौज लेकर मक्का पर चढ़ाई की, तो अल्लाह तआ़ला ने छोटे-छोटे परिन्दों के ज़रिये उन की फ़ौज पर आसमानी अ़ज़ाब भेजा, जिससे वह ख़ाक में मिल गए।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की पैदाइश के साल की घटना-

यह घटना उस साल हुई जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का जन्म हुआ। इब्ने कसीर ने इसे इस तरह़ बयान किया हैः-

"यमन पर 'हिम्यरी' का क़ब्ज़ा था, यह लोग मुश्रिक थे, इनका आख़िरी बादशाह 'ज़ूनवास' था, जिसने उस ज़माने के अहले ह़क़ (यानी नसार ईसाईयों) पर बहुत ज़ुल्म कर रखा था, उस ने एक बार लम्बी चौड़ी ख़न्दक़ खुद्वा कर उसको आग से भर दिया और जितने नस्रानी बुत्परस्ती के ख़िलाफ़ एक अल्लाह की अ़िबादत करने वाले थे सबको उस आग की ख़न्दक़ में डलवा कर जला दिया"।

(यही वह ख़न्दक़ है, जिस का ज़िक्र "अस्ह़ाबे उख़दूद के नाम से सूरः बुरूज में हो चुका है"।)

इन में से दो आदमी किसी तरह़ यहाँ से निकल भागे, उन्होंने मुल्क शाम के बादशाह से जाकर कहा, 'ज़ूनवास' ने नसारा (ईसाईयों) पर बड़ा ज़ुल्म कर रखा है, आप उससे बदला लें। मुल्क शाम के बादशाह ने 'हब्शा' के बादशाह को ख़त लिखा (यह भी नसरानी था, जो यमन के क़रीब का रहने वाला था) कि आप उस ज़ालिम से ज़ुल्म का बदला लें।

हब्शा के बादशाह ने फ़ौरन अपनी फ़ौज को दो टुकड़ों में बाँट दिया, जिस में से एक का कमाण्डर 'इ़रबात' और दूसरे का 'अबरहा' को बना कर भेज दिया। फ़ौज ने क़ौम को 'हिम्यरी' के क़ब्ज़े से आज़ाद करा दिया, 'ज़ूनवास' भागा और नदी में डूब कर मर गया।

इस तरह़ 'इरबात' और 'अब्रहा' के ज़रिये यमन पर हब्शा के बादशाह का क़ब्ज़ा हो गया। 'इरबात' और 'अब्रहा' की आपसी जंग हुई जिसमें 'इरबात' क़त्ल कर दिया गया और अब्रहा को बादशाह हब्शा नज्जाशी की तरफ़ से यमन का गवर्नर बना दिया गया। उसने यमन में इरादा किया कि वह यहाँ एक ऐसा कनीसा बनाए जो दुनिया में सबसे बेहतर हो।

इस से उसका मक़्सद यह था कि यमन के लोग जो मक्का जा कर कअ़बः का तवाफ़ करते हैं, वहाँ न जाएँ और इसी कनीसा का तवाफ़ करें। इस ख़याल से उसने इतना शानदार और ऊँचा कनीसा (अ़िबादत गाह) बनवाया कि नीचे खड़ा होने वाला आदमी उस की चोटी को नहीं देख सकता था और उसे ख़ूब सोने, चाँदी, हीरे, जवाहरात से सजाकर एलान करवा दिया कि ह़ज के लिए अब यमन से कोई न जाए बल्कि इसी कनीसा के सामने अ़िबादत और तवाफ़ करे।

अ़रब में मूर्तिपूजा बहुत आ़म हो चुकी थी, लेकिन इसके बावजूद उनमें ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की इ़ज़्ज़त व एहतिराम करने का जज़्बा बाक़ी था और उनमें कअ़बः की इ़ज़्ज़त बहुत ज़्यादा थी। इस वजह से अद्नान, कह़तान व क़ुरैश के क़बीलों में ग़ुस्से की लहर दौड़ पड़ी यहाँ तक कि उसमें से किसी ने रात के वक़्त जाकर उस कनीसा को गंदा कर दिया और कुछ लोगों का ख़याल तो इस तरह़ है कि कनीसा के क़रीब किसी ने अपनी ज़रुरत के लिए आग जलाई जिस से कनीसा में आग लग गई और वह बुरी तरह़ प्रभावित हुआ।

'अब्रहा' को बताया गया कि किसी क़ुरैश ने यह मामला किया है तो उस ने क़सम खाई कि मैं उनके कअ़बः की ईंट से ईंट बजा दूँगा और इस की इजाज़त उसने नज्जाशी से माँगी, नज्जाशी ने उस को महमूद नाम का एक हाथी भेज दिया और उस के साथ में आठ बहादुर हाथी कअ़बः पर हमला के लिए भेज दिये, ताकि बैतुल्लाह को ढ़ा सके।

अ़रब में जब इस ह़मले की ख़बर पहुँची तो पूरा अ़रब मुक़ाबिले के लिए तैयार हो गया।

अब्रहा का लश्कर-

'अब्रहा' जब क़बील-ए-खैशम के मक़ाम पर पहुँचा तो उस क़बीले के सरदार 'नुफ़ैल बिन हबीब' ने पूरे क़बीले के साथ 'अब्रहा' का मुक़ाबिला किया, मगर 'अब्रहा' के लश्कर ने उन को हरा दिया और 'नुफ़ैल बिन हबीब' को क़ैद कर के 'अब्रहा' ने क़त्ल करने का इरादा किया, मगर यह समझकर उन को ज़िन्दा रखा कि उन से हम रास्तों का पता मालूम करेंगे। उसके बाद जब यह लश्कर तायफ़ के क़रीब पहुँचा, तो तायफ़ के रहने वाले क़बील-ए-सक़ीफ़ चूँकि पिछले क़बीलों की जंग और अब्रहा की फ़तेह़ का क़िस्सा सुन चुके थे) इसलिए उन्होंने यह तय किया कि तायफ़ में जो हमारा एक बड़ा मन्दिर 'लात' के नाम से है यदि यह उस को न छेड़े तो हम उस का मुक़ाबिला न करें, उन्होंने अब्रहा से मिलकर यह भी तय कर लिया कि हम तुम्हारी मदद और रहनुमाई के लिए अपना एक सरदार 'अबूरिगाल' को तुम्हारे साथ भेज देते हैं, अब्रहा उस पर राज़ी हो गया।

क़ुरैश-ए-मक्का के ऊँट-

'अबूरिगाल' को साथ लेकर मक्का के क़रीब 'मगमस' नामी एक स्थान पर पहुँच गया, जहाँ क़ुरैश-ए-मक्का के ऊँट चर रहे थे। 'अबूरहा' के लश्कर ने सब से पहले उन पर ह़मला कर के ऊँट गिरफ़्तार कर लिये, जिन में दो सौ ऊँट रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दादा 'अ़ब्दुलू मुत्तलिब' के थे जो क़ुरैश के सरदार थे। 'अबूरहा' ने यहाँ पहुँचकर अपना एक सफ़ीर (दूत) 'हनाता हिम्यरी' को शहर मक्का में भेजा कि वह क़ुरैश के सरदारों के पास जाकर बता दे कि हम तुमसे जंग के लिए नहीं आए हमारा मक़्सद कअ़बः को ढ़ाना है। यदि तुमने उस में रुकावट न डाली तो तुम्हें कोई नुक़्सान न पहुँचेगा। 'हनाता' जब मक्का में दाख़िल हुआ तो सबने उसको अ़ब्दुलू मुत्तलिब का पता बताया कि वह क़ुरैश के सरदार है। 'हनाता' ने 'अ़ब्दुलू मुत्तलिब' से बातचीत की और 'अबूरहा' का पैग़ाम पहुँचा दिया।

अ़ब्दुलू मुत्तलिब की दुआ़-

इब्ने इस्ह़ाक़ (इतिहासकार) के मुताबिक़ 'अ़ब्दुलू मुत्तलिब' ने यह जवाब दिया कि हम भी 'अबूरहा' से जंग का कोई इरादा नहीं रखते, न हमारे पास इतनी ताक़त है कि उसका मुक़ाबिला कर सकें, लेकिन मैं यह बताता हूँ कि यह अल्लाह का घर और उसके मह़बूब इब्राहीम (अ़लै०) का बनाया हुआ है, वह ख़ुद इसकी ह़िफ़ाज़त का ज़िम्मेदार है। अल्लाह से जंग का इरादा है तो चाहे करे फिर ख़ुद ही देखेगा कि अल्लाह तआ़ला उस के साथ क्या मामला करता है?

अबूरहा से अ़ब्दुलू मुत्तलिब की बातचीत-

'हनाता' ने 'अ़ब्दुलू मुत्तलिब' से कहा, "आप मेरे साथ चलें? मैं आप को 'अबूरहा' से मिलाता हूँ। अबूरहा ने जब 'अ़ब्दुलू मुत्तलिब' को देखा कि यह कोई मामूली आदमी नहीं है तो उनको देखकर अपने तख़्त से नीचे उतर कर बैठ गया और 'अ़ब्दुलू मुत्तलिब' को अपने बराबर बिठाया"। अपने तर्जुमान से कहा कि 'अ़ब्दुलू मुत्तलिब' से पूछे कि वह किस लिए आए हैं? 'अ़ब्दुल मुत्तलिब' ने कहा, "मेरी ज़रुरत तो इतनी है कि मेरे ऊँट जो आप के लश्कर ने गिरफ़्तार कर लिये हैं उनको छोड़ दें"।

'अबूरहा' ने तर्जुमान के ज़रिये 'अ़ब्दुलू मुत्तलिब' से कहा, "जब मैंने आप को पहले देखा तो मेरे दिल में आपकी बड़ी अहमियत हुई, लेकिन आप की बातचीत ने उसको बिलूकुलू ख़त्म कर दिया कि आप मुझसे सिर्फ़ अपने दो सौ ऊँटों की बात कर रहे हैं और यह मालूम है कि मैं आप का 'कअ़बः' जो आप का धार्मिक स्थल है, उसके ढ़ाने के लिए आया हूँ, उसके विषय में आपने कोई बातचीत नहीं की"।

'अ़ब्दुल मुत्तलिब' ने जवाब दिया, "ऊँटों का मालिक तो मैं हूँ, मुझे उनकी फ़िक्र हुई और बैतुल्लाह (कअ़बः) का मैं मालिक नहीं, बल्कि उसका मालिक एक बहुत बड़ी हस्ती यानी अल्लाह है। वह अपने घर की ह़िफ़ाज़त करना जानता है"। अबूरहा ने कहा, "तुम्हारा ख़ुदा उस को मेरे हाथ से न बचा सकेगा" 'अ़ब्दुलू मुत्तलिब' ने कहा, "फिर तुम्हें अख़्तियार है, जो चाहे करो।"

इस के बाद 'अ़ब्दुल् मुत्तलिब' के ऊँट 'अब्रहा' ने वापस कर दिये, वह अपने ऊँट लेकर वापस आए और बैतुल्लाह (कअ़बः) के दरवाज़े की कुंडी पकड़ कर कुरैश की एक बड़ी जमाअ़त के साथ दुआ़ में लग गए। सबने अल्लाह तआ़ला से दुआ़एँ कीं, कि अब्रहा के विशाल लश्कर का मुक़ाबिला तो हमारे बस में नहीं, आप ही अपने घर की हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम कर दें और ख़ूब रो-रो कर दुआ़ करने के बाद अ़ब्दुल् मुत्तलिब मक्का के दूसरे लोगों को साथ लेकर विभिन्न पहाड़ों पर फैल गए। उनको यह यक़ीन था कि उसके लश्कर पर अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब आ जाएगा, उसी यक़ीन की बिना पर उन्होंने अब्रहा से ख़ुद अपने ऊँटों का मुताल्बा किया। बैतुल्लाह के विषय में बातचीत करना इसलिए पसंद न किया कि ख़ुद उन में इसके मुक़ाबिले की ताक़त न थी।

कअ़बः पर चढ़ाई-

सुबह हुई तो अब्रहा ने बैतुल्लाह (कअ़बः) पर चढ़ाई की तैयारी की और अपने 'महमूद' नाम के हाथी को आगे चलने के लिए तैयार किया। 'नुफ़ैल बिन ह़बीब' जिन को रास्ते में अब्रहा ने गिरफ़्तार कर रखा था, उस वक़्त यह आगे बढ़े और हाथी का कान पकड़ कर कहने लगे तू जहाँ से आया है, वहीं लौट जा क्योंकि तू अल्लाह के 'बलदे अमीन' (सुरक्षित या शाँति शहर) में है, यह कह कर उसका कान छोड़ दिया, हाथी यह सुनते ही बैठ गया।

हाथी वानों ने उसको उठा कर चलाना चाहा, लेकिन वह अपनी जगह से न हटा। उसे बड़े-बड़े बरछों से मारा, उस की नाक में लोहे का डंडा भी डाल दिया, फिर भी वह खड़ा न हुआ, लोगों ने उस को 'यमन' की ओर लौटाना चाहा तो वह खड़ा हो गया, 'शाम' की ओर चलाना चाहा तो चलने लगा, पूरब की ओर चलाना चाहा तो चलने लगा। इस तरह़ हर तरफ़ चलाने के बाद फिर उसे मक्का की ओर चलाने लगे तो फिर बैठ गया।

परिन्दों के झुँड-

अल्लाह के इस चमत्कार को तो सब देख ही रहे थे कि अचानक दूसरा चमत्कार भी इस तरह़ सामने आया कि कुछ परिन्दों के झुंड दरिया की ओर से आते हुए दिखाई दिये, जिन में हर एक के साथ तीन कंकरियाँ चने या मसूर के बराबर थीं, एक चोंच में और दो पंजों में (यह परिन्दे अजीब ढंग के थे) जो इससे पहले कभी नहीं देखे गये थे। देखने में कबूतर से छोटे और पंजे सुर्ख़ रंग के थे, बहुत जल्द ही यह 'अब्रहा' के लश्कर पर छा गए और कंकरियाँ बरसाने लगे। इनके एक-एक कंकर ने वह काम किया, जो रिवाल्वर की गोली भी नहीं कर सकती थी कि जिस पर पड़ती, उसके बदन को चीरती हुई ज़मीन में घुस जाती थी।

यह अ़ज़ाब देखकर सब हाथी भाग खड़े हुए, पूरा लश्कर रास्ते भर-मर कर गिरता रहा। 'अब्रहा' को चूंकि सख़्त सज़ा देनी थी, इसलिए यह फ़ौरन नहीं मरा बल्कि इसके शरीर में ऐसा ज़हर फैला कि इसका एक-एक जोड़ सड़ कर गिरने लगा, उसी ह़ाल में उस को वापस ले गए और सनूआ़ नामी स्थान

पर पहुँच कर उसका सारा बदन टुकड़े-टुकड़े होकर बह गया और उसी हाल में मर गया। 'अब्रहा' के हाथी 'महमूद' के साथ दो हाथीवान मक्का में रह गए थे जो अन्धे और अपाहिज हो चुके थे।

इतिहासकार मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है कि उन्होंने फ़रमाया, "मैंने उन दोनों को इस हाल में देखा है कि वह अन्धे और अपाहिज थे। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की बहन 'अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा' ने फ़रमाया, "मैंने दोनों अपाहिज अंधों को भीख मांगते हुए देखा"। अस्हाबे फ़ील (हाथी वालों) के इसी क़िस्से के बारे में इस सूरः में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को मुख़ातब किया गया हैः-

अलमूतरा-

यहाँ 'अलूमतरा' शब्द के माने हैं क्या आप ने नहीं देखा? जबकि यह क़िस्सा आप (सल्ल०) की पैदाइश से कुछ दिन पहले का है। आप (सल्ल०) को देखने की यहाँ कोई बात नहीं थी, लेकिन जो घटना सूर्य की तरह रौशन हो, उस के इल्म को देखने से संज्ञा दी जाती है कि यह आँखों देखी घटना है, कि इस में के दो लोग अन्धे भीख माँगते हुए बहुत दिनों तक मौजूद थे।

अबाबील-

'अबाबील' शब्द के माने परिन्दों के झुंड के हैं। किसी ख़ास जानवर या परिन्दे का नाम नहीं है। जैसा कि लोग समझते हैं (जो एक ख़ास चिड़िया का नाम है) वह नहीं है। यह परिन्दे कबूतर से थोड़ा छोटे थे, जिन्हें इस से पहले कभी किसी ने देखा ही न था। **(क़ुर्तुबी)**

4-5 تَرْمِيهِم بِحِجَارَةٍ مِّن سِجِّيلٍ ۝ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ۝

सिज्जील-

'सिज्जील' उस कंकरी को कहते हैं, जो तर मिट्टी को आग में पकाने से बनी हो। यहाँ इशारा इस ओर है कि इन कंकरियों में खुद से कोई ताक़त नहीं थी, लेकिन अल्लाह तआला ने उनमें गोलियों से भी ज़्यादह ताक़त पैदा कर दी थी।

अस्फ़-

'अस्फ़' कहते हैं भूसा को, पहले तो भूसा ही तिन्का-तिन्का होता है फिर अगर उसे किसी जानवर ने चबा भी लिया हो तो वह तिन्का भी अपने हाल पर नहीं रहते। 'अबरहा' के लश्कर में जिस पर यह कन्करियाँ पड़ीं, उस का यही हाल हो गया था।

इस घटना ने पूरे अरब वालों के दिलों में क़ुरैश की इज़्ज़त बढ़ा दी थी और सब मानने लग गए थे कि यह लोग अल्लाह वाले हैं, इन की ओर से खुद अल्लाह तआला ने उनके दुश्मन को हलाक कर दिया। **(क़ुर्तुबी)**

इस घटना का असर पूरी दुनिया पर पड़ा कि अगर कुरैशे मक्का व्यापार करते तो रास्ते में कोई उनको नुक़्सान न पहुँचाता, जबकि उस वक़्त दूसरों के लिए कोई सफ़र ख़त्रात से खाली न होता था। कुरैश के इन्हीं सफ़रों का ज़िक्र अगली सूरः, सूरः कुरैश में उनकी नेअ़मतों के शुक्र अदा करने की ओर इशारा किया गया है।

(भाग–106)

सूर–ए–कुरैश

(सूरः नं. 106)

सूरः क़ुरैश का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का में नाज़िल हुई। इसमें क़ुरैश को याद दिलाया गया है कि तुम जाड़े में 'यमन' की ओर, गर्मियों में 'शाम' (सीरिया) की ओर व्यापार के लिए जाते हो, वहाँ से फ़ायदा उठाते हो और काम की चीज़ें लाकर आराम व इत्मिनान के साथ मक्का में रहते हो।

जहाँ तुम्हें न किसी के ह़मलों का डर होता है, न लड़ाई का, फिर तुम कअ़बः के पालनहार की अ़िबादत क्यों नहीं करते? जिसने तुम्हारे लिए तमाम सहूलतें पैदा कीं।

आयत नं० 1 से 4 तक

لِإِيلَافِ قُرَيْشٍ ۝ إِيلَافِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ۝ فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَٰذَا الْبَيْتِ ۝ الَّذِي أَطْعَمَهُمْ مِنْ جُوعٍ وَآمَنَهُمْ مِنْ خَوْفٍ ۝

अनुवाद-

(1) कुरैश के अभ्यस्त (मानूस) करने की वजह से, (2) (अर्थात) उनको जाड़े गर्मी में सफर करने की वजह से, (आदत पड़ गयी है,) (3) तो उनको चाहिए कि इस घर (कअ़बे) के रब की इ़बादत करें; (4) जिसने उनको भूख की हालत में खाना दिया और खौफ़ से अमन दिया।

सूरः क़ुरैश की संक्षिप्त व्याख्या

1-2 لِإِيلَافِ قُرَيْشٍ ۝ إِيلَافِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ۝

यह 'सूरः फ़ील' ही से सम्बन्धित है, जबकि कुछ रिवायतों से मालूम होता है कि नाज़िल होने के एतिबार से दोनों सूरतों के दर्मियान फ़र्क़ करने के लिए है, लेकिन यहाँ पर दोनों सूरतें एक दूसरे से सम्बन्धित हैं।

लिईलाफ़ि-

शब्द 'ल' यह बताता है कि इसका सम्बन्ध किसी पिछले विषय से है। इसीलिए कुछ मुफ़स्सिरीन का कहना है कि यहाँ पर "इन्ना अहलकना अस्हाबलू फ़ील" छुपा हुआ (Silent) है तो अर्थ इस तरह होगा, कि हमने अस्हाबे फ़ील (हाथी वाले) को इसलिए हलाक किया कि कुरैश-ए-मक्का सर्दी-गर्मी के दो सफ़रों के आदी थे, उनकी राह में कोई रुकावट न रहे, सब के दिलों में उनकी इ़ज़्ज़त (आदर व सम्मान) पैदा हो जाए।

तअज्जुब करो कुरैश के मामले को, कि किस तरह़ वह सर्दी और गर्मी के सफ़र को आज़ादी से निडर होकर करते हैं। कुछ ने अर्थ लिया है कि कुरैश को इस नेअ़मत के नतीजे में अल्लाह तआ़ला का शुक्र गुज़ार होते हुए उस की अ़िबादत में लग जाना चाहिए।

क़ुरैश-

'कुरैश' उस क़बीले का नाम है जिसके हाथ में कअ़बः का संचालन एवं प्रबन्ध था। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अपने बेटे ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) को मक्का की पाक धरती पर बसाया था, कुरैश इन ही की नस्ल से हैं। इसी क़बीले की एक शाख़ 'बनी हाशिम' कहलाई, जिस से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का सम्बन्ध है।

क़ुरैश की फ़ज़ीलत सारे अ़रब पर-

इस सूरः से इशारा मिलता है कि तमाम अ़रब क़बीलों में कुरैश अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक सबसे

ज़्यादा मक़्बूल हैं। जैसा कि ह़दीस में है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया," अल्लाह तआ़ला ने तमाम इस्माईल (अ़लै०) की औलाद में से 'कनाना' को और कनाना में से कुरैश को और कुरैश में से बनी हाशिम को और बनी हाशिम में से मुझ को चुना है"। **(अलुबग़वी)**

मक्का वाले और व्यापार-

मक्का की धरती खेती करने के लायक नहीं थी, इसलिए कुरैश ने व्यापार को अपना व्यवसाय बना लिया था। इसलिए उनके तिजारती काफ़िले सर्दियों में 'यमन' की ओर जाते और गर्मियों में शाम (Syria) और फ़िलिस्तीन की ओर यह तिजारती सफ़र उनके कमाने का बहुत बड़ा साधन और उनकी दौलत को बढ़ाने की वजह थी।

वह जिन राहों से गुज़रते थे, वह यद्यपि अन्तर्राष्ट्रीय राजमार्ग (International Highways) थे, लेकिन लूटमार की वजह से सुरक्षित नहीं थे। इसके बावजूद कुरैश के तिजारती काफ़िले निडर हो कर आया जाया करते थे, क्योंकि कअ़बः के संचालक व प्रबन्धक होने के कारण लोग उनका आदर करते थे।

इसके अ़लावा उन्होंने इन राज्यों के बादशाहों से व्यापारिक सुविधाएँ एवं सुरक्षा हासिल कर ली थीं, कि वह बिना रोकटोक के उन के मुल्क में आते जाते रहेंगे यानी हाशिम ने जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के परदादा शाम (Syria) 'रोम' और 'गस्सान' के बादशाह से, 'अब्द शम्स' ने नज्जाशी से, 'नौफ़ल' ने 'किसरा' से और 'मुत्तलिब' ने 'हिमूयर' से इज़ाजत हासिल कर ली। **(अलू बिदाया वन्निहाया भाग-2 पृष्ठ 253)**

व्यापार में आसानी-

इस तरह़ अल्लाह के घर की बदौलत उन पर रिज़्क़ (जीविका) का रास्ता भी खुल गया था और हर जगह अशांति के बावजूद उनके लिए सफ़र भी आसान हो गया था। चूंकि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने मक्का के आबाद होने के वक़्त अल्लाह तआ़ला से यह दुआ़ माँगी थी, कि इस शहर को अम्न का गहवारा बना दे, अहले मक्का को फलों का रिज़्क़ अ़ता फ़रमा और बाहर से हर तरह़ के फल यहाँ लाए जाएँ, इसलिए मक्का वालों के लिए जरुरी था कि वह सफ़र करें।

'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' (रज़ि०) ने फ़रमाया कि मक्का वाले बड़े ग़रीब और तक्लीफ़ में थे यहाँ तक कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के परदादा हाशिम ने कुरैश को उभारा कि दूसरे मुल्कों से तिजारत का काम करें। मुल्क शाम ठंडा मुल्क था, गर्मी के ज़माने में वहाँ और यमन गर्म मुल्क था सर्दी के ज़माने में वहाँ तिजारती सफ़र करते और नफ़ा ह़ासिल करते थे।

चूँकि यह लोग सरदार थे, उनका तरीक़ा यह था कि इस तिजारत में जो नफ़ा ह़ासिल होता उसको कुरैश के अमीर व ग़रीब सब में तक़्सीम कर देते थे यहाँ तक कि इनका ग़रीब आदमी भी मालदारों के बराबर समझा जाता था। फिर अल्लाह तआ़ला ने उन पर यह एह़सान किया कि हर साल के दो सफ़रों की तक्लीफ़ से इस तरह़ निजात दी कि मक्का से मिले इलाक़े 'यमन' आदि को इतना हरा भरा और उपजाऊ बना दिया कि वहाँ का ग़ल्ला उनकी ज़रुरत से ज़्यादा होने लगा और वहाँ से जद्दह में ले जाकर

बेचने लगे।

यानी अक्सर ज़िन्दगी की ज़रुरतें जद्दह ही में मिलने लगीं। मक्का वाले इन लम्बे-लम्बे दो सफ़र के बजाय जद्दह ही से सामान लाने लगे, इसी का एह़सान अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में फ़रमाया कि यह नेअ़मतें जो इन्हें ह़ासिल हो रही हैं सिर्फ़ अल्लाह के घर की बदौलत ह़ासिल हो रही है, लेकिन यह ख़ुदा के ही ह़क़ को भुला बैठे हैं, यह खाते हैं ख़ुदा का दिया हुआ रिज़्क़, फिर भी मूर्तियों की पूजा करते हैं।

3-4 فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝

इस आयत में क़ुरैश को ध्यान दिलवाया गया है कि जब तुम इस घर को अल्लाह का घर मानते हो तो फिर तुम्हें इसका ह़क़ अदा करना चाहिए कि तुम सिर्फ़ अल्लाह 'ही' की अ़िबादत करो, उस की अ़िबादत के साथ किसी और की अ़िबादत न करो, इस घर के रब के शुक्रगुज़ार बन्दे बनकर रहो और नाशुक्री न करो। यहाँ "रब्ब हाज़ल बैत" इसीलिए कहा कि वह लोग कअ़बः को बहुत सम्मान देते थे।

खाना-पीना और अम्न देने वाला-

उस वक्त अ़रबों की आर्थिक स्थिति बड़ी ख़राब थी, इसलिए कि उस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति ऐसी थी कि खाद्य वस्तुओं की भी बड़ी कमी थी, यानी यह ग़रीबी और भूखमरी का इलाक़ा था। इसके अ़लावा क़बाइली सिस्टम होने और किसी मज़बूत हुकूमत के न होने की वजह से बड़ी अशांति फैली रहती थी, हत्याओं और लूटपाट की घटनाओं ने उनकी ज़िन्दग़ी का सुकून छीन लिया था, मगर क़ुरैश की ह़ालत आर्थिक दृष्टि से भी बेहतर थी और अम्न व अमान के दृष्टि से भी।

आर्थिक दृष्टि से बेहतर होने की वजह तो उनके कामियाब तिजारती सफ़र थे, रहा अम्न व अमान तो उन्हें शहर मक्का में भी ह़ासिल था और इसके बाहर भी, मक्का में अम्न-व-अमान तो उसके 'ह़रम' होने के कारण था, बाहर निकलने के बाद उन पर हाथ डालने की जुर्रत कोई व्यक्ति या क़बीला या हुकूमत इसलिए नहीं करती थी कि वह 'ह़रम' की देखरेख करने वाले हाजियों की सेवा करने वाले समझे जाते थे।

सारांश यह है कि क़ुरैश को यह दोनों नेअ़मतें यानी जीविका और सुरक्षा, जो इन्सान की बुनियादी जरुरतें हैं, अल्लाह की ओर से ही मिल रही थीं।

इस सूरः में सिर्फ़ अल्लाह की अ़िबादत की ओर ध्यान आकृष्ट करवाया गया है कि तमाम इन्सानों का रब केवल वही अकेला है, जो कअ़बः का रब है।

(भाग–107)

सूर–ए–माऊन

(सूरः नं. 107)

सूरः माऊन का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का में नाज़िल हुई। इसमें मक्का के 'वलीद बिन मुग़ीरा' जैसे लोगों को धमकी दी गई है और आगे चलकर मुनाफ़िक़ों की आ़दतों की भी कलई खोली गई है, जो मदीना के एक गिरोह ने अपना ली थी।

मक्का के यह लोग ऐसे संगदिल व बेरहम थे कि किसी पर तरस न खाते थे। मदीना में मुनाफ़िक़ लोग नमाज़ में देखा देखी शामिल हो जाते और ज़ाहिर में नेक बने रहते।

यह लोग इतने बड़े कंजूस थे कि मामूली रोज़ के प्रयोग होने वाली चीज़ें भी उठा कर रख देते थे कि कोई इस्तेमाल न कर ले। यह ह़ाल उन सब कंजूस तंगदिल और रियाकारों का बताता है कि यह अपने ह़क़ में अपने ही आ़माल से काँटे बो रहे हैं।

आयत नं० 1 से 7 तक

أَرَءَيْتَ الَّذِى يُكَذِّبُ بِالدِّينِ ۝ فَذَٰلِكَ الَّذِى يَدُعُّ الْيَتِيمَ ۝ وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝ الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ۝ وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ۝

अनुवाद-

(1) क्या आप ने उस व्यक्ति को देखा जो बदले के दिन को झुठलाता है? (2) सो यह वही है जो यतीम को धक्के देता है, (3) और मिस्कीन (मुहताज) को खिलाने की तर्ग़ीब (प्रोत्साहन) नहीं देता। (4) तो ऐसे नमाज़ियों के लिए तबाही है, (5) जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल (बेखबर) रहते हैं, (6) जो दिखावा करते हैं, (7) और मामूली चीज़ें भी (थोड़ी देर के लिए) नहीं देते।

सूरः माऊन की संक्षिप्त व्याख्या

1-7 أَرَءَيْتَ الَّذِى يُكَذِّبُ بِالدِّينِ ۝ فَذَٰلِكَ الَّذِى يَدُعُّ الْيَتِيمَ ۝ وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝ الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ۝ وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ۝

इस सूरः के शुरु की तीन आयतें मक्की और बाक़ी मदनी हैं, जो आख़िरत और इस्लाम विरोधियों से सम्बन्धित हैं। इस में यह बताया जा रहा है कि यह दीन दिखावटी रस्मों का दीन नहीं है। इस दीन की अ़िबादत और दीनी निशानी की कोई अहमियत नहीं जब तक कि वह इख़्लास (निष्काम सेवा) के साथ सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए पूरे तौर से न हो।

यानी सूरः की शुरुआत ही ऐसे शब्द से हो रही है कि क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जो 'दीन' को झुठलाता है? यानी जो आ़माल आगे बयान होंगे वह एक मोमिन की शान से गिरे हुए हैं। उसे तो कोई दुराचारी ही कर सकता है। जैसे-

(1) यतीम के साथ बुरे तरीक़े से पेश आना और उसकी तौहीन करना।

(2) मिस्कीन (मुहताज) को (क़ुद्‌रत होते हुए भी) न खिलाना और न दूसरों को इस की तर्ग़ीब देना।

(3) नमाज़ दिखावे के लिए पढ़ना।

(4) ज़कात न अदा करना।

यह सब काम बहुत गुनाह के हैं। यदि कुफ़्र और झुठलाने की वजह से हों तो इनका वबाल हमेशा जहन्नम में पड़े रहने का है। जैसा कि इस सूरः में 'वैल' शब्द से बयान किया गया है।

आख़िरत (परलोक) के इन्कार करने वालों में जो अख़्लाक़ी खराबियाँ पैदा हो जाती हैं, उनको देखा जा सकता है कि यतीम का माल खा जाना, उसका हक़ मारना, उसको झिड़कना, उसका अपमान करना और उसको धक्के देकर अपने दरवाज़े से हटा देना, यह सब जब ही हो सकता है जबकि आख़िरत पर

यक़ीन न हो। इसी तरह़ मिस्कीन को खाना खिलाना खुद ही नेकी का काम है, चाहे वह मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम, धर्म का कोई भेदभाव नहीं यही इस्लाम की शिक्षा है और यह तभी होगा, जबकि अल्लाह से मरने के बाद बदला मिलने का यक़ीन हो।

नमाज़ी-

यहाँ उन नमाज़ियों का ख़ास तौर से ह़ाल बयान किया गया है जो मुनाफ़िक़ थे (या हैं) कि जो लोगों को दिखाने और अपने आप को मुसलमान कहलवाने के लिए नमाज़ तो पढ़ते थे, लेकिन वह नमाज़ की अहमियत और उसके फ़र्ज़ होने का यक़ीन नहीं रखते थे, इसलिए वह नमाज़ के वक़्तों की पाबन्दी भी नहीं करते थे, नमाज़ को जहाँ दिखलाने का मौक़ा हुआ पढ़ लेते थे वरना छोड़ देते थे, जो मुनाफ़िक़ीन (यानी ऊपर से तो कहें कि हम मुसलमान हैं और इस्लाम के मानने वाले हैं, लेकिन अन्दर से उस पर यक़ीन न हो) की आदत होती है।

अगर इन्सान अपनी ज़बान से मुसलमान होने का दावा करे और ज़ाहिरी तौर पर दीन की बातें माने, नमाज़ पढ़े, लेकिन दिल से ईमान न लाए तो ऐसे आदमी का कोई अ़मल कुबूल न होगा। दीन की बातों की तस्दीक़ करे, नमाज़ और नमाज़ के अ़लावा दूसरे दीनी कामों की पाबन्दी भी करे, लेकिन यह गुण जो नीचे दिये जा रहे हैं न पाये जाएँ तो न ईमान माना जाएगा न तस्दीक़, चाहे ज़बान से ईमान का दावा करते हुए ज़ाहिरी अ़िबादत भी करता रहे।

ईमान की ह़क़ीक़त-

ईमान की ह़क़ीक़त यह है कि जब यह दिल में उतरता है तो आ़माले सालिह़ा (नेक अ़मल) का रूप अपना लेता है। यदि वह ह़रकत में आकर नेक रूप में न आए तो यह इस बात की पहचान है कि ईमान की ह़क़ीक़त अभी मौजूद नहीं है।

ऊपर की आयतों का मतलब नमाज़ी को नमाज़ के अन्दर कुछ भूल-चूक का हो जाना नहीं है क्योंकि इस से कोई मुसलमान ही नहीं बल्कि कोई नबी भी खाली नहीं, इसलिए यहाँ 'फ़वैलुल्लिल मुसल्लीन' से मुराद ऐसे मुसलमानों की ओर संकेत नहीं है जिन से भूल चूक से ग़ल्ती हो जाती है, बल्कि इस से मुनाफ़िक़ीन मुराद हैं जो जानबूझ कर नमाज़ में ग़फ़्लत करते हैं।

माऊन-

शब्द माऊन, जिसका शाब्दिक अर्थ 'लाभ की चीज़' है या ऐसी मामूली और साधारण चीज़ें जो एक इन्सान दूसरे इन्सान के माँगने पर दे देता है। जैसे- कुल्हाड़ी, फावड़ा या खाना पकाने के बर्तन जिन का ज़रुरत के वक़्त पड़ोसियों से माँग लेना कोई ऐ़ब नहीं समझा जाता जो इसे देने से इन्कार करे वह समाज में बहुत बड़ा कंजूस समझा जाता है।

कुछ टीकाकारों ने इस आयत से मुराद ज़कात लिया है और ज़कात को माऊन इसलिए कहा है कि

वह भी बहुत थोड़ी होती है, यानी केवल माल का चालीसवाँ ह़िस्सा होता है। ह़ज़रत अ़ली, ह़सन बसरी, क़तादा, ज़िहाक आदि ने माऊन की तफ़्सीर ज़कात ही लिया है। **(मज़हरी)**

ज़कात के न देने पर जो जहन्नम के अ़ज़ाब का एलान है, वह फ़र्ज़ के अदा न करने पर ही हो सकता है। छोटी-मोटी चीज़ें दूसरे को देना बहुत बड़ा सवाब और इन्सानियत की पहचान है, लेकिन फ़र्ज़ नहीं कि जिस के रोकने पर जहन्नम की वअ़ीद हो।

यानी मतलब यह हुआ कि यह ज़कात तो क्या देते मामूली रोज़ के इस्तेमाल होने वाली चीज़ें, जिन के देने में अपना कुछ ख़र्च नहीं होता, उसमें जब कंजूसी करते हैं तो ज़कात क्या देंगे?

(भाग–108)

सूर–ए–कौस़र

(सूरः नं. 108)

सूरः कौस़र का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का में नाज़िल हुई। इसमें रसूलुल्लाह (सल्ल०) को बताया गया है कि दुनिया की सारी ख़ैर व बरकत हम ने तुमको अ़ता कर दीं, अब तुम अपने रब की अ़िबादत में जान व माल से लग जाओ।

चूँकि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का कोई बेटा ज़िन्दा नहीं रहा, जिस की बुनियाद पर काफ़िरों ने कहना शुरु कर दिया था कि चलो कोई बात नहीं, मुहम्मद जब तक ज़िन्दा हैं उस वक़्त तक जो समझाना बताना हो बता लें, इन के इन्तिक़ाल के बाद तो कोई नाम लेने वाला बाक़ी न रहेगा। इसलिए कि इनकी नस्ल तो यहीं से ख़त्म हो जाएगी, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, वास्तव में इन्हीं काफ़िरों का नाम व निशान मिट जाएगा।

आयत नं० 1 से 3 तक

إِنَّآ أَعْطَيْنَٰكَ ٱلْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَٱنْحَرْ ۝ إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ ٱلْأَبْتَرُ ۝

अनुवाद-

① बेशक 'हमने' आपको कौस़र (अर्थात जन्नत की एक नहर) प्रदान की, ② तो आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िये और कुर्बानी किया कीजिए। ③ बेशक आपका दुश्मन ही जड़ कटा (अर्थात बेनाम व निशान) है।

सूरः कौस़र की संक्षिप्त व्याख्या

1-3 إِنَّآ أَعْطَيْنَٰكَ ٱلْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَٱنْحَرْ ۝ إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ ٱلْأَبْتَرُ ۝

इब्ने अबी हा़तिम ने 'सुद्दी' से और 'बैहक़ी ने 'दलायले नुबूवत' में ह़ज़रत मुह़म्मद बिन अ़ली बिन हुसैन (रज़ि०) से नक्ल किया है कि जिस व्यक्ति की औलाद बचपन में मर जाती थी, उस को अ़रब 'अब्तर' कहा करते थे, यानी जिसकी नस्ल आगे न बढ़े।

जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के बेटे 'क़ासिम' व 'इब्राहीम' का इन्तिक़ाल हो गया तो मक्का के काफ़िरों ने आप (सल्ल०) को 'अब्तर' कहकर ताना देना शुरु कर दिया, जिसमें आस बिन वायल का नाम ख़ास तौर से आता है। उस के सामने जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र किया जाता तो कहता था कि उन की बात छोड़ो, यह कोई चिन्ता की बात नहीं है, क्योंकि वह 'अब्तर' हैं, जब उन का इन्तिक़ाल हो जाएगा तो कोई नाम लेने वाला भी न रहेगा, उस पर यह सूरः नाज़िल हुई। **(इब्ने कसीर)**

कुछ रिवायतों में है कि 'कअ़ब बिन अशरफ़' नामी यहूदी एक बार मक्का आया तो कुरैश-ए-मक्का उसके पास गए और कहा कि आप उस नौजवान को नहीं देखते जो कहता है कि वह हमसे बेहतर है, जबकि हम हाजियों की ख़िद्मत करने वाले, कअ़बः की ह़िफ़ाज़त करने वाले और लोगों को पानी पिलाने वाले हैं। कअ़ब ने यह सुनकर कहा कि नहीं तुम लोग उस से बेहतर हो। इस पर यह 'सूरः कौसर' नाज़िल हुई। **(मुस्लिम)**

साराँश यह है कि मक्का के काफ़िर जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के बेटे के इन्तिक़ाल होने की वजह से 'अब्तर' होने का ताना देते और आप (सल्ल०) को सताते थे, उसके जवाब में यह सूरः नाज़िल हुई। जिसमें उन तानों का जवाब भी है कि सिर्फ़ बेटा के न रहने से आप (सल्ल०) को बे-नस्ल कहने वाले ह़क़ीक़त से बेख़बर हैं। आप (सल्ल०) के बेटियों से आप (सल्ल०) की नस्ल क़ियामत तक बाक़ी रहेगी, आप (सल्ल०) पर ईमान लाने वाले मुसलमान जो ह़क़ीक़त में नबी ही की औलाद होते हैं, वह तो इतने ज़्यादह होंगे कि पिछले तमाम नबियों की उम्मतों से भी बढ़ जाएँगे।

इस से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की अहमियत का भी पता चलता है जिससे 'कअ़ब बिन अशरफ़'

की बात रद्द हो जाती है, जिस का जिक्र इस सूरः की तीसरी आयत में हुआ है।

इमाम बुख़ारी (रह०) ने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से इसकी तफ़्सीर में यह रिवायत नक़्ल की है कि 'कौसर' वह भलाई की चीज़ है, जिसे अल्लाह तआला ने आप (सल्ल०) को अता फ़रमाई है। इब्ने अब्बास (रज़ि०) से किसी ने कहा कि कुछ लोग कहते हैं कि कौसर जन्नत की एक नहर का नाम है, तो सईद बिन जुबैर (रज़ि०) ने जवाब दिया कि वह नहर जन्नत में है जिस का नाम कौसर है, वह भी इस ख़ैर (भलाई) में आ जाती है। इसीलिए इमाम तफ़्सीर 'मुजाहिद' ने कौसर की तफ़्सीर में फ़रमाया कि वह दुनिया व आख़िरत दोनों की भलाई है, इस में जन्नत की ख़ास नहर और जन्नत भी आ जाती है।

इसी तरह इसके मक्सद में वह हौज भी शामिल है जो क़ियामत के दिन मैदाने हश्र में आप (सल्ल०) को अता किया जाएगा, जिसका पानी आप (सल्ल०) अपने मुख़्लिस (निस्वार्थ) अनुयायियों को पिलाएँगे। हदीस में उस हौज़ पर भी कौसर को समझा गया है।

हौजे कौसर–

'सही मुस्लिम' में हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने कौसर की व्याख्या करते हुए फ़रमायाः-

एक दिन हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) मस्जिद में हमारे बीच बैठे हुए थे कि अचानक आप (सल्ल०) पर एक तरह की नींद या बेहोशी की सी कैफ़ियत हुई, फिर मुस्कुराते हुए आप (सल्ल०) ने सर मुबारक उठाया, उस पर हमने पूछा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप के हंसने की वजह क्या है, तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मुझ पर इसी वक़्त एक सूरः नाज़िल हुई, फिर आप (सल्ल०) ने 'बिस्मिल्लाह' के साथ यही सूरः कौसर पढ़ी। इस के बाद फ़रमाया, तुम जानते हो, कौसर क्या चीज़ है?" हमने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ही जानते हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

"यह एक जन्नत की नहर है, जिसका मेरे रब (पालनहार) ने मुझ से वादा फ़रमाया है, जिसमें ख़ैर है और वह हौज है जिस पर मेरी उम्मत क़ियामत के रोज़ पानी पीने के लिए आएगी, उसके पानी पीने के बर्तन आसमान के सितारों की संख्या में होंगे। उस वक़्त कुछ लोगों को फ़रिश्ते हौज़ से हटा देंगे, तो मैं कहूँगा कि मेरे परवरदिग़ार यह मेरी उम्मत हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि आप नहीं जानते कि इसने आपके बाद क्या नया दीन बना लिया था"। **(मुस्लिम, बुख़ारी, अबूदाऊद, नसई)**

इस हदीस से सूरः कौसर के नाज़िल होने की वजह और क़ियामत के दिन उम्मते मुहम्मदिया को मिलने वाले हौज़े 'कौसर' के बारे में भी मालूम हो गया और यह भी साफ़ हो गया कि अस्ल नहर-ए-कौसर तो जन्नत में ही है और यह हौज़े कौसर मैदाने हश्र में होगी, इसमें दो परनालों के ज़रिये नहर-ए-कौसर का पानी डाला जाएगा।

इस हदीस में जो आख़िर में फ़रमाया गया कि कुछ लोगों को हौजे कौसर से फ़रिश्ते हटा रहे होंगे जो इस्लाम लाने के बाद इस्लाम से फिर गए या छोड़ दिया या पहले ही केवल लोगों को दिखाने के लिए

इस्लाम कुबूल किया या वह लोग जो अपने आप को मुसलमान तो कहते होंगे, लेकिन वास्तविक धर्म इस्लाम से हट कर अपनी मनमानी चीज़ों को अपना कर लिये होंगे कि जिसे न ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने बताया होगा और न सह़ाबा से साबित होगा।

कौसर क्या है-

"कौसर जन्नत में एक नहर है, जिसके किनारे सोने के हैं और वह मोतियों और याक़ूत पर बहती है, इसकी मिट्टी मुश्क से जयादह खुशबूदार है, इसका पानी शहद से ज़्यादा मीठा और बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद है। **(तिर्मिज़ी, अबवाबुत्तफ़्सीर)**

कौस़र के ह़ौज़ के बारे में 'ह़ज़रत सहल बिन सअ़द' (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

"मैं तुम से पहले ह़ौज पर पहुचूँगा, जो मेरे पास आएगा उस का पानी पियेगा और जो कोई उसका पानी पियेगा उसे फिर कभी प्यास मह़सूस न होगी"। **(बुख़ारी)**

यह बहुत बड़ी खुशख़बरी है जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को उस समय दी गई जब कि मक्का के मुशिरकीन (बहुदेववादी) आप (सल्ल०) के दुश्मन हो गए थे, आप (सल्ल०) को कष्ट देने में कोई कसर न रखी थी। उस मौके पर यह खुशख़बरी आप (सल्ल०) के लिए बहुत बड़ी तसल्ली थी। इससे मुखालिफों को यह बताना था कि तुम जिस ह़स्ती को कष्ट पहुँचा रहे हो, वह खुदा के नज़्दीक कितने बुलन्द मर्तबे की ह़स्ती है, जिस पर ख़ैर व बरकत का किस तरह़ ह़ौज़े कौस़र के ज़रिये इस्तिक़बाल होने वाला है।

यानी इस अमूल्य उपहार से पुरस्कृत किये जाने पर तुम अपने रब का शुक्र अदा करो और शुक्रगुज़ारी का तरीक़ा नमाज़ और कुर्बानी है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को नमाज़ से बहुत लगाव था, जिस का अन्दाज़ा इस बात से होगा कि आप (सल्ल०) रात को उठ कर देर तक नमाज़ में मश्गूल रहते, यहाँ तक कि आप (सल्ल०) के पांव में वरम आ जाता। कुछ सह़ाबा ने इसकी ओर ध्यान दिलाया तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, क्या मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ? **(बुख़ारी, मुस्लिम)**

कुर्बानी-

इसी तरह़ कुर्बानी के आदेश का पालन भी आप (सल्ल०) बड़ी खुशी से करते रहे। मदीने में ईदुल् अज़्हा के मौक़े पर कुर्बानी करना आप (सल्ल०) का नियम रहा और आखिरी ह़ज के मौक़े पर आप (सल्ल०) ने अपने हाथ से (63) ऊँट ज़िबह़ (कुर्बान) किये।

वन्ह़र-

'वन्ह़र' शब्द ऊँट की कुर्बानी के लिए बोला जाता है। यहाँ पर ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की मिल्लत की ओर इशारा है, जिसमें ऊँट की कुर्बानी एक निशानी के तौर पर थी। इसके ख़िलाफ यहूद ऊँटनी की

क़ुर्बानी को जायज़ नहीं समझते थे। इस शिआर (चिन्ह) को ज़िन्दा करने का आदेश हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को दिया गया, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि ऊँट की ही क़ुर्बानी फ़र्ज़ है, इसके बिना क़ुर्बानी नहीं हो सकती, बल्कि क़ुर्बानी किसी भी हलाल जानवर की कर सकते हैं।

हज़रत जाबिर (रज़ि०) कहते हैं कि हमने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के साथ हुदैबिया के साल क़ुर्बानी की। (गाय सात व्यक्तियों की ओर से और ऊँट सात व्यक्तियों की ओर से।)

क़ुर्बानी पर आपत्ति-

ऊपर जो क़ुर्आन ने क़ुर्बानी का हुक्म दिया उस को लेकर हमारे बहुत से अन्जान लोग भ्रमित हो जाते हैं, जबकि इस्लाम में जहाँ क़ुर्बानी का हुक्म है वहीं किसी जानवर को बिला ज़रुरत क़त्ल करने की इजाज़त भी नहीं है। यहाँ तक कि छोटे परिन्दों के घोंसले को उजाड़ने और पिंजरों में परिन्दों को क़ैद रखने और जानवरों को आपस में लड़ा कर तमाशा देखने को इस्लाम नापसन्द करता है और क़ुर्आन में तो किसी की जान को जानबूझकर क़त्ल करने से मना फ़रमाया गया है।

कुछ लोगों का विचार है कि मुसलमान गाय आदि के काटते समय अल्लाह का नाम लेते हैं तो मुसलमानों को अल्लाह की दया इन पशुओं के साथ न होगी, हालाँकि जो लोग यह सवाल करते हैं उनके अनुसार उनका परमेश्वर भी दयालु नहीं हो सकता, क्योंकि पशुओं का अपहरण करके उन पर सवारी करने उनको गाड़ी छकड़े और हल में जोतने आदि का अधिकार क्यों देता, उस में भी जानवरों पर दया होनी चाहिए।

दया और पशु-

इसी तरह मनुष्य के बच्चों का हक़ छीन कर पशुओं का दूध, मलाई, दही, मक्खन, खोया, घी खा रहा है जो दयालुता के ख़िलाफ़ है।

अगर यहाँ यह कहा जाए कि हम उन का पालन-पोषण करते हैं इसलिए उनसे काम लेते हैं तो यह आप को परमेश्वर ने अधिकार दिया ही कब है।

दया तो जब थी कि बूढ़ी गाय बैल भैंस आदि जो किसी काम के नहीं होते, न दूध के, न खेत जोतने के, उनको ख़रीद कर उनकी आखिरी उम्र तक पालन पोषण करे।

यदि पशुओं का माँस खाना पाप है तो शाक, सब्ज़ी, फल मूली का खाना भी पाप है, क्योंकि आवागमन के मुताबिक़ वनस्पतियाँ भी जीवधारी तथा पूर्व जन्म में आप के अनुसार मनुष्य ही थीं और अपने पाप का फल भोग कर फिर मनुष्य बनेंगी।

क़ुर्बानी को लेकर आपत्ति जताने वालों को एक नज़र इतिहास के पन्नों और धार्मिक ग्रन्थों पर भी डाल देनी चाहिए।

गोश्त खाने का सम्बन्ध सिर्फ़ मुसलमानों से ही नहीं बल्कि दुनिया की बहुत सी क़ौमें जैसे- आदिवासी, पहाड़ी, बौद्ध, ईसाई, पारसी और करोड़ों की संख्या में हिन्दू भाई भी खाते आ रहे हैं।

इससे मालूम हुआ कि वैदिक काल से ही ज़्यादहतर क़ौमों में गोश्त को एक जायज़ ग़िज़ा समझकर खाने का रिवाज था। हिन्दुस्तान की धार्मिक पुस्तकें इस बात की पुष्टि करती हैं, जो क़ौमें इसके विरुद्ध अ़क़ीदा रखने लगी हैं उनकी संख्या बहुत कम है और वह भी गोश्तख़ोरी से पूरी तरह़ नहीं बच सकीं।

हत्या और क़ुर्बानी

जहाँ तक ह़त्या का तअ़ल्लुक़ है तो मुसलमानों के यहाँ भी वही जानवर जायज़ समझा जाता है, जो "बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर" के नाम से ज़ब्ह़ किया गया हो। यदि कोई जानवर अपनी मौत मर जाए या कोई चोट लगने से मर जाए तो उस जानवर का गोश्त ह़राम समझा जाता है।

अतः मालूम यह हुआ कि सिर्फ़ उसी जानवर का गोश्त ह़लाल होगा, जो अल्लाह के नाम पर और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के हुक्म के मुताबिक़ क़ुर्बान किया गया हो, इसके अतिरिक्त सभी शक्लें नाजायज़ होंगी।

यज्ञ का करना कहीं बुरा नहीं समझा गया, यदि हम इसे मान भी लें कि दया के विरुद्ध है तो यह साइंसी दौर है। इससे साइंस के माहिरों ने बताया कि हर चीज़ में जान होती है, यहाँ तक कि हम जो साँस लेते हैं, उसमें भी हमारी साँस के ज़रिये बहुत से कीटाणु अन्दर चले जाते हैं तो क्या साँस लेना बन्द कर दिया जाए?

ऐसा नहीं है बल्कि अल्लाह ने इस मानव को सर्वश्रेष्ठ प्राणी बना कर भेजा है और इसकी सेवा के लिए तमाम सृष्टि को लगा दिया है, ताकि यह अपने पैदा करने वाले मालिक की आज्ञानुसार जीवन व्यतीत करें।

नमाज़ और क़ुर्बानी का हुक्म-

नमाज़ और क़ुर्बानी का जो हुक्म ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को दिया गया, यह हुक्म आप (सल्ल०) के ज़रिए पूरी उम्मत के लिए है। जिस तरह़ यह उम्मत कौसर के इन्आ़म में आप (सल्ल०) की शरीक हैं, कि क़ियामत के दिन कौसर के ह़ौज़ से लाभ ह़ासिल करेगी, उसी तरह़ वह नमाज़ और क़ुर्बानी के हुक्म में भी, जो आप (सल्ल०) को दिया गया है। जैसा कि सूरः माऊ़न में मुश्रिकों (बहुदेववादियों) के नमाज़ को बेह़क़ीक़त क़रार दिया गया है, इसके मुक़ाबिले में तुम्हारी नमाज़ ख़ालिस अल्लाह के लिए होनी चाहिए। जैसा कि दूसरी जगह ज़्यादा साफ़ तरीक़े से फ़रमाया गया हैः-

"कहो, मेरी नमाज़, मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह रब्बुलआ़लमीन के लिए है, जिस का कोई शरीक नहीं। **(अल् अनआ़म-162)**

शानिया-

'शानिया' का अर्थ ईर्ष्या, द्वेष और, ऐब लगाने के हैं। यह आयत उन काफ़िरों के बारे में नाज़िल हुई, जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को अबतर (बेनस्ल) होने का ताना देते थे। अक्सर रिवायत में 'आस

बिन वायल' के बारे में है। कुछ ने उत्बा, कुछ में 'कअ़ब बिन अशरफ़' की ओर संकेत किया है।

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को कौसर यानी ख़ैर कसीर (भलाई) दी जिस में बहुत बड़ी संख्या में औलाद भी दाख़िल है। आप (सल्ल०) के लिए औलाद की कसूरत इस तरह़ है कि आप (सल्ल०) के बेटियों की औलादें ख़ास तरीके से ह़ज़रत फ़ातिमा के ख़ूब हुई, इसी तरह़ पैग़म्बर चूँकि पूरी उम्मत का रुह़ानी बाप की तरह होता है और पूरी उम्मत उस की रुह़ानी औलाद की तरह जो पिछले तमाम नबियों की उम्मतों से संख्या में मुह़म्मद (सल्ल०) की उम्मत अधिक होगी। इस तरह़ इस में भी कसरत पाई गई।

यह हक़ीक़त में एक भविष्यवाणी थी, जो बिल्कुल सही साबित हुई। रसूल (सल्ल०) के दुश्मन इस तरह़ अपमानित और तबाह हुए कि उनका नाम व निशान ही बिल्कुल मिट गया। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को ऐसी इज्जत एवं बुलन्दी मिली कि बहुत से लोग आप (सल्ल०) पर हर वक़्त दरुद व सलाम भेजते रहते हैं और क़ियामत तक भेजते ही रहेंगे।

रसूल के दुश्मन ज़लील होंगे-

इस पेशीनगोई का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ उस दौर के दुश्मनों के लिए ही नहीं बल्कि क़ियामत तक पैदा होने वाले रसूल (सल्ल०) के दुश्मनों से भी है। जो भी आप (सल्ल०) की शान में गुस्ताख़ी करेगा या आप (सल्ल०) की मुख़ालिफत करेगा, उसके लिए ख़ैर (भलाई) से मह़रूमी होगी और वह ज़लील होकर रहेगा।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के नाम को अल्लाह तआ़ला ने कितना बुलंद किया कि आप (सल्ल०) के ज़माने से आज तक पूरी दुनिया के चप्पे-चप्पे पर आप (सल्ल०) का नाम मुबारक पाँच वक़्त अज़ान में अल्लाह के नाम के साथ मीनारों से पुकारा जाता है और आख़िरत में आप (सल्ल०) को शफ़ाअ़त का मक़ाम-ए-मह़मूद (आदर की अन्तिम सीमा) अता किया जाएगा, उसके मुक़ाबिले में जिन्होंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की मुखालिफत की, न उनकी औलादों का पता है, न ख़ानदान का यह सब इतिहास तक से मिट चुके हैं, सिर्फ़ क़ुर्आन के आयतों की तफ़्सीर की वजह से उन का नाम बाक़ी है, वरना उनके नाम तक का पता न चलता।

(भाग–109)

सूर–ए–काफ़िरून

(सूरः नं. 109)

सूरः काफ़िरून का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का में उस समय नाज़िल हुई जब मक्का के काफ़िरों ने आप (सल्ल०) से कहा कि आओ दीन के विषय में आपस में कुछ समझौता इस तरह़ कर लें कि एक साल आपके दीन पर हम लोग चलें और एक साल हमारे दीन पर आप लोग चलें, तो हम में एकता क़ायम रहेगी, क्योंकि अल्लाह को तो हम भी मानते हैं इसलिए आपस में समझौता कर लें। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने इस सूरः में उन लोगों से साफ़ कह दिया कि आप इन लोगों से कह दीजिए कि अल्लाह को जैसा हम मानते हैं वैसा तुम नहीं मानते, इस विषय में हमारा तुम्हारा समझौता नामुम्किन है।

ह़दीस से साबित है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़ज्र की नमाज़ से पहले दो रकअ़तों में और आप (सल्ल०) अपने आख़िरी ह़ज के मौक़े पर तवाफ़ की दो रकअ़तों में सूरः काफ़िरून और सूरः इख़्लास पढ़ी थी। **(मुस्लिम)**

इस सूरः से मालूम हुआ कि शिर्क में किसी के साथ कोई समझौता नहीं हो सकता।

आयत नं० 1 से 6 तक

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۗ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۚ

अनुवाद-

(1) कह दीजिए, ''ऐ काफ़िरों (दीन का इन्कार करने वालो), (2) न मैं उनकी इ़बादत (उपासना) करता हूँ, जिन (देवी, देवताओं) की तुम इ़बादत करते हो, (3) और न तुम 'उस' (अल्लाह) की इ़बादत करने वाले हो, जिसकी इबादत मैं करता हूँ। (4) और न मैं उनकी इ़बादत करने वाला हूँ, जिनकी इबादत तुम करते हो। (5) और न तुम 'उसकी' इ़बादत करने वाले हो जिसकी इ़बादत मैं करता हूँ। (6) तुम अपने दीन पर, मैं अपने दीन पर!'' (अर्थात तुमको तुम्हारे कर्मो का बदला मिलेगा और मुझ को मेरे कर्मो का बदला मिलेगा)।

सूरः काफ़िरून की संक्षिप्त व्याख्या

1-2 قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ

इब्ने इस्ह़ाक़ (इतिह़ासकार) ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत किया है कि 'वलीद बिन मुग़ीरा' आस बिन वायल, 'अस्वद बिन अ़ब्दुल् मुत्तलिब' और 'उमय्या बिन ख़लफ़' ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के पास आए और कहा कि आओ हम आपस में इस पर सुलह़ कर लें कि एक साल आप हमारे मूर्तियों की अ़िबादत किया करें और एक साल हम आप के मअ़बूद (अल्लाह) की अ़िबादत करें। **(कुर्तुबी)**

इसी तरह़ 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' की दूसरी रिवायत में है कि मक्का के काफ़िरों ने सबसे पहले तो आपसी बातचीत के लिए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के सामने यह बात रखी कि हम आप (सल्ल०) को इतना माल देंगे कि आप (सल्ल०) सारे मक्का में सब से ज़्यादह मालदार हो जाएँगे और जिस औ़रत से आप चाहेंगे आपका निकाह़ कर देंगे। आप (सल्ल०) केवल इतना करें कि हमारे उपास्यों को बुरा भला न कहें और अगर आप यह भी नहीं मानते तो इस तरह़ कर लें कि एक साल आप हमारे उपास्यों की अ़िबादत किया करें। **(कुर्तुबी, तबूरानी)**

ह़ज़रत अबू सालेह़ (रज़ि०) की रिवायत में 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत है कि मक्का के काफ़िरों ने आपसी बातचीत के लिए यह बात रखी कि आप हमारी मूर्तियों में से कुछ को सिर्फ़ हाथ लगा दे तो हम आप को मानने लगेंगे।

इस पर ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) यह सूरः काफ़िरून लेकर नाज़िल हुए जिसमें काफ़िरों के आ़माल से बरी होने और एक अल्लाह की अ़िबादत का हुक्म दिया गया।

'काफ़िर' का अर्थ-

काफ़िर का शाब्दिक अर्थ होता है "ढ़ापने और छुपाने या इन्कार करने वाला" यानी ह़क़ का इन्कार करने वाला जिसका पारिभाषिक अर्थ होता है अल्लाह को न मानने वाला। यानी जो व्यक्ति अल्लाह तआ़ला और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को आख़िरी रसूल (अन्तिम महाईशदूत) न माने और उनके ज़रिये लाए हुए दीन को जो ह़ज़रत आदम (अ़लै०) से चला आ रहा है उस (इस्लाम) को न माने और ईमान न लाए बल्कि उस का इन्कार करें (चाहे वह मुस्लिम गोत्र में ही क्यों न पैदा हुआ हो) काफ़िर कहलाएगा।

काफ़िर या मुस्लिम-

यानी काफ़िर या मुस्लिम या मोमिन किसी कुल, परिवार, नस्ल, स्थान, देश, जाति या नाम की बुनियाद पर नहीं होता, बल्कि आस्था की बिना पर आदमी मुस्लिम या काफ़िर होता है।

इन्सान को चाहिए कि सिर्फ़ उसी अल्लाह की अ़िबादत (उपासना) अराधना, बन्दग़ी, आज्ञापालन करे और उस की अ़िबादत में किसी को शरीक न करे। जो व्यक्ति अल्लाह के सिवा किसी और की अ़िबादत करता है चाहे वह बुतपरस्ती के रूप में हो या भूमि पूजा के रूप में चाहे देवी देवताओं को मदद के लिए पुकारता हो या किसी फ़र्ज़ी ख़ुदाओं के भजन गाता हो, खुला हुआ शिर्क है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने इस बहुदेववाद के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई और एक अल्लाह के सामने की दअ़वत दी तो लोगों ने विरोध किया, उस पर यह आयतें नाज़िल हुईं कि "ऐ काफ़िरों" यानी काफ़िर के शब्द से सम्बोधित किया गया कि उन के कुफ़्र (इन्कार) के बदले में अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) टूटने वाला है। यह बात मक्का के काफ़िरों के लिए थी, लेकिन यह बात उन लोगों पर भी लागू होती है जो मक्का के काफ़िरों जैसी हठधर्मी अपनाएँ। यानी क़ियामत तक पैदा होने वाले काफ़िरों पर अल्लाह की यह बात साबित होती रहेगी कि कुफ़्र और ईमान दोनों एक दूसरे के ख़िलाफ़ हैं।

धार्मिक समझौता एक दूसरे से नहीं हो सकता कि कुछ दिन हम उनके धर्म को या धर्म के किसी ह़िस्से को मानें, फिर कुछ दिन दूसरा हमारे धर्म का कुछ ह़िस्सा माने, यह नहीं हो सकता। जिस तरह़ झूठ और सच दोनों एक जगह पर जमा नहीं किये जा सकते, उसी तरह़ ईमान और कुफ़्र भी एक जगह जमा नहीं किये जा सकते।

मक्का के मुश्रिक-

मक्का के मुश्रिक ख़ुदा को एक मानते थे और उसकी परवरिश से भी उन्हें इन्कार नहीं था, लेकिन वह यह बात भी मानने के लिए तैयार नहीं थे कि मूर्तियों को छोड़ कर एक ख़ुदा की पूजा की जाए। वह अगर ख़ुदा की पूजा करते थे तो भी शिर्क के साथ होती थी, इसलिए उन पर स्पष्ट किया गया है कि यह न ख़ुदा की पूजा है और न ही तुम ख़ुदा की इ़बादत करने वाले हो।

मुश्रिकीन (अनेकश्रवादी) चाहते थे कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) उन के भगवानों की पूजा करें,

ताकि समझौते की कोई सूरत पैदा हो।

यहाँ बताया गया है कि न मैं तुम्हारे मअ़बूदों (उपास्यों) की पूजा करता हूँ और न मुझसे आगे के लिए यह उम्मीद की जा सकती है कि मैं इस मामले में कोई नर्मी या लचक पैदा करुँगा। मैं निश्चित रूप से और हमेशा के लिए तुम्हारे मअ़बूदों (पूज्यों उपास्यों) से अपनी बेज़ारी (विमुखता) का ए़लान करता हूँ।

3-5 وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝

इस सूरः में काफ़िर शब्द प्रयोग हुआ है, जिस की तफ़्सीर कई तरीक़े से टीकाकारों ने की है।

जिस का साराँश यह है कि न तो मैं तुम्हारे मअ़बूदों (उपास्यों) की अ़िबादत इस समय करता हूँ और न भविष्य में ऐसा कर सकता हूँ कि मैं अपने तौह़ीद (एकेश्वरवाद) पर रहूँ और तुम अपने शिर्क पर रहते हुए एक दूसरे के मअ़बूदों (उपास्यों) की अ़िबादत करें।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर ने पहले वाले शब्द मा को 'इस्म मौसूल' अल्लज़ी यानी 'जो' के अर्थ में लिया हैं और दूसरा शब्द मा 'मस्दरिया' लिया है। इस तरह़ पूरी आयत का मतलब यह हुआः-

"जिन मअ़बूदों (उपास्यों) की तुम अ़िबादत करते हो मैं उनकी अ़िबादत नहीं करता और जिस मअ़बूद की मैं अ़िबादत करता हूँ उस की तुम अ़िबादत नहीं करते और दूसरे अर्थ मेंः-

"हमारी और तुम्हारी अ़िबादत के तरीक़े ही अलग-अलग हैं। मैं तुम्हारी तरह़ की अ़िबादत नहीं कर सकता और तुम जब तक ईमान न लाओगे तो तुम मेरी तरह़ की अ़िबादत नहीं कर सकते"।

खुलासा यह हुआ कि न तुम्हारे और हमारे मअ़बूदों (उपास्यों) में समानता है और न अ़िबादत के तरीके में।

यानी अल्लाह के अतिरिक्त कोई अ़िबादत के लायक़ नहीं और अ़िबादत करने का भी केवल वही तरीक़ा माना जाएगा, जिसे ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने बताया है।

इस आयत का यह मतलब नहीं कि इन काफ़िरों के भविष्य में ईमान लाने की कोई गुन्जाइश बाक़ी ही न हो, क्योंकि इनमें ऐसे लोग भी थे जो बाद में इस्लाम क़ुबूल किये। इसका मतलब यह हुआ कि तुम्हारे अन्दर चूंकि मेरे मअ़बूद की इ़बादत के लिए कोई उत्सुकता नहीं पाई जाती और तुम अपने पूज्यों ही के पुजारी बन के रहना चाहते हो, इसलिए मैं तुम से अलग होने का ए़लान करता हूँ जब तक कि तुम अपने इस काफ़िराना और मुश्रिकाना रवैये से बाज़ न आ जाओ।

6 لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝

शब्द दीन-

इमाम बुख़ारी (रह़०) ने दीन का अर्थ धर्म इस्लाम और कुफ़्र माना है। जिस का मतलब यह हुआ कि वर्तमान की सुलह सही नहीं, मैं तो अपने दीन पर ही हूँ तुम भी अपने दीन पर जमे हो, तो फिर तुम जानो और तुम्हारा काम, इसका अन्जाम तुम्हें भुगतना है और कुछ मुफ़स्सिरीन ने दीन को जज़ा

(बदले) के माना में लिया है।

इब्ने कसीर (रह०) ने भी आ़माले दीन के माने भी लिया है कि हर एक को अपने-अपने अ़मल की सज़ा ख़ुद भुगतनी पड़ेगी।

आज धार्मिक उदारता के नाम पर वहदते-अद्‌यान यानी "सारे धर्म समान है उन में सत्य और असत्य का कोई फ़र्क़ नहीं" के सिद्धान्त को बड़े मनमोहक अन्दाज़ में प्रस्तुत किया जाता है। इसका प्रचार करने वाले लोग चाहते हैं कि ख़ुदा और मुहताज मूर्तियों को एक ही पंक्ति में रख दे।

शिर्क एवं तौहीद (बहुदेववाद एवं एकेश्वरवाद) का माजून तैयार करें, जबकि सत्य और असत्य एक जगह जिस तरह जमा नहीं हो सकते, उसी तरह शिर्क और तौहीद एक जगह जमा नहीं हो सकते।

सूरः काफ़िरून की फ़ज़ीलत-

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया कि फ़ज्र की सुन्नतों में पढ़ने के लिए दो सूरतें बेहतर है। (1) सूरः काफ़िरून (2) सूरः इख़्लास **(इब्ने हिशाम)**

कुछ सहाबा ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से दरख़्वास्त की हमें कोई दुआ़ बता दीजिए जिसे हम सोने से पहले पढ़ लिया करें। आप (सल्ल०) ने यही सूरः काफ़िरून के पढ़ने का हुक्म दिया। (इसमें शिर्क से बरी होना है।) **(तिर्मिज़ी, अबूदाऊद)**

'हज़रत ज़ुबैर बिन मुत्अिम' (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, क्या तुम यह चाहते हो कि जब सफ़र में जाओ तो वहाँ तुम अपने सब साथियों से ज़्यादह ख़ुशहाल हो और तुम्हारा सामान ज़्यादह हो जाए। उन्होंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! बेशक मैं ऐसा ही चाहता हूँ। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि क़ुर्आन के आख़ीर की पाँच सूरतें, सूरः काफ़िरून से आख़िर तक पढ़ा करो और हर सूरः को बिस्मिल्लाह से शुरु करो और बिस्मिल्लाह ही पर ख़त्म करो।

हज़रत ज़ुबैर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि उस समय सफ़र में अपने साथियों के मुक़ाबिले में मैं बहुत ख़स्ता हाल था। जब से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की इस तअ़लीम पर अ़मल किया, मैं सब से बेहतर हा़ल में रहने लगा। **(मज़्हरी)**

हज़रत अ़ली (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को बिच्छू ने काट लिया तो आप ने पानी और नमक मंगाया और इस पानी को कटने की जगह लगाते जाते और यह सूरः काफ़िरून और "कुल अऊज़ु बिरब्बिल् फ़लक़ि और कुल अ ऊज़ु बिरब्बिन्नासि" पढ़ते जाते थे। **(मज़्हरी)**

(भाग–110)

सूर–ए–नस्र

(सूरः नं. 110)

सूरः नस्र का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मदीना में ह़ज्जतुल् विदाअ़ के मौके पर हिज्रत के दस्वें साल उस वक्त नाज़िल हुई जिस वक्त पूरा अ़रब मुसलमानों के क़ब्ज़े में था और लोग हर तरफ़ से आकर इस्लाम में दाख़िल हो रहे थे।

इस सूरः के नाज़िल होते ही 'ह़ज़रत अबू बक्र' (रज़ि०) समझ गए थे कि अब रसूलुल्लाहि (सल्ल०) हमारे पास से बुला लिये जाएँगे, क्योंकि दुनिया में तब्लीग़े इस्लाम का काम जो आप (सल्ल०) के ज़िम्मे था वह मुकम्मल हो चुका, तो अब ठहरने की क्या ज़रुरत? इसलिए आप रोने लगे।

इस सूरः के नाज़िल होने से यह भी पता चल गया कि अल्लाह के दुश्मन तबाह होंगे चाहे वह रसूलुल्लाहि (सल्ल०) के रिश्तेदार ही क्यों न हो, उनकी इ़ज़्ज़त या माल व दौलत उन्हें जहन्नम से हरगिज़ बचा न सकेगी।

आयत नं० 1 से 3 तक

إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللّٰهِ أَفْوَاجًا ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ۝

अनुवाद-

(1) जब अल्लाह की मदद और फ़तह़ (विजय) आ पहुँची, (2) और आप ने देख लिया कि लोग अल्लाह के दीन (इस्लाम) में झुंड के झुंड दाख़िल हो रहे हैं, (3) तो अपने रब की ह़म्द (प्रशन्सा) के साथ तस्बीह़ कीजिए और उसी से मग्फ़िरत (क्षमा) माँगिए, बेशक 'वह' बड़ा तौबः कुबूल करने वाला है।

सूरः नस्र की संक्षिप्त व्याख्या

1 إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝

यह सूरः मदनी है और इसका नाम सूरः नस्र के अतिरिक्त 'सूरतुत्तौदीअ़' भी है। तौदीअ़ के माने किसी को रुख़सत (विदअ़) करने के हैं। इस सूरः में चूँकि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की वफ़ात (देहान्त) का समय क़रीब था, अतः उस की ओर संकेत है। इसलिए इस सूरः को 'सूरतुत्तौदीअ़' कहा गया है।

अन्-नस्र-

'नस्र' से वह मदद है, जो ह़क़ को प्रभुत्व मिल जाने के बाद ज़ाहिर हो। अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूलों से वादा फ़रमाया है कि वह ज़रूर उनके मुखालिफों के मुक़ाबिले में मदद फ़रमाएगा, जैसा कि सूरः अल्-मोमिन में देखा जा सकता है।

आखिरी सूरः-

सह़ी मुस्लिम में "ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि यह सूरः नस्र क़ुर्आन की आख़िरी सूरः है"।

यानी इस सूरः के बाद कोई मुकम्मल पूरी सूरः नाज़िल नहीं हुई। कुछ आयतें इस सूरः के बाद नाज़िल हुईं।

'ह़ज़रत इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' फ़रमाते हैं कि यह 'सूरः ह़ज्जतुल् विदअ़' में नाज़िल हुई, इसके बाद आयत "अल् यौमा अकमल्तु लकुम दीनुकुम" नाज़िल हुई। इन दोनों के नाज़िल होने के बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) इस दुनिया में सिर्फ़ अस्सी दिन तक रहे, इसके बाद आयत 'कलालः' नाज़िल हुई, जिस के बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की उ़म्र शरीफ़ के कुल पचास दिन ही रह गए थे, फिर आयत "लक़द जाअकुम" नाज़िल हुई, जिसके बाद आप (सल्ल०) की उ़म्र के कुल पैतीस दिन बाक़ी थे और आख़िर में आयत "इत्तक़ु यौमन तुर्जऊन" नाज़िल हुई, जिसके बाद सिर्फ़ इक्कीस दिन और कुछ लोगों के नज़्दीक केवल सात दिन के बाद आप (सल्ल०) की वफ़ात हो गई। **(क़ुर्तुबी)**

इस सूरः में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को दो बातों की ओर इशारा किया गया है कि अल्लाह की मदद आएगी, फ़तेह़ मिलेगी (यानी फ़तेह़ मक्का) और लोग अल्लाह के दीन में फ़ौज की फ़ौज दाख़िल होंगे। फिर जब ऐसा होने लगे तो आप अपने रब की तस्बीह़ (गुणगान) कीजिए और मग्फ़िरत (क्षमा) माँगिए।

'मक़ातिल' की रिवायत में है कि जब यह सूरः नाज़िल हुई तो आप (सल्ल०) ने सहाबा के सामने इस की तिलावत फ़रमाई। जिन में 'हज़रत अबू बक्र व अम्र बिन अबी वक़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हुम आदि मौजूद थे, सभी हज़रात इस को सुनकर खुश हुए कि इसमें फ़तेह़ मक्का की ख़ुशख़बरी है, लेकिन हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने कहा, इसमें आप (सल्ल०) के वफ़ात की ख़बर है, तो आप (सल्ल०) ने इस की तस्दीक़ की।

इस तरह़ सही़ बुख़ारी में है कि जब हज़रत उ़मर (रज़ि०) ने सुना तो फ़रमाया, इस सूरः से मैं भी यही समझता हूँ। **(क़ुर्तुबी)**

हा़फ़िज़ बैहक़ी (रह़०) ने अपनी सनद से 'हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत किया है कि जब "इज़ाजाआनस्रुल्लािहि" नाज़िल हुई तो हज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को बुलाया और फ़रमाया, मुझे मौत की ख़बर दी गई है तो वह रो पड़ीं, फिर थोड़ी देर बाद हंसने लगीं और बताया कि जब आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मुझे मौत की ख़बर दी गई है तो मैं रो पड़ी। फिर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि सब्र करो, मेरे घर वालों में से तुम सब से पहले मुझ से आकर मिलोगी तो मैं हंसने लगी"। **(बैहक़ी)**

फ़तेह़ मक्का (मक्का विजय)

'इब्ने कसीर' ने अपनी तफ़्सीर में लिखा है कि फ़तेह़ से मुराद फ़तेह़ मक्का है, जिस पर सभी मुफस्सिरीन (टीकाकार) सहमत हैं। अ़रब के तमाम क़बीले इस्लाम लाने के विषय में फ़तेह़ मक्का के इन्तिज़ार में थे, वह कहते थे कि यदि हज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अपनी क़ौम पर ग़ालिब आ गए तो हम लोग भी उन्हें आख़िरी रसूल (अन्तिम सन्देष्टा) मान लेंगे यानी फ़तेह़ मक्का के बाद दो साल के अन्दर सभी क़बीले लगभग इस्लाम में दाख़िल हो गए, जिसे इमाम बुख़ारी (रह़०) ने इस तरह़ लिखा हैः-

इस सूरः के नाज़िल होने के कुछ ही दिन बाद मक्का विजय की घटना रमज़ान सन् 8 हिजूरी (जनवरी 630 ई०) में हुई, जिसके बाद यमन से सात सौ आदमी मुसलमान होकर रास्ते में अज़ान कहते हुए क़ुर्आन की तिलावत करते हुए पहुँचे।

मक्का फतेह (विजय) के वक्त आप (सल्ल०) ने कोई लड़ाई झगड़ा नही किया और जो लोग इस्लाम दुश्मनी में आगे-आगे थे, उन को भी आप (सल्ल०) ने आ़म-तौर से माफ़ कर दिया।

इस मौक़े पर कअ़बः में जो (360) मूर्तियाँ मुश्रिकीने मक्का ने रख दी थीं, उसे हज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने इस तरह़ पाक किया कि मूर्तियों को लकड़ी से इशारा करते जाते और यह आयत पढ़ते जातेः-

"ह़क़ आ गया और बातिल (असत्य) मिट गया और बातिल तो मिटने के लिए ही था"।

(बनी इस्राईल-81)

इन उपास्यों में सबसे बड़ी मूर्ति 'हुबल' की थी। मूर्ति पूजक युद्ध के मौके पर उसी की जय पुकारते थे, लेकिन आज वह कुछ नहीं कर पा रही थी। आप (सल्ल०) ने इस विजय (फतेह) पर शुक्राने की नमाज़ पढ़ी और तक्बीर की आवाज़ बुलन्द करते हुए ह़क़ीक़त भरा एलान फ़रमायाः-

"अल्लाह जिसके अतिरिक्त कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, उस ने अपना वादा सच्चा किया अपने बन्दे की मदद की और तमाम जत्थों को उसी ने पराजय दिया"। **(अबू दाऊद)**

अ़रबी में शब्द 'इज़ा' आ़मतौर पर मुस्तक़बिल (भविष्य) के लिए आता है, लेकिन कभी-कभी माज़ी (Past भूत) के लिए भी आता है और यहाँ 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' का बयान इस बात पर तर्क है कि यह माज़ी (भूतकाल) के अर्थ में है। इसलिए इसका अनुवाद होगा "जब अल्लाह की सहायता और विजय आ गई"।

यानी 'शाह अ़ब्दुल् क़ादिर (रह़०) व 'मौलाना फ़तेह़ मुह़म्मद' (रह़०) ने यही अर्थ लिया है (भूतकाल) और ह़ज़रत शेख़ुलहिन्द (रह़०) ने (भविष्य के माना लिए हैं।)

2-3 وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۧ

लोगों के इस्लाम कुबूल करने का यह मन्ज़र जो आप (सल्ल०) ने देखा, यह अल्लाह की मदद का नतीजा था, इसलिए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से कहा जा रहा है कि इस फ़ज़्ल (कृपा) के ह़ासिल हो जाने पर ऐ नबी! आप को अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए। चूंकि आप के भेजने का उद्देश्य पूरा हो चुका है, इसलिए आप को ख़ुदा की ह़म्द और तस्बीह़ में मग्न हो जाना चाहिए और आप को ख़ुदा से दुआ़ करनी चाहिए कि इस ख़िद्मत के अन्जाम देने में जो कोताहियाँ हुई हों और ज़िम्मेदारियों के पूरा करने में जो भूल-चूक हुई हों, उसे वह माफ कर दें।

ह़ज़रत सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि इस सूरः के नाज़िल होने के बाद रसूलुल्लाहि (सल्ल०) जब कोई नमाज़ पढ़ते तो यह दुआ़ करते थेः-

"सुब्ह़ानका रब्बना व बिह़म्दिक, अल्लाहुम्मग़्फ़िरली"

ह़ज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि इस सूरः के नाज़िल होने के बाद आप (सल्ल०) उठते बैठते हर वक़्त यह दुआ़ पढ़ते थेः-

"सुब्ह़ानल्लाहि वबिह़म्दिही अस्तग़्फ़िरुल्लाहु व अतूबु इलैहि"

और फ़रमाते कि मुझे इसका हुक्म दिया गया है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि "इस सूरः के नाज़िल होने के बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने अ़िबादत में बड़ा मुजाहिदा फ़रमाया यहाँ तक कि आप (सल्ल०) के पाँव मुबारक पर वरम आ जाता था"। **(क़ुर्तुबी)**

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को यह हिदायत देकर ईमान वालों की रहनुमाई की गई है कि वह किसी भी ख़िद्मत के अन्जाम पाने या किसी विजय एवं सफ़लता के पाने पर दुनियादार लोगों की तरह़ इतराने

और गर्व करने के बजाए उसे अल्लाह के फ़ज़्ल (कृपा) और उसकी तौफ़ीक़ का नतीजा समझें। ह़म्द के लायक़ ह़क़ीक़त में वही अकेला है। इस एह़सास के साथ कि मालूम नहीं इस ख़िद्मत के अन्जाम देने में क्या-क्या कोताहियाँ हुई होंगी, अपने रब से माफी माँगे। ऐसे मौके पर ईमान वालों का रवैया यही होना चाहिए।

ऐसी महान विजय और ऐसा ज़बरदस्त ग़ल्बा (प्रभुत्व) हो जाने के बाद भी क़ुर्आन ने जश्न मनाने का हुक्म नहीं दिया, बल्कि अल्लाह की बारगाह में शुक्र और बन्दग़ी करने को कहा।

ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) का स्वभाव-

इसी तरह़ ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का वह अख़्लाक़ (आचरण) जबकि उन्हें सब कुछ ह़ासिल हो चुका था और ख़्वाब की तअ़बीर उनके सामने आ चुकी थी, जिसे क़ुर्आन ने उनके शुक्र का बयान इस तरह़ किया हैः-

अनुवाद-

"यूसुफ़ ने अपने वालिदैन को उठाकर शाही तख़्त पर बैठाया और सब लोग उन के सामने झुक गए। यूसुफ़ ने कहा, अब्बा जान यह है मेरे उस ख़्वाब की तअ़बीर जो मैंने पहले देखा था, मेरे पालनहार ने इसे ह़क़ीक़त बना दिया, उसने मुझ पर एह़सान फ़रमाया कि उसने मुझे क़ैदख़ाने से निकाला और आप लोगों को सहरा (मरुस्थल) से मेरे पास ले आया। ऐसे वक़्त शैतान मेरे भाइयों के दर्मियान फ़साद डलवा चुका था, वास्तव में मेरा रब जो कुछ चाहता है उसके लिए बेहतरीन तद्बीर अपनाता है, बेशक वह ह़कीम व अ़लीम है"। **(सूरः यूसुफ़-100)**

इस से ऊपर उठ कर ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) अल्लाह की ओर मुतवज्जेह हुए, एक शुक्रगुज़ार बन्दे की ह़ैसियत से अल्लाह की तस्बीह़ में लग गए और घर के लोगों के इकट्ठा होने की ख़ुशी को भूलकर अल्लाह से गिड़गिड़ा-गिड़गिड़ा कर दुआ़ करने लगे, "ऐ मेरे रब! मेरी मौत तक मेरे इस्लाम की ह़िफ़ाज़त कर और अपने फ़ज़्ल व करम से नेक लोगों में शामिल कर"।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का स्वभाव-

इसी तरह़ ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) का एक स्वभाव था कि उन्होंने मलक-ए-सबा के तख़्त को पलक झपकने से पहले अपने सामने मौजूद देखा, उस वक़्त की उनकी ह़ालत को क़ुर्आन इन शब्दों में बयान करता हैः-

"जब सुलेमान ने तख़्त को अपने पास रखा हुआ पाया तो वह पुकार उठे, यह मेरे रब के फ़ज़्ल व करम से है। यह इस लिए है कि वह मुझे आज़माए कि मैं इस नेअ़मत का शुक्र करूँगा या इस नेअ़मत का कुफ़्र करूँगा और जो कोई भी शुक्र करेगा अपने फ़ायदे के लिए शुक्र करेगा और जो नाशुक्री करेगा (उस का वबाल ख़ुद उस पर आएगा क्योंकि) मेरा रब ग़नी और करीम है"। **(सूरः नम्ल)**

यही हालत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की पूरी ज़िन्दगी में थी कि मक्का वालों ने आप (सल्ल०) को बेइन्तिहा सताया था, लेकिन आप (सल्ल०) ने बदले की कोई भावना न आने दी, बल्कि एह़सान का मामला बताया।

तौबः-

यहाँ अल्लाह तआ़ला की सिफ़त तौव्वाब (बड़ी ही तौबः क़ुबूल करने वाला) बयान हुई है जो मन्फ़ी (Negative) और मुस्बत (Positive) दोनों एतिबार से है। मन्फ़ी (नकारात्मक Negative या) पहले के मुताबिक़ इस का मतलब यह है कि यदि बन्दा उस से माफ़ी माँगे तौबः करे तो वह उस को माफ़ कर देता है, उस की तौबः क़ुबूल करता है। सकारात्मक अनुसार से बन्दा जब उसकी ओर पलटता और झुकता है तो वह बन्दे की तरफ़ अपनी मेहरबानियों के साथ ध्यान देता है।

यहाँ इस सिफ़त का ज़िक्र उस मफ़हूम (Sense) में है कि तुम उम्मीद रखो कि वह न सिर्फ़ तुम को माफ करेगा, बल्कि तुम पर अपनी मेहरबानी भी करेगा और अपनी मेहरबानियों के साथ तुम्हारी ओर ध्यान देता रहेगा।

तस्बीह़ व इस्तिग़्फ़ार-

इस आयत में आप (सल्ल०) को यह तअ़लीम दी गई है कि आप (सल्ल०) तस्बीह़ व इस्तिग़्फ़ार कसरत से कीजिए। आप (सल्ल०) का पालनहार बहुत तौबः क़ुबूल करने वाला है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का आख़िरी दौर-

ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं, “रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी दौर में **“सुब्ह़ानल्लाहि व बिह़म्दिही अस्तग़्फ़िरुल्लाहु व अतूबु इलैहि”** यानी “अल्लाह पाक है, मैं उस की तअ़रीफ़ करता हूँ मैं अल्लाह से मग़्फ़िरत चाहता हूँ और उस से तौबः क़ुबूल करता हूँ”। यह शब्द आप (सल्ल०) बहुत ज़्यादा फ़रमाया करते थे।

आप (सल्ल०) फ़रमाते थे, मेरे रब ने मुझे बताया है कि मैं जल्द ही अपनी उम्मत के सिल्सिले में एक निशानी देखूँगा और उसने मुझे हुक्म दिया है कि तअ़रीफ़ के साथ उस की तस्बीह़ बयान करूँ और उस से मग़्फ़िरत चाहूँ। बेशक वही तौबः क़ुबूल करने वाला है तो मैंने वह निशानी देख ली, फिर आप (सल्ल०) ने यह सूरः तिलावत फ़रमाई “इज़ाजाआ नस्रुल्लाहि” जब अल्लाह की मदद आ जाए और (मक्का) फ़तेह़ हो जाए और तुम देखो कि लोग फ़ौज के फ़ौज अल्लाह के दीन में दाख़िल हो रहे हैं तो अपने रब की तस्बीह़ बयान करना और उस से मग़्फ़िरत माँगना, बेशक वह बड़ा तौबः क़ुबूल करने वाला है। **(मुस्लिम)**

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं, इस सूरः के नाज़िल होने के बाद आपने ज़िक्र व अ़िबादत बढ़ा दी थी यहाँ तक कि आप (सल्ल०) के पैर मुबारक पर वरम आ जाता था। यानी जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को तौबः करने की हिदायत की गई तो आम मुसलमानों को जिनकी ज़िन्दगी गुनाहों से भरी हुई हो उन को तो अपने आख़िरी वक़्त में तौबः और इस्तिग़फ़ार बहुत कसरत से करना चाहिए।

(भाग-111)

सूर-ए-लहब

(सूरः नं. 111)

सूरः लहब का संक्षिप्त परिचय

यह सूरः मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 'अबू लहब' का नाम लेकर उसके बुरे अन्जाम के बारे में बयान किया गया है। 'अबू लहब' हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के चचा, 'अ़ब्दुल् उ़ज़्ज़ा बिन अ़ब्दुल् मुत्तलिब' का लक़ब था, जो आप (सल्ल०) की दुश्मनी में सबसे आगे-आगे था। यह आप (सल्ल०) पर पत्थर फेंकता, हाथ हिला-हिला कर लोगों को आप (सल्ल०) की बातें सुनने से रोकता था, इसकी बीवी उम्मे जमील आप (सल्ल०) के रास्ते में काँटेदार हथियार झाड़ियाँ डालती, दुश्मनी की आग आप (सल्ल०) के ख़िलाफ़ भड़काती।

यह सूरः इन दोनों के हक़ में नाज़िल हुई और इनके खुल्लम-खुल्ला तबाही की पेशीनगोई (भविष्यवाणी) की गई। जंगे बद्र के बाद अबू लहब के ज़हरीली फुँसी निकली, घर वालों ने इसे घर से बाहर निकाल दिया और उसी हालत में मर गया। इसके बाद मरने के बाद उस की लाश हब्शी ग़ुलामों ने लकड़ी से खिसका कर एक गढ़े में ढ़केल दिया। केवल यही एक ऐसा व्यक्ति है जिसका नाम लेकर क़ुर्आन में बुराई की गई है और इस का जिक्र इस सूरः में किया गया है।

आयत नं० 1 से 5 तक

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۝ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝ فِيْ جِيْدِهَا
حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝

अनुवाद-

① टूट गये अबू लहब के हाथ और वह तबाह (बर्बाद) हो गया ② न तो उसका माल ही उसके कुछ काम आया और न वह जो उसने कमाया। ③ वह बहुत जल्द भड़कती हुई आग में डाला जाएगा, ④ और उस की पत्नी भी जो सिर पर ईंधन लाद कर लाती है। ⑤ उसकी गर्दन में मूँझ की रस्सी होगी।

सूरः लह़ब की संक्षिप्त व्याख्या

1 تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝

यह सूरः मक्का में उस समय नाज़िल हुई जबकि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का विरोध 'अबू लहब' पूरे तौर पर कर रहा था, जो आप (सल्ल०) का चचा था। क़ुर्आन मजीद में यही एक ऐसी जगह है जहाँ इस्लामी दुश्मनी में 'अबू लहब' का नाम लेकर उसकी बुराई बयान की गई है, जबकि मक्का और मदीना में बहुत से लोग ऐसे थे जो इस्लाम और मुह़म्मद (सल्ल०) की दुश्मनी में अबू लहब से किसी तरह़ कम न थे, लेकिन 'अबू लहब' की बुराई इस वजह से ज़्यादा हो गई थी कि यह ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ख़ास रिश्तेदार था और अ़रबों में रिश्ते का बहुत ख़याल किया जाता था।

जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने इस्लाम की दअ़वत दी तो क़ुरैश के दूसरे ख़ानदान वालों और उनके सरदारों ने तो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की मुख़ालिफ़त (विरोध) नहीं की, बल्कि वह खुल्मम खुल्ला आप (सल्ल०) की मदद भी करते रहे, जबकि उनमे से ज़्यादहतर लोग आप (सल्ल०) की मदद भी करते रहे। उनमें से अक्सर लोग आप (सल्ल०) की नुबूव्वत पर ईमान नहीं लाए तो क़ुरैश के दूसरे ख़ानदान ख़ुद भी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के ख़ूनी रिश्तेदारों की मदद को नैतिकता के मुताबिक समझते थे।

इसी वजह से उन्होंने कभी बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब को यह ताना नहीं दिया कि तुम एक दूसरा दीन पेश करने वाले व्यक्ति की हिमायत करके अपने बाप-दादा के दीन से हट गए हो। (वह इस बात को जानते और मानते थे कि अपने ख़ानदान के एक व्यक्ति को वह किसी ह़ाल में उसके दुश्मनों के ह़वाले नहीं कर सकते हैं।

अ़रबों के सामाजिक नैतिकता को तोड़ने वाला, इस्लाम दुश्मनी में सिर्फ़ यही वह व्यक्ति 'अबू लहब बिन अ़ब्दुल् मुत्तलिब' था, जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का चचा था। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के वालिद 'अ़ब्दुल्लाह' और यह 'अबू लहब' एक ही बाप के बेटे थे। अ़रब में चचा को बाप के समान समझा जाता था, ख़ास तौर से जबकि भतीजे के बाप का इन्तिक़ाल हो चुका हो तो अ़रबी समाज में चचा से यह उम्मीद

की जाती थी कि भतीजे को अपनी औलाद की तरह़ समझे, लेकिन इस व्यक्ति ने इस्लाम की दुश्मनी और कुफ़्र की मुह़ब्बत ने इन तमाम बातों को भुला दिया था।

'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत है जब 'ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम' को दअ़वत (धर्म प्रचार) का हुक्म मिला और क़ुर्आन में यह हिदायत नाज़िल हुई कि आप (सल्ल०) अपने क़रीबी लोगों को सबसे पहले ख़ुदा के अ़ज़ाब से डराएँ तो आप (सल्ल०) ने सुबह़-सुबह़ कोहे सफ़ा पर चढ़कर बुलन्द आवाज़ से पुकाराः-

सफ़ा पहाड़ की दअ़वत-

"या सबाहा" अ़रब में इस शब्द के साथ वह व्यक्ति आवाज़ लगाता था जो सुबह़ के वक़्त किसी दुश्मन को अपने क़बीले पर ह़मला करने के लिए आते देख लेता था।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की इस आवाज़ को सुनकर लोगों ने पूछा यह कौन पुकार रहा है? बताया गया कि यह मुह़म्मद (सल्ल०) की आवाज़ है। इस पर क़ुरैश के तमाम ख़ानदान के लोग आप (सल्ल०) की ओर दौड़े जो ख़ुद आ सकता था वह ख़ुद आया और जो न आ सकता था उसने अपनी तरफ़ से किसी को भेज दिया, जब सब जमा हो गए तो आप (सल्ल०) ने क़ुरैश के एक-एक ख़ानदान का नाम ले लेकर पुकारा।

'ऐ बनी हाशिम'! ऐ 'बनी अ़ब्दुल् मुत्तलिब'! ऐ बनी फ़िहिर! ऐ बनी अमुक! यदि मैं तुम्हें बताऊँ कि पहाड़ के पीछे एक लश्कर तुम पर ह़मला करने के लिए तैयार है तो तुम मेरी बात सच मानोगे? लोगों ने कहा, क्यों नहीं इसलिए कि हमने तुम से कभी झूठ सुना ही नहीं है।

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मैं तुम्हें ख़बरदार करता हूँ कि आगे सख़्त अ़ज़ाब आ रहा है। इस पर किसी और को बोलने से पहले ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के अपने चचा अबू लहब ने कहाः-

"तब्बन लका अलिहाज़ा जमअ़तना?" तेरा नास हो क्या इसीलिए तूने हमें जमा किया था।

एक रिवायत में यह है कि उसने पत्थर उठाया, ताकि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को मारे।

(मुस्नद अह़मद, बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

'ह़ज़रत इब्ने ज़ैद' से रिवायत है कि 'अबू लहब' ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से एक दिन पूछा, अगर मैं तुम्हारे दीन को मान लूँ तो मुझे क्या मिलेगा?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, वही जो सब ईमान वाले को मिलेगा। उसने कहा, "क्या मेरे लिए कोई फ़ज़ीलत नहीं?" ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया "और आप क्या चाहते हैं" उस पर वह बोला।

"तब्बन लिहाजद्दीन तब्बन अन् अकूना व हाउलाए सवाआ"।

(नास हो जाए उस दीन का जिसमें मैं और यह दूसरे लोग बराबर हों।) **(इब्ने जहीर)**

मक्का में 'अबू लहब' आप (सल्ल०) का पड़ोसी भी था, आप (सल्ल०) और उस के घर के बीच सिर्फ़ एक दीवार थी। इसके अ़लावा 'हकम बिन आस' 'उक़बा बिन अ़बी मुईत' 'अ़दी बिन हमरा' और इब्नुल्आ़स, वाइल हुज़ूली भी आप (सल्ल०) के पड़ोसी थे। यह लोग घर में भी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०)

को चैन नहीं लेने देते थे, आप (सल्ल०) कभी नमाज़ पढ़ते होते तो यह ऊपर से बकरी का ओझ आप (सल्ल०) पर फेंक देते थे, कभी आँगन में खाना पक रहा होता तो यह हंडियों पर गन्दगी फेंक देते। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) बाहर निकल कर इन लोगों से फ़रमाते, ऐ बनी अ़ब्द मनाफ़! यह कैसी पड़ोसगी है? 'अबू लहब' की बीवी 'उम्मे जमील' (अबू सुफ़्यान की बहन) ने तो बराबर अपना पेशा ही बना लिया था कि रातों को आप (सल्ल०) के घर के दरवाज़े पर कांटेदार झाड़ियाँ ला कर डाल देती, ताकि सुबह़ सवेरे आप (सल्ल०) बाहर निकलें तो काँटा पैर में चुभ जाए।

(बैह़की, इब्ने हि़शाम, इब्ने अबी ह़ातिम, इब्ने असाकिर, इब्ने जरीर)

नुबूवत से पहले ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की दो बेटियों की शादी अबू लहब के दो बेटे उत्बा और उतैबा से हुई थी। नुबूवत के बाद जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने दअ़वत देनी शुरु कर की तो इस व्यक्ति ने अपने दोनों बेटों से कहा कि मेरे लिए तुम से मिलना ह़राम है, जब तक कि तुम मुह़म्मद की बेटियों को तलाक़ न दे दो।

यानी दोनों ने तलाक़ दे दी और 'उ़त्बा' तो इतना ज़ुल्म करने लगा कि एक दिन ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के सामने आकर उनसे कहा कि मैं **"अन्नजमि इज़ा हवा और अल्लज़ी दना फ़तदल्ला"** का इन्कार करता हूँ और यह कहकर उसने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की तरफ़ थूका जो आप (सल्ल०) पर नहीं पड़ा।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया ख़ुदा इस पर अपने कुत्तों में से एक कुत्ते को मुसल्लत कर दे, इसके बाद 'उ़तैबा' अपने बाप के साथ शाम के सफ़र पर रवाना हो गया, सफ़र के दौरान एक ऐसी जगह काफ़िले ने पड़ाव डाला जहाँ मक़ामी लोगों ने बताया कि रातों को दरिन्दे आते हैं। 'अबू लहब' ने अपने साथी अहले क़ुरैश से कहा कि मेरे बेटे की हि़फ़ाज़त का कुछ इन्तिज़ाम करो, क्योंकि मुझे ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की बद्दुआ़ का ख़ौफ़ है। इस पर काफ़िले वालों ने 'उ़तैबा' के आस-पास चारों तरफ़ से अपने ऊँट बिठा दिये और सो गए। रात को एक शेर आया और ऊँटों के बीच में घुसकर 'उ़तैबा' को फाड़ खाया। **(अल् इसाबा)**

इसमें कुछ रावियों का कहना है कि तलाक़ का मामला नुबूवत के एेलान के बाद का है और कुछ का कहना है कि **"तब्बत यदा अबी लहबि"** के नाज़िल होने के बाद का है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) जहाँ-जहाँ भी इस्लाम की दअ़वत देने के लिए जाते यह आप (सल्ल०) के पीछे-पीछे जाता और लोगों को आप (सल्ल०) की बात सुनने से रोकता।

रबीआ़ बिन अ़ब्दुद्दौली बयान करते हैं, मैं कम उ़म्र था जब अपने बाप के साथ 'ज़ुल्मिज़ाज' के बाज़ार में गया तो वहाँ मैंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को देखा कि आप (सल्ल०) कह रहे थे, "लोगों! कहो अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, कामियाब हो जाओगे और आप (सल्ल०) के पीछे-पीछे एक आदमी कहता जा रहा था कि यह झूठा है, अपने बाप दादा के दीन से फिर गया है"। मैंने पूछा यह कौन व्यक्ति है? लोगों ने कहा यह उन का चचा 'अबू लहब' है। **(मुस्नद अह़मद)**

इन्हीं सब हरकतों की बिना पर 'अबू लहब' का नाम लेकर उसे बुरा भला कहा गया है।

अबू लहब का नाम-

इसका नाम 'अ़ब्दुल् उ़ज़्ज़ा' था। इस के सुर्ख़ रंग की वजह से इस का नाम 'अबू लहब' पड़ गया था, इसलिए इसकी कुन्नियत भी 'अबू लहब' थी और क़ुर्आन ने इसका असली नाम इसलिए छोड़ दिया कि वह नाम भी मुश्रिकाना था और 'अबू लहब' कुन्नियत में। 'लहब' जहन्नम से एक सम्बन्ध भी था, इसने और इसकी बीवी उम्मे जमील ने बराबर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की मुख़ालिफत की।

'यद' का अर्थ होता है हाथ, चूंकि इन्सान के तमाम कामों में हाथ का बहुत बड़ा हिस्सा होता है, इसलिए किसी व्यक्ति के काम को भी हाथ बोला जाता है।

'बैहक़ी' ने 'हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत किया है कि 'अबू लहब' ने एक दिन लोगों से कहा,"मुहम्मद (सल्ल०) कहते हैं, "मरने के बाद ऐसा-ऐसा होगा, फिर अपने हाथों की तरफ़ इशारा करके कहने लगा कि इन हाथों में उन चीज़ों में से कुछ भी नहीं आया, फिर अपने हाथों को सम्बोधित करते हुए कहाः-

"तुम बर्बाद हो जाओ तुम्हारे अन्दर इन चीज़ों में से कुछ भी नहीं दिखता जिनके होने की ख़बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) देते हैं, इस वजह से क़ुर्आन ने हाथों की संज्ञा दी"।

इस आयत में "तब्बत यदा अबी लहब" यहाँ बद्दुआ के माने में है यानी अबू लहब हलाक हो जाए, दूसरे 'वतब्ब' के माना यह हुए कि बद्दुआ के साथ उसका असर भी बतला दिया कि वह हलाक हो गए।

जब 'अबू लहब' ने आप (सल्ल०) से कहा 'तब्बा' तो मुसलमानों के दिल की ख़्वाहिश थी कि वह इसके लिए बद्दुआ़ करें, इस पर अल्लाह तआ़ला ने उनके दिल की बात खुद ही फ़रमा दी साथ ही यह भी ख़बर दे दी कि यह बद्दुआ उसको लग गई और वह हलाक हो गया।

क़ुर्आन ने चूँकि इसके हलाकत की ख़बर पहले ही दे दी थी, इसलिए इसका असर यह हुआ कि जंग-ए-बद्र के सात दिन बाद बीमारी फैल गई और वबा की एक गिलटी निकली जिसे अ़रब के लोग 'अदस' कहते हैं, यह छुआछूत का मर्ज़ होता है, इसलिए लोगों ने 'अबू लहब' को घर के कोने में इस वजह से डाल दिया कि कहीं यह मर्ज़ दूसरे को न लग जाए। यहाँ तक कि यह उसी बेकसी की हालत में मर गया और तीन दिन तक उसकी लाश यूँ ही पड़ी रही। जब लाश सड़ने लगी तो मज़दूरों से उठवा कर एक गढ़ा में लकड़ी की मदद से उसकी लाश को ढ़केल कर ऊपर से पत्थर डाल दिये गए।

2 مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ۝

'कसब' के माने हैं जो कुछ उसने कमाया। इस से वह तिजारत मुराद है जो माल व औलाद के ज़रिये हासिल होती है, क्योंकि औलाद को भी इन्सान की कमाई कहा जाता है। हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं:-

"हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो खाना आदमी खाता है उसमें सबसे ज़्यादह हलाल और

पाक वह चीज़ है जो आदमी अपने कमाई से हासिल करे और आदमी की औलाद भी उसकी कमाई में दाख़िल हैं यानी औलाद की कमाई खाना भी अपनी ही कमाई के समान है। **(कुर्तुबी)**

इसीलिए हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा, मुजाहिद, अता, इब्ने सीरीन आदि ने इस जगह "मा कसब" की तफ़्सीर औलाद से की है। 'अबू लहब' को अल्लाह तआला ने माल भी बहुत दिया था और औलाद भी, यही दोनों चीज़ें नाशुक्री की वजह से उसके गर्व व घमण्ड का ज़रिया बनीं।

'हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा' ने फ़रमाया, "जिस वक़्त रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने अपनी क़ौम को अल्लाह के अज़ाब से डराया, उस समय 'अबू लहब' ने यह भी कहा था कि जो कुछ यह मेरा भतीजा कहता है यदि यह हक़ है तो मेरे पास माल व औलाद बहुत है, मैं उस को देकर अपनी जान बचा लूँगा। इस पर यह आयत नाज़िल हुई।

3-4 سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝ وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝

"वह बहुत जल्द शोलों से भड़कती हुई आग में डाला जाएगा और उसकी बीवी भी जो सर पर ईंधन लाद कर लाती है"।

'अबू लहब' की बीवी का नाम 'उम्मे जमील' था, जो 'सुफ़ियान' की बहन थी। चूंकि इस्लाम दुश्मनी और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से हसद व जलन में वह अपने पति की मदद और मुख़ालिफत में उसकी शरीक (Partner) रहा करती थी, इसलिए उस का अन्जाम भी बयान कर दिया गया।

ईंधन उठाने वाली का मतलब 'हज़रत सईद बिन जुबैर' (रज़ि०) ने गुनाहों का बोझ उठाने वाली बयान किया है। **(फ़त्हुल क़दीर)**

यानी उसकी बीवी भी उसके साथ दोज़ख़ की भड़कती हुई आग में दाख़िल होगी।

'मसद' के माने खजूर के पेड़ की छाल यानी खजूर के पेड़ के छाल की बटी हुई रस्सी उस के गर्दन में होगी, फिर उस रस्सी से उसे बाँध कर आग में झोंका जाएगा।

यदि इस आयत का यह मतलब लिया जाए कि वह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के रास्ते में काँटे डालती थी तो इस से मुराद वह रस्सी होगी जिस से वह इन काँटेदार लकड़ियों को बाँधती थी।

एक अर्थ यह भी हैं कि आग लगाने वाली, चुग़लख़ोरी करने वाली। अ़रबों की बोलचाल में इस को "हम्मालतलूहतब" कहा जाता था कि जैसे कोई लकड़ियाँ जमा करके आग लगाने का सामान करती हो, चुग़लख़ोर भी ऐसा ही करता है कि वह अपनी चुग़लख़ोरी के ज़रिये लोगों में आग भड़का देता हैं। यह औरत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और सहाबा-ए-किराम को तक्लीफ़ें पहुँचाने के लिए चुग़लख़ोरी का काम भी किया करती थी। इस आयत में 'हम्मा लतलूहतब' से मुराद 'अबू लहब' की बीवी है।

'कुर्तुबी' की तफ़्सीर में 'हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा' मुजाहिद, इक्रिमा आदि ने कहा है कि यह चुग़लख़ोरी करने वाली और इब्ने ज़ैद, ज़िहाक आदि टीकाकारों ने इसको अपने हक़ीक़ी माने में रखा है। जिसकी वजह यह बतलाई जाती है कि यह औरत जंगल में झाड़दार लकड़ियाँ जमा करके

लाती और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के रास्ते में बिछाती थी, ताकि आप (सल्ल०) को तक्लीफ़ पहुँचे। **(कुर्तुबी)**

'इब्ने कसीर' व अन्य कुछ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया, "उसका यह ह़ाल जहन्नम में होगा कि अपने शौहर पर जहन्नम के पेड़ 'ज़क्कूम' आदि की लकड़ियाँ ला कर डालेगी ताकि उसकी आग और भड़क जाए" जिस तरह़ दुनिया में वह उसके कुफ़्र व ज़ुल्म को बढ़ाती थी, आख़िरत में उसके अ़ज़ाब को बढ़ाएगी। **(इब्ने कसीर)**

चुग़लख़ोरी गुनाह कबीरा है-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जन्नत में चुगलख़ोर दाख़िल न होगा। 'ह़ज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़' (रह़०) ने फ़रमाया, "तीन अ़मल ऐसे हैं, जो इन्सान के तमाम आ़माले सालिह़ा (अच्छे आ़माल) को बर्बाद कर देते हैंः रोज़ेदार का रोज़ः और वुज़ू वाले का वुज़ू ख़राब कर देता हैं। 'अ़ता बिन साइब' की ह़दीस में इस तरह़ है कि मैंने ह़ज़रत शोबी (रह़०) से रसूलुल्लाहि (सल्ल०) की इस ह़दीस का ज़िक्र किया जिस में आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, तीन तरह़ के आदमी जन्नत में दाख़िल न होंगेः-

नाह़क़ ख़ून बहाने वाला, चुग़लूख़ोरी करने वाला और वह ताजिर जो सूद का कारोबार करे"।

'अ़ता' कहते हैं कि मैंने इस ह़दीस का ज़िक्र करके शोबी से तअ़ज्जुब के अन्दाज़ में पूछा कि ह़दीस में चुग़लूख़ोर को क़ातिल और सूदख़ोर को बराबर फ़रमाया। उन्होंने कहा कि हाँ चुग़लूख़ोरी तो ऐसी चीज़ है कि इसकी वजह से क़त्ल नाह़क़ और ग़सब करने की नौबत आ जाती है। **(कुर्तुबी)**

5 فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝

'मसद' का अर्थ 'डोर' बटने या चढ़ा कर मज़बूत करने के है। 'मसद' उस रस्सी या डोर को कहा जाता है जो मज़बूत बनाई गई हो चाहे वह जिस चीज़ की हो। खजूर या नारियल या तार आदि से बनाई गई हो, हर तरह़ की मज़बूत रस्सी इसमें दाख़िल है।

कुछ लोगों ने जो ख़ास खजूर की रस्सी, इसका तर्जुमः किया है वह अ़रब की आम आ़दत के मुताबिक़ किया है, इसी के ह़िसाब से 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' आ़दि ने फ़रमाया कि यहाँ 'ह़ब्लुमूमिम्मसद' से मुराद लोहे के तारों से बटा हुआ रसा है और यह इसका ह़ाल जहन्नम में होगा कि तारों से मज़बूत बटा हुआ तौक़ उसके गले में होगा। ह़ज़रत मुजाहिद ने भी इसकी तफ़्सीर में यही फ़रमाया है। **(मज़हरी)**

बहुत से टीकाकारों ने इससे खजूर की रस्सी ही मुराद लिया है। 'अबू लहब' और उसकी बीवी मालदार अपनी क़ौम के सरदार माने जाते थे, मगर उसकी बीवी अपनी कंजूसी की वजह से जंगल से सोख़्ता की लकड़ियाँ जमा करके लाती थी और उस की रस्सी को अपने गले में डाल देती थी कि यह गट्ठर सर से गिर न जाए। यही एक दिन उस की मौत का ज़रिया बना कि लकड़ियों का गट्ठर सर पर लादकर रस्सी गले में बाँधे हुए थी और थक कर बैठ गई, बैठते ही गले में रस्सी में फंस कर गिर गई और गला घुट गया, जिससे वह मर गई। **(मज़्हरी)**

(भाग–112)

सूर–ए–इख़्लास

(सूरः नं. 112)

सूरः इख़्लास का संक्षिप्त परिचय

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा कहते हैं, "कुरैश के लोगों ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से कहा, अपने रब (पालनहार) का वंश-क्रम (शजरा) हमें बताइए। इस पर यह सूरः नाज़िल हुई। **(तबरानी)**

अक्सर मुफस्सिरीन के मुताबिक़ यह सूरः मक्का के शुरु ज़माने में नाज़िल हुई। इसमें उन तमाम ग़लत विचारों को रद्द किया गया है जो अल्लाह के बारे में लोगों ने बना रखे थे, बल्कि आज भी क़ायम कर रखा है। जैसा कि मजूसी दो ख़ुदा मानते हैंः-

1- यज़दान

2- अहरमन।

पहला भलाई का ख़ुदा और दूसरा बुराई का ख़ुदा। कुछ लोग तो अल्लाह को भी उन चीज़ों का मुहताज मानते हैं, जिन का मुहताज इन्सान होता है। जैसे-

दरबारी काम करने वाले नौकर-चाकर, मददगार आदि कुछ लोग मानते हैं कि अल्लाह के बेटे भी हैं और इन्सान को उसके बराबर का ख़ुदा ठहराते हैं। इस सूरः में इस तरह के सभी ख़यालात को ग़लत बताकर तौहीद (एकेश्वरवाद) की शिक्षा दी गई है।

बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है" यह सूरः (कुल्हुवल्लाहु अह़द) कुर्आन के एक तिहाई हिस्से के बराबर है"।

(बुख़ारी, किताबुल् फ़ज़ायलुल् कुर्आन)

आयत नं० 1 से 4 तक

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

अनुवाद-

(1) कह दीजिए, ''वह अल्लाह एक है'' (2) अल्लाह सबसे बेनियाज़ (अर्थात वह किसी का मुहताज नहीं सब उसी के मुहताज) है, (3) न वह जनित है और न जन्य, (अर्थात न वह किसी का बाप है और न उस का कोई बेटा) (4) और न कोई उसके बराबर (समान)।

सूरः इख़्लास की संक्षिप्त व्याख्या

'तिर्मिज़ी' हाकिम आदि की रिवायत में है कि मुश्रिकीने मक्का ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से अल्लाह का वंश (नसब) पूछा तो उसके जवाब में यह सूरः नाज़िल हुई। दूसरी रिवायतों के मुताबिक़ यह सवाल यहूद-ए-मदीना की ओर से बताया गया है, इसीलिए 'हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद' हसन बसरी, अ़ता, इक्रिमा, जाबिर (रज़ि०) ने इसे मक्की सूरः कहा है और क़तादा, ज़िहाक आदि ने मदनी कहा है। **(कुर्तुबी)**

इस के नुजूल में इख़्तिलाफ की वजह से इसके मक्की और मदनी होने में भी इख़्तिलाफ है।

1- हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का कहना है, "कुरैश के लोगों ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से कहा कि अपने रब का वंश क्रम (शजर-ए-नसब) हमें बताइए। अ़रब वासियों का नियम था कि जब वह किसी अजनबी व्यक्ति से परिचय चाहते तो उस का वंशक्रम पूछते। इसीलिए जब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पूछा कि आपका रब कौन है? कैसा है? उस रब का वंश क्रम क्या है? इस पर यह सूरः नाज़िल हुई। **(तबूरानी)**

इक्रिमा ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से नक़्ल किया है कि यहूदियों का एक गिरोह अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ, जिसमें कअ़ब इब्ने अशरफ़ और 'हुवई इब्ने अख़्तब' आदि भी शामिल थे और उन्होंने कहाः-

ऐ मुहम्मद! हमें बताइए कि आपका वह रब कैसा है, जिसने आपको भेजा है। इस पर अल्लाह ने यह सूरः नाज़िल फ़रमाई। **(इब्ने अबी हातिम, इब्ने अदी, बैहक़ी)**

हज़रत अनस (रज़ि०) का बयान है, "ख़ैबर के कुछ यहूदी अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुए और उन्होंने कहा, ऐ अबुल् क़ासिम! अल्लाह ने फ़रिश्तों को छिपे-नूर से, आदम को मिट्टी के सड़े हुए ग़ारे से, इब्लीस को आग के अंगारे से, आसमान को धुएँ से और ज़मीन को पानी के झाग से बनाया। अब हमें आप अपने रब के बारे में बताइए (कि वह किस चीज़ से बना है) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। फिर हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) आए और उन्होंने कहा

ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! उन से कहिए "हुवल्लाहु अ़हद"।

'आमिर बिन नुफ़ैल' ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कहा, "ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप किस चीज़ की ओर हमें बुलाते हैं?" आपने फ़रमाया, "अल्लाह की ओर" आमिर ने कहा, "अच्छा तो उसका स्वरूप मुझे बताइए। वह सोने से बना हुआ है या चाँदी से या लोहे से?" इस पर यह सूरः नाज़िल हुई।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का कहना है, नज़रान के ईसाइयों की एक मंडली सात पादरियों के साथ नबी (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुई और उसने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कहा, हमें बताइए कि आपका रब कैसा है? किस चीज़ से बना है? आपने फ़रमाया, "मेरा रब किसी चीज़ से नहीं बना है, वह तमाम चीजों से अलग है"।

ऊपर की बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि उस वक़्त दुनिया के लोगों की धार्मिक मान्यताएँ क्या थी? मूर्ति पूजक, मुश्रिक, उन ख़ुदाओं को पूज रहे थे जो लकड़ी, पत्थर, सोने, चाँदी के बने हुए थे, रूप और देह रखते थे, देवियों और देवताओं की बाक़ायदा नस्ल चलती थी। कोई देवी बे-शौहर न थी और कोई देवता बिना बीवी के न था।

उन्हें खाने-पीने की ज़रूरत भी हो जाती थी और उनके श्रद्धालु उनके लिए इसका इन्तिज़ाम भी करते थे। मुश्रिकों की भारी संख्या इस बात को मानती थी कि ख़ुदा इन्सानी रूप में ज़ाहिर होता है और कुछ लोग उसके अवतार होते हैं।

ईसाई धर्म में ख़ुदा-

ईसाई एक ख़ुदा को मानने के दावेदार थे, मगर उनका ख़ुदा भी कम से कम एक बेटा तो रखता ही था और बाप-बेटे के साथ ख़ुदाई में रुहुल्-क़ुदुस (जिब्रईल) को भी हिस्सेदार होने का सौभाग्य प्राप्त था, यहाँ तक कि ख़ुदा की माँ भी होती थी और उसकी सास भी।

यहूदी धर्म में ख़ुदा-

यहूदी भी एक ख़ुदा को मानने का दावा करते थे, मगर उनका ख़ुदा भी आकार और दूसरी मानवीय ख़ासियतों से खाली न था। यहाँ तक वह मानते थे कि वह टहलता है, मानव रूप में जाहिर होता है, अपने किसी भक्त से कुश्ती भी लड़ लेता है और एक बेटे (उ़ज़ैर) का बाप भी था। इन धार्मिक गिरोहों के अ़लावा 'मजूसी' अग्नि-पूजक थे, 'साबिई' सितारा परस्त।

इस हालत में जब एक अल्लाह के मानने की दअ़वत दी गई तो उनके मन में इन सवालों का पैदा होना अनिवार्य ही था कि वह रब किस तरह का है जिसे तमाम रबों और उपास्यों को छोड़कर अकेले एक ही रब (उपास्य) मान लेने की दअ़वत दी जा रही है।

क़ुर्आन का यह चमत्कार है कि उसने इन प्रश्नों का उत्तर कुछ शब्दों में देकर अल्लाह की हस्ती का ऐसा स्पष्ट विचार प्रस्तुत कर दिया जो तमाम शिर्क की कल्पनाओं को ख़त्म कर देता है और उसकी ज़ात के साथ रचनाओं की ख़ासियतों में से किसी ख़ासियत की मिलावट के लिए कोई गुन्जाइश नहीं रहती।

1 قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ

इस आयत में सर्वनाम 'हुवा' (वह) अ़रबी व्याकरण के मुताबिक़ 'ज़मीरे शान' है जो किसी बात के महत्व को स्पष्ट करने और उस पर ध्यान कराने के लिए वाक्य के शुरुआ़त में आता है यानी (कहो वह अल्लाह एक है) 'हुवा' (वह) की ज़मीर (Pronoun) महत्व को ज़ाहिर कर रही है कि इसे कान लगा कर सुनो और इस पर अपने ध्यान को जमाओ।

यानी वह अल्लाह अपनी ज़ात (अस्तित्व) और सिफ़ात (गुणों) में बिल्कुल अकेला और बेजोड़ है। एक के मुक़ाबिले में 'अहद' (यकता) का शब्द इस बात की तस्दीक़ करता है कि उसकी 'वहदत' (एकता) में कसूरत (अधिकता) का कोई पहलू नहीं है, उसकी 'वहदानियत' (एकमात्रता) ऐसी मुकम्मल है कि न उसका विश्लेषण किया जा सकता है और न विभाजन, उसका अस्तित्व स्वयं स्थिर और मख़्लूक़ों से बिलकुल अलग है। ख़ुदा की कोई नस्ल नहीं बल्कि वह एक ही ख़ुदा है, जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

इन्सान की बुनियादी ग़लती ख़ुदा को मख़्लूक़ (सृष्टि) से तुलना करना है, जबकि यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि 'ख़ालिक़' (सृष्टा) और मख़्लूक़ (सृष्टि) में किसी तरह भी समानता एवं मेल संभव नहीं है और न हमारी सीमित बुद्धि इस क़ाबिल हो सकती है कि उसकी ज़ात में ग़ौर और चिन्तन करने लगे। इसलिए उसके यकता और साझीदार होने के सीधे-सादे रूप को छोड़ कर जितने भी फ़ल्सफ़े ईजाद किये वह सब बेहक़ीक़त और ग़लत हैं।

2 اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ

'समद' का अर्थ है जिस की तरफ़ लोग अपनी ह़ाजात और ज़रुरियात तलब करें, वह बड़ाई और सरदारी में ऐसा हो कि उस से बड़ा कोई न हो यानी सब उसी के मुहताज हों, वह किसी का मुहताज न हो। **(इब्ने कसीर)**

3-4 لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۚ

इस में उन लोगों को जवाब दिया गया है जिन्होंने अल्लाह तआ़ला के नसबनामे (वंश) क्रम का सवाल किया था कि उस को मख़्लूक़ पर क़यास नहीं किया जा सकता, जो पैदाइश के ज़रिये वजूद में आती है; न वह किसी की औलाद है, न कोई उस की औलाद।

वह ख़ुदा ही क्या हुआ जिसे किसी ने जन्म दिया हो। बहुदेववादी धर्मों में ख़ुदाओं के जन्म लेने की बात को यहाँ रद्द किया गया है कि जिस तरह़ अल्लाह की कोई औलाद नहीं, उसी तरह़ उस का कोई बाप भी नहीं है। जन्म लिए हुए ख़ुदा तो फ़र्ज़ी (मनगढ़त) हो सकते हैं, ह़क़ीक़ी ख़ुदा तो सब का ख़ालिक़ है। वह एक मात्र अल्लाह ही की ह़स्ती है जिस से न कोई चीज़ जन्म ली है और न किसी ने उसे जन्म दिया है।

न अल्लाह की ज़ात (अस्तित्व) में और न सिफ़ात (गुणों) में कोई उसके बराबर है और न उस के जोड़ का कोई है।

सब मख़्लूक़ (सृष्टि) है और वह अकेला ख़ालिक़ (सृष्टा) है, सब मुहताज हैं और वह अकेला दानी है, 'वह' बेनियाज़ (स्वच्छन्द) है सब बन्दे और ग़ुलाम हैं और वही एक उपास्य और मालिक है। उसके जैसा और उस के हमपल्ला न कभी कोई हुआ है और न होगा।

सूरः इख़्लास की फ़ज़ीलत-

हज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है, "एक व्यक्ति ने किसी व्यक्ति को **'क़ुल् हुवल्लाहु अह़द'** पढ़ते और उसे बार-बार दुहराते हुए सुना" सुबह हुई तो वह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पास आया, आप (सल्ल०) से उसका ज़िक्र किया यानी वह इस सूरः को कुछ कम अहमियत दे रहा था। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने उस से फ़रमाया,"उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है यह सूरः तिहाई क़ुर्आन के बराबर है"। **(बुख़ारी)**

'तिर्मिज़ी' में हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है, "एक बार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने लोगों से फ़रमाया, "सब लोग जमा हो जाओ मैं तुम्हें एक तिहाई क़ुर्आन सुनाऊँगा, जो इकट्ठा हो सकते थे इकट्ठा हो गए तो आप (सल्ल०) तशरीफ़ लाए और **"क़ुल् हुवल्लाहु अ़हद"** तिलावत फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया कि यह सूरः एक तिहाई क़ुर्आन के बराबर है। **(तिर्मिज़ी)**

अबूदाऊद, तिर्मिज़ी, नसई ने एक लम्बी ह़दीस रिवायत किया है, रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो व्यक्ति सुबह़ व शाम **"क़ुलहुवल्लाहु अ़हद"** और **सूरः फ़लक़** व **नास** पढ़ लिया करे तो यह उस के लिए काफ़ी है"।

एक और रिवायत में है, "यह उस को हर बला मुसीबत से बचाने के लिए काफ़ी है"। **(इब्ने कसीर)**

'इमाम अह़मद' ने 'हज़रत उ़क़्बा बिन आमिर' (रज़ि०) से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया, उस वक़्त तक न सोओ जब तक इन तीन सूरतों (सूरः इख़्लास, फ़लक़ व नास) को पढ़ न लिया करो"। हज़रत उ़क़्बा फ़रमाते हैं, "उस वक़्त से मैंने कभी इनको नहीं छोड़ा"। **(इब्ने कसीर)**

ह़दीस में इस तरह़ की बहुत सी रिवायात बयान हुई हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने अलग-अलग वक़्तों में अलग-अलग तरीक़ों से लोगों को बताया कि यह सूरः 'एक तिहाई' क़ुर्आन के बराबर है। जैसे-

बुख़ारी, मुस्लिम, अबूदाऊद, नसई, तिर्मिज़ी, तबरानी आदि में इस विषय की विभिन्न ह़दीसें अबू सईद ख़ुद्री, अबू हुरैरा, अबू अय्यूब अन्सारी, अबूदर्दा, मुआ़ज़ बिन जबल, जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह, उबई इब्ने कअ़ब, उम्मे कुलसूम बिन्त उ़क़्बः, इब्ने उ़मर, इब्ने मसऊद, क़तादा बिन नोअ़मान, अनस बिन मालिक और अबू मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से नक़्ल की हुई हैं।

मुफ़स्सिरीन ने इस सूरः को तिहाई क़ुर्आन मानने के बारे में बहुत से विचार जाहिर किये हैं, लेकिन यह एक हक़ीक़त है कि क़ुर्आन मजीद जिस दीन को पेश करता है, उस के बुनियादी तीन तरह़ के अ़क़ीदे हैं।

(1) तौह़ीद (एकेश्वरवाद) (2) रिसालत (दूतत्व विश्वास) (3) आख़िरत (परलोक)

यह सूरः चूँकि ख़ालिस तौह़ीद को बयान करती है इस लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इस को एक तिहाई क़ुर्आन के बराबर क़रार दिया।

(भाग–113)

सूर–ए–फ़लक़

(सूरः नं. 113)

सूरः फ़लक़ का संक्षिप्त परिचय

सूरः अल् फ़लक़ और सूरः अन्-नास दोनों का नाम 'मुअ़व्विज़तैन' है। इस सूरः के नाज़िल होने के बारे में इख़्तिलाफ है, लेकिन ज़्यादहतर मुफ़स्सिरीन के मुताबिक़ यह सूरः मदनी है। इस में सिखाया गया है कि इन्सान बहुत से ख़तरों से घिरा हुआ है जो उस के इर्द-गिर्द दुनिया में फैले हुए हैं, उन ख़तरों से सुरक्षित रहने के लिए इसे चाहिए कि यूँ कहा करे कि 'मैं उस रब (पालनहार) की जो रात के अंधेरे को फाड़ कर सुबह की रौशनी निकालता है पनाह माँगता हूँ और अ़र्ज़ करता हूँ कि 'वह मुझे अपनी तमाम मख़्लूक़ात की बुराई से सुरक्षित रखे' ख़ास तौर से अंधेरे की बुराई से और उन औ़रतों की बुराई से जो मंत्र पढ़-पढ़ कर ताँत, डोरी या बाल में गिरह लगाती हैं, उस पर फूँक मारती जाती हैं और ईर्ष्या (ह़सद) करने वाले की बुराई से भी।

ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं, "रसूलुल्लाहि (सल्ल०) जब बिस्तर पर जाते तो अपने दोनों हाथों में 'क़ुलहुवल्लाहु अ़हद' और मुअ़व्विज़तैन पढ़ कर फूँकते, फिर अपने चेहरे और जिस्म पर जहाँ तक हाथ पहुँचता फेर लेते"। **(बुख़ारी, किताबुत्तिब)**

आयत नं० 1 से 5 तक

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝١ مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِن شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝٤ وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝٥

अनुवाद–

(1) कह दीजिए, मैं प्रातःकाल (सुबह़) के रब की पनाह (शरण) लेता हूँ; (2) हर चीज़ की बुराई से, जो 'उसने' पैदा की (3) और रात के अँधेरे की बुराई से, जबकि वह छा जाए, (4) और गिरहों (गंडो) पर (पढ़-पढ़ कर) फूँकने वालियों (औ़रतों) की बुराई से (5) और ह़सद (ईर्ष्या) करने वाले की बुराई से, जबकि वह ह़सद करे।

सूरः फ़लक़ की संक्षिप्त व्याख्या

सूरः फ़लक़ और सूरः नास, दोनों सूरतें एक साथ एक ही चीज़ के बारे में नाज़िल हुई। ह़ाफ़िज़ इब्ने क़य्यूम (रह़०) ने इन दोनों सूरतों की तफ़्सीर एक साथ लिखी है। उस में फ़रमाया है कि इन दोनों सूरतों का लाभ (बरकत) और इसकी ज़रुरत लोगों को ऐसी है कि कोई इन्सान इस से ख़ाली नहीं। यह दोनों सूरतें सहर (जादू) और बुरी नज़र और तमाम जिस्मानी व रुहानी आफ़तों को दूर करने में बहुत फ़ायदेमन्द हैं।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "आज की रात मुझ पर कुछ ऐसी आयतें नाज़िल हुई जिस की तरह़ मैंने कभी नहीं देखी, यह फ़रमा कर आप (सल्ल०) ने यह दोनों सूरतें पढ़ीं"।

(सह़ी मुस्लिम, किताबुस्सालातिल् मुसाफ़िर, तिर्मिज़ी)

'ह़ज़रत अबू जालिस ज़ुहनी' (रज़ि०) से आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "ऐ अबू जालिस! क्या मैं तुम्हें सब से बेहतरीन तावीज़ न बताऊँ, जिसके ज़रिये पनाह तलब करने वाले पनाह माँगते हैं? उन्होंने अ़र्ज़ किया, हाँ ज़रुर बतलाइए। आप (सल्ल०) से दोनों सूरतों का ज़िक्र करके फ़रमाया यह दोनों 'मुअ़व्विज़तैन' हैं"। **(सह़ी नसई)**

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) इन्सानों और जिन्नातों की नज़र से पनाह माँगा करते थे, जब यह दोनों सूरतें नाज़िल हुईं तो आप (सल्ल०) ने इस को पढ़ने का मामूल बना लिया और बाक़ी दूसरी चीज़ें छोड़ दीं। **(सह़ी तिर्मिज़ी)**

'इब्ने हजर' साद, बग़वी, इमाम नसई, इमाम बैहक़ी, ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़ाफ़िज़ बद्रुद्दीन ऐनी, अ़ब्द इब्ने हुमैद आदि के नक़्ल किये हुए यह कौल हैं कि मदीने में यहूदियों ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से इस को पढ़ने का मामूल बना लिया और बाक़ी दूसरी चीज़ें छोड़ दीं। **(सह़ी तिर्मिज़ी)**

इब्ने साद ने 'वाक़िदी' के ह़वाले से बयान किया है कि यह सन् 07 हिज्री की घटना है। इसी वजह से 'सुफ़्यान इब्ने उवैना' ने भी इन सूरतों को मदनी कहा है।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर एक यहूदी ने जादू कर दिया, तो आप (सल्ल०) की तबीअ़त ज़्यादह ख़राब होने लगी, इस पर अल्लाह के हुक्म से हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने आकर फिर यही सूरतें पढ़ने की आप को हिदायत की।

जब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर जादू किया गया, तो हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) यही दो सूरतें लेकर हाज़िर हुए और फ़रमाया कि एक यहूदी ने आप (सल्ल०) पर जादू किया है, यह जादू फलाँ कुएँ में है। आप (सल्ल०) ने हज़रत अ़ली (रज़ि०) को भेज कर उसे मँगवाया (यह एक कंघी थी जिसके दंदानों और बालों के साथ तांत के अन्दर ग्यारह गिरहें पड़ी हुई थीं और मोम का एक पुतला था जिस में सुइयाँ चुभोई हुई थीं।)

हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) के हुक्म के मुताबिक़ आप (सल्ल०) इन दोनों सूरतों में से एक-एक आयत पढ़ते जाते जिससे गिरह खुलती और सुई निकलती जाती थी। आख़िर तक पहुँचते-पहुँचते सारी गिरहें खुल गईं और सुईयाँ भी निकल गईं। इसके बाद आप (सल्ल०) इस तरह़ सह़ी हो गए जैसे कोई शख़्स जकड़ बन्दी से आज़ाद हो जाए। **(सह़ी बुख़ारी किताबुत्तिब व बाबुस्सहर, मुस्लिम किताबुस्सलाम व बाबुस्सहर वस्सुनन)**

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की दअ़वत जितनी बढ़ रही थी, उतनी ही क़ुरैश के काफ़िरों की मुख़ालिफ़त मे तेज़ी आ रही थी।

जब तक उन्हें यह उम्मीद थी कि शायद वह किसी तरह़ की सौदेबाज़ी करके या बहला फुसला कर आप को इस काम से रोक देंगे उस समय तक दुश्मनी में उतनी तेज़ी नहीं थी, लेकिन जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उनको इस ओर से बिल्कुल निराश कर दिया कि आप उनके साथ धर्म के मामले में किसी तरह़ का कोई समझौता नहीं कर सकेंगे और सूरः काफ़िरून में साफ़-साफ़ उनसे कह दिया गया कि जिनकी बन्दग़ी (भक्ति) तुम करते हो उनकी बन्दग़ी मै करने वाला नहीं इसलिए मेरा रास्ता अलग है और तुम्हारा रास्ता अलग।

इतना सुनते ही काफ़िरों की दुश्मनी पूरी चरम सीमा पर पहुँच गई। ख़ासतौर से जिन परिवारों के लोगों (मर्दों या औ़रतों, लड़कों या लकड़ियों) ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया था, उनके दिल तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) को कोस रहे थे, ख़ुफ़िया मश्वरे हो रहे थे कि किसी वक़्त रात को छिप कर आपको क़त्ल कर दिया जाए ताकि 'बनी हाशिम' के क़ातिल को पता न चल सके और वह बदला न ले सकें। आप (सल्ल०) के ख़िलाफ़ जादू टोने किये जा रहे थे, जिस से आप (सल्ल०) की वफ़ात हो जाए या सख़्त बीमार पड़ जाएँ या पागल हो जाएँ ताकि लोगों में आप (सल्ल०) के ख़िलाफ़ और आप (सल्ल०) के लाए हुए धर्म और क़ुर्आन के ख़िलाफ़ कोई न कोई भ्रम पैदा हो जाए जिससे लोग आप (सल्ल०) से दूर भागने लगें। **(इब्ने हिशाम भाग एक)**

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर जादू-

'हुदैबिया' समझौते के बाद हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) मदीना वापस तशरीफ़ ले आए तो मुहर्रम सन् 07 हिज्री में ख़ैबर से यहूदियों का एक मण्डल मदीना आया और एक मश्हूर जादूगर 'लबीद इब्ने आसिम'

से मिला जो अन्सार के क़बीले 'बनी ज़ुरैक़' से तअ़ल्लुक़ रखता था। इन लोगों ने उससे कहा कि मुहम्मद (सल्ल०) ने हमारे साथ जो कुछ किया है वह तुम्हें मालूम है, हमने उन पर जादू करने की कोशिश की लेकिन कोई सफ़लता नहीं मिली, अब हम तुम्हारे पास आए हैं क्योंकि तुम हम से बड़े जादूगर हो। यह तीन अशर्फ़ियाँ क़ुबूल करो और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर ज़ोरदार जादू करो।

यहूदी लड़का-

उसी ज़माने में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के यहाँ एक यहूदी लड़का नौकर था, उस से साँठ-गाँठ करके इन लोगों ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की कंघी का एक टुकड़ा हासिल कर लिया जिसमें आप (सल्ल०) के मुबारक बाल थे, इन्हीं बालों और कंघी के दंदानों पर जादू किया।

लबीद इब्ने आसिम-

कुछ ने कहा कि 'लबीद इब्ने आसिम' ने ख़ुद जादू किया था और कुछ में यह है कि उसकी बहनें उससे बड़ी जादूगरनियाँ थीं, उनसे उसने जादू करवाया था। बहरहाल इस जादू को एक नर खजूर के गुच्छे के ग़िलाफ़ में रखकर 'लबीद' ने 'बनू ज़ुरैक़' के कुएँ 'जरवान' या 'जीअज़्वान' नामी कुएँ की तह में एक पत्थर के नीचे दबा दिया, जिसका प्रभाव नबी (सल्ल०) पर होते-होते पूरा एक साल लग गया।

इसी को मुस्नद अहमद में बयान किया गया है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर एक यहूदी ने जादू कर दिया था, जिस के असर से आप (सल्ल०) बीमार हो गए। उस पर हज़रत जिब्रईल अमीन ने आकर आप (सल्ल०) को बताया कि आप (सल्ल०) पर एक यहूदी ने जादू किया है और जादू का अ़मल जिस चीज़ में किया गया है, वह फ़लाँ कुआँ के अन्दर है।

जादू की चीज़ें-

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने वहाँ आदमी भेजा तो वह लोग उन जादू की चीज़ों को उस से निकाल कर ले आए जिसमें गाठें लगी हुई थीं। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने उन गाँठों को खोल दिया। उसी वक़्त आप (सल्ल०) बिल्कुल तन्दुरुस्त होकर खड़े हो गए जबकि आप (सल्ल०) को हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने उस यहूदी का नाम बतला दिया था और आप (सल्ल०) उसको जानते भी थे, मगर अपने निजी मामले में किसी से बदला लेना आप (सल्ल०) का स्वभाव न था, इसलिए उ़म्र भर उस यहूदी से कुछ नहीं कहा और न कभी उस की मौजूदगी में आप (सल्ल०) के चेहरे से किसी शिकायत के आसार पाये गए (वह मुनाफ़िक़ होने की वजह से हाज़िर भी होता था।)

जादू का असर-

'सही बुख़ारी' में हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है "आप (सल्ल०) पर एक यहूदी ने जादू किया तो उस का असर आप (सल्ल०) पर यह हुआ कि बाज़ अवक़ात आप (सल्ल०) महसूस

करते कि फ़लाँ काम कर लिया है मगर वह नहीं किया होता"। फिर एक दिन आप (सल्ल०) ने ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से फ़रमाया, "मुझे अल्लाह तआ़ला ने बतला दिया है कि मेरी बीमारी क्या है? और फ़रमाया कि (ख़्वाब में) दो आदमी आए एक मेरे सर की ओर बैठ गया एक पैर की ओर, सर की ओर वाले ने दूसरे से कहा कि इन को क्या तक्लीफ़ है? तो उसने जवाब दिया कि 'लबीद बिन आसिम' ने (जो यहूदियों का दोस्त मुनाफ़िक़ है) उसने पूछा कि किस चीज़ में जादू किया है, उस ने बताया कि एक कंधे और उसके दानों पर। फिर उसने पूछा कि वह कहाँ है तो उसने बतलाया कि खजूर के उस ग़िलाफ़ में जिसमें खजूर का फल पैदा होता है।

बेरे जरवान (कुआँ)

'बेरे ज़रवान' (एक कुआँ का नाम है) में एक पत्थर के नीचे गड़ा है" आप (सल्ल०) उस कुएँ पर तशरीफ़ ले गए उसको निकाल लिया और फ़रमाया, "मुझे ख़्वाब में यही कुँआ दिखलाया गया था" ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया, "आप (सल्ल०) ने इसका एलान क्यों नहीं कर दिया कि फ़लाँ आदमी ने यह ह़रकत की है" ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मुझे अल्लाह ने शिफ़ा दे दी और मुझे यह पसन्द नहीं कि मैं किसी आदमी के लिए तक्लीफ़ का ज़रिया बनूँ"। (मतलब यह था कि इसका एलान होता तो लोग उसको क़त्ल कर देते या तक्लीफ़ पहुँचाते।)

छः माह तक-

'मुस्नद अह़मद' की एक रिवायत में है कि आप (सल्ल०) का यह मर्ज़ छः महीने तक रहा। कुछ दूसरी रिवायतों में है कि जिन सह़ाब-ए-किराम को मालूम हो गया था कि यह काम 'लबीद बिन आसिम' ने किया है, उन्होंने रसूलुल्लाहि (सल्ल०) से अ़र्ज़ किया कि हम इस ख़बीस को क्यों क़त्ल न कर दें। आप (सल्ल०) ने वही जवाब दिया जो ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को दिया था।

इमाम सालूबी की रिवायत में है कि एक लड़का ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की ख़िद्मत किया करता था, उस यहूदी ने उस को बहला फुसला कर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का कंघा और कुछ उस के दाने उससे ह़ासिल कर लिए और एक तांत में ग्यारह गिरहें लगाईं, हर एक गिरह में एक सुई लगाई, कंधे के साथ उसको खजूर के फल के गिलाफ़ में रखकर एक कुएँ में पत्थर के नीचे दबा दिया।

अल्लाह तआ़ला ने यह दो सूरतें नाज़िल फ़रमाईं जिन में ग्यारह आयतें हैं, आप हर गिरह पर एक-एक आयत पढ़ कर एक-एक गाँठ खोलते रहे यहाँ तक कि सब गिरहें खुल गईं और आपसे अचानक एक बोझ सा उतर गया। **(यह सब रिवायतें तफ़्सीर इब्ने कसीर की हैं)**

इसी ह़ालत में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से फ़रमाया गया, "इन लोगों से कह दीजिए कि पनाह माँगता हूँ सुबह़ के उगाने वाले रब की तमाम जीवों की बुराई से, रात के अंधेरे, जादूगरों, जादूगरनियों की बुराई से और हासिदीन की बुराई से और उनसे कह दो कि मैं पनाह माँगता हूँ इन्सानों के रब, इन्सानों के बादशाह और इन्सानों के मअ़बूद (उपास्य) की हर उस वस्वसा (भ्रम) पैदा करने वाली बुराई

से, जो बार-बार पलट कर आती है और लोगों के मन में भ्रम पैदा करती है चाहे वह जिन्नों में के ही शैतान हों या इन्सानों में के।

1-2 قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ

पनाह का अर्थ होता है सुरक्षा, 'बचाव' और 'शरण'। पनाह माँगने का मतलब होता है अपनी हिफ़ाज़त के लिए पनाह देने वाली हस्ती से दुआ करना और उसकी तरफ़ पलटना उसकी ओर झुकना।

'अऊज़ु' "मैं पनाह माँगता हूँ" का मतलब यह है कि मैं अल्लाह तआला को एक मात्र पनाह देने वाला मानकर अपने आपको सुरक्षा में देता हूँ। वह हर तरह़ के शर (बुराई) मुसीबत, फ़ित्नों से बचाने वाला है और मैं उसी की बन्दगी का सम्बन्ध बनाता हूँ।

इस तरह़ किसी देवी देवता या पीर फ़क़ीर की पनाह माँगना ख़ुला शिर्क है।

'फ़लक़'-

'फ़लक' का शाब्दिक अर्थ होता है, 'पौ फटना' यानी 'सुबह को प्रकट करने वाला'। जो अल्लाह रात के अंधकार का पर्दा चीर कर सुबह़ प्रकट कर सकता है, वह अल्लाह उसी तरह़ ख़ौफ़ को दूर करके पनाह माँगने वाले को अम्न क्यों नहीं दे सकता। इन्सान को जिस तरह़ रात में इस बात का इन्तिज़ार रहता है कि सुबह़ होगी, उसी तरह़ ख़ौफ़ज़दा आदमी पनाह के ज़रिये इस यक़ीन को जाहिर कर रहा होता है कि जो हस्ती अंधकार को फाड़ कर सुबह़ लाती है, वही मायूस ह़ालात में उम्मीद की किरण भी पैदा करेगी और फ़ित्नों (शर) की भरमार को छाँट कर अम्न व अमान और सुरक्षा की राह भी खोलेगी। इस आयत में जिस तरह़ शैतान और उसके गिरोह से पनाह चाही गई है उसी तरह़ जहन्नम और हर उस चीज़ से पनाह चाही गई है जिस से इन्सान को नुक़सान पहुँच सकता हो।

मख़्लूक़ को पुकारना-

चूँकि दुनिया की तमाम चीज़ों का वही ख़ालिक़ (सृष्टा) और मालिक है, इसलिए कोई भी चीज़ क़ायनात के पैदा करने वाले से ज़्यादह शक्तिशाली नहीं हो सकती। यानी मख़्लूक़ (सृष्टा) के शर (फ़ित्नों) से बचने के लिए ख़ालिक़ की पनाह ढूँढ़ना ही सही़ तरीक़ा है। इसके खिलाफ मख़्लूक़ (सृष्टि) के शर (फ़ित्नों) से बचने के लिए किसी मख़्लूक़ की दुहाई देना या इस मक़्सद के लिए किसी देवी देवता को पुकारना या किसी पीर, फ़क़ीर या वली को पुकारना सरासर मूर्खता है।

इसी तरह़ कोई भी चीज़ ख़ुद अपने आप में असर नहीं रखती, बल्कि हर चीज़ अल्लाह के हुक्म ही से प्रभाव डालती है और जिस के साथ कोई शर लग जाता है, वह भी उसी के हुक्म से होता है। इसलिए शर से बचने के लिए सिर्फ़ उसी से दुआ करनी चाहिए।

3 وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ

शर (बलाएँ)- शर से मुराद मह़सूस होने वाली आफ़तें, बलाएँ और दूसरी गुमराहियाँ हैं। पहली चीज़

की मिसाल बीमारियाँ कष्ट हैं और दूसरी चीज़ की मिसाल गुनाह और कुफ़्र व शिर्क है। आयतों के संदर्भ के मुताबिक़ शर का यह दूसरा भाग है, इसीलिए इस सूरः को क़ुर्आन के सबसे आख़िर में रखा गया है, जो इस बात की ओर इशारा करती है कि क़ुर्आन के ज़रिए जिस हिदायत से नवाज़ा गया है, उसकी हिफ़ाज़त के सिलसिले में चौकन्ना रहने की ज़रूरत है, ताकि फ़ित्नों को चाहने वाली ताक़तें कामियाब न हो सकें।

ग़ासिक़िन (अंधेरी रात की बुराई)

यहाँ पर अंधेरी रात के शर से पनाह चाही गई है। जब रात आती है तो अंधेरा छा जाता है और उस अंधकार में फ़साद फैलाने वालों और शैतानी ताक़तों को उभरने का मौक़ा मिलता है। आ़मतौर से बीमारियाँ भी रात में बढ़ती हैं और ख़तरनाक जानवर रात में निकलते हैं।

यानी रात में डर और भय का माहौल रहता है। रही नैतिक (अख़्लाक़ी) आफ़तें, तो रात ही में अपराध ज़्यादहतर होते हैं, ढ़ेरो षडयन्त्र रात ही में किये जाते हैं और शैतान अपने लश्कर के साथ अंधेरे ही में हमलावर होता है। इसलिए रात का अंधकार इन अंधकार का कारण हो सकता है यानी इस शर की तरफ़ से चौकन्ना रहना और अल्लाह की पनाह माँगने का हुक्म दिया गया है।

लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि रात में ख़ैर (नेकी, भलाई, शांति) का नुजूल ही नहीं होता या ख़ैर के काम नहीं होते। यहाँ पर तो सिर्फ़ रात की बुराई से पनाह चाही गई है।

4 وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۝

नफ़्फ़ासाति (यानी फूँक झाड़ और जादू टोना)

'नफ़्फ़ासाति' का अर्थ फूंक मारने के हैं और 'उक़दि' के माने गिरह (गाँठों) के हैं। गाँठों का मतलब वह गाँठे हैं जो इन्सान के शुऊर (विवेक) और उसके हवास (चेतना इन्द्रियों) पर लगाकर उसे ग़ाफ़िल और मद्‌होश बना देती हैं, जिसे ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने इस तरह़ फ़रमाया हैः-

"जब तुम में से कोई आदमी सोता है तो उसके सर के पिछले ह़िस्से पर शैतान तीन गाँठ लगा देता है और हर गाँठ के साथ यह बात भी दर्ज कर देता है कि अभी रात लम्बी है। जब वह व्यक्ति जाग उठता है और अल्लाह को याद करता है तो एक गाँठ खुल जाती है, जब वुज़ू करता है तो दूसरी भी खुल जाती है, जब वह नमाज़ पढ़ता है तो तीसरी भी खुल जाती है और सुबह़ को वह बिल्कुल ताज़ा दम पाकीज़ा नफ़्स होता है। **(मुस्लिम, किताबुस्सलातुल् मुसाफ़िरीन)**

नफ़्फ़ासाति-

यह 'नफ़्स' से बना है जिसका अर्थ होता है 'फूंकना'। ह़दीस में शैतानी क्रिया के पैदा होने को शैतान के 'नफ़्स' से संज्ञा (तअ़बीर) दी गई है।

नफ़्फ़ासाति का शब्द स्त्रीलिंग का बहुवचन है और अतिश्योक्ति के छंद पर है। यह नुफ़ूस (आत्माओं)

की सिफ़त (विश्लेषण) है, इसलिए अ़रबी व्याकरण के मुताबिक़ स्त्रीलिंग है यानी वह नुफ़ूस (आत्माएँ) जो फूंकने की आदी हैं। इससे वह शैतानी आत्माएँ (नुफ़ूस) हैं जो अपनी उत्प्रेरणा द्वारा अनायास इन्सान के विवेक (शुऊर) और उसकी चेतना एवं इन्द्रियों को प्रभावित कर देती हैं।

ऊपर ह़दीस में शैतान के गांठ बाँधने का जो ज़िक्र हुआ है उसमें भी यह बात बयान हुई है कि वह हर गाँठ के साथ यह भी अंकित कर देता है कि अभी रात लम्बी है, यह हक़ीक़त में शैतान का इस गाँठ में नफ़्स (फूँकना) ही है।

इन ह़दीसों की रोशनी में आयत का मतलब यह है कि शैतान अपनी उत्प्रेरणा (Inspiration) के ज़रिये उसकी चेतना, विवेक और इन्द्रियों को प्रभावित करके उसे ग़फ़्लत अचेतना, मदहोशी और मनोवैज्ञानिक रोगों का शिकार बना कर बुरी एवं गुमराह करने वाली बातें सुझा देता है, उन के इस शर (फ़ित्ने) से अल्लाह की पनाह माँगी गई है।

यह शैतानी उत्प्रेरणा शायरी के रूप में भी हो सकती है, जादू के इस रूप में भी, लच्छेदार बातों की शक्ल में भी हो सकती है और गाने की शक्ल में भी, इसलिए कोई वजह नहीं कि इसको किसी एक ही रूप में सीमित समझा जाए।

सिफ़्ली अ़मल (Black Magic वशीकरण) करने वालों के यहाँ तो गण्डो में फूँक मारने का तरीक़ा पहले ही से चला आ रहा है। जादू और टोने टोट्के करने वाले, शैतानों की मदद से यह दुष्ट कर्म अंजाम देते हैं और लोगों के लिए गुमराही का सामान करते हैं और आजकल हिपनोटिज़्म (Hypnotism) के ज़रिए भी इन्सान की चेतना, उसके विवेक और उसकी इन्द्रियों को प्रभावित करने की कोशिश की जाती है। यह सब शैतानी दुष्कर्म की विभिन्न सूरतें हैं।

इस तरह़ की तमाम तक्लीफ़ों और मुसीबतों से बचने का सह़ी तरीक़ा यही है कि अल्लाह की पनाह ली जाए और इस बात पर दृढ़ विश्वास रखा जाए कि उसकी आज्ञा के बिना कोई चीज़ चोट और नुक़्सान नहीं पहुँचा सकती।

आमतौर से मुफ़स्सिरीन ने इस आयत में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर जो जादू किया गया था उसे नक़्ल किया है, लेकिन इस में बड़ा इख़्तिलाफ है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर उसका असर हुआ था या नहीं।

जादू का प्रभाव और नुबूव्वत-

अगर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर जादू के असर को मान भी लिया जाए तो आप (सल्ल०) के नुबूव्वत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, इसलिए कि यदि आप (सल्ल०) को इन्सानी रूप से घायल किया जा सकता है, जैसा कि उ़हद की लड़ाई में हुआ।

अगर आप घोड़े से गिर कर चोट खा सकते थे, जैसा कि हदीसों से साबित है और आपको बिच्छू काट सकता था, इस में कोई चीज़ भी उस सुरक्षा के ख़िलाफ नहीं आ रही जिसका नबी होने की हैसियत

से अल्लाह ने आप से वादा किया था तो आप अपनी इन्सानी हैसियत से जादू के प्रभाव से बीमार भी हो सकते थे।

नबी पर जादू का प्रभाव हो सकता है, जिसका जिक्र क़ुर्आन के सूरः अअ़राफ़ में फ़िरऔ़न के जादूगरों के बारे में किया गया है कि "जब ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के मुक़ाबिले में वह आए तो उन्होंने हज़ारों आदमियों की आँखों पर जादू कर दिया, जो वहाँ दोनों का मुक़ाबिला देखने के लिए जमा हुए थे"। **(आयत नं० 116)**

सूरः ताहा में है "कि जो लाठियाँ और रस्सियाँ उन्होंने फेंकी थी उनके बारे में आम लोगों ने ही नहीं ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने भी यही समझा था कि वह उनकी ओर साँपों की तरफ़ दौड़ी चली आ रही हैं और इससे ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) भयभीत हो गए यहाँ तक कि अल्लाह ने उन पर वह़्य उतारी कि डरो नही, तुम्हीं कामयाब होगे, ज़रा अपनी लाठी फेंको।" **(सूरः ताहा आयत नं० 66 से 69 तक)**

जादू क्या है-

जादू वास्तव में एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव है, जो मन से निकलकर शरीर पर उसी तरह़ प्रभाव डालता है, जिस तरह़ शारीरिक प्रभाव शरीर से गुज़र कर मन को प्रभावित करते हैं।

उदाहरण के तौर पर भय एक मनोवैज्ञानिक अवस्था है पर उसका प्रभाव शरीर पर इस तरह़ होता है कि रोंगटे खड़े हो जाते हैं और शरीर कांप उठता है, लेकिन जादू से वास्तविकता नहीं बदलती मगर इन्सान का मन और उसकी इन्द्रियाँ उससे प्रभावित होकर यह मह़सूस करने लगती हैं कि वास्तविकता बदल गई है।

ह़ज़रत मूसा की ओर जादूगरों ने जो लाठियाँ और रस्सियाँ फेंकी थीं, वह सचमुच साँप नहीं बनी थीं, लेकिन हज़ारों लोगों की आँखों पर ऐसा जादू किया कि उन्हें साँप ही मह़सूस हुआ और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) तक की इन्द्रियाँ जादू के इस प्रभाव से न बच सकीं।

इसी तरह़ क़ुर्आन (के सूरः बक़रः आयत नं० 102) में बयान किया गया है कि 'बाबुल' नामी स्थान पर 'हारूत' और 'मारूत' से लोग ऐसा जादू सीखते थे जो पति-पत्नी में जुदाई डाल दे। यह भी एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव था और स्पष्ट है कि यदि तजुर्बे से लोगों को इस अ़मल की कामियाबी मालूम होती तो वह इसके ख़रीदार न बन सकते।

बेशक जिस तरह़ बन्दूक की निकली हुई गोली या बम भी अल्लाह के हुक्म का मुह़ताज है उसी तरह़ जादू भी उस के हुक्म के बिना सफ़ल नहीं हो सकता, तो फिर उस अल्लाह से दुआ़ करनी चाहिए। किसी बाबा आदि के चक्कर में फंस कर अपने आप को बर्बाद करना अ़क़्लमन्दी नहीं।

इस्लाम और झाड़ फूँक-

बहुत सी ह़दीसों में इसका उल्लेख हुआ है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) हर रात को सोते वक़्त और ख़ासतौर से बीमारी की ह़ालत में 'मुअ़व्विज़तैन' या कुछ के मुताबिक़ 'मुअ़व्विज़तैन' तीन बार पढ़

कर अपने दोनों हाथों में फूँकते और सर से लेकर पाँव तक पूरे जिस्म पर जहाँ-जहाँ तक भी आपके हाथ पहुँच सकते फेर लेते।

आख़िरी बीमारी में जब आप (सल्ल०) के लिए ख़ुद ऐसा करना मुम्किन न रहा तो ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा यह सूरतें (मुअ़व्विज़तैन ख़ुद या ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुक्म से) पढ़तीं और आपके मुबारक हाथों की बरकत के ख़याल से आप ही के हाथ से आपके बदन पर फेर देतीं।

इसी तरह़ बुख़ारी, मुस्लिम, नसई, इब्ने माजा, अबू दाऊद और 'मुवत्ता' इमाम मालिक में ख़ुद ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मौजूद हैं।

ह़दीसों में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का एक लम्बा जिक्र है, जिस के आख़िर में रसूलुल्लाह (सल्ल०) फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत के वह लोग बिना हिसाब के जन्नत में दाख़िल होंगे जो न दागने का इलाज कराते हैं, न झाड़-फूँक कराते हैं, न शगुन लेते हैं बल्कि अपने रब पर भरोसा करते हैं। **(मुस्लिम)**

'ह़ज़रत मुग़ीरा इब्ने शुअ़बा' से मरवी है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) दस चीज़ों को नापसन्द फ़रमाते थे जिनमें से एक झाड़-फूँक भी है सिवाय 'मुअव्विज़तैन' या 'मुअ़व्विज़ात' के।

(अबू दाऊद, अह़मद, नसई, इब्ने ह़ब्बान, ह़ाकिम)

कुछ ह़दीसों से यह भी मालूम होता है कि शुरु में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने झाड़-फूँक को बिल्कुल मना फ़रमा दिया था, लेकिन बाद में इस शर्त के साथ इसकी इजाज़त दे दी कि फूँक-झाड़ में शिर्क न हो, अल्लाह के पाक नामों या उसके कलाम से झाड़ा जाए और कलाम ऐसा हो जो समझ में आए और यह मालूम किया जा सके कि इससे कोई गुनाह की चीज़ तो नहीं है और भरोसा झाड़-फूँक पर न किया जाए कि उस से आदमी अच्छा हो जाएगा, बल्कि अल्लाह पर भरोसा किया जाए कि वह चाहेगा तो इस फूँक को लाभदायक बना देगा। इस विषय की ह़दीसें इस तरह़ हैंः-

बिच्छू के काटने पर

'तब्रानी' ने सग़ीर में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) से जिक्र किया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को एक बार नमाज़ की ह़ालत में बिच्छू ने काट लिया। जब आप (सल्ल०) नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया बिच्छू पर ख़ुदा की लअ़नत हो, न किसी नमाज़ी को छोड़ता है और न किसी और को। फिर पानी और नमक मंगवाया और जहाँ बिच्छू ने काटा था वहाँ आप नमकीन पानी मलते थे और सूरः काफ़िरून, सूरः इख़्लास और मुअ़व्विज़तैन पढ़ते जाते थे। **(तबरानी)**

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से यह भी उल्लेख मिलता है कि नबी (सल्ल०) ह़ज़रत ह़सन और ह़ज़रत हुसैन (रज़ि०) पर यह दुआ़ पढ़ते थेः-

"मैं तुमको अल्लाह के बे-ऐ़ब कलमों की पनाह में देता हूँ हर शैतान और मूजी (पीड़ादायक वस्तु) से और बुरी नज़र से। **(बुख़ारी, मुस्नद अह़मद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा, मुवत्ता)**

'उ़स्मान इब्ने अ़बुल् आस सक़्फ़ी' के बारे में मुस्लिम, मुवत्ता, तब्रानी और ह़ाकिम में थोड़े शाब्दिक

मतभेद के साथ यह भी उल्लेख हुआ है कि उन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से शिकायत की कि मैं जब से मुसलमान हुआ हूँ मुझे एक दर्द महसूस होता है, जो मुझको मारे डालता है। आपने फ़रमाया, अपना सीधा हाथ उसी जगह पर रखो जहाँ दर्द होता है, फिर तीन बार 'बिस्मिल्लाह' कहो और सात बार यह कहते हुए हाथ फेरो कि "मैं अल्लाह और उसकी क़ुद्रत की पनाह माँगता हूँ उस चीज़ की बुराई से जिसे मैं महसूस करता हूँ और जिस के आ जाने का मुझे भय है"।

'मुवत्ता' में यह भी है कि इस के बाद मेरा वह दर्द जाता रहा और यही मैं अपने घरवालों को भी बताता हूँ। **(मुस्लिम, मुवत्ता)**

'मुस्नद अहमद' और 'तब्रानी' में 'तलक़ इब्ने अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत है कि मुझे अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की मौजूदगी में बिच्छू ने काट लिया, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुझ पर पढ़ कर फूंका और उसी जगह पर हाथ फेरा। **(मुस्नद अहमद)**

'मुस्लिम शरीफ़' में हज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि एक बार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) बीमार हुए तो हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने आकर पूछा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! क्या आप बीमार हो गए? आपने फ़रमाया हाँ, उन्होंने कहा "मैं अल्लाह के नाम पर आपको झाड़ता हूँ, हर उस चीज़ से जो आप को तक्लीफ़ दे और हर जानदार और बुरे नज़र की बुराई से अल्लाह आपको शिफ़ा दे, मैं उस के नाम पर आपको झाड़ता हूँ।" **(मुस्लिम)**

अ़म्र बिन हज़्म को इजाज़त-

मुस्लिम, मुस्नद अहमद और 'इब्ने माजा' में हज़रत जाबिर इब्ने अ़ब्दिल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का क़ौल है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने झाड़-फूँक से रोक दिया था। फिर हज़रत अम्र बिन हज़्म के परिवार के लोग आए और कहा कि हमारे पास एक अ़मल था जिससे हम बिच्छू (या साँप) के काटे को झाड़ते थे, मगर आपने इस काम से मना फ़रमा दिया था। फिर उन्होंने वह चीज़ आप को सुनाई जो वह पढ़ते थे। आपने फ़रमाया, "इसमें तो मैं कोई हर्ज नहीं पाता। तुम में से जो आदमी अपने किसी भाई को लाभ पहुँचा सकता है, वह ज़रूर पहुँचाए"। **(मुस्लिम, मुस्नद अहमद)**

हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की दूसरी हदीस मुस्लिम में यह है कि हज़्म-परिवार के पास साँप काटे का अ़मल था और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उनको इसकी इजाज़त दे दी। जिसकी तस्दीक़ में मुस्लिम, मुस्नद अहमद और 'इब्ने माजा' में हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का क़ौल भी मिलता है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अन्सार के एक परिवार को हर ज़हरीले जानवर के काटने को झाड़ने की इजाज़त दे दी थी।

मुस्नद अहमद, तिर्मिज़ी, मुस्लिम और इब्ने माजा में हज़रत अनस (रज़ि०) से भी इसी तरह के मिलते-जुलते क़ौल मौजूद हैं, जिनमें रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ज़हरीले जानवरों के काटे और जुजाम के रोग और बुरी नज़र से झाड़ने की इजाज़त दे दी थी।

झाड़-फूँक लाभदायक है या नहीं-

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने दवा और इलाज से कभी मना नहीं फ़रमाया, बल्कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हर मर्ज़ की दवा अल्लाह ने पैदा की है और तुम लोग दवा किया करो। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने खुद लोगों को कुछ रोग के इलाज बताए लेकिन दवा भी अल्लाह ही के हुक्म से लाभ पहुँचाती है, वरना यदि दवा और इलाज हर हाल में लाभ पहुँचाता तो अस्पतालों में कोई न मरता।

यदि दवा और इलाज करने के साथ अल्लाह के कलाम (क़ुर्आन मजीद) और उसके पवित्र नामों से अल्लाह ही से मदद चाही जाए तो यह बुद्धि के भी विरुद्ध नहीं है, लेकिन यह भी सही नहीं कि दवा और इलाज को जहाँ वह मिल सके जान बूझ कर छोड़ दिया जाए सिर्फ़ झाड़ फूंक को ही काफ़ी समझ लिया जाए और कुछ लोग अ़मल और तअ़वीज़ों की दुकानें खोल कर बैठ जाएँ और उसी को कमाई का ज़रिया बना लें।

एक सरदार का इलाज-

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक मुहिम पर अपने कुछ साथियों को भेजा, जिनमें हज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) भी साथ थे। यह लोग रास्ते में अ़रब के एक क़बीले की बस्ती पर जाकर ठहरे और उन्होंने क़बीले वालों से कहा कि हमारी मेज़बानी करो, उन्होंने इन्कार कर दिया। इतने में क़बीले के सरदार को बिच्छू ने काट लिया और वह लोग उन मुसाफ़िरों के पास आए और कहा कि तुम्हारे पास कोई दवा या अ़मल है, जिससे तुम हमारे सरदार का इलाज कर दो। हज़रत अबू सईद (रज़ि०) ने कहा है तो मगर तुमने चूँकि हमारी मेज़बानी से इन्कार किया है, इसलिए जब तक तुम लोग कुछ दोगे नहीं, हम इसका इलाज न करेंगे।

उन्होंने बकरियों का एक रेवड़ (कुछ कथनों में है 39 बकरियाँ) देने का वादा किया और हज़रत अबू सईद (रज़ि०) ने जाकर उस पर सूरः फ़ातिहा पढ़नी शुरु की और होटों का लुआ़ब (राल) उस पर मलते गये यहाँ तक कि बिच्छू का प्रभाव ख़त्म हो गया और क़बीले वालों ने जितनी बकरियों के देने का वादा किया था वह लाकर दे दीं। मगर इन लोगों ने आपस में कहा कि इन बकरियों से कोई फ़ायदा न उठाए जब तक अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से पूछ न लिया जाए। न जाने इस काम पर कुछ लेना जायज़ है या नहीं।

यानी यह लोग रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास हाज़िर हुए और पूरी बात बताई। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हंस कर फ़रमाया तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि यह सूरः झाड़ने के काम भी आ सकती है? बकरियाँ ले लो और इनमें मेरा हिस्सा भी लगाओ। **(बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)**

अ़रब के हालात-

इस हदीस को लेकर तअ़वीज़, गण्डे और झाड़फूँक की दुकान चलाने को सिद्ध करने के पहले अ़रब की परिस्थितियों को भी सामने रखना चाहिए। जिसमें हज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) ने यह काम किया

था और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उसे न सिर्फ़ जायज़ बताया बल्कि कहा मेरा भी ह़िस्सा लगाओ, ताकि इस के जायज़ व नाजायज़ के बारे में कोई शक बाक़ी न रहे।

अ़रब की ह़ालत उस समय भी और आज तक यही है कि सौ-दो सौ मील तक आदमी को एक बस्ती से चल कर दूसरी बस्ती नहीं मिलती और बस्तियाँ भी उस वक़्त ऐसी न थीं जिनमें होटल, सराँय या खाने की दुकानें मौजूद हों और मुसाफ़िर कई-कई दिन का सफ़र करके जब वहाँ पहुँचे तो खाने-पीने का सामान ख़रीद सके।

इन परिस्थितियों में यह बात अ़रब की प्रसिद्ध नैतिक मान्यताओं में शामिल थी कि मुसाफ़िर जब किसी बस्ती पर पहुँचते तो बस्ती के लोग उनकी मेज़बानी करते। इस से इन्कार का मतलब तो कभी-कभी मुसाफ़िरों के लिए 'मौत' हुआ करता था और अ़रब में इस कार्य को बड़ा ही घृणित समझा जाता था।

इसीलिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अपने साथियों के इस काम को जायज़ समझा कि जब क़बीले वालों ने मेज़बानी से इन्कार कर दिया, तो इन लोगों ने उनके सरदार का इलाज करने से भी इन्कार कर दिया और इस शर्त पर उसका इलाज करने को तैयार हुए कि वह उनको कुछ बदले मे दें।

इस तरह़ उनमें से एक साह़ब ने अल्लाह के भरोसे पर सूरः फ़ातिह़ा उस सरदार पर पढ़ी और वह उससे अच्छा हो गया तो तय किया हुआ बदला क़बीले वालों ने लाकर दे दिया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इस बदला के लेने को ह़लाल व जायज़ क़रार दिया।

बुख़ारी में इस घटना के बारे में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का जो क़ौल है उसमें रसूलुल्लाह (सल्ल०) के यह शब्द हैं कि-

"इन्ना अहक़्क़ु मा अखज़ुम अ़लैहि अजरन किताबुल्लाहि"

'यानी बजाए इसके कि तुम कोई और अ़मल करते, तुम्हारे लिए यह ज़्यादह बेहतर था कि तुमने अल्लाह की किताब पढ़कर उस पर बदला लिया।'

यह आप (सल्ल०) ने इसलिए फ़रमाया कि दूसरे तमाम अ़मलियात से अल्लाह का कलाम सबसे बेहतर है। इसके अ़लावह इस तरह़ अ़रब के उस क़बीले पर इस्लाम के प्रचार का ह़क़ भी अदा हो गया कि उन्हें इस कलाम की बरकत मालूम हो गई जो अल्लाह की ओर से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर उतरा है और शिफ़ा हो गई।

झाड़ फूंक करके ज़िन्दगी गुज़ारने और लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करने का प्रमाण या उदाहरण ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के ज़माने या बाद के ज़माने में कहीं नहीं मिलता।

5 وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝

ह़सद (ईर्ष्या)

'ह़सद' (ईर्ष्या) का मतलब यह है कि अगर अल्लाह तआ़ला ने किसी आदमी को अपनी किसी नेअ़मत या फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) से नवाज़ा हो तो दूसरा आदमी उस पर जलने लगे और इस की ख़्वाहिश

करे कि वह उस से छिन जाए।

"और हसद (ईर्ष्या) करने वाला जब हसद (ईर्ष्या) करे" का मतलब यह है कि हासिद जब हासिदाना (ईष्यापूर्ण) कार्रवाई करने लगे और ईर्ष्या के जोश में कोई क़दम उठा ले तो ऐसे मौक़े पर उसके शर (फ़ित्नों) उसकी पीड़ा से बचने के लिए अल्लाह की पनाह माँगना चाहिए। हासिद (ईर्ष्या करने वाले) का शब्द सब पर लागू होता है, लेकिन यह भी एक हक़ीक़त है कि हसद (ईर्ष्या) की शुरुआत शैतान ही से हुई है, जबकि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम को पैदा करके ज़मीन की ख़िलाफ़त का ताज उसके सर पर रखा था। इसी फ़ज़ीलत के आधार पर शैतान इन्सान का दुश्मन बन गया और चाहता है कि इन्सान भटक जाए।

'हसद' हराम और गुनाह कबीरा है। यही वह सब से पहला गुनाह है जो आसमान में किया गया है और यही सबसे पहला गुनाह है जो ज़मीन में किया गया, क्योंकि आसमान में इब्लीस ने हज़रत आदम (अ़लै०) से हसद किया और ज़मीन पर उन के बेटे 'काबील' ने अपने भाई 'हाबील' से किया। **(क़ुर्तुबी)**

यानी इस आयत का मतलब यह है कि एक मोमिन को जब किसी हासिद (ईर्ष्या करने वाले) से मामला पेश आए तो वह उसके फ़ित्नों से बचने के लिए अल्लाह की पनाह माँगे। इस तरह वह अपने गुस्से को भी क़ाबू में रख सकेगा और अल्लाह की मदद का भी हक़्दार होगा। इस आयत के आख़िर में हासिद के शर (फ़ित्नों) से पनाह माँगने की जो हिदायत दी गई है, उस से एक अहम बात की तरफ़ इशारा जो मिलता है वह यह है कि ईमान लाने वाले ख़ूब समझ लें कि इस हिदायत नामा (क़ुर्आन) के ज़रिये उन्हें बड़ी नेअ़मत और बड़ी इ़ज़्ज़त मिली हुई है।

इस पर उनके दुश्मनों का उन्हें हसद की नज़र से देखना और तौहीद से जो हिदायत की अस्ल बुनियाद है उन्हें फेरने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाना हरगिज़ तअज्जुब नहीं।

इसलिए अपने हासिदों (ईर्ष्या करने वालों) की शरारतों और उनकी साज़िशों की तरफ़ से चौकन्ना रहें और उनके फ़ित्नों (शर) से बचने के लिए अल्लाह का सहारा लें।

इस पूरी सूरः में तीन चीज़ों से ख़ास तौर से पनाह माँगने का ज़िक्र है, लेकिन पहली और तीसरी में तो एक को दूसरे से शर्त के साथ जैसे 'ग़ासिक़ीन' के साथ 'इज़ा वक़ब' और 'हासिदीन' के साथ 'इज़ा हसद' फ़रमाया और दर्मियानी चीज़ यानी जादू में कोई शर्त नहीं रखी, क्योंकि जादू का नुक़्सान आ़म है और रात का नुक़्सान उसी वक़्त होता है जब पूरे तौर पर अंधेरा हो जाए।

इसी तरह हासिद का हसद जब तक वह अपने हसद की वजह से किसी को तक्लीफ़ पहुँचाने का क़दम न उठा ले, नहीं होता बल्कि उस वक़्त तक तो उल्टा उसी को नुक़्सान होता है कि दूसरों की नेअ़मत को देखकर जलता कुढ़ता है, जिससे उसका सुकून ख़त्म हो जाता है।

दुनियवी और दीनी आफ़ात से हिफ़ाज़त

दुनिया व आख़िरत की तमाम आफ़तों से बचने का ज़रिया एक ही है कि इन्सान अपने आप को

अल्लाह की पनाह में दे दे और अपने अ़मल से उसकी पनाह में आने के क़ाबिल बनने की कोशिश करे। इन दोनों सूरतों में पहली सूरः 'फ़लक़' में तो दुनियवी आफ़त से अल्लाह की पनाह माँगने की तअ़लीम दी गई है और सूरः 'नास' में आख़िरत की आफ़तों से बचने के लिए अल्लाह की पनाह माँगी गई है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हबीब (रजि०) से रिवायत है, "कि एक रात में बारिश और सख़्त अंधेरा था, हम हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को तलाश करने के लिए निकले, जब आप (सल्ल०) को पा लिया तो आपने फ़रमाया कि कहो, मैंने अ़र्ज़ किया कि क्या कहूँ, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया "कुल हुवल्लाहु अ़हद" और मुअ़व्विज़तैन पढ़ो। जब सुबह हो और जब शाम हो, तीन बार यह पढ़ना तुम्हारे लिए हर तक्लीफ़ से अमान होगी"। **(तिर्मिज़ी, अबूदाऊद, नसई)**

हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जब आप (सल्ल०) को कोई तक्लीफ़ होती तो 'मुअ़व्विज़तैन' (कुल अऊज़ू बिरब्बिन्नासि और कुल आऊज़ु बिरब्बिल्फ़लक़ि) पढ़ कर अपने जिस्म पर फूँक लेते थे। जब आप (सल्ल०) को तक्लीफ़ ज़्यादा हो गई तो मैं यह सूरतें पढ़ कर आप (सल्ल०) के हाथों को बरकत की उम्मीद से आप (सल्ल०) के जिस्म पर फेरती थी।

(बुख़ारी फ़ज़ायलुलु क़ुर्आन, बाबुलु मुअव्विज़ात, मुस्लिम किताबुस्सलाम)

आप (सल्ल०) का यह मामूल भी था कि रात को सोते वक़्त सूरः इख़्लास और मुअ़व्विज़तैन पढ़कर अपनी हथेलियों पर फूँकते और फिर उन्हें पूरे जिस्म पर मलते। पहले सर, चेहरा और जिस्म के अगले हिस्से पर हाथ फेरते, उस के बाद जहाँ तक आप (सल्ल०) के हाथ पहुँचते तीन बार आप (सल्ल०) ऐसा ही करते। **(सही़ बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइले क़ुर्आन बाब फ़ज़लुलु मुअ़व्विज़ाति)**

एक हदीस में है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को नमाज़ में बिच्छू ने डस लिया तो नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद आप (सल्ल०) पानी और नमक मँगवा कर उसके ऊपर मलते और साथ-साथ "कुल या अय्युहल काफ़िरून, 'कुल हुवल्लाहु अ़हद' और 'कुल अऊज़ुबिरब्बिन्नासि' पढ़ते रहे। **(मजमउज़्ज़वाइद)**

(भाग–114)

सूर–ए–नास

(सूरः नं. 114)

सूरः नास का संक्षिप्त परिचय

इस सूरः के मक्की या मदनी होने में इख़्तिलाफ है, लेकिन इसे बहुत से मुफ़स्सिरीन ने मक्की सूरः ही माना है। तर्तीब के मुताबिक़ यह क़ुर्आन की आख़िरी सूरः है। इससे पहले की सूरः में ज़ाहिरी मख़्लूक़ की बुराई से अल्लाह की पनाह माँगने का तरीक़ा सिखाया गया है।

इस सूरः में आदमी की उन अन्दुरुनी बुराईयों से जिन से दूसरों को नुक़्सान पहुँच सकता है, पनाह माँगने का तरीक़ा सिखाया गया है, इसलिए इन दोनों सूरतों का इकट्ठा नाम "अल्मअव्विजतैन" है।

यानी अन्दुरुनी व ज़ाहिरी बुराईयों से पनाह माँगने वाली इन दो सूरतों में सिखाया गया है कि इन्सान और सारी समझदार मख़्लूक़ अल्लाह के हर तरह क़ब्ज़े में है, वही उन का पालने वाला, वही उनका बादशाह और वही मअ़बूद (उपास्य) है, इसलिए उसी से इन शैतानों के बहकाने से पनाह माँगो। जो छुप-छुप कर दिलों में वस्वसा डालते रहते हैं, चाहे वह शैतान आदमियों मे से हों या जिन्नातों में से।

इस सूरः में सिखाया जा रहा है कि आप कहिए कि ऐ अल्लाह! इन सब शैतानों से अपनी पनाह में ले लीजिए।

आयत नं० 1 से 6 तक

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ إِلَٰهِ النَّاسِ ۝ مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۥ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝ مِنَ
الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

अनुवाद-

(1) (आप) कह दीजिए मैं पनाह मांगता हूँ, इन्सानों के रब की (2) इन्सानों के ह़क़ीक़ी बादशाह की, (3) इन्सानों के मअ़बूद (उपास्य) की, (4) वस्वसा डालने वाले खन्नास (छिपने वाले) के शर (बुराई) से, (5) जो लोगों के सीनों में वस्वसे डालता है, (6) (चाहे वह) जिन्नों में से हो और (चाहे) इन्सानों में से हो।

सूरः नास की संक्षिप्त व्याख्या

सूरः फ़लक़ में दुनियवी आफ़ात से पनाह माँगने की तअ़लीम के साथ आख़िरत से मुतअ़ल्लिक़ आफ़तों से पनाह माँगने की ताकीद की गई है और इस सूरः में उस बुराई से पनाह माँगी गई है, जिस का ज़िक्र नीचे दिया जाता है।

1-2 قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝

कुल-

शब्द 'कुल' यानी 'कहो' से सूरः की शुरुआत करने से यह बात साबित होती है कि यह अल्लाह का कलाम है। अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को जिन लफ़्ज़ों में पैग़ाम पहुँचाने का हुक्म दिया ठीक-ठीक उन्ही लफ़्ज़ों में आप (सल्ल०) ने लोगों तक पहुँचा दिया। उनमें से कोई शब्द भी यहाँ तक कि 'कुल' (कहो) का शब्द भी आप (सल्ल०) ने अलग नहीं फ़रमाया। यह कुर्आन के शब्द अल्लाह की वह़्य होने का खुला सुबूत हैं।

अऊ़ज़ु-

'अऊ़ज़ु' का शाब्दिक अर्थ पनाह लेने के है। जिससे इस बात का पता चलता है कि बन्दा ख़ुदा से न सिर्फ़ पनाह माँगता है, बल्कि व्यवहारिक रूप से उस ने ख़ुद को उसी की हिफ़ाज़त में दे दिया है और उसी का सहारा ले लिया है।

रब-

रब के माने 'पालने वाले' और हर ह़ाल की इस्लाह (सुधार) करने वाले के हैं। इस जगह रब को नास (इन्सान) से जोड़ा गया है और पहली सूरः में फ़लक़ (आसमान) से जोड़ा गया था। वजह यह है कि सूरः फ़लक़ में ज़ाहिरी और जिस्मानी (शारिरिक) आफ़ात से पनाह माँगना मक़्सूद है और वह इन्सान

के साथ ख़ास नहीं कि जानवरों को भी बद्नी आफ़ात व मुसीबतें पहुँचती हैं। शैतानी वस्वसे के अ़लावा कि इसका नुक़्सान इन्सान के साथ ख़ास है और जिन्नात भी इसमें शामिल हैं, इसलिए यहाँ रब का तअ़ल्लुक़ नास से किया गया है। **(मज़हरी)**

इन्सानों का रब यानी तमाम लोगों का परवरदिग़ार जो वास्तविक मालिक है, वही तमाम इन्सानों की परवरिश देखभाल करने वाला है, उसी के पास क़ायनात की हुक्मरानी और बादशाही भी है, वही पनाह देने वाला भी है, उसके सिवा कोई पनाह देने वाला नहीं। इसलिए मैं पनाह के लिए उसी की ओर पलटता हूँ और उसी की ओर झुकता हूँ।

चूँकि अल्लाह इन्सानों का हक़ीक़ी बादशाह है, इसलिए बन्दों की हिफ़ाज़त पर पूरी तरह क़ादिर है, अतः मैं उसी सर्वोच्च सत्ताधारी का सहारा लेता हूँ।

इससे स्पष्ट हुआ कि अल्लाह तआ़ला की सत्ता जिस तरह ज़मीन और आसमान पर है, उसी तरह पूरे इन्सानी समूह पर भी है। इन्सानी समूहों में से कोई समूह ऐसा नहीं जिस पर उसकी सत्ता (बादशाहत) न हो। इसलिए किसी समूह का ख़ुद को उसी बादशाहत से आज़ाद समझ लेना ऐसी बात है जो सच्चाई के ख़िलाफ़ है।

इससे हक़ीक़त तो नहीं बदलती लेकिन इन्सान का व्यवहार ख़राब हो जाता है यानी वह अपने कार्य क्षेत्र में उद्दण्ड (सरकश) बन जाता है।

3 إِلَٰهِ النَّاسِ ۝

हक़ीक़त में तमाम इन्सानों का मअ़बूद (उपास्य) अल्लाह तआ़ला ही है। यह और बात है कि लोगों ने इस हक़ीक़त से मुँह मोड़ कर अल्लाह के सिवा किसी और को मअ़बूद (उपास्य) बना लिए हैं। अ़िबादत (उपासना) का हक़्दार सिर्फ़ अल्लाह ही की हस्ती है। इस क़ायनात में मअ़बूद यानी अ़िबादत के योग्य होना सिर्फ़ उसी का गुण है, वही है जिसकी अ़िबादत आसमानों में की जाती है और ज़मीन में भी। इसीलिए इन्सानों का मअ़बूद (उपास्य) भी उसके सिवा कोई नहीं।

अल्लाह तआ़ला ही को रब, मालिक और इलाह (मअ़बूद) मान कर जब बन्दा उस से पनाह की दुआ़ करता है तो वह उसे क़ुबूल फ़रमाता है। दूसरे शब्दों में पनाह के प्रार्थना की स्वीकृति (क़ुबूलियत) के लिए 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) लाज़मी शर्त है।

4 مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝

'वस्वसा' का अर्थ बुरी बात और बुरे ख़याल के हैं, जो इस तरह से किसी के दिल में डाला जाए कि उसे महसूस तक न हो। 'वस्वासि' का मतलब है वस्वसा अन्दाज़ी करने वाला। यह शैतान की सिफ़त है और उसकी दूसरी सिफ़त 'ख़न्नास' है जो 'ख़ुनूस' से बना है जिसके अर्थ छिपने, ग़ायब हो जाने और पीछे हटने के हैं और इसका एक अर्थ सिकुड़ने के भी है।

शैतान जब इन्सान को किसी गुनाह पर आमादा करना चाहता है, तो वह गुनाह के काम बड़े सुन्दर

तरीक़े से पेश करता है और अच्छे नतीजे की उम्मीद दिलाता है। यही चीज़ वस्वसे की सूरत में इन्सान के दिल में दाख़िल होती है। जब वह उसके असर से प्रभावित हो जाता है, उसे क़ुबूल करता है, तो यह ख़याल मज़बूत होकर इरादा और आचरण का रूप धारण कर लेता है। सबसे पहले वस्वसा अंदाज़ी शैतान ने हज़रत आदम और हव्वा पर किया था।

"फिर शैतान ने उन पर वस्वसा अन्दाज़ी की, ताकि उनकी शर्मगाह जो एक दूसरे से पोशीदा (गुप्त) रखी गई थी, उनके सामने खोल दे और कहा कि तुम्हारे रब ने तुमको इस दरख़्त से इसलिए रोका है, कि तुम कहीं फ़रिश्ता न बन जाओ या तुम्हें अनन्त जीवन न प्राप्त हो जाए। उसने क़सम खा कर कहा कि मैं तुम्हारा भला चाहने वाला हूँ"। **(अल् अअ़राफ़-20, 21)**

शैतान की चालें-

ऊपर की आयत से मालूम हुआ कि किस तरह़ शैतान शुभचिन्तक बनकर आता है, गुनाह की ओर कैसे चकमे देकर लुभाता है। आदम और हव्वा के सामने शैतान ज़ाहिर हो गया था, लेकिन दुनिया में उसके वस्वसे की प्रक्रिया छुपे दुश्मन के हमले की तरह़ होती है। इसलिए आदमी को उसकी वस्वसा अन्दाज़ी का पता नहीं चलता।

अल्बत्ता अपने दिल में वह बुरे ख़याल एवं बुरे विचार मह़सूस करने लगता है, लेकिन इन विचारों को क़ुबूल करना या न करना इन्सान के अपने फैसले पर होता है। यदि वह पूरे होश में और अपने दुश्मन की ओर से चौकन्ना हो तो शैतानी वस्वसों का कोई असर क़ुबूल नहीं करता, अगर ग़ाफ़िल (अचेत) हो तो असर क़ुबूल करता है और इन्सान का दिल उसी सूरत में चौकन्ना रहता है जबकि उस में ख़ुदा की याद बस गई हो। अल्लाह का ज़िक्र इन्सान के बचाव का सबसे बड़ा हथियार है, इस हथियार को इस्तेमाल करके दिल में पैदा होने वाले वस्वसों से जब वह ख़ुदा की पनाह माँगता है तो वस्वसे बेअसर होकर रह जाते हैं और शैतान को नाकाम लौटना पड़ता है।

ऊपर की आयत में शैतान को उन छुपी कार्यवाहियों से जो वह इन्सान के ख़िलाफ करता है, सचेत किया गया है, ताकि इन्सान अपने दुश्मन की तरफ़ से चौकन्ना रहे और अपने बचाव का सामना करे।

इसी तरह़ ईमान लाने वालों को क़ुर्आन के रूप में जो हिदायत की गई है, उसके लिए सब से बड़ा ख़त़्रा शैतान की वस्वसा अन्दाज़ी है यानी वह ऐसी बातें दिल में डाल सकता है जो क़ुर्आनी मामले में शक पैदा करने वाली और हिदायत के रास्ते से दूर कर देने वाली हों, ख़ासतौर से तौह़ीद का अ़क़ीदा जो दीन की बुनियाद और क़ुर्आन की अस्ल रुह़ है। शैतान की शरारती चालें उसके ख़िलाफ़ हो सकती हैं, इसलिए इस दुश्मन की शातिराना चालों से होशियार रहने और अपने दीन व अ़क़ीदे की ह़िफ़ाज़त का सामान करने की ज़रुरत है।

5-6 الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

दिलों में वस्वसे डालना उर्दू मुहावरे के लिहाज़ से है, वरना ह़क़ीक़त में 'सुदूर' सद्र का बहुवचन

है, जिसका मतलब 'सीना' है। शैतान के वस्वसा अन्दाज़ी करने का स्थान इन्सान का अन्दुरुन यानी उसका सीना है। सीना दिल के लिए ड्योढ़ी (चौखट) की हैसियत रखता है, जहाँ से वस्वसे दिल में दाख़िल होते हैं।

वस्वसे-

वस्वसे दिल में सीधे दाख़िल नहीं होते, बल्कि सीना के माध्यम से दाख़िल होते हैं, यानी शैतान के तीर सीने में दाख़िल हो जाते हैं और उनका ज़हरीला असर दिल पर उसी वक़्त होता है जबकि दिल अचेतना के खर्राटे ले रहा होता है, वरना यदि दिल अल्लाह के ज़िक्र से भरा हो तो वह बचाव कर लेता है और उसके प्रभाव से सुरक्षित रहता है। वस्वसा डालने वालों की दो क़िस्में हैं, जिन्न और इन्सान।

पहली क़िस्म शैतानों की वह होती है जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों को गुमराह करने की क़ुद्रत दी है, हर इन्सान के साथ एक शैतान उस का साथी होता है जो उसको गुमराह करता है, इसीलिए ह़दीस में आता है कि जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने यह बात फ़रमाई तो सह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने पूछा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! क्या वह आप के भी साथ है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया हाँ, मेरे साथ भी है, लेकिन अल्लाह ने उस पर मेरी मदद फ़रमाई है और वह मेरा मुतीअ़ (फ़रमाँबरदार) हो गया है। मुझे ख़ैर के सिवा किसी बात का हुक्म नहीं देता। **(सह़ी मुस्लिम, किताब सिफ़तुलुक़ियामः)**

इसी तरह़ एक बार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) एतिक़ाफ़ की ह़ालत में थे कि आप (सल्ल०) की बीवी ह़ज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा आप (सल्ल०) से मिलने के लिए आईं। रात का वक़्त था, आप (सल्ल०) उन्हें छोड़ने के लिए उन के साथ गए। रास्ते में दो अन्सारी सह़ाबी वहाँ से गुज़रे, तो आप (सल्ल०) ने उन्हें बुला कर फ़रमाया कि यह मेरी बीवी 'सफ़िया बिन्त ह़्य्ई' हैं, उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप के बारे में हमें क्या बद्गुमानी हो सकती थी? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया यह तो ठीक है, लेकिन शैतान इन्सान की रगों में ख़ून की तरह़ दौड़ता है। मुझे ख़त्रा मह़सूस हुआ कि कहीं वह तुम्हारे दिलों में कुछ शुब्हा (शंका) न डाल दे। **(सह़ी बुख़ारी, किताबुल् एह़काम)**

इन्सानी शैतान-

दूसरे शैतान इन्सानों में से होते हैं, जो नसीह़त और शफ़्क़त के रूप में इन्सानों को गुमराही की तर्ग़ीब देते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि शैतान जिन को गुमराह करता है उन की दो क़िस्में हैं यानी शैतान इन्सानों को भी गुमराह करता है और जिन्नात को भी। जिन्नात भी शैतान के वस्वसे से गुमराह होने वालों में शामिल है।

इस तरह़ वस्वा अन्दाज़ी करने वाला शैतान मात्र इब्लीस ही नहीं है, बल्कि जिन्नों और इन्सानों में से ऐसे बहुत से शैतान मौजूद होते हैं, जो यह काम करते हैं।

"और इसी तरह़ हमने नबी के लिए इन्सानों और जिन्नों के शैतानों को दुश्मन बना दिया जो एक दूसरे पर चिकनी चुपड़ी बातें फ़रेब देने के लिए करते (मन में डालते) हैं। **(सूरः अल् अनआ़म आयत नं० 112)**

जहाँ तक जिन्नों के शैतानों की वस्वसा अन्दाज़ी की बात है उन का छिप कर हमलावर होना तो बिल्कुल स्पष्ट है। रहे इन्सानों के शैतान जब वस्वसा अन्दाज़ी करते हैं तो अपने वास्तविक शैतान होने की हैसियत को छुपा कर ही करते हैं।

यानी वह इन्सान के शुभचिन्तक बन कर ज़ाहिर होते हैं, क्योंकि वह जानते हैं कि उन का कोई विचार और उनका कोई सुझाव किसी के लिए उसी वक़्त मानने योग्य हो सकता है जबकि एक उपदेशक और एक शुभचिन्तक की हैसियत से वह सामने आएँ। अगर वह अपने असली रूप यानी उपद्रवी (शर पसन्दों) की हैसियत से सामने आएँ तो कोई व्यक्ति भी उनकी ओर ध्यान देने के लिए तैयार न होगा।

'शर' (फ़ित्ना) फैलाने के बारे में अस्ल काम जिन्न शैतानों का है, जिन का सरदार 'इब्लीस' है। रहे इन्सानी समूह के शैतान तो वह भी इन के अधीन हैं।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने खुद अपने नफ़्स के शर से भी पनाह माँगना सिखलाया है। हदीस में है-

"अल्लाहुम्मा अअ़ज़ु बिका मिन शर्रि नफ़्सी व शर्रिशैतानि व शिरकः"

"यानी ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह माँगता हूँ अपने नफ़्स के शर से और शैतान के शर से और शिर्क से भी"।

शैतानी वस्वसे से पनाह माँगने की अहमियत-

'इब्ने कसीर' ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने इस सूरः में यह तीन सिफ़तें (गुण) रब, मालिक, इलाह, ज़िक्र करके बताया है कि शैतानी वस्वसे से इन्सान को पनाह माँगना चाहिए, क्योंकि हर इन्सान के साथ एक साथी शैतान लगा हुआ है जो हर क़दम पर इस कोशिश में लगा रहता है कि इन्सान को तबाह व बर्बाद कर दे।

पहले तो वह गुनाह की तर्ग़ीब देता है और तरह़-तरह़ से उसको बहला फुसला कर गुनाहों की तरफ़ ले जाता है। इसमें कामियाब न हुआ तो इन्सान जो ताअ़त व अ़िबादत करता है उसको ख़राब करने के लिए दिखावा, नाम व नमूद, घमंड और तकब्बुर के वस्वसे दिल में डालता है। इ़ल्म वालों के दिलों में सही अ़क़ायद के सम्बन्ध में शंका पैदा करता है और उस के शर से वही बच सकता है, जिस को अल्लाह हिफ़ाज़त में रखे।

यहाँ जिस वस्वसे से डराया गया है उस से मुराद वह ख़याल हैं, जिस को इन्सान अपने अख़्तियार से करे और ग़ैर अख़्तियारी वस्वसा व ख़याल जो दिल में आएँ और गुज़र जाएँ उससे कुछ नुक़्सान नहीं, उस पर कोई गुनाह भी नहीं है।

इन्सान के दुश्मन और इलाज-

'इब्ने कसीर' ने अपनी तफ़्सीर के मुक़द्दिमे में क़ुर्आन करीम की तीन आयतें लिखी हैं, जिन में इन दोनों दुश्मनों का ज़िक्र करके इन्सानी दुश्मन का दिफ़ा, अच्छे अख़्लाक़, बदला न लेने का जज़्बा और

उस के साथ एह्सान का सुलूक करना बतलाया है। उस के मुक़ाबिले में शैतान का दिफ़ा इस्तिआ़ज़ः के पढ़ने को। 'इब्ने कसीर' ने फ़रमाया कि पूरे क़ुर्आन में यह तीन ही आयतें इस विषय में आई हैं। एक आयत सूरः अअ़राफ़ में है कि:-

"ख़ुज़िल् अफ़्व वअ़्मुर बिल्मअ़रूफ़ि व अअ़्रिज़् अनिल् जाहिलीन" यह तो इन्सानी दुश्मन के मुक़ाबिले की तद्बीर हुई जिस का ख़ुलासा माफ़ करके दरगुज़र करना, उस को नेक काम की तर्ग़ीब देना और बुराई को नज़र अन्दाज़ करना है।

इसी आयत में आगे फ़रमाया:-

"वइम्मा यन्ज़ग़न्नका मिनश्शैतानि नज़्गुन फ़स्तअ़िज़् बिल्लाहि इन्नहू समीअ़ुन् अ़लीम"।

यह शैतानी दुश्मन के मुक़ाबिले के लिए बताई गई है, जिस का निचोड़ अल्लाह से पनाह माँगना है।

दूसरी आयत सूरः **"क़द अफ़्लहल् मूमिनून"** में है कि पहले इन्साननुमा दुश्मन के इलाज के सम्बन्ध में फ़रमाया **"इद्फ़अ़् बिल्लती हिया अहसनुस्सय्यिअ़ः"** यानी बुराई को भलाई के ज़रिये दिफ़ा करो, फिर शैतानी दुश्मन के मुक़ाबिले के लिए फ़रमाया गया:-

"वक़ुर्रब्बि अऊज़ुबिका मिन हमज़ातिश्शयातीनि व अऊज़ुबिक रब्बि अंय्युहज़रून"

अनुवाद-

"तुम बुराई को भलाई के ज़रिये दिफ़ा करो"। अगर ऐसा कर लोगे तो देखोगे कि तुम्हारा दुश्मन तुम्हारा मुख़्लिस दोस्त बन जाएगा। इन सब का निचोड़ 'इस्तिग़्फ़ार' के अ़लावा कुछ नहीं"। **(इब्ने कसीर)**

इन तीनों आयतों में इन्सान नुमा दुश्मन का इलाज माफ़ी, दरगुज़र और अच्छे अख़्लाक़ बतलाए गए हैं, क्योंकि इन्सानी फ़ित्रत यही है कि अच्छे अख़्लाक़ और एह्सान से इन्सान प्रभावित हो जाता है। जो शरीर इन्सानी योग्यता खो बैठा हो, उसका इलाज दूसरी आयत में जिहाद व क़िताल बतलाया गया है, क्योंकि वह खुले दुश्मन हैं, खुले साज़ व सामान के साथ आते हैं, उनकी क़ुव्वत का मुक़ाबिला ताक़त से ही किया जा सकता है।

सिवाय शैतान मल्ऊन के कि वह अपनी फ़ित्रत में बद्माश है, एह्सान और दरगुज़र उस पर कोई अच्छा असर नहीं डालता कि जिस से वह अपनी शरारत से बाज़ आ जाए। यह दोनों क़िस्म की नर्म व गर्म तद्बीरें सिर्फ़ इन्सानी दुश्मन के मुक़ाबिले में चलती हैं, शैतान के मुक़ाबिले में नहीं। इसलिए इस का इलाज सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की पनाह में आना और अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल हो जाना है। जिसे पूरे क़ुर्आन में ज़िक्र किया गया और इसी पर क़ुर्आन को मुकम्मल किया गया है।

शैतानी चालें कमज़ोर हैं-

ऊपर की बातों से किसी को यह न सोचना चाहिए कि शैतान की ताक़त बड़ी है, उसका मुक़ाबिला मुश्किल है। इसी ख़याल को ख़त्म करने के लिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, **"इन्न कैदश्शैताना काना ज़ओ़ीफ़ा"**

और सूरः नह़ल में जहाँ क़ुर्आन पढ़ने के वक़्त "इस्तिआ़ज़ः" का हुक्म दिया गया है, वहीं यह भी फ़रमा दिया कि ईमान वालों और अल्लाह पर भरोसा रखने वालों पर यानी अल्लाह की पनाह लेने वालों पर शैतान का कोई तसल्लुत नहीं होता। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद हैः-

"व इज़ा क़रातल् क़ुर्आना फ़स्तइज़ बिल्लाहिमिनश्शैतानिर्रजीम"

"यानी जब तू क़ुर्आन पढ़ने लगे तो पनाह ले अल्लाह की शैतान मरदूद से। उस का ज़ोर नहीं चलता उन पर जो ईमान रखते हैं और अपने रब पर भरोसा करते हैं, उसका ज़ोर तो उन्हीं पर है जो उसको दोस्त समझते हैं और जो उस को शरीक मानते हैं"।

'सूरः फ़ातिह़ा' और आख़िरी सूरः

क़ुर्आन मजीद को अल्लाह तआ़ला ने 'सूरः फ़ातिह़ा' से शुरु फ़रमाया है। जिसका खुलासा अल्लाह तआ़ला की ह़म्द व सना के बाद उस की मदद ह़ासिल करना और उस से सीधे रास्ते की तौफ़ीक़ माँगना है।

अल्लाह तआ़ला की मदद और सिराते मुस्तक़ीम यही दो चीज़ें हैं, जिन में इन्सान की दुनिया व दीन के मक़्सद की कामियाबी छुपी हुई है, लेकिन इन दोनों चीज़ों को ह़ासिल करने में हर क़दम पर शैतान मलूअन के मक्र व फ़रेब और वस्वसों का जाल बिछा रहता है। इसलिए इस जाल को ख़त्म करने की तद्बीर 'इस्तिआ़ज़ः' पर क़ुर्आन को ख़त्म किया गया है।

नोट– I- अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि इस ख़िद्मत को क़ुबूल फ़रमा कर पूरी इन्सानियत की हिदायत का ज़रिया बनाए और ख़ाकसार की मग़्फ़िरत फ़रमा कर आप (सल्ल०) का साथ नसीब फ़रमाए।

II- आख़िरी प्रूफ़ अल्ह़म्दुलिल्लाह 9 अक्टूबर 2014 ई० अर्थात 13 ज़िल्हिज्जः 1435 हिज्री बरोज जुमेरात रात 8 बजकर 55 मिनट पर मुकम्मल हुआ।

दुआ़ओं का तालिब
मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी
दारुल् उलूम नद्वतुल् उ़लमा
05–08–2014

Writer at a glance

Mufti Muhammad Sarwar Farooqui Nadwi (*Aacharya*)

Name	:	**Muhammad Sarwar Muhammad Sarwar Farooqui S/o. Mohd Haneef Farooqui S/o. Abdul Qayyum Farooqui S/o. Mahmood Ali Farooqui S/o. Ramzan Ali Farooqui S/o. Imam Baksh Farooqui S/o. Khairat Ali Farooqui S/o. Nisar Ahmad S/o. Muhammad Ali S/o. Athar Ali S/o. Abdul Hafeez S/o. Jalaluddin S/o. Mohd Suleman S/o. Allauddin S/o. Mohd Ishaq S/o. Nabiullah S/o. Khwaja Bakarullah S/o. Abdullah Yamni S/o. Abdul Aziz Yamni S/o. Salim S/o. Abdullah S/o. Sayyedna Umar Farooque Raziallahu Anhu.**

Educational Background.

Basic	:	Intermediate,
Higher Education	:	**M.A.**
Arabic	:	**Almiat, Fazeelat & Iftah,** (Darul-Uloom- Nadwatul Ulama Lucknow (U.P.) India.
Islamic Tadreebi Course	:	**Jamia Islamiya** **Madina Munawarah** (Saudi Arabia).
Urdu	:	**Adeeb Kamil & Mua'llim**
Sanskrit	:	**Shastri, Acharya**
Computer skill	:	**P.G.D.C.A**
Major Research	:	Qur'an and Fiqah, Darul-Uloom Nadwatul-Ulama, Lucknow, U.P. (India)

Present Posts

President	:	***Jamiat Payam-e-Amn,*** (Educational Society) lucknow, U.P. (India)
Rafiq Ilmi	:	***Majlis Tahqeeqat (Islamic Research) Darul Uloom Nadwatul Ulama,*** **Lucknow,** U.P. (India)
Director	:	***Markaz- ul-Tawheed Al-Islami*** lucknow, U.P. (India)
Managing Director	:	**Jamia Dar-e-Arqam,** Fatehpur, Haswa, U.P. (India)
Manager	:	**Jamia Dar-e-Arqam** (Educational Society) Allahabad (India)
Chairman	:	**Arqum Model School,** Lucknow, U.P. (India) .
General Secretary	:	***All India, Jamiat Darul-Aml*** lucknow, U.P. (India)
Manager	:	***Universal Peace Foundation*** lucknow, U.P. (India)

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी साहब नदवी द्वारा लिखित अहम हिन्दी पुस्तकें

नाम	मूल्य
1. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद) (साइज़ 20x30/8)	300 रू.
2. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद) (साइज़ 20x30/16)	110 रू.
3. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद) (साइज़-20x30/32)	100 रू.
4. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	180 रू.
5. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-1)	400 रू.
6. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-2)	400 रू.
7. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-3)	400 रू.
8. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-4)	400 रू.
9. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-5)	400 रू.
10. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-6)	400 रू.
11. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-7)	400 रू.
12. इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले हक़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	250 रू.
13. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	180 रू.
14. हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन	80 रू.
15. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Hard bound)	150 रू.
16. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Paper back)	120 रू.
17. जन्नत के हालात और जन्नती (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	100 रू.
18. कुफ़्र और शिर्क की हक़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	90 रू.
19. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	80 रू.
20. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी	200 रू.
21. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार (क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)	200 रू.
22. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अअ़माले हस्ना की रौशनी में)	50 रू.
23. सहाबा का इस्लाम और उसके बाद	60 रू.
24. इस्लामी राज्य की शासन व्यवस्था	100 रू.
25. अज़ान क्या है?	30 रू.
26. आओ नमाज़ की ओर	40 रू.
27. रोज़ः का हुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
28. हज और उमरा का आसान तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	30 रू.
29. ज़कात का हुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
30. उमरह का आसान तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	25 रू.
31. आपके सवालों का आसान हल (भाग एक)	70 रू.
32. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
33. इस्लाम की बुनियादी मालूमात (सवाल व जवाब की रोशनी में)	50 रू.
34. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (सवाल व जवाब की रोशनी में)	40 रू.

नाम	मूल्य
35. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पाकीज़ह ज़िन्दगी	40 रू.
36. बीवी-शौहर की ज़िम्मेदारियाँ (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
37. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन	160 रू.
38. सूर-ए- फ़ातिहा की तफ़्सीर	30 रू.
39. तौह़ीद की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	40 रू.
40. पवित्र क़ुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम	30 रू.
41. इस्लाम धर्म तलूवार से फैला या सदाचार से	60 रू.
42. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से)	60 रू.
43. ग़ैर मुस्लिमों से सम्बन्ध और धार्मिक आज़ादी	60 रू.
44. इस्लामी विरासत की तक़्सीम एक नज़र में	20 रू.
45. मीरास की तक़्सीम (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	30 रू.
46. लाइलाहा इल्लल्लाहु की गवाही	40 रू.
47. मोबाईल से सम्बन्धित मसायल (शरीअ़त की रोशनी में)	20 रू.
48. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में	20 रू.
49. सृष्टि का सृष्टा कौन?	40 रू.
50. ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
51. प्राकृतिक नियम और परमेश्वर से इस्लाम का सम्बन्ध	40 रू.
52. मुह़र्रम की ह़क़ीक़त	40 रू.
53. इस्लाम?	10 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब नदवी द्वारा लिखित उर्दू पुस्तकें

54. मआ़नी क़ुर्आनुल् करीम (लफ़्ज़ी तर्तीब के एतिबार से रवाँ उर्दू तर्जुमः)	500 रू.
55. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?	160 रू.
56. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी	40 रू.
57. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात	40 रू.
58. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा	40 रू.
59. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अअ़ला मक़्सद	40 रू.
60. अ़ामाल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत	40 रू.
61. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम	40 रू.
62. उम्मते मुह़म्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार और बनी इस्राईल	40 रू.
63. कायनात के अ़जायबात और इन्सान का अल्लाह से तअ़ल्लुक़	40 रू.
64 ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)	50 रू.
65. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्ज़ामात और उस की दअ़वत का असर	50 रू.
66. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के ह़ुक़ूक़	50 रू.
67. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रूफ़	90 रू.

नाम	मूल्य
68. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में	40 रू.
69. बौद्ध धर्म और इस्लाम	40 रू.
70. कलिमा-ए-तय्यबः की हक़ीक़त और उस के तक़ाज़े	80 रू.
71. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक़-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में	70 रू.
72. अल्लाह तआ़ला का तआ़र्रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल	70 रू.
73. क़ियामत तक के फ़ित्नें (रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पेशीनगोई की रोशनी में)	70 रू.
74. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
75. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत	50 रू.
76. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल	70 रू.
77. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
78. रसलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (मुस्तनद कुतुबे सीरत की रोशनी में)	40 रू.
79. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती (सवाल व जवाब की रोशनी में)	30 रू.
80. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	100 रू.
81. जन्नत के ह़ालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र	80 रू.
82. कुफ़्र व शिर्क की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	80 रू.
83. कुफ़्र शिर्क और फ़िस्क़ का ज़िक्र और सह़ाबा से मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा	80 रू.
84. क़ुर्आन के मुताबिक़ दअ़वत और इस्लामी जिहाद (क़ुर्आन व ह़दीस की रोश्नी में)	60 रू.
85. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाने की मुमानिअ़त	60 रू.
86. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
87. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा	40 रू.
88. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल	40 रू.
89. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
90. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
91. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की ह़क़ीक़त	40 रू.
92. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)	50 रू.
93. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़	30 रू.
94. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआ़त और चन्द तफ़ासीर का तआ़र्रुफ़	30 रू.
95. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	120 रू.
96. इस्लामी मआ़शियात का तक़ाबुली जायज़ा	30 रू.
97. इस्लाम का ज़रई निज़ाम	40 रू.
98. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत	40 रू.
99. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद	80 रू.
100. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम	50 रू.
101. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)	60 रू.
102. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें	30 रू.
103. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सिफ़ात (अह़ादीस की रौशनी में)	30 रू.
104. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
105. मुस्तनद मस्नून दुआ़एँ	20 रू.

नाम	मूल्य
106. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर	50 रू.
107. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा	30 रू.
108. आ़माल सालिहा़ (भाग-1)	100 रू.
109. आ़माल सालिहा़ (भाग-2)	100 रू.
110. अल्लाह तआ़ला का तआ़र्रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल	100 रू.
111. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की करीमाना अख़्लाक़ और आप (सल्ल०) की सीरत	100 रू.
112. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	50 रू.
113. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	50 रू.
114. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	50 रू.
115. ईदैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	90 रू.
116. ख़ातिमुन्नबीईन (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	150 रू.
117. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
118. नबियों की सीरत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	100 रू.
119. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल	60 रू.
120. इ़ल्म से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
121. तहारत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
122. ह़िफ़ाज़ते क़ुर्आन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
123. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
124. ई़दैन व जुमअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
125. तरावीह़ व एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
126. सफ़र और सद्क़-ए-फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
127. क़ुर्बानी से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
128. तलाक़ व इ़द्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
129. निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
130. ह़िबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
131. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
132. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
133. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक मसायल	40 रू.
134. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
135. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
136. तर्बियत, रज़ाअ़त व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक मसायल	60 रू.
137. ज़कात से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
138. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
139. इमामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
140. क़िरत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
141. सज्द-ए-तिलावत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
142. इस्लामी पर्दा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
143. मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.

नाम	मूल्य
144. मुहर्रम की हक़ीक़त और आ़शूरा के वाक़िआ़त	25 रू.
145. नबियों व सह़ाबा का ज़रिया-ए-मआ़श	25 रू.
146. रसूल करीम (सल्ल०) के बेटे और बेटियाँ	25 रू.
147. सह़ाबियात के अहम वाक़िआ़त	25 रू.
148. रसूल करीम (सल्ल०) की अज़वाज मुतह्हरात	25 रू.
149. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब	50 रू.
150. ग़ैर अ़रबी रस्मुलुख़त (फ़ॉन्ट) में क़ुर्आन की इशाअ़त	12 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब नदवी की अ़रबी पुस्तकें

151. मन्ज़तुल मराह फ़ी ज़ौइल इस्लाम वल्अद्यान वलह्ज़ारात अलमुख़्तलह	60 रू.
152. अल् इन्सान फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वस्सुन्नह	40 रू.
153. नुब्जतु अ़न सिफ़ाति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम	40 रू.
154. ग़ज़्व-ए-हुनैन व तायफ़ फ़ी ज़ौविल् क़ुर्आन वल् सुन्नह	120 रू.
155. अस्बाब तह़बतुल् अअ़माल वल् हमियतुल् निया फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वल् सुन्नह	120 रू.
156. अल् फ़ितन अल् वाक़िअः इला क़ियामः अल् साअ़ह फ़ी ज़ौइल अह़ादीस अल् शरीफ़ा	100 रू.
157. अल् नबी अल् ख़ातिम मन, मता, वआईन फ़ी ज़ौइल कुतुबुल् हिन्दूसीया वद्दिनातुल मुख़्तलिफ़ा	150 रू.
158. अल्हिन्दूसिया फिरक़ुहा, अक़ाइदोहा, मुनज़्ज़िमातुहा व अहदाफ़ुहा	140 रू.
159. अहमयतुल् दअ़वह वल् तब्लीग़ फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वल् सुन्नह	100 रू.
160. ज़िक्र मुह़म्मदिन (सल्ल०) फ़िल् वेद	80 रू.
161. अत्तअ़रीफ़ुलवजीज़ बिदियानी बूजा	80 रू.
162. तअ़द्दुदे अज़्ज़ौवजात वल् इस्लाम फ़ी जौए दियानात	80 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब नदवी की अंग्रेज़ी पुस्तकें

163. मुह़म्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण	40 रू.
164. मुह़म्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप	30 रू.
165. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम	80 रू.
166. दी स्वॉड आफ़ इस्लाम	40 रू.
167. अज़ान, ए कालिंग फ़ार ह्यिूमेनिटी	40 रू.
168. इस्लाम?	10 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब नदवी की अनुवाद की हुई पुस्तकें

169. मुन्तख़ब अह़ादीस (लेखक- ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह०)	60 रू.
170. क़ादियानियत नुबूवते मुह़म्मदी के ख़िलाफ बग़ावत (लेखक- इमामे ह़रम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्यिल रह़०)	40 रू.
171. दारे अरक़म का एह़सान इन्सानी दुनिया पर (लेखक-ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी रह़०)	30 रू.

नाम		मूल्य
172. मानवता आज भी उसी चौखट की मुहताज़ है (लेखक- मौलाना मुहम्मद हसनी रह०)		30 रू.
173. रमज़ान का तोहफ़ा (लेखक- मौलाना मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी)		20 रू.
174. यक्साँ सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार (लेखक- मौलाना मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी)		20 रू.
175. मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन? (विचारक- मुहम्मद मुस्तफ़ा क़ादरी) (तस्हीह व तर्तीब- मु० मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी)		30 रू.
176. यतीमों की किफ़ालत (लेखक-मुहम्मद आमिर सिद्दीक़ी नदवी)		30 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब द्वारा लिखित दीगर पुस्तकें

177. दो सौ मआशरती मसायल	उर्दू	80 रू.
178. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द अव्वल)	// //	500 रू.
179. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द दोम)	// //	500 रू.
180. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द सोम)	// //	500 रू.
181. तारीख़-ए-इस्लाम	// //	500 रू.
182. क़ससुल् अम्बिया	// //	500 रू.
183. मजमुआ़ अहादीस (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	200 रू.
184. दुआ़ के आदाब (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	20 रू.
185. इस्लाम के अ़दालती फ़ैसले (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
186. सीरत-ए-सहाबा	// //	200 रू.
187. क़ुर्बानी से मुतअ़ल्लिक़ मसॉयल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	500 रू.
188. तहारत से मुतअ़ल्लिक़ मसॉयल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
189. इल्म से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
190. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल	// //	50 रू.
191. ईदैन व जुमअ़ः से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
192. मदारिस से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	30 रू.
193. हिबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	30 रू.
194. सूद से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	30 रू.
195. सफ़र और सद्क़ः फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	30 रू.
196. निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
197. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
198. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
199. ज़कात से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
200. हज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
201. इमामत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
202. क़िराअत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
203. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक़ मसायल	// //	50 रू.
204. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
205. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.

नाम		मूल्य
206. तर्बियत, रज़ाअत व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल	उर्दू	**40** रू.
207. अ़लामात क़ियामत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**80** रू.
208. सज्दः से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
209. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
210. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
211. इ़ल्म व उ़ल्मा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
212. तक़्लीद व इज्तिहादी की शरई ह़ैसियत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50** रू.
213. सज्दः सहू से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50** रू.
214. बिद्अ़त की नहूसत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50** रू.
215. किरायेदारी से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50** रू.
216. कारोबार में शिर्कत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
217. मीरास से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
218. सुन्नत व नवाफ़िल से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
219. इस्लाह़-ए-मुआ़शरह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
220. औ़रतों के मख़्सूस मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
221. इन्सानी अअ़ज़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
222. मय्यत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
223. रमज़ान,रोज़ः और तरावीह़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल	// //	**60** रू.
224. एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**30** रू.
225. ज़मीन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50** रू.
226. रुयतुल हिलाल से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**30** रू.